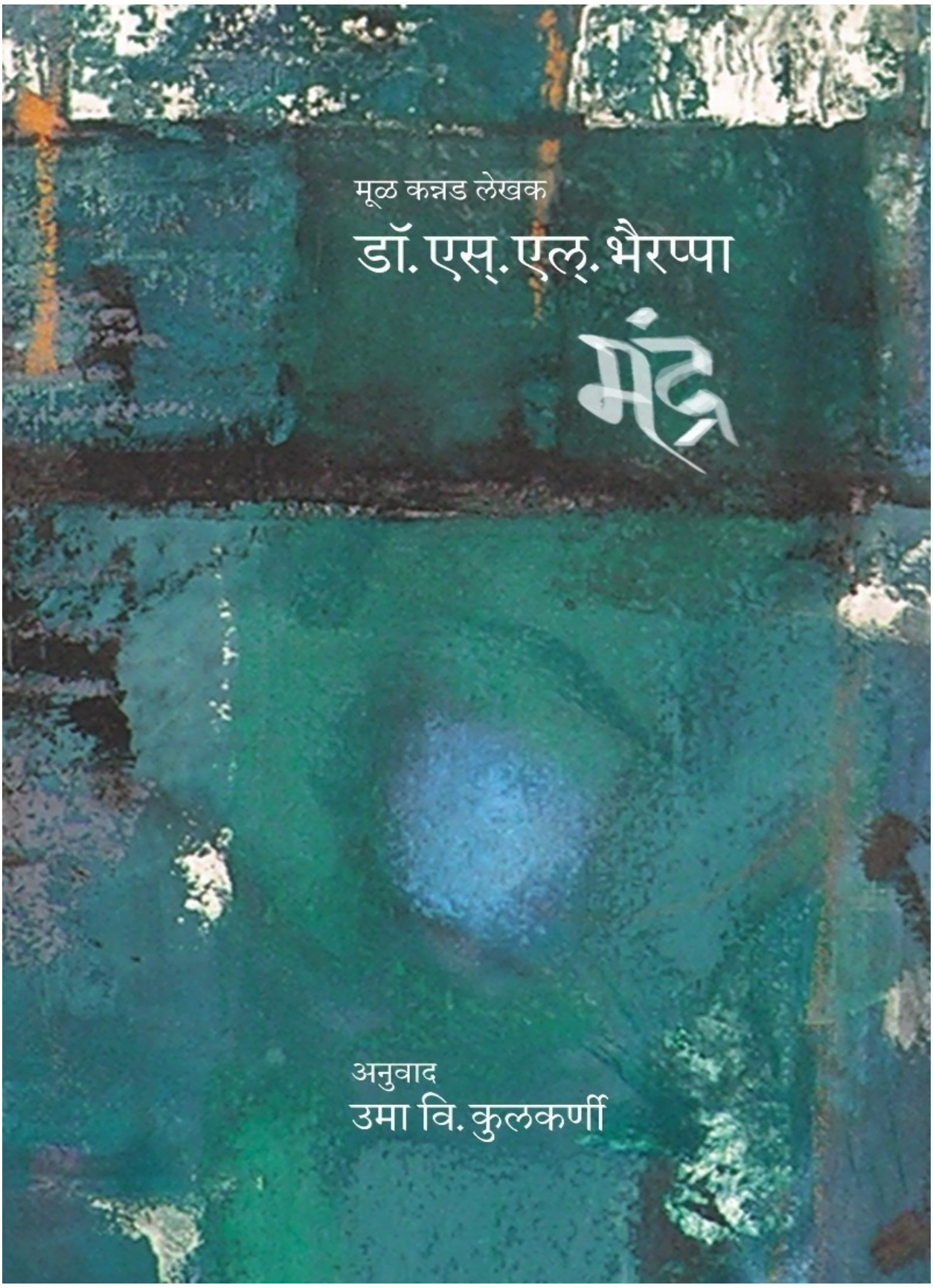
मूळ कन्नड लेखक
डॉ. एस्. एल्. भैरप्पा
मंद्र
अनुवाद
उमा वि. कुलकर्णी

Table of Contents

एक

1

2

3

4

5

6

7

दो

1

2

3

4

5

6

तीन

1

2

चार

1
2
3
4
5
6
□□□□
1
2
3
4
5
6
□□
1
2
3
4
5
6
□□□
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10

आठ

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

12

13

14

15

नौ

1

2

3

दस

1

2

3

4

5

ग्यारह

1

2

3

4

5
6
7
बारह
1
2
3
4
5
6
7
तेरा
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
चौदह
1
2
3
4
पंद्रह
1
2
3

□□□□□
1
2
3
4
5
□□□□□□
1
2
□□□□□□
1
2
□□□□□□□
1
□□□□
1
2
3
4
5
□□□□□□□
1
2
3
4
5
6
7

मंद्र

मूळ कनड लेखक
डॉ. एस्. एल्. भैरप्पा

अनुवाद
उमा वी. कुलकणी

मेहता पि लिशंग हाऊस

‘मेहता प्रिंटिंग हाउस’ की नई किताबों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए
कृपया अपना फ़ोन नंबर और ईमेल पता प्रदान करें।
ईमेल info@mehtapublishinghouse.com पर भेजा जाना चाहिए।
किताबें खरीदने के लिए sales@mehtapublishinghouse.com पर संपर्क करें।
या 020-24460313 पर कॉल करें
कृपया हमसे सीधे संपर्क करें।
वेबसाइट: www.mehtapublishinghouse.com

[illegible], [illegible]
‘[illegible]!’ [illegible]
‘[illegible]!’ [illegible]

[illegible]…
[illegible]

भगवान,
तुम मुझसे छोटे हो!
आपने कतार तोड़ दी और आगे बढ़ गए। क्यों?
– भैरप्पा

##

###; ###### ##### ### ###### ## #####-##### ########## ###, ## ### ### ##### ##### ### ######## ## ###### ## ###### ####### #####! ###### ######## ## ##### ### ### ## ######### ##### ##### ### ###### ##### ### ## ### ## ############## ####### ##### ### ########## ### ###### ### ##### #######

##, ## ###### ## ########## ## ####### ### ## ######### ####### ###### ########## #####

##, ########## #######

##. ######## ###, ########## ### ### ## ##### ### ## ##### ##### ####### ## ###### ## ######### ##### ######

############## ### ##### ##### ### ### ##### ###, ###### ###### ## ####### ### ## ##### ##### ## ####### ### #######

####### ## ######### ##### #####, ###### ##########, ###### #######, ### ######## ## ###### ###, ### ######, ###### ####### ## ##### ####### ## ######### ## ########## ## ########

###, ####### ###, ######## ######## ## ######## #####, ######## ###### ## ######### ######, ####### ## ##. ######## ## ####### #####, ############## ## ###### ## ###### ## ######, ##############: ##.##.##. ## ####### ## ###### ## ###### ##### ###### ##, ########## ########## ## ############### ### ###### ######### ## ###### ## ##### ## ###### ###### ## ### ###### ##### ####### ###, ##.##. ########## ## ###### ###### ######### ## ## ########## ## ##### ## ## ## ######

######### ## ##### ###### ## ##. ##. ##. ###### ## ##### ###### ## ## ###### ## ######## ##### ## ##### ### ###### ## ###, ### ### ##### ##### ## ### #######

पढ़कर सुनाना चाहता था; लेकिन अस्वस्थ होने के बावजूद, उन्होंने पांडुलिपि ली और उसे पढ़ा। फिर वे तुरंत चले गए। उनकी मृत्यु के सदमे से उबरने और इस उपन्यास पर दोबारा काम शुरू करने में मुझे दो महीने लग गए। प्रभु एक प्रतिभाशाली कहानीकार और नाटककार थे। मेरे उपन्यासों का विश्लेषण करते समय उनकी प्रतिभा का एक अलग ही पहलू उभर कर सामने आता था। वे न केवल मेरे साहित्यिक गुरु थे, बल्कि एक सच्चे मित्र भी थे।
उनके जैसा कोई और मिलना नामुमकिन है। मैं अब भी अपने अकेलेपन से बाहर नहीं निकल पा रही हूँ। डॉ. विजया तिलक (ठाणे), डॉ. अंजली जोशी (पुणे), यशोदा वाकांकर और विपा कुलकर्णी ने इस पुस्तक के अनुवाद में अमूल्य सहयोग दिया।

मैसूर

–

एस.एस. एल.एस. भैरप्पा
२२/४/२००२

एक

१
‘वह वेश्या बड़ी लड़की होने का नाटक कर रही थी!’
वही शब्द बार-बार मेरे दिमाग में आ रहा था। वही दोहराव,
मुझे याद नहीं कि गाते समय मेरा संतुलन बिगड़ने, मेरा सिर घूमने और गले से ही गाते रहने या खुद को दोहराने जैसी कोई अनुभूति हुई हो।
वह वेश्या वेश्या होने का नाटक कर रही थी – एक वेश्या – एक वेश्या
मोहनलाल ने अपना गला साफ किया, मानो गाना शुरू करने से पहले उन्हें गला साफ करना जरूरी हो।
‘मैं इसे देख रहा हूँ!’ जैसे ही उसके मन में बदले की भावना उमड़ी, उसने फिर से गला साफ किया; लेकिन वह असहाय महसूस कर रहा था, यह जानते हुए कि यह भी वही पुरानी बात दोहराई जा रही है। मैं क्या करूँ? तुम इस घर में ज़्यादा दिन नहीं रहोगी, इसलिए तुम यहाँ से एक बड़ा सूटकेस लेकर जा सकती हो। अगर वह भी चुप रही, तो कौन जीतेगा और कौन हारेगा? वह या मैं?
"मैं तैयार नहीं हूँ, चाहे आप कितना भी ज़ोर दें," उसने दृढ़ता से कहा, "और अपने बिस्तर पर जाकर खुद को अंदर बंद कर लिया। मैं उस समय पीछे क्यों नहीं हटी?"
मधु, दरवाजा खोलो! मेरी बात सुनो, दरवाजा खोलो! दरवाजा!
दरवाजा खटखटाते हुए, पुकारते हुए, अंत में अपनी आवाज धीमी करते हुए। मैं उसे मंदिर ले आया—हालाँकि मैं उसे नीचे ले आया, उसने दरवाजा नहीं खोला। क्या उसने मेरी विनती नहीं सुनी? या सुनने के बाद भी वह कठोर हो गई? अमेरिका में ऐसा ही होता है। यहाँ ऐसे दरवाजे और खिड़कियाँ हैं कि इस शब्द-तरंग का एक कण भी नहीं बच पाएगा। यहाँ सब कुछ साफ और चमकदार है! इतना साफ कि उथले पानी की तलहटी दिखाई देनी चाहिए या
ऐसा लगता है मानो शुभ अनुष्ठान करने वालों को मंदिर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा हो! यह एक अद्भुत अवधारणा है।
आपको पानी में डुबकी लगानी चाहिए और तल पर मौजूद इन चट्टानों से जुड़ने की कोशिश करनी चाहिए।

सुबह उठकर घर के मंदिर में शुभ अनुष्ठान करने के बजाय, मैं चार मील चलकर इस खूबसूरत पार्क में गई और अकेले बैठ गई। मुझे बस इतना ही याद है। रात में इतना कुछ करने के बावजूद, मैं बिना ध्यान दिए अपने बिस्तर पर चली गई और खुद को अंदर बंद कर लिया! गुरु जी को आदरपूर्वक पुकारने का, श्रद्धापूर्वक बात करने का क्या ही अनोखा तरीका है!
‘गुजी, शादी से पहले मैं आपकी थी। अब मेरी शादी हो गई है। आप दोनों पर भरोसा करके मेरे पति पांच दिन के लिए गांव गए हैं। ऐसे में इस तरह का व्यवहार करना’
आप उससे प्रेम क्यों नहीं करेंगी? मैं आपकी छात्रा हूँ। उसका आपसे कोई संबंध नहीं है। फिर भी, हे भगवान! वह आपसे प्रेम करता है। जब आप ढोल बजाती हैं, तो वह मुग्ध हो जाता है। वह आपके प्रेम में डूबा रहता है। उसे मुझसे शिकायत है कि मैं आपसे अंतरंगता तो रखती हूँ, लेकिन आपको वह सम्मान नहीं देती जिसकी आप हकदार हैं। वह आपके कपड़े नौकरों को देने के बजाय खुद इस्त्री करता है। आप भी यह सब जानती हैं, गुजी! आप मुझ पर ऐसे आदमी से प्रेम करने का दबाव क्यों डाल रही हैं, मेरी प्यारी?' उसके शब्दों से मैं कांप जाती हूँ।
‘हां, पत्नी, इससे पहले तुम मेरी प्रेमिका थीं, यह मत भूलो! या ना की भी सहमति थी। आज भी तुम मेरी प्रेमिका हो। इस बीच, तुमने मुझे बिना बताए अमेरिका के लिए प्रस्थान कर दिया। अब तुम मुझ पर झूठे आरोप लगा रही हो?’ हालांकि वह इसका कोई जवाब नहीं दे सकीं, फिर भी वह अपनी बात पर अड़ी रहीं। जैसे ही मैं उनके पास पहुंचा, उन्होंने खुद को छुड़ाया और कहा, 'गुजी, आप परसों उनसठ साल के हो गए। मैं तीस साल की हूं। आप मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर नहीं कर सकते। यह आपके सम्मान का अपमान होगा।'
"ली, खुद को इतना नीचा मत गिराओ! ली, ली!"
और सीधे बिस्तर पर चली गई। मैंने कितना भी खटखटाया, दरवाजा नहीं खुला। फिर भी, अच्छी बात यह है कि यह लॉस समूह है। यह इलाका केवल अमीरों के पास होता है, उतार-चढ़ाव से भरा हुआ। उसका बंगला एक पहाड़ी की ढलान पर है। ऊपर-नीचे, चारों ओर प्राकृतिक रूप से उगते पेड़। मैंने कितना भी खटखटाया, पड़ोसियों के सुनने का कोई डर नहीं था। दरवाजे इतने मजबूत थे कि हवा का झोंका भी अंदर नहीं आ सकता था। इसी वजह से आवाज घर से बाहर नहीं जा सकती थी।

मुझे कब तक दरवाजा खटखटाना चाहिए? क्या मुझे उससे जवाब न मिलने पर अपमानित महसूस करना चाहिए? इस अपमान का केवल एक ही जवाब है। वो है अपना सूटकेस उठाओ और उसके घर से निकल जाओ!
लेकिन अमेरिका में यह कैसे संभव है? इन घरों की कैद से छुटकारा पाना नामुमकिन है, जब तक कि मकान मालिक खुद मुझे अपनी गाड़ी में न छोड़ दे। एक बार तो मैंने ये भी कह दिया था, ‘मैं जा रही हूँ – कृपया मुझे छोड़ दीजिए;’ लेकिन वो मेरी बात कैसे सुनेगी? या फिर सुनने के बाद भी मेरी बात अनसुनी कर देगी?
मेरी आँखों पर बारिश की बूँदें पड़ रही हैं। बड़े-बड़े पेड़ों से भरे इस बगीचे में बहुत से लोग टहलने और दौड़ने आए हैं। हम बिना चाय पिए ही बाहर निकल आए हैं। हमने अपने दाँत भी नहीं झाड़े हैं। घर वापस जाने के लिए हमें चार मील चढ़ाई करनी पड़ेगी। काम के बिना इस जगह पर आना नामुमकिन है। काम के बिना जीना नामुमकिन है – यहाँ का सुख ही ऐसा है!
अगर कोई फ़ोन करके कहे, "मैं पार्क आ रहा हूँ, मुझे ले चलो?" मेरे पास जेब में पैसे नहीं हैं। मैं फ़ोन कर सकता हूँ। मुझे नंबर पता है। घर पहुँचकर मैं कह सकता हूँ, "मैं आज जा रहा हूँ - मुझे जाने दो।" या, "मुझे ले चलो, अगर मैं कहूँ कि मैं तुम्हारे साथ दो दिन रहना चाहता हूँ, तो तुम मुझे सिलिकॉन वैली ले जाने में खुशी महसूस करोगे, जहाँ मैं कैलिफ़ोर्निया में बहुत से लोगों से मिलूँगा! मोहनलाल, तुमने क्या सोचा? यहाँ भी संगीत प्रेमी हैं जो पहले अपने पैरों पर धूल झाड़ते हैं और फिर बातें शुरू करते हैं! हाँ। यही करना चाहिए। तभी इस कमीने को अक्ल आएगी! आज ही न्यूयॉर्क क्यों नहीं निकल जाते?"
लेकिन जल्द ही मेरा मन संशय में पड़ गया। मैं पंद्रह दिन पहले कहाँ जाऊँगा और वहाँ ठहरूँगा? इसके अलावा, इस कार्यक्रम का बड़े पैमाने पर विज्ञापन भी किया गया है। बड़ी रकम के टिकट बिक चुके हैं। हज़ारों टिकट! अब तक किसी भी भारतीय गायक ने इस कार्यक्रम के लिए इतने टिकट नहीं बेचे हैं! टिकटों की मांग अभी भी बनी हुई है! मोहनलाल के नाम का क्या होगा! लेकिन इस देश में, अगर कार्यक्रम वादे के मुताबिक नहीं होता, तो वे दावा करते हैं और पैसे वसूल लेते हैं!
विचारों की धारा में बहते हुए उसे नींद आ गई। उसने सिर हिलाकर नींद से जाग उठी। नींद अब भी उसके सिर पर छाई हुई थी। वह बेंच पर लेट गया और अपने पैर

फैला लिए। मेपल के पेड़ की घनी छाया ने उसके सिर को ठंडक पहुँचाई और उसे गहरी नींद में खींच लिया।

२
सुबह के आठ बज रहे थे जब मैं उठी। यह सामान्य बात है। हालांकि मैं उत्साहित हूं, फिर भी मुझे रात को आसानी से नींद नहीं आती। मैं सुबह जल्दी सो जाती हूं। मैं सुबह जल्दी उठ जाती हूं।
दो-तीन बार कपड़े बदलते समय उसे रात की घटना याद आ गई और उसका मन फिर से विचलित हो गया। वह बार-बार मुड़कर देखता रहा कि दरवाजा खुला है या नहीं। उसने गहरी सांस ली। मारिया हमेशा की तरह रसोई में काम कर रही थी। उसे सुबह जल्दी उठकर रसोई से निर्देश लेने पड़ते थे। अगर उसे कुछ नया करना होता था, तो उसे सीखना पड़ता था। उसने मसालों और करी बनाना तो उससे ही सीखा था। फिर भी, उसे उसके सामने खड़े होकर काम करना पड़ता था। इसके अलावा, उसे पाँच-छह कपड़े भी इस्त्री करने थे।
वह झटपट उठी और अपना घरेलू कोट पहन लिया। उसने चेहरा धोया और रसोई में जाकर कहा, 'सुप्रभात, मारिया।' मारिया ने भी मुस्कुराते हुए कहा, 'सुप्रभात।' सब्जियों की बात शुरू होते ही रसोइए ने कहा, 'श्रीमती शाह, आपको यहाँ रुकने की ज़रूरत नहीं है! मेरे खाने पर भरोसा कीजिए। एक साल और खाना बनाने के बाद, मैं सैन जोस में एक भारतीय रेस्तरां खोलने की योजना बना रही हूँ! ताकि इन भारतीयों के सारे डॉलर अलग से मेरी जेब में आ जाएँ!'
वह एक हंसमुख और हंसमुख महिला हैं! अगर सुबह उनसे बात न हो तो पूरा दिन अस्त-व्यस्त लगता है। रोज़ाना कपड़े धोना, नाश्ता बनाना, खाना पकाना, रसोई और बर्तन साफ़ करना और कपड़े इस्त्री करना उनके नियमित काम हैं। हर बुधवार की सुबह, वह अपने दो छोटे बच्चों के साथ आती हैं और घर की सफाई करती हैं, शौचालय साफ़ करती हैं, खिड़कियाँ और अन्य उपकरण पोंछती हैं। इसके अलावा, वह पर्दे और ब्लाइंड्स बदलना, बर्तन धोना, कार धोना आदि जैसे अन्य काम भी करती हैं। उनके बिना, इस बड़े घर में एक छोटा-सा गृहस्थी चलाना असंभव है! "क्या तुम्हारे संगीत शिक्षक अभी तक जागे नहीं हैं? वो तो मानो प्रार्थना कर रहे हों, कितना मधुर गाते हैं! मुझे भी अब अच्छा लगने लगा है। जाओ, सीखो।"
चलो ना। मैं मसाला करी बना लूंगी। उसकी चिंता मत करो!
मारिया की बातों से वह बेचैन हो गई। उसने उसे यह नहीं बताया था कि विक्रम गाँव में नहीं है। दरअसल, विक्रम के दफ्तर जाने का यही समय था। वह आज नहीं

था, मैं जल्दी उठ गई, गुजी अभी तक नहीं उठी थी – क्या उसने इन सभी अलग-अलग घटनाओं को जोड़कर अपना मन नहीं बना लिया होगा? वह कमजोर थी। वह तीन साल से सब देख रही थी। नहीं, यह वह औरत नहीं है जो हर जगह जाकर अपनी नाक घुसाए और हंगामा करे। इस विचार से उसे थोड़ा सुकून मिला।
लेकिन गुजी अभी तक क्यों नहीं उठी? क्या मुझे जाकर देखना चाहिए? उसने अपने शयनकक्ष के दरवाजे पर दस्तक दी। कोई जवाब नहीं आया। उसने हल्के से हैंडल घुमाया और दरवाजा खोला। उसे डर था कि कहीं वह रात में निराशा में चीख न उठे? लेकिन वह यह भी जानती थी कि मैरी इस समय घर में ही है। फिर भी, यह सोचकर कि वह कुछ कह नहीं सकती, वह वापस मुड़ गई।
नौ बजे, मारिया सारा काम खत्म करके चली गई। गेट से बाहर निकलते ही उसने पीछे का दरवाजा बंद कर दिया, और मधु धीरे-धीरे सीढ़ियाँ चढ़ने लगी। वह बाईं ओर के गेट की ओर मुड़ी। हैंडल पर हाथ रखते ही उसकी छाती ज़ोर से धड़कने लगी। क्या वह फिर से गुस्सा हो गई, रात की मांग करने लगी, और वही कड़वाहट भरी स्थिति फिर से पैदा करने लगी? उसे जाने दो। वे अपनी मर्ज़ी से बाहर आ जाएँगे! या—या— उसे समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या करे। भले ही वे गुस्सा हों, वे मेरे दोस्त हैं। मैं उनका शिक्षक हूँ। मुझे इसे नरमी से लेना चाहिए था।
जैसे ही उसके मन में यह ख्याल आया, उसने दरवाज़े पर दस्तक दी, हैंडल घुमाया और दरवाज़ा खोला। उसने अंदर देखा – वह जा चुका था। कंबल ज़मीन पर पड़ा था, बिस्तर भी गंदा था। वह बाहर चला गया था। अकेला। कहाँ गया – कौन जाने कहाँ! वह पैदल ही चला गया था। उसने और गौर से देखा, वह सिर्फ़ पजामा, बाथरोब और शॉल पहने हुए था। उसकी पैंट और कोट हैंगर पर टंगे थे। उसकी जेब में पैसों से भरा बटुआ था। वह सूट लिए बिना ही चला गया था। वह मुझे चोट पहुँचाने के लिए निकला था! वह खुद को चोट पहुँचाना चाहता था और इस तरह मुझे तड़पाना चाहता था!
वह चारपाई पर बैठ गई।
उसका बच्चों जैसा जिद्दी व्यवहार! उसे गुस्सा आ गया। फिर उसे चिंता होने लगी। वह कहाँ चला गया था? इस गाँव में कहीं भी जाने के लिए इतनी दूरियाँ थीं। उसे उन जगहों की सूची याद आई जहाँ उसे ले जाया गया था। क्या वह टी क्रीक, क्यूटी पार्क, सांता टेरेसा क्यूटी पार्क, अमादेन लेक पार्क, वासोना लेक पार्क, सैन फ्रांसिस्को काउंटी, सुनोवेल मंदिर गया था? या वह

इनमें से किसी के पास गया था: गुटा, गोयल, भट, कुलकर्णी, सरदेसाई या मूटी? सभी संगीत प्रेमी हैं। इनमें मिश्रा और सरदेसाई भी उससे संगीत सीख रहे हैं। अगर मैं फोन करके इनमें से किसी से मिल लूँ तो क्या होगा? नहीं। अगर मैं गुजी को बता दूँ कि वह बिना बताए चला गया है,
कौन जाने उनके मन में क्या-क्या विचार आएंगे! इसके अलावा, विक्रम गांव में नहीं है।
मुझे यह कहना ही होगा।
वह कुछ देर वहीं बैठी रही। उसने सोचा, सुबह से उसने चाय नहीं पी है। अगर उसे एक कप चाय मिल जाए तो उसे अच्छा लगेगा। जिन्ना रसोई में गए और चाय बनाई और चाय का मग लेकर चुपचाप बैठ गए। चाय के कुछ घूंट लेते ही फोन की घंटी बज उठी।
उसका फ़ोन। ऐसा लगता है कि उसने क्लर्क को फ़ोन किया था। शायद उसके खाते में कुछ पैसे हों।
वह इसे वहीं छोड़ आया होगा। इसी निश्चितता के साथ उसने रस्सी उठाई।
‘मैं बोल रहा हूँ!’ विक्रम की आवाज़। ज़मीन से।
'नमस्ते!'
“क्यों? तुम्हारी आवाज़ को क्या हुआ? ऐसी क्यों लग रही है? क्या तुमने सुबह की कसरत की या नहीं? गले पर ज़्यादा ज़ोर मत डालो। नहीं तो इस समय कार्यक्रम में दिक्कत होगी। पहले तो रात में डलास में कार्यक्रम होता था। क्या तुम पटनिकर को जानते हो? पंडित मोहनलाल जी का गाना और तुम तंबू बजा रहे हो, उन्होंने कहा, “मैं तुरंत हट आ रहा हूँ।” मैंने इसके लिए तीस डॉलर का टिकट बुक किया है। मैं तुम्हारा गाना सुनने के लिए बहुत उत्सुक हूँ। आज का मुख्य काम यहीं है। मैं शाम तक डी.सी. पहुँच जाऊँगा। गुजी कैसी हैं?” ‘तुम बाहर हो। तुम इस ढलान पर स्थित जंगल में अकेले हो। तुम्हारा मन गाने का कर रहा है!’ जवाब के बारे में सोचते ही उसे राहत महसूस हुई।
"टोपी और मास्क पहने हुए आदमी को सुबह बाहर मत जाने दो। लॉस गैटोस की हवा उसे परेशान करेगी!"
तुम गुजी का कितना ख्याल रखती हो! उसका दिल बैठ गया जब उसने उसका हाथ पकड़ा।
वह आधे घंटे तक बैठक में बैठी रही। फिर उठी और घर के सभी कमरों में चारों ओर देखने लगी। ऊपर की छत, नीचे की दोनों बैठक, रसोईघर – उसने हर जगह देखा।

उसने जूते पहने और घर से बाहर निकल गई, यहाँ तक कि ढलान पर भी देखा। उसे उन्हें कहाँ ढूँढना चाहिए? उसे कुछ समझ नहीं आया और वह दरवाजे के पास सिटका टबेज के पेड़ के नीचे पत्थर की बेंच पर बैठ गई।
मुझे याद आ गया। दस साल – जी हाँ। दस साल हो गए। परेल कॉलेज में मेरा आखिरी साल। कॉलेज स्तर पर इस संगीत पाठ्यक्रम में मैं पिछले तीन सालों से प्रथम स्थान पर था। मैं हफ्ते में दो दिन गुरु मोहनलाल जी के 'वर-वेध' में जाता था। वो भी शाम को – बाकी दिनों में मैं कॉलेज जाता था। मैं परीक्षा की तैयारी भी कर रहा था। इसके अलावा, मैं होमवर्क भी करता था। मेरी राय में, पढ़ाई करना मेरे खाली समय की बर्बादी थी; लेकिन मेरे बड़े भाई का ज़ोर था कि कम से कम मेरे पास डिग्री तो होनी चाहिए। मेरी माँ भी मेरा साथ देती थीं।
बी.ए. के बाद, मुझसे उम्मीद की जा रही थी कि मैं दिन-रात संगीत में डूबी रहूँगी; लेकिन मेरी माँ ने फरमाया, 'तुमने बी.ए. तक पढ़ाई कर ली है, बस इतना ही काफी है। तुम बीस साल की हो गई हो! अगर इसके बाद भी तुम ऐसे ही करती रहोगी, तो जाति के लोग क्या कहेंगे? पहले मेरी शादी होने दो। फिर अगर दूल्हा इजाज़त दे, तो जितने मन करे उतने गाने सीख लो!'
अगर यह काम नहीं करता है, तो गाना खत्म!
लेकिन मेरी माँ ने मुझे ऐसा करने नहीं दिया। लेकिन फिर मैंने ज़िद की, 'ज़रूरत पड़ने पर मैं घर के बाहर रहकर काम करूँगी; लेकिन मैं गाना नहीं छोड़ूँगी।'
लेकिन यहाँ, दो भाइयों ने मेरा साथ दिया। बड़ा भाई भी गाना पसंद करता है। उसने कहा, 'माँ, ज़माना बदल गया है। आज गायक की प्रतिष्ठा बढ़ती है और उसे पैसा भी मिलता है।'
मैंने गुरुजी से मुलाकात की और उनसे कहा, ‘मेरी शिक्षा पूरी हो चुकी है। इसके बाद संगीत ही मेरी एकमात्र आशा है। मैं यह भी जानता हूँ कि सप्ताह में दो घंटे संगीत सीखना और प्रवीण परीक्षा उत्तीर्ण करना संगीत कला की समझ नहीं देता। मैं प्रतिदिन सीखने आऊँगा। मैं घर पर भी कम से कम दो-तीन घंटे अभ्यास करूँगा। कृपया मुझे अपना शिष्य स्वीकार करें।’
उनकी आँखों में प्रशंसा झलक रही थी। फिर भी, वे हँसे और बोले, "एक बार फिर सोचो!"
मुझे क्या सोचना चाहिए? मैंने तो अपना मन बना लिया है!

वह मान गया। मैंने दादर से बांदिया तक प्रतिदिन लोकल ट्रेन से जाना शुरू कर दिया। गु जी
कभी-कभी वे ‘वर-वेदम’ आते थे, कभी नहीं। इस दौरान, वाडेकर माँ परियाला में बैठे बच्चों को तैयार करने के लिए मौजूद रहती थीं। घर का वह हिस्सा जहाँ गु जी रहते थे, बंद रहता था।
एक दिन वाडेकर ने कहा, 'वे दिन के इस समय यहां नहीं आते। वे अपने दोस्तों के पास जाते हैं। उनके पास रहने की जगह है। आप सुबह इस समय आइए।'
अगले दिन वह सुबह आठ बजे आई। गुजी अभी-अभी जागे थे। गुजी यहाँ अकेले रहते हैं, उनकी पत्नी और बच्चे उनके साथ रहते हैं, उनके बीच अनबन है, खाना मेस से आता है, यह जानकारी मुंबई के सभी संगीत विद्वानों को पता थी। सिवाय इसके कि उन्हें पता था कि वे अपने कमरे या हॉल में विशेष विद्यार्थियों को पढ़ाएंगे, यह भी एक बड़ी बात होगी। वे उन्हें दो घंटे तक जो भी उनके मन में आएगा, सिखाएंगे, वरना महीनों तक कुछ नहीं सिखाएंगे! कभी-कभी वे गुस्सा हो जाते थे - 'यह तुम्हारा पाठ है! क्या इस तरह सिखाने से कोई गाना सीख सकता है?' सिवाय इसके कि वे कार्यक्रमों के लिए गांवों में यात्रा करते थे, यह उनके लिए परम आनंद था!
गुरुजी के चरणों की धूल अपने सिर पर रखते हुए उसने कहा, 'तीन दिन बीत गए, हर दिन। वाडेकर आज सुबह मुझे बाद में बताने आया था।'
‘आओ! बैस!’ उनके शब्दों ने मेरे दिल में विश्वास जगाया। उन्होंने घर के बारे में पूछा। मैंने भी उन्हें बताना शुरू कर दिया। बड़े भाई को गाना पसंद है। वो भी मेरी ही तरह के इंसान हैं। विदला को गए पाँच साल हो गए हैं। घर के दादाजी तब से व्यापार कर रहे हैं। बड़े भाई अनिल मेहता। उनकी उम्र अभी बीस साल हुई है। छोटे भाई, जो अट्ठाईस साल के हैं, वो भी इसी व्यापार में हैं।
मैं व्यापारी हूँ। हम दोनों विवाहित हैं। मेरी माँ जू परंपरा से हैं। दादर में मेरा अपना घर है। मेरे पास रियाज़ के लिए एक अलग कमरा है। आप जितना भी मांगेंगे, मैं देने को तैयार हूँ।
हाँ।
'मैं लड़कियों को नहीं पढ़ाता! वे दो साल पढ़ती हैं और स्नातक हो जाती हैं। बाद में, वे गृहस्थी, सब्ज़ियों, गर्भावस्था, प्रसव और बच्चों के बारे में जो कुछ भी सीखती हैं, उसे भूल जाती हैं। नदी में जो कुछ भी सिखाया जाता है,

वह सब उपयोगी नहीं होता। अपनी माँ की बात सुनो और उसे जाने दो!' वह कितने कठोर स्वर में बोला! शायद मेरा संकल्प और भी दृढ़ हो जाएगा।
'नहीं!'
‘क्या हुआ? क्या तुमने इसे न करने का फैसला कर लिया है?’
दरअसल, मैंने इसके बारे में सोचा ही नहीं था। इसलिए पूछने की हिम्मत ही नहीं हुई। मुझे किसी न किसी तरह जवाब देना ही था, इसलिए मैं हंसते हुए बोली, 'मैं सीखना कभी खत्म नहीं करूंगी।'
क्या आप अगले दस साल तक जीने के लिए तैयार हैं? बुढ़ापे के बाद आपको पति कैसे मिलेगा?
मैं इन लोगों में से किसी से भी अपनी भावनाओं पर चर्चा करने नहीं आया हूँ। हालाँकि इस विचार से उन्हें गुस्सा आया, फिर भी उन्होंने इसे ज़ाहिर नहीं किया और कहा, ‘मैंने इस बारे में सोचा ही नहीं है; लेकिन मैं आपसे सीखूँगा, मैं ध्यान का अभ्यास करूँगा। इसके अलावा, मैं अपने मन में किसी और विचार को आने नहीं दूँगा। देवताओं का मार्ग!’
‘ठीक है! चलो देखते हैं, एक डफली बजाते हैं!’ उसने सामने की दीवार की ओर देखा और थोड़ा दूर हट गया। दीवार के किनारे चौदह डफली कतार में रखी थीं। मैंने उनमें से एक डफली उठाई और उनके सामने बैठ गया।
‘भैरव!’ उसने आदेश दिया।
मुझे डर था कि हारमोनियम के बिना डफली बजाते समय मुझसे कोई गलती हो जाएगी, इसलिए मैंने धीरे से 'काली पांच' बुदबुदाया। उन्होंने बाएँ वाले बॉक्स को आगे खींचा और धुन दबा दी। मेरी डफली उस धुन से मेल नहीं खा रही थी। उन्होंने कहा, 'मुझे एक डफली दो, मैं बजा दूँगा। तुम बजा तो सकती हो, पर डर लग रहा है!'
मेरे हाथ में जो डफली थी, वह डेढ़ मिनट में बजने लगी। मैंने उत्सुकता से उसकी ओर देखा – वाह!
"हाँ!" उसने आदेश दिया।
लेकिन कोई आवाज़ नहीं निकली। उसका चेहरा और गर्दन पसीने से तर थे। वह सिर झुकाए वहीं बैठा रहा और वाद्ययंत्र बजाता रहा।
‘डरो मत। हाँ!’ बॉक्स पर काले रंग के तीन-डॉलर के नोट रखे गए।
क्या शक्ति थी! मंद्रा धैवत से शुरू होकर निषाद तक और षड्ज पर रुकते हुए, भैरव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे! पूरे हॉल में शांति छा गई। एक बार

आरोहण और अवरोहण को धीरे-धीरे दिखाते हुए उन्होंने कहा, 'जी! आरोहण धीरे- धीरे करो। जितना हो सके उतना गाओ।'
मेरे मन में साहस का संचार हुआ। मैंने पर्दा ओढ़ लिया। मैं धीरे-धीरे विस्तार करने लगी, हर पर्दे के अनुरूप ढलती गई। सात-आठ मिनट तक रागों का विस्तार करने के बाद, मेरी ऊर्जा समाप्त हो गई। आँखों से 'यह' कहते हुए मैंने गाना बंद कर दिया। हालाँकि, मेरे हृदय में भय का कोई स्थान नहीं रह गया था।
बिना कुछ कहे, उन्होंने उसे एक टोकरी में रखा और पीछे की दीवार पर एक खूंटी पर टांग दिया।
उसने उन दो डफों में से एक को निकाला, उसे ठीक किया और मुझे दे दिया। दूसरा भी उसने मुझे ही दे दिया।
उन्होंने उसे पहन लिया और उसे चिढ़ाने लगे!
ये सिर्फ मोहनलाल जी की आवाज है! सर्वशक्तिमान ईश्वर का दिया हुआ वरदान, जो सिर्फ उन्हें ही प्राप्त है! वो आनंदमय वरदान जो बिना किसी आवाज के पलक झपकते ही गहरी शांति फैला देता है! उनकी उपस्थिति मात्र से ही मन को भैरव की शांति का अनुभव हो जाता था! भले ही उनकी पीठ नदी और समुद्र की ओर थी, फिर भी वे मुंबई में गंगा के पास स्थित इस सात मंजिला मकान में आए, और कुछ ही पलों में उस कमरे में शांति छा गई। ऐसी शांति जो हिमालय की चोटियों पर भी नहीं मिलती!
पहले तो उसने गाना शुरू किया, अपने लिए गाते हुए, धुन को बढ़ाते हुए। जैसे ही उसे एहसास हुआ कि मैं उसके सामने हूँ, उसने गाना शुरू कर दिया, अपने शरीर का ऊपरी हिस्सा दिखाते हुए। आवाज़ कहाँ है?
शिखर तक पहुंचने के लिए, वास्तव में कहीं पहुंचे बिना, केवल उस दिशा में एक संकेत चिह्न छोड़कर।
यह आपको सब कुछ दिखाता है, पु हा और थानी कैसे पहुंचें, मांद्रा स्टेशन पर कहां उतरें।
ऐसा करते हुए, वे आवश्यकतानुसार कुछ शब्दों में समझाते थे। ऐसा करते समय, वे क्रोध के विस्तार को दर्शाते थे, इस बात का ध्यान रखते हुए कि रुचि का प्रवाह बाधित न हो। जो बात मुझे समझ नहीं आ रही थी, उसे वे सारगम के रूप में दिखाते थे। मैं समझ गया कि उनके चेहरे पर सफलता की खुशी झलक रही थी और वे आगे बढ़ गए। जब मैं तंबोरा बजा रहा था, वे उसके साथ ताल मिला रहे थे। जब

दूल्हे स्वयं मुझे बता रहे थे कि हम कहाँ जा रहे हैं और किन छोटे दूल्हों को छूने वाले हैं, तो मैं उत्साहित हो रहा था।
मेरे मन का डर अचानक गायब हो गया था। मुझे यह एहसास हो गया था कि उन्होंने मुझे अपना शिष्य मान लिया है। वे मुझे अपने साथ ले गए हैं।
वे चल रहे हैं; तुमने अपने इन पंखों के नीचे मेरे लिए एक छोटा सा गर्म घोंसला बना लिया है।
मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं उसमें बैठकर आसमान की ऊंचाइयों पर उड़ रहा हूँ। मैंने पहले कभी ऐसा महसूस नहीं किया था।
मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि वो अविश्वसनीय करतब, मोड़ और घुमाव दिखा सकते हैं! उनकी ज़बरदस्त ताकत, गति और उन पर उतना ही ज़बरदस्त नियंत्रण देखकर मैं अवाक रह गया। कलाबाज़ी की कला में अविश्वसनीय कौशल! ये महज़ प्रशिक्षण से मिलने वाला चमत्कार नहीं है! अंतरिक्ष की विशालता में ये अद्भुत संवाद उच्च प्रतिभा और प्रभावी जादू से उत्पन्न होता है!
उसे होश आया। घना जंगल, जिसमें ऊँचे-ऊँचे रेडवुड, लाल पत्तों वाले मेपल, लाल एल्डर, डॉगवुड, रोडोडेंड्रोन, बर्च, देवदार और अन्य पेड़ थे। उसके बीच से एक घुमावदार सड़क गुज़र रही थी। हमारा घर, एक पहाड़ी के बीचोंबीच। समय क्या हुआ है? गुजी कहाँ चली गई? मेरे मन में कई सवाल उठे; लेकिन वे भैरव की शांति को भंग नहीं कर सके, जो मेरे मन में बसी हुई थी। इसके विपरीत, मैं मन ही मन गुनगुनाने लगी, यह सोचकर उदास थी कि इतना मधुर गीत मुझे इतने समय पहले क्यों नहीं भूला।
दिन का उजाला हुए काफी समय हो गया था। उसने अपनी कलाई पर हाथ फेरा। घड़ी बिना ध्यान दिए ही गिर गई थी। उसने ऊपर देखा और पेड़ों को देखा। पेड़ों की घनी शाखाएँ आपस में उलझी हुई थीं। कितनी तेज़ आवाज़ थी! भैरव का जाप करके सुबह का वातावरण बनाया जा सकता है। वह गुनगुनाने लगी। घर जाकर डफली बजाने का ख्याल मन में आया; लेकिन पहाड़ी पर चढ़कर घर जाना, दरवाजा खोलना, गहरी सांस लेना, फिर डफली निकालकर धुन बजाना – ये सब अब मुमकिन नहीं था। वह बैठ गया और धीरे-धीरे धुन बजाने लगा। उसने अपने मन की गहराई में बसी धुन को अपनी धुन में ढालना शुरू किया और गाने लगा। यह किसी तरह का जुनून या विस्तार नहीं था, उसे यह भी एहसास हुआ कि हम अपनी भावनाओं को शांत करने के लिए गा रहे हैं। जब मैं तर्कपूर्ण और बहस वाले श्लोकों के आधार पर चर्चा कर

रहा था, तो मेरे दिल में यह बात गहराई से उठी कि जो गुरु अपने गायन से इतनी शांति भंग करते हैं, वे अपने व्यवहार से इतनी अशांति क्यों पैदा करते हैं? वह पत्थर की सीढ़ियों से होते हुए घर लौटी। भैरव की धुन अभी भी उसके मन में गूंज रही थी। इससे उसे यह ख्याल आया, मुझे घर पर ही रहना चाहिए था। अगर वे उसे फोन कर देते तो क्या होता? हमने तो आसिरंगा मिशन भी शुरू नहीं किया है। जैसे ही मैं घर में दाखिल हुआ, मैंने सोचा, "ये लोग ऐसे ही बर्ताव करते हैं। इस बार भी उन्होंने वैसा ही बर्ताव किया। अब उनकी उम्र साठ साल है। उन्हीं की हत्या हुई थी।"
उस दिन भैरव ने मुझे शिक्षा दी और मैंने मन बना लिया कि इसके बाद मैं यही करूंगा।
मेरा राज़! अगर आप गाना सीखना चाहते हैं, तो इसी से सीखें, वरना किसी और से नहीं। इससे पहले मैं
हालांकि वे दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते थे, लेकिन वहां नियमित रूप से केवल वाडेकर मां ही पढ़ाती थीं।
कभी-कभी सत्रह-अठारह छात्र इस विद्यालय में आते थे; लेकिन उन्होंने मुझे कभी अकेले उनके सामने बैठकर अपने क्रोध को प्रकट करना नहीं सिखाया। उनकी सभाओं और रेडियो कार्यक्रमों को सुनते हुए मेरे मन में एक विचार बस गया था। वह था, "गु जी, गाओ, गाओ, गु जी!" यह वैसी भावना नहीं थी जैसी कुछ नासमझ बच्चों के मन में होती है। उनके गायन में इतनी शक्ति थी! महान कलाकार, चित्रकार और कला प्रेमी भी यही कहते थे।
अगले दिन, वह ठीक उसी समय गया। वह फूल और फल लेकर गया। उसने उन्हें उनके चरणों में रखा और प्रणाम किया। उसने अपने हाथ उनके सिर पर रखकर उन्हें आशीर्वाद दिया और इस प्रकार चला गया!
वह बैठे-बैठे हंसते हुए बोला, 'मैं गाना सीखना चाहता हूं। मैं संगीत का अर्थ जानना चाहता हूं। तुम ही वह हो।'
मेरा राज़! आप जो भी सिखाएंगे, मैं सीख लूंगा, जितना अभ्यास करने को कहेंगे, उतना करूंगा। इसके बाद मैं कोई परीक्षा नहीं दूंगा। शुद्ध संगीत ही मेरे जीवन भर का सहारा होगा। मेरी प्रार्थना है कि यह काम आप ही करें! शुल्क कितना होगा?

‘मैं विशेष छात्रों से कभी शुल्क नहीं लेता! क्योंकि वे ही तो मेरा नाम रोशन करते हैं! जी हां। अगर कोई मुझे दिल से कुछ देता है, तो मैं मना नहीं करता।’
अनिलभाई ने इस बारे में सोचा और कहा, 'अगर मैं आपको हर महीने पांच सौ रुपये दूं तो कैसा रहेगा?'
‘हमारे गुरुजी एक महान कलाकार हैं। उनकी प्रतिभा अनमोल है! आइए कम से कम उन्हें एक हजार रुपये तो दे दें।’
वे तैयार थे। गुरुजी को देखते ही उन्होंने कहा, ‘क्या मैंने आपको नहीं बताया था कि मैं अपने नाम का सम्मान करने वाले शिष्यों से कोई शुल्क नहीं लेता? आप यह मुझे दे रहे हैं!’
गंडा-बंधन का दिन तय हो गया था। मेरे दोनों भाई, भाभी और माताजी आए हुए थे। मैंने गु जी के चरण धोए, उन पर हल्दी और केसर लगाया, फूल चढ़ाए और उनके माथे पर केसर लगाया। गु जी ने भी मेरे माथे पर केसर लगाया। इसके बाद उन्होंने अपनी दाहिनी कलाई पर काला धागा बांधा।
फोन नहीं है। क्या कोई दुर्घटना हुई है? अस्पताल जल्द ही आने वाला है – वह डरी हुई थी। उसका सीना ज़ोर से धड़क रहा था। उसे तो जेब में नाम का कार्ड रखने का आधुनिक तरीका भी नहीं पता था। क्या उसे कार लेकर गाँव जाना चाहिए? एक महीना बीत गया था। जी हाँ – एक महीना। शुक्रवार से शुक्रवार और फिर तीन दिन बाद सोमवार। पूरे महीने में उन्होंने मुझे पाँच दिन पढ़ाया था। हर बार दो घंटे। वही भैरव मुझे बार-बार अपने विभिन्न अंगों से वही कला दिखाते रहे। वे कान को बार-बार रगड़ते और उसे एक चकाचौंध भरी रोशनी के साथ मेरे सामने रखते! उन्होंने मुझे राग के सटीक स्पंदन बिंदु दिखाए। अगर मैं इसी तरह सीखता रहा, तो मुझे पूरा विश्वास था कि पाँच-छह वर्षों में मैं हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में महारत हासिल कर लूँगा।
‘देखो। लय में गाते समय आवाज इस तरह खुली होनी चाहिए। नहीं तो गंध बाहर निकल जाएगी।’
"दूल्हे की हालत बिगड़ती जा रही है।" यह कहते हुए उसने मेरे दोनों गालों को छुआ और कहा, "चलो।"
मैंने उसे पहन लिया। तंबोरा बजाते समय, मुझे महसूस हुआ कि वह ज़रूरत से ज़्यादा देर तक उंगलियां थामे हुए था और साथ में कह रहा था, 'हम्म! मुझे यहाँ तार का स्पर्श दिख रहा है।' जब मेरी आवाज़ तेज़ होती या कोई तार अच्छे

से बजता, तो कंधे पर थपथपाहट सुनकर मुझे थोड़ी शर्मिंदगी महसूस होती थी।
मुझे यह अच्छा नहीं लगा; लेकिन मुझे यह भी लगा कि ऐसा कहना ठीक नहीं था।
मुंबई के संगीत जगत में यह बात जगजाहिर थी कि गुजी को महिलाओं से लगाव था।
कुछ साल पहले, वह एक छात्रा मनोहरी दास के साथ समय बिताने के लिए मुंबई छोड़कर चले गए थे और साढ़े तीन साल बाद उससे झगड़े के बाद वापस लौटे। इस बार, सभी अखबारों ने यह खुलासा कर दिया।
इस बारे में बहुत चर्चा हुई। उसके बाद, वह अपनी पत्नी और बच्चों को छोड़कर दो लट्टे पीने के लिए दासी के पास चला गया।
वे उनके साथ रह रहे थे। उनमें से एक लैटिन शैली में चल रहा था; लेकिन उसने एक बात समझ ली थी। सभी छात्रों का मानना था कि गुरु किसी पर ज़बरदस्ती नहीं करते थे। जब कलाकार चला गया, तो उन्होंने अपनी कुछ तस्वीरें खींचीं।
वे तैयार हैं। लेकिन अगर कोई दूसरों को स्वीकार्य तरीके से व्यवहार करता है तो इससे मुझे क्या फर्क पड़ता है? अगर हम इस मामले में अतिवादी रुख अपनाते हैं, तो कला के क्षेत्र में टिके रहना असंभव हो जाएगा।
हाँ। यह 31 वां दिन था। सोमवार की सुबह, मैं अपने डफली के साथ गाना शुरू करने की तैयारी कर रहा था।
गु जी ने बोलना शुरू किया, 'तो? मधुमिता, पढ़ाना कैसा लगता है?'
‘बहुत बढ़िया! आप तो बहुत कुछ सिखाते हैं! कोई और शिक्षक छात्रों को इतना अच्छा नहीं सिखाता!’ मैं दिल खोलकर हँस पड़ा। इसमें ज़रा भी अतिशयोक्ति नहीं थी।
मैं वही दे रहा हूँ जो मेरे पास है, है ना?
‘हां, गु जी!’
"तो क्या आपको भी अपने पास जो कुछ है उसे इस व्यक्ति के साथ साझा नहीं करना चाहिए?"
‘मैं तुम्हें क्या दे सकता हूँ? बताओ, गु जी। मैं तुम्हें दूंगा।’ मैं अचानक रुक गया। उसके शब्दों में समझदारी का कोई संकेत नहीं था।
मुझे शक हो रहा था कि मैं कुछ गड़बड़ कर रहा हूँ।
लेकिन उसके चेहरे पर खुशी झलक रही थी। उसकी आँखों में इच्छा स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। एक पल मुझे लगा, मुझे स्पष्ट कर देना चाहिए, मेरा मतलब किसी बुरे इरादे से नहीं था। फिर मैंने सोचा, मुझे जाकर इस अर्थ को क्यों बताना चाहिए? अगर बात बिगड़ती है, तो हम इसे कहीं और मोड़ सकते हैं।

उन्होंने आगे कहा, ‘अच्छी तरह समझ लो। मैं तुम पर दबाव नहीं डाल रहा! तुम एक अमीर परिवार से हो। कोई भी तुम पर यह आरोप नहीं लगाएगा कि ‘उसने हमारी बेटी को बर्बाद कर दिया’। बस इसे अपने तक ही रखो। जैसे मैं तुम्हें बिना किसी रोक-टोक के देता हूँ, वैसे ही अगर तुम भी खुलकर दोगी, तो तुम्हारा उत्साह और बढ़ जाएगा! जो मैंने तुम्हें एक महीने में दिया है, उतना तो कोई बड़ा नामी शिक्षक भी पाँच साल में नहीं दे पाता। चालीस साल की उम्र के बाद भी वह अपना आपा नहीं खोता!’
उन्होंने अपनी बात स्पष्ट रूप से कह दी थी। गलतफहमी का कोई संकेत नहीं था। मैं सिर झुकाए बैठा रहा, उनकी ओर देखने से बचता रहा।
उन्होंने आगे कहा, ‘इसे कोई नहीं समझेगा। सुबह दस बजे से आगे
शाम चार बजे तक यहां कोई नहीं आता। अगर कोई आ भी जाए, तो अगर आप इस कमरे में ही रहेंगे, तो कोई नहीं समझेगा। कई दिनों तक बिना सोए रहने का कोई डर नहीं है।'
मेरा शरीर पूरी तरह थक चुका था। एक तरफ तो मुझे पसीना भी आ रहा था। मैं कहना चाहता था कि मैं न तो पढ़ाना चाहता हूँ और न ही संगीत बजाना चाहता हूँ और चला जाना चाहता था; लेकिन मेरे शरीर में अब कोई ताकत नहीं बची थी। उन्होंने कहा, 'ठीक है! इस बारे में सोचो और मुझे बताओ। मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ, कोई ज़बरदस्ती नहीं है। प्यार ज़बरदस्ती से पैदा नहीं होता। लेकिन मैं तुम्हें एक बात बता दूँ, मैं तुम्हें पैसे के लिए नहीं सिखा रहा हूँ। जो लोग तीन घंटे के कार्यक्रम के लिए पचास हज़ार रुपये लेते हैं, उनकी नज़र में एक हज़ार रुपये महीना कुछ भी नहीं है। वो भी घंटों की गिनती किए बिना। मुझे तुम्हें सिखाने का मन इसलिए हुआ क्योंकि मैं तुमसे प्यार करता हूँ। तुम मेरे लिए उतने खास नहीं हो,'
मुझे तो इस पल के लिए गाना गाने का मन हुआ। आपके दिल में भी वैसी ही शांति है।
अगर आपके अंदर भावनाएं हैं तो गाना सीखिए। जी हां! समय बर्बाद मत कीजिए। लव सा-’
मैंने डफली के तार बजाने शुरू किए, लेकिन कोई आवाज़ नहीं निकली। ऐसा लगा जैसे मेरे गले में कुछ अटक गया हो। निगलने के बाद भी मेरा गला साफ नहीं हुआ। मैं अपना सिर भी नहीं उठा पा रहा था।
वे उसकी ओर देखना नहीं चाहते थे। उन्होंने राग-वितार गाना शुरू कर दिया।

उन्होंने बोलना शुरू किया, फिर बोले, ‘उषा राग तीन तालों में एक ही बात सिखाता है। जाग जाओ मोहन यारे। तुम्हें यह जानना ही होगा। क्या यह परियेला था, है ना? उषा राग इसे विस्तारित करना सिखाता है। तुम जोड़-तना भी सीखोगे। एक राग में, अलग-अलग तालों में ये पाँच अलग-अलग चीजें सीखी और उनमें महारत हासिल की जाती है ताकि राग की धुनें और ऊपरी समूह पूरी तरह से ज्ञात हो जाएँ। इसके साथ-साथ रियाज भी करना चाहिए। कुछ महीनों में भैरव में महारत हासिल हो जाएगी, उसके बाद तुम भैरव के प्रकार सीखोगे।’
मुझे शायद असहज महसूस हो रहा था क्योंकि मैंने अपना सिर नीचे रखा और कुछ नहीं बोला।
ठीक है! गुरुवार को आ जाना। अगर मन करे तो और भी जल्दी आ जाना। मैं उठ गया। हमेशा की तरह, जाते समय मैंने उनके पैर छुए; लेकिन उसमें सम्मान का कोई भाव नहीं था।
बत्तियाँ बुझी हुई थीं, इसलिए मैं चलने लगी। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। चांग परिवार में बड़े-बुजुर्ग कहते हैं कि लड़कियों को संगीत, नाटक, नृत्य जैसी कलाओं में नहीं जाना चाहिए। मैं इन्हें एक राज़ मानती हूँ; लेकिन मैं कभी भी इनके प्रति इतनी आकर्षित नहीं हुई। उनका चेहरा! उनके घने बाल, चमकीले रंग में रंगे हुए, उनके पीछे बिखरे हुए! रंग भी हर जगह एक समान नहीं लगा है। जिन दिनों वे दाढ़ी नहीं बनाते, उनकी दाढ़ी के छोटे-छोटे बाल सफ़ेद दिखते हैं। हारमोनियम बजाने वाले की उंगलियों को देखें तो उनके हाथों और पैरों पर निशान साफ़ दिखाई देते हैं। सालों तक तंबाकू के सेवन के कारण। मेरे दांत काले हो गए हैं। मेरी यादें धुंधली पड़ रही हैं। मैंने फैसला कर लिया है, मुझे यह संगीत नहीं चाहिए और मुझे पढ़ाई भी नहीं करनी!
बस का इंतज़ार करते हुए मेरी आँखों से बार-बार पानी आ रहा था। घर लौटने के बाद खाना-पीना हमेशा की तरह लाउंज में बैठकर ही होता था। उस दिन मेरा कुछ खाने का मन नहीं था; पर अगर खा भी लेती तो माँ मुझसे सवालों की बौछार कर देती, 'क्यों? क्या हुआ? सब ठीक है?' मैं क्या कहूँ? मैं इतने दिनों से इतनी परेशान थी, अब इस बारे में क्या कहूँ?
बिस्तर पर लेटने के बावजूद मुझे नींद नहीं आई। चाय मिलने के बाद मैं डफली लेकर बैठ गया; लेकिन गाय नहीं मानी। मैंने अपना चेहरा छुपाकर सोने की कोशिश की; लेकिन

ऊपरी भाग नहीं हिला। आँखों के सामने दिख रही छह भुजाओं वाली आकृति के स्थान पर, सामने की दीवार दिखाई देने लगी।
सामने की दीवार पर गुजी की एक तस्वीर लगी थी। यह इलस्ट्रेटेड वीकली के संगीत विशेष अंक में प्रकाशित हुई थी। एक सभा में गाते हुए उनकी तस्वीर। आंखें आधी बंद। मंदिर में उनके चेहरे के भाव। दैनिक ध्यान के दौरान यह भाव कितना जीवंत होता था! लेकिन इस व्यक्ति का अंतर्मन कितना नाजुक है!
उसने आँखें बंद कीं और डफली बजाना शुरू किया; लेकिन ऐसा लगा जैसे वो सुर में नहीं बज रही थी। डफली के खूंटे चार-छह बार मुड़े हुए थे, और जोर लगाने के बाद भी डफली से मनचाही आवाज़ नहीं आ रही थी। थककर उसने डफली को एक तरफ रख दिया और हारमोनियम को अपने सामने रख लिया। पहली बार गाते हुए उसे ऐसा महसूस हुआ कि उसका अंतर्मन धुन से मुक्त हो रहा है।
मुंबई में पली-बढ़ी होने के बावजूद, मैं आज भी पारंपरिक मूल्यों में विश्वास रखती हूँ। आपके कारोबारी परिवार का माहौल भी पारंपरिक है। विद्या की तुलना में मेरे भाई आधुनिक हैं। मेरी बहन गाना सीखने के लिए उत्सुक रहती है और बिना नाचने की कोशिश किए ही मेरी बात समझ जाती है, जो आधुनिकता की निशानी है। उन्हें अपनी बहन पर कितना भरोसा है!
मुझे थ्रिलर फिल्मों जैसी मनोरंजन शैली कभी पसंद नहीं आई। सिनेमा, उसके गाने, उसके सतही नृत्य, ये सब मुझे पाँच मिनट के लिए भी बर्दाश्त नहीं होते थे। यही मेरी सोच थी।
यह एक स्वाभाविक चुनाव था। मैंने कभी यौन संबंधों के बारे में सोचा भी नहीं था, चाहे वो शादी से पहले के हों या शादी के बाद के। जब कोई किसी के शरीर पर कब्ज़ा कर लेता है तो नैतिकता का क्या अर्थ रह जाता है?
किसने कहा कि गाना सीखना ज़रूरी है? जिनके पास गाने के लिए कान या गला नहीं है, वे भी सुखी जीवन जी सकते हैं। अपने जीवन में आनंद लाना और उस आनंद को दूसरों के साथ बाँटना ही सच्ची नैतिकता है! अगर हम इस नैतिकता को खो देंगे, तो हमें किस तरह का सुख मिलेगा?
उसके दाहिने हाथ की उंगलियां हैम्स्टर के चावल को दबा रही थीं। काले पंचकोणीय तारे और धीमी गति से घूमते पंचकोणीय तारे से दाहिनी उंगलियां थोड़ी हिल रही थीं। दोपहर बीतने के साथ-साथ भैरवम की यादें मेरे मन में गूंजती रहीं।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

बड़े परिवार की बेटी होकर, क्या तुम गु से बहस करने आई हो? यहाँ तो सिर्फ गुस्से में ही झगड़े और बहस होती है। अगर इस तरह बहस शुरू हुई, तो सब व्यर्थ हो जाएगा। मैं तुम्हें फिर से बता रहा हूँ, मुझे तुम पर कोई ज़बरदस्ती नहीं है।’
मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। मुझे लग रहा था जैसे मुझमें कुछ गड़बड़ है, या पता नहीं क्या। बिना कुछ समझे, मैं अचानक खड़ी हो गई और अपना बैग उठा लिया। मन में उमड़ रहे हज़ारों जवाबों को ज़बान पर आने दिए बिना, मैंने उसे घूरकर देखा और बाहर निकल गई। स्टॉप बटन दबाते ही मेरी आँखों से आँसू बहने लगे।
बस स्टॉप पर आते हुए मुझे लगा कि मेरा व्यवहार बहुत कठोर हो गया है। क्या मुझे वापस जाकर बिना पैर छुए भीख मांगनी चाहिए? मैंने बहुत कठोर लहजे में बात की। फिर भी, जाते समय पैर न छूना एक बड़ी गलती थी। वे क्या कहेंगे? उन्हें जाने दो। जब वे तय कर लेते हैं कि वे इससे सबक नहीं लेना चाहते, तो भीख मांगने का क्या फायदा?
अगर मैं इतनी जल्दी घर चला जाऊँगा तो लोग पूछेंगे, 'क्या क्लास इतनी जल्दी खत्म हो गई?' इसलिए मैंने शिवाजी पार्क में दो घंटे बिताए और घर लौट आया। रात के खाने के बाद आराम करते हुए मुझे उनकी कही बात याद आई, ‘मैं बिल्कुल भी मजबूत औरत नहीं हूँ’। आज भी उन्होंने उसे ‘बड़े खानदान की बेटी’ कहकर संबोधित किया था! और ‘मजबूत औरत नहीं’ का मतलब क्या है? क्या वह उसे ‘मैं चाहूँ तो मजबूत बन सकता हूँ’ जैसे असभ्य तरीके से कहना चाहते हैं? चाहे कुछ भी हो जाए, इस रास्ते पर चलने का कोई फायदा नहीं है। पूछताछ करने वाली माँ और भाभी को यह बताने के बाद कि वह एक बदमाश है, उन्होंने रेवती भाभी से एक और उपन्यास पढ़ने को कहा। रेवती भाभी भी एक समान रुचियों वाले दोस्त से मिलकर खुश हुईं, ‘इसे पढ़ो! यह कल के उपन्यास से बेहतर है!’
लेकिन पंद्रह-बीस पन्ने पढ़ने के बाद मुझे ऊब महसूस होने लगी। आँखें बंद करके डफली बजाने का रोमांच, गाने का भाव, गाने का आनंद, इनमें से कुछ भी मुझे यहाँ महसूस नहीं हुआ। हालांकि, गाने का आनंद तो हृदय में होता है। गाते समय हृदय से निकलने वाले आनंद का अनुभव किया जा सकता है।
मैंने किताब एक तरफ रख दी। मैंने डफली उठाई और उसे बजाना शुरू कर दिया। इस वादन से उत्पन्न कंपन ने मेरे मन को असीम प्रसन्नता से भर दिया। कुछ देर बाद, मेरे गले से एक ध्वनि निकली और भैरव राग की सुबह की शांति अचानक चारों

ओर बिखर गई! यद्यपि मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं वही गीत दोबारा गा रहा हूँ, फिर भी मैंने भैरव राग को बहुत धीमी गति से गाना शुरू कर दिया। एक घंटे तक गाने के बाद, मेरा क्रोध शांत हो गया और मेरा मन शांति और संतोष की अवस्था में पहुँच गया।
रात में मुझे लगा कि वो अपनी पत्नी और बच्चों से दूर रह रहा है, ज़रूर अनजाने में कुछ हुआ होगा। मुझे ये बात क्यों रखनी चाहिए? वैसे भी, वो तो ‘कोई मजबूरी नहीं’ जैसी बातें भी कह रहा है, है ना? मैं मन ही मन इतनी खुश थी कि उसके पैर छुए बिना ही चली गई, पर मैं गलत थी। मुझे तुरंत मदद मांगने का मन हुआ, लेकिन मुझे याद आया कि वो रात में छत पर नहीं होता। अगर कोई काम नहीं होता, तो वो अपने दोस्तों के साथ शतरंज खेलने चला जाता है।
इसी मनोस्थिति में शुक्रवार, शनिवार और रविवार बीत गए। सोमवार श्रद्धांजलि अर्पित करने का दिन था। मैंने श्रद्धांजलि अर्पित करने, माफी मांगने और वहां से चले जाने का फैसला किया।
जब मैं वहाँ पहुँचा, तो वह सोफे पर बैठकर चाय पी रहे थे। मैं उनके पास गया, विनम्रतापूर्वक झुककर प्रणाम किया और उनके सामने एक हजार रुपये का बटुआ रख दिया। उन्होंने उसे लिया और अपनी जेब में रख लिया। मैंने कहा, 'मैं गुरुवार को अचानक उठकर चला गया था!'
वह धीरे से हँसे। ‘मुझे सब पता है!’ या ‘मुझे पता था तुम यही करोगे’? मैंने हमेशा की तरह अपने डफली के साथ गाना शुरू कर दिया। वह उठे नहीं और बिना उठे ही ‘हम्म-’ कहते रहे। वह बीच-बीच में विद्वान भाव से निर्देश देते रहे। उन्होंने मुझे कुछ दिखाया नहीं, यहाँ तक कि कुछ नया भी नहीं सुझाया। मुश्किल से आधा घंटा ही बीता होगा। वह उठे और बोले, ‘मुझे बाहर जाना है। मैं नहाने जा रहा हूँ। मुझे जाने दो। मैं कुछ पी लूँ।’ नल की आवाज़ आती रही। एक घंटे बाद, वह बाहर आए और बोले, ‘अच्छा चल रहा है। ऐसे ही अभ्यास करते रहो!’ वह हाथ में चावल का कटोरा और एक थैला लिए वहीं खड़े रहे। मुझे नंगे पैर उठना पड़ा।
जब मैं बस में चढ़ रहा था, तो मैंने मन ही मन सोचा, "शायद यह वाकई काम है। हर ट्रेनिंग ऐसी ही होती है, यह किस तरह का रिकॉर्ड है?"
इस घटना के बाद, उन्होंने पहले की तरह उत्साह से पढ़ाना बंद कर दिया। उन्होंने कहा:

मैंने गाना नहीं गाया। मैंने तुम्हें कुछ नया नहीं सिखाया। मैंने तुम्हें कोई सीमा तय करके ताल नहीं दिखाई। मैं बस यही पूछती रहती, 'गाना कैसा चल रहा है?' मैं डफली उठाती और धुन बजाना शुरू कर देती और कहती, 'वाह-वाह! बहुत बढ़िया!' जब मैं पूरे दिल से गा रही होती, तो रुक जाती और दो-चार बहुत ही बुनियादी निर्देश देती और कहती, 'हम्म - अपना गाना शुरू करो। मैं सुन रही हूँ -' और अंदर चली जाती।
ऐसा पांच बार हुआ। जरा भी प्रगति नहीं हुई। दो महीने बीत गए। समय-समय पर वे कार्यक्रमों के लिए दिल्ली, भोपाल, बनारस, कलकत्ता आदि आते रहते थे।
इसका मतलब है कि क्लास छूट गई और वे अगले दिन फोन नहीं करते।
एक बार मुझे डर लगा और मैंने कहा, "मैं एक ही काम करते-करते थक गया हूँ।" अरे! क्या आप जानते हैं कि मैंने प्रत्येक राग को सीखने में कितने साल बिताए हैं? एक राग की मूल बातें सीख लेने के बाद, दूसरा राग सीखना आसान हो जाता है। शास्त्रीय संगीत क्या होता है? यह कोई शौक नहीं है! इसके लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है! निरंतर तपस्या की! मैं समझता हूँ कि आप किस स्तर पर हैं। यदि आप सही स्तर पर पहुँच जाते हैं, तो मैं आपको अगला राग सिखा दूँगा। चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है!
उन्होंने मेरे सिर पर हाथ फेरा और चले गए।
उन्होंने दो महीने पहले तीन रंगों वाला पनीर बनाना सीखना शुरू किया था।
उन्होंने कहा था कि वे एक राग में अलग-अलग लय में अलग-अलग चीजें सिखाएंगे।
बाद में उन्होंने कहा कि अगर वे उसके साथ अभ्यास करेंगे, तो वह राग सीख जाएगी। मैं उसे ये सब बताना और याद रखना चाहती थी; लेकिन राज़ बना रहा।
क्योंकि गुजी अंदर चली गई थी।
दो महीने इसी तरह बीत गए। वह गाते-गाते इतना थक गया था कि उसकी सारी ऊर्जा खत्म हो गई थी। गाने में अब कोई जान नहीं बची थी। अंत में उसने कहा, 'अगर तानों का अभ्यास अलग-अलग गति और लय में गाकर किया जाए, तो राग की लय और उतार-चढ़ाव स्पष्ट हो जाते हैं। क्या यह सही नहीं है?'
अपने चेहरे पर कृत्रिम मेकअप लगाते हुए उसने सोचा, 'यह क्या है? वाह! वाह! कितना चालाक तरीका है! जो भी इस रास्ते पर चलेगा, वह सिर्फ उसकी गायन शैली को देखकर ही एक महान गायक बन सकता है!'
हालांकि मुझे इस असभ्य टिप्पणी पर गुस्सा आया, लेकिन मैंने अपना संयम बनाए रखा और कहा, "यह तो तुमने ही कहा था।"

मुझे याद है, बस इतना ही। मैं गु जी से पूछने की हिम्मत कैसे करूँ? अगर कुछ गलत हुआ तो?
"माँ पूछती है।"
अरे वाह! क्या बात है! पूर्वजों ने कहा है कि अगर कोई आपको कोई अच्छी बात बताए – चाहे वह एक छोटा बच्चा ही क्यों न बताए – तो आपको उसे सुनना चाहिए। यही हमारी परंपरा है!’ उन्होंने जरा भी विनम्रता खोए बिना हँस दिया।
आप इसके बारे में क्या कह सकते हैं?
अगले पाठ के दौरान, डफली बजाते हुए उन्होंने कहा, 'सुश्री मधुमिता, मैंने आपकी प्रगति के बारे में बहुत सोचा है! आपको कम से कम दो और वर्षों तक अपने कौशल को निखारने की आवश्यकता है। इसके बाद ही आपके लिए मुझसे सीखना आसान होगा। मैं इस बारे में मास्टर वाडेकर को बता दूंगा। मुझे भी कभी-कभार कुछ दिक्कतें आएंगी! आप मेरी प्रिय शिष्या हैं।'
मैं इससे सीखूंगा। हम दोनों का सीखने का तरीका एक जैसा है, इसलिए हम जारी रखेंगे।
आपको मुझसे सीखने में कोई परेशानी नहीं होगी।
ये तो नरमी से बात करके बदला लेने का तरीका है! तुमने मेरी बात नहीं मानी – अब मैं तुम्हें कुछ नहीं सिखाऊंगा, वो ऐसी भाषा में कह रहा है जिसे मैं समझ सकता हूं। यहां तक कि वाडेकर भी शिक्षकों की ताकत जानता है। अगर इसके बाद भी हमारी बहस हुई तो वो मन ही मन और भी गुस्सा हो जाएगा और मीठी-मीठी बातें करता रहेगा।
मुकट को ऐसा लग रहा था जैसे वह घर लौट रहा हो, क्योंकि मुंबई जैसे बड़े शहर में आने का उसका एकमात्र कारण यही था।
क्या सच में पैसे कम हो गए? क्या इस महीने आठ छात्रों के लिए मिलने वाली धनराशि घटकर एक हजार रुपये रह गई है? एक कक्षा के लिए सौ रुपये! अगर इसे और भी बढ़ाना पड़े, तो व्यर्थ नहीं जाना चाहिए।
यह काम नहीं करेगा।
आपकी आर्थिक स्थिति में क्या कमी है? बाबूजी ने खारला में पांच एकड़ जमीन आपके नाम पर रखी है। कावाबाटा के क्षेत्र प्रबंधक वहीं रहते हैं।
इसके लिए कंपनी हर महीने चालीस हजार रुपये इकट्ठा करती है। यह पैसा बैंक में जमा किया जाता है।

पैसा इसी खाते में जमा होता है। अनिलभाई सब कुछ देखते हैं। वो मुझसे कहेंगे कि मेरा काम सिर्फ इस पर हस्ताक्षर करना है। इस खाते से कोई पैसा नहीं निकालता, यहाँ तक कि मेरे खर्चों के लिए भी नहीं। इसी वजह से सारा बैलेंस बना रहता है।
इस पोस्ट में खुद को 'बड़े घर की बेटी' बताया गया है। क्या उसने सारी जानकारी निकाल ली है? छोड़ो इसे! जब यह अप्रासंगिक हो गया है, तो हम इसके बारे में क्या कर सकते हैं?
मैं ही नहीं, बल्कि शिव-मातुंगा-महीम-वडाला क्षेत्र में हर कोई दादर में विनायकराव मिराजकर द्वारा संचालित 'सुर-गांधव विद्यालय' के बारे में जानता था। वहाँ तबला, हारमोनियम और गायन की शिक्षा दी जाती थी। उन्होंने अब्दुल करीम खान साहब के शिष्य पनांडीकर से शिक्षा प्राप्त की थी। उन्हें संगीत का गहरा ज्ञान था और इसी कारण वे संगीतकार बने।
उन्हें इस नाम से भी जाना जाता था। हालाँकि वे ज़्यादा कार्यक्रम आयोजित नहीं करते थे, लेकिन महान गायकों के साथ संगीत पर चर्चा करने की उनकी एक परंपरा थी।
उस घर में मिरीजकर और उसकी पत्नी रहते थे। सभी को पता था कि पति गाने सिखाने के लिए ढोल किराए पर लेता था।
मैं उस समय जांच करने गया था।
‘परेल से बी.ए. पूरा किया। पश्चिम बंद्या के ‘वरवेधाम’ में पाँच साल तक पढ़ाई की। आप मुझे आगे पढ़ाने आए हैं। दादर में रहते हैं।’
‘तो फिर आपने मोहनलाल से और अधिक सीखने के लिए क्यों नहीं गए?’
"जब घर इतना पास है तो इतनी दूर जाने की क्या जरूरत है?"
वाह! आप तो बड़े होशियार हैं! क्या मैं आपको बताऊँ कि आपके मन में क्या चल रहा है? उस्ताद वाडेकर के पास उच्च कोटि का गायन सिखाने की क्षमता नहीं है। जो कलाकार हर दिन कार्यक्रम देने के लिए यात्रा करते हैं, वे एक जगह रहकर ठीक से सिखा नहीं सकते। मोहनलाल भी यही कर रहे हैं! क्या यह सच है या नहीं?’ उन्होंने अपने नकली दांत दिखाते हुए मुस्कुराया। मैंने भी सिर हिलाया, इस बात से संतुष्ट होकर कि मैंने यहाँ तक पढ़ लिया है।
‘हम्म – मुझे दिखाओ। क्या तुम डफली बजा सकते हो या मुझे बजाना चाहिए?’ मैंने अपना डफ उठाया और भैरव राग की कुछ पंक्तियाँ बजाईं। उन्होंने आश्चर्य से पूछा, 'और कितने राग हैं?'

बस इतना ही! इसमें तो पनीर और मक्खन भी नहीं है।
‘तुम्हें यह किसने सिखाया?’
‘मोहनलाल जी एक कार्यक्रम में आए थे। मैंने कैसेट सुनकर इसके बारे में जाना।’
उन्होंने पानी नीला से कहा, 'अगर तुम 'पहिलंस ना एकल' जैसी कैसेट सुनो और कोई गाना सीखने जाओ तो क्या होगा? चलो, मैं तुम्हें सिखाता हूँ—' आखिरी गाना मेरे लिए बहुत रोमांचक था।
जल्द ही यह बात सामने आई कि उनमें विज्ञान की व्याख्या करने की अद्भुत क्षमता थी। गुजी के प्रति उनके इस लगाव के कारण उनकी संगीत प्रतिभा को थोड़ा अधिक सम्मान दिया जाने लगा; लेकिन इस बार यह प्रतिभा उनके हाथ नहीं आई। वे सप्ताह में दो दिन और एक हजार बार प्रस्तुति देते थे।
पाये फी थार्ली। गु और गुप नीना के चरणों में लौट आए।
अगले दिन, बारह बजने में ग्यारह मिनट बाकी थे। मुझे घर पर बताया गया, ‘मोहनलाल जी इस साल बहुत व्यस्त हैं। इस महीने उनके कई दौरे हैं। उन्होंने कहा कि मैं अगले साल ठीक से पढ़ाई करूँगी। तब तक मैं अपनी पढ़ाई में कोई रुकावट नहीं आने दूँगी, इसलिए मैं मिर्जाकरबुवा जाऊँगी।’ इसमें कोई बुराई नहीं है।
वहां जाने के पंद्रह दिनों के भीतर ही मुझे अपने पिता की कमियां स्पष्ट रूप से दिखने लगीं। वह एक कुशल गायक नहीं थे, लेकिन उनके करीबी लोग उनकी रक्षा करने के लिए आते थे।
सब लोग उन्हें 'बुवा' कहकर बुलाते थे। इसीलिए तो वो इतने अच्छे थे! संगीत जगत का पूरा इतिहास उनकी जुबान पर था। कौन मुंबई आया, कहाँ आया, किसकी सभा हुई, कहाँ आया, सब उन्हें पता था।
संगठन का समर्थन किसने किया, किस संगठन की स्थापना का कारण कौन था, ये सभी विवरण संगठन के वर्ष, तिथि, माह और मृत्यु के समय दर्ज थे। ‘उस समय, स्वतंत्रता से पहले या संतक झा, बोरीवली और दादर मुंबई के उपनगर माने जाते थे। उस समय मुंबई में सी.जे. हॉल में गायन सभाएँ होती थीं। इसके अलावा, गिरगांव में अवंतिकाबाई गोखले हॉल, ट्रिनिटी लैब थे। गिरगांव में ही देवधर द्वारा स्थापित भारतीय संगीत विद्यालय था। देवधर ने ही मुंबई में महान गुलाम अली, कुमार गांधव, आमिर खान को प्रसिद्धि दिलाई! एक बार बृजनारायण ने पोटदार कॉलेज परिसर में एक बड़ा संगीत सम्मेलन आयोजित किया

था। उस समय, ज़मीन पर बैठे श्रोता तालियाँ बजाते थे, ‘वाह! क्या कहानी है!’ उस समय ता की रचनाएँ नहीं थीं। फिर दबाव आया और ता की रचनाएँ आईं। परिणामस्वरूप, आपके संगीत का शुद्ध, शांतिपूर्ण वातावरण नष्ट हो गया!’ 1969 में, निन्या-सागर पंचांगवा ने एक शादी के अवसर पर आपके घर पर लताफत हुसैन साहब की एक सभा आयोजित की थी - उस अवसर पर खान साहब ने क्या राग चुना था! -' वे अक्सर ऐसी बातें किया करते थे।
बुवा एक संगीत शिक्षक थे जिनके पास अपार ज्ञान था। उन्हें सभी रागों, उनके विज्ञान, उनकी भाषा, उनका इतिहास, उनकी जातियों, उपजातियों और वंशों का ज्ञान था।
मुझे पता था। उनमें भातखंडे द्वारा संपादित पुस्तकों में सूक्ष्म खामियों को ढूंढने और इंगित करने की क्षमता थी; लेकिन वे स्वयं गायक नहीं थे। अपनी अच्छी गायन प्रतिभा के कारण वे राग-वितार और ताना-वीणा गाते थे; लेकिन जल्द ही उनका
पूंजी कम पड़ जाती। वह किसी राग को विस्तारित करने के तरीके को विस्तार से समझाते, लेकिन उसे विस्तारित करने का तरीका नहीं दिखाते। वह अब्दुल करीम खान द्वारा किसी राग की प्रस्तुति, फैयाज खान साहब द्वारा की गई प्रस्तुति और बड़े गुलाम अली साहब द्वारा किए गए परिवर्तनों के बीच का अंतर दिखाते। किसी भी पूर्ण राग में केवल सात वार होते हैं। षडव राग में छह और ओडव राग में पाँच वार होते हैं। इस श्रेणी में गायन करते समय पुनरावृत्ति अपरिहार्य है; लेकिन एक प्रतिभाशाली कलाकार इस श्रेणी में ऐसी रचना प्रस्तुत करता है। अप्रत्याशित रूप से, वह इसमें सूक्ष्म बारीकियों को उजागर करता है। एक ही वार-पथ में गायन करते हुए, वह गति, भार और एकाग्रता में परिवर्तन करके विभिन्न भावों का सृजन करता है और पुनरावृत्ति के प्रभाव को पूरी तरह से समाप्त कर देता है। चाहे कुछ भी हो जाए, इसी जादुई वातावरण में संगीत का निर्माण होता है। इस संदर्भ में, महाविद्यालय के प्रोफेसर ने कहा, 'शब्दों के अर्थ को इच्छानुसार बदलने की शक्ति केवल कवि में निहित है। लेकिन विज्ञान शब्दावली में निहित है।'
एक सच्चा कलाकार एक ही षड्ज, एक ही ऋषभ, एक ही गंधार, एक ही पंचम, मध्य स्वर को लेकर, उसी क्रम को बनाए रखते हुए और शास्त्र के सभी नियमों का पालन करते हुए एक विशेष भाव का सृजन करता है! वह प्रत्येक राग में वरों की एक अनूठी

और संपूर्ण व्यवस्था बनाता है जिससे प्रत्येक वर अलग-अलग सुनाई देता है। यहीं पर अनंतता की अभिव्यक्ति होती है।
मुझे जल्द ही एहसास हो गया कि अगर मैं मिर्जाकर बंधुओं के मार्गदर्शन में शिक्षा प्राप्त करता, तो मैं इस अनंतता को देख नहीं पाता। मेरी गायकी का विकास नहीं होता। मैं अपनी पूरी क्षमता तक नहीं पहुँच पाता। ज़्यादा से ज़्यादा, मैं गायकी में उस्ताद बन जाता। मैं गायक नहीं हूँ।
फिर मुझे मोहनलाल की शिक्षाएं याद आने लगीं। वो भैरव जो उन्होंने मुझे सिखाया था! शादी के हर छोटे कदम पर उन्होंने जो भावों का प्रवाह दिखाया था! अभ्यास करते हुए मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने यह अनुभव स्वयं अनुभव किया हो और मैं पूरी तरह से चकित रह गई। इसने मुझे एक अलौकिक ऊंचाई तक पहुंचा दिया। उन्होंने धुन की समग्रता, उसके अनंत विस्तार की एक कल्पना रची थी। इस कल्पना में निहित तनाव
भले ही वह अब प्रसिद्धि की सुर्खियों में नहीं थीं, फिर भी जब मैं वह राग गा रही थी, तब भी वह मेरा मार्गदर्शन कर रही थीं। उस माहौल में गाते हुए, यह दृढ़ विश्वास कि 'आज मैं भी ऐसा ही कदम उठाऊंगी!' मेरे मन को हौसला दे रहा था।
अब वो मौका हाथ से निकल गया था, मेरा दिल गम से भर गया था। मुझे किसी चीज़ में कोई दिलचस्पी नहीं थी। गायन छूट जाने से, जीवन की छोटी-छोटी चीज़ों में भी मेरी रुचि खत्म हो गई थी। इतना ही नहीं, मुझे अपनी सबसे तुच्छ चीज़ों से भी प्यार हो गया था। अब मुझे अपनी माँ, भाइयों और भाभी से बात करने का मन नहीं करता था। मुझे अपने छोटे भाई-बहनों के साथ खेलने में भी आनंद नहीं आता था। मुझे ऐसा लगता था कि मैं जो भी राग गाऊँ, उसे इस अनोखे संगीत की रोशनी में ही गाऊँ, लेकिन मुझे ऐसा लगता था कि कोई आएगा और मुझे अलग ले जाएगा; लेकिन
इस सब के बावजूद, मेरे मन में यह सवाल उठ रहा था, 'क्या वह मुंबई जैसे बड़े शहर में इतना प्रतिभाशाली है?'
क्या यहाँ कोई और नहीं है?
उन्हें इसका जवाब भी पता था। हैं तो सही; लेकिन हर एक की अपनी अलग विशेषता है। हर परिवार अलग होता है। इस परिवार की विशेषताएँ दिल को छू जानी चाहिए। लेकिन गुजी का गीत तो सीधे दिल को छू जाता है! पता नहीं उन्होंने इसे कहाँ से सीखा होगा! या फिर यह महज़ एक मज़ाक है? क्या यह गहन आध्यात्मिक साधना

का परिणाम है? किसी और के गीत में यह शक्ति नहीं है! इतनी ऊँची आवाज़ में गाने की प्रतिभा तो उनमें है ही नहीं! गाँव-गाँव घूमकर शिक्षा देने वाले प्रतिभाशाली लोग और कहाँ इतनी मेहनत कर पाते हैं? यह सब याद करके मेरा दिल उदासी से भर गया।
एक दिन वह लोकल ट्रेन से चर्चगेट गई। जब वह ‘रिदम हाउस’ पहुंची और मोहनलालजी की कैसेट के बारे में पूछा, तो उसने एक विभाग की ओर इशारा किया। राग-ताल-साथीदार जैसी कोई भी जानकारी देखे बिना, उसने चौदह-चार कैसेट खरीदीं और घर आ गई। उसने कमरे का दरवाजा बंद किया और अपने हाथ में आई कैसेट लगाई। भूपली। वाह! क्या आवाज है! वह खूबसूरत आवाज जो दिल को अपनी मधुरता से भिगो देती है! वह किस तरफ आराम कर रहे हैं और उनकी परछाई कहां है?
दूल्हे को इस बात का एहसास ही नहीं होना चाहिए कि वह गिर गया है!
शाम होते-होते मैंने ये आठों कैसेट सुन लीं। हर कैसेट सुनते हुए एक विचार मेरे मन में प्रबल होता जा रहा था। सबसे पहले तो, चाहे उनका व्यवहार कैसा भी हो, उनका ज़िक्र अलग से नहीं किया जाना चाहिए। भले ही उन्हें गुरु न माना जा सके, लेकिन आदरपूर्वक उन्हें ‘मोहनलालजी’ कहा जा सकता है। हालांकि मैं जानती थी कि मैं किसी एक शैली में गाना नहीं सीख सकती, लेकिन अपने पिता द्वारा सिखाई गई गुरुजी शैली में गाते हुए मेरा दुख कम होने लगा।
एक बार, रात के दस बजे दुकान से घर लौटते समय अनिलभाई ने कहा, 'मधु, अगले शनिवार को तुम्हारे लिए एक चैरिटी कॉन्सर्ट है, सी.जे. हॉल में। मेरे बैग में भी एक टिकट है। तुम जा सकती हो!'
मुझे अनजाने में ही आश्चर्य हुआ। रोटरी क्लब ने मुंबई के इस हिस्से में धारावी झुग्गी बस्ती की मदद के लिए इस कार्यक्रम का आयोजन किया था। टिकट पाँच हज़ार रुपये का था। सीट नंबर C-17। गाना सुनने की सोचकर एक तरफ तो मैं उत्साहित थी; लेकिन दूसरी तरफ मेरे मन में एक अनजाना डर भी था। यह किस तरह का डर था? क्या मुझे कोई देख लेगा? क्या वाडेकर माँ सोचेंगी, ‘तुम स्कूल क्यों नहीं आती?’ C-17 तीसरी पंक्ति की बीच वाली सीट है। ऐसी जगह जहाँ गाते समय मुझे आसानी से देखा जा सकता था। डर का कारण हल्का सा स्पर्श था, लेकिन सामने बैठकर गाना सुनने का उत्साह उससे कहीं ज़्यादा था।
शिनवारी अनिलभाई ने कहा, ‘कार्यक्रम रात 10:30-11 बजे तक चलेगा। आप अपनी जगह पर बैठे रहिए। गोर नाम के एक बड़े वकील हैं। वो पैंट, बूट और चप्पल पहनते हैं; लेकिन चिंता मत कीजिए। वो आपसे मिलेंगे। वो आपको कार से घर तक

छोड़ेंगे। वो यहीं मतून में रहते हैं। रात में अकेले लोकल ट्रेन से मत आना। टैक्सी बिल्कुल मत लेना। अगर वो नहीं आ पाए तो मैं या अजय आ जाएंगे।’ योजना के मुताबिक, मैं कार्यक्रम में गई। सोफे पर बैठने के दस मिनट बाद, वह गोरा आदमी, जिसे अनिलभाई ने मुझे रुकने के लिए कहा था, पास आया और पूछा, 'क्या आप अनिल मेहता की बहन नहीं हैं? आप मोहनलाल जी से पढ़ती हैं? कार्यक्रम खत्म होने के बाद यहीं रुकिए। कहीं मत जाइए।' वह गोरा आदमी साठ साल का लग रहा था।
मैं उम्मीद से पहले ही पहुँच गया था। लोग आराम से आ रहे थे। जब राहत कार्यक्रम रद्द हुआ था, तब ऐसा होना स्वाभाविक था। इतनी जल्दी पहुँचना थोड़ा अजीब लग रहा था। समय बिताने के लिए, स्वयंसेवक ने अपने हाथ में पकड़ी हुई फ़ाइल निकाली और पढ़ना शुरू कर दिया।
इसमें संगठन के बारे में जानकारी का पूरा एक पृष्ठ था। पीछे की ओर फोट के रोटरी क्लब के बारे में जानकारी थी।
इस पृष्ठ पर कार्यक्रम का विज्ञापन था। 'वरसम्राट संगीत चक्रवर्ती' शीर्षक के साथ मोहनलालजी की प्रशंसा और वर्णन के दो पृष्ठ दिए गए थे। नीचे राजाराम तिपानिस और ओंकार प्रभु के नाम थे, जिन्होंने हारमोनियम और तबला पर उनका साथ दिया। रजनी कौशल ने तंबोरा और गायन में उनका साथ दिया। जयंत चंदावरकर दूसरे तंबो पर थे। मैंने तिपानिस को कई लोगों के साथ संगत करते सुना था। मैंने प्रभु की संयमित संगत भी सुनी थी। वे संगत करते समय श्रोताओं से अधिक अपेक्षा न रखने के लिए जाने जाते थे, यही कारण था कि अधिकांश गायक उनका साथ देते थे।
उन्हें पता था कि लोग उन्हें बुलाना चाहते हैं। न केवल मुंबई से, बल्कि परगांव से भी गायक उन्हें बुला रहे थे।
लेकिन ये रजनी कौशल कौन है? क्या मैंने उसे पहले कभी देखा है? क्या वो 'वर-वेध' स्कूल की छात्रा है? क्या वो मुझसे सीनियर है? मुझे कुछ याद नहीं आ रहा। मुझे उसे देखने तक की याद नहीं, मुझे उसका नाम भी सुनने तक की याद नहीं। मेरा मन रजनी कौशल की ओर भटकने लगा, जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था।
कलाकार मंच पर आए और अपनी-अपनी सीटों पर बैठ गए। उद्घोषक ने मोहनलाल जी की हाल ही में तेजी से तरक्की कर रही छात्रा रजनी कौशल का परिचय कराया, जो आजकल उभरती हुई गायिकाओं में विशेष ध्यान आकर्षित कर रही हैं। यह सुनकर

मेरा दिल बैठ गया। रजनी कौशल की उम्र अट्ठाईस से तीस वर्ष के बीच रही होगी। सांवला रंग, नाक और आंखें ठीक थीं, लेकिन उनकी आंखों में कोई तीक्ष्णता नहीं थी।
मोहनलालजी ने अपनी आंखें बंद कर लीं और भौंहें चढ़ा लीं। हालांकि याचिकाकर्ता ने इसका जिक्र नहीं किया था,
शुका राग की आत्मा दूल्हे में ही समाहित थी। यह मेरे प्रेम के रागों में से एक है।
क्रोध। कई दिनों से यही बात उनके कानों में गूंज रही थी। भूपली की प्रसन्न शांति और समशंकर आत्मा का सौभाग्य उनके मन में बस गया था। उनकी वह शक्तिशाली, फिर भी क्रोधित आवाज! हर क्रोधपूर्ण भावना उनकी आदत बन गई है! हर बार महसूस होने वाली भावना को उन्होंने भी महसूस किया है – यहाँ विज्ञान भावना की दासी बन गया है! मोहनलाल जी अपने गीतों में इस भावना को कभी कुचलते नहीं!
उनके गीत शाम के समय फूलों की हल्की सुगंध और ठंडी हवा के साथ एक लय बना रहे थे। मैंने हाल ही में उनके सारे कैसेट बार-बार सुने थे, इसलिए उनका सफर मेरे कानों में बस गया था। यहाँ तक कि जिन रास्तों पर वे चले, वे भी अचानक मुझे 'आसान' लगने लगे।
मैंने बगल वाली पंक्ति में स्थित चालीस साल पुराने घर की ओर इशारा करते हुए कहा, 'मैं यह गाना सुनने आया हूँ, आपका गाना!'
मुझे शर्मिंदगी महसूस हुई। इतनी ज़्यादा कि मुझे 'माफ़ी' कहने का भी मन नहीं हुआ। अगर मैं बैठ भी जाता, तो भी अंदर बज रहा गाना सुनाई देता। उसे रोकना मेरे लिए नामुमकिन था। हरी धान की क्यारियों में हल्की हवा चलती, जिसकी कुछ बूँदें जड़ों से टकरातीं, जिससे गिरे हुए पौधे फिर से सीधे हो जाते, वहीं शादजी थोड़ा इधर-उधर हिलती और कमरे के बीचोंबीच धीरे-धीरे झूलती, फिर कमरे के बीचोंबीच आती, धैवत पार करती और तार शादजी पर झूलती और दाहिनी ओर पीछे बैठे रजनी कौशल को गाने का इशारा करती। इतना कहते ही उन्होंने भी गाना शुरू कर दिया।
दर्शक उस नाजुक तीन तार वाले वाद्य यंत्र की ओर आकर्षित हो गए, जिसने इतने लंबे समय तक क्षणभंगुर संगीत को जीवंत कर दिया था, और तालियों की गड़गड़ाहट गूंज उठी। उनके लौटने से पहले, वे उसी वाद्य यंत्र के पास फिर रुके और मंच पर झुककर प्रणाम किया। बाद में, जब सितारे मंच पर पहुंचे, तो

उन्हें बीच-बीच में गाने का मौका दिया जाने लगा। स्वाभाविक रूप से, दर्शक भी उन पर मोहित हो गए; लेकिन एक बात सच है। इस धंधे में, जहां पांच से दस हजार रुपये के टिकट बिकते हैं, ये लोग गायन का अर्थ नहीं समझते। इसमें उनकी क्या प्रतिभा है? वे बस अपने लाए और सजाए हुए वाद्य यंत्र पर थोड़ा सा झूमते हैं, बस इतना ही। वे बस थोड़ा इधर-उधर हिलते हैं, और उनके पतले से वाद्य यंत्र की संगत उनकी मर्दाना आवाज के लिए कुछ खास लगती है। उनके गायन में क्या खास बात है? आवाज न तो बहुत मीठी है और न ही बहुत तीखी। मैं इससे कहीं बेहतर उनका साथ दे सकती थी। मेरी आवाज में एक खास मिठास है। मैं इसे कंठस्थ करती थी, और हम उनके साथ कितनी खूबसूरती से गाते थे! उन्होंने कितनी बार मेरी पीठ थपथपाकर मेरी प्रशंसा की थी!
मुझे उस बेचारे आदमी पर गुस्सा आ रहा था।
बाद में, उन्होंने टोकरी से सामान निकालना शुरू किया और नाचने लगे। अब, उन्होंने उसे दो चक्कर नाचने का मौका देना शुरू कर दिया! लेकिन दो चक्कर नाचने के लिए उसमें कितनी ताकत है! वह पहले चक्कर से शुरू करके छह-सात चक्कर लगाता है। वह दूसरे चक्कर में जाने से पहले ही आगे निकल जाता है, जिससे वह बच जाता है। वरना, उसे गुस्सा आने में देर नहीं लगती! इतनी तैयारी करने वाले छात्र को ऐसा मौका देने का क्या मतलब है? क्या यही उनका मकसद नहीं है? ताकत तो उससे कहीं ज़्यादा है। मैं तीसरी पंक्ति में हूँ, और इसीलिए वह ऐसा व्यवहार कर रहा है!
मेरे पड़ोसियों ने भी मेरी तारीफ करना शुरू कर दिया। उनमें से एक ने कहा, 'तुम सचमुच शिये को मौका दे रहे हो!'
फिर, ऊपर जाते समय, एक महिला की आवाज सुनाई दी, 'हाँ! यशविया को गाने की प्रेरणा कैसे मिल सकती है!'
पूरा हॉल सन्नाटे में डूबा हुआ था। यहाँ तक कि जब राग समाप्त हुआ और अगला राग शुरू हुआ, तब भी लोग हिले तक नहीं। यह देखकर बहुत खुशी हुई कि गुजी के गायन में संगीत के प्रति अरुचि रखने वालों को भी मंत्रमुग्ध करने की शक्ति थी। बिना ज्यादा समय बर्बाद किए,
उन्होंने डफली को सुरबद्ध किया और इस दुगा राग में एक छोटा सा याल बड़े ही जीवंत ढंग से गाया।
शुरू कर दिया।

मैंने ये वाडेकर मार्ता से सीखा था। मैंने मोहनलाल जी को पहले कभी गाते नहीं सुना था। जैसे ही उन्होंने गाना शुरू किया, मैं भी अपनी आवाज़ में गाने लगी। मेरे पैर मलयालम धुन की ताल पर थिरक रहे थे। हर ताल मानो मेरे अंदर समा गई थी और मेरा मन उत्साह से भर गया था। राग को थोड़ा विस्तार देने के बाद तान शुरू हुए, जिससे मेरा उत्साह और भी बढ़ गया। तानों का जाल बुनते हुए वे सभा में आए और अगले दौर में तंबू पर बैठी रजनी ने गीत की पहली पंक्ति गाई। सभा को ये बहुत पसंद आया; लेकिन मेरा मन बेचैन हो गया। कोई भी बच्चा जिसे तालों और तानों के स्थान की बुनियादी जानकारी हो, वो ऐसा कर सकता था। इसके लिए उनकी इतनी प्रशंसा करने की कोई ज़रूरत नहीं है; लेकिन मूक श्रोताओं को ये पसंद आया! अब तो वही सभा का केंद्र बन गया! दरअसल, एक के बाद एक चार-पांच-छह-सात अवतारों की लय को छोड़ दें तो, वो लय के संतुलन को बिगाड़े बिना लय को दिखाने के लिए जो कुछ भी आवश्यक है उसका सौवां हिस्सा भी नहीं दिखा रहे हैं, लेकिन दर्शक अंधे हैं... अगर मुझे यह अवसर मिला होता, तो मैं इसे दिखा देता, सिवाय कभी-कभार मजाक करने के! मुझे मोहनलालजी पर गुस्सा आ गया।
दुगा झा के बाद पंद्रह मिनट का विराम घोषित किया गया। पंद्रह मिनट पैंतालीस मिनट में बदल गए। लोग बाहर खुले मैदान में खड़े हो गए और एक-दूसरे से पूछने लगे, 'तुम भी यहाँ हो!', 'अरे चा, तुम भी?' आदि।
विराम के बाद, विष्णु ने मालिकों का स्वागत किया। इसके बाद, भैरवी ने बैठक समाप्त की। सभी लोग उठकर चलने लगे। लेकिन मैं शर्मिंदगी के मारे हिला तक नहीं। दस मिनट बाद, गोरे अपने पनाशी ड्रायर के साथ आया और बोला, 'उसके साथ जाओ। गाड़ी में बैठ जाओ। मैं पंद्रह मिनट में वापस आ जाता हूँ।'
कार में बैठे-बैठे भी मेरे मन में रजनी कौशल का ही ख्याल आ रहा था। मैं यही सोचती रही कि वो इसके लायक नहीं थी। मोहनलाल जी ने उसे मौका दिया, वो भी बेकार।
वह गोरा आदमी थोड़ी देर से आया। जैसे ही वह मेरे बाईं ओर बैठा, ड्राई हार्न ने दरवाजा खोल दिया। एक और पनाशी आदमी ड्राई हार्न के बगल में बैठ गया।
वहाँ कोई न कोई तो रहा ही होगा।
गोरनी ने बड़े उत्साह से पूछा, 'गुजी, आप कैसे पढ़ाते हैं?'
वे अच्छी तरह पढ़ाते हैं।

बगल वाली सीट पर बैठे सफ़ेद बालों वाले सज्जन ने कहा, "यह गायक बहुत गंभीर लग रहा है!"
गोरानी ने परिवार का परिचय कराते हुए कहा, ‘हे माथुर। महिमाला कपड़े की व्यापारी हैं।’ फिर उन्होंने माथुर से कहना शुरू किया, ‘जी हां। बहुत बुद्धिमान व्यक्ति! वे अपने श्रोताओं का आदर और सम्मान करते हैं। आज का कार्यक्रम ही देख लीजिए! आज श्रोताओं में कितने लोग ऐसे थे जिन्हें गीत समझ आया? उन्हें भी यह बात पता थी। फिर भी उन्होंने इतने समृद्ध गीत को इस तरह प्रस्तुत किया कि एक भी श्रोता ऊब नहीं गया! उन्होंने गीत के साथ कोई समझौता नहीं किया, यही उनकी असली खूबी है! एक बात तो माननी ही पड़ेगी – इस गायक में बहुत रुचि है! इसीलिए उनका गीत आम आदमी से लेकर बुद्धिमान व्यक्ति तक सभी तक पहुंच सकता है। क्या यह सच है या नहीं?’
"यह बिलकुल सच है!" माथुर भी दिल खोलकर हँसे।
उनके गाने मेरी जान हैं! मेरे पास उनके लगभग पचास घंटे के लाइव रिकॉर्डिंग हैं! मैंने आज का पूरा कार्यक्रम भी रिकॉर्ड कर लिया है। ये टेक्स्ट दिन के अंत तक मेरे पास होंगे। मुझे उन कलाकारों पर बिल्कुल भरोसा नहीं है जो सिर्फ विज्ञान को ध्यान में रखकर गाते हैं।
‘आप सही कह रहे हैं! मेरी भी यही राय है!’ माथुर हँसते हुए बोले, ‘ठेकेदार ने भले ही उनके साथ धोखा किया हो, लेकिन मोहनलालजी ने पूरे गाँव को अपना गाना मुफ्त में सुनाया – क्या यह सच है?’
'हां। यह भी उनके दर्शकों के प्रति अनादर का एक अच्छा उदाहरण है। इस घटना को पंद्रह साल हो चुके हैं।'
आज का हाल देखिए! ऐसे कार्यक्रमों में कलाकार कहते हैं, ‘मैं आपको इतने पैसे दूंगा और आप जितने चाहें उतने टिकट रख सकते हैं और आपको भुगतान मिलता रहेगा।’ आज तो उन्हें इस कार्यक्रम के लिए पचास हजार रुपये लेने में कोई दिक्कत नहीं हुई; लेकिन उन्होंने एक पैसा भी नहीं लिया। इतना ही नहीं, उन्होंने टैक्सी का किराया भी नहीं लिया। उन्होंने तबलाजी के लिए दो हजार और हारमोनियम के लिए पांच हजार रुपये दिए। यही लागत है।
मेरे दिल में गर्व भर गया। मुझे बहुत तीव्र इच्छा हुई कि मैं आपको नागपुर वाली घटना के बारे में दोबारा बताऊं। लेकिन मुझे लगा कि आप पर किसी बात का आरोप लगाना उचित नहीं होगा, इसलिए मैं चुप रहा।
गोरों ने कहना शुरू किया:

अन्य सभी क्षेत्रों की तरह, संगीत के क्षेत्र में भी धोखाधड़ी होती है। एक ऐसे ही फर्जी ठेकेदार ने नागपुर में मोहनलालजी के लिए एक बड़ा कार्यक्रम आयोजित किया। विदाई के तौर पर बीस हजार रुपये, यात्रा और आवास की व्यवस्था आदि की गई। विज्ञापन के लिए पांच हजार रुपये दिए गए। उसने गांव में साठ हजार रुपये के टिकट भी बेचे। दंपति नागपुर पहुंचे। इस दौरान मोहनलालजी की पत्नी लगातार
वह उसके साथ रहती थी। भले ही वह नए कलाकार की देखभाल करने के लिए ही क्यों न हो,
इसका असली मकसद पैसा इकट्ठा करना था।
सारी तैयारियां पूरी हो चुकी थीं। कॉलेज के प्रांगण में लोग जमा हो गए थे। कार्यक्रम की योजना मौके पर ही बनाई गई। उन्होंने चार-पांच साल से नागपुर में प्रस्तुति नहीं दी थी, इसलिए दर्शक गीत सुनने के लिए उत्सुक थे। मोहनलाल एक कमरे में तैयारी कर रहे थे। डफ बज रहे थे। संगतकार नागपुर से ही थे। उन्होंने आधे घंटे तक उनके साथ गीत गाए और विचारों का आदान-प्रदान किया।
ठेकेदार का सहायक विनम्रतापूर्वक पास आया और बोला, "चलिए, चलिए शुरू करते हैं, क्या कहते हैं?"
मोहनलाल मंच पर जाने के लिए खड़े हुए; लेकिन उनकी पत्नी ने पूछा, 'आपका ठेकेदार कहाँ है? वह दोपहर से दिखाई नहीं दिया है?'
“उनकी मां को दिल का दौरा पड़ा है। मामला गंभीर है। उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। वह थोड़ी देर में वापस आ जाएंगी!” उन्होंने दांत पीसते हुए विनम्रता से कहा।
‘उनका आना जरूरी नहीं है। बस पंद्रह हजार रुपये और फुटबॉल मैच के दो टिकट ले आइए। उसके बाद गाना शुरू हो जाएगा!’
"वे जल्द ही आ जाएंगे। दर्शक गीत सुनने के लिए बेताब हैं। अगर वे देर से आए तो दंगा करेंगे।"
‘टैक्सी से वहाँ पहुँचने में आपको आधा घंटा नहीं लगेगा क्या? अगर नहीं, तो मुझे फोन कर दीजिए!’ इस बारे में वह महिला बिल्कुल सही थी!
'मैडम, अगर हम फोन पर बात करें तो क्या होगा? दूसरी बात, वे अस्पताल में इतना पैसा क्यों ले जा रहे हैं? उनसे फोन पर संपर्क भी नहीं हो पा रहा है। आप शुरू कीजिए, मैं...'

मैं उनके पास जाकर पैसे ले आऊंगा। भले ही पंडितजी इस मंच पर हैं, लेकिन आप यहां मौजूद हैं।
"तुम वहाँ होगे ना? तुम इसी समय आओगे।"
मोहनलाल भी हंसते हुए बोले, 'लोगों को इंतज़ार क्यों कराना? तबला भी नीचे आ जाएगा। अब मुझे भी अपना समय लेना है, मैं भी उस मूड में आ जाऊंगा!'
लेकिन हार न मानते हुए, मैडम ने कहा, 'ठीक है! कृपया घोषणा कर दीजिए कि कुछ अपरिहार्य कारणों से कार्यक्रम आधे घंटे की देरी से शुरू होगा। आपको अगले एक घंटे में यहाँ आना है!'
अनाऊ इंतज़ार कर रहा था, तभी थोड़ी देर बाद वह वापस आया और बोला, “महोदया, वह अस्पताल नहीं आ रहा है। वह कुछ ज़रूरी दवा लेने दुकान गया है। अब हम उसे गाँव में कहाँ ढूँढें? बहुत देर हो रही है। अगर आपको मेरी बात पर यकीन नहीं है, तो ये लीजिए दो हज़ार और अगर आप चाहें तो ये भी।”
आओ!’ फिर उसने अपनी कलाई से कंगन और पैसे दोनों उतार दिए।
मैडम ने पैसे और घड़ी को थैले में फेंकते हुए कहा, 'क्या ऐसा है? चलो, मैं तुम्हारे साथ चलती हूँ। तुम किस अस्पताल में और किस मरीज को देखने जा रही हो?'
सहायक का चेहरा पीला पड़ गया। फिर भी उसने कहा, 'यह क्या है, महोदया? क्या आप हम पर अविश्वास जता रही हैं? यदि आप कार्यक्रम नहीं देंगी, तो पुलिस आपके पास दौड़ती हुई आएगी!'
अरे वाह! क्या आप मुझे धमकी दे रहे हैं? इसके विपरीत, मैं आपको बता दूँ, इस ठेकेदार ने मुझे धोखा दिया है, आपको इस ठेकेदार से पैसे वसूलने चाहिए। इसके अलावा, पुलिस में भी शिकायत दर्ज कराइए!
उन्हें इसका कोई जवाब नहीं सूझा, 'रुको, मैं दोबारा जाँच लेता हूँ।' इसलिए वे चले गए, वापस नहीं आए। आधा घंटा या पंद्रह मिनट बीत गए। लोग चिंतित थे। चार-छह लोग आए और पूछताछ शुरू कर दी, और उन्होंने उन्हें बताया कि मालकिन ने उनके साथ धोखाधड़ी की है।
इन लोगों ने ठेकेदार का नाम और पता नहीं लिया। पूछताछ करने पर पता चला कि पता गलत था।
दिलाई नाम का एक व्यक्ति पंद्रह दिनों तक होटल में रुका। वह दोपहर में होटल छोड़कर चला गया।

डेढ़ घंटे बीत जाने के बाद भी लोग बैठे रहे। अंदर आने वाले लोग बोले, 'चलो अब गाना गाते हैं। हम इस बदमाश को नहीं छोड़ेंगे। चलो इस मामले को सुलझाते हैं। चलो!'
मोहनलालजी ने कहा, "चलो," और झट से खड़े हो गए।
लेकिन कहानी यह है, 'उन्होंने अपना पैसा खो दिया है और उन्हें इसे वापस पाना चाहिए। मुफ्त में गाकर हमें नुकसान क्यों उठाना चाहिए?'
‘हे स्त्री, यदि तुम इतनी जिद्दी हो तो गाना अनुचित होगा! वरना तुम्हारे पास सात हजार हैं। अब गाओ!’
‘क्या! हमारे गांव की कीमत सिर्फ सात हजार रुपये है?’
घर में मौजूद बूढ़े आदमी ने कहा, "क्या गाय का मूल्य पैसों में आंका जा सकता है?" कुछ
धोखाधड़ी की ऐसी घटनाएं कभी-कभार होती रहती हैं! संगीत प्रेमियों को निराश करना पाप है। अगली बार, अगर चाहो तो दस हजार और मांग लो!
'अगर तुम इतना पापपूर्ण सोचते हो, तो घर जाओ और तेरह हजार ले आओ! अब सब कुछ तुम्हारा हो जाए!'
इस घटना को याद करने के बाद, गोरानी ने सोचा, 'अब बताओ, मुझे आगे क्या करना चाहिए? अगर तुम मोहनलालजी की जगह होते, तो क्या करते?'
मैं इस परिचित स्थिति में इतना मग्न था कि मुझे लगा कि प्रश्न माथुर के बजाय मुझसे पूछा गया होगा, और मैंने उत्तर दिया, "सीधा-सादा।"
काश मैं स्टेज पर जाकर गाना शुरू कर पाता!
गोर्नी ने मुस्कुराते हुए मेरी तरफ देखा और हंसते हुए कहा, 'वाह! यही तो एक सच्चे कलाकार की पहचान है! मैं अनिलभाई से कहूंगा कि चाहे कुछ भी हो जाए, इस गाने को रुकने मत देना!'
मैं शाह के पास नहीं गया।
माथुर सोचने लगा, 'लेकिन आगे क्या हुआ?'
“अरे, वो तो कलाकार के मन को समझने वाली औरत नहीं है। उसने दुल्हन की छड़ी घसीटी और उसे जल्दी से होटल ले आई। वो अपने सामान के साथ रेलवे स्टेशन पहुँची। होटल वालों ने कोई हंगामा नहीं किया क्योंकि पता पहले से ही दर्ज था। इस बार मैंने मुंबई जाने वाली डलास क्लास की जनरल कोच का टिकट लिया। ट्रेन एक घंटे लेट हो गई। मोहनलाल वहाँ हताश होकर बैठे थे। आधा घंटा बीत गया। उनके विचार धीरे-धीरे स्पष्ट होने लगे।”

उन्होंने कहा, ‘आज तुमने गलती की है। इन बुजुर्गों ने जो कहा है वो सच है। इतने बड़े जनसमूह को निराश करना पाप है, खासकर उन लोगों को जो गायन के प्रति प्रेम के कारण यहाँ एकत्रित हुए हैं। अगर माया जैसी कलाकार भी पैसों के लिए दर्शकों को निराश कर सकती है, तो मुझमें और इस समूह में क्या फर्क रह गया है?’
इस पर वह क्रोधित हो गई और बोली, "क्या तुम मुझे आवारा कह रहे हो? तुम ही तो इस संसार की सारी घटनाओं को देखते हो, धम्प नीला?"
शोर बढ़ता गया। मोहनलालजी, जो हमेशा सिर झुकाकर बैठते थे, अचानक बोले, 'हम इस द्वार से नागपुर के खतरनाक स्रोतों से बच निकले हैं!'
मैं उनके सामने एक साहसिक गीत गाए बिना वापस नहीं लौटूंगा!
"कोई फायदा नहीं! सारे ऋषिकेश-स्रोता घर चले गए हैं!" वह चिल्लाया।
‘मुझे भी यह पता है। मैं कल इसी अखबार में एक सार्वजनिक बयान जारी करूंगा और मैं मुंबई तभी आऊंगा जब परसों इसी जगह से वह मुफ्त गाना हटा दिया जाएगा। चलो।’
"तुम इस दुनिया के साथ विश्वासघात कर रहे हो!"
मोहनलाल का गुस्सा भड़क उठा।
‘हे भगवान, तुम कितनी मूर्ख हो! तुमने पहले कभी सूती साड़ी नहीं पहनी है, और यह मत भूलो कि तुम्हारे कानों में ये बालियां हैं!’
'मैं एक करियर-उन्मुख कलाकार बनने के लिए भारी साड़ियां और साड़ी-साड़ी जैसे कपड़े पहनती हूं, इसे ध्यान में रखें!'
रेलवे स्टेशन पर खुले में पति-पत्नी की बहस सुनने के लिए जमा हुए लोग पास आकर सुनने लगे। देखते ही मोहनलाल कनक को गुस्सा आ गया और उसने झुंझलाहट में कहा, 'तो मुंबई जाओ' और दूसरी तरफ चलने लगी। ट्रेन आ गई। वह ट्रेन में चढ़ गई। ट्रेन चल पड़ी।
मोहनलाल स्टेशन से बाहर निकला। अब कहाँ जाए, यही सवाल था। उसकी जेब में पैसे नहीं थे, गाँव में उसका कोई परिचित भी नहीं था। मुंबई जाने वाली ट्रेन छूट चुकी थी। वह वापस स्टेशन आया और एक बेंच पर सो गया। तेज़ रोशनी और शोर के बावजूद, उसे गहरी नींद आ गई। जागने पर उसने सार्वजनिक नल में चेहरा धोया और उस कॉलेज के बारे में पता किया जहाँ कल कार्यक्रम हुआ था। उसे पता चला कि कॉलेज स्टेशन से चार मील दूर है। वह उस दिशा में पैदल चल पड़ा। वह सुबह

करीब आठ बजे वहाँ पहुँचा। चौकीदार की परवाह किए बिना, वह प्रियप्पा के घर गया। उसने मोहनलाल जी से पूछा, 'मुझे लगा था कि आप मुंबई गए हैं।'
‘लेकिन अब आपको अपनी पत्नी के बारे में शिकायत करने की ज़रूरत नहीं है, महोदय! लेकिन अगर आप मुझे यह बताना चाहते हैं कि मैं क्यों आया हूँ, तो आपको सब कुछ समझाना होगा—’ कानन ने सुझाव देते हुए प्रिसिला को सारी घटना बताई। उसने आगे कहा, ‘क्या आप मेरी एक मदद कर सकती हैं? कृपया स्थानीय अखबार में एक विज्ञापन दें और कल के लिए एक प्रस्तुति तय करवा दें। मैं मुफ्त में गाऊंगा। संगतकार का चुनाव आपको करना होगा। आज और कल के मेरे खाने-पीने और रहने का सारा खर्च मैं उठा चुका हूँ।’
व्यवस्था कर लें। कार्यक्रम समाप्त होने के बाद, मुंबई की ट्रेन का टिकट निकाल लें। गाँव जाने के बाद
मैं आपको टिकट के पैसे भेज दूंगा।
‘अरे, ये क्या बात कर रहे हो? अगर तुम इस गायक यासर को घर पर रखोगे और उसे खाना खिलाओगे, तो हम यासर के आभारी होंगे! ठीक है। चलो पहले चाय-नाश्ता कर लेते हैं!’ श्री सपल साहब ने अपनी नई धोती और आस्तीनें उतार दीं। कार्यक्रम का निर्णय दूसरे दिन सुबह 10:00 बजे लिया गया। स्थानीय पत्रकारों को बुलाया गया और व्यापक प्रचार किया गया। नागपुर रेडियो को भी सूचित किया गया। यह कार्यक्रम सभी नागपुरवासियों के लिए था, जिससे खूब हंसी-मजाक हुआ। कॉलेज के छात्रों ने भी पूरे उत्साह से गीत गाए। नागपुर में इससे पहले ऐसा भव्य संगीत कार्यक्रम कभी नहीं हुआ था! मोहनलाल जी भी उस दिन असाधारण मूड में थे। गायन सचमुच अनूठा था! श्रोताओं के दिलों को छूने के लिए क्या किया जा सकता था?
यह खबर मुंबई के अखबारों में भी व्यापक रूप से छपी। दो स्थानीय अखबारों ने इस मुलाकात के संदर्भ में कलाकार की धार्मिक मान्यताओं पर चर्चा की। संपादकीय लेख भी लिखे गए।
रात के 10:30 बज चुके थे, इसलिए सड़क पर यातायात कम हो गया था। इसी वजह से गाड़ी जल्दी दादर पहुँच गई। मैंने ड्राइवर को घर का रास्ता बता दिया। जब मैंने गोरना को घर पर फोन किया, तो उसने कहा, 'अभी नहीं। बहुत देर हो गई है। मैं अपने बड़े भाई को फोन करना चाहता हूँ, वो मुझे फोन करेंगे। तुम भी जितनी जल्दी हो सके घर आ जाओ।'

घर पर सब लोग खाना खा चुके थे। जब मैं दुकान से खाना खाने आया तो रात के ग्यारह बज रहे थे। मेरी थाली खाने की मेज पर तैयार थी।
छोटेभ ने सोचा, 'पांच हजार गीत कैसे थे?'
‘अप्रितम!’ मैंने साहसपूर्वक उससे कहा।
"क्या गोर साहब ने आपको पहचाना? कोई समस्या तो नहीं थी?"
'नहीं।'
आगे छोटेभा गोरे साहब के बारे में कह रहे थे, ‘वे पूरे देश में कर वकील के रूप में जाने जाते हैं। उनके तर्क सर्वोच्च न्यायालय में भी बहुत महत्व रखते हैं। पूरे देश से मामले राय के लिए उनके पास भेजे जाते हैं। वे ऐसी राय लिखने के लिए पच्चीस हजार रुपये लेते हैं! संस्कृत इतनी अच्छी है तो संस्कृत में क्यों लिखते हैं! अगर उन्होंने अपनी सारी बुद्धि और समय पैसा कमाने में लगाया होता, तो अब तक सौ करोड़ से अधिक कमा चुके होते; लेकिन वे सुबह नौ बजे अपना दफ्तर खोलते हैं और शाम छह बजे बंद करते हैं! कम से कम रात नौ बजे तक काम क्यों नहीं करते? असल में, ऐसे लोगों के पास तो सिर्फ शाम को ही समय होता है; लेकिन उनका मामला अलग है। संगीत, नाटक, नृत्य कार्यक्रम सिर्फ शाम को ही होते हैं! तो यह
वे कहते हैं, "मैं यह सब छोड़कर ऑफिस क्यों जाऊं?" वे चाहते हैं कि मैं ही वह व्यक्ति बनूं।
वे समय निकाल ही लेते हैं। इसके बावजूद, उन्हें गायन से बहुत प्रेम है। कलाकारों के लिए कार्यक्रम आयोजित करना, कार्यक्रम के लिए पाँच से दस हज़ार रुपये जुटाना, बोली लगाने वालों से कलाकारों के लिए कम दाम में लट्टे (कॉफी) की व्यवस्था करवाना, यहाँ तक कि कलाकारों के लिए सुविधाजनक कमरा उपलब्ध कराना, कलाकारों के अच्छे पोषण का ध्यान रखना – वे कई काम करते हैं। उनका नाम किसी दस्तावेज़ में नहीं है; लेकिन मुंबई में उनके सहयोग के बिना एक भी संगीत कार्यक्रम संभव नहीं है। उनके निजी संग्रह में गायकों की कई कैसेट हैं। कम से कम पाँच हज़ार तो होंगी ही!
उन्होंने कलाकार के नाम, राग और ताल की जानकारी के साथ एक स्वतंत्र हस्ताक्षर बनाया है।
गाड़ी में बैठते ही एसी और कैसेट चालू हो जाते हैं! हम उनका मज़ाक उड़ाते हैं – आपकी गाड़ी पेट्रोल से नहीं, गैस से चलती है! अगर आप कोई चैरिटी कार्यक्रम आयोजित करना चाहते हैं, तो बस आयोजकों को ही बुलाइए। उन्हें

आपके बड़े ग्राहकों से टिकट भी मिलते हैं, जैसे पाँच से दस हज़ार रुपये प्रति टिकट।
रात को बिस्तर पर लेटे-लेटे मेरे मन में तरह-तरह के विचार आने लगे। गोरानी ने इसे भी टेप कर लिया होगा। मुझे बड़ेभ को बताना चाहिए और उससे एक कॉपी ले लेनी चाहिए।
इसके बाद इसे कम से कम बीस-तीस बार जरूर सुनें। कितनी सुंदर धुन है! मोहनलाल जी ने इसे कितनी कुशलता से प्रस्तुत किया है! मोहनलाल जी की धुनें मेरे कानों में गूंज रही हैं और मैं दिल से उनके साथ हूं! वे रागों की मधुर ध्वनि के साथ आगे बढ़ रहे हैं और मैं भी उनके साथ हूं।
वे मेरा इंतजार कर रहे हैं, मेरा इंतजार कर रहे हैं, मेरा इंतजार कर रहे हैं।
देखो, कभी-कभी तुम मुझे साथ चलने को कहते हो! तो क्या हुआ! ये हम दोनों का गाना है! उसी समय, वही धुन पुरुष, गंभीर और कोमल स्त्री के बीच फैलने लगती है। वे फिर आगे बढ़ते हैं। मैं बस डफली की आवाज़ सुनने लगता हूँ। वे मेरे करीब आते हैं। डफली हम दोनों को एक साथ छूती है। वे अपनी आँखें बंद कर लेते हैं और थोड़ा झुकने की कोशिश करते हैं। ये गाना मुलाकात के लिए नहीं है - ये मेरे लिए है, ये मुझे इस दुनिया में छोटी माँ का स्थान दिखाने के लिए है! एक भी पल गंवाए बिना, मैं सब कुछ आत्मसात कर लेता हूँ, मैं कुछ नया गाता हूँ। उनकी आँखों में प्रशंसा झलकती है -
मैं इस सपने में इतना खोया हुआ था कि मुझे पता ही नहीं चला कि रात को मुझे नींद कैसे आ गई। सुबह उठने पर भी मेरा मन आनंद से भरा हुआ था। पूरी रात मेरा मन आनंद से भरा रहा, इसलिए मुझे लगा जैसे मैंने इस राग को समझ लिया हो। मुझे जल्दी उठने का मन नहीं कर रहा था। बाहर पक्षियों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। इसी बीच मेरी एक भतीजी सोच रही थी, 'फूफी डफली क्यों नहीं बजा रही?'
वह उठा और बाहर आया, साथ में यह छोटा सा पुराना पत्र दिखाते हुए बोला, "देखो, मैंने कल इस गांव की एक तस्वीर ली है!"
मैंने देखा। मोहनलाल – अहम् – रजनी कौशल को चिढ़ा रहे थे, जो उनके बगल में बैठी थीं! अखबारों को गायिका की उच्च गुणवत्ता वाली तस्वीर नहीं चाहिए थी, उन्हें तो खुद रजनी कौशल की तस्वीर चाहिए थी।

उस तस्वीर को देखकर मैं दंग रह गई। तस्वीर एकदम साफ़ थी। कितनी साधारण लग रही है! जब आप तस्वीर खिंचवाती हैं, तो आपका चेहरा और भी खराब दिखता है। क्या आपको इतना आसान नियम भी नहीं पता कि चेहरा सीधा रखना चाहिए? उफ़ – आपका चेहरा सीधा है – बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा। क्या मेकअप की परतों के नीचे असली रंग छिप गया है? छूते ही मेकअप उतर गया!
चाय पीने के बाद, उसने डफली जलाई और मिर्जकारबुवा द्वारा सिखाए गए खमाज राग को गाना शुरू किया; लेकिन वह इससे आगे नहीं बढ़ सकी। उसका मन शू-क्यान राग पर अड़ा रहा। उसने खमाज राग छोड़ दिया और शू-क्यान राग शुरू कर दिया। कल का शू-क्याना अभी भी मेरे मन में गूंज रहा था। मैं विज्ञान जानता था, आरोह में भूपाली और अवरोह में क्याना होती है। भूपाली छठे स्वर तक एक समान होती है; लेकिन क्या क्याना स्वर वापसी के समय प्रकट नहीं होने लगते? यदि उन्हें प्रकट होना ही है, तो वे वास्तव में कहाँ से आते हैं? मेरे मन में प्रश्न उठने लगे। जैसे-जैसे प्रश्नों की संख्या बढ़ती गई, गीत रुक गया। मुझे एक बार फिर दृढ़ता से महसूस हुआ कि यदि इस कला को सही क्रम में नहीं सीखा गया, तो इसमें महारत हासिल नहीं की जा सकती। मैं निराश हो गया।
यह तो कुछ भी नहीं है। हमें उषा गोर से संपर्क करना चाहिए। उनसे संदेश मंगवाकर देखते हैं कि शु-क्याना का मामला सुलझता है या नहीं। फिर भी, मेरा मन कह रहा था कि पाठ को हज़ार बार सुनने के बाद भी, मुख से सत्य सुने बिना क्रोध से मुक्ति पाना असंभव है। मेरे मन पर फिर से अंधकार छा गया।
नहाने और बाल संवारने के बाद जब मैं आईने के सामने खड़ी हुई, तो मैंने मन ही मन सोचा, मैं कितनी खूबसूरत हूँ! सुंदर माथा, खूबसूरत आँखें, चेहरे की तरह कोमल भौहें, हीरे जैसी मुलायम नाक और माथे व ठोड़ी की मजबूती! इसका जवाब कहाँ है?
मैं दंग रह गया। इससे पहले मुझे कभी भी इस तरह की चीज से इतना प्रभावित नहीं हुआ था।
नहीं। दूसरी बात, मुझे समझ नहीं आता कि हम बाकी पांचों से अपनी तुलना क्यों कर रहे हैं। मुझे खुद पर शर्म आ रही है। तब से मैं रजनी कौशल की आवाज़, गानों और लुक की आलोचना करने में लगी हुई हूँ। फोटो देखकर तो मुझे और भी ज़्यादा बुरा लग रहा है।
मुझे वो घुरघुराहट महसूस हो रही है। छी! मन का कितना पतन हो गया है!

रात के खाने के बाद टहलते हुए उन्हें मोहनलालजी का एक अलग ही रूप नज़र आने लगा। पहले तो उन्हें इस बात से परेशानी होती थी कि वे परिवार के साथ नहीं, बल्कि अकेले रहते थे; लेकिन नागपुर की घटना जानने के बाद उन्हें मोहनलालजी के लिए सहानुभूति होने लगी। उस कोमल हृदय वाले कलाकार ने ऐसी पत्नी की बाहों में रहने के लिए कितना तरसा होगा! क्या यही उनके गीतों में झलकने वाले दर्द की सूक्ष्म झलक का परिणाम है?
मैं उठा और गाने की टेप लगाई। हाँ। सुबह के समय, शांति के साथ-साथ, दर्द का भी एहसास होता है। दोपहर में, सारंगम में, वह तड़प दिखाई देती है। हरम के महीने में, दर्द की दीवार टूट गई है! हाँ! इन सभी गीतों में दर्द ही मुख्य विषय रहा है। इन गीतों में, जो खुशी से प्रस्तुत किए गए हैं, दूसरे चरण का दर्द दिखाई देता है! या क्या यह उस दर्द पर विजय पाने का एहसास है? नहीं। यह दर्द ही है! मैंने अपने मन को समझाया।
आखिर तक मैं रजनीकांत, उनकी पत्नी – उनका नाम क्या था? – इन सब बातों के बारे में सोचता रहा। ये कैसी पत्नी है? ये कैसी पापी है जो एक कलाकार को सिर्फ पैसे कमाने का जरिया समझती है! ये इतनी बदतमीज़ क्यों है! लेकिन मोहनलाल जी ने तो किसी ऐसी औरत से शादी नहीं की थी जिसे गाना पसंद हो? वो उनकी शिष्या भी तो थीं। फिर ये ऐसा कैसे कर सकती है? संगीत के प्रति इतने जोखिम भरे प्यार को करण के हाथों में कैसे सौंप सकती है? शायद वो उनकी शिष्या नहीं हैं। ये किस तरह के गाने सीखती हैं? ऐसी औरत को देखकर तो कुश्ती ही कर लेनी चाहिए! ओह! ये कितनी दुष्ट और निर्दयी औरत है! ऐसी औरत से शादी क्यों की?
सुबह-सुबह जब मैं सजग होकर ब्रश कर रही थी, तो आईने में देखकर मुझे अपने चेहरे की खूबसूरती का एहसास हुआ! अगर खूबसूरती न होती, तो मैं गा कैसे पाती? केवल एक कोमल और दयालु हृदय, जो घास के पानी को भी न छुए, इन दोनों के बीच के सूक्ष्म अंतर को समझ सकता है। संसार की सारी सुंदरता को नृत्य में पिरोना और उसे दिव्यता से भर देना, यही संगीत का सच्चा धर्म है!
मुझे संगीत का एक नया अनुभव हुआ। जी हाँ। यह इसी गीत के माध्यम से संभव हुआ। एक ऐसा गीत जो दिव्यता को स्थान देता है। यह केवल पीड़ा नहीं है! कुछ देर तक मैं ब्रश को इसी सम्मोहन जैसी लय में चलाता रहा। मुझे डर था कि अगर मैंने लय बढ़ा दी तो मेरे मन में विद्यमान दिव्यता विचलित हो जाएगी!

दोपहर तक मुझे यह विचार आया कि अनिलभाई चाहते थे कि गोरे साहब गु जी से कहें, ‘देखिए, यह हमारी बेटी है। हम इसे आपकी योग्य सरबराई बनाकर रखेंगे। आप इसे प्रशिक्षित कीजिए और तैयार कीजिए।’ गोरे साहब की बात संगीत के क्षेत्र में भला कौन मानने को तैयार था? गु जी भी।
उन्होंने उससे किसी न किसी समय जरूर कुछ न कुछ लाभ उठाया होगा। वाह! कितना नेक विचार है!
मुझे समझ आ गया! लेकिन ऐसा कहना ऐसा होगा जैसे यह कहना कि वे अच्छी तरह से नहीं पढ़ा रहे हैं। इससे कुछ सवाल उठेंगे। इसकी कोई ज़रूरत नहीं है।
यही किया जाना चाहिए, इन गीतों को विभिन्न सभाओं और समारोहों में गाया जाना चाहिए।
चलिए मिलते हैं। इसके लिए गोरे लोग जितनी ज़रूरत होगी उतनी मदद करेंगे। मैं गोरों को बताना चाहती हूँ कि गु जी अच्छा पढ़ाती हैं, लेकिन उनका मनमौजी स्वभाव है। वैसे भी वो व्यस्त रहती हैं। क्या आप गु जी से इस तरह बात कर सकते हैं कि वो नाराज़ न हों? उनसे इस तरह बात कीजिए कि उन्हें न लगे कि मैं आपसे शिकायत कर रही हूँ। यही ठीक रहेगा। इस बारे में घर में किसी से बात करने की ज़रूरत नहीं है। अगर मैं उनसे कहूँ कि मुझे परीक्षा के लिए एक नंबर चाहिए, तो वो आसानी से मुझे गोरों का नंबर दे देंगी। मेरा मन शांत हो गया। मैंने मिर्जाकरबुवा द्वारा सिखाए गए गीत गाना शुरू कर दिया।
रात में बदेभ ने मुझे अपना नंबर दिया और कहा, 'बस मुझे कॉल कर देना। गाने के मामले में वे किसी नियम का पालन नहीं करते। इतनी पहचान ही उनके लिए काफी है।'
फिर भी, मुझे रात में फोन करना उचित नहीं लगा। मैंने सुबह फोन करने का फैसला किया और सो गया। मैं सुबह तीन बजे उठा। मुझे फिर नींद नहीं आई। मैं सोचता रहा, गोरे लोग तो इसकी सिफारिश ज़रूर करेंगे, लेकिन क्या वे इसे सिखाएंगे? यह एक गलती जैसा था और मेरी नींद पूरी तरह उड़ गई। मेरे शरीर से पसीना बह रहा था।
गोर साहब सिफारिश करेंगे। गु जी बड़े उत्साह से कहेंगी, 'अरे वाह! क्या ये वही लड़की है जिसे आप जानते हैं? चिंता मत करो। मैं उसे तैयार कर दूंगी!' आगे
वे कहेंगे, 'लेकिन वह तो हाल ही में आना बंद कर दिया है!'

अगर आप उनसे सीखने के लिए भी जाएंगे, तो वे उसी विनम्रता से व्यवहार करेंगे और बात करेंगे।
‘गोरे साहब को मेरा प्रणाम कहना!’ वे इसे ज़ोर से कहेंगे भी! लेकिन वे इसे दिल से नहीं सिखाएंगे। ‘जब तक आप यह नहीं समझ लेते कि पहले क्या सिखाया गया था, तब तक आप अगले को कैसे सिखा सकते हैं?’
वे हँसेंगे। दूल्हे की वही उबाऊ दिनचर्या फिर से शुरू हो जाएगी। 'एक और दूल्हा'
आपको मेहनत करनी होगी। आपको कड़ी मेहनत करनी होगी। अगर आपकी नींव मजबूत नहीं होगी, तो आप अगला गीत कैसे गा पाएंगे?' वे यही बात गोरे साहब से भी कहेंगे। तब गोरे साहब को भी लगेगा कि इस नींव पर खड़े होकर प्रसिद्धि पाना व्यर्थ है।
आगे चलकर वे शायद सोचेंगे, ‘मैं इन महान शिक्षकों को जानता हूँ, मैं इस झंझट में नहीं पड़ना चाहता!’ लेकिन वे मुझे गाना नहीं सिखाएँगे!
मुझे रोने का मन हुआ। एक स्त्री की दृष्टि में जो अनमोल है, उसे कला के बिना नहीं पाया जा सकता?
अगले दो दिन लगातार रोने में ही बीत गए। मेरे मन पर हावी हो रही इस बेबसी से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं था। एक तरफ मेरा मन कह रहा था, इससे बड़ी कोई कला नहीं है। संगीत से अनभिज्ञ लोग भी, जिन्होंने कभी संगीत सुना तक नहीं, खुशी से जीते हैं। तो मैं क्यों न जीऊं? लेकिन यह भावना सिर्फ एक दिन ही रही। फिर मन में ख्याल आया, मुझे शास्त्रीय संगीत से जितना आनंद मिलता है, उतना किसी और चीज से नहीं। गायन ही मेरा जीवन है। अब क्या करूं? पूरा सप्ताह इसी मनोदशा में बीत गया। सुबह मिर्जकारबू द्वारा सिखाए गए राग को गुनगुनाते हुए, मुझे प्राचीन भारतीय विवाह प्रणाली याद आने लगी, जिसका अध्ययन मैंने समाजशास्त्र में बी.ए. के अंतिम वर्ष में किया था। इसमें गंधव विवाहों के बारे में जानकारी दी गई है, जो केवल दोनों पक्षों की सहमति से ही संपन्न किए जा सकते हैं।
यह एक विवाह था। वह भी विवाह का ही एक रूप है। इसमें कोई पाप नहीं है। जैसे ही मैंने इस बारे में सोचा, डफली पर मेरी उंगलियां रुक गईं। क्या गायन गंधव कला नहीं है? तो गंधव विवाह - गंधव कला - मेरा मन भटकता रहा। हालांकि मुझे लगा कि मुझे कोई स्पष्ट रास्ता मिल गया है, फिर भी मेरे मन में उलझन बनी रही।

मुझे एक और बात याद आई कि वे इस रिश्ते को गुप्त रखना चाहते हैं।
अगले दिन, मेरे मन में फैसला पक्का हो गया। सुबह 7:30 बजे बस पश्चिम बंद्या के लिए रवाना हुई। ट्रेन 7:00 बजे चली। अंदर से एक गाने की धुन सुनाई दे रही थी। एक महिला की आवाज़। अंदर जाने की हिम्मत नहीं हुई। गु जी कह रहे थे, 'नहीं। मुझे कम से कम दो को छोड़ना होगा। नहीं तो यह सफल नहीं होगा। अगर मैं एक से ज़्यादा को छोड़ सकूँ तो बेहतर होगा। हाँ, इसे ले लो। गांधारा से शुरू करो।' उन्होंने सपना लिया और मुझे दिखाया। ओह! यह तो सिर्फ़ कलाकार गु ही कर सकते हैं! यह तो सिर्फ़ उस्ताद ही नहीं कर सकते। उसके बाद, तीनों भाई भी उनके पीछे-पीछे चले गए। यह रजनी कौशल है! मेरा दिल दुख से भर गया। ओह! मुझे लगा जैसे मैंने सुनहरा मौका खो दिया हो। आँखें पोंछते हुए, मैंने ट्रेन में 'हाँ' बटन दबा दिया। जब मैं बाहर निकला, तो मुझे समझ नहीं आ रहा था कि कहाँ जाऊँ। सड़क के दोनों ओर इमारतें खड़ी थीं, समुद्र के किनारे। भर्ती शुरू हो चुकी थी। मैं आँखें फाड़कर खड़ी हो गई। घर जाना नामुमकिन है। मुझे यहाँ कुछ समय बिताना चाहिए। आज उसकी ट्रेनिंग है। यह मेरी जगह जितनी खूबसूरत नहीं है। गुजी ने ऐसा कुछ सोचा भी नहीं होगा। नौ बज चुके थे। उसकी ट्रेनिंग एक घंटे से ज़्यादा नहीं चलती। अगर उसका मन हुआ तो वह यहाँ बैठ सकती है। काफी देर हो चुकी थी।
मैं लिफ्ट के पास वापस आया। उसी क्षण लिफ्ट नीचे आई और दरवाजा खुला, और रजनी कौशल बाहर निकलीं। उन्हें कुछ भी पता नहीं था। वह इसी अचेतन अवस्था में चली गईं।
दरवाजा बंद होने से पहले ही मधुमिता अंदर आ गई। जैसे ही उसने सातवीं मंजिल का बटन दबाया, लिफ्ट बिना रुके सीधे सातवीं मंजिल पर चली गई, मानो वह घर से बाहर निकलने वाली हो। उसके मन में जरा भी डर नहीं था। वह आराम से चल रही थी और मुंह में कॉफी की खुशबू लिए गुनगुना रही थी।
आगे आकर उसने उन दोनों के हाथ अपने हाथों में लिए और कहा, 'मैं आ गई हूँ! मैं पूरे दिल से आई हूँ। मैं तुम्हें अपना बनाने आई हूँ। तुम्हें भी मुझे उतने ही दिल से गाना सिखाना चाहिए। तुम्हें मेहनत करनी चाहिए। तुम्हें एक कुशल गायिका बनना चाहिए!'
बात करते-करते मेरी आंखों से आंसू बहने लगे।
उसने अपने हाथ मलते हुए और दूसरी तरफ देखते हुए सोचा, "तुम क्यों रो रही हो?"

उसे तंबाकू की तेज गंध आई। उसने मन ही मन सोचा, 'छह महीने बर्बाद हो गए!'
वे बीस बजे अंदर गए। वह सोफे पर बैठ गई। दो मिनट – पाँच-दस-पंद्रह –
वह उठी और अंदर चली गई। वे खिड़की से समुद्र को देख रहे थे। उसने पूछा, 'तुम क्या सोच रही हो?'
वह मुड़ा और उसकी ओर देखा। क्या उसके चेहरे पर थोड़ी सी हैरानी का भाव था? मुझे समझ नहीं आया।
वह हँसते हुए बोला, "कुछ नहीं। अच्छा हुआ कि तुम यहाँ आए। देखो! मैं कहीं नहीं जा रहा हूँ।"
मैंने तुम्हें मजबूर नहीं किया! तुम पूरी तरह अपनी मर्जी से यहाँ आए हो! 'हाँ!'
लेकिन अब उसका चेहरा स्पष्ट हो गया।

३
वह टाइलों वाली सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर चली गई। सड़क का घुमावदार मोड़ चार बार नज़र आया। घर पहुँचते-पहुँचते उसकी साँस फूल रही थी। उसका अनुभव था कि अगर वह रोज़ाना दो बार इस सड़क पर आना-जाना करे, तो उसके दिल और फेफड़ों की अच्छी कसरत हो जाती है और गाते समय उसका मूड भी अच्छा रहता है। उसने दरवाज़ा खोला और अंदर देखने गई। वह सचमुच आंसरिंग मशीन चालू करना भूल गई थी। जैसे ही उसने स्विच ऑन किया, उसके मन में ख्याल आया, कौन जाने, शायद उसने फ़ोन किया हो!
भारत में जो हुआ, अगर वही अमेरिका में होता तो क्या होता? अगर वह लड़की कोटा योजना के तहत जाती तो क्या होता? भले ही वह यह कहती कि ‘मैंने उसे मजबूर नहीं किया, तुम अपनी मर्जी से इसके लिए तैयार थी’, कोटा योजना इसे स्वीकार नहीं करती। कोटा योजना उसे यह कहकर दंडित करती कि ‘शुल्क और प्रशिक्षण लेने के बजाय उन्होंने एक वास्तविक शर्त थोपी’ या उससे लाखों डॉलर का हर्जाना वसूलती। क्या भारत में भी ऐसा ही होता? वहाँ लड़कियाँ ऐसी स्थिति में कोटा योजना के तहत नहीं जातीं। समाज में बदनामी का डर रहता है। वे कहाँ चले गए हैं? हमें उन्हें कहाँ खोजना चाहिए?
लेकिन एक बात का सम्मान करना जरूरी है। उन्होंने सिर्फ मेरा शोषण ही नहीं किया, बल्कि मुझे वो गाना भी कंठस्थ सिखाया। उन्होंने मुझसे कहा, 'मधु, हफ्ते में दो दिन काफी नहीं हैं। हर दूसरे दिन आना।' सिखाते समय उनमें प्रेमी जैसी आत्मीयता नहीं थी, न ही कोई रियायत।
वह अपना सब कुछ देने के लिए उत्सुक था। वह गाने में खोया हुआ सा महसूस करता था।
वे बहुत ही सूक्ष्म बातें कहते थे। गुस्से में वे बहुत ही सूक्ष्म तरीके से अपनी भावनाओं को व्यक्त करते थे।
मैंने उससे तारीख जानने के लिए दस बार कोशिश की है और साढ़े पांच साल बीत चुके हैं।
उसने मुझसे वो गाना ले लिया। एक बार वो गाना उसके मुँह से निकल गया, ‘भविष्य में मेरा नाम अमर रखने वाले आप ही हैं! एक ऐसे प्रतिभाशाली छात्र से मिलना जो मेरा नाम गाता है, मेरे लिए बहुत बड़ा सम्मान है, यहां तक कि एक आम इंसान के नजरिए से भी!’

इस घटना की याद आते ही उसकी आंखों में आंसू आ गए।
पर परान की संगति में भी गायन ही मुख्य विषय था। उस समय भी वे रागों के रहस्यों को उजागर करते थे। वे संगीत और विज्ञान के अंतर्संबंधों पर चर्चा करते थे। अगर मैंने उन्हें सैकड़ों दिए होते, तो उन्होंने मुझे हजारों दिए होते!
ये गायक उतना ही संगीत देते हैं जितना उन्होंने अपने बच्चों को दिया है! उसने अपनी लाल आंखों को पोंछा।
लेकिन उनके साथ मामला अलग था। मैं अविवाहित थी। मैं स्वतंत्र थी। उन्होंने माँगा, मैंने दे दिया; लेकिन अब मैं विवाहित हूँ। मेरी सगाई दूसरे पुरुष से हो चुकी है। ऐसे समय में ऐसी माँग करना, हठधर्मिता दिखाना, बंद दरवाजे पर दस्तक देना – क्या यह उचित है? विक्रम माँ को उन पर विश्वास है, और मोहनलाल जी को गुजी माना जाता है और वे उनके सामने सिर झुकाते हैं। इसी विश्वास के साथ हम दोनों इस एकांत घर में रह रहे हैं। ऐसे समय में ऐसी माँग करना उचित नहीं है, इतना महान कलाकार यह बात कैसे नहीं समझ सकता? उसने घड़ी देखी। साढ़े ग्यारह बज चुके थे! उसने उन्हें कहीं न कहीं ज़रूर ढूंढ लिया होगा। अगर वह बस इंतज़ार करता रहा, तो वे नहीं आएंगे, न ही बुलाएंगे। उसे भूख लग रही थी। उसे यह बात अच्छी तरह महसूस हो रही थी कि नाश्ते का समय बीत चुका है। जब वह रसोई में गया और अनाज का पैकेट उठाया, तो उसके मन में आया कि जब वे भूखे मर रहे हों, तो अपना पेट भरना कितना बुरा होगा। वह इसे नहीं खा पाएगा। पैकेट को एक तरफ रखकर वह घर से बाहर चली गई। उसने कार स्टार्ट की और चला गया। सड़क के दोनों ओर बनी पत्थर की बेंचों को देखते हुए वह ढलान पर उतरने लगी। उसने उन्हें पास के बगीचों में ढूंढा, जहाँ वह उन्हें ले गई थी। उसने लॉस गैटोस जाने वाली सड़कों पर हर जगह उनकी तलाश की।
अब वासोना जितना हो सके पार्क देखना चाहती थी। उसे बहुत भूख लग रही थी। भूख के मारे उसका सिर चकरा रहा था। उसने कार में कुछ फेंका और कार को पार्क की ओर मोड़ दिया। दोपहर का समय था। पार्क की पार्किंग में केवल पाँच कारें खड़ी थीं। उसने कार वहीं रोक दी और बगीचे में घूमने लगी। उसे उन्हें कहाँ ढूँढना चाहिए? या वे किसी के घर चले गए थे?
दूर कहीं, एक मेपल के पेड़ के नीचे बेंच पर कोई सो रहा था। हाँ! मुझे पजामा दिख रहा है। वह बार की ओर गई। उसकी आँखें खुली हुई थीं। ऐसा लग रहा था जैसे

वह अभी-अभी लंबी नींद से जागी हो। उसकी आँखें पेड़ों की शाखाओं और पत्तियों को निहारने में मग्न थीं।
‘क्या! तुमने मुझे बिना बताए यहाँ आकर क्यों सो लिया?’ उसकी आवाज़ गुस्से और चिंता से भरी हुई थी।
जब वह इस तन्मयता में डूबा हुआ था, तभी अचानक उसकी आवाज़ से वह चौंक गया। उसने मेपल की शाखाओं से अपनी नज़रें हटाए बिना फिर से उसी सवाल पर विचार किया और कहा, 'तुम किसी को क्यों बताओगी? इतने समय बाद भी, तुम्हारे लिए दरवाज़ा किसने नहीं खोला?'
"तुमने सुबह से कुछ नहीं खाया! तुमने चाय तक नहीं पी!"
‘क्या गलत है? अगर मैं मर जाऊं तो इस दुनिया में कौन रोएगा?’
‘क्या तुम मुझे प्रताड़ित करने के लिए ऐसा कह रहे हो? तुम ऐसा क्यों कह रहे हो? चुप रहो!’ उसकी आँखों में आँसू भर आए।
वह कुछ देर चुप रहा। फिर, पेड़ से नज़रें हटाए बिना, उसने कहा, 'आपने मुझे यहाँ अपने ही लोगों की तरह बुलाया। आपने मुझे यहाँ बुलाया और मुझे भूखा रखा! और अब आप ये खेल खेल रहे हैं?'
मैं पिछले पांच दिनों से तुम्हें यही कह रही हूँ! मैं इस पवित्र बंधन से बंधी हूँ! क्या मेरा इस तरह व्यवहार करना सही है? तुम मेरा रहस्य हो - तुम्हें ही इसका जवाब देना होगा!
‘तुमने मेरे बारे में ज़रा भी नहीं सोचा! तुम यहाँ भागकर आई क्योंकि तुम मेरी पत्नी थी। क्या गलत है? इस शादी से पहले भी तुम मेरी पत्नी थी। इस रिश्ते की शुरुआत तुमने की थी, मैंने नहीं! अगर तुम्हें लगता है कि शादी गाना गाने से ज़्यादा ज़रूरी है, तो गाना छोड़ दो! मुझे भी छोड़ दो। इस बार तुमने मुझे चिट्ठी लिखी। न्यूयॉर्क पहुँचते ही अगली टिकट भेजने की तत्परता दिखाई। इस शहर में इस घर का वर्णन किया। यहाँ के मौसम के बारे में मुझे लगातार बताती रही। तुमने चिट्ठियाँ नहीं लिखीं, तुमने मुझे मेरे पति से तुम्हें फ़ोन करने को कहा और यहाँ आने पर तुम्हारा लहजा बिल्कुल अलग था!’
उसे कोई जवाब सूझ नहीं रहा था। वह अब भी मेपल के पेड़ की हथेली के आकार की मुलायम पत्तियों को निहारने में मग्न था।
उसने इस बात पर ध्यान न देते हुए हंसते हुए कहा, "चलो पहले घर चलते हैं! वहीं बात करते हैं।"

‘क्या कहूँ? कहने को कुछ बचा ही नहीं। नहीं। मैं उठ रहा हूँ-’ वह उठ गया। वह उसे घूरती रही, ‘मेरे लिए टैक्सी बुलाओ। कैलिफ़ोर्निया में मुझे तुमसे कोई वास्ता नहीं रखना! तुमने कार्यक्रम तय कर लिया है, है ना? इसे रद्द करो। सब कुछ।’
आप अपना व्यवहार देखिए!
वह असहज होकर हँसी, ‘पहले तुम जाओ और गाड़ी में बैठो! चलो घर चलते हैं। नहा लो। स्नान करो और कुछ खा लो। मुझे सोचने का समय दो। तुम इसी के लिए आए हो! सर्दियों में ऐसी रोमांटिक और वीरतापूर्ण बातें मत करो। तुम्हें क्या लगता है कि मैं तुमसे प्यार नहीं करती?’ फिर उसने अपने होंठ उसके होंठों पर रख दिए। जैसा कि उम्मीद थी, उसका गुस्सा शांत हो गया। उसने आगे कहा, ‘मुझे एहसास नहीं था कि उसे ढूंढते-ढूंढते तुम्हें भूख लग जाएगी। नहीं तो मैं सैंडविच और जूस ले आती।’
गाड़ी स्टार्ट हो गई। वह खिड़की से बाहर देखता हुआ बैठा रहा। उसका मन भी यादों में खोया हुआ था।
एक समय की बात है, उन्होंने बिना किसी झिझक के पढ़ाना शुरू कर दिया। पहले तो ऐसा लगा मानो वे पूरे दिल से प्यार करते हों। वे हफ्ते में तीन दिन खूब पढ़ाते थे। ऐसा नहीं था कि अगर वे सीखना चाहते तो उस दिन उनका प्यार कामयाब हो जाता। कुछ मुश्किलें तो आती ही थीं। ज़्यादातर तो उनकी वजह से ही आती थीं। मैं भी उनसे सिर्फ शारीरिक सुख की उम्मीद नहीं करती थी; बल्कि मेरी दिली तमन्ना थी कि मैं दुनिया को बिना भूले और हथेलियों को रंगे बिना रंग दूं; और वे ऐसा करने में ज़रा भी नहीं हिचकिचाते थे। अगर उन्हें शारीरिक सुख चाहिए होता तो उनका लहजा और व्यवहार अलग होता। लेकिन बाद में, सन्नाटा छा जाता! न कुछ कहना, न कुछ सुनना। क्या यही प्यार है? मन बेचैन हो जाता। तीन महीने के भीतर ही मुझे भी समझ आने लगा। भैरव का रियाज़ पका, तिनताल और जपताल के रूप में चल रहा था और अचानक मुझे एहसास हुआ कि मैं अकेली नहीं हूँ। और भी लोग हैं! 'वर-वेध' का समय शाम चार से सात-आठ बजे तक होता है। इससे पहले, सवा चार बजे तक कोई भी लामाओं के पास नहीं आता और न ही कोई लता में आना चाहता है। फिर भी, वे किसी भी कारण से वहाँ रुकना नहीं चाहते। वे तुरंत जल्दी करने लगते, 'देर हो रही है। चले जाओ। इस घर में कोई शंका पैदा मत करो!' कभी-कभी वे कहते, 'अब तुम्हें जाना चाहिए। कोई तुमसे मिलना चाहता है।'

एक बार एकांत में रहते हुए यह विषय उठा, 'एक महिला सोचती है। क्या आप मुझे सच बताएंगे?'
'मैं हमेशा सच बोलता हूँ!'
मैंने सुना है कि आपके अन्य महिलाओं के साथ संबंध हैं। क्या यह सच है? अगर यह सच है, तो क्या आपको नहीं लगता कि इससे मुझे बुरा लगेगा?
कुछ देर तक वह चुप रहा। फिर बोला, ‘नहीं, अगर मैं चला जाऊँ तो झूठ होगा। अगर आप कई सालों के रिश्ते को इतनी जल्दी तोड़ देते हैं, तो लोगों को दुख होता है। दुखी लोग आपके रिश्ते के बारे में गलत बातें फैलाएँगे। इस रिश्ते को पूरी तरह तोड़ना ठीक नहीं है। थोड़ा इंतज़ार कीजिए, मैं धीरे-धीरे सबको दूर कर दूँगा और पूरी तरह से आपका हो जाऊँगा; लेकिन इसका मेरी ट्रेनिंग से कोई लेना-देना नहीं है! अगर आपको लगता है कि तीन दिन काफी नहीं हैं, तो एक दिन और आ जाइए!’
मैंने छह महीने धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की। एक और वर्ष बीत गया; परन्तु स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया। उसका गीत रहस्यमय था। चाहे कितने ही लोग सोचते हों कि वह आएगा, उसमें बार-बार खिलने की शक्ति थी; परन्तु उसके शरीर के साथ ऐसा नहीं था, जो यौवन अवस्था में प्रवेश कर चुका था और अभी बूढ़ा नहीं हुआ था! मुझे जल्द ही यह अहसास हो गया। अन्य मित्रों के साथ इन एकांत मुलाकातों के दौरान, मुझे उसकी आँखों में देखने की तीव्र इच्छा हुई। यह स्पष्ट था। एक छात्र को पढ़ाते समय, वह अन्य छात्रों से बचता था।
मैं इतना गुस्से में था कि मैं यह बात आसानी से भूल गया कि मेरे साथ भी ऐसा ही होने वाला है।
जैसे ही मैं हिला, 'आठवां दिन क्या है? आज नो हैबर की पांचवीं तारीख है! एक साल हो गया!'
‘जी हाँ? महिलाएं तो तारीख, दिन और साल के प्रति सजग रहने के लिए कुख्यात हैं, है ना!’ वह हँस पड़ा।
तो क्या? क्या आपने बाकी सभी पुजारियों को भगा दिया?
वे नाराज़ नहीं हुए। इसके बजाय, उन्होंने मेरे बालों में हाथ फेरा और हँसते हुए कहा, "तुम पागल हो, पागल हो!" फिर वे हँसते हुए बोले, "पिछले एक साल में तुम्हारी गायकी में जो सुधार हुआ है, उसे देखने के बजाय तुम इस बारे में क्यों चिंता कर रहे हो? अगर तुम इस बारे में इतना सोचते रहोगे, तो तुम्हारी गायकी में कोई तरक्की नहीं होगी। इस बकवास को छोड़ दो। मैं

तुम्हें एक महान कलाकार बनाने के लिए दृढ़ संकल्पित हूँ। तुम भी, बस इसी पर ध्यान दो!"
अब भी वे उसी हठ के साथ खिड़की से बाहर घूर रहे हैं।
उस दिन के बाद, उन्हें एक-दूसरे के पास जाने में कोई खास दिलचस्पी नहीं रही; लेकिन वे चाहते थे कि
अगर आप कोशिश करेंगे तो मना भी नहीं कर पाएंगे। कभी-कभी लोग कहते हैं, "तुम्हारी नज़रों में, निंदा भूपली।"
मैं खुश हूँ – तुम्हारी नाभि सभी रागों का केंद्र है – इत्यादि। ये वर्णन सुनकर मुझे घृणा महसूस हुई! लेकिन उनका सारा समय अनेक लोगों की संगति में बीतता था। इसी कारण मेरा अभ्यास करने का रुझान बढ़ता जा रहा था। इस प्रगति से मुझे संतोष मिल रहा था।
वह मुझे मुंबई में हर मीटिंग में अपने साथ ले जाया करते थे। मुझे अच्छा महसूस कराने के लिए उन्होंने रजनी कौशल को अपने साथ ले जाना बंद कर दिया था।
इसके बजाय, वह तीस वर्षों तक मंगेश और यांकर के पास आता-जाता रहा। वह कभी- कभी उन दोनों के लिए गीत भी गाता था।
मुझे अवसरों की तलाश थी; लेकिन मेरी महिला आवाज का दर्शकों पर मंगेश अय्यंकर की पुरुष आवाज की तुलना में अधिक प्रभाव पड़ा और परिणामस्वरूप, मुझे अधिक अवसर भी मिले।
उनकी दमदार आवाज को हमारे बेहतरीन सफेद तारों से और भी निखारा गया है। ऐसा लग रहा था मानो रेशमी साड़ी को नाजुक, कोयल के रंग के बॉर्डर से सजाने की जरूरत हो।
उनकी प्रशंसा भी भरपूर स्वीकार की गई। बैठक में कलाकार के रूप में मेरी भूमिका यह थी कि...
यह यात्रा मुझे आनंद से सराबोर करने के लिए काफी थी। यहां तक कि चना पत्रिका के आयोजक भी सभा में मेरा परिचय कराते समय मुस्कुराते हुए कहते थे, 'पंडितजी की विशेष शिष्या, उच्च कोटि की गायिका, मधुर स्वर वाली कुमारी मधुमिता मेहता!' या फिर मुझे उनके गाने की ध्वनि सुनाई देती थी! लेकिन मंगेश अय्यंकर के लिए, किसी तरह, इस कोने से भी चारों आवाजें सुनाई देती थीं। पंडितजी के स्वाभिमानी लोग भी मुझ पर गर्व करने लगे थे। इतना ही नहीं,

वे अक्सर मुझे देखकर अपने बचपन की यादें संजोते थे! मैं पुराने अखबारों का फोटोग्राफर भी था।
जब मुझे पता चलता कि वह आएंगे, तो वह पंडितजी की तस्वीरें खींच लेते थे। अक्सर, वह और मैं
सब कुछ इसी तरह बढ़ता हुआ प्रतीत हो रहा था। इसी तरह मेरा अहंकार बढ़ता जा रहा था।
लेकिन एक बार मेरी मुलाकात फिल्म इंडस्ट्री की मेरी पुरानी दोस्त मिहीन नरेखा झुनझुनवाला से हुई और उन्होंने कहा, ‘हम अखबारों में आपकी तस्वीरें देखा करते थे! कॉलेज के दिनों में मैं सोचती थी कि आप एक दिन बहुत बड़े कलाकार बनेंगे! लेकिन मोहनलाल के साथ आपकी तस्वीरें देखकर मुझे अच्छा नहीं लगता। इसमें कोई शक नहीं कि वो एक महान गायक हैं; लेकिन महिलाओं के मामले में उनका नाम अच्छा नहीं है। क्या आप मनोहरी दास को जानते हैं? वो मोटी-ताज़ी महिला? मेरा और उनका लंबे समय तक रिश्ता रहा था। तीन-चार साल तक वो कुत्ते की तरह उनके दरवाजे पर पड़े रहे! वो अफेयर दस-बारह साल पहले बहुत मशहूर था!’
यह सुनकर मेरा दिल बैठ गया। हालांकि मुझे उस खूबसूरत दासी की कहानी की पूरी जानकारी नहीं थी!

४
मुख्य सड़क और लॉस गैटोस गांव को पीछे छोड़ते हुए, कार उसके घर के पास पठार पर पहुंची।
बात इतनी बढ़ गई कि उसे उस अभिनेत्री से प्यार हो गया! कहते हैं ना, उसे उस गाने से प्यार हो गया और फिर उस लड़के से भी! सब एक ही भाषा बोलते हैं! मधुमिता ने उसे कठोर निगाहों से देखा। उसके चेहरे पर वही अकड़न थी। मर्दाना हठ! उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आई; लेकिन बिना दिखाए ही उसने अपना रुख बदल लिया।
चाय और बिस्कुट देने के बाद, उसने उन्हें जल्दी से नहाने के लिए कहा और फिर रसोई में चली गई। उसने दाल, सज्जी, हल्दी पाउडर से तैयार करी पत्ते - सब कुछ गर्म किया। चपाती गर्म करते समय, पुरानी यादें उमड़ पड़ीं।
मैं पिछले पाँच वर्षों से गायन सीख रही थी। अपनी प्रगति को समझने वाली मैं अकेली थी। अन्य महान गायकों के मुकाबले मेरी प्रगति बहुत स्पष्ट थी। अगर मैं इसी तरह तीन-चार साल और सीखती रहती, तो मुझे पूरा विश्वास हो गया था कि मैं अखिल भारतीय गायिका बन सकती हूँ।
जब मेरा मन ऐसे विचारों और नामों में खोया हुआ था, तभी मुझे वास्तविकता का अहसास हुआ। मेरी माँ रोने लगीं, 'मधु, देखते ही देखते तुम छब्बीस साल की हो जाओगी! छब्बीस साल की उम्र तक सब ठीक हो जाएगा।'
अच्छे चरित्र, गुणों, परिवार और शिक्षा वाले बच्चे दुर्गुणों से मुक्त हो जाते हैं। इसके बाद
एक अच्छा लड़का कैसे मिलेगा? फिर आपको इस बात से समझौता करना होगा कि आप एक निश्चित उम्र, एक निश्चित उम्र, या एक निश्चित उम्र से मिलते हैं या नहीं। रेवती भाभी हंसते हुए बोलीं, "अगर हम चाहें तो चलो एक ऐसा लड़का ढूंढ लेते हैं जिसे गाने में दिलचस्पी हो।"
अनिलभाई ने कहा, 'किसने कहा कि शादी के बाद गाना छोड़ देना पड़ता है? आजकल तो बच्चे भी खुले विचारों वाले होते हैं।'
मुझे इसका अर्थ समझ में आ गया। मुझे यह और भी अधिक तीव्रता से महसूस हुआ कि हम
मैंने गुजी के साथ एक भी रात नहीं बिताई है। रात को साथ सोना, पेंटिंग करना और देखना, पूरी रात साथ रहना और सुबह इस एहसास के साथ जागना कि हम साथ हैं!

गुजी के साथ ऐसा अनुभव होना नामुमकिन है। इतना समय मिलना असंभव है। उनकी सोच ही ऐसी नहीं है! गु-शिया के अलावा, वे जीवन के किसी और पहलू को गुजी की संगति में नहीं देखते। क्या उनका गुजी से कोई ऐसा जुड़ाव नहीं है?
हाल ही में, मेरे मन में अपना घर, अपना पति और अपनी मर्ज़ी की ज़िंदगी जीने की तीव्र इच्छा जाग उठी है। मुझसे तीस साल बड़े, पैंसठ साल के ये आदमी, जो पाँच-छह बच्चों के साथ रह रहे हैं, मेरे जैसी बीस साल की लड़की के लिए भला कैसे एक उपयुक्त साथी हो सकते हैं? इसके अलावा, हाल ही में मुझे ये भी महसूस होने लगा है कि मैं अपने भाई उपा और उसके बच्चों के परिवार में भागीदार बनती जा रही हूँ।
एक दिन अनिलभाई ने मधु को अकेले में बुलाया और कहा, ‘मधु, मैंने विक्रम शाह नाम की एक जगह के बारे में सुना है। लड़का बहुत सुंदर है। उसकी लंबाई पाँच या दस फीट है। उसने आईआईटी पवई से पढ़ाई की है और स्टैनफोर्ड से एमबीए किया है। वह एक साल से सिलिकॉन वैली में काम कर रहा है।’
मैंने एक कंपनी में काम किया और अब मैंने अपने दो दोस्तों के साथ अपनी खुद की कंपनी शुरू की है। हुशार
एक लड़का है! इकत्तीस साल का। मैंने तय किया था कि जब तक मैं बालिग नहीं हो जाता, तब तक व्यापार में नहीं उतरूंगा, इसलिए मैं अविवाहित रहा। अभी भी मैं काम के सिलसिले में यहां आया हूं। मैंने इसे देखा है। आप भी इसे एक बार क्यों नहीं देखते? ऐसा मौका जीवन में बार-बार नहीं मिलता।
नहीं, मेरी प्यारी! मैं इतना गुस्सा नहीं करना चाहती।
‘मैं आपको कुछ ज़रूरी बात बताना चाहता था। बात करते-करते मैंने उन्हें आपके गायन के बारे में बताया। यह सुनकर उन्हें बहुत खुशी हुई कि आप मोहनलाल जी के शिष्य हैं और आपको गायन के लिए किसी पैसे की ज़रूरत नहीं है! उन्हें हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत से बहुत लगाव है!’
यह यहाँ मौजूद सभी प्रसिद्ध गायकों और संगीतकारों के गीतों का एक विशाल संग्रह है।
वह तुरंत हंस पड़ा – मुझे उससे मिलना चाहिए और उससे बात करनी चाहिए! मैंने सोचा, उससे मिलने में क्या दिक्कत है? तुम्हें भी इसके बारे में नहीं सोचना चाहिए। बाद में देखेंगे। जब ऐसा मौका मिले तो मिलने से मना करना बुद्धिमानी नहीं है।

अगले दिन दोपहर के 3:30 बज रहे थे। हमने घर के मुख्य हॉल में मिलने का फैसला किया। अगर हम चाहें तो बगल वाले छोटे कमरे में खुलकर बात कर सकते थे, जिसका इंतजाम छोटेभा ने किया था। अगर गाने की बात आती तो हम अपनी सुविधानुसार कहीं भी जा सकते थे।
इसलिए मैंने डफली को भी सही सुर में कर दिया।
योजना के मुताबिक, लड़का आ गया। अनिलभाई ने उसका परिचय कराया। उन्होंने उसे विनम्रता से झुकते हुए देखा और उससे प्रभावित हो गए। मुंबई में मेरे आस-पास रहने वाले बच्चों में साहस की कोई कमी नहीं थी; लेकिन इस लड़के में मुंबई और अमेरिका का साहस समाहित था! यह किसी बॉलीवुड अभिनेता या एथलीट की तरह शारीरिक फुर्ती से उपजा साहस नहीं था। यह बुद्धिमत्ता, नैतिकता, आत्मविश्वास, कलात्मक सोच और आध्यात्मिक साधना के मेल से उत्पन्न साहस था।
मुझे पहले ही दस्तक महसूस हो गई थी। वह उठे और विनम्रता से 'नम ते' कहा, लेकिन उनके चेहरे पर इतना ही आदर झलक रहा था। मेरा मन इतना उलझन में था कि मैं ऐसा करना भूल ही गई। मैं ताम्बो के बगल में कालीन पर बैठ गई। खुद को बचाने के लिए मैं बस यही कर सकती थी कि जितनी जल्दी हो सके गाना शुरू कर दूं। जैसे ही मैंने आंखें बंद कीं और धुन ढूंढने के लिए एकाग्र हुई, मुझे दोनों भाइयों की आवाजें सुनाई दीं, 'ओह-ओह! ये क्या है!' जब मैंने आंखें खोलीं, तो विक्रम भी कालीन पर बैठा हंस रहा था, 'इस पर बैठकर शास्त्रीय संगीत सुनना मुमकिन नहीं है!'
उसका चेहरा मेरे सामने था। मेरे मन में साहस जागा। दूल्हे भी काबू में आ गए। ‘रे माप! नी सा, नी माप रे, नी माप्रे सा’, जब तक मैं यह सुन पाता, मेरी सांसें तेज हो जातीं और मेरा ध्यान केंद्रित हो जाता।
इस समय मुझे एहसास हुआ कि उसे गाने में रुचि थी। गाना सुनते समय उसका ध्यान पूरी तरह से केंद्रित था। इसके बाद राग बजाने में कोई दिक्कत नहीं हुई। उसका मुख्य ध्यान राग को समझने पर था।
इस अहसास ने मुझे सुकून दिया और मैंने उसे वह छोटी सी जगह दिखाई। चालीस मिनट तक मैं बस बातें करता रहा, उसकी आँखों में दिख रही प्रशंसा का आनंद लेता रहा, फिर भी मेरा गुस्सा जरा भी कम नहीं हुआ था।

मैं रुक गया। कुछ कहना चाहकर छोटे भैया ने कहा, 'सब कुछ गड़बड़ हो गया! साथियों को बुलाने का समय ही नहीं मिला। अगर तबला-हारमोनियम होता तो गाना और भी रोमांचक होता!'
लेकिन विक्रम ने कहा, 'इसके विपरीत, मुझे तलवा के बिना केवल आलाप सुनना पसंद है।'
अनिलभाई आगे बढ़े और बोले, ‘हम और भी गाने सुन सकते थे; लेकिन समय कम है।’ उन्होंने हम दोनों को बगल वाले दफ्तर में भेज दिया। मुझे उनके सामने कुर्सी पर बैठने में झिझक होने लगी। मुझे डर लगने लगा कि जो सवाल मैंने रात भर सोचे-समझे और योजना बनाकर रखे थे, वे मेरे हाथ से फिसल जाएंगे।
उसने सोचा, 'क्या यह मदमत सारंग नहीं था? उनका असली नाम मायामद सारंग था।' "हाने!"
यह देखकर कि वे क्रोध को पहचान सकते हैं, मेरे दिल का डर गायब हो जाता है और उसकी जगह यह भावना आ जाती है।
मैंने खुशी-खुशी हाँ कह दी। मैंने सिर हिलाकर 'हाँ' कहा। उन्होंने आगे कहा, 'मैं सुनकर थोड़ा-बहुत समझ जाता हूँ, बस इतना ही! माँ के पास मदामत सारंग की छह कैसेट हैं। इनमें से एक में मेरे पास बीबी ला खान साहब के गाने की कॉपी है! मैं सच में गाना सीखना चाहता हूँ; लेकिन काम बहुत ज्यादा है।'
पागलपन बढ़ता जा रहा है। इसीलिए आप ऐसा नहीं कर पा रहे हैं। अगर आप मुझे अपना शिष्य स्वीकार कर लें, तो मैं घर-घर जाकर सीख सकता हूँ।
उनके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान बेहद मनमोहक थी। उन्होंने आगे कहा, "मुझे आपसे कुछ कहना है।"
मैं आपको पहले ही बता देना चाहता हूँ। अगर यह गाना यहाँ से अमेरिका चला जाए तो इसके साथ क्या होगा, इस बात से डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। हमारे कैलिफ़ोर्निया में, यहाँ तक कि सिलिकॉन वैली में भी, हिंदुस्तानी संगीत आज भी ज़िंदा है! मेरे घर से लगभग ढाई घंटे की ड्राइव पर अली अकबर संगीत विद्यालय है। सैन राफेल आइए। अली अकबर खान साहब वहाँ पढ़ाते हैं। वो गायन भी बहुत अच्छे से सिखाते हैं! आप हफ्ते में एक-दो दिन वहाँ जा सकते हैं। ज़ाकिर हुसैन पास में ही रहते हैं। मेरे कुछ दोस्त कंप्यूटर इंजीनियर हैं, वे उनसे तबला सीखते हैं। रवि शंकर भी दक्षिणी कैलिफ़ोर्निया में रहते हैं। यहाँ के कई बड़े कलाकार कैलिफ़ोर्निया में, यहाँ तक कि सिलिकॉन वैली में भी रहते हैं। वहाँ कई मशहूर कलाकारों के कार्यक्रम होते हैं। आप चाहें

मेरी आँखों में भी आँसू आ गए। हमने अजनबियों के साथ मुश्किल से दो रातें ही बिताई थीं।
पच्चीस दिनों के भीतर, मुझे भी मुस्कान मिल गई। अब मेरे पास केवल एक ही सवाल बचा था। मैं यह बात गुजी को कैसे बताऊँ? क्या मैंने कुछ गलत किया? क्या मुझे घर की इस सुविधा के दबाव के आगे झुक जाना चाहिए था? विक्रम की चुंबकीय शक्ति, पहली ही नज़र में, एक ऐसे व्यक्ति की थी जो...
क्या तुम मशहूर हस्ती नहीं बनना चाहती थी? अगर तुम्हारी सास तुमसे पूछे, 'तुमने गु जी को शादी में क्यों नहीं बुलाया?' तो तुम क्या कहोगी? चाहे कुछ भी हो जाए, तुम्हें लग रहा था कि तुमने कुछ गलत किया है। तुम्हें जाने से पहले गु जी से मिलना चाहिए था। अगर वे तुमसे पूछें, 'तुमने मुझसे किया वादा क्यों तोड़ा?' तो तुम क्या कहोगी?
चाहे कुछ भी हो जाए, गु जी उससे मिले बिना नहीं जाना चाहती। जैसे ही उसने फोन किया, उसने
मैंने सोचा, 'तुम बीस दिनों से क्यों नहीं आए?'
‘मैं दो घंटे में पहुँच जाऊँगी!’ मैंने बाहर निकलते हुए कहा। सोने की चेन, बेहतरीन ब्रोकेड की शॉल, मिठाई का डिब्बा और गुलाबों का गुलदस्ता लिए वह टैक्सी से बंद्या के लिए रवाना हो गई। मेरी सुनहरी ब्रोकेड रेशमी साड़ी, मुट्ठी भर चूड़ियाँ, हाथ में मंगलसूत्र और बालों में सिंदूर देखकर गुजी को गुस्सा आ गया। ‘ये क्या है!’ उसने हैरानी से कहा।
पहले मैंने उनके पैर छुए। फिर मैंने उनके हाथों में फूलों का एक गुच्छा और तीन डिब्बे रख दिए।
उसने फिर सोचा, 'यह सब क्या है?' उसके सामने स्पष्ट रूप से सत्य ही दिखाई दे रहा था।
वे ऐसा करना नहीं चाहते थे। मैंने बस इतना कहा, 'सब कुछ अचानक ही हो गया। वे भी कुछ दिनों के लिए अमेरिका से आए थे। वे एक-दूसरे से मिले और अगले ही दिन उन्होंने शादी कर ली! मैं भी कल रात चली गई। भगवान आपका भला करे।'
'क्या आपने सबका आशीर्वाद मांगा? आप तो व्यापारी हैं! क्या कोई उत्पीड़न हुआ था?'
'नहीं।'
‘इसके बाद आपका गाना? क्या आप इसे छोड़ देंगे?’

नहीं। मैं इसे वहीं रखूंगा। मैं कभी-कभार यहां आऊंगा और आपसे सीखूंगा। उन्हें शास्त्रीय संगीत भी बहुत पसंद है!
उसके चेहरे पर दिख रही असंतुष्टि कुछ हद तक कम हो गई थी। कुछ लोग शांति की स्थिति में थे।
वह चला गया। उसने सोचा, 'तुम क्यों चले गए?'
'हाँ।'
उसने आंखों के इशारे से मुझे अंदर जाने का संकेत दिया। मैं गुस्से से भरे चेहरे के साथ बैठ गया।
उसने हल्के से मेरी छड़ी पकड़ी और हंसते हुए कहा, "कौन जाने कब फिर मिलेंगे! चलो—"
जुर्माना भरने के बाद मैंने अपना नाम वापस ले लिया और कहा, "बस, अब हो गया।" ‘क्या तुम भूल गए हो कि तुम पहले मुझसे शादीशुदा थे?’
नहीं। मैंने एक बार यह सुझाव दिया था। लेकिन आप इतनी दूर तक नहीं पहुँच पाते – इसे असंभव कहा जाता था। अगर आपने कोशिश की होती, तो यह आपके लिए असंभव नहीं होता।
वह गुस्से में बोला, "क्या तुम मुझे सिर्फ इसलिए चोट पहुँचाना चाहते हो क्योंकि मेरी शादी नहीं हुई है? तो पहुँचाओ।"
एक बार-'
इसके बाद मैं सिर्फ आपके पैर छूऊंगा और आप मेरा सिर छूना। गुस्से में बोलने का कोई फायदा नहीं!’ यह कहकर मैं उनके पैर छुए बिना ही चला गया।

५
उसने पके हुए चावल बर्तन से निकालकर माइक्रोवेव में गर्म करने के लिए रख दिए, बर्तन मेज पर सजाए और उसका इंतज़ार करने लगी। उसका स्नान अभी पूरा नहीं हुआ था। गर्म पानी से नहाना उसे अच्छा लग रहा होगा। उसकी नज़र खिड़की से बाहर गई। ढलान पर स्थित जंगल सूरज की रोशनी से जगमगा रहा था। प्रकृति से असीम प्रेम रखने वाले ही ऐसी जगह पर घर बना सकते हैं। विक्रम! मार्केटिंग में होने के बावजूद, उसका दिल प्रकृति प्रेम और संगीत के प्रति अपार प्रेम से भरा हुआ है!
उस दिन दोपहर के तीन बजे सैन फ्रांसिस्को के लोग हवाई अड्डे पर पहुंचे। बारह बज रहे थे। आया-आया ने कहा, 'मधु, तुम बहुत थक गई होगी। बारह घंटे का सफर है! हम दुनिया के इस हिस्से से इस हिस्से तक आए हैं। नहा लो, खाना खा लो और सो जाओ। पहले घर देख लो। मैं तुम्हें यह घर दिखाने के लिए बहुत उत्सुक हूँ, जो मेरी पसंदीदा जगह है, जिसे मैंने अपने खास सपनों को ध्यान में रखकर बनवाया है; लेकिन इससे भी ज़्यादा ज़रूरी है कि मुझे यह जानकर नींद आए कि यह घर कहाँ है और इसका बगीचा कैसा है। नहीं तो, अगर मुझे इस अधूरी नींद में यह पता नहीं चला कि मैं कहाँ हूँ, तो मैं चैन से सो नहीं पाऊँगी। चलो—' वह मुझे हर कमरे और गलियारे से ले गए। मुझे जाते देख उनके चेहरे पर भी संतोष झलक रहा था।
‘यह तुम्हारा गाँव वाला कमरा है। मस्जिद में सोफा या कुर्सी नहीं है। अली अकबर कूल पास ही है। वहाँ तुम्हें डफली, हारमोनियम, तबला मिल जाएगा। अगर तुम ऑर्डर करोगे तो वे कालका से भी मंगवा देंगे। अब आराम करो। परसों वहाँ चलते हैं।’
जैसे ही मैंने वह कमरा देखा, मेरी यात्रा की सारी थकान गायब हो गई। हवाई यात्रा का तनाव भी दूर हो गया। एक अपरिचित देश में होने की घबराहट भी गायब हो गई। मेरे सामान में एक डफली और एक हारमोनियम था; लेकिन उन्हें पता नहीं था।
अतिथि कक्ष में रखे सिंगल बेड को दिखाते हुए उन्होंने कहा, 'यह बेड भी हम दोनों के लिए काफी है। लेकिन मैंने मुख्य शयनकक्ष में बेड नहीं लगाया है। शादी के बाद मैंने पहले ही तय कर लिया था कि मैं मुख्य शयनकक्ष को अपनी

कल्पना के अनुसार सजाऊंगा। जब तक वह तैयार नहीं हो जाता, हम इस अतिथि कक्ष को ही बेड के रूप में इस्तेमाल करेंगे।'
गुजी ने अभी तक स्नान नहीं किया है। अगर वह पानी पिए बिना टब में सो जाए तो क्या होगा? अगर वह पुकारे तो क्या होगा? नहीं। अगर वह न भी आए तो कोई बात नहीं। वे इसे अपनी सुविधा के अनुसार अलग-अलग समझेंगे। उन्हें जब चाहे आने दो। वे पानी दोबारा गर्म कर सकते हैं।
वह उठी और उस कमरे में गई जहाँ वह बैठी थी। उसे याद आया कि मुंबई में, अगर कमरे का दरवाजा बंद कर दो तो गर्मी हो जाती है, अगर पंखा चला दो तो तंबोरा बजने लगता है, और अगर एसी चला दो तो ठंड हो जाती है।
दूल्हा और डफली असमंजस में हैं। इस घर में, इस कमरे में होना कितना सुखद है! एक शांत वातावरण जो संगीत को और भी मधुर बना देता है! डफली बजते ही दो घंटे का सुकून!
यहां, कुछ दिनों के लिए, अगर मैं बस सिर झुकाकर डफली के तार बजाती रहती, तो मुझे अवर्णनीय आनंद मिलता! इसके बाद, अभ्यास करते समय मुझे बहुत आजादी महसूस होती! मुझे गलती करने का डर नहीं था। मैंने गुजराती से रागों के सूक्ष्म अंतर सीख लिए थे। अगर इसमें जरा सा भी बदलाव होता, तो दूसरा राग शुरू हो जाता।
मुझे विज्ञान की समझ थी। अगर मुझे कोई शंका होती, तो मैं भातखंड की किताबें देख लेता। वाडेकर मटर द्वारा पाँच वर्षों तक दिया गया बुनियादी ज्ञान और उसके बाद गुजी द्वारा छह वर्षों तक की गई मेहनत! मुझे और क्या चाहिए था? मुझे जो कुछ सीखा था, उसे आत्मसात करने के लिए कुछ शांति और सुकून चाहिए था। मुझे अपने आस-पास के ज्ञान में डूबे रहने वाले व्यक्ति के इन गुणों से उबरने के लिए समय चाहिए था। इसी वजह से मैं घंटों तक गीतों में डूबा रहता था। मैं उन्हें अलग-अलग तरीकों से सुनता था। मैं उनमें निहित आत्मा को खोजने की कोशिश करता था। इस तरह नए गीतों की खोज करते हुए, मुझे डर लगता था कि कहीं मूल राग से मेरा नाता न टूट जाए। भला कौन इसके बारे में सोचेगा? ऐसे समय में, मैंने सोचा, कौन जाने चार और वर्षों तक मुझे गुजी से और क्या- क्या सीखना चाहिए था! हाँ, मैंने सीखा। इस कैलिफोर्निया में मेरा मार्गदर्शन करने वाला कोई नहीं था। मैं अली अकबर कुल्लम के पास दो बार गया। अगर वह गलत होते, तो वे गलतियाँ बताते; बस इतना ही। संगीतकार होने के कारण वे खाचा-खोचा क्षेत्र में गायन के लिए नहीं आते थे। लगातार व्यस्त

कार्यशाला का आयोजन कर रही है। विक्रम ने तुरंत कहा, 'मैं उनसे कहना चाहता हूँ कि अगर आप आ रहे हैं, तो यहाँ आराम करने के लिए आ जाइए। वैसे भी, भारत में अभी गर्मी का मौसम है। कार्यक्रम भी कोई खास नहीं हैं। लेकिन यहाँ की हवा सुहावनी है। गुजी को फोन कर दीजिए। मैं उनसे भी बात करूँगा। इसमें आपको उतना ही समय लगेगा।' पहले तो उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया; लेकिन जब विक्रम ने उन्हें यह बात दो-तीन बार बताई, तो उन्होंने फोन किया। उन्होंने तब भी फोन किया जब उन्हें पता था कि उन्हें उनसे यही अनुरोध दोबारा मिलेगा। एक बार नहीं, बल्कि दो-तीन बार। नतीजा यह हुआ कि उन्होंने तीसरी बार फोन किया।
लगता है अभी-अभी नहाया है। हाँ। मुझे बड़बड़ाहट सुनाई दे रही है। यह भी क्रोध दर्शाता है – ग म ध नी सा –
चंद्रकंस!
वह उस कमरे के दरवाजे पर गई। दरवाजा खुला था। उसने पूछा, 'क्या तुम आने से पहले नहा चुकी हो?'
मैं तुम्हें पीठ सहलाने के लिए बुलाने वाला था। लेकिन मैंने अपना इरादा बदल दिया। क्यों न तुम मुझे बुलाओ और मेरी सेवा करो?
‘मैं शादी के लिए तैयार हूँ। चलो चलते हैं’—बस इतना ही कहकर वह नीचे आ गई। खाना खाते समय उसने कुछ नहीं कहा; लेकिन उसके चेहरे से नाराज़गी गायब हो गई थी। कुछ हुआ ही नहीं था, उसने अपना खाना ऐसे खत्म किया जैसे हमेशा की तरह उसे नींद आ रही हो। फिर वह अपने कमरे में गया और कुर्सी पर बैठ गया। उसने मेज साफ की और बर्तन डिशवॉशर में रखे और अपने कमरे में चली गई।
उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। ज़ाहिर है, वह कुछ भी नहीं मांगेगा। आठ साल पहले भी यही हुआ था। इस बार भी उसने खुद को अधिकारियों के हवाले कर दिया था।
वह बिस्तर पर बैठ गई। उसके चेहरे पर 'इतनी देर क्यों?' का भाव था। उसकी ओर देखे बिना, वह हंस पड़ी, 'अरे! तुम यहाँ क्यों बैठे हो?'
‘यहाँ नहीं!’
'इसलिए?'
‘तुम या बेड मम ये!’
‘नहीं! यह हमारा बिस्तर है! यह हम दोनों के लिए इस दुनिया का सबसे पवित्र स्थान है!’ वह दृढ़ता से हंस पड़ी।

काश तुम्हारा प्यार दिल से होता!
उसकी आँखों में क्रोध भड़क उठा। जल्द ही क्रोध की जगह फिर से क्रोध ने ले ली, 'मुझ पर ज़बरदस्ती मत करो! तुम गिर जाओगे!'
"वह कुछ भी जबरदस्ती नहीं कर रही है! चलो," उसने कहा और उसे अपने बिस्तर पर ले गया।
ये किस तरह का पलंग है? ये तो हॉल में है! चाहे कितना भी करवट बदल लो, ये इतना बड़ा पलंग है! सामने की दीवार का बड़ा हिस्सा समुद्र की तस्वीर से ढका हुआ है। दाईं ओर अधनंगी नर्तकियों की तस्वीरें हैं। दीवारों पर लकड़ी की कई आकर्षक आकृतियाँ बनी हुई हैं। दस गुणा सात आकार की दो बड़ी अलमारियाँ हैं।
इन दरवाजों में इतने बड़े-बड़े शीशे लगे हैं। कालीन इतने मुलायम हैं जैसे फर्श पर खिले फूल।
दोनों ने अपने-अपने तकिए पर लेटकर पढ़ने के लिए अलग-अलग दिन तय किए थे।
उन्होंने इस हमले का विरोध नहीं किया। उन्होंने आत्मसमर्पण किया या इसे सहन किया, यह पूरी तरह से उन पर निर्भर था।
यह भी सच नहीं है।

६
वह सो गया। वह वहीं लेटी रही, कुछ बोल नहीं सकी। एक घंटे सोने के बाद, वह वह जाग गया। एक छोटे बच्चे की मासूमियत से उसने पूछा, 'क्या तुम सो रहे हो?' 'हम्म।'
वह आधे घंटे तक वहीं लेटा रहा। फिर उसने अपनी आँखें खोलीं और सोचा, 'क्या इस समय गाय के लिए कार्यक्रम नहीं है?'
'हाँ।'
'क्या गाना?'
'मस्ती करो!'
‘तुम बेवकूफ हो! अगर मुझे तुम्हारी तरह गाना होता, तो मैं तुम्हारे बारे में क्यों सोचती? इन दो हफ्तों में, मैं तुम्हें दो-तीन राग तैयार करने के लिए मजबूर कर दूंगी! तुम ही हो जो इस कार्यक्रम में मेरा साथ दोगे! ये राग। यह सिर्फ संगत होगी, साथ में गाना नहीं। तुमने मुझे यहाँ गाना सीखने के लिए बुलाया है, है ना?’
उसे ना कहना नहीं आता था। उसने पिछले सात दिनों में इस विषय पर बात तक नहीं की थी। उसने थोड़ा-बहुत गाया ज़रूर था, लेकिन वह पाठ का हिस्सा नहीं था। जब विक्रम ने भारत के इतने महान गायकों के साथ एक कार्यक्रम आयोजित करने का विचार रखा, तो उस समय के सभी संगीत प्रेमियों ने इस विचार का समर्थन किया। कुछ छोटे कलाकार अमेरिका जाकर पैसा कमाते हैं। मोहनलाल जी जैसे कलाकार के लिए एक कार्यक्रम आयोजित करने की भावना से प्रेरित होकर, सभी ने इस कार्यक्रम का समर्थन किया। भट, गुटा, कुलकर्णी, सरदेसाई के टिकट तय किए गए थे। कार्यक्रम का व्यापक प्रचार-प्रसार किया गया था। टिकटों की बिक्री भी बड़े धूमधाम से शुरू हुई थी। अब तक कई टिकट बिक चुके थे। इसी कार्यक्रम में उनके 60 वें जन्मदिन का भव्य समारोह आयोजित करने की भी योजना थी। उन्होंने पिछले एक हफ्ते से ऐसा करना शुरू कर दिया था। जब भी विक्रम दफ्तर जाते, उनके नाटक शुरू हो जाते; लेकिन मुझे यह पसंद नहीं आया। मैं जानती थी कि अगर मैंने गायन सीखने की बात उठाई, तो वे सीधे-सीधे मुझसे गाने की मांग करेंगे, इसलिए मैं भी चुपचाप बैठ गई। अब आप मुझे सिखाए बिना यह कैसे कर सकते हैं, साहब! इतना ही नहीं, आप मुझे कार्यक्रम में ही गाने का मौका भी दे

रहे हैं! इतना अच्छा गाना सीखने के बाद मैं क्या करूंगी? लेकिन मेरे भीतरी मन ने मुझे बताया कि यह भावना बिल्कुल भी सच नहीं है।
‘डफली बजाओ।’ मेरे आते ही वह झटपट उठकर अपने कमरे में चला गया। उठकर उसने चादर और तकिया उठाया। बाथरूम में जाकर उसने खुद को कंबल से ढक लिया। उसने अपनी सिकुड़ी हुई साड़ी बदलकर दूसरी इस्त्री की हुई साड़ी पहन ली। रसोई में जाकर उसने चाय बनाई और चाय-बिस्किट लेकर अपने कमरे में चला गया। चाय पीने के बाद वह कमरे में गया और डफली बजाने लगा। उसने भी अपने इस्त्री किए हुए पजामा और बाथरोब पहनकर कमरे में कदम रखते हुए कहा, ‘वाह! मैं डफली बजाने आया था, मुझे गाना गाना चाहिए था! लगता है आप लोग बैठक की शुरुआत कन्या से करना चाहते हैं! लेकिन शाम को तो इस बैठक में सारे कलाकार नाराज़ हो जाते हैं। क्या यह उबाऊ नहीं होगा?’
‘बिल्कुल नहीं! इस गुस्से में अपार शक्ति है। बस, यह तुम्हारी आवाज़ में प्रकट होगी!’ वह दिल खोलकर हंसी।
‘धन्यवाद! क्या आप यही कहना चाहती हैं? आप मेरी आवाज़ की तारीफ़ कर सकती हैं और धन्यवाद कह सकती हैं, भले ही आपको चक्कर आने लगे हों!’ उसने अपनी भौंहें उठाईं और चली गई। फिर वह दीवार के सहारे बैठ गई और बोली, ‘हम्म!’ "नहीं। आप शुरू कीजिए। मैं आपके पीछे आऊंगा।"
"क्या मुझे यह नहीं समझना चाहिए कि आपने पिछले ढाई वर्षों में कितना प्रयास किया है, आपने क्या नई चीजें सीखी हैं और आप कौन सी पुरानी चीजें भूल गए हैं?"
मैंने पहले छह महीने तक अभ्यास किया; लेकिन फिर मैंने सब कुछ छोड़ दिया। "क्या तुम गाने के बजाय गधे पाल रहे हो? इस गाँव में तो कोई गधे हैं ही नहीं!"
उसने अपने दिल से निकली मुस्कान को दबा लिया। वह हँसा, "तुम इसे क्यों छुपा रहे हो? हँसना कहाँ चला गया?"
‘कुछ नहीं! मुझे पूरा यकीन था कि आपने मुझे नए छात्र के रूप में स्वीकार कर लिया है!’
‘मैंने इसे कहाँ छोड़ दिया था कि मैं इसे फिर से स्वीकार कर लूँ? तुम ही हो जो यहाँ भाग आई थी! अब ये बेकार की बातें बंद करो! चलो गाना शुरू करते हैं!’ हनत ने निषाद और ऋषभ के टुकड़े लिए और उन पर छाया लगाई। आँखें बंद करके इस आकृति को देखते हुए, आकाश से एक बिजली सी दौड़ उठी। ये बारिश, ये – इन सबको

एक साथ लाने की शक्ति केवल उसी की है! केवल मेरी गुजी की! उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और अपने कानों में माला पहनने लगी।
"क्या आपको समझ आया? क्या आपने ध्यान दिया कि आकाश में चंद्रमा की छाया कहाँ फैल रही है? फिर से सुनो।"
वह झटपट उठी। उसने टेप रिकॉर्डर में एक नई कैसेट डाली और उसे चालू कर दिया। मुझे यहां से दिखाओ।
अगले डेढ़ घंटे तक वह मंदिर में एक-एक करके अपने पदक दिखाता रहा। वह उसे अपने पास बैठने के लिए भी कह रहा था। उसने एक और कैसेट लगाई। जैसे-जैसे वह मंदिर की गहराई में उतरता गया, पदकों पर उसकी पकड़ ढीली होती गई। वह उछल पड़ा, 'क्यों? लगता है तुमने प्राणायाम करना छोड़ दिया है।'
वह गर्दन झुकाकर बैठ गई।
अगर तुम ऐसा करोगे तो गाओगे कैसे? तुम्हें हर दिन बिना भूले प्राणायाम करना चाहिए। तुम्हें शरीर के ऊपरी भाग पर ध्यान देना चाहिए! नहीं तो क्रोध का स्वभाव कैसे जानोगे? जाओ और गधे को बुलाओ! हाँ! हाँ, मेरे साथ। मैं देख रहा हूँ कि यह कैसे नहीं आ रहा है! रे, रे
वह कैसेट भी खत्म हो गई। तीन घंटे बीतने के बाद भी वह मंद्रास तक पूरा नहीं कर पाया था और मायासा तक के पाँचवें भाग तक ही पहुँचा था। उसने अगली कैसेट शुरू कर दी।
नौ बजे फोन की घंटी बजी। वह दौड़कर भोजन कक्ष में गया और फोन उठाया।
‘मधु, मैंने तुम्हें तीन बार फोन किया। यहाँ आधी रात हो चुकी है। क्या तुम घर पर नहीं हो?’
‘वे गाने सिखा रहे हैं! कार्यक्रम में मुझे न केवल टैम्बो बजाना है, बल्कि गायन में भी साथ देना है! वे कितनी बारीकी से सिखा रहे हैं! कयान के मंदिर में संगीत कार्यक्रम तीन घंटे तक चला। मैं सब कुछ रिकॉर्ड कर रहा हूँ।’ ‘वाह! बहुत बढ़िया! मुझे भी सुन लेना चाहिए था। तुम्हें गु जी का शुक्रिया अदा करना चाहिए था! मेरी तरफ से भी धन्यवाद कहना। मैंने गाना यहीं छोड़ दिया था, है ना? अब जाओ। मैं तुम्हें आज दोपहर या कल सुबह फिर फोन करूंगा,’ उसने कहा और फोन काट दिया।
क्लास रुक गई। रात के ग्यारह बज रहे थे। हालांकि वह जाने ही वाला था, लेकिन उसे उठने का मन नहीं कर रहा था। गहरी नींद में डूबी हुई तारा उसे चिढ़ाती

रही। उसकी नींद न आने की हालत देखकर उसने सिर हिलाया और हंसते हुए उठ खड़ा हुआ, 'मैंने तो पूरे दिन तंबाकू नहीं पिया!'
'रुकना!'
'क्या?'
उसने डफली एक तरफ रख दी, उसकी ओर दो कदम बढ़ाए और दिल खोलकर हँसते हुए कहा, "मैं शुरुआत में झुकना भूल गया था! अब मैं झुकता हूँ!"
"सब कुछ ठीक था, है ना? तो फिर टाइटल को लेकर इतनी बड़ी बात क्या है?" वह हँस पड़ा।
उसकी गर्दन नीचे झुक गई।
माइक्रोवेव गर्म करते समय उसके मन में कुछ आया और वह दौड़कर कमरे में गई। उसका अनुमान सही निकला। यही आखिरी बार रिकॉर्ड हुआ था! यहाँ तक कि उसकी हंसी भी! उसने टेप मिटाया और कमरे में जाकर हंसते हुए बोली, 'तुम जो कुछ भी सिखाती हो, सब रिकॉर्ड हो रहा है। बाद में विक्रम इसे सुनेगा! इसका ध्यान रखना!'
वह डरा हुआ भी था, "अब से मैं सावधान रहूंगा। पहले इसे पोंछ लेते हैं!"
रात के खाने के बाद भी वह मुख्य शयनकक्ष में सोना चाहता था। मारिया सुबह आठ बजे आती है। चाबी उसी के पास है। वह अंदर आती है और काम शुरू कर देती है। जब उसने मारिया को यह बताया, तो उसने उसे आश्वासन दिया, 'मैं सुबह जल्दी उठकर अपने कमरे में चली जाऊंगी।' हालांकि, वह रुका नहीं और उसने अंदर से दरवाजा बंद कर लिया, क्योंकि चाबी मारिया के पास थी।
हालांकि वह तुरंत सो गया, लेकिन वह जागती रही। गाते-गाते उसकी नींद खुली। और उन्हें याद आया कि चलन खाजा राग में गाते समय इन सुरों की भावनाएँ कितनी बदल जाती हैं। ‘अगर इन सुरों का सही इस्तेमाल मन्द्र शतक में किया जाए, तो इस राग से और भी अधिक भावनाएँ उत्पन्न की जा सकती हैं, मैं गुरुजी की इस मधुर धुन को इतने दिनों तक कैसे भूल गया? इसने मुझे सचमुच पागल कर दिया था!’
वह सुबह छह बजे उठा और थोड़ी देर और उसके कमरे में सो गया। उसने अंदर से दरवाजे का ताला खोला, एक कप चाय ली और पिछले दिन की कैसेट सुनने लगी। सुनते-सुनते उसे उसकी गहरी आवाज़ और उसके लिए उसके प्यार का गहरा एहसास हो रहा था। मारिया ने अपना काम खत्म किया और चली गई। फिर वह भी नहाकर उसके कमरे में आया। वह उसके लिए चाय और नाश्ता लेकर आया।

चाय के बाद, उसने डफली उठाई। उसने टेप रिकॉर्डर चालू किए बिना ही गाना शुरू कर दिया। अभ्यास 12:30 बजे तक चलता रहा। राग वही था। पहले किए गए अभ्यासों को दोहराना, नए चरण जोड़ना, एक विशेष आनंद था। वह पिछले दिन की तुलना में अधिक सहजता से गा रही थी। और बीच-बीच में 'हूं-बात अच्छा' भी कह रही थी। हनत व्याख्यान दे रही थी। दोपहर के भोजन के बाद, वे घर के सामने इस पेड़ के नीचे एक बेंच पर बैठ गए।
वह अंदर बैठकर गा रही थी। चार बजे वह अंदर आई और बोली, 'मेरे पास विलंबित एकताल का अनुबंध है। तुम वही आलाप फिर से करो। इससे तुम्हें गाना सीखने में मदद मिलेगी।' यह सिलसिला सात बजे तक चलता रहा। उसने उसे भी रिकॉर्ड किया। शुरुआत में उसने यह राग वाडेकर मास्टर से सीखा था। बाद में, विदारा से गुजी ने उसे सिखाया। अब, सभा में वही राग दोहराया जा रहा है।
वे जिस तरह से पढ़ा रहे हैं, उसे स्वतंत्र रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है! वास्तव में, उन्हें दो साल और पढ़ाई करनी चाहिए थी। उन्हें निदान विक्रम की तरह हर तीन महीने में मुंबई जाकर पढ़ाई करनी चाहिए थी।
वे मुद्रा पर नजर रखते हुए अनुबंध पकड़े हुए थे।
अगर वे इतने जिद्दी न होते तो मैं उनके नियंत्रण में होता।
ऐसा नहीं हो सकता था, इस विचार ने उस व्यक्ति को हिचकिचाने पर मजबूर कर दिया। इससे उसे गुस्सा आया और वह भड़क उठा, 'यह कहाँ है? यह मत भूलो कि गाना एक प्रकार का प्रायश्चित है!' मेरा मन बेचैन हो गया जब
दूल्हों का नियंत्रण बिगड़ जाता है।
"माफ़ कीजिए!" उसने अपनी जीभ काटते हुए कहा।
चार दिन बाद घर लौटे विक्रम अपनी पत्नी की गायन में प्रगति देखकर भावुक हो गए। उन्होंने अपने पास रखे टेप सुने, जिनमें तारीखें भी शामिल थीं।
इससे पत्नी के प्रति उनका गर्व और बढ़ गया। भोजन करते समय उन्होंने गुरुजी से यह भी कहा, 'देखिए! मैं हमेशा आपसे कहता था कि पढ़ाई बंद मत कीजिए, बस कभी-कभार ही कीजिए।'
मुंबई जाओ और सीखो, परीक्षा लेकर आओ; लेकिन उसने मेरी बात नहीं सुनी। अब तुम उसकी बात सुनो और उसे बताओ!'
मुझे यह भी महसूस हुआ कि रात में उसकी मानसिक स्थिति अस्थिर हो रही थी। मैंने सोचा कि जब उसका मन पूरी तरह शांत हो, तब उसे मजबूर करना उचित नहीं होगा।

Vat: Ya i chhela murd ghatli. जब मैं सुबह उठा, तो वह पड़ोसी नहीं थी। वाहन मैं उठा और देखा। वह कमरे में अकेली गा रही थी, खजाने की धुन गा रही थी। गुजी यह देखकर बहुत प्रसन्न हुआ कि फल एक सप्ताह में ही पक गए थे। उसने उन्हें चखकर भी देखा। उसने एक-एक फल उठाकर उन्हें उसके बारीक और कोमल भाग दिखाए।
न्यूयॉर्क की एलिस म्यूजिक सोसाइटी की कार्यशाला के लिए नोट्स और प्रभु पर पर।
इसे दो दिन पहले न्यूयॉर्क पहुंचना था; लेकिन यह सिलिकॉन वैली में पहुंचा। कार्यक्रम की तिथि घोषित होने पर यावर को एक दिन पहले सैन फ्रांसिस्को स्कूल आने के लिए कहा गया। शनिवार को कार्यक्रम समाप्त होने के बाद रविवार सुबह विमान से न्यूयॉर्क के लिए रवाना होने का निर्णय लिया गया। दोनों मधु से अच्छी तरह परिचित थे। उन्होंने मुंबई में कई कार्यक्रमों में एक साथ प्रस्तुति दी थी। मधु दोनों को अपने घर आमंत्रित करती रही थीं; लेकिन तबला के छात्र पाटिल ने उत्साहपूर्वक आगे बढ़कर ओंकार प्रभु के मेजबान का पद स्वीकार कर लिया। इसी प्रकार, हलीत में संगीत सभाओं में हारमोनियम बजाने वाली गगन तिपानी को भी अपने घर पर ठहरने के लिए आमंत्रित किया गया। उन्होंने कहा कि उन्हें शुक्रवार दोपहर से लेकर शनिवार को कार्यक्रम के समय तक 'गु सान' का लाभ मिलेगा।
बीमारी के कारण उन्होंने उनसे घर के अंदर ही रहने का आग्रह किया। कार्यक्रम की तारीख तय होने के बाद भी विक्रम एक बार फिर तीन दिन की यात्रा पर चले गए। बाकी दिनों में भी वे सुबह आठ बजे से शाम सात बजे तक ऑफिस में ही रहते थे। इसी वजह से, गाया की ट्रेनिंग के साथ-साथ दिन के समय उन दोनों को एक विवाहित जोड़े जितनी ही एकांतता मिल पाती थी।

७
गायन कार्यक्रम बहुत ही रंगीन था।
कार्यक्रम सनीवेल हिंदू मंदिर के विशाल सभागार में आयोजित किया गया था। सभागार खचाखच भरा हुआ था। चूंकि यह केवल भारतीयों की सभा थी, इसलिए लोग एक-दूसरे के बगल में बैठे थे, और जो लोग आए भी थे उन्हें बैठने की जगह नहीं दी गई थी। इस बार विभिन्न जातियों के साढ़े तीन सौ लोग आए थे। यद्यपि विक्रम और उनके सहकर्मी शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम के लिए दो हजार लोगों को इकट्ठा देखकर आश्चर्यचकित थे, लेकिन उनकी खुशी कई गुना बढ़ गई थी। विक्रम अपनी पत्नी गुजी की लोकप्रियता देखकर भी गर्व महसूस कर रहे थे। कार्यक्रम में दो चीजों की झलक थी। पंडित मोहनलाल जी की दमदार आवाज, उनका आकर्षण और उनकी अपार प्रतिभा। दूसरी, श्रीमती मधुमिता शाह का वही आकर्षण और सहयोग! उस दिन भारतीय समुदाय को यह पता चला कि इतनी उच्च कोटि की गायिका आपके पड़ोस में रहती हैं और एक भारतीय व्यवसायी की पत्नी हैं जो आपके अपने सिलिकॉन वैली में स्वतंत्र रूप से व्यवसाय कर रहे हैं। उनका साधारण भारतीय पहनावा, शरीर पर चमकीला लाल सिंदूर, कानों में झिलमिलाते झुमके, माथे पर सुंदर गोल कुमकुम, गले में चमकीला मंगलसूत्र, हाथों में लाल चूड़ियाँ और शरीर पर कटक की साधारण रेशमी साड़ी! श्रीमती मधुमिता शाह सचमुच इस कार्यक्रम का केंद्र बन गईं।
श्रो समझ गए थे कि वे सिर्फ ढोल की थाप नहीं दे रहे थे, सिर्फ गायन में साथ नहीं दे रहे थे। यह तो पूरा गायन ही था! अक्सर मोहनलाल जी भी साथ गाते थे। मोहनलाल जी खुद भी अक्सर अपने छात्रों का हौसला बढ़ाने के लिए रुक जाते थे; लेकिन वे भी पूरे जोश से गा रहे थे! ऐसा लग रहा था जैसे गंडा-बंधन समारोह चल रहा हो!
सभा में मौजूद इन विशेषज्ञों ने उन्हें इससे पहले तीन बार गाते हुए सुना था। इस बार, उनकी उत्कृष्ट गायकी और स्वाभाविक, सुंदर आवाज़ ही एकमात्र ऐसी विशेषता थी जिस पर उन्होंने ध्यान दिया था; लेकिन आज, इस गीत की चमक कुछ और ही थी! घंटा की तरह उनके गाने की शक्ति स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। हर कोई उनकी सराहना कर रहा था। यह महज़ एक साथ नहीं है, न ही एक जुगलबंदी – यह गाने का एकमात्र तरीका है। जिन शक्तिशाली पुरुष गायकों ने इसे सुना है, वे भी इसी शक्ति के साथ गाते हैं।

त्रि-वरत को सुनना आनंददायक था। यह महज़ नकल नहीं है। यह एक व्यक्तिगत परियोजना है। यह नई दिशाओं की खोज है। क्यान राग का यह रूप एक बड़ा बदलाव प्रतीत होता है।
ऐसा ही था। नवविवाहित जोड़े की उत्तेजना, जिज्ञासा और खुशी ने उनके दिलों में थोड़ी घबराहट भी भर दी थी, लेकिन उनके कदम सहजता से पड़ रहे थे! वाह!
‘ पया ऽ के। ऽ नजरी। या ऽ
जा. भरीऽ मोहली। योऽऽऽ मन। पे ऽऽ ऽऽ म्हारी ऽ'
वाह! इस प्रस्तुति को सुनकर पुरुषों में अलग-अलग भावनाएँ उत्पन्न होती हैं और महिलाओं में भी अलग-अलग भावनाएँ। जब आप दोनों को एक साथ बोलते हैं, तो एक तीसरी भावना का अनुभव होता है! यह वह स्थिर रूप है जिसमें विभिन्न वर्णों को प्राथमिकता दी गई है, जिनमें से प्रत्येक को अलग-अलग परिवेश में प्रस्तुत किया गया है, ताकि कलात्मक विविधता का अनुभव किया जा सके! वाह! ओह!
अब मधुमिता बिना किसी झिझक के गा रही थी। इस बार वह सिर्फ मोहनलालजी का साथ दे रही थी। वह उनका अनुसरण कर रही थी। वही मधुमिता अब उनके साथ गा रही थी, कभी-कभी तो उनसे आगे भी! तबलाजी – उनका नाम क्या है? ओंकार प्रभु – गाना शुरू होते ही बैठ गए। हारमोनियम वादक भी सतर्क हो गया। वाह! बहुत बढ़िया! पूरी सभा ध्यान से सुनने लगी, सब अपनी रीढ़ सीधी करके। जैसे-जैसे गुजी की बारी आती गई, वैसे-वैसे – उफ़! यहाँ गुरुजी थोड़ी चूक गए – इस बार उन्होंने गुजी पर जो व्यंग्य किया! वाह! इसमें कोई शक नहीं कि वह भी अवर्णनीय था! उसने शुरुआत की – ‘कवनज. तन अब. किरये. ཁ ཁཁ।’ उसने तुरंत गु जी को पीछे धकेल दिया। उसके चेहरे पर जीत की हल्की सी मुस्कान आ गई और उसे आश्चर्य हुआ कि गु जी ने भी हार मान ली! इतना ही नहीं, उसने सिर हिलाकर उसे आगे बढ़ने का मौका दिया। ऐसी है महानता! ऐसी है शिक्षा! वह बड़ा आदमी, उसके पीछे चल रही महिला, बीच-बीच में सुनाई देने वाली बांसुरी जैसी हारमोनियम की आवाज़ और केवल तारों से बोले गए शब्द-
वो तबला जो ध्वनि उत्पन्न करता है!
गायन के विज्ञान को न समझने वाले, केवल सुनने वाले, गीत को आधा-अधूरा समझने वाले, चार-पाँच साल से गायन कर रहे लोग, और गायन के जानकार श्रोता – इस गीत ने सभी को एक अलग ही स्तर पर पहुँचा दिया और धीरे-धीरे राग समाप्त हो गया। सभा इतनी मंत्रमुग्ध थी कि उन्हें ढोल बजाने का मन ही नहीं हुआ। कुछ देर

प्रतीक्षा करने के बाद, मोहनलाल जी ने स्वयं घोषणा की, 'अब बीस मिनट बचे हैं', और तभी राग समाप्त हुआ। किसी ने ढोल बजाए। उसके बाद ढोलों की इतनी ज़ोरदार आवाज़ गूंजी कि कान बजने लगे। ढोल कुछ देर तक बजते रहे। कलाकारों के खड़े होकर अभिवादन करने के बावजूद भी ढोल नहीं रुके। लाउडस्पीकर पर सरदेसाई की आवाज़ सुनाई दी, 'यमन डेढ़ घंटे तक बजा रहे थे, आप लोग अब तीन मिनट बजा रहे हैं। एक मिनट और बजाइए, दो घंटे के लिए काफ़ी होगा!'
इस बात से लोग बहुत नाराज थे।
संगीत बंद होने के बावजूद उसका प्रभाव कम नहीं हुआ। इसके बाद सभा को शांत होने में कुछ समय लगा। धीरे-धीरे सभा का माहौल भी सामान्य हो गया। अब मधुमिता अधिक आत्मविश्वास से गा रही थी। श्रो ने उसे स्वीकार कर लिया है, वह गुजी के बराबर गा सकती है। जब वह आत्मविश्वास से गाती है, तो उसके मन में एक अलग ही भाव उमड़ता है।
हवा गर्म महसूस हो रही थी। वह गुस्सा भी हवा के साथ बह रहा था।
इसके बाद मोहनलाल को हॉल में भारतीयों की ओर से छठे व्यक्ति के रूप में नियुक्त किया गया।
मंत्री जी को शॉल और फूलों का गुलदस्ता भेंट किया गया। इसके बाद सचिव सरदेसाई ने कहा, 'अमेरिका में रहने वाले सभी भारतीयों को पंडितजी का ऋणी रहना चाहिए।'
उन्होंने आज पहली बार मधुमिताजी की शिक्षाओं को एक सशक्त तरीके से आपके सामने प्रस्तुत किया।
"जी हां!" यह कहते ही एक ज़ोरदार धमाका हुआ, मानो आकाश ढहने वाला हो। बाद में, अन्य लोगों का भी फूलों से स्वागत किया गया और भैरवी के आगमन की घोषणा की गई।
गु जी ने उसकी ओर मुड़कर मुस्कुराते हुए कहा, "तुम हो। मेरा मूड नहीं है।" वह डर गई थी। 'क्या मैं अकेली हूँ? उफ़!'
यह बातचीत लाउडस्पीकर के माध्यम से दर्शकों तक पहुंचाई गई। दर्शकों में से दो-तीन आवाजें आईं, "हंसो! अकेले हंसो।"
गु जी तुरंत हंस पड़ी, "यह सुनो!"
मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या कहूँ। कमेंटेटर्स ने हारमोनियम पर ‘जोगी मत जा-’ की शुरुआत बजाई। दर्शकों ने घंटियाँ बजाकर उनका स्वागत किया।

उसने भी वाडेकर मां और गुजी से भैरवी साधना सीखी थी; लेकिन हाल ही में उसने इसका अभ्यास नहीं किया था। पिछले पंद्रह दिनों से उसका मन केवल सुख और आनंद से भरा हुआ था। लेकिन अब कोई और उपाय नहीं था। उसने शुरुआत की। इस काल्पनिक स्थिति के कारण वह अपना ख्याल रख रही थी और धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। जल्द ही वह भैरवी साधना पर नियंत्रण पाने में सफल हो गई।
‘जोगी, मत जाओ, मत जाओ, मैं तुम्हें कब्र तक ले जाऊंगी-’ मीरा की अंतर्ध्वनि उसके आलिंगन से प्रकट होने लगी। ‘प्रेम आग के समान है, मेरे मित्र, मुझे बताओ कि मैं आग नहीं हूँ, जोगी-’ गाते हुए, वह ठुमरी की तरह हर भावना को प्रकट करने लगी। पूरी सभा करण के आनंद में डूबी हुई थी। जोगी कृष्ण हैं, एक बार स्पष्ट रूप से यह कहने के बाद, ‘अगर मैं चंदन जला सकता! मेरे हाथ जला दो, जोगी-’
जैसे-जैसे वह संघर्ष करता गया, अलगाव की भावना और तीव्र होती गई। इस भावना को पोषण मिलता रहा।
कलाकार, जो बेहद भावुक था, ने अपनी भावनाओं को चरम सीमा तक पहुंचाते हुए कहा, "हे प्रभु, हे ग्रिधर नगरी! हे योगी, मेरे पास आओ और मुझसे मिलो।" उसकी भावनाएँ इतनी तीव्र थीं कि वह फूट-फूटकर रोने लगा।
उनकी भावनाओं ने श्रो को भी छू लिया। कई लोगों की आँखों में आंसू आ गए। गुजी, जो काफी देर से सुन रही थी, ने स्थिति को समझा और माइक्रोफोन अपने हाथ में लेकर मलयालम में कहा, 'मत जाओ - मत जाओ -'
उन्होंने गाना शुरू किया। दर्शक उनकी ओर मुड़ गए। श्रीमती शाह ने गाने में साथ गाया।
शब्दों से कितना लगाव हो गया था, यह स्वयं सभा ने देख लिया था। इन सभी बातों को समझ लिया गया था। हृदय का पहला और आखिरी कदम दो बार मुड़ चुका था।
जब हम स्टेशन पहुंचे, तो गु जी ने सुझाव दिया कि शी ये भी हमारे साथ गाए।
उसने अपनी भावनाओं पर भी नियंत्रण रखा। हालांकि उसे शर्म आ रही थी, लेकिन उसके पास कोई और विकल्प नहीं था, इसलिए वह गुजी की शादी में शामिल हो गया। दोनों मिले और उनका गुस्सा शांत हो गया।
श्रोता कलाकारों के चारों ओर जमा हो गए। उनमें से कुछ ने मोहनलाल को भारत में सुना था और यहाँ पहली बार उन्हें देखकर प्रभावित हुए। कई संगीत प्रेमी उनके चारों ओर भीड़ लगा रहे थे ताकि वे उस कलाकार को करीब से देख सकें जो उनके सामने जीवंत हो उठा था और उनसे कुछ शब्द कह सकें। कार्यक्रम के बाद,

श्रम पीहार के रूप में भोजन का आयोजन किया गया। भोजन समाप्त करने के बाद, वे रात के 1 बजे घर लौटे।
कार्यक्रम की गहमागहमी में विक्रम और मधु को सुबह-सुबह गुजी के निधन की गंभीरता का एहसास नहीं हुआ था। अब जब वह घर आ रही थी, तो उसे इसका एहसास होने लगा। विक्रम को महसूस हो रहा था कि सुबह से घर में सन्नाटा छा जाएगा। मधु पहले ही चुप हो चुकी थी।
जैसे ही बेडरूम का दरवाजा बंद हुआ, विक्रम ने कहा, 'मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि तुम्हारी गायकी इतनी ऊंचाइयों तक पहुंचेगी। आज तुम इस कार्यक्रम की नायिका थीं! आज मैं तुम्हें बता सकता हूं कि मुझे तुम पर कितना गर्व है!' ‘धन्यवाद!’ उसने हैरानी से कहा।
‘तुम उषा गुजी के जाने पर रोने लगी थी। मैं समझ सकती हूँ! उन्होंने तुम्हें सिर्फ दो हफ्तों में कितना कुछ दिया है! मैं तुम्हें बहुत समय से कह रही हूँ, मुंबई जाओ। आओ और सीखो! तीन साल में तुम बहुत आगे बढ़ोगी! तुम बहुत बड़ी गायिका बनोगी। तुम सैन जोस में गायन का स्कूल शुरू कर सकती हो! मधुमित शाह का भारतीय संगीत स्कूल!’
उसने सड़क देखी। उसने उसके दोनों हाथ थाम लिए और कहा, 'धन्यवाद, धन्यवाद।' विक्रम ने सोचा, 'मैं दो दिनों से तुम्हारे बारे में सोच रहा था। आज उन्होंने इस कार्यक्रम के लिए उसे पाँच हज़ार डॉलर दिए हैं। साझेदारों ने दो-दो हज़ार डॉलर दिए हैं। न्यूयॉर्क से आने-जाने के टिकट के अलावा। गुजी ने तुम्हें दो हफ़्ते पढ़ाया है। वो भी इतने पैसों के लिए!'
मुझे लगता है हमें उन्हें कम से कम पाँच हज़ार डॉलर देने चाहिए थे! यह पंद्रह दिनों में एक सौ बीस घंटे होते हैं, यानी प्रतिदिन आठ घंटे। 46 पॉइंट प्रति घंटा छह डॉलर होता है। उन्होंने जो कला भेंट की है, उसका मूल्य अतुलनीय है।
हमें उनके द्वारा दिए गए इस समय का कुछ हिसाब तो रखना ही होगा, है ना? बताइए, क्या यह कम है?
"ऐसा नहीं होगा, है ना? या हमें और अधिक देना चाहिए?"
‘धन्यवाद! आप बहुत उदार हैं!’ यह कहते हुए उसकी आँखों में आँसू आ गए।
वह सो गया। लेकिन वह अभी भी जाग रही थी। वह अपना बिस्तर बदल रही थी।
वह जाग गया। बिना आंखें खोले ही वह हंसते हुए बोला, 'अब सो जाओ मधु! सुबह जल्दी मिलते हैं।'

मुझे उठ जाना चाहिए था। मुझे आठ बजे ही निकल जाना चाहिए था।'
कुछ देर बाद उसने कहा, "मैं हवाई अड्डे पर नहीं आऊंगी। अगर मैं वहां भावुक होकर रोने लगूं तो आप समझ जाएंगे; लेकिन दूसरों को यह अजीब लगेगा। मैं यहीं पर नामकरण को अलविदा कह दूंगी।"
कुछ देर सोचने के बाद उन्होंने कहा, ‘अगर तुम भावुक हो जाओगे तो लोग तुम्हें मूर्ख समझेंगे। इसके विपरीत, अगर तुम नहीं आओगे तो चर्चा होगी। तुम्हें तीन महीने में मुंबई जाना है। तुम अपने आप पर काबू रख सकते हो। मैं सुबह गुजी से बात करूंगा। वह जो कुछ भी कहे, उसे रिकॉर्ड करना मत भूलना।’ इसके लिए, वे जो भी शुल्क मांगेंगे, हम वह चुका देंगे। अगर वे शुल्क नहीं भी मांगेंगे, तब भी हम चुका देंगे। उन्होंने यह राशि इस कला के लिए कीमत के रूप में नहीं, बल्कि सम्मान के प्रतीक के रूप में दी है!

दो

१
ये औरतें ऐसी ही होती हैं! पल भर में अपनी जान ले लेती हैं और फिर रोने लगती हैं! मतलब, इस बार तो मेरा गला भी भर आया! अगर विक्रम ने यूनाइटेड एयरलाइंस का टिकट पहले ही न लिया होता, तो वो भगवान के साथ ताश खेलते हुए सफर कर पाता। तब शायद ये बोरियत न होती। छह घंटे की उड़ान कुछ ज़्यादा ही लंबी थी! पल भर में ही उसने अपनी जान ले ली। मेरा दिल टूट गया। मुझे गर्व भी महसूस हुआ। एक बड़े परिवार की बेटी! उसका पति भी उसी स्तर का है! फिर भी, विदाई देते हुए मैं रो पड़ी! गर्व के साथ-साथ एक तरह का अपनापन भी महसूस हुआ। मुझे तीन महीने में एक बार आने दो। मैं रोज़ आठ नहीं, बल्कि दस घंटे सीखूंगी। इसी तरह मैं भविष्य में अपना नाम रोशन करूंगी! मतलब, अगर मैं अपना सारा समय गाने में लगा दूं! तो मुझे सीखना ही होगा। अब मेरी बारी है। "सुकुमार बंधा, गुस्से में सारी भावनाएं जताती आंखें।"
उसके कोमल स्पर्श की अनुभूति मेरे मन में हुई। मुझे एक सुखद दर्द का एहसास हुआ। ये तो कुछ भी नहीं है!
वह एक महान गायिका बनना चाहती थी! लेकिन यह आश्चर्यजनक है कि इतनी तरक्की करने के बावजूद भी वह महवा के गुस्से पर काबू क्यों नहीं पा सकी? बिना किसी को बताए भाग जाना गलत लगता है। या फिर यह बात है कि चाहे वह कितनी भी मेहनत करे, अमीर लोग कला को पसंद नहीं करते?
यह सवाल सुनकर मेरा दिल बैठ गया।
अगर मेरे पास रहने के लिए जगह होती और खाने के लिए खूब समय होता, तो क्या मैं एक कलाकार के रूप में और भी निखर पाती? मुंबई के वो शुरुआती दिन। किसी गीत पर महारत हासिल करना सिर्फ मेहनत से संभव नहीं है। इसके लिए संघर्ष करना पड़ता है, तड़पना पड़ता है, करुणा का भाव रखना पड़ता है और वैसा ही बनना पड़ता है। वरना राग में इन भावनाओं को कैसे समझा जा सकता है? एक गुरु जो सुख का ख्याल रखता है और उसे बढ़ाता है, और एक पति जो सुख का ख्याल रखता है और उसे ठंडे फ्रीजर में बंद करके रखता है! ऐसी स्थिति में एक स्त्री भावनाओं की सूक्ष्मता को कैसे समझ सकती है?
एक माँ जो चार घरों के बर्तन और कूड़ा इकट्ठा करके अपने बेटे का पेट पालती है। एक होशियार लड़का जो समझता है कि अगर वह गंगाजी के किनारे बैठकर भजन

गाता है, तो उसे चार पैसे ज़्यादा मिलते हैं। भजनों की धुन के साथ एक ही गीत बजता है। इधर-उधर, होटलों में लाउडस्पीकरों पर, रेडियो पर बजने वाले भावुक गीत झुमके के साथ गाए जाते हैं। उसे हर दिन डेढ़ या दो पैसे मिलते थे। नौ साल पहले की बात है। यह नए पैसों का ज़माना नहीं था। यह पैसा कमाने का ज़माना था। पैसा, जो तोरियाओं की रानी है!
एक रुपये में आठ शेर गेहूँ मिल जाता था। एक सैनिक का वेतन चार रुपये था। उसे इस बात पर कितना गर्व था! माँ उसे समझाती, 'मेरे प्यारे, कहाँ बैठोगे?' शाम को गंगामाँ की आरती के समय हरि की पौड़ी के पास बैठना। आरती के गीत। "हाँ।" वह अपनी बेटी की कमाई बचाना चाहती थी।
मैंने ओमकार बाबा को पहले कभी नहीं देखा था।
"बेटा, भगवान ने तुम्हें नेक दिल दिया है! मेरे साथ आओ। मैं तुम्हारे खाने- पीने और रहने का इंतज़ाम करूँगा। मैं तुम्हें और भी अच्छे गाने सिखाऊँगा।" पीछे बंधे सफेद बाल, लंबी दाढ़ी, केसरिया लुंगी, केसरिया साड़ी, माथे पर बड़ा कुँकु। मैंने उसे कुछ शक की नज़र से देखा। ऐसे बाप को गाने कहाँ से मिलते होंगे? वह बोलता रहा,
"मेरे साथ आओ, माँ! मेरा गीत सुनो! माँ के आश्रम में तुम्हारे जैसे दूसरे बच्चे क्या गाते हैं, सुनो। अगर पसंद आए तो यहीं रहो। अगर पसंद न आए तो वापस आ जाओ। क्या तुम्हें डर है कि तुम्हारी कमाई कम हो जाएगी? इसे लो और पी लो।"
उसके द्वारा दिया गया एक छोटा कपड़ा जिस पर प्रिंटेड बंदाना और अन्य आभूषण लगे हुए थे।
मैंने उसे अपनी जेब में रखा, अच्छे से लपेटा, फिर उसे अपनी शॉर्ट्स की जेब में डालकर उनके साथ निकल पड़ा। विभाव पर्वत के पास सचमुच एक आश्रम था। उसके चारों ओर एक परिसर था। द्वार पर केसरिया रंग लगा हुआ था।
वज. आश्रम एक पुराना मकान था। अब वह नष्ट हो गया है। इस युग के बच्चे अब हाथों में हैं।
वे डफ या हारमोनियम बजाते हुए गा रहे थे। वहाँ बारह या पंद्रह बच्चे थे, जिनकी उम्र दस से बीस वर्ष के बीच थी। वे एक कोने में बैठकर तबला बजा रहे थे। उनमें से प्रत्येक ने सफेद धोती और कुर्ता पहना हुआ था।
बाबा मुझे अपने कमरे में ले गए। सोफे पर बैठकर उन्होंने मेरे हाथ पर चीनी के दो बड़े टुकड़े रख दिए। उन्होंने मुझसे उन्हें खाने के लिए ज़ोर दिया।

उन्होंने हारमोनियम बजाते हुए 'चलो मन गंगा-जमुना तिर' गाना शुरू किया।
मैं उसे सुनकर मंत्रमुग्ध हो गया। बाद में उन्होंने 'मैं मैंने गोविंद लीयो मोल' गाया, जिसे मैं गा रहा था।
मुझे गाने के लिए कहा गया। हारमोनियम के साथ गाते हुए मुझे एहसास हुआ कि मेरा अपना गाना कितना सुंदर लग रहा था।
मुझे लगा कि मैंने यह कर दिखाया है। उसके बाद, उन्होंने मुझे एक-एक करके वे सभी गाने गाने को कहा जो उनके दिमाग में आए, और खुद हारमोनियम बजाते रहे। ये बाबा वाकई बहुत अच्छा गाते हैं! मैं भी बहुत प्रभावित हुआ। ‘बाबा, क्या मैं भी बजाऊं?’ मैंने भी अपनी उंगलियों से हारमोनियम बजाने की कोशिश की; लेकिन सुनने में जितना आनंद आया था, उतना अच्छा नहीं लगा। बल्कि, ऐसा लगा जैसे मेरे कानों के साथ अन्याय हुआ हो।
‘बाबाजी, इसे कैसे बजाते हैं?’
‘बेटा, तुम्हें धीरे-धीरे सीखना होगा! मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि यहाँ रहने वाले दूसरे बच्चे कैसे खेलते हैं। हर दिन एक-दो घंटे यहाँ आना। मैं तुम्हें और भी गाने सिखाऊँगा। देखो, यहाँ कुछ गाने की किताबें हैं। क्या तुम उन्हें पढ़ सकते हो?’
‘मैंने बाबूजी वार के दिन स्कूल छोड़ा था। दो साल हो गए हैं।’
'मंजी, तुम क्या कर रही हो?'
‘बर्तन धो रहा हूँ!’
मैं दो महीने तक रोज़ आश्रम जाता था। बाबा जी मुझे रोज़ डेढ़ से दो घंटे तक सिखाते थे। मैं हारमोनियम पर यम, भूप, देश, सारंग जैसे रागों का उतार-चढ़ाव, लान-गीत और प्रत्येक राग के दस-दस तान सीखता था। मुझे वहाँ भोजन मिलता था। इसके अलावा, मुझे मिश्री का प्रसाद भी मिलता था!
एक दिन बाबा जी ने कहा, ‘पुत्र, तुम्हारी प्रिय माता ने ही तुम्हें आवाज दी है! इसके अलावा, तुम्हारी बुद्धि भी बहुत तेज है। आओ और आश्रम में स्थायी रूप से रहो। मैं तुम्हें मेरे जैसा महान गायक बना दूंगा! तुम्हें भोजन और वस्त्र मिलेंगे। चिंता मत करो, माता। गायन के साथ-साथ मैं तुम्हें पढ़ना- लिखना भी सिखाऊंगा। हिंदी और संस्कृत भी पढ़ाई जाएगी।’
जैसे ही मैंने विदा ली, मेरी माँ भी आ गईं। मैंने आश्रम में दूसरे बच्चों को गाते-खेलते देखा, और बाबा जी से भी मिली। उन्हें न केवल आस्था का अनुभव हुआ, बल्कि स्नेह भी हुआ। बाबा जी के चरणों में सिर रखकर उन्होंने कहा,

'□□□□ □□, □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□!'
‘□□□□! □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ ?’
□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□-□□ □□□□□□ □□□! □□□□□ □□□ □□□□□□ □□! □□□□
□□□! □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□-□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□, '□□□?'
□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□
□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□, "□□□□ □□□," □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□, "□□□□ □□□?" □□ □□□ □□□ □□□
 □□□□□□ . □□□ □□ □ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□.
□□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□
□□□□□ □□□□-□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□ - □□□□, □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□
□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□, □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□ □□, □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□, □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□-□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□
□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□, □□□□□□…
□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□, □□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□, □□□□□□□□□, □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□-□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□
□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□, □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□, □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □ □□□

इसमें विविधता बिल्कुल नहीं है। मैंने देखा कि पूंजी भी जल्द ही खत्म हो गई।
वापस लौटते समय मैंने उनसे अपने विचार व्यक्त किए। इस पर उन्होंने कहा, 'अगर हम संगीत के साथ खेलते हैं और आप इसे मनोरंजन का साधन मानते हैं, तो यह स्वतंत्रता का मार्ग कैसे हो सकता है?'
मुझे कैसे पता चला कि मुक्ति क्या होती है? मैंने बाबा जी को इसके बारे में बोलते सुना था। भगवद् गीता में कुछ लोग इसके बारे में बहुत उत्साह से बात करते हैं। क्या वे गीत गाकर उस अवस्था को प्राप्त कर सकते हैं? लेकिन हीरा- ऋषि केशम में तो कई संत और तपस्वी हैं जिनमें गीत गाने की कोई झलक भी नहीं है। अगर उनमें से किसी में मुक्ति की झलक है, तो यह कहना ही होगा कि उन्होंने बिना गीत गाए ही उस अवस्था को प्राप्त किया है, है ना? हालांकि मेरे मन में ऐसा प्रश्न उठा, लेकिन मैंने इसे उठाया नहीं। क्योंकि मैं जानता था कि अगर मैं इस चर्चा को आगे बढ़ाता भी, तो भी मैं बाबा जी को उत्तर नहीं दे पाता।
योग, प्राणायाम और ब्रैकीथेरेपी पर विशेष ध्यान दिया जा रहा था। बाबा जी हममें से हर एक को अपने कमरे में गुप्त उपदेश देने के लिए बुलाते थे। मुझे नहीं पता कि वे किस तरह के उपदेश देते थे। एक बार उन्होंने मुझे भी बुलाया और पूछा, 'क्या तुम कभी सदमे की स्थिति में रहे हो?'
मुझे आश्चर्य हुआ। मैंने शर्माते हुए कहा, 'हां। ऐसा कभी-कभार होता रहता है।'
मैं आपकी ईमानदारी की सराहना करता हूँ! किसी को भी डॉक्टर से अपनी बीमारी नहीं छिपानी चाहिए। ध्यान रखें कि अधोरित और उवरित दो प्रकार के होते हैं। अधोरित मार्ग का अनुसरण करने वाले शक्तिहीन हो जाते हैं। ऐसे बच्चों से किसी भी प्रकार की साधना संभव नहीं होगी। जो व्यक्ति इस शक्ति को उवरितों की ओर मोड़ने में सफल होता है,
सफलता इसी से मिलती है। यह मत भूलो कि संगीत भी एक प्रकार का प्रायश्चित है। जागृत हो जाओ।
यदि मन को नींद और विश्राम की अवस्था की ओर उन्मुख किया जाए, तो यह ऊर्ध्वगामी अभिग्रहण का एक रूप बन जाता है। याद रखें, नष्ट होने वाला प्रत्येक बिंदु अभ्यास की शक्ति को नष्ट कर देता है!

२
खिड़की से बाहर देखते हुए, मसाले और जड़ी-बूटी का हर दाना चबाते हुए, मैंने सोचा, "अरे कोच, मैं यहाँ नहीं हूँ।" यह कोई ऐसी जगह नहीं थी जहाँ शराब पीना मना हो; लेकिन मुझे यह भी अनुभव था कि जब कोई साथ न हो तो शराब पीने में मज़ा नहीं आता। अगर मैं यहाँ होता, तो मज़ा आता। पिछले महीने, अगर कुछ मसालेदार होता, तो मुझे संगीत जगत में, न सिर्फ मुंबई में, बल्कि पूरे भारत में, जो कुछ भी हुआ होता, उसे सुनने में आनंद आता। अकेले शराब पीने में क्या मज़ा? अगर दो लोग होते, तो वे शराब पीने की चार पारियाँ खेल सकते थे। जैसे ही एयर होस्टेस पास आई, उसने कहा, "नहीं, नहीं। मुझे एक कोक दीजिए।" उसने कोक की बोतल ली और एक हल्की सी आह भरते हुए चली गई।
कोक की चुस्कियाँ लेते हुए हीरार की यादें ताज़ा हो गईं। माँ का देहांत हो गया और हीरार पीछे छूट गई। क्या तुमने उसे इसलिए छोड़ा क्योंकि वह चली गई थी? या पंडित रोहिलाप से गायन सीखने की आशा में? माँ का देहांत पहले हुआ। सत्रह साल पहले की बात है। एक दोपहर, मोहिंदर सिंह, जो मुझसे प्रेम करता था, साइकिल पर मुझे ढूँढ़ता हुआ आया। हीरार के लिए एक-दो आश्रम ही क्यों हैं? वह सुबह से मुझे ढूँढ़ रहा था। जैसे ही उसने मुझे देखा, उसने कहा, ‘तुम्हारी माँ का देहांत हो गया है। उल्टी और दस्त कल रात से शुरू हो गए थे। दवा देने के बाद भी कोई फ़ायदा नहीं हुआ। कल शाम को उनका देहांत हो गया, इसलिए वे तुम्हें आश्रम से ले गए। लेकिन मैं तुम्हें किस आश्रम में ढूँढ़ूँ? आधी रात को बदबू आना बंद हो गई। रो मत बेटा! जमाल में सबको एक दिन जाना ही है।’ जैसे ही बाबा जी ने यह खबर सुनी, वे भी साइकिल पर सवार होकर उनके साथ चले गए।
उस याद से मेरा गला सूख गया। आँखों के सामने पानी का पर्दा सा छा गया। कितनी ऊँचाई पर? हम ज़मीन से तीन हज़ार फीट ऊपर थे। खड़े रहना धुंधला और अदृश्य हो गया। ‘इंसान चाहे कितना भी बूढ़ा हो जाए, उसकी माँ का जीवित रहना कितना अच्छा है! उसका मन कितना भरा रहता है!’ बाबा जी ने कहा था, और यह सच था। वही थीं जो हर हफ्ते उनसे मिलने आती थीं। पहले तो वह हर हफ्ते आती थीं, फिर हर पंद्रह-बीस दिन में आने लगीं। वह कैसे गुज़ारा करती थीं? वह चावल और सब्ज़ियाँ खाती थीं, उपवास रखती थीं और अपनी तनख्वाह बचाती थीं। इसी तनख्वाह से वह उधार लेती थीं।

वह पड़ोसियों से कहा करती थी, 'मैं पैसे इकट्ठा करके उस बच्चे से शादी कर लूंगी।'
एक बार मोहिंदर सिंह आश्रम आए और पूछने लगे कि वे किसी को कितना पैसा देंगे। लेकिन न तो कोई पत्र था, न कोई रोटी, भला कौन स्वीकार करता? सब लोग गंगाजी की शपथ लेने को तैयार थे! बाबा जी ने स्वयं उनका दिन बना दिया। वे सचमुच एक संत पुरुष थे!
फिर भी, एक महीने के भीतर ही मैं किसी महान गायक से गायन सीखना चाहती थी, कुछ शुद्ध संगीत सीखना चाहती थी। हालाँकि मेरी इच्छा प्रबल थी, मैं जानती थी कि बाबा जी से इस तरह कहना ऐसा होगा जैसे कहना, 'आप उतने महान गायक नहीं हैं।'
ऐसे समय में पंडित राम नारायण रोहिला अपनी पत्नी के साथ तीर्थयात्रा पर हीराआर आए थे। उनका मुख्य कार्य आश्रम में था। बनारस में संगीत सम्मेलन में...
उन दोनों का परिचय कराया गया। इसी कारण बाबा जी ने यह सुनिश्चित करने का दायित्व अपने ऊपर ले लिया कि उन्हें यह पसंद आए या न आए।
इसे माँ पर रखा गया था। शाम के समय सभी विद्यार्थियों के सामने भूपली राग कितनी खूबसूरती से गाया गया! हिमालय की ऊँचाई तक फैली तरल संध्या का अहसास निरंतर बना रहा। इसके प्रत्येक श्लोक गंगाजी की लहरों पर तैरते द्रोण में चमकते प्रकाश की तरह बह रहे थे! भूपली राग, जिसमें केवल पाँच श्लोक थे, को इस तरह प्रस्तुत किया गया कि भूपली के इतने विविध रूप देखकर मैं चकित रह गया! चंचलता की सीमा पर चमकती गंभीरता और चंचलता की गहराई में समाई शांत गंभीरता! गांधार और दैवत से उभरती नेहा की विविधता! वाह! यहाँ, मैंने इस राग के उतार-चढ़ाव और लैंग-गीत को कंठस्थ कर लिया था। इस मामले में, मैं बस बाबा जी द्वारा सिखाए गए शब्दों को दोहरा रहा था, बस इतना ही!
हीरा में तीन दिन रहने के बाद पंडितजी चारधाम यात्रा के लिए ऋषिकेश रवाना हो गए। लौटने पर उन्होंने आश्रम लौटने से इनकार कर दिया।
वे चले गए और मेरा दिल उदास हो गया। तीसरे दिन, इसी उदासी से एक प्रबल इच्छा जागृत हुई। मुझे गाना सीखना ही होगा!
जब तक मैं यहाँ था, मैंने पूरी श्रद्धा से उनकी सेवा की। माताजी उनसे कितना प्रेम करती थीं! जब भी उन्हें कुछ चाहिए होता, मैं दौड़कर आश्रम की रसोई में जाता और उन्हें लाकर देता। अगर वह और आप वहाँ नहीं होते, तो मैं उन्हें

बाज़ार से साइकिल पर ले आता। फिर, मैं बड़े उत्साह से उनकी प्रशंसा करते हुए कहता, 'मोहन, तुम कितने प्रतिभाशाली हो!' ठीक वैसे ही जैसे पंडितजी उनकी प्रशंसा किया करते थे!
अगर मैं सागर के पास जाकर उनके पैर पकड़ लूँ, तो वो मुझे गाना सिखा देंगे; लेकिन बाबा जी से इजाज़त कैसे लूँ? दोनों आपस में दोस्त हैं। इसलिए, मैंने सोचा कि कोशिश करने में कोई हर्ज नहीं है, तो एक दिन मैंने उनसे इस बारे में बात करने का फैसला किया।
बाबा जी ने तुरंत जवाब नहीं दिया। उनके चेहरे पर असंतोष की लकीरें उभर आईं। मुझे यही उम्मीद थी। प्रिय शिष्य अब दूसरे गुरु से शिक्षा लेने जा रहा है।
यह स्वाभाविक ही था कि हैट इस बात से इतनी नाखुश होगी।
उन्होंने मुझे शाम को फोन किया और कहा, 'आप पंडितजी के गीतों की ओर आकर्षित हैं।'
आपको शायद ऐसा लगे; लेकिन यह सांसारिक संगीत है। इसमें दूसरे की आंतरिक रोशनी नहीं है। लय और धुन को डगमगाने दिए बिना, चाहे हम कितना भी बजाएँ, हमें यह भूले बिना मंच पर आना चाहिए कि हम कहाँ हैं! जैसे हम आह के पहिये से रस निकालते हैं, वैसे ही हमें वार्ताकार के पहिये से धुन निकालनी चाहिए! क्या संगीत बस इतना ही है?
‘तो फिर क्या? क्या इससे जुनून की भावना उत्पन्न नहीं होती?’ मेरे मन में उठे इस प्रश्न पर मैंने ध्यान नहीं दिया। मेरे मन में एक और प्रश्न आया – आपके आध्यात्मिक संगीत में आध्यात्मिक अर्थ के अलावा और क्या है? बाबा जी को इस प्रश्न पर केवल अपनी धैर्यता के एक भाग के रूप में ही विचार नहीं करना था। असली प्रश्न यह था कि इस प्रश्न को उनके समक्ष आंतरिक और बाह्य दोनों रूप से कैसे प्रस्तुत किया जाए। वे कितने प्रेम से हमारी देखभाल करते हैं! इसके लिए उनकी विशेष प्रशंसा! मुझे उनके मूलभूत गुणों का अपमान करने का कोई अधिकार नहीं था! फिर भी, मेरे मन में यह प्रश्न आया, क्या आध्यात्मिक अर्थ को शामिल करने से कोई गीत ‘निस्वार्थ’ हो जाता है? बनारस सम्मेलन में भी किसी ने बाबा जी से यही प्रश्न पूछा था। वे अवश्य ही इसका समर्थन कर रहे होंगे।
मेरे मन में रोहिला पंडित के गीतों का आकर्षण बढ़ता जा रहा था, जो इस जीसस को रौंदते थे। साथ ही, मुझे लगने लगा कि मैं यहाँ सिर्फ भजन सीखने में अपना

जीवन व्यर्थ कर रहा हूँ। बाबा जी भी याला गाते थे, वे भी मुझे श्रद्धापूर्वक सिखाते थे; लेकिन
इसमें कोई स्वतंत्रता नहीं है। यदि मन और भावनाओं के प्रति जागरूकता न हो, तो क्रोध कैसे पनप सकता है?
यह पहली बार है जब मुझसे यह सवाल पूछा गया है।
इसी मानसिक अवस्था में एक दिन बाबाजी ने कहा, ‘पुत्र, वामी हरदसा और तानसेन के गीतों में अंतर समझो। वामी हरदसा के गीत किसी के गुलाम नहीं थे। वे वर्तमान क्षण में ईश्वर के समक्ष गाए जाते थे। तानसेन, जो सांसारिक सफलता और राजसी प्रसिद्धि में डूबे हुए थे, दरबार के आकर्षण में लीन थे।’ उस समय इस तर्क का भी उनके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा; परन्तु राजसाहेब ने कुछ वर्ष पूर्व आश्रम छोड़ने के बाद जो प्रश्न पूछा था, वह उस समय उनके मन में नहीं आया। राजसाहेब ने एक बार सोचा, ‘आज तो तानसेन के नाम पर राग हैं, उनके गाए राग तो कोई न कोई गाता ही है; परन्तु हरदसा के नाम के सिवा आज क्या बचा है?’ आंखें बंद करके और बयालीस साल पीछे जाकर, उन्होंने उस समय का गहराई से विश्लेषण किया। उस समय उन्हें तानसेन की तरह राजसी यश प्राप्त करने की जरा भी उम्मीद नहीं थी। उस समय उनके मन में पंडितजी से गायन सीखने की प्रबल इच्छा थी! दो महीने तक इस लालसा में डूबे रहने के बाद, वे बिना किसी को बताए, दो जोड़ी कपड़े लेकर बून आश्रम से चले गए।
उस समय मेरे पास कोई पैसा नहीं था; लेकिन मैं कुछ महान करना चाहता था। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं जा रहा हूँ। मैंने पंडित रोहलान का पता एक नोट में रखा था। मुझे यह भी नहीं पता था कि सागर गाँव किस दिशा से आ रहा है। स्टेशन पर पूछताछ करने पर पता चला कि रेलगाड़ी दिल्ली से आगरा-या-हर-झांसी होते हुए सागर जाती है। बिना किसी झिझक के मैं ट्रेन में चढ़ गया और बैठ गया। यात्रा के दौरान क्या खाऊँ, यह सवाल उठा; लेकिन यह ज़रूरी नहीं था। दो साधारण भजन भी गा दिए जाएँ तो कमरे में बैठे लोग एक-एक सिक्का डाल देते हैं। इतना ही काफी है। मैं आठ साल की उम्र से ऐसा करता आ रहा हूँ। अब अठारह साल की उम्र में मेरी आवाज़ थोड़ी और निखर गई है। धुन और लय का ज्ञान भी बढ़ गया है।
यह कितना बढ़ गया है? मैंने आश्रम में त्याग, घृणा, दान और धर्म पर कितने भजन सीखे हैं!

लेकिन असल में, जब मैंने भीख मांगने के लिए कोई गाना गाने की कोशिश की, तो मेरा गला जैसे घुट रहा था। इस बार बात अलग थी। अब जब मैंने इतने सारे गाने सीख लिए हैं, तो क्या मुझे उन्हें भीख मांगने के लिए इस्तेमाल करना चाहिए? अगर मैं डेढ़ दिन भूखा रहूँ, तो मैं मर तो नहीं जाऊँगा!
दिल्ली तक टिकट चेक करने कोई नहीं आया; लेकिन वहां से अगली ट्रेन लेने के बाद, एक घंटे के भीतर टिकट चेकर आ गया। उसे भी ठीक वही बात बताई गई, 'मैं रात में रेड कार्ड लेकर दिल्ली आया था। अब मैं सागर जा रहा हूं, ताकि गायन सीख सकूं। यह मेरा बैग है और ये मेरा सामान है। चेक कीजिए और जो करना है कीजिए।' ‘मैं इसे अगले स्टेशन पर स्टेशन मास्टर को सौंप दूंगा। वे इसे पुलिस को सौंप देंगे! पुलिस जो भी करना होगा करेगी। मैं नहीं करूँगा!’ उसने कहा और आगे बढ़ गया। दस मिनट बाद वह लौटा और बोला, ‘क्या आप बिना टिकट के सीट पर बैठे हैं? उठिए! बैठ जाइए या दरवाजे के पास खड़े हो जाइए।’
मैं चुपचाप दरवाजे पर खड़ा रहा। तभी वह आया और बोला, ‘मैं झांसी जा रहा हूँ। मुझे नहीं पता कि अगला टीसी क्या करेगा।’ और वह चला गया।
यह सब एक पनाशी गृहस्थ देख रहा था। उसने मुझे रोटी देने की ज़िद की। मैंने व्रत का हवाला देते हुए मना कर दिया, तो उसने कहा, 'ठीक है; लेकिन अब मेरे पास आओ, ये रोटियाँ हैं।' इस मोटे पराठे और प्याज-आलू की सब्ज़ी से मेरा पेट भर गया।
बाद में उन्होंने पूछा, ‘आप किससे सीख रहे हैं? सागर, आप किससे सीखने वाले हैं?’ मेरी सारी बातें सुनने के बाद उन्होंने आगे कहा, ‘रोहिला गवई अच्छा गाते हैं। मैंने उनके बारे में सुना है। क्या मैं थोड़ा गाऊं? आइए, थोड़ा सुनिए।’
मैंने खिड़की से बाहर देखा। सुबह के नौ बज रहे होंगे। उसने पूछा, 'रामकली?' गला साफ़ करते हुए मैंने गाने की कोशिश की; लेकिन कार की आवाज़ इतनी तेज़ थी कि मैंने कहा, "इस शोर में गाना मुश्किल है। माफ़ कीजिए!"
“अरे वाह! तुम तो बिल्कुल असली गायक लग रहे हो!” वे उत्सुक थे। उन्होंने मुझे चारों पराठे और सब्जी की खीरें दीं, मुझे बताया कि ट्रेन कहाँ से बदलनी है, और जैसे ही दूसरा स्टेशन आया, वे उतर गए।
पंडितजी और माताजी ने उस समय मुझे पहचाना नहीं। मैं यहाँ दो महीने से था, है ना? मैंने सिर झुकाकर अपना परिचय दिया और कहा, 'मैं मोहनलाल हूँ। मैं हीरा में ओंकार बाबा जी के आश्रम में था।'

लेकिन तभी मैंने उसे तुरंत पहचान लिया, 'अरे! तुम इतनी अचानक कैसे आ गए? अलविदा!'
उन्होंने कहा, "यह भूपली के कार्यों का परिणाम है, तुम मेरे लिए गा रहे हो।"
मैं सीखने आया हूँ। मुझे अपना शिष्य स्वीकार करें और मुझे आशीर्वाद दें! अरे बाप रे! ये क्या है! क्या ये कोई तोहफा है? तुमने मुझे बताया था कि तुम्हारे माता-पिता नहीं हैं। इस गाँव में तुम कहाँ रहोगे, खाने का क्या होगा?
"गंडाबंधन का खर्च कौन उठाएगा?"
मुझे इस बारे में कोई सवाल नहीं था। मुझे गुरु के घर पर ही गुरु से सीखना था।
मैं वहीं रुककर खाना खाना चाहता था। मुझे कोई जवाब सूझ नहीं रहा था। उस समय पंडितजी भावहीन थे।
दूल्हा हंसते हुए बोला, "तुमने मुझे पहले बताया नहीं, मेरी अनुमति नहीं ली! तुम इस तरह आ रही हो।"
तुम नहीं चाहते थे। चले जाओ!'
मैंने कहा, ‘अगर गाँव में कोई मुझसे कहे, “यह एक अनाथ है – मैं गाना सीख रहा हूँ – कृपया मेरी मदद कीजिए,” तो मैं मदद ज़रूर करवाऊँगा!’ मुझे पता था कि हमारे बाबा जी का आश्रम ऐसी ही मदद से चलता है। अक्सर मैं साइकिल पर बाबा जी का पत्र लेकर आता था और किसी शेतजी से पैसे लाता था। लेकिन पैसे गाड़ी में लादकर भेज दिए जाते थे।
‘हीराआर में तुम्हारी पत्नी जरूर होगी। वह काशी में भी है; लेकिन हमारे गांव में नहीं।’
मुझे एक पत्र लिखो। मैं शेतजी को ढूंढ लूंगा।
हे भगवान! आप बंधन में बंधे बिना मेरे शिष्य कैसे बन सकते हैं? क्या मुझे झूठ लिखना चाहिए या नहीं? क्या आप मुझसे झूठ बोलने का पाप करने को कह रहे हैं?
‘तो फिर, हे प्रभु, आप ही यह निवेदन कीजिए। बाद में, जब समय आएगा, मैं इसे अपने पैरों से करूँगा। अन्यथा, आपको यह कला प्राप्त नहीं होगी!’ यह कहते हुए मेरा गला भर आया।
फिर, माता जी हंस पड़ीं, "बस एक पत्र, है ना? ओह! अब हम क्या करेंगे?"

[illegible]

ठीक है। उससे पूजा-पाठ की सारी सामग्री मांग लो। उसे ग्यारह रुपये दे दो। अब जाओ। मुनिम जी, उसके खर्चों के लिए हर महीने दो रुपये देने का इंतजाम कर देना। आपका नाम क्या है, आपका नाम क्या है! देखो, सिगरेट या बीड़ी मत पीना। बुरी आदतों से दूर रहना। धर्मशाला में आप पर कड़ी नजर रखी जाएगी। हमारे समाज में ये पाबंदियां बहुत सख्त हैं!
जैसे ही मैंने पंडितजी को सब कुछ बताया, उन्होंने कहा, "तुम तो बहुत होशियार हो!"
चलाख शब्द ने मुझे सचमुच झकझोर दिया। ग्यारह रुपये का उपहार देखकर वे भी चौंक गए। वे इसे 'भीख मांगना' समझते थे। माँ कहती थीं, 'तुम्हें इस शेतजी से कहना चाहिए - इतने महान गायक को ऐसा उपहार देना अपमान है! अगर तुम एक हज़ार एक रुपये भी दे दो, तो विज्ञान को आशीर्वाद मिल जाएगा, मैं तो यही कहूँगी!' एक मुलाकात के दौरान, मुझे शेतजी से, जिन्होंने चार साल तक मेरे लिए सारी व्यवस्थाएँ की थीं, ऐसी कोई बात माँगने में शर्म महसूस हुई। मैंने कहा, 'जब मैं कमाना शुरू करूँगा, तो पंडितजी के चरणों में बहुत सारा धन अर्पित करूँगा! मैं कसम खाता हूँ!'
इस पर वे हंसते हुए बोले, "आप इतना तो नहीं कमाते! आपकी तनख्वाह कैसी है?" पंडितजी ने विषय बदलते हुए कहा, ‘चलिए चलते हैं, लेकिन आपके पास डफली नहीं है। आप कमरे में अभ्यास कैसे करेंगे?’ यह सवाल तो मेरे मन में आया ही नहीं था।
पंडितजी से गायन सीखने आने वाले सभी लोग दिन में कहीं न कहीं काम करते थे और रात में गायन सीखने आते थे। कुछ लोग तो सप्ताह में दो-तीन बार भी आते थे। सबका अपना घर, कॉलेज और नौकरी थी। मैं ही अकेली थी जो इतने समय तक गाती रही।
अगले दिन, माँ जी ने कहा, 'इससे तुम पैसे तो नहीं कमा पाओगे, है ना? तो अपनी सेवाएँ दे दो। अगर तुम मेरा काम थोड़ा आसान कर दोगे, तो तुम भी खुश हो जाओगे, गु जी!'
‘यह काम करेगा!’ मैं आश्रम में भी यही सब किया करता था।
उसके बाद मैंने घर के काम-काज शुरू कर दिए। आटा पीसने के लिए चक्की जाना, सब्जियां धोना,
मैं हर हफ्ते गुजी के कपड़े लाने और चुनने, धोने और इस्त्री करने जैसे काम करने लगी। यहाँ तक कि जब नौकरानी नहीं आती थी, तो फर्श साफ करने और बर्तन

धोने जैसे काम भी मुझे करने पड़ते थे। बाद में, ऐसा होने लगा कि मैं खुद उस लड़की को कुछ काम सुझाने लगी! एक बार जब पंडितजी घर पर नहीं थे, तो उन्होंने कहा, 'देखो, मेरे कहने पर काम गलत करने की ज़रूरत नहीं है! यह मत भूलो कि पंडितजी तुम्हें कुछ भी नया तब तक नहीं सिखाएंगे जब तक मैं तुम्हें न बताऊँ! तुम्हें इनाम तभी मिलेगा जब माताजी प्रसन्न होंगी, यह याद रखना!' इसके कारण, मैं उस लड़की के घर के छोटे-मोटे काम और भी लगन से करने लगी।
यह नहीं कहा जा सकता कि पंडितजी ने कुछ पढ़ाया ही नहीं; लेकिन उनमें पढ़ाने की कोई खास इच्छा नहीं थी। कभी-कभी, जब मैं पढ़ाना शुरू करने ही वाला होता, तो कोई दोस्त मेरे पास आकर कहता, 'छात्रों, छात्रों! कितने महीने बीत गए जब मैंने तुम्हारे पैरों की धूल छुई थी?'
सफेद कागज के डिब्बे को आगे खींचा गया और हरे कागज को सफेद कागज के साथ मिला दिया गया। यहीं से सीखना शुरू होता है।
मैं वहीं रहता था। वह मुझे गाने के लिए कहते थे; लेकिन अगर मैंने कुछ सीखा ही नहीं, तो अभ्यास क्यों करूँ? उन्होंने मुझे कभी एक घंटे भी नहीं सिखाया। वे खुद भी हर दिन अभ्यास नहीं करते थे। इसी वजह से उनके गाने सुनकर सीखना आसान नहीं था।
इस तरह डेढ़ साल बीत गया। जब मेरी माँ घर पर नहीं होती थीं, तो मैं अपनी सारी शक्ति इकट्ठा करके सोचती थी, 'मैंने अपना पूरा जीवन इस गीत को समर्पित कर दिया है। मैं हर दिन आठ से दस घंटे अभ्यास करना चाहती हूँ; लेकिन अगर कोई मार्गदर्शन नहीं होगा, तो मैं मेहनत कैसे करूँगी? गुस्सा मत करो – लेकिन –'
उसके चेहरे पर क्रोध के भाव उभर आए। कौन जाने पांच-दस मिनट बाद वह क्या सोच रहा होगा!
उन्होंने कहा, 'जी हां! डफली ले आओ। बिलावल सिखाता है।' उस दिन वह दो घंटे तक सिखा रहा था।
मुझे प्रेरणा मिली। मैं रात देर तक जागकर अभ्यास करती रही; लेकिन अगले दिन, मैं फिर वापस आई, मेरी प्यारी! मुझे कुछ भी सीखने को नहीं मिला।
मुझे यह भी पता चला कि उसका स्वभाव मूलतः आलसी है। उसने विद्या से जो कुछ सीखा है, वही आत्मसात किया है। उसने स्वयं उसमें कुछ भी नहीं जोड़ा है।
इतनी कम पूंजी से सौ संगीत समारोह आयोजित करने में कोई महत्वाकांक्षा

नहीं है। ये लड़कियां उसकी पत्नियां बन चुकी हैं। वह इसी से संतुष्ट है।
मैं उसी की संतान हूं।
प्यार की उम्मीद रखना गलत है। एक भयानक आवाज सुनकर मैं तुरंत यहाँ भागा आया।
यह मेरी अपनी मूर्खता है।
क्या इस गाने की धुन छह महीने पहले शुरू नहीं हुई थी? ओह! अगर वे दोनों साथ बैठ पाते, तो खुशी-खुशी गाना बजाते हुए सफर कर लेते। जब हम अकेले बैठते हैं, तो चारों ओर से यादें उमड़ती रहती हैं। ये यादें यूं ही आती-जाती नहीं, बल्कि हमारे मन में रोमांच भर देती हैं। हर याद एक अलग ही एहसास लेकर आती है।
वह खिड़की से बाहर देखने लगा।

३
तीस हजार फीट की ऊंचाई से पहले, जमीन पर मौजूद जंगल, नदियाँ और सड़कें गायब हो जाती हैं। जैसे यादें।
‘आपका भोजन, महोदय!’ एक महिला की आवाज़। जैसे ही मैंने उस थाली का ढक्कन खोला जिसे एयरलाइन ने मेरे सामने छोटे से बोर्ड पर रखा था, मुझे जयनारायण की याद आ गई। जब धर्मशाला में कोई मेहमान नहीं होता था, तो वह अपनी पत्नी और बच्चे के साथ कमरे में चल रही रियाज़ की रस्में सुनते थे। हालाँकि उन्हें विज्ञान की समझ नहीं थी, फिर भी उन्हें यह अच्छा लगता था।
एक बार, रियाज़ समाप्त करने के बाद, जब मैं डफली रख रहा था, तो वह मेरे पास आया, अपना परिचय दिया और पूछा, 'क्या आप बजाते हैं?'
नहीं। मैं नहीं आ रहा हूँ।
‘. चल–’
नहीं। जुआ खेलना पाप है।
'तुमसे किसने कहा?'
शास्त्रों और पुराणों में लिखा है-
क्या आपने महाभारत में नल-दमयंती की कहानी सुनी है? महाभारत कहता है कि अपने राज्य, पत्नी या भाई को दांव पर लगाकर जुआ खेलना बुरा है। मनोरंजन के लिए पैसे से जुआ खेलना कहाँ लिखा है?
मुझे कोई जवाब सूझा नहीं। उन्होंने आगे कहा, 'यह बात याद रखना, जीवन एक जुआ है। जो लोग भाग्य के खेल में निपुण हो जाते हैं, वही जीवन के खेल में जीतने के लिए तैयार होते हैं। अन्यथा, वे जीवन में हारने के लिए अभिशप्त हैं!' मैंने इस विवाद के कारण ही ताश खेलना बंद कर दिया था। हालाँकि शेतजी मेरा खाना-पानी खर्च करती थीं, फिर भी वह अपना समय जयनारायण की पत्नी पर बिताती थीं। दोनों आपस में अच्छा व्यवहार करते हैं, हमारा समय भी बर्बाद नहीं करते, तो समस्या क्या है? यह सोचकर मैं खेलने बैठ गया और एक ही रात में मुझे इसकी लत लग गई। मैं सामने वाले के हाथ में मौजूद पत्तों का अनुमान लगाता और अपनी बुद्धि और कुशलता का परीक्षण करता। पंद्रह दिनों में मैं इस खेल का उस्ताद बन गया। ताश खेलते समय मुझे वही आनंद मिलता था जो अचानक हाथ में पत्ते आने और गीत में अचानक जगह पाने पर मिलता था।

वे नहीं करेंगे। हे प्रभु, वे करेंगे! मैं बंदे अली खान साहब से गाना सीखना चाहता हूँ, नहीं।
इसलिए मैं चित्रा नदी में अपनी जान दे दूंगा। अगर आप चाहें तो पहले मेरी बात थोड़ी सुन लीजिए। मुझे लगता है काम में कोई दिक्कत नहीं होगी।
मैंने मन ही मन सोचा, "यह शाकापुर कहाँ है?"
‘माल यत। यू जैनी वहाँ से बस से जाया करते थे। रुको – मुझे याद आया। दरबार में तबला वादक मेरा परिचित है। भूपतराम ओझा। मेरा पुराना दोस्त। उसकी पत्नी का भतीजा देवसला हमारी कंपनी में डीलर है। मैं आपको ओझा के घर ले जा सकता हूँ। अगर दरबार कृपा करे तो आपके सभी सवालों के जवाब तुरंत मिल जाएँगे।’
वह उठा और बोला, 'तो चलिए चलते हैं!'
थोबवत ने डायरी खोली और मुझसे कहा, ‘26 तारीख को, यानी आज से 13 वें दिन, सोमवार को, सुबह नौ बजे उज्जैन स्टेशन के वेटिंग रूम के बाहर इस बेंच पर मुझसे मिलना। मैं इंदौर से ट्रेन से नौ या दस बजे आऊंगा। चाहे दस या पंद्रह मिनट लगें, वहीं रुकना। हिलना मत। ये रेलवे के लिए पैसे हैं!’ हनत ने पच्चीस रुपये निकाले।
जयनारायण ने यह भी कहा, ‘मैं एक महीने तक इंतजार करूंगा। अगर तुम वापस नहीं लौटी तो मैं पंडितजी को तंबोरा दे दूंगा। अगर मुझे याद रहा तो मैं तुम्हें बता दूंगा कि वे जल्दी में दूसरे मंदिर चले गए और इसलिए अलविदा नहीं कह पाए। तुम भी जाते समय किसी को मत बताना।’
जाते समय उसने रोटी और आलू पैक किए। उसने पूरी रात भगवान का नाम जपते हुए यात्रा की। महाराज ने आदेश दिया था, फिर भी गायक को यह सिखाना चाहिए था! जसवंत ने पहले एक लॉज में कमरा बुक किया और अकेले साइकिल से भूपतराम ओझा के घर के लिए रवाना हो गए।
उन्होंने कहा, ‘आज शाम पांच बजे उनका फोन आया है। गाना सुनो और फिर आना। लगता है तुम्हारा काम हो जाएगा। मैं अपना काम खत्म करके सवा चार बजे वापस आऊंगा। तब तक खाना खा लो और आराम करो। तरोताजा हो जाओ। मैं यह पक्का करना चाहता हूं कि आवाज़ अच्छी हो, ठीक है!’ इतना कहकर वे चले गए; लेकिन मुझे नींद नहीं आई। मेरा मन इस शंका में डूबा हुआ था कि उन्हें मेरा गाना पसंद आएगा या नहीं।

लेकिन भूपातराम को देखते ही मेरी सारी आशंकाएँ दूर हो गईं। घर साठ लोगों के रहने लायक था। मुख्य भवन पर चित्रकारी की अद्भुत कला थी। गधे जैसी नुकीली नाक, तीखी आँखें और औरत की धोती; लेकिन ऐसा लगता था जैसे उसने ये दो- तीन दिन ही पहनी हो। घर बहुत बड़ा था। कड़ियाँ और खंभे पुराने लग रहे थे। यह किसी राजा का बनाया हुआ घर रहा होगा।
वक यावर ने मेरा अभिवादन करने के लिए अपना हाथ मेरे सिर पर रखा और इस तरह उनका आशीर्वाद मुझ तक पहुंचा!
उन्होंने प्रेम और कौशल पर चर्चा की, हमें जलेबी और चाय पिलाकर हमारा मनोरंजन किया और गाना सीखा।
मुझे आश्चर्य हुआ कि वह क्यों चला गया। किसी गुरु के बारे में कोई टिप्पणी किए बिना, मैंने कहा, 'वह बूढ़ा है - उसने मुझे दूसरे गुरु के पास भेज दिया।' वह भी समझ गया। उसने मुझे कोने में रखे तबले को बजाने को कहा। आंगन में तबले के चारों ओर मकड़ियां थीं। यह स्वाभाविक है, है ना! यह तबला वादक। वह हर दिन तबला क्यों निकालता है? उसने आश्चर्य से पूछा, 'हारमोनियम?'
'नहीं।'
उसके चेहरे पर खुशी झलक रही थी। बिना समय बर्बाद किए उसने डफली बजाना शुरू कर दिया।
समस्या और भी बढ़ गई। उन्होंने कहा, 'अपना क्रोध दूर करो। वितारणम गा। मुझे समझने दो कि तुम्हारे साथ क्या होने वाला है।'
शाम के छह बज रहे थे। इस समय सब लोग भजन गाते हैं। वह गाना नहीं चाहता था। 'पुरिया?'
‘जो मन करे गाओ। दो घंटे तक एक ही राग गाते रहो, कोई फर्क नहीं पड़ता। रुको-’ हनत ने तबला उठा लिया। उसने तबले की थाप से ताल मिलाते हुए गाने की शुरुआत का इशारा किया। मैंने थोड़ी देर बाद एक सुर में गाना शुरू किया। उसने मुझे धीमी लय से प्रोत्साहित करते हुए ताल का ढांचा दिखाया। आधे घंटे गाने के बाद, हमने तेज और मध्यम गति में गाना शुरू किया।
‘ छन छन। बा ऽ टक। कत ऽ। मै तो ऽऽ री।’
मेरे मन में कोई डर नहीं था। फिर, इस संगत के साथ, मैं खुले मन और खुले स्वर में गा रही थी। मैं रुक गई और इसके बारे में कुछ नहीं सोच रही थी। मैंने यह भी नहीं सोचा कि आगे क्या गाना है। मैं बस वहीं बैठी डफली बजा रही थी। थोड़ी देर बाद, उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि इस निशबत से तुम्हें बहुत

फायदा होगा! अगर तुम मेरी बात ध्यान से सुनो, अगर तुम उस पर अमल करो, तो सौभाग्य से अब से तुम्हारा सपना सच हो जाएगा। तुम एक महान गायिका बनोगी!' मैंने पूरे शरीर को झुकाकर इन आशीर्वादों को स्वीकार किया।
उन्होंने आगे कहा, ‘अदालत इस गीत को सुनकर प्रसन्न होती और उतादाजी उसे तुरंत तुम्हें सिखाने का आदेश देते। उतादाजी तुरंत तैयार हो जाते और गण्डबंधन हो जाता! लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि वह तुम्हें सिखाते। बल्कि, सतही ज्ञान देकर वह तुम्हारी सफलता का पूरा साल बर्बाद कर देते! मैं भी इसी दरबार का कलाकार हूँ। मुझे पता है कि चुगली करना बुरा है, लेकिन मैं तुम्हें यह बता रहा हूँ। मुझसे वादा करो कि यह बात किसी और को नहीं पता चलेगी।’
नहीं, मैं नहीं जाऊँगा!
मैं आपको बताता हूँ कि मैं योगी क्यों बना। यहाँ से बीस मील दूर एक ठाकुर रहते हैं। वे राजा हैं! मेरे ज्ञान में उनके पास उतने ही गीत हैं जितने किसी अन्य पंडित के पास।
या फिर बिल्कुल भी नहीं! ठाकुर ही वह कारण है जिसकी वजह से वह कोई कार्यक्रम नहीं करता।
दूल्हे पर क्या गजब की पकड़ है! वाह! नामादा और चित्रा नदियों का संगम वहाँ हज़ारों एकड़ जंगल उन्हीं का है। नदी के किनारे उनके पूर्वजों द्वारा निर्मित एक शिव मंदिर है। वे राजा ठाकुर के कुलदेवता हैं। वे केवल इसी मंदिर में बैठकर भजन गाते हैं। वे पिछले चालीस वर्षों से वहीं साधना कर रहे हैं। मैं तुम्हें वहाँ ले चलूँगा। वहाँ भी वैसे ही गाओ जैसे यहाँ गाते हो। अगर उन्हें तुम्हारा गीत पसंद आया, तो समझ लो तुमने इस लोक के द्वार खोल दिए!
सुनते-सुनते मेरा मन मग्न हो गया। मेरे सामने एक सुंदर दृश्य उभर आया। आसपास का जंगल, नदी का किनारा, शिव मंदिर, मंदिर में संगीत का अभ्यास! सब कुछ सुनते हुए मुझे हीरार की याद गहरी सताने लगी। मुझे बाबा जी से मिलने का मन हुआ, जिन्होंने गंगा के किनारे भीख मांगने वाले लड़के को आश्रम में लाकर गाना सिखाया था। तभी मुझे याद आया, वह बड़ा लड़का तो वहाँ से गाना सीखने आया था! बिना थोड़ा सा भी गाना सीखे।
उन्हें सच्चाई कैसे दिखाई जाए?

‘पंडितजी, मुझे आज रात उज्जैन जाना है। कृपया जल्दी आइए और मेरे जाने की अनुमति ले लीजिए।’
‘ठीक है। उनका सामान कहाँ है? हम उन्हें चित्राल ले जा रहे हैं।’
मैं बिट्टू भाई के साथ सामान लॉज तक लाने गया। शाकापुर एक पुराना गाँव था। पूरे गाँव में पुराने महल और जुआघर थे। मुख्य महल गाँव में ही था। राजपरिवार से जुड़े छोटे-बड़े महल भी थे। सड़कें साफ़-सुथरी तो थीं, लेकिन यातायात के कारण अपर्याप्त लग रही थीं। जब कोई बस या ट्रक आता, तो रिक्शा, साइकिल रिक्शा या हाथगाड़ी आती तो सारा यातायात रुक जाता। मैं भी ऐसे ही एक जाम में फंस गया और साइकिल में अटक गया। बिट्टू भाई ने कहा, 'अब समझ आया कि जुआ खेलने से भाग्य आता है? अरे, जुआ खेले बिना कैसे पता चलेगा कि भाग्य अच्छा है या बुरा?'
कौन जाने! उसकी बातों पर विश्वास करके मैंने दो साल की खुशी और आश्रय को पीछे छोड़ दिया है, क्या यह भी एक जुआ नहीं है?
नाश्ते के बाद, भूपातराम ने सोचा, "क्या तुम साइकिल चलाना चाहते हो?"
‘यह आ रहा है।’
‘क्या आप मुझे डबल सीट पर ले जा सकते हैं?’
'हां। लेकिन यह दो साल तक चलने वाली आदत नहीं है।'
‘यहाँ से चिरपुर बीस मील दूर है। सड़क तो है, लेकिन बस नहीं है। मैं अकेले जा सकती हूँ। अगर आप इस हालत में आएँगे तो मुझे इस किले तक ले जाना नामुमकिन है! क्या आप मुझे ले जा सकते हैं?’
मैंने साइकिल के हैंडल पर अपनी पीठ टिका ली। दो सीटों वाली साइकिल पर पच्चीस कदम चलने के बाद मुझे उस पर पकड़ बनाने में कामयाबी मिली। पाँच मील तक सड़क के दोनों ओर उपजाऊ खेत और ज़मीनें फैली हुई थीं। फिर घने जंगल शुरू हो गए। इस बिंदु पर, जंगल ऊँची-नीची जगहों पर फैला हुआ था। चढ़ाई होने के बावजूद, मैं लगातार पैडल मारता रहा। चौदह मील पर मुझे एक नदी दिखाई दी। यह चित्रा नदी है। मैंने उस पर बने एक छोटे पुल को पार किया। यह स्पष्ट था कि बारिश के दौरान नदी का जलस्तर बढ़ने पर पुल पानी में डूब जाएगा। लेकिन अभी नदी में बहुत कम पानी था। सड़क भी संकरी थी। नदी पार करते ही खेत फिर से शुरू हो गए। भूपतिराम ने मुझे बताया कि दाईं ओर तीन मील दूर एक जलाशय है। चितपुर, शाकापुरा की तरह कोई शहर नहीं था। इसे गाँव कहा जा सकता है; लेकिन राजधानी होने के कारण यहाँ की गलियाँ बहुत संकरी थीं। लोहे के दरवाजों

वाले मकानों की कतारें थीं। गाँव की मुख्य सड़क पर एक बाज़ार लगता था।
गाँव में बिजली मौजूद थी। कभी-कभी उसके खंभे दिखाई देते थे।
राजा का महल गांव के बाहर इस पहाड़ी पर स्थित था। महल के चारों ओर बड़े- बड़े पेड़ थे। पहाड़ी की ऊंचाई और महल की विशालता ने इसे और भी भव्य बना दिया था।
मैंने उस समय महल नहीं देखे थे। फिर भी, मैं उन्हें महल के रूप में पहचानता हूँ।
यह एक ऐसी इमारत थी जिसका निर्माण होना तय था।
मैंने अपनी साइकिल खड़ी की और गेट तक पैदल गया। भूपतराम का वहाँ सम्मान था, इसलिए बाहर आए गार्ड ने उनका अभिवादन किया। उसने यह भी कहा, 'यही न्यायालय है।' नौकर मुझे स्वागत कक्ष में ले गया और मुझे बिठा दिया। भूपतराम ने मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा, 'मुझे एक बात कहनी है। राजसाहेब से बात करते समय हमें भाषा बदलनी होगी। हमें संदर्भ भी बदलना होगा। हम यह नहीं कहेंगे, 'मैंने यह कहा।' इसके बजाय, हमें कहना चाहिए, 'न्यायालय ने यह आदेश दिया है।' हमें यह नहीं कहना चाहिए, 'हम उन्हें यह बताते हैं।' हमें कहना चाहिए, 'मैं न्यायालय से निवेदन करता हूँ।' जब वह बोल रहे थे, मैंने 'हाँ' या 'हाँ' कहा। आपको चिल्लाने की ज़रूरत नहीं है। आपको चिल्लाना होगा, 'व्यवस्था बनाए रखो! व्यवस्था बनाए रखो!' बाकी सभी रीति-रिवाज धीरे-धीरे आपको समझ आ जाएँगे।
आपको समझ आ जाएगा। अगर आप इस नज़रिए से देखें, तो राजा भी दरबारी रीति- रिवाजों से बहुत लगाव नहीं रखते। लेकिन चाहे वह कितना भी लगाव रखें, आखिर वह राजा हैं! हमें रीति-रिवाजों का पालन करना चाहिए, यह बहुत अच्छी बात है! हमें यहाँ लाने वाला नौकर हमें अंदर ले गया। वहाँ एक बड़ा चौक था। उसे पार करने के बाद, हम एक छोटे से कमरे से होते हुए उस कमरे में पहुँचे जहाँ राजसाहब बैठे थे। वे पुराने रेशमी कपड़े से ढकी कुर्सी पर बैठे थे। कुर्सी भी पुरानी थी; लेकिन उस पर की गई सुंदर नक्काशी और पॉलिश उसे आकर्षक बना रही थी। राजसाहब बड़े सुंदर थे! उनके सिर पर घने सफेद बाल थे। उनका चेहरा भी गोरा था।
बाबादर ने मूंछें लगा रखी थीं। अपनी उम्र छिपाने के लिए उन्होंने अपने बाल घुंघराले रखे थे।

वह चोगा उत्तम कपड़े का बना था और देखने में किसी कुशल कारीगर द्वारा सिला हुआ प्रतीत होता था। उसने एक सिंगल-ब्रेस्टेड सोने की बेल्ट, दाहिनी उंगली में एक चमकदार सफेद हीरे की अंगूठी और बाईं कलाई पर सोने का कंगन पहना हुआ था।
भूपतराम ने विनम्रतापूर्वक प्रणाम किया। मैंने भी ज़मीन पर सिर झुकाया। राजेसाहेब उठे और उनका अभिवादन किया। यह स्पष्ट था कि उन दोनों के बीच गहरा स्नेह था। भूपतराम ने अपना परिचय देते हुए उनके बारे में बताया, ‘उन्हें गायों का बहुत शौक है। उनमें अनेक प्रतिभाएं हैं। बाकी बातें मैं आपको बाद में बताऊंगा।’
राजेसाहेब ने भी मेरी बात अनसुनी करते हुए कहा, ‘तुम यहाँ आए हो! क्या नहाने जा रहे हो? या हाथ-पैर धोने? पहले खाना खाओ, फिर आकर पानी पियो।’ तभी सिपाही आगे बढ़ा।
उन्होंने कहा, 'चलो, नहाते हैं और खाना खाते हैं।'
एक गहरे रंग की, बड़ी, चमकदार लकड़ी की खाने की मेज। उसके चारों ओर लगभग बीस शाही थालियाँ रखी थीं। मैं बड़ी थाली में अकेला था। थाली में पाँच व्यंजन परोसे गए थे। तीन भैया, दाल, करी, अचार, खीर, मिठाई, दही, फुल्के, चटनी! ये तो शाही दावत है! मैंने वड़ा से मन ही मन पूछा, 'तबालजी का खाना?' "वे अदालत के साथ दूसरे कमरे में भोजन करेंगे।"
वे इसके बारे में बात करना चाहते होंगे। यह दृश्य देखकर, एक तरफ तो मेरे दिल को राहत मिली।
हालांकि, ऐसे माहौल में कैसे तालमेल बिठाया जाए, इस बात की चिंता भी मेरे मन में आई। खाना थोड़ी देर में खत्म हो गया। उसी नौकर ने मुझे शौचालय दिखाया। छोटे से कमरे में एक बिस्तर था।
उस पर सफेद कवर लगा है। कमरे के बगल में आधुनिक शौचालय है। जैसे ही आप बिस्तर पर पीछे की ओर झुकते हैं।
मुझे नींद आ गई। मैं दो सीटों वाली साइकिल पर ऊबड़-खाबड़ सड़क पर आया था! चार बजे भूपातराम ने मुझे जगाते हुए कहा, 'चलो। क्या तुम जाना चाहते हो? यहाँ से दो मील दूर एक मंदिर है।'
मैं झटपट उठ गया। नौकर ने कपड़ा धोकर मुझे दिया। राजसाहेब और भूपतराम वहाँ थे। सामने एक बहुत बड़ी कार खड़ी थी। उन्होंने मुझे पीछे की सीट पर बिठाया और खुद आगे की सीट पर बैठ गए। राजसाहेब कार चला रहे थे। महल से सड़क समतल

थी। जंगल मानो बाड़ से घिरा हुआ था। जैसे ही कार दूर से दिखाई दी, गार्ड ने गेट खोल दिया। इस वजह से कार घने पेड़ों के बीच से गुजरती सड़क की तरह चलने लगी। सागौन और शीशम जैसे कुछ पेड़ आसमान को ढक रहे थे। करेला, शकरकंद और पपीते भी थे। कुछ जगहों पर पेड़ इतने घने थे कि वहाँ सूरज की किरणें शायद ही कभी पहुँचती थीं। गेट से अंदर आते ही ज़मीन ऊपर-नीचे होने लगी। इन उतार-चढ़ावों से गुज़रते हुए सड़क घुमावदार थी। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं हीरार जा रहा हूँ।
काफी देर बाद, उतरना शुरू हुआ। गाड़ी एक मध्यम आकार के पत्थर के मंदिर के पास रुकी। मंदिर तक पहुँचने के लिए हमें थोड़ी दूर पैदल चलना पड़ा। मंदिर का प्रवेश द्वार सामने घाटी में बहती हुई विशाल नदी की ओर था। नदी का आकार ही हमें बता रहा था कि यह पवित्र है। इन दोनों के पीछे-पीछे मंदिर जाते समय, मेरी नज़र सामने घाटी में चमकती नदी पर पड़ी और मेरे मन में भय का भाव जागा। मेरे हृदय में गहरा क्रोध पनपने लगा।
शाम की धुंधली रोशनी में भी चमकता हुआ काला शिवलिंग मुझे ऐसा लगा मानो शिव ब्रह्मांड में विलीन हो गए हों। मैं स्तब्ध होकर उसे देखता रहा। मेरी निगाहें शिवलिंग पर टिकी रहीं।
राजसाहेब ने बटन दबाकर दीपक जलाया। उन्होंने चारों ओर देखा। दीवार के सहारे लोहे की तीन अलमारियाँ थीं। भूपतराम ने उनमें से एक खोली। अंदर तीन डफली रखी थीं। राजसाहेब ने संगीत चलाया। भूपतराम ने दो डफली निकालकर अलमारी पर रख दीं। उन्होंने दूसरी अलमारी से भी दो डफली निकालीं। इस अलमारी का दरवाजा काँच का था। उसमें कई किताबें दिखाई दे रही थीं। इस अलमारी में एक हारमोनियम था, जबकि बाकी अलमारियाँ भी किताबों से भरी थीं। भूपतराम ने कहा, ‘यह राजसाहेब के अभ्यास का स्थान है। ये अलमारियाँ लोहे की इसलिए बनाई गई हैं ताकि चूहे-गिलहरियाँ इन्हें खराब न कर सकें। डफली चलाइए और एक राग बजाइए। अगर आप चाहें तो कल वाली डफली भी बजा सकते हैं।’
मैंने हाथ जोड़कर डफली उठाई और महादेव को प्रणाम किया। राजसाहेब दीवार से टेक लगाकर बैठे थे। भूपतराम ने अपने सामने रखा तबला उठाया। मैंने डफली उठा ली।
उन्होंने तबला भी बजाना शुरू कर दिया। हालांकि मुझे पता था कि यह एक तरह की परीक्षा है, फिर भी मैंने
मुझे डर नहीं लगा। कौन जाने, मुझे विश्वास था कि वे मुझे स्वीकार कर लेंगे।

मुझे कल गुस्सा आया था। राजसाहेब का सिर दो-तीन जगहों से हिल रहा था। बीच-बीच में मुझे उनकी आँखों में भी नाराजगी झलकती हुई दिखाई दे रही थी; लेकिन वे बिना विचलित हुए गाते रहे।
जब मैंने गाना समाप्त किया, तो उसने सोचा, "क्या मैं गाऊं? क्या तुम सुनोगी?"
'आप' का जिक्र आते ही मुझे दुख हुआ. भूपतराम
वे मुझे आसानी से 'तुम' कहकर बुला रहे थे। जब मैं उनकी हिरासत में था, तब उन्होंने ऐसा क्यों किया?
हनवम! मैंने डफली बजाना शुरू किया। उन्होंने भी बिना हाथ हिलाए डफली बजाना शुरू कर दिया।
उसकी आंखें बंद थी।
वह कुछ देर से डफली बजा रहा था। नहीं! मैं अचानक चौकन्ना हो गया। ओह! वह गा रहा है। छह तारों वाला वाद्य यंत्र एक हो गया है! उसकी आवाज़ और वाद्य यंत्र के बीच एक विशेष संबंध बन गया है! उस सूक्ष्मता को समझने के लिए विशेष एकाग्रता की आवश्यकता है। आपको उसके गायन को सुनने की आदत डालनी होगी। इससे पहले कि आप समझ पाते कि उसकी आवाज़ 'ओम' कह रही है या 'उम', ठीक वैसे ही जैसे धीमी आंच पर गर्म किए जा रहे बर्तन में रखा दूध ऊपर उठता है, उसकी आवाज़ भी ऊपर उठी! कितनी सूक्ष्मता से उठी! मेरा मन इस अजीब सी अनुभूति से अभिभूत हो गया।
मेरा पूरा शरीर इन गांठों से लिपटा हुआ था। इन गांठों में एक अत्यंत कोमलता थी, लेकिन साथ ही एक नरमी भी। मैंने इसे गहराई से महसूस किया, मेरा दिमाग केवल अनुमान लगा रहा था। योग में, ये मूल-नाड़ी-
स्टेशन के बारे में उनका कहना था कि ऐसा लगता था जैसे उन्होंने इसे मेहनत से हासिल किया हो। कुछ समय बाद, उनका
बा-कना ने सुना। यह कोई अनुमान नहीं है! यह शक्ति मन के केंद्र से प्रवाहित हो रही है!
जैसे ही मैंने मुखौटा पहना, मुझे एहसास हुआ कि यह एक पुरिया होने वाला है। क्या उसने मुझे वही गुस्सा दिखाया ताकि मुझे यह बता सके, 'सुनो, असली पुरिया ऐसा होता है!'? मैंने बाद में सोचा।
उन्होंने पवित्रता का यह स्तर प्राप्त कर लिया है, वे पंचों के रुद्र और आशु हैं।

वे भावनाओं में नहीं बहेंगे! शायद मेरी बात सुनने के बाद वे भी गाय बनना चाहते हों, यह सोचकर मुझे थोड़ी संतुष्टि मिली।
धीरे-धीरे, ये मंत्र पवित्र स्थान में उतर रहे हैं, 'नि धा नि मा धा' वा! पवित्र स्थान में यह क्या है?
दूल्हे की पवित्रता! यह उसकी दुल्हन नहीं है, न ही यह गीत उसका है! पवित्रता साक्षात रूप है।
हाँ, क्रोध ने इस गीत का इस्तेमाल इसी उद्देश्य से किया है! उन्होंने अपनी आँखें बंद कर ली हैं, स्वयं को पूरी तरह क्रोध के हवाले कर दिया है! अब यहाँ राजसाहेब का कोई अस्तित्व नहीं है। मेरे सामने बैठे हुए राजसाहेब नहीं, बल्कि पूज्य ऋषि हैं!
मंदिर में प्रत्येक दूल्हे को जगाने के लिए मंत्र-युह का जाप करते समय भी उनकी आंखें बंद रहीं। बाद में, जब वे मंदिर के बीच में जागे, तो वे आधी नींद में थे।
गलियों से गुजरते समय उनकी आवाज अत्यंत प्रभावशाली थी। गुफा से निकलकर अति तारा वरा पार करने के बाद भी उन्हें मंदिर तक उतरने में कोई कठिनाई नहीं हुई। वरा की स्थिरता में भी कोई कमी नहीं आई। उनकी ऊपर-नीचे की यात्रा ने मुझे अपने जन्म की याद दिला दी। मुझे ऐसा लगा जैसे मछली, जो ईश्वर का ही एक अंश है, समुद्र की गहराई से ऊपर उठते हुए एक जगह रुकती है और धीरे-धीरे आगे बढ़ती है।
कौन जाने कब से यह सब चल रहा था! घड़ी को देखकर, मैंने समय का ध्यान नहीं रखा, न ही मेरे दिमाग ने। लेकिन मेरे मन में यह अहसास था कि यह अनंत काल से चल रहा है।
फिर उन्होंने भूपातराम की ओर एक नज़र डाली और मलयालम त्रिताल में गाना शुरू किया, 'तन। हृदय का हृदय नहीं। ऽ त न न। सो दा 'रे। उन्होंने इसे नहीं दिया।' वे सीधे लयबद्ध सुके के अनुरोध पर आ गए। घंटे पर उनका इतना शक्तिशाली शासन होने में क्या महत्वपूर्ण बात है!
भूपतराम पट्टी के तबला वादक। अहमदजान थिरकवा के छात्र। थिरकवा हांजे गुरु ने विष्णु का पूर्ण और हार्दिक स्वागत किया, बिना किसी कंजूसी के! राजसाहेब का ताराना और उनके लिए उपयुक्त भूपातराम का सहयोग! दोनों एक दूसरे के पूरक थे। कहीं भी अशिष्टता का कोई नामोनिशान नहीं था। बस स्नेह

का प्रवाह था। ऐसा महसूस होता था कि तारा के शब्द ताना के शब्दों जितने ही कोमल थे। लय बढ़ने पर भी राजसाहेब 'पुरिया' से जरा भी विचलित नहीं हुए! राजेसाहेब ने अपनी आँखें बंद कर लीं। वे फिर से पुरिया राग में प्रवेश कर गए। राग की लय को उत्तेजित करने के बाद, शुरुआत शब्द पर स्थिर हो गई। धीरे- धीरे, डफ की ध्वनि डफ की ध्वनि में विलीन हो गई। वह एक हो गई। धीरे-धीरे, केवल डफ की ध्वनि ही सुनाई देने लगी। अंत में, डफ पूरी तरह से अदृश्य हो गया और बंद हो गया। उन्होंने अपनी आँखें खोलीं; लेकिन उन्होंने मुझे नहीं देखा। उन्होंने इस बारे में सोचा भी नहीं कि मैं अपनी आँखों से क्या सोच रहा था। उन्होंने भूपतराम के बारे में भी नहीं सोचा। डफ को प्रणाम करने के बाद, उन्होंने उसे पास की दीवार से टिका दिया। भूपतराम ने मेरी ओर देखा। मेरी आँखों से श्रद्धा का भाव झलक रहा था।
राजसाहेब ने सोचा, 'क्या हमें रात के खाने के लिए जाना चाहिए? बहुत देर हो चुकी है।'
मैंने दोपहर में उसी कमरे में सोने का प्लान बनाया था; लेकिन मुझे नींद नहीं आई। उनसे गायन सीखने की मेरी कितनी भी इच्छा क्यों न हो, असली सवाल तो यह था कि क्या वे मुझे सिखाएंगे। राजेसाहेब का व्यक्तित्व और व्यवहार मेरे मन में विस्मय पैदा कर रहे थे। मैंने चाहे कितनी भी कोशिश की हो, मैं समझ गया था कि उनका बार-बार अपमान करना नामुमकिन है। वे मुझे 'आप' कहकर बुलाते थे। शायद इसीलिए वे मुझसे दूरी बनाए रखने के लिए सम्मान के बहुवचन रूप का इस्तेमाल करते थे! अगर एक बार उन्होंने मन बना लिया कि मैं उनका छात्र बनने लायक नहीं हूँ, तो बार-बार मिन्नतें करना भी व्यर्थ होता। उन्होंने वही राग चुना जो मैं भूल चुका था। क्यों? क्या यही वो उन्हें दिखाना चाहते थे? ‘तुम सिर्फ इसी राग के लायक हो, मेरे शिष्य बनने के लायक नहीं’? हाँ। यही बात है। अगर मैं सागर लौट भी जाऊँ, तो धर्मशाला में मुझे खाना तो मिलेगा; पर गाना नहीं। रोही गव्य मुझे चाहे कंठस्थ ही क्यों न कर दें, मुझे उनका गाना नहीं चाहिए। राजसाहेब का गाना सुनने के बाद, मैं किसी और से सीखना नहीं चाहता था। इसी सोच के साथ मैं अपना बिस्तर बदलता रहा। थोड़ी देर झपकी भी ली। बीच में ही।
सुबह-सुबह भूपतराम मां कमरे में आईं और बोलीं, "राजसाहेब जल्दी उठ गए। हम कल गए थे, चलो इस जंगल में वापस नहीं आते। चलो।"

मैं बिना साइकिल के जंगल के द्वार तक गया। मैंने द्वार बंद किए ही अंदर प्रवेश कर लिया। मैंने साइकिल को एक पेड़ के सहारे टिकाया और पैदल चलना शुरू कर दिया।
मुझे ऐसा लगा जैसे मैं अचानक किसी दूसरी दुनिया में प्रवेश कर गया हूँ। यह किसी मंदिर जैसा नहीं लग रहा था। पेड़ बहुत घने थे। पेड़ इतने ऊँचे हो गए थे कि आसमान छू रहे थे। अंदर जाने के लिए पत्थर की सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। मानो धरती के देवता ही अंदर जाने का रास्ता जानते हों। अगर आपको रास्ता नहीं पता होता, तो आपको भूलभुलैया से होकर जाना पड़ता! अंदर कई तरह के जानवरों, पक्षियों और कीड़ों की चहचहाहट सुनाई दे रही थी। कोयल की चहचहाहट, जितने मोर आप चाहें उतने और कुछ हिरण भी।
‘यहाँ एक भी जंगली जानवर नहीं है। कभी-कभार साँप दिख जाता है। सावधान रहना चाहिए।’ भूपतराम ने कहा, ‘यह हज़ार एकड़ का अछूता जंगल है! राजसाहब ने यहाँ सागौन, शीशम, मोहा, बहाव के हज़ारों बड़े पेड़ लगाए हैं। वे रोज़ यहाँ टहलने आते हैं। घनी छाया के कारण यहाँ टहलने की कोई समय सीमा नहीं है। वे कहते हैं कि यहाँ टहलते समय उन्हें राग रागिनी का पेड़ दिखाई देता है। क्या आपने एक और बात पर ध्यान दिया? उन्होंने महल के चारों ओर भी बड़े पेड़ लगाए हैं।’
हाँ, हैं। कोई फूलों का बगीचा नहीं लगाया गया है। क्या आप जानते हैं क्यों? बगीचे में फूल और पेड़ कृत्रिम लगते हैं। उन्हें कृत्रिम खाद दी जाती है। इससे ऋतुओं का सही अवलोकन नहीं होता। बड़े, प्राकृतिक रूप से उगे पेड़ों के साथ ऐसा नहीं है। उन्हें देखकर ही हम बता सकते हैं कि यह कोई खास महीना है - यह कोई खास ऋतु है। क्या हम जो राग गाते हैं, उसका ऋतु से कोई संबंध है या नहीं? यदि हम पेड़ों से मित्रता कर सकते हैं, तो रागों से भी आसानी से मित्रता कर सकते हैं।
उनका मानना है।
कुछ दूर चलने के बाद उन्होंने कहा, ‘दस बजे दुहने के बाद, इन सभी गायों को महल में चरने के लिए छोड़ दिया जाता है। जब राजसाहब यहाँ टहलने आते हैं, तो वे इन गायों के पास आते हैं, उनके हाथों को चाटते हैं और उन्हें सूंघते हैं।’ इधर-उधर और जंगल में चलने से मेरा शरीर पसीने से भीग गया था। आखिरकार, हम चित्रा और नामदे नदियों के संगम पर पहुँच गए। चित्रा नदी में ज़्यादा पानी नहीं था; लेकिन ऊपर खड़े होकर संगम को देखते हुए साँसें थम सी

गईं। हमारे बाईं ओर महादेव का मंदिर था। पिछले दिन, शाम के समय, मैंने मंदिर से नामदे नदी देखी थी, लेकिन इस बार मैंने यह संगम नहीं देखा था। मैं कुछ देर वहीं खड़ा रहा और उसे निहारता रहा।
भूपातराम के पास शिवालय की चाबी नहीं थी। हम दोनों मंदिर के बाहर इस बेंच पर बैठ गए। उन्होंने कहा, 'मुझे लगा यह एक संयोग है! तुम्हारा भाग्य चमक गया है। राजसाहेब तुम्हें अपना शिष्य बनाने के लिए तैयार हैं।'
'हाँ सच?'
भूपातराम का संगीत सुनकर मेरा दिल बैठ गया। फिर उन्होंने पूछा, "क्या तुम उनसे सीखने के लिए तैयार हो?"
मैं चौंक गया, "आप ऐसा क्यों सोचते हैं?"
‘मैं यहाँ नहीं हूँ, उन्होंने इसके बारे में सोचा है! इसीलिए उन्होंने कल तुम्हारे लिए गीत भी गाया था। गाना एक गंभीर विषय है। उनका मानना है कि ध्यान और तपस्या गंभीर विषय हैं। अगर तुम सहमत हो, तो देखो। अगर नहीं, तो कोई ज़िद नहीं – यह तुम्हारा उनसे विदाई संदेश है। आराम से रहो। अब तक उन्होंने किसी को नहीं सिखाया है। इसके बाद भी वे किसी को नहीं सिखाएँगे। इसलिए वे तुम्हें अपना सारा समय देंगे और तुमसे कड़ी मेहनत करवाएँगे। तुम्हें हर दिन दस से बारह घंटे अभ्यास करने के लिए तैयार रहना होगा! तुम्हें उनके क्रोध और लालच को सहना होगा। अगर केवल एक ही व्यक्ति है, तो तुम्हें बहुत सारा प्यार मिलेगा और यह एक तुम्हारी कमर तोड़ देगा!’
‘मुझे परवाह नहीं। उनसे गाना सीखना मेरा सौभाग्य है!’ मैंने भावुक होकर उनका हाथ थाम लिया।
हम महल लौट आए। जब हम स्नान कर रहे थे और चाय-बिस्किट खा रहे थे, तभी राजसाहेब आ गए। मैं जल्दी से उनके पास गया और उनके पैर छुए। उन्होंने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मैं अब ऐसा कभी नहीं करूंगा। ये मेरे गुरु नहीं हैं। मंदिर में विराजमान महादेव जी तुम दोनों के गुरु हैं। हम वहां संगीत का अभ्यास करते थे। वे तुम्हें सिखाएंगे। तुम जो कुछ भी सीखोगे, अब से उन्हें ही अर्पित करना।'
उन्होंने आगे कहा, “इस मंदिर को ध्यान का स्थान मानने का एक कारण है। शिवलिंग नादभ्र का स्वरूप है। इस मंदिर से उत्पन्न ध्वनियाँ वृत्ताकार अंतरिक्ष में विलीन हो जाती हैं और फिर तारों में विलीन हो जाती हैं, ठीक वैसे ही जैसे लिंग वृत्ताकार है। इसे मन के सामने रखकर ध्यान करना चाहिए।

मंदिर के रास्ते में दाहिनी ओर एक छोटी सी कुटिया है। क्या वह दिखाई दे रही है?”
'नहीं।'
जब तुम लौटोगे तो इसे देखोगे। यह छोटा है, पर एक व्यक्ति के लिए पर्याप्त है। दो कमरे, आंगन, चबूतरा, स्नानघर। इस झोपड़ी में तुम्हारा असली स्वरूप बना रहेगा। मंदिर की चाबी तुम्हारे पास रहेगी। यह सुविधा इसलिए है ताकि तुम जब चाहो मंदिर जा सको और भजन गा सको। यहाँ एक साइकिल भी होगी। तुम जब चाहो गाँव आ-जा सकोगे। दो वक्त के खाने का इंतजाम रहेगा। तुम बेफिक्र होकर चाय पी सकते हो। जंगली जानवरों का कोई डर नहीं, चोरों व लुटेरों की कोई परेशानी नहीं। इस जंगल की रक्षा महादेव जी करते हैं। फिर भी, रात भर नदी किनारे एक चौकीदार पहरा देता है। क्या तुम्हें जंगल में अकेले रहने से डर लगेगा? रात में भी?
"यह उस तरह का अनुभव नहीं है। लेकिन मुझे नहीं लगता कि ऐसा होगा।"
‘भले ही आपको भय लगे, चार दिनों के भीतर उससे छुटकारा पा लें! यहाँ रहने का यही उद्देश्य है। वृक्षों, स्त्रियों, गुरुओं, आकाश, तारों, चंद्रमा, नदी, मंदिर, दिन, रात, सुबह, शाम, गोधूलि आदि की उपस्थिति का आपके गायन से सीधा संबंध है। इनकी उपस्थिति के बिना आत्मा रागों का सार नहीं पा सकती। इसके अलावा, यदि हम प्रत्येक राग के लिए निर्धारित समय पर अभ्यास करते हैं, तो हमारा अनुभव है कि उस समय अभ्यास करने से वह राग शीघ्र ही आत्मसात हो जाता है। तानों का अभ्यास बाद में सुविधा अनुसार किया जा सकता है; लेकिन आलाप का अभ्यास केवल इसी विशेष समय पर करना चाहिए। इसके लिए हमें शिव के निकट रहना पड़ा। हमने यही किया।’
उन्होंने उनके चाय के प्याले भी भर दिए। अपना प्याला उठाते हुए उन्होंने कहा, "हफ्ते में एक बार।"
वह शाकपुर जाया करते थे और भूपातराम से तबला वादन की लय और गायन सीखते थे। मंदिर में
इसका भी कम से कम दो घंटे अभ्यास करना चाहिए। फिर अगर इसके शब्द हमारे मन में अच्छी तरह से बैठ जाएं,
"गाते समय आप तनाव को भी समायोजित कर सकते हैं।"
मैं इन शब्दों के साथ 'हुकुम-हुकुम' चिल्ला रहा था।
अगला दिन गुरुवार था। सुबह मंदिर में पूजा के दौरान प्रशिक्षण शुरू हुआ।

इससे पहले मैंने भूपातराम से पूछा था, 'लेकिन गंडाबंधन के दौरान, शिष्यों ने...'
भले ही यह मामूली ही क्यों न हो, लेकिन यह इसके लायक है, है ना?
‘तुम चुगली करती हो! अगर तुम ऐसा सोचोगी तो राजा का अपमान करोगी! किसी पर भी पैसा बर्बाद न करना एक प्रमुख शाही गुण है!’
और ऐसा ही हुआ। महल से ही मंदिर में फूलों, फलों, मिठाइयों और एक सौ एक रुपये से भरी एक बड़ी थाली भेजी गई। राजमहल के पुरोहितों ने शिवलिंग पर तेल लगाया। उन्होंने मेरी कलाई पर महादेवजी के नाम का कंगन बांधा। उन्होंने महल से आया नया खाली तंबूरा मेरे हाथ में दे दिया।
आशीर्वाद मंत्र का जाप हुआ। मैंने महादेवजी को प्रणाम किया। मैंने राजपुरोहित, राजसाहेब और भूपातराम के माथे पर कुमकुम लगाया, गायकों को माला पहनाई और उनके मुंह में मिठाई डाली। तब राजसाहेब ने कहा, 'तुम्हारा गायन प्रशिक्षण सात-आठ या दस-ग्यारह वर्ष चलेगा। प्रशिक्षण पूरा करने के बाद, मैंने महादेवजी के समक्ष शपथ ली कि मैं उनकी अनुमति के बिना यहां से नहीं जाऊंगा।'
मैंने ऐसा किया।
‘अब डफ बजाओ। पंचम।’ मैं जाजमा पर बैठ गया और डफ बजाने लगा। पुजारी पूजा के बर्तन लेकर चले गए। मैं डफ की ध्वनि सुन रहा था। दीवार से टेक लगाकर बैठे राजसाहेब ने कहा, ‘तुम्हें प्रमुख रागों का ज्ञान तो अवश्य है। यदि तुम्हें कोई शंका हो, तो इन अलमारियों में ये पुस्तकें हैं। वहाँ तुम्हें सटीक जानकारी मिल जाएगी। तुम्हें बाईस स्थितियों के स्थान भी अच्छी तरह से याद हैं। इसी प्रकार, तुम्हें प्रत्येक स्थिति की लय भी अच्छी तरह से याद है। कुछ स्थितियों की लय अनंत है। यहाँ तक कि थोड़ी देर के लिए इधर-उधर हिलने से भी हम दूसरी स्थिति की लय में प्रवेश कर जाते हैं। इस अनंत लय का अभ्यास बिना सोचे-समझे करना चाहिए। दूरबीन से देखने पर यह एक पतले धागे जैसी नली के समान दिखाई देती है। इस दृष्टि के बिना, ज्ञानी और बुद्धिमान व्यक्ति भी त्रिविध क्रिया नहीं कर पाएगा। सौम्य सिंह केवल एक छल्ला नहीं है। इसमें अनेक सूक्ष्म छल्ले हैं जिन्हें हम पहचान सकते हैं।’ जैसे-जैसे हमारा अभ्यास बढ़ेगा, हम पंद्रह से बीस छल्ले तक पहचान पाएंगे। हमारी आंखें हरे रंग के आठ से दस शेड देख सकती हैं। एक प्रतिभाशाली कलाकार हरे रंग के सौ शेड पहचान सकता है और बना सकता है। एक प्रतिभाशाली कलाकार को इन

बाईस रंगों के सूक्ष्म शेड्स के बीच अंतर पहचानने और उस विविधता को चित्रित करने में सक्षम होना चाहिए। आइए पहले इसे देखें। आपका रहस्य क्या है?
इस अंतिम प्रार्थना के बाद, उन्होंने महादेवजी के आशीर्वाद से इसे भेंट किया।
टैम्बो को शक होने लगा।

४
इस जंगल की याद मेरे मन में बसी रही।
इस बार मैं दो रातों तक बहुत डरा हुआ था; लेकिन धीरे-धीरे मुझे इसकी आदत हो गई। दिन के दौरान,
रात में, सुबह में, शाम में – हर समय सुनाई देने वाली अलग-अलग आवाज़ें मधुर संगीत की तरह लगने लगीं। बुलबुलों की आवाज़, कौवों की कांव-कांव, झींगुरों की चहचहाहट, गायों की रंभाहट, पानी की कलकल – हर एक आवाज़ को सुनते हुए मन सोचता, ये कौन सी आवाज़ है? बाईस तारों में से ये कौन सा तारा है? अगर इसकी स्थिति जाननी हो तो इसके आस-पास के तारे कहाँ हैं? जब भी किसी तारे की आवाज़ सुनाई देती, तो उसके ऊपर के दस तारे और उसके नीचे के दस तारे खोजता और फिर उस तारे पर ध्यान लगाता।
सुवथी को अकेलेपन से ऊब महसूस हो रही थी, लेकिन जल्द ही उसकी रुचि इसमें विकसित हो गई। प्रत्येक गांठ एक ग्रंथि की तरह दिखने लगी। इसमें कई नसों की जटिलता भी दिखाई देने लगी। जब वह इनमें से प्रत्येक नस को छूती, तो एक अलग विशेषता उभरने लगती।
राजसाहब मुझसे गीत के संदर्भ के अलावा कभी बात नहीं करते थे। फिर भी, उनके साथ एक तरह का रिश्ता बन चुका था। आपसी विश्वास कायम हो गया था। एक नौकर मुझे दोपहर का भोजन लाता था। झोपड़ी में चावल के बर्तन रखे रहते थे। चाय बनाने की भी व्यवस्था थी। अक्सर राजसाहब को भी चाय पीने की इच्छा होती थी। फिर
मैं मशाल जलाकर साइकिल पर मंदिर ले जाया करता था। एक बार मुझे पढ़ाना था। एक बार शुरू होने पर, प्रशिक्षण दो घंटे तक चलता है। अगर मेरा रियाज़ अच्छा रहा, तो वे मंदिर के बाहर एक मंडप में बैठते हैं।
अक्सर भारत के महान गायक इस महल में आते थे। फिर वे इस महल के इस भोज कक्ष में कार्यक्रम आयोजित करते थे। यह भोज कक्ष इसी महल में बनाया गया था। मैं वहां मौजूद था। मैंने आसपास के गांवों के ग्रामीणों को इस गायन कार्यक्रम के लिए आमंत्रित किया था।
इस समय मैं तंबोरा बजाने बैठ जाता था। कभी-कभी, ज़रूरत पड़ने पर, मैं हारमोनियम भी बजा लेता था। अगर कोई बहुत ही प्रतिभाशाली गायक होते, तो भूपातराम को उनके साथ संगत करने के लिए बुलाया जाता था।

लेकिन राजा साहब ने इसमें कभी गाना नहीं गाया.
एक बार बिहार के प्रसिद्ध गायक राम शरण झा आए थे। उन्होंने बातचीत के दौरान कहा, 'राजसाहेब की तैयारी उच्च कोटि की है! मैं इसे सुनना चाहता हूँ।'
राजसाहेब भी सुनने के लिए तैयार हो गए। अगले दिन, शिव मंदिर में एक छोटी सी सभा आयोजित की गई। रामशरण, भूपतराम, राजसाहेब और पाँच अन्य भक्त आए। मैं डफली बजा रहा था। पहले तो रामशरण ने सोचा, 'राजसाहेब जलसाघर में नहीं गाते, वे केवल मंदिर में गाते हैं। क्या मैं उनसे पूछ सकता हूँ कि क्यों?' ‘प्रिय महादेव जी आए हैं और उन्होंने ऐसा आदेश दिया है। यह कुलदेवता का आदेश है!’ राजसाहेब ने कहा। रामशरण झानी ने शिवलिंग की ओर सिर झुकाकर हाथ जोड़ लिए।
लेकिन मेरी जिज्ञासा शांत नहीं हुई। पूर्वज देवता ने ऐसा आदेश क्यों दिया? क्या राजसाहेब इस मंदिर में अपने आनंद के लिए इस संगीत का प्रयोग करते थे? शायद कुछ समय पहले ऐसी कोई घटना घटी हो; लेकिन आज मैं इस राजसाहेब को देख रहा था, और वे शास्त्रीय संगीत को वेदों से भी अधिक पवित्र मानते थे!
हर हफ्ते मैं साइकिल से शाकपुर जाया करता था। मैं सारा दिन भूपतराम के घर पर ही रहता था। खाना वहीं मिलता था। इस मामले में वे राजसाहेब की तरह ही सख्त थे। वे कहते थे, 'ताल में सिर्फ समय का विभाजन ही महत्वपूर्ण नहीं है। आरा की ध्वनि भी बहुत महत्वपूर्ण है!' उनकी उंगलियों से निकलने वाली 'इधान' बांसुरी जैसी सुनाई देती थी। गायक-संगीतकार कोई भी हो, वे राग के स्पर्श से अपने वादन के माध्यम से 'सु मतली सु मा' भाव को प्रकट कर देते थे! तबला वादन से मेरा कोई सीधा संबंध न होते हुए भी वे मुझे इसका अर्थ समझाते थे। वे मेरी उंगलियों को तबला बजाना सिखाते थे।
‘कॉफी ऑर टी?’
‘टी लीज!’
इस देश में तो हर कोई चाय मांगता है! आप इसे 'हाँ' कहते हैं, बिल्कुल सही। रिवाज के तौर पर यह ठीक है; लेकिन ये लोग आपकी तरह कड़क चाय नहीं बना सकते। ये हल्की चाय बनाते हैं। ये तो पाउडर को ठीक से चखते भी नहीं। भला इन्हें इतनी हल्की चाय क्यों चाहिए? मधु अच्छी चाय बनाती थी। भारत में, यहाँ तक कि मुंबई में भी, कड़क चाय ही चलती है! वाह! शेर की छलांग!

उन्हें अचानक यह दृढ़ अहसास हुआ कि जिस प्रकार राजसाहेब ने मुझसे वादा किया था, उसी प्रकार मैं भी।
मेरे किसी भी शिष्य ने मुझे यह नहीं दिया। मुंबई में यह शांति कहाँ से आती है? नदी का शोर और पानी की आवाज़ कहाँ है? लेकिन ये सब मधु के घर के आसपास है! उनमें भी वही शांति और दृढ़ इच्छाशक्ति है जो सभी शिष्यों में है। इन दो हफ्तों में उन्होंने सिर्फ मेरे लिए सभा में उनके साथ गाने की तैयारी की। राजसाहेब ने कभी ऐसी पाबंदी नहीं लगाई और न ही किसी संगीत कार्यक्रम की तैयारी की। वे कभी सभा की भाषा नहीं बोलते थे। वे बस यही कहते थे, "यह इस लय की वजह से है, यह इस हवा की वजह से है।" वे इसे गर्व से दिखाते थे।
क्या आपको उस समय इस बात का कोई अंदाजा था कि आपकी कौन सी मीटिंग होने वाली है? एयर होस्टेस।
क्या भारत में इन्हें "गगन-सखी" नहीं कहते? ये कैसी दोस्त है? वो दोस्त जो खाने की थाली फैलाती है, वो दोस्त जो खाने के बाद हाथ धोती है!
एयर होस्टेस ने प्लेट ले ली। मैंने खिड़की से बाहर देखा, नीचे बादल छाए हुए थे। काले बादल। ज़मीन का कोई नामोनिशान नहीं था। क्या बारिश हो रही है? विमान भी बादलों के ऊपर है। यहाँ तो न बादल हैं, न बारिश! ओह! ये कैसी यात्रा है? लगता है मैं बारिश में सफर कर रही हूँ। ये तो वाकई मज़ेदार है! उस दिन अचानक बारिश होने लगी। कैसी बारिश थी! लगातार दो घंटे तक बारिश होती रही।
यह ढह रहा था। तबला दूसरी तरफ नहीं जा पाता। आप कितनी भी कोशिश कर लें, यह नहीं हो पाता। भूपातराम ने भी कोशिश की थी। तब वे कहते, 'हवा इतनी ठंडी नहीं है!'
माहौल में एक चिंगारी भी है। बेहतर होगा कि तबला थोड़ी देर के लिए अलग रख दिया जाए।
बारिश भले ही थम गई थी, लेकिन पूरी तरह से रुकी नहीं थी। भूपातराम बाहर आया, देखा और हँसते हुए बोला, 'यह पश्चिमी बारिश है। यह जल्दी नहीं रुकेगी। कितना अंधेरा हो गया है! बारिश इतनी तेज़ हुई है कि पानी यहाँ पुल तक पहुँच गया होगा। आप लोग यहाँ रात में काम करते हैं।'
दो साल की जान-पहचान के बाद यह एकदम बदल गया था। इसी वजह से मैंने वह प्रस्ताव ठुकरा दिया। खाना परोसा गया। घर के बाकी लोग सो गए। हम दोनों

बातें करते रहे। वह सवाल जो मुझे कई दिनों से परेशान कर रहा था, मैंने सोचा, 'गुजी, मैं सोच रही थी, किसी को मत बताना। क्या विचार है?'
'क्या चल रहा है?'
‘एक सवाल मुझे लगातार परेशान कर रहा है। राजसाहेब शिव मंदिर के बाहर कहीं भी गाना नहीं गाते। क्यों?’
‘तुम्हें पता है! कुलदेव इस स्थान पर आए थे और उन्होंने कहा था-’ अपनी बात पूरी करने से पहले ही उन्हें एहसास हो गया कि वे सच नहीं बोल रहे हैं। यह जानकर कि यह बात मुझसे भी आ रही है, वे चुप हो गए। फिर उन्होंने कहा, ‘तुम्हें प्यास लगी है। मैं भी इसे छुपाना नहीं चाहता; लेकिन मुझसे वादा करो, मैं किसी और को नहीं बताऊंगा!’
जब मैंने उनसे यह वादा किया, तो वे कहने लगे, ‘संस्था भंग होने पर भी, मैं और बंदे अली खान राज दरबार के कलाकार बने रहेंगे। यह खबर लोगों में बेवजह फैली है, अगर लोग इसे हवा देंगे तो अराजकता फैल जाएगी। देखो! तुमने वादा किया था!’
क्या हम टैम्बो की शपथ लें?
इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। मुझे आप पर पूरा भरोसा है। इस बंदे अली खान साहब के पिता, असत अली खान साहब भी हमारे शाकपुर दरबार के गायक थे। वर्माधुय और लैकरीम येह का स्थान तो बिल्कुल अनोखा है! लखनऊ, बनारस और कैलाई से विद्यार्थी उनसे गायन सीखने आते थे। उनकी प्रसिद्धि की तुलना फैज़ खान-करीम खान साहब से की जाती थी। मेरे विचार से यह थोड़ी अतिशयोक्ति है, लेकिन उनकी संगीत प्रतिभा बेमिसाल थी।
उनका ज्ञान बहुत व्यापक था, उस पर असहमति की कोई गुंजाइश नहीं थी। मैंने उनके कई गाने सुने हैं।
मैंने यह सुना है, मैंने इसका समर्थन किया है; लेकिन यह तब हुआ जब मैं बच्चा था।
महाराज, आपको बचपन से ही गायन का शौक था। उनके दरबार में हिरशरण उप जैसे गायक थे। राजा जगजीत सिंह अपने दरबार में इतने महान कलाकार को कैसे रख सकते थे? उन्हें गायन का उतना शौक नहीं था। साथ ही, देश की स्वतंत्रता के बाद उनकी संपत्ति भी कम हो गई थी।
हिरचरण उपाय ने अपना सारा ज्ञान राजसाहब को दे दिया और इंदौर में काम करने वाले उनके बेटे के साथ रहने चले गए। राजसाहब के बेटे उतादा अली खान उन्हें

गायन सिखाने के लिए बहुत उत्सुक थे। जैसे ही उन्होंने इस बारे में शिक्षक को बताया, महान राजसाहब ने उतादाजी को बुलाया। उन्होंने उन्हें सिखाने का फैसला किया। उतादाजी को गाड़ी से बुलाया जाता था, वे सप्ताह में दो दिन यहाँ रहते थे। फिर उन्हें गाड़ी से शाकपुर छोड़ दिया जाता था। उतादाजी का वेतन एक हजार रुपये प्रति माह था।
उस समय एक हजार पैसे! उस समय एक मन गेहूँ ढाई पैसे में मिल जाता था!
जगजीत सिंह में इस समय इतनी बड़ी तनख्वाह स्वीकार करने की न तो इच्छा थी और न ही सामर्थ्य। उन्होंने अपने बेटे के आग्रह पर ही ऐसी तत्परता दिखाई थी। प्रशिक्षण शुरू हुआ। खान साहब सप्ताह में दो दिन वहाँ रहते थे। वे बड़े आराम से रहते थे! उनके अनुसार दरबारी रीति-रिवाज और तौर-तरीके अलग थे। वे आगे बैठकर राजा साहब के गीत सुनते थे और कभी-कभी निर्देश भी देते थे। इस तरह तीन साल बीत गए। महान महाराज का देहांत हो गया। हमारे राजा साहब राज्य में आए। राज्य भले ही चला गया, लेकिन सिंहासन, विवाह और रीति-रिवाज बने रहे। उन्हें दिल्ली से थोड़ा वेतन मिलता था। इसके अलावा, जमीन भी भरपूर थी। यद्यपि हमारे राजा साहब गायन में धैर्यवान थे, फिर भी उन्होंने यवहार को कभी नहीं छोड़ा। उनका एक समर्पित दीवानजी था जिसका नाम अंबालाल नागर था। वे नियमित रूप से यवहार जाते थे। राजा साहब भी आवश्यकतानुसार इसमें भाग लेते थे। हालांकि, वे अपना बाकी समय पढ़ने और गाने में बिताते थे। क्या आपने महल में उनका पुस्तकालय देखा है?
'हाँ।'
"उन्होंने बहुत अच्छी किताबें जमा की हैं। जगजीत सिंह को भी किताबों का शौक था। उन्होंने इसमें और भी किताबें जोड़ी हैं।"
उत्दजी का प्रशिक्षण चार वर्षों से चल रहा था। हाल ही में राजसाहेब को यह महसूस होने लगा था कि उत्दजी उन्हें अपना सारा ज्ञान निःस्वार्थ भाव से नहीं दे रहे हैं। अगर वे इस बारे में सोचते तो कहते – दूल्हे की नींव अभी क्यों रखी जाए – ऐसी नींव पर बनी इमारत टिकेगी ही नहीं। हमारी प्रगति अच्छी है – हम स्वयं ही अपनी सफलता का रहस्य हैं।
मैं बीस साल से घर पर अभ्यास कर रहा हूँ! – यह कला अन्य कलाओं से अलग है! इत्यादि। वह मुस्कुराते हुए, अपने दाँत और दाढ़ी दिखाते हुए ये बातें कहता था। उसकी आवाज़ कितनी मधुर थी!

लड़के को एक पैसा भी नहीं देता। उससे बात की जा सकती है। वह उसे हफ्ते में एक बार लाएगा। वह राजसाहब से कहेगा कि उसे वही सिखाएं जो उसके पिता उसे सिखाते हैं। अगर उसे हर महीने सौ रुपये मिल जाएं तो वह खुश हो जाएगा। पैसे मिलने पर वह इसे गुप्त रखने को तैयार रहेगा! लेकिन उथदजी को इस लड़के के सामने गाना नहीं गाना चाहिए।’
राजसाहेब को समाधान समझ आ गया। वे जोर से हँसे और बोले, "सौ क्यों? अगर देना ही है तो डेढ़ सौ दे दो!"
लेकिन दीवानजी ने बीच में ही टोकते हुए कहा, ‘ऐसा मत करो। अगर वह तुम्हारी उदारता में और अधिक दिलचस्पी लेने लगा, तो उतादाजी को संदेह हो जाएगा! अगर यह दरबार का आदेश है, तो आगे जो भी होगा, मैं देख लूंगा!’ वे हँसे। भूपतराम ने मन ही मन सोचा, ‘क्या तुमने गजा के इस इलाके में अंडरवर्ल्ड देखा है!’ मैंने कई कहानियां सुनी थीं कि गुरु बहुत कुछ सिखाते हैं लेकिन महत्वपूर्ण रहस्य छिपाते हैं, लेकिन जब मैंने अपने गुरु के साथ घटी घटना के बारे में सुना तो मेरा दिल दहल गया।
इस तरह डेढ़ साल बीत गया। बंदे अली खान आपको बिना किसी रुकावट के वह गीत सिखा रहे थे जो आप सीख रहे थे। उसी समय जंगल में वह झोपड़ी भी बन गई। अब आप उसी झोपड़ी में रहते हैं। गाड़ी आपको सीधे वहीं ले जाती थी। यह व्यवस्था इसलिए की गई थी ताकि यह बात नौकरों तक न पहुंचे। इसके बाद राजसाहब भी वहां लंबे समय तक अभ्यास करने लगे। उस समय उनके मन में असली सवाल यह था कि संगीत में उनके गुरु कौन हैं? उतादजी ने गीत बेचा था; लेकिन इसमें उन्होंने धोखा दिया था। अगर बेटे ने धोखा न भी दिया होता, तो भी इसमें बड़ी रकम थी। तब उन्होंने तय किया कि इसके बाद महादेवजी ही गुरु हैं! उन्होंने मंदिर में बैठकर अभ्यास करना शुरू कर दिया।
एक दिन सुबह के दस बज रहे होंगे। पुरोहितों ने शिव पूजा समाप्त कर ली थी। राजसाहब मंदिर में बैठकर रियाज़ कर रहे थे। तोड़ी आलाप चल रहा था। बंदे अली खान द्वारा सिखाई गई पगड़ी बनाने का काम भी चल रहा था। तभी दरवाजे पर एक परछाई पड़ी। जब उन्होंने देखा तो उतादाजी दरवाजे पर खड़े थे! आज उनके आने का दिन नहीं था। उन्होंने उन्हें बुलवाया भी नहीं था। शिव से पहले वे कभी इस मंदिर में नहीं आए थे। राजसाहब समझ गए कि क्या हुआ है। हालांकि उनका मन व्याकुल था, फिर भी उन्होंने उतादाजी का पूरे मन से स्वागत किया।

उतादाजी भी बिना कुछ दिखाए सामने बैठे रहे और हंसते हुए बोले, 'मैं दुविधा में हूँ। मैं दरबार में भेंट देने का अनुरोध लेकर आया हूँ। मुझे यह भी पता है कि शिक्षा पूरी होने पर भेंट देना प्रथा है; लेकिन आप राजा हैं! अब मुझे पूरा भरोसा है कि अगर आप मांगेंगे भी तो आपको मिल जाएगी, इसीलिए मैं आया हूँ।'
‘आपको कितने चाहिए? बोलिए!’
मुझे पैसे नहीं चाहिए। मेरी एक ही गुजारिश है।
"बिना समझे हम इस अनुरोध से कैसे सहमत हो सकते हैं?"
"मैं किसी शाही खजाने की मांग नहीं कर रहा हूं। यह अनुरोध केवल संगीत के संदर्भ में है।"
‘तो फिर कोई समस्या नहीं। दिल्ली! बोलो!’ राजसाहेब ने वचन दिया!
इसके बाद उतादजी हँसते हुए बोले, 'आप भगवान के सामने बैठकर भगवान का ध्यान करते हैं, है ना?'
मैं अपने पूर्वजों के इस मंदिर के बाहर कहीं भी ऐसा शब्द कभी नहीं गाऊंगा! बिना ज्यादा सोचे-समझे राजसाहेब ने वचन दे दिया। इस पर भी उतादाजी हंस पड़े और बोले, 'राजसाहेब ने सिर्फ मुझे ही वचन नहीं दिया! उन्होंने तो आपके पूर्वज देवता को वचन दे दिया है!'
‘ठीक है। हम अपने पूर्वजों के देवता महादेवजी को वचन देते हैं!’
‘मैं खुश हूँ! इसके बाद मैं कभी दरबार से भीख नहीं माँगूँगा। मैं जा रहा हूँ। मैं यहाँ रहने आया हूँ। दरबार को अपनी प्रथा जारी रखनी चाहिए। मैं परसों फिर आऊँगा!’ यह कहकर वह चला गया।
राजसाहेब को जो कुछ हुआ था उस पर बहुत गुस्सा आया था, लेकिन उन्हें इस बात का एहसास नहीं था कि उन्होंने वास्तव में क्या खोया है; पर वे और आगे नहीं बढ़ सके। वे महल लौट आए। उन्होंने दीवानजी को बुलाया और उन्हें सारी घटना बताई।
यह सब सुनकर दीवानजी ने कहा, ‘अरे बाप रे! अदालत को ऐसा नहीं कहना चाहिए था! उतादाजी आपकी बुद्धिमत्ता, प्रतिभा और संगीत कौशल को जानते हैं। उन्हें पूरा विश्वास है कि आप उनके बेटे के रूप में आगे बढ़ेंगे। आप किसी को भी गाना सिखा सकते हैं।’ ‘तो फिर आपके इस संगीत से समृद्ध परिवार का क्या होगा?’ चिंतित होकर,

वह जल्दी में था। इसके बाद, अदालत मंदिर के बाहर कहीं भी गाना नहीं गाएगी, इसलिए
हमारा गीत कभी रिस्का की ऊंचाइयों तक नहीं पहुंचेगा! हमारा गीत दिल्ली, आगरा, जयपुर, वाराणसी, भोपाल, बनारस, कलकत्ता, मुंबई जैसे संगीत केंद्रों वाले शहरों में कभी नहीं गाया जाएगा! उत्तदजी ने संगीत केंद्र में जन्म लेने से पहले ही अदालतों को जमीन में गाड़ दिया था!
राजसाहेब स्वयं कभी भी गीत गाकर प्रसिद्धि पाना नहीं चाहते थे। उन्हें गीतों के माध्यम से धन कमाने की कोई आर्थिक आवश्यकता नहीं थी। फिर भी, वे बहुत दुखी थे। दीवानजी ने यह देखकर कहा, 'हर गलती का कोई न कोई हल होता है। अदालत को चिंता नहीं करनी चाहिए।'
लेकिन राजसाहेब संतुष्ट नहीं हुए। वे हँसे और बोले, 'अगर हम चोरी का हार भगवान को दे दें, तो वे प्रसन्न क्यों नहीं होंगे?'
इस घटना से पहले, राजसाहब ने अपने विश्वास की ठीक से जाँच भी नहीं की थी। राजमहल के पुरोहित पूर्वज देवता की पूजा करते थे। महान राजाओं का ईश्वर में पूर्ण विश्वास होता था। महल में एक बड़ा मंदिर भी था। वहाँ राजमाता की पूजा होती थी। राजसाहब वहाँ प्रसाद ग्रहण करते थे। बचपन से ही वे विशेष त्योहारों पर मंदिर जाया करते थे। अब उनके मन में यह विचार आने लगा कि वचन देने से पहले सोचना मेरा कर्तव्य है, और अगर कोई गलती भी हो जाए, तो भी वचन निभाना मेरी ज़िम्मेदारी है। इसमें कुछ छूट तो मिल सकती है; लेकिन ऐसा करने से आप अपनी ही नज़र में महत्वहीन हो जाएँगे। साथ ही, यह ईश्वर की नैतिक शक्ति को नकारने के समान होगा।
राजसाहेब का विचार स्पष्ट था। वे मंदिर गए और भगवान को प्रणाम किया। अगले दिन, उत्तदजी को लाने वाली गाड़ी को सीधे मंदिर लाने का आदेश दिया गया। जब उत्तदजी पहुँचे, तो राजसाहेब गाड़ी पर झुके बैठे थे। उत्तदजी के आते ही उन्होंने कहा, 'यदि गुरु का धर्म तुमसे बड़ा है, तो तुम्हें भी उनसे बड़ा होना चाहिए। तुमने गुरु के जन्म को भी कुंठित कर दिया है और गुरु के धर्म को भी। इससे पहले तो तुम गुरु नहीं थे। इतना धन लेकर, इतना अनुग्रह लेकर, तुम शिष्यों को धोखा दे रहे थे! अन्यथा, हमें इतना धन खर्च करने और इतना भीख मांगने की आवश्यकता क्यों होती? आप मेरे गुरु नहीं हैं, महादेव जी, मेरे गुरु! आप कला बेचने वाले व्यापारी हैं। इसलिए, अब तक जो धन तुमने लिया है और जो धन तुम्हें भविष्य में दिया जाएगा, उसके बदले में तुम्हें गाना

सीखना चाहिए! यदि तुम भविष्य में भी वही करते रहे जो तुमने अब तक किया है, तो याद रखना!' आप इस दरबार के शाही गायक हैं।
उन्हें यह कहना आसान है कि वे आपको देश छोड़ने के लिए मजबूर कर दें! लेकिन हम फिर भी ऐसा करेंगे।
नहीं। इसके बजाय, खुद को मार डालो! भले ही राज्य नष्ट हो जाए, भले ही तुम्हारा शव हमारे कब्जे में आ जाए, तुम जानते हो कि कोई भी तुम्हें जवाब नहीं दे पाएगा!' हनत ने अपनी जांघ के नीचे से खंजर निकालते हुए कहा। उतादाजी भयभीत हो गए। उन्हें बहुत पसीना आ रहा था! उन्होंने कहा, ‘मैं अपना वादा वापस लेता हूँ – मैं आपके पूर्वज देवता के समक्ष अपना वचन वापस लेता हूँ’; लेकिन राजसाहेब ने कहा, ‘भले ही आप अपनी जान के डर से अपना वचन बदल रहे हों, हम ऐसा नहीं करेंगे। यह हमारा निर्णय है, अब से शिक्षा में धोखाधड़ी बर्दाश्त नहीं की जाएगी! मैं यहाँ सप्ताह में दो बार आता था, हर बार कम से कम सात-आठ घंटे पढ़ाता था।’
मैं तुम्हें दिखाना चाहता हूँ। मैं तुम्हें एक और बात बताता हूँ। अगर तुम और तुम्हारा परिवार शाकापुर से भागने की कोशिश भी करोगे, तो हमारे लोग वहाँ आकर तुम्हें गोली मार देंगे! समझ गए? चलो, सिखाना शुरू करो!
इसके बाद, उतादजी को उस झोपड़ी में ले जाया जाने लगा जहाँ आप अभी ठहरे हुए हैं।
उनके खाने-पीने का इंतजाम हो गया था। बाद में, राजसाहेब ने कभी भी
उन्हें महल नहीं ले जाया जाता था। वे उनसे केवल मंदिर में ही मिलते थे। तब भी वे गाने के अलावा एक शब्द भी नहीं बोलते थे। वे खुशी का एक शब्द भी नहीं बोलते थे। वे एक राग को एक दिन में पूरी तरह से सीख लेते थे। दूसरे दिन वे उसे पूरे दिन दोहराते थे। अगले पाँच दिनों तक राजसाहेब अकेले ही उसका अभ्यास करते थे। अगली बार राजसाहेब उन्हें पूरा राग दिखाते और उत्तादजी उसमें आवश्यक स्वर जोड़ते।
सुझाव देते हुए। यह गीत उन दोनों ने मिलकर गाया था। इस तरह उन्होंने पंद्रह दिनों में एक राग और दो वर्षों में चालीस रागों में महारत हासिल कर ली। अंतिम वेतन देने और उस पर हस्ताक्षर करने के बाद राजसाहेब ने कहा, 'हमने अपना सारा पैसा दे दिया है। इसके बाद प्रशिक्षण समाप्त होता है। अगले सप्ताह सूखा हार आपके दरवाजे पर नहीं आएगा।'

ऐसी स्थिति में भी, मुझे यह जानकर खुशी हुई कि राजसाहेब ने उत्दाजी को इतने गंभीर ढंग से पढ़ाया था। फिर भी, मुझे यह समझ नहीं आया कि उत्दाजी कितने शर्मिंदा थे। बाद में, मुझे यह भी समझ नहीं आया कि इन दो वर्षों में उन्हें जो धन मिला, उससे वे कितने प्रसन्न हुए होंगे।
भूपातराम ने आगे बताया, “बड़ों का प्रशिक्षण पूरा हो गया था और राजसाहेब का स्वयं का अभ्यास शुरू हुआ। वे प्रतिदिन प्रत्येक राग का जाप करते रहते थे। वे प्रत्येक राग में इतने मग्न हो जाते थे कि अक्सर महल भी नहीं लौटते थे। उनका भोजन भी इसी कुटिया में पहुंचाया जाता था। वे यहीं स्नान करते थे। वे रात-रात भर मंदिर में बैठकर गाते रहते थे। कभी-कभी वे बस बैठकर डफली बजाते थे। यहाँ तक कि जब वे वहाँ के वृक्षों, पत्तियों और फूलों को देखते थे, तब भी उनके मन में राग का भाव आ जाता था। जब उन्हें नींद आती थी, तो वे मंदिर में ही सोते थे।”
उतादाजी ने किट का सामान दिया था। इसके बाद वे इस गीत का अर्थ जानने और उसे आत्मसात करने के उद्देश्य से अपनी साधना जारी रखते थे। इस समय तक उनकी आयु तीस वर्ष हो चुकी थी। इसी दौरान मैंने अहमदजान तिथिकावा के मार्गदर्शन में अपना प्रशिक्षण पूरा किया और शाकापुर के राज दरबार में नियुक्त हो गया। राजसाहेब ने उनसे तबला सीखना शुरू किया। वह प्रशिक्षण भी मंदिर में ही होता था। सुबह मुझे लेने के लिए गाड़ी आती थी और अगली सुबह मैं उन्हें घर छोड़ता था। अब, जैसे आपकी तैयारियाँ चल रही हैं, वैसे ही उनकी भी तैयारियाँ चल रही थीं। मुंबई, बड़ौदा, जयपुर, वाराणसी, कलकत्ता – जहाँ भी बड़े संगीत समारोह होते थे, हम दोनों वहाँ जाते थे। वे मेरे खर्चे पर जाते थे। अक्सर आयोजक मुझे तबला बजाने के लिए आमंत्रित करते थे। मैंने बहुत सारे गीत सुने। मुझे बहुत आनंद आया। वे भी अलग-अलग गायकों और संगीतकारों द्वारा एक ही राग को प्रस्तुत करने के तरीके को सुनकर अपने गीतों में बदलाव करते थे। लगभग दस वर्षों तक उन्होंने बहुत सुना और उसमें महारत हासिल कर ली। उसके बाद उसने सुनना बंद कर दिया और
मैंने खुद को संगीत वाद्ययंत्रों में पूरी तरह से डुबो दिया। हाना इतनी तैयार थी कि वह बहुत...
महान गायकों को अब शर्माना नहीं चाहिए!
"जब उन्हें मीटिंग करने या दूसरों के सामने गाने की इच्छा ही नहीं है, तो वे इतनी मेहनत क्यों करेंगे? इसके पीछे क्या प्रेरणा हो सकती है?"

‘यह सच है कि वे सभाओं में नहीं गाते; लेकिन कई महान कलाकारों ने उनके गीत सुने हैं। यानी मंदिर में। उन्हें शाकापुर के दरबार में आमंत्रित किया गया था। इस कलाकार का यहाँ जलसाघर में एक संगीत कार्यक्रम था। अगर उनमें से कोई चाहता, तो वे उन्हें मंदिर ले जाते और उन्हें दिल खोलकर गाने का मौका देते। मैं उनका संगतकार था। उनके गीतों से मंत्रमुग्ध हुए गायक सोचते थे कि वे संगीत कार्यक्रमों में क्यों नहीं आते। इस समय उन्होंने मन ही मन सोचते हुए पूर्वज देवता के आदेश की कहानी सुनाई। आपने प्रेरणा के बारे में सोचा है। श्रोताओं का मनोरंजन करना और उन्हें आनंद देना एक कलाकार की महत्वपूर्ण प्रेरणाएँ हैं, महाराज! लेकिन आत्मसंतुष्टि भी एक प्रेरणा हो सकती है। राजसाहेब ने इसे एक उदाहरण के रूप में लिया। बाद में, उन्हें इसकी आदत हो गई।’
बाहर बारिश रुक चुकी थी। दोनों थक चुके थे। लगातार बारिश रुकने पर जो सन्नाटा छाया हुआ था, वह साफ सुनाई दे रहा था। कमरा ठंडा लग रहा था। भूपतराम ने चुटकी भर तंबाकू ज़मीन पर रगड़ा, उसे झाड़ा और अपने दांतों के नीचे रख लिया। 'मैं तुम्हें एक और बात बताऊंगा। तुम किसी को नहीं बताओगे, ठीक है? मुझसे वादा करो।'
‘टैम्बो की शपथ!’
'आपके आने से पहले, चार साल पहले, मुझे पछतावा हो रहा था, मैंने अपना पूरा जीवन इस गीत के लिए बर्बाद कर दिया था, अब मैं उनसठ वर्ष का हो गया हूं, एक योग्य शिष्य को देखकर सब कुछ बदल गया।'
अगर मैं इसे आपको नहीं सौंपता, तो यह मेरी कला के साथ विश्वासघात होगा। अगर मैं ऐसा किए बिना मर जाता हूँ,
कहते हैं कि मृत्यु के गड्ढे में गिरना ही पड़ता है। राजसाहेब को ऐसी बातों पर कोई विश्वास नहीं था; लेकिन जैसे-जैसे साठ का दशक नज़दीक आया, उन्हें भी इन बातों पर विश्वास होने लगा। उन्हें ऐसे विद्यार्थी की उम्मीद नहीं थी जो चार साल गायन सीखे और फिर छोड़ दे। उन्हें ऐसा विद्यार्थी चाहिए था जो गायन के प्रति उतना ही समर्पित हो जितना वे स्वयं गायन के प्रति समर्पित थे। एक ऐसे विद्यार्थी को ढूँढ़ना जो एक अनाम गुरु को अपना सब कुछ दे दे, आसान काम नहीं था। वे यह जानते थे और इसी बात ने उन्हें परेशान कर रखा था। ऐसे समय में, जसवंत बिट्टू – क्या यही उनका नाम है? क्या वे कुछ साल पहले वापस नहीं आए थे? ट्रैवल एजेंट अक्सर कंपनियाँ

बदलते रहते हैं। उन्हें किसी ने सुझाव दिया और वे आपको यहाँ ले आए। मैं इसे महज़ संयोग मानता हूँ! सच हो या झूठ!

५
क्या समय हुआ है? अरे नहीं नहीं। मुझे घड़ी को तीन घंटे आगे करना होगा, इसमें से न्यूयॉर्क पहुँचने का समय घटाना होगा – ओह! सब कुछ धुंधला सा हो गया है। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा। न्यूयॉर्क पहुँचने में ढाई घंटे हैं, जहाँ छह बजे लोग पहुँचेंगे। खिड़की से बाहर देखते-देखते भी मैं थक गई। मेरी गर्दन में दर्द हो रहा था। वह सोफे पर पीछे झुक गई और सोने लगी। ऊँचाई पर उड़ते विमान की गूंज मेरे कानों में गूँज रही थी; लेकिन इस धुन को कोई गा नहीं सकता था। मुझे नींद नहीं आ रही थी। काफी देर कोशिश करने के बाद, मुझे झपकी आ गई। थोड़ा बेहतर महसूस हुआ। फिर मैं जाग गई। मुझे याद आया और मैंने देखा। मुझे अजीब सा लगा। मुझे घिन भी आई। इस वासना का समय से कोई लेना-देना नहीं है! यह आती-जाती रहती है और मुझे सताती रहती है। इसके विपरीत, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं क्या चाहती हूँ। परसों मधु ने उससे सुलह कर ली थी। इसके बाद, विक्रम की शनिवार की छुट्टी थी, वह जानता था कि उसे गा कार्यक्रम में भाग लेने का मौका नहीं मिलेगा, है ना? गा के कार्यक्रम में सभी ने शॉल ओढ़कर कहा, 'पुत्र, समय आ गया है - मत भूलो!' यह कामवासना कब पूरी तरह दूर होगी? यदि इसमें कोई कठिनाई न हो, तो व्यक्ति अपना सारा समय साधना में लगाकर अपनी इच्छा पूरी कर सकता है। वह देवता भी बन सकता है! इसके साथ ही झूठ बोलने, छल करने और असंतुष्टि में व्यर्थ गया समय भी बच जाएगा।
उन्होंने आँखें मूँद लीं।
मंदिर में उपासना करते समय, जंगल में विचरण करते समय, नदी के किनारे शांति से खड़े होते समय, गहरी नींद से जागते समय – यह वासना जो आकाश में भी उमड़ उठती है! उलझे हुए रुई के समान, यह पूरे संसार, पूरे आकाश को बहा ले जाती है। यह शक्ति जो द्रष्टा के क्रोध को भी कुचल देती है, और पूरी पृथ्वी और पूरे आकाश को मुक्त और अमर बना देती है!
भले ही उसे ऐसा लगे कि इसे रोकने के लिए उसे अपना आहार कम कर लेना चाहिए, यह असंभव था। क्योंकि राजसाहब के इस संबंध में नियम थे। गाने के लिए पर्याप्त शक्ति आवश्यक है। यह स्त्री का हुनर नहीं है, जैसे कोमल उंगलियों से रेशों

को रगड़ना! यदि कोई दूल्हा बलवान बनना चाहता है, तो उसे प्रतिदिन अपने दूध में बादाम, खजूर और दानेदार चीनी मिलानी चाहिए, और भोजन करते समय भरपूर घी का सेवन करना चाहिए। इसी प्रकार, वह अपने आहार पर भी ध्यान रखता था। जब दूल्हे के शुद्धिकरण के लिए लिया गया भोजन कामुकता का रूप लेने लगे, तो वह किसे समझाने की कोशिश करे?
वहाँ गए मुझे दो साल हो गए थे। मेरा यह विश्वास और भी मजबूत होता जा रहा था कि वह गीत गाया जा रहा है, तभी यह मुसीबत शुरू हुई। मुसीबत? इसे और क्या कहूँ? घोर उत्पीड़न! क्या मुझे राजसाहेब को इसके बारे में बताना चाहिए? मैं बेहद शर्मिंदा और डरी हुई थी। भूपतराम? वो भी, गु। मैं उनसे इस बारे में कैसे बात कर सकती थी?
जंगल में बनी झोपड़ी के आसपास चरती गायें और बकरियां एक गांव का भ्रम पैदा करती हैं। गांव में कुत्ते अक्सर प्रजनन करते हैं, और भला कौन उन्हें घूरते हुए देखेगा?
मुझे इसका एहसास भी नहीं होता। जब भी कोई महिला मेरे सामने आती है, मेरे दिल में एक अजीब सी अनुभूति होती है।
यह लगातार मजबूत होता जा रहा था, इतना कि उम्र की अवधारणा भी अब प्रासंगिक नहीं रह गई थी।
फिर कभी-कभी, यह सोचकर कि यही हमारी बर्बादी है, मेरे मन में अपराधबोध उत्पन्न हो जाता था। इससे उबरने के लिए, चाहे मैं रात-रात भर मंदिर जाकर ध्यान करता, क्रोध की जगह प्रेम का भाव उत्पन्न होता। जब मैं अंतर्मुखी होकर तपस्या कर रहा होता, एक ओर मंदिर के अनुष्ठान करते हुए प्रेरणादायक दूल्हे गर्भगृह में प्रवेश करते और बीच में मेरे सामने स्थित शिवलिंग भी मेरी कामुकता को उत्तेजित करता! ऋतु: मन आत्म-प्रलोभन से व्याकुल था। हाँ, इससे अधिक अपमानजनक और क्या हो सकता है? लेकिन फिर भी मंदिर बंद है। अगर मैं झोपड़ी में वापस जाऊं तो मुझे डर लगेगा, कहीं राजसाहेब आस-पास कहीं छिपकर मेरे वाद्ययंत्रों को आज़मा न रहे हों? वे हर राग के लिए चेतावनी देते थे। लेकिन मैं इस तूफान में फंसकर रास्ता भटक रहा हूँ!
इस तूफान में कई सप्ताह, अक्सर महीने भी बर्बाद हो जाते थे। ऐसे समय में, रास्ता छोड़कर भागना पड़ता था, कहीं से कुली से चार पैसे लेकर गाँव लौटना पड़ता था! अन्यथा, पेट भरने और घर लौटने का कोई न कोई जरिया ढूंढना ही पड़ता था।

स्वीकार करो। गीत के सिवा कोई और ज्ञान नहीं है। अधिकार प्राप्त करने का कोई और साधन नहीं है।
अगर नहीं, तो मुझे बेटी कौन देगा?
ऐसी भयावह परिस्थितियों से जूझते हुए चू नी प्रकट हुईं।
वह बूढ़ी औरत जो रोज़ बारह बजे खाना लाती थी, उसकी पत्नी। एक दिन वह सिर पर टोकरी रखकर खाना लाई। उसने चावल, दाल, दही और सूजी के छोटे-छोटे बर्तन निकाले और उन्हें थाली में करीने से सजा दिया। जैसे ही मैंने खाना खत्म किया, उसने बर्तन उठाए, फर्श पोंछा और चली गई। उस औरत ने मन ही मन उस लड़की का नाम लिया और पाया कि वह आकर्षक है। मुझे आश्चर्य हुआ कि वह उस लड़की की ओर आकर्षित क्यों नहीं हुई जो कभी-कभार उसके मवेशियों के पास आती थी। उसने स्कर्ट, चोली, नाक में नथ, हाथों में कांच की चूड़ियों में से प्रत्येक में एक चमकदार पीतल की चूड़ी, पैर में नथ, माथे पर समोसा रखा हुआ था। उसकी त्वचा, हालांकि तेल से रंगी हुई थी, मुझसे पांच-छह साल बड़ी लग रही थी। मेरे मन में वह पूरा दिन बिखरी हुई चीजों को समेटने के अलावा और कुछ नहीं कर पाया।
अगले दिन वह वही खाना लेकर आई। मेरी माँ ने खुशी से कहा, 'तुम आ गई! कितना अच्छा! बस कहाँ है?'
‘Na yap yad ge yat ji! मैं खाना लाया और वे जाना चाहते हैं?'
"अगर यह काम करता है!" लेकिन हवा रुक गई, "तुम इसे हर दिन लाओ।"
‘ठंड बढ़ रही है! क्या आपको गवाइबुबा के लिए कुछ गर्म कपड़े चाहिए?’ वह मन ही मन सोच रही थी।
"लेकिन अगर तुम इसे दो मील दूर से नहीं लाओगे, तो यह ठंडा हो जाएगा! इसके बाद तो लाना ही पड़ेगा ना?"
'हे महोदय, कृपया इस खेत में आइए। मुझे अपने पशुओं के लिए कुछ बीज चाहिए।' दिनभर मेरा सिर विचारों से भरा हुआ था। अगले दिन, जब मैं खाने की टोकरी सौंप रही थी, तो मेरा शरीर कांपने लगा। जब मैंने 'चुन्नी–!' कहकर पुकारा, तो मेरी आवाज़ भी कांप रही थी।
‘चुनी, मुझे लगता है, तुम गुस्सा नहीं होगी, है ना?’
‘तुम्हें किस बात पर गुस्सा आ रहा है?’
‘चुनी, तुम समझती हो। मेरा साथ दो। मैं जी नहीं सकती!’ वह फूट-फूटकर रोने लगी। उसका कंधा आंसुओं से भीग गया था।

वह स्थिति समझ गई। उसने मुस्कुराते हुए कहा, 'मैं समझ गई! तुम बड़े हो गए हो! मुझे सब कुछ बताने की क्या ज़रूरत है! चलो पहले खाना खा लेते हैं, फिर देखते हैं!' उसने अपने रुमाल से मेरी आँखें पोंछीं।
नहीं! तुम पहले आओ!
कितनी दयालु हैं वो! उन्होंने कांपते हुए शरीर को शांत होने का समय दिया। फिर वे शांत हुईं, अपनी आवाज़ को संयमित किया और एक शांत लय में बात करने लगीं।
इसके बाद, पूरे दिन, पूरा आकाश अचानक, अस्पष्ट सी चीख के साथ शांत रहा। ऐसा ही लग रहा था। मैंने जो पौधे लगाए थे, वे एक ही बारिश से बच गए, उपजाऊ मिट्टी जंगल की हरी घास से ढक गई, आसमान में ठंडक छा गई, नदी में बाढ़ आ गई, और पूरा इलाका ठंडी हवा से भर गया – ऐसा ही हुआ! पहली बारिश मेरे पूरे शरीर पर पसीने से भीगी हुई थी, जिससे मेरी त्वचा मुलायम हो गई, ऐसा ही हुआ! स्नान समाप्त करने के बाद, मैंने गाना शुरू किया। कौन जाने उस रात बागेश्री कितनी दूर तक चले होंगे! ‘सा नी धा, सा मा धा नी, धा, मा, गरे, सा या’
– छिपी हुई भक्ति और भक्ति में शांति स्वतः ही प्रकट हो गई। मेरा मन सोच रहा था – ‘चु नी, तुम मेरी डफली हो!’
अगले दिन जब वह खाना लेकर आया तो उसने कहा, "चुनी, अब से तुम ही खाना लेकर आओगी!"
‘अरे जी! मैं सुबह से इंतजार कर रहा हूँ!’
फिर भी, झोपड़ी का दरवाजा बंद करते हुए मुझे डर लग रहा था कि अगर राजसाहेब अचानक आ गए तो मैं क्या करूँगी। दूसरे शब्दों में, यह डर निराधार था। क्योंकि राजसाहेब कभी झोपड़ी में वापस नहीं आए। उन्होंने मुझे यह भी याद दिलाया कि उनके भोजन का समय हो गया है और उसके बाद वे सोने चले गए। अचानक मुझे याद आया, बागेश्री जा रहे हैं। मायारात्रि राग। राग का अभ्यास हो चुका है। अब तैयारी करना मेरी जिम्मेदारी है। इसलिए, उनके अचानक मेरे पास वापस आने की कोई संभावना नहीं है।
दो दिनों से उसे सूखी खांसी भी हो रही थी। एक बार मुझे लगा, 'क्या बेसिल को शक नहीं हुआ?'
"चिंता मत करो। मैं इसका ख्याल रखूंगा।"
जब तिचे मिह तीन दिन की थी, तब एक दूसरा लड़का खाना लेकर आया। फिर, जब दिदेक मिह एक बार बैठने आई, तो ऐसा लगा जैसे पेट में ज़ोर का मुक्का लगा हो। उसके

बाद, मैंने सोचा, 'ये कितना बेवकूफी भरा है?' और मैं हंस पड़ी। चू निही ने भी इस बारे में कुछ ऐसा ही कहा था।
मैं पहले ऐसा सोचता था। चू से मिलने से पहले मैंने कभी नहीं सोचा था कि वह बुद्धिमान है या मूर्ख। अब, उससे अपनी तुलना करते हुए, मैं खुद को स्मार्ट और स्टाइलिश महसूस करता हूँ। चू वाकई स्टाइलिश था।
मेरे मन में यह विचार आया, "क्या यही है, क्या यही है, क्या मैं उसके लिए उपयुक्त हूं?" और मैं मन ही मन पलकें झपकाने लगी।
फिर भी, मैं ऐसे विचारों में ज़्यादा देर तक नहीं उलझ सकती थी, और मैं खुद को रियाज की ओर वापस खींच रही थी। वह हर दिन बिना किसी चूक के आती थी, जिससे मुझे बहुत शांति मिलती थी। आजकल मुझे इस बात का डर नहीं लगता था कि कोई आकर मुझसे मिल लेगा। बस, वह देर रात तक नहीं रुकती थी। 'हमें सावधान रहना चाहिए था,' वह जल्दी ही चली जाती।
एक बार मेरे मन में ख्याल आया कि मुझे उसके लिए कुछ खरीदना चाहिए। एक साड़ी, एक दर्जन कांच की चूड़ियाँ, कुछ ऐसा ही। सोने-चांदी के गहनों के बारे में सोचना भी नामुमकिन था। एक बार उन्होंने कहा, 'चुनी, मैं साल में एक बार भी शाकापुर नहीं गया। मेरे पास एक कपड़ा लाने के लिए भी पैसे नहीं हैं। मुझे शर्म आती है!'
मुझे बीज नहीं चाहिए। तुम्हें अभी सीखना है! तुम एक महान गायिका हो, एक महान राजा के दरबार में गाती हो, इसलिए इस थाली में से हीरे और माणिक का हार ढूंढो और मुझे बीज दे दो।
इनमें से एक! क्या आपके पास पैसे हैं? मैं आपको दो या चार दे दूंगा!
चुनी मेरी दोस्त बनी, मेरी प्रेमिका बनी; लेकिन बैठकर शांति से बातें करने का समय नहीं था। वह भी सावधान थी और मैं भी!
चार महीने इसी तरह बीत गए। सब कुछ शांत था और हम डफली बजाते हुए बैठे थे। खाना खाते समय चुनी हंसते हुए बोली, 'मुझे लगता है मैं गर्भवती हूं।'
मैं उलझन में थी, डरी हुई थी और असमंजस में थी; लेकिन वह शांत थी। अब तक हमने अपने रिश्ते को गुप्त रखा था। हम अपनी गर्भावस्था को कैसे गुप्त रख सकते थे? ओह! मैं कितनी मूर्ख थी! मैं डर के मारे सोचने लगी, 'अब मुझे क्या करना चाहिए?'

‘मुझे डरने की क्या ज़रूरत है? ये तो ईश्वर की कृपा है!’ वो हंस पड़ी। लेकिन मेरा डर कम नहीं हुआ। अगर ये बात राजसाहब तक पहुंच गई तो मेरा क्या होगा? कौन जाने मुझे किस तरह की सज़ा भुगतनी पड़ेगी!
लेकिन उसने कहना शुरू किया, 'मेरे पति बहुत खुश हैं। मैं सोच रही थी - आप भी तो कई दिनों से यही सोच रहे थे कि क्या आप ठाकुरजी को अपनी प्रतिज्ञाएँ सुनाने के लिए जीवित रहेंगे या नहीं! यही तो वो कह रहे हैं।'
मुझे भी यही लगता है!' उसे इससे कोई आपत्ति नहीं थी।
"लेकिन यह बच्चा उसका क्यों नहीं हो सकता?"
‘अगर ऐसा था, तो पिछले बारह-चौदह सालों में ऐसा क्यों नहीं हुआ? क्या आपको इस बात का पछतावा होना चाहिए कि आपने मुझे हार और अंगूठी नहीं दी? अगर आप मुझे इतनी बड़ी रकम देंगे, तो मुझे और क्या मिलेगा?’ उनके दिल की कृतज्ञता शब्दों के माध्यम से व्यक्त हो रही थी।
दो दिन बीत गए। अब मेरे मन में एक अलग ही शंका उत्पन्न हुई। क्या वह मुझसे संतान प्राप्ति के इरादे से आई थी? क्या उसने मेरे मन में अपने लिए भावनाएँ जगाई थीं? लेकिन मैं यह व्यक्त नहीं करना चाहता था। अगले कुछ दिनों में, मेरे मन में एक और भावना आई। इस गर्भ से जन्मा बच्चा मेरा होगा; लेकिन
इस पर मेरा कोई अधिकार नहीं होगा। मैं बच्चे को जन्म नहीं दूंगी।
वह उसे बी के पास भेजना शुरू कर देगा। वह अभी भी आती है; लेकिन उसे शारीरिक संबंधों में कोई दिलचस्पी नहीं है। वह मेरी बात सुनती है क्योंकि वह सुनना चाहती है, बस इतना ही। क्या गर्भावस्था का स्त्री के मन पर ऐसा प्रभाव पड़ता है? कौन जानता है! मेरी बेटी, जो मुझसे छह साल बड़ी है, शादी के चौदह साल बाद पहली बार गर्भवती है, इसलिए उसे तो इसका पता भी नहीं है।

६
एक धीमी आवाज़ जो नीरसता को भंग नहीं कर रही थी। नींद हावी हो रही थी। उसने खिड़की का पर्दा खींचकर अपनी आँखें बंद कर लीं। वह सो गई। गहरी नींद। कितनी देर तक? कौन जाने। दिन भर भरता हुआ उसका पेट उसके नीचे था। वह उसी हालत में खाना खा रही थी। वह उसके साथ शारीरिक संबंध नहीं बनाना चाहती थी। अगर वह ज़िद करता, तो वह मना नहीं करती; लेकिन अगर बच्चे को कुछ हो जाता तो? ढोल या घड़े जैसा उसका पेट। उसके चेहरे पर वह मुस्कान।
एक दिन, वह वहाँ बैठी आहें भरते और हँसते हुए बोली, 'मुझे रुकना होगा! मैं रास्ते में दो बार रुकी। दो मील आना-जाना मेरे बस की बात नहीं। हवा तो किसी को भी भगा सकती है।'
इसके बाद गणेशीलाल खाना लाने लगा। एक दिन बी.सी. आया।
मैंने सोचा, 'ये क्या बकवास है!'
कुछ ही दिनों में एक बच्चा होने वाला है!’ यह कहते हुए उसके चेहरे पर खुशी झलक रही थी। एक लड़के का जन्म हुआ। उसे देखने जाना नामुमकिन था।
मुझे नींद आने लगी थी। मेरे पीछे कोई दिखाई नहीं दे रहा था। मैं तुरंत जाग गया। मैंने चारों ओर देखा। कमरे में सन्नाटा था। लगभग सभी यात्री सो रहे थे।
एक दिन वह तीन महीने के बच्चे को लेकर आई। टोकरी से खाने की टोकरी उतारते हुए वह हंस पड़ी, ‘मैं आपको बच्चा दिखाने आई थी! मायावती चिल्ला रही थीं – इतने छोटे बच्चे को इतनी देर तक क्यों ढो रही हो? रुको, महादेव जी इसे अपने पैरों पर उठाकर तुम्हारे पास लाएंगे। अब से मैं अकेले आऊंगी। देखो! क्या तुम्हें मेरा आना दिखाई दे रहा है या नहीं?’
जब उसने बच्चे को अपनी बाहों में लिया तो उसका शरीर कांप उठा। वह कोमलता! उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं थे।
मुझे आपसे कोई जुड़ाव महसूस नहीं हुआ; लेकिन जैसे ही मैंने आपको अपने सीने से लगाया, मुझे एक कोमल, अंतरंग अनुभूति हुई।
मुझे एक दर्द महसूस हुआ। मैंने अपने गाल को हल्के से दबाया। मुझे लगा जैसे मैं मरने वाला हूँ। वही थी जो 'हाँ' कह रही थी।
आप ऐसे क्यों हैं? मायावती कह रही थीं – इस गीत को सुनकर मेरी आंखें चौड़ी हो जाती हैं, मैं इसे सुनती ही रहती हूं, मुझे लगता है मैं गायिका बन

जाऊंगी! मैं डर गई थी, आपको कैसे पता चला? आइए, हम दोनों मिलें और महादेवजी के दर्शन करें।’ शिशु को भगवान के सामने रखते हुए और प्रणाम करते हुए मेरे मन में एक गहरा विचार चल रहा था। उन्होंने कहा, ‘मैंने इसका नाम गिरि धर रखा है। मुझे एक बार इस नाम से पुकारिए!’
अगले दिन वह अकेली आई। उसके बाद से वह अकेले ही खाना लाने लगी। एक तरफ तो मुझे अच्छा लगा। पाँच महीने बाद मेरे दिल का दर्द दूर हो गया। मैं बस उस लड़के को देखना चाहती हूँ।
इसीलिए मेरी मां मेरे पास नहीं आई।
ठीक उसी क्षण, क्या उस लड़की ने नहीं कहा था, 'अब से आपको सावधान रहना चाहिए। युवराज छुट्टी पर है। वह कभी-कभार ही यहाँ अकेले घूमने आता है। मैं उस दिन शक कर लूंगी, उस दिन मैं बस खाना लेकर चली जाऊंगी। ज्यादा हंगामा मत करना। उसे दो महीने का काम करना है।'
मैंने राजसाहब की दो विवाहित बेटियों के बारे में सुना था। मुझे यह भी पता था कि कई वर्षों बाद एक पुत्र का जन्म हुआ था। महल में मुझे इस बारे में कोई जानकारी नहीं थी। भूपातराम से मुझे कुछ कहानियां सुनने को मिलती थीं। चुनी भी सुनाती थी; लेकिन मुझे यह बात पता नहीं थी।
मैंने बोल् को कभी प्रोत्साहित नहीं किया क्योंकि मेरे पास समय की कमी थी और न ही मुझे इसमें कोई दिलचस्पी थी।
जब मैं यहाँ आया, तो मुझे पता चला कि राजकुमार अजमेर महाविद्यालय में पढ़ रहे थे। बाद में भूपातराम ने मुझे बताया कि नाम तो ' महाविद्यालय' था, लेकिन असल में वह 'हाई स्कूल' था। वह राजाओं और महाराजाओं के बच्चों के लिए एक शिक्षण संस्थान था। मैंने बस इतना सुना कि राजकुमार ने वहाँ से अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद विजयनगर चले गए। हालाँकि मैं उनसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक था, पर मुझे यह अवसर नहीं मिला।
एक दोपहर 4:30 बजे, जब मैं रियाज़ में था, तो मुझे बाहर गोली चलने की आवाज़ सुनाई दी। मैं यह सोचकर मंदिर से बाहर आया कि राजकुमार वहाँ होंगे। राजसाहब कभी यहाँ बंदूक नहीं लाते थे। वे कहा करते थे, 'एक गोली की आवाज़ से गायें, मोर, गायें और अन्य जानवर चीखने लगते हैं, और उनका आशीर्वाद पाने में दो-तीन दिन लग जाते हैं!' ये उनके अनुभव से निकले शब्द थे! एक बार वे कमरे में आए और बोले, 'तुम इस सन्नाटे के बीच में बैठ कर डफली बजा सकते हो।
तुम्हें मंदिर से लेकर कांतार तक सभी का आशीर्वाद मिल जाएगा।

वसंत ऋतु की रक्षा करो! पक्षी, मोर और हिरण ऐसे गीत को सुनते हैं! दूसरी लय तक पहुँचते ही नृत्य किया जाएगा।
हाँ, बिल्कुल! लेकिन उन्हें प्रसन्न करने के लिए पर्याप्त पवित्रता आवश्यक है। अगर आप पाँचवें को पहली पंक्ति में रख दें, तो मैं आपको बता दूँ, कोयल ज़रूर सुन लेगी! हम इस तरह अपने दूल्हों की पवित्रता की जाँच कर सकते हैं।’ मैंने भी यह देखा था। उपवन से शुरू करके, हम बहुत धीरे-धीरे ऊपर चढ़े, लेकिन हिरण और मोर डरे नहीं, वे डर के मारे भागे नहीं। इसके विपरीत, कुछ देर तक मुझे उत्सुकता से देखने के बाद, वे फिर से हमेशा की तरह चलने लगे।
वह था।
राजकुमार मंदिर से कुछ दूरी पर खड़ा था। एक सिपाही नदी के किनारे गिरे एक सफेद बाघ को उसके पैरों से उठाकर ले जा रहा था। जंगल में मौजूद अन्य महिलाएं चीखती-चिल्लाती इधर-उधर भाग रही थीं। विदेशी पोशाक पहने, खाकी पैंट और लाल धारियों वाली काली टाई लगाए राजकुमार ने मेरी ओर मुड़कर पूछा, "क्या इस गीत के कारण तुम्हें कोई परेशानी हुई?"
इस 'आप' संबोधन ने मुझे झिझकने पर मजबूर कर दिया, 'नहीं, दरबार!'
तो फिर तुमने यह सब छोड़कर बाहर क्यों आए?
अचानक मुझे ऐसा लगा जैसे कोई मुझे थप्पड़ मारने वाला हो। मैंने ऐसा कुछ नहीं सोचा, जैसे 'मैं तुम्हारी शिकार करने की कला को अपनी आँखों से देखने आया हूँ।' उसने कहा, 'माफ़ करना,' लेकिन मैंने कुछ बेमतलब सा कह दिया, 'नहीं, नहीं! कोई बात नहीं,' जैसे ही वह पास आया, मैंने सैनिक द्वारा दूर से लाए गए बगुले को देखा।
उसने कहा, 'गोली उसके पेट में लगी, है ना?' सिपाही ने भी दांत पीसते हुए कहा, 'दरबारी को गोली लग गई है।'
अरे! वो चूक कैसे सकता था?’ वो हँसा। दोनों चले गए।
इस घटना से मुझे चुनी की बात समझ में आ गई। हमें सावधान रहने की जरूरत है। राजसाहब और युवराज के स्वभाव में बहुत बड़ा अंतर है। युवराज तो सिर्फ शिकारी ही नहीं, बल्कि घुमक्कड़ भी हैं; लेकिन उसके बाद युवराजों का फिर कभी मिलन नहीं हुआ। इसके बाद, इस साल छुट्टियों के दौरान राजसाहब, रानी साहब, दोनों बेटियां, दामाद, सभी लोग गांव गए और यूरोप की यात्रा करके लौटे। इसके बाद, युवराज एक साल तक राजसाहब के संदेश के समय प्रकट होते रहे।

राजसाहेब की मृत्यु की याद आते ही मेरी आँखों में आँसू भर आए। सन्नाटा छा गया, मानो कोई मेरा गला घोंट रहा हो। तैंतीस साल बीत चुके थे। वही गहरा, अनमोल मौन दुःख जो मेरी माँ के देहांत पर मेरे मन में आया था, दुःख से भरे जीवन का दुःख, अपनी ही मिट्टी में प्राणों के बलिदान का दुःख, वही दुःख राजसाहेब की मृत्यु पर भी महसूस हुआ। मुझे अब जाकर इस जीवन का सही मूल्य समझ आया! दुःख में डूबे होने के बावजूद, बार-बार दोहराए जाने वाले इस दुःख की याद ने मेरे हृदय को आँसुओं से भर दिया।
बगल वाली गाड़ी में बैठे यात्री की आँखें चौड़ी हो गईं। मोहनलाल ने खिड़की का पर्दा उठाया और उसकी नज़रें बचाईं। यहाँ तक कि अपनी माँ की यादों ने भी उसे कभी इस तरह रुलाया नहीं था।
राजसाहेब की मृत्यु कितनी अद्भुत थी! मृत्यु के समय भी उन्होंने अपना संयम नहीं खोया। वे आराम से बैठकर किताब पढ़ रहे थे। उन्होंने किताब को पास के तिपाई पर रखा और विश्राम किया, फिर दूसरी कुर्सी पर बैठ गए और अपनी आँखें हमेशा के लिए बंद कर लीं! उनके इस कार्य में मेरा कोई हाथ नहीं था। भूपातराम ने कहा, 'मेरा भी नहीं। आइए, हम उनकी सेवा करें ताकि उन्हें शांति मिले।'
हम दोनों महादेवजी के मंदिर आए। एक निश्चित समय पर मैंने उनके सिखाए रागों का गायन शुरू किया। भूपतराम ने मेरा साथ देना शुरू किया। हमारी सेवा सात दिन और सात रातों तक चली। उन्होंने अपने सिखाए प्रत्येक राग को एक निश्चित समय पर प्रस्तुत किया और हमारी सेवा जारी रखी। हालांकि भूपतराम की प्रबल इच्छा थी कि वे एक महान गायक को राजमहल में आमंत्रित करें और जलसाघर में एक सभा आयोजित करें, लेकिन उन्होंने राजपरिवार के किसी भी सदस्य के सामने ऐसा नहीं किया। किसी ने भी इसका सुझाव नहीं दिया।
मैंने सिर हिलाते हुए कहा, "आप यह सुझाव रानी साहब को दे सकते हैं।"
वह हँसे, 'नहीं। आपको नहीं पता। उन्हें गाने का बहुत शौक है। हर कोई इस गाने को समझता है। राजसाहेब ने ज़ोर दिया कि वे गाना सुनें और सीखें; लेकिन रानी साहब के खून में संगीत के लिए प्रेम नहीं है। राजसाहेब इन गानों पर पैसा बर्बाद करते हैं, वे अन्य संस्थाओं की तरह दूसरे धर्मों में रुचि नहीं रखते, वे बांसुरी बजाकर करोड़ों रुपये नहीं कमाते।'
हनून राजसाहेब से क्रोधित था। उसने अपने बच्चों में भी वही क्रोध भर दिया। यह भरा हुआ है।'

‘राजसाहेब ने अपने पूरे जीवन में अत्यधिक एकांत का अनुभव किया होगा! उन्होंने सार्वजनिक रूप से न गाने का वादा किया था!’
आपने मुझे बिलकुल सही पहचाना! अब आगे आप क्या करने की योजना बना रहे हैं? मैंने इसके बारे में कुछ नहीं सोचा था। मुझे लगा था कि प्रशिक्षण दो-तीन साल और चलेगा। अचानक यह सब हो गया!
मुझे सोने जाना है। तुम्हारा भी यहाँ कोई काम नहीं बचा है। जब राजसाहेब का जन्मदिन आएगा, तो यहाँ तुम्हारा खाना बंद हो जाएगा। शायद तुम्हें चले जाना चाहिए।
वो भी कहा जाएगा। मुझे लगता है तुम्हें माँ के पास जाना चाहिए। अब आगे क्या किया जा सकता है?
आइए विचार करें।
मुझे यह बात भी समझ आ गई थी। अब गुरु जी नहीं रहे। शिवाजी गज के आलोचक गुरु जी के महल में रहते हुए उनका बिना भोजन के रहना उनका अपमान है; लेकिन जाने से पहले मैं चुनी से मिलना चाहता था। इसी वजह से मैं हिचकिचाया और बोला, 'आप जाइए। मैं एक-दो दिन में आ जाऊंगा।'
बारहवाँ दिन समाप्त होते ही वे चले गए। भोजन लाने वाले लड़के के माध्यम से विदाई संदेश भेजने के बारे में सोचते हुए, अगले दिन चुनिचा भोजन लेकर आती हुई दिखाई दी। वह भी राजसाहेब की अचानक मृत्यु से भयभीत प्रतीत हो रही थी। वह तेरह दिनों बाद उनसे मिल रही थी।
‘आज का दिन बहुत व्यस्त था। रोज़मर्रा के काम, मिलने आए लोगों की बातें। एक ही जाति के लोग, एक ही गाँव के लोग। वे आपको आईने की तरह देख रहे थे। खाने के लिए।
अगर मैं नहीं आना चाहता, तो शाकपुर के तबला वादक यहाँ हैं। आज से मैं जरूर आऊंगा।'
उन्हें लगा होगा कि सब कुछ पहले की तरह सुचारू रूप से चलेगा। उनसे विदा लेना मेरे लिए बहुत मुश्किल था। हालांकि मेरे अंतर्मन ने मुझे कई बार चेतावनी दी थी कि मुझे इसमें शामिल नहीं होना चाहिए,
लेकिन, बातों से उसे विदा करना आसान नहीं था। समय बर्बाद किए बिना, मैंने कहा, ‘मेरी प्रिय! मैं अब और यहाँ नहीं रह सकता! महारानी के आदेश से पहले यहाँ से चले जाना हमारा सम्मान है; लेकिन मुझे तुम्हें छोड़ना पड़ेगा!’ यह

कहते हुए मेरा गला भर आया था। वह मेरी बाहों में सिसकती रही। कुछ पल के लिए मैं एक अजनबी की बाहों में था।
उसने कहा, 'तुम सही हो। मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि तुम अंदर जा रहे हो। मेरे पास पाँच एकड़ बाग की ज़मीन है। मैं तुम्हारे लिए वहाँ एक झोपड़ी बना दूँगी। इस मौसम में वहाँ गर्मी नहीं होगी। तुम वहाँ की हवा हो!'
आँखों में उमड़ते आँसू रुक गए, 'चुनी, मैं भी चाहती हूँ कि तुम मेरे मरने तक मेरे साथ रहो! लेकिन मैं एक कलाकार हूँ। खेतों में हमेशा के लिए रहकर गाने का क्या फायदा? मुझे जाना होगा!'
मुझे नहीं पता था कि जाने से पहले मुझे किसी और को अलविदा कहना होगा या नहीं; लेकिन किसी को बताना जरूरी था।
शाम पांच बजे मैं साइकिल से दीवानजी से मिलने गया। मैं उनसे उनके दफ्तर में मिला। उन्होंने मेरा आदरपूर्वक स्वागत किया। मैंने उनसे कहा, 'मैं सुबह जल्दी निकल जाऊंगा। झोपड़ी में पलंग, मेज, चादरें और अन्य सामान हैं। किताबें, हारमोनियम, तबला-तम्बोरा, जैज़ संगीत और बाकी सब कुछ महादेवजी के मंदिर में रखा है। दोहिकाड के छाया ने सुबह-सुबह एक आदमी को ये सब लाने के लिए भेजा था। मैं अपने कपड़े और वो तम्बोरा ले जा रहा हूं जो राजसाहेब ने गंधबंधन समारोह के दौरान आशीर्वाद के साथ मुझे दिया था।'
‘क्या तुम जा रहे हो?’ दीवानजी की आँखों में वास्तविकता और भविष्य दोनों का भाव झलक रहा था। दोनों सब कुछ समझ गए थे। उन्होंने पूछा, ‘आगे क्या सोच रहे हो? कहाँ जाओगे?’
मैं शाकपुर जाऊंगा। अगला वाला!
‘ठीक है। मैं घोड़ागाड़ी भेज दूँगा। कपड़े और डफली लेकर बीस मील का सफर कैसे तय करोगे?’ यह बात भी सच थी। हर साल दसवें दिन, इसी दीवानजी से तीन जोड़ी कपड़े आते थे। पुराने कपड़ों को सहेज कर रखने और दोबारा इस्तेमाल करने की मेरी आदत की वजह से कपड़ों का ढेर भी काफी बड़ा हो गया था।
हमारा विमान जल्द ही जे.एफ.के. हवाई अड्डे पर उतरेगा।
कृपया एक पुल बनाइए—
उसने खिड़की से बाहर देखा। विमान बहुत नीचे उतर चुका था।
महादेव मंदिर में राजसाहेब का संगीत सुनते हुए मैं तुम्हारे भविष्य के बारे में सोच रहा था। मेरी राय में तुम्हारी शिक्षा अब पूरी हो चुकी है।
इसके बाद कोई और शिक्षक तुम्हें लोकगीत नहीं सिखा पाएगा। इसके बाद

तुम्हें खुद अपने गीतों पर ध्यान देना चाहिए और उनमें सुधार करना चाहिए। मेरा एक शिष्य मुंबई में रहता है। उसका नाम बृजनारायण नूर है। मैंने तुम्हें उसके बारे में पहले भी बताया था। बोरीवली में उसका एक छोटा सा घर है। अगर मैं किसी कार्यक्रम में जाता हूँ, तो मैं वहीं जाता हूँ। दरअसल, यह मुंबई का बिल्कुल आखिरी छोर है। काफी दूर है। इसीलिए वहाँ शांति रहती है। एक साधारण कलाकार होने के बावजूद, उसे अपने साथियों से निमंत्रण मिलते हैं। उसे पाँच सौ रुपये, पाँच सौ रुपये, कभी-कभी तो सौ रुपये भी मिलते हैं। तैयारी ज्यादा नहीं होती; लेकिन वह ताल को बखूबी निभाता है और धुन के अनुसार गीत गाता है। इस गीत के साथी के लिए
उनकी उंगलियां मुहम्मद कर्व की उंगलियों जैसी हैं। हालांकि, उन्हें सितार और सरोद बजाने में महारत हासिल नहीं है।
हाल ही में मुझे एक बड़े गायक के साथ गाने का मौका मिला, वो कह रहा था। मैं उसे फोन करके बता दूंगा। दो महीने इसी घर में रुकना। मुंबई के इस संगीत समारोह में उसके जान-पहचान वाले हैं। सुवत को छोटे-मोटे कार्यक्रम मिलने में कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए। अगर सुवत को पैसे न भी मिलें तो कोई बात नहीं। ज़रूरी ये है कि गाना लोगों तक पहुंचे। जैसे-जैसे नाम बढ़ेगा, गांव में कार्यक्रम मिलने शुरू हो जाएंगे। क्या ये तरीका काम करेगा?
अब आगे कौन सा रास्ता बचा था?
'राजसाहेब ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि तुम्हारी अचानक मृत्यु हो जाएगी। उन्होंने तुम्हारे भविष्य के बारे में कुछ नहीं कहा। उन्होंने कहा था कि तुम अगले दो साल तक अपनी पढ़ाई जारी रखोगे।'
उन्होंने भी यही सोचा था। शायद कागज पर पैसे खर्च करने के बाद वे आपको कोई उपहार देंगे।
एक बड़े संगीत सम्मेलन ने आपको मौका दिया होता। आपका नाम रातोंरात पूरे भारतीय संगीत जगत में छा जाता! ऐसा नहीं हो पाया; लेकिन उन्होंने आपको इतना कुछ दिया है कि इसमें कोई शक नहीं कि आप अखिल भारतीय गायक-कलाकार बनेंगे। इसके लिए आपको बस चार दिन इंतजार करना होगा, बस!
भूपतराम राजासाहेबांचंच काम क पाहत होते!
'मुझे बालिग होने के दिन से ही राजसाहेब का सहयोग मिलता रहा है। उन्होंने इस दौरान मेरी चारों बेटियों की आर्थिक मदद की। हर साल दशहरा के अवसर पर वे तीन हजार रुपये देते थे।'

□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□ □□, □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□! □□□□
"□□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□, □□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□□□!" □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□
□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□ □□□□

तीन

१
यह कार्यशाला मैनहट्टन के सेंट्रल पार्क नामक तीस मंजिला इमारत के भूतल पर स्थित एक हॉल में आयोजित की गई थी। उस समय हॉल में कार्यक्रम चल रहा था, इसलिए कार्यशाला को पाँच बजे से पहले समाप्त करना पड़ा। हालाँकि समय सारिणी के अनुसार सुबह नौ बजे का समय निर्धारित था, फिर भी चौकीदार को इससे पहले ही हॉल का ताला खोलने का निर्देश दिया गया था।
हॉल के साथ-साथ चार गायन मंडलियों के लिए भी सुविधा थी। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का प्रमुख रूप।
बीस से साठ वर्ष की आयु के उन छात्रों के लिए छह सप्ताह का अध्ययन कार्यक्रम जो जानकार हैं।
गायन सिखाने का निर्णय लिया गया और अंतिम दिन कला प्रस्तुति का एक दिनभर का कार्यक्रम निर्धारित किया गया। कक्षा में बाईस श्वेत छात्र थे। उनमें से बीस ने सितार और सरोद सीखा था। प्रवीण को सभी प्रमुख रागों का पर्याप्त ज्ञान था, जिनमें उनकी विशेषताएं भी शामिल थीं। उनमें से छह तबला वादन पर प्रभु से अच्छी तरह परिचित थे। उन्हें हारमोनियम में रुचि थी। पहले दिन, प्रत्येक छात्र को पांच मिनट के लिए अपनी तैयारी दिखानी थी, दोपहर में, राजाराम तिपाणी और ओंकार प्रभु का तबला वादन आधे घंटे के लिए होना था, जिसके बाद पंडित मोहनलाल जी द्वारा दो घंटे का गायन होना था।
मोहनलाल का गाना सुनते ही सारे विद्यार्थी उनके प्रशंसक बन गए। देखते ही देखते सब उन्हें गुजी कहकर पुकारने लगे। इनमें से सोलह विद्यार्थी भारत आए थे और उन्होंने कुछ हद तक संगीत सीखा था। बाईस भारतीय विद्यार्थी भी यह विधि जानते थे। इसी वजह से वहाँ मौजूद सभी लोग उनका बहुत आदर करने लगे। बैठने की बजाय सब उनके लिए चाय, कॉफी और दोपहर का खाना लाने को तैयार रहते थे। सुबह आने और शाम को जाने पर सब उनके पैर छूकर प्रणाम करते थे।
इस विवाह में अठारह लड़कियाँ थीं। उनमें से अठारह लड़कियाँ थीं और सोलह लड़के थे। हालाँकि मोहनलाल की नज़र में लड़कियों का विशेष आस्था दिखाना कोई खास बात नहीं थी, फिर भी जब इन लड़कियों ने, इस मामले में भी, ऐसी आस्था के साथ व्यवहार करना शुरू किया तो उन्हें खुशी हुई।

इनमें से एक युवती उसे विशेष रूप से पसंद करती थी। उसकी उम्र पच्चीस से पच्चीस वर्ष के बीच थी।
वह लगभग अट्ठाईस वर्ष की रही होगी। उसका गोरा रंग, सुगठित शरीर, सीधा, आकर्षक चेहरा, नीली आँखें, उनसे निकलने वाली चमक, दीपक जैसी नाक! वाह! धरती की पृष्ठभूमि में उसका शरीर, रात के धुंधले प्रकाश में एक के बाद एक जलते हुए दीपकों की श्रृंखला जैसा प्रतीत होता था।
क्या वह भूपली के उतार-चढ़ाव को अपने व्यक्तित्व का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल करता?
क्या उनका शरीर और चेहरा भूपली की पवित्र छवि को साकार करने के लिए बना था? उनके सिर पर सुनहरे बालों की छह नोकें! उनका शरीर पंचयोति जैसा! उनके शरीर पर रेशम की कोमल साड़ी, गुलाबी झालर, उसी झालर वाली जूँ, उनकी सफेद कलाई पर लाल बिंदीदार कांच की चूड़ियाँ! उन्होंने मुझे हिंदी में बताया कि उन्होंने बनारस के ष्टिसागर पांडा से दो साल तक शिक्षा प्राप्त की थी। हालाँकि उनमें वराश्री और ताल के क्षेत्र में बहुत प्रतिभा थी – दो साल में वह क्या सीख सकती थीं! फिर भी, वह भूपली थीं! उन्होंने मुझे कुछ बताया था; लेकिन पंचों के नाम कहाँ से आए होंगे?
मैं कितनी भाग्यशाली थी! जब मैं गा रही थी, वह ठीक मेरे सामने बैठी थी। ऐसा लग रहा था जैसे मैं खुद से गा रही हूँ, डफली बजा रही हूँ, खुरमंडी पहने हुए, मानो कोई भारतीय महिला खुरमंडी पहने हो! जब मैं गा रही थी, तो मुझे सिर्फ वही सामने दिखाई दे रही थी। उसकी आँखों में सूक्ष्म भाव हर पल चमक रहा था। जैसे ही वह मंच पर आई, उसका पूरा शरीर इतनी सूक्ष्मता से प्रतिक्रिया करने लगा! भूपली, क्या तुम जानती हो कि अगर तुम मेरे सामने न होतीं, तो मैं इतना सुंदर नहीं गा पाती? जब मैं गा रही थी, तो मैंने तुम्हारा पूरा शरीर हीराहार में गंगा में विसर्जित कर दिया। अलग-अलग ऊँचाई के पाँच सूर्य तेजी से चक्कर लगा रहे थे, 'ऐसा ही महसूस हुआ', क्या तुम जानती हो?
न्यूयॉर्क में अपनी दूसरी रात मोहनलाल ने एक आलीशान होटल में बिताई। मुझे बिस्तर पर सोने की बहुत इच्छा हो रही थी। लॉस एंजिल्स समूह से तीन घंटे पहले, कैलिफ़ोर्निया में। वहाँ आठ बज रहे होंगे। अगर प्रभु-टिपानी इस होटल में रुके होते, तो वे कम से कम दो घंटे खेल खेलते। उन्हें बस इतना ही लगता। पैसे बचाओ, भाई! पाँच सौ डॉलर जो वे यात्रा पर खर्च करेंगे, उसमें से दो या तीन डॉलर ही बचेंगे। टिपानी तो अपनी चप्पलें भी लाए थे। मेरी पत्नी

के मामा का घर कहीं दूर है। वहाँ से बहुत से लोग काम के लिए नाव से मैनहट्टन आते हैं। शायद मैं इस दुनिया में अकेला हूँ, मेरा कोई रिश्तेदार नहीं है। रोटी-अनाज का रिश्ता और...
भोजन! तो अगर कोई भारतीय राजा तोराम आता, तो उसके पास खाने के लिए पर्याप्त भोजन होता। मधु के घर में कभी ऐसी समस्या नहीं हुई थी। वह कितना कुशल रसोइया था!
आज सोमवार है। वहाँ आठ बज रहे होंगे। विक्रम घर आ गया होगा। दोनों खाने के लिए बैठ गए होंगे। इससे उसका दुख कुछ कम हुआ होगा। उसके दुख को कम करने का ख्याल ही उसके दिल में छुरा घोंपने जैसा था। मैं समझ गई कि जब कोई दोस्त गुस्सा होता है, तो जीवन में खुशियाँ आ जाती हैं। गुस्सा बढ़ने पर जीवन नीरस हो जाता है। एक हद तक यह भी ठीक है। उसके यहाँ पहुँचने के बाद मैंने उसे फोन नहीं किया। उसे यहाँ का नंबर नहीं पता। ओह! बेचारा! मेरे दिल में दया और प्रेम उमड़ आया।
वह उठा। उसने पी की डायरी खोली और नंबर डायल किया।
‘हाय, गुजी! बहुत बढ़िया! हम आपका नंबर पाने के लिए बहुत कोशिश कर रहे थे!’ विक्रम की आवाज़, ‘अपना नंबर लो और मुझे कॉल करो! मैं अभी करता हूँ।’
इस कारनामे को देखकर मेरे मन में प्रशंसा की लहर दौड़ गई। भारत में कोई ऐसा नहीं कर सकता! एक मिनट के भीतर ही फोन की घंटी बज उठी।
अरे, मैं जाने से पहले आपका फ़ोन कार्ड लेना भूल गया था। मुझे अपना पता बताइए, मैं आपको भेज दूंगा। इसका इस्तेमाल कीजिए। आप कहीं से भी किसी को भी कॉल कर सकते हैं। आप इस कॉल कार्ड से कॉल कर सकते हैं।
बस हिलना-डुलना ही काफी है। बूथ से कॉल करते समय भी सिक्का डालने की जरूरत नहीं है।
ऐसा ही करते रहो। तुम हम दोनों को दुखी कर रहे हो। पूरा घर उत्साहित है। इन अखबारों में तुम्हारे कार्यक्रम की बड़ी-बड़ी तस्वीरें छपी हैं। ओह!
इस विषय पर एक बड़ा लेख आने वाला है! भेज रही हूँ। मधु बहुत परेशान है। पहले
अगर उसे पता होता तो वह उस दिन कार्यशाला में जरूर आती। उससे बात करो। ‘मधु, अगर तुम कार्यशाला में आई होती, तो गु के लिए चार काम करती। इन दो दिनों में तुम्हें किस बात का गुस्सा था?’ विक्रम के घर पर रहते हुए वह किस तरह का अनुष्ठान करती! लेकिन मैं इसके अलावा और क्या कह सकती थी? यह सोचकर

कि विक्रम दूसरे फोन पर सुन रहा होगा, बातचीत को थोड़ा टाल दिया गया। हमने औपचारिक रूप से बात की। फोन रखने के बाद मैं सो गई।
सुबह की शेविंग और नहाने के बाद, जब वो होटल के किराए में शामिल नाश्ता लेने जा रहा था, तभी फोन की घंटी बजी। मधु! सुबह के चार बज रहे होंगे। विक्रम सो रहा होगा। उसने गजा के कमरे से ही फोन किया होगा। कमाल है! क्या पता विक्रम अचानक जाग गया हो और फोन उठा लिया हो? तुम ये बात समझ क्यों नहीं पा रही हो?
यही सोचकर उसने फोन उठाया। एक आवाज आई, 'गुजी, मेरा नाम लॉरेन है। क्या आप मुझे पहचानते हैं?' अमेरिकी लहजे वाली अंग्रेजी। एक महिला की आवाज। आप अठारह रानियों में से हर एक का नाम कैसे याद रख सकते हैं?
"लेकिन मैं इस नाम को नहीं पहचानता।"
मैं आपसे मिलने आया हूँ! मैं होटल की लॉबी से बोल रहा हूँ।
वह मुझे ऊपर बुलाना चाहता था; लेकिन उसे इस देश में कितना समय लगेगा इसका कोई अंदाजा नहीं था, इसलिए उसने कहा, "मैं दो मिनट में वहाँ पहुँच जाऊँगा।" लिफ्ट से बाहर निकलते ही वह लॉबी की ओर मुड़ा और उसे अपने लिंग से गर्म रक्त का प्रवाह महसूस हुआ। जैसे ही उसने यह देखा, कमीज, ब्लाउज और जैकेट पहने एक महिला पास आई और उसे प्रणाम करते हुए झुकी। जी हाँ! यह भूपली ही था! क्या मन में लोगों को एक साथ लाने की शक्ति होती है?
"मुझे कैसे पता चलेगा कि लॉरेन कहीं और चली गई है? अगर भूपली कहीं और चला गया होता, तो मैं उसे तुरंत पहचान लेता!"
उनकी पवित्र आँखों में दिव्य प्रकाश और तारे की चमक फूट पड़ी, और उनके होंठ खुल गए।
"आप मुझे थोड़ा परेशान कर रहे हैं; लेकिन मैं यहां नौ बजे आया था और उसके बाद मैं आपसे बात नहीं कर सकता, इसलिए मैं आपसे मिलने यहां आया हूं।" "क्या हम यहीं बैठें या मेरे कमरे में चुपचाप बात करें?"
आप यही कहने वाले हैं।
‘चलो—’ उन्होंने धीरे से लड़की का हाथ छुआ और उसकी ओर बढ़े। जब वह कमरे में दाखिल हुई, तो सामने रखे स्टूल पर बैठ गई और बोली, ‘मैंने आपके बारे में बहुत कुछ सुना है। बनारस में हमारे गुरुजी मुझे आपके गुणों, आपकी खूबियों, वैवाहिक निष्ठा और विवाह की बारीकियों के बारे में बहुत कुछ बताया करते थे। कल आपका गीत सुनने के बाद से ही मैं आपसे गायन सीखने के लिए उत्सुक

हूँ। मैं युजसा के एक गाँव के स्कूल में संगीत शिक्षिका हूँ। आपने अटलांटिक सिटी के बारे में तो सुना ही होगा। जुए के लिए अमेरिका का सबसे मशहूर शहर!’
यहां पास में ही लेसेट हिल नाम का एक गांव है, जहां मैं छह महीने पहले आया था।
मैंने कार्यशाला के लिए पंजीकरण नहीं कराया था; लेकिन जैसा कि उम्मीद थी, पिछले छह महीनों में मैं यहाँ छह सप्ताह रहने के लिए आवश्यक धन नहीं जुटा पाया हूँ। मैंने एक मित्र से पैसे लेने की कोशिश की, लेकिन वह भी असफल रहा। यह मैनहट्टन बहुत महंगा है। मेरे पास यहाँ केवल दो दिन रहने के लिए ही पैसे हैं। यदि आप आयोजकों से बात करके मेरे रहने की व्यवस्था कर दें, तो इतना ही काफी होगा। खाने-पीने का खर्च मैं स्वयं उठा लूँगा।
उसने उसकी तरफ देखा। उसे उस पर दया आई। उसने कहा, 'देखो, इस कमरे में
मैं अकेला रहता हूँ। यहाँ दो बिस्तर हैं। मैंने इन्हें किराए पर लिया है। अगर आप चाहें तो यहाँ रह सकते हैं। मैं आपका किराया दे दूँगा। मैं आप जैसे छात्र को खोना नहीं चाहता।'
बोलने के बाद उसने सोचा, "क्या हम जल्दी में नहीं थे? अगर उसे अपमानित महसूस हुआ तो क्या होगा?"
लेकिन वह धीरे से हंस पड़ी, "गु जी, आप दोनों एक-दूसरे की भावनाओं को नहीं जानते। चलिए छह सप्ताह तक एक-दूसरे को मनाने की कोशिश करते हैं; क्यों नहीं?"
छह सप्ताह के लिए भोजन और आवास का अनुमानित खर्च कितना होगा?
"इतने बड़े होटल की कोई ज़रूरत नहीं है। एक साधारण होटल ही चलेगा। दो हज़ार डॉलर मेरे लिए काफ़ी होंगे!"
वह उठा। उसने अलमारी का दरवाजा खोला, अपना बैग खोला और विक्रम द्वारा जाते समय बैग में दिए गए पैसों में से दो हजार डॉलर निकालकर अपने हाथ में रख लिए।
हनाला ने कहा, 'मैं तुम्हें यह विशेष सुलेख कला प्रदान करूंगी; लेकिन स्कूल को अकेला छोड़ दो।'
मत जाओ!
एक पल भी सोचे बिना उसने पैसे लिए और कहा, "मैं इसे उधार ले रहा हूँ। कभी नहीं।"

मैं इसे कुछ समय बाद लौटा दूँगा। किसी संगठन से वित्तीय सहायता प्राप्त करना किसी व्यक्ति से प्राप्त करने से भिन्न होता है! यह थोड़ा मुश्किल लग रहा है। कार्यशाला में आपको एक सहायक की आवश्यकता होगी।
अगर आप इसके लिए मेरा नाम सुझाते हैं, तो मुझे कुछ पैसे मिल सकते हैं। अगर ऐसा होता है,
मैं आपके पैसे मैनहट्टन लौटा दूंगा।
उन्हें लॉरेन का गर्व पसंद था। कार्यशाला में किसी फुर्तीले सहायक की कोई आवश्यकता नहीं थी। लॉरेन की ग्रहणशीलता उत्कृष्ट थी। अंग्रेज़ी पढ़ाने के साथ-साथ, वह ज़रूरत पड़ने पर पश्चिमी संगीत के संदर्भ भी देती थीं। एक स्कूली शिक्षिका के रूप में उनका अनुभव यहाँ काम आया। राग की धुन समझाने के बाद, संगी अगले दिन शिक्षक को तंबू बजाकर उसका प्रदर्शन करती थीं। अगर शिक्षक कोई बात बताते, तो वह छूटे हुए तार को उठा लेती थीं। कभी-कभी वह किरकोल अलापी भी बजाती थीं। बनारस में कई संगीत नाटक देखने के कारण, वह शिक्षक की सही जगह जानती थीं। गायन में भी वह दूसरों से चार कदम आगे थीं। एक बार जब वह हारमोनियम बजा रही थी, तभी एक लड़का आगे आया और तंबोरा बजाने लगा। उसके सामने बने अर्धवृत्ताकार स्थान में भी उसे बैठने की जगह नहीं मिली। परिणामस्वरूप, उसे एक कोने में बैठना पड़ा।
उस दिन गुजी को भी गाने में मजा नहीं आ रहा था। वह देर से भी आया और जल्दी भी।
कार्यक्रम चालीस मिनट में समाप्त हो गया। सब लोग जाने लगे। उसने आँखों के इशारे से लॉरेन को रुकने को कहा। जब कायशेल दफ्तर में आई, तो वह हँसते हुए बोली, 'देखा? आज मेरा गाना कितना बुरा था?'
उसने कुछ नहीं कहा।
उसने स्वाभाविक रूप से सोचा, "इसके लिए कौन जिम्मेदार है?"
उस आवाज में गुस्सा था।
उसने उसे घूरकर देखा और सोचा, "सचमुच?"
उसने कोई जवाब नहीं दिया। वह आगे बढ़ा, अपने दोनों हाथ उसकी गोद में रखे और ‘माफ़ करना! माफ़ करना! मुझे माफ़ कर दो, गु जी—’ उसने उसके होंठों को चूमना शुरू कर दिया।
लंबे चुंबन के बाद, वह हँसते हुए बोला, "चलो! होटल चलते हैं, माँ।"

अगले दिन, उन्होंने अपना मुख्य काम इस कमरे में स्थानांतरित कर दिया। उन्होंने दो सिंगल बेड वाले कमरे को डबल बेड वाले कमरे में बदल दिया, और मेरी माँ ने अपना सामान भी यहाँ रख लिया। हम इस बात की शिकायत नहीं करना चाहते कि हम एक ही कमरे में रह रहे हैं, अगर कोई करेगा तो हम नाराज़ हो जाएँगे।
नहीं, उन दोनों ने फैसला किया। वे यह भी जानते थे कि इस देश में कोई भी इस पर आपत्ति नहीं करेगा; लेकिन कार्यशाला में बाईस भारतीय मौजूद थे। सितंबर और अक्टूबर के बीच, वाशिंगटन, बोस्टन और शिकागो में भारतीय टीमें कार्यक्रमों के आयोजन के लिए एक-दूसरे से संपर्क कर रही थीं।
बीस साल पहले, मनोहरी दास की संगति में, मैंने अपने जीवन में पहली बार एक भावुक प्रेम संबंध का अर्थ समझा। नाम, पैसा, पत्नी, बच्चे - सब कुछ त्यागकर मैं दिल्ली गया और स्वयं को उनकी सेवा में समर्पित कर दिया, और पहली बार मैंने प्रेम के इस स्तर तक पहुँचने का अनुभव किया। उसके बाद, किसी भी रिश्ते ने मुझे ऐसे गहरे और एकाग्र प्रेम का अनुभव नहीं कराया! उसके बाद कोई भी रिश्ता इस स्तर तक नहीं पहुँच सका। जीवन में कभी-कभी जो होता है, वह चालीस की उम्र में होता है! अब ऐसा संभव नहीं है। अब, जब मैं साठ की उम्र में प्रवेश कर रहा हूँ, तब भी यह उनतीस वर्षीय सुंदर स्त्री उतनी ही शिद्दत से प्रेम करती है। क्या बंधन है! केवल एक नर्तकी ही इस तरह का मजबूत, स्त्रीत्वपूर्ण बंधन रख सकती है! पत्थर और मिट्टी में काम करने वाली कठोर काया वाली स्त्री के लिए यह संभव नहीं होगा। बिना किसी शारीरिक प्रशिक्षण के किसी स्त्री की बाहों में इतनी प्रसन्न रहने वाली स्त्री का ऐसा होना असंभव है! शरीर के हर हिस्से का हर इंच एक अलग राग है और एक अलग
नृत्य करते समय नर्तक की अंतर्निहित भावनात्मकता की कला!
चाहे मैं इस कलाकृति को श्रद्धा भरी निगाहों से कितना भी देख लूँ, मेरा मन तृप्त नहीं होता। इस शरीर को केवल सुख की इच्छा से देखना असंभव है, इसे छूना तो केवल पूजा है! उसके बाद यह भावना मेरे मन में कभी नहीं उठी। लेकिन लॉरेन की उपस्थिति में यह भावना फिर से जागृत हो गई है!
बाद में मैंने सोचा, दो प्रेमों की तुलना करना गलत है। दो रागों की तुलना करना ऐसा है जैसे किसी एक राग की तुलना दूसरे कलाकार से करना, जिसमें एक राग बेहतर और दूसरा बदतर बताया जाता है; लेकिन इन सभी गीतों में इस स्तर की सहजता क्यों नहीं होनी चाहिए? कारण चाहे जो भी हो, भारतीय गीतों में ऐसा

बंधन बहुत कम देखने को मिलता है। उनकी माँ फ्रांसीसी थीं और अब कनाडाई हैं, और उनके पिता मूल रूप से अंग्रेज हैं। वह कहती थीं कि उनके विचार अपनी माँ से मिलते हैं। वह हर दिन नियमित रूप से अभ्यास करती हैं। उनके हर हिस्से में सामंजस्य देखकर ऐसा लगता है मानो राग को सामंजस्यपूर्ण ढंग से विस्तारित किया जा सकता है। एक ऐसा बंधन जिसमें कठोरता का कोई नामोनिशान नहीं, उच्च और निम्न स्वर जो लय बनाते हैं, एक ऐसा बैंड जो अनावश्यक स्थानों पर भी सही मात्रा में सार समेटे हुए है। इस कौशल से वह कितनी सहजता प्राप्त करती हैं! उन्हें समझने के लिए अंग्रेजी की भी आवश्यकता नहीं है। वह अक्सर कहती हैं, 'गु जी, अंग्रेजी बोलने की कोशिश मत कीजिए। हिंदी में बोलिए। भले ही आप शब्दों को पूरी तरह से न समझें, अर्थ तो समझ ही जाएँगे।' यह अनुभव उन्हें भी हो रहा था! प्रेम में भाषा गौण होती है। भावनाएँ सागर जितनी विशाल होती हैं।
तुम्हारी वो नीली आँखें ही मुझे कामयाब बनाने के लिए काफी हैं! वाह! भूपली, तुमने तो मुझे तुमसे मिलने की तीव्र इच्छा जगा दी।
तुम इसे लाए और यहीं छोड़ गए!
कैलिफोर्निया में आयोजित कार्यक्रम की सैन फ्रांसिस्को और सैन जोस के अखबारों में भी खूब प्रशंसा हुई। अखबारों में छपी खबरों को पढ़कर लॉस एंजिल्स के कलाकारों ने भी कार्यक्रम की मांग की। अगला कार्यक्रम हर शनिवार और रविवार को निर्धारित किया गया। इस शुक्रवार की रात वे शिकागो के लिए उड़ान भरेंगे। शनिवार को वे शिकागो में और रविवार को डेट्रॉइट में प्रस्तुति देंगे। अगले शनिवार को वे बाल्टीमोर जाएंगे, रविवार को वाशिंगटन डी.सी. और शनिवार शाम और रविवार सुबह लॉस एंजिल्स में प्रस्तुति देंगे। आखिरी शनिवार को वे कार्यशाला में प्रस्तुति देंगे।
‘पंडितजी, हम हर कार्यक्रम के लिए कितना भुगतान कर रहे हैं, इस पर विशेष ध्यान न दें। अब हमारी बस यही अपेक्षा है कि लोग समझें कि आप यहाँ आ रहे हैं। हमारी योजना है कि लोग हर ग्रीष्मकाल में आपके दौरे का आयोजन करने की मांग करें। अरे, हर ग्रीष्मकाल में कुछ बेकार कलाकार यहाँ आते हैं और आसानी से बीस-तीस हजार डॉलर कमा लेते हैं! इसके बाद तो आप बहुत बड़े बन जाएंगे! इसके बाद चिंता मत कीजिए। मैं सब संभाल लूंगा!’ अमेरिका भर में कार्यक्रम आयोजित करने वाले पटेल की यह बात बिलकुल भी अतिशयोक्ति नहीं है। उनके लिए हर साल पचास हजार डॉलर कमाना आसान था।

आयोजक कह रहा था, हर जगह कलाकारों को ले जाने और वहाँ स्थानीय कलाकारों का इंतज़ाम करने में बहुत खर्च आता है। वाह! हफ्ते में दो दिन भूपली क्यों छोड़ें? अरे! ये बेवकूफ लोग अच्छा कार्यक्रम देखना चाहते हैं और मुख्य कलाकार के विचारों को पीछे छोड़कर आज़ाद होना चाहते हैं! आखिर में उसने पट्टाच से कहा, 'चलो, हम दोनों के साथ यात्रा करने और रहने का इंतज़ाम करते हैं। इसका खर्च हमारे मानदेय में से काट लेते हैं!'
आयोजकों ने बस अपनी भौंहें चढ़ाईं, इतना ही। वे भी पिछले दो दशकों से अमेरिका में रह रहे थे।
इसीलिए उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया।
श्रोताओं ने भी उनकी भूमिका को पहचान लिया। सिक्का की आकर्षक साड़ी, उनका लंगोट, कांच की चूड़ियाँ, बीच से मांग निकाली हुई सुनहरी बालियाँ, माथे पर दीपक के आकार का टीका, दोनों कानों में सफेद पत्थरों की चमकदार बालियाँ, खुरमंडी के साथ जमीन पर बजाया जाने वाला डफ, बीच-बीच में गाए जा रहे गु को विराम देते हुए, गाने को और अधिक रंगीन बनाने के लिए जितना संभव हो उतना मधुर स्वर जोड़ना - श्रोताओं में मौजूद भारतीय और श्वेत अमेरिकी श्रोता दोनों ही उनकी भूमिका से बहुत प्रसन्न थे। कुछ भारतीयों का यह भी मानना था कि अमेरिका में आए दो सप्ताह के भीतर इस तरह का प्रशिक्षण प्राप्त करने वाली गायिका के गीत उतने ही अद्भुत होंगे। लॉस एंजिल्स में सुबह नौ बजे शुरू हुई यह बैठक दोपहर दो बजे समाप्त हुई।
सभी लोग हँसे और तालियाँ बजाने लगे। मोहनलाल, जिन्हें "कसात" शब्द का सही अर्थ नहीं पता था, वे भी हँसे और बोले, "धन्यवाद, धन्यवाद।" पुहाहा ज़ोर से हँस पड़ीं। कार्यक्रम के बाद, उन चारों को दोपहर के भोजन के लिए हवाई अड्डे ले जाया गया। छह लोगों की उड़ान थी। उन्हें तीन घंटे का सफर करना था। नोट और प्रभु मुहम्मद दूसरी तरफ बैठे थे।
जब दोनों एक दूसरे के बगल में बैठे थे, भूपली सोचने लगी, 'तुम ऐसा क्यों कह रहे हो? क्या तुम्हें पता है कि वह क्या कह रहा है?'
‘कब? कौन?’
उसने बिना सोचे-समझे कहा, ‘राजा और राजकुमार क्या होते हैं? वे एक ही हैं। समझे?’ उसने एक राजा और एक रानी बना दी! उसे यह कहने का अधिकार किसने दिया? लेकिन तुमने तो ऐसा कहकर अपनी सहमति दे दी! जनता का क्या? उन्होंने तो ढोल बजाए!’

हालांकि वह इस बयान की बेबाकी को समझ गया था, फिर भी उसे गुस्सा नहीं आया। मुझे दिल से बहुत कुछ महसूस हुआ। पूरी बैठक में उनके रिश्ते को स्वीकार किया गया था।
विमान ऊँचाई पर उड़ने लगा और काँपने लगा। भूपली झपकी लेने लगी। उसने कंधों पर भार डाला और सो गई। उसने वही साड़ी और दुपट्टा पहना हुआ था। उसके माथे पर जलता दीपक मशाल की तरह चमक रहा था। उसके सफेद बाल कानों में झिलमिला रहे थे। वह बाईं ओर बैठी थी। नारायण की लम्मी या शंकर की पवित्रा की तरह! गीत के दौरान भी वह थोड़ा पीछे बाईं ओर बैठी थी। यह सच में मेरा संगीत कार्यक्रम है - नहीं नहीं। वह शब्द क्या है? मज़ाक! तीनों देवियाँ हमेशा पुरुष देवताओं को सफलता दिलाती हैं! इसीलिए अमेरिका में ये संगीत समारोह भी सफल हुए हैं। इस भावना से उसका दिल धड़कने लगा। उसने सोचा, उसे उनके सामने बैठकर लम्मी, सरस्वती और राधा की मूर्तियाँ बनानी चाहिए!
वह गहरी नींद में सो रहा था। वह खिड़की वाली सीट पर बैठा था, इसलिए बाहर देख भी नहीं पा रहा था। समय बिताने के लिए उसने अपने बैग से एक अखबार निकाला। लॉस एंजिल्स टाइम्स ने अभी-अभी इसी पन्ने पर एक खबर छापी थी। लॉस एंजिल्स के पास हंटिंगटन बीच के रहने वाले जिम हैमेट नाम के एक भाग्यशाली व्यक्ति ने जुआ खेलने के लिए अटलांटिक सिटी की उड़ान भरी। उसने पहले ही खेल में दस लाख डॉलर जीत लिए। दूसरा खेल खेले बिना, उसने पैसा बैंक में जमा कर दिया और ट्रेन से यात्रा करने के लिए अपने गृहनगर लौट आया। कभी-कभी वह ड्राइविंग टेस्ट देने के लिए लास वेगास जाता था। अटलांटिक सिटी की यह उसकी पहली यात्रा थी। और इसी तरह कहानी आगे बढ़ती है।
खबर पढ़कर मोहनलाल बहुत प्रभावित हुए। क्या गजब की किस्मत है! उन्होंने खबर बार-बार पढ़ी। उन्होंने अटलांटिक सिटी के बारे में बहुत कुछ सुना था।
न्यूयॉर्क से यहाँ के लिए सीधी बस जाती है।
हाँ। हमें आने-जाने के लिए सामूहिक टिकट पहले ही बना लेना चाहिए था।
समुद्र के किनारे जुआरी।
लोगों की लंबी कतार लगी है। वहां लाखों नहीं, करोड़ों डॉलर का जुआ खेला जाता है। बसों की जगह भोजन उपलब्ध कराया जाता है। न केवल अमेरिका से, बल्कि दुनिया भर से अमीर लोग यहां अपनी किस्मत आजमाने आते हैं। अगर आप मुंबई आते हैं, तो
अटलांटिक सिटी की यात्रा के बिना अमेरिका की यात्रा पूरी हो जाती।

[illegible]!

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

२
आधी रात को वह मैनहट्टन के बस स्टेशन से बाहर निकला। कड़ाके की ठंड उसे पहले ही लग चुकी थी। वह होटल पहुंचा और घंटी बजाई। लॉरेन जाग उठी और उसने दरवाजा खोला।
‘तुम कहाँ चले गए थे? मैं दिन भर इंतज़ार करते-करते थक गया हूँ। तुम्हारा पूरा शरीर कितना ठंडा है? अच्छा है ना?’
मैं अटलांटिक सिटी गया था। मेरे पास कोच स्टेशन से होटल तक टैक्सी का किराया नहीं था।
‘हे भगवान! तुमने कितना कुछ खो दिया?’
‘तेरा.’
'एक सौ?'
‘अंहं! हजार!’
‘हे भगवान! तुमने इतना पैसा क्यों लिया? मुझे लगता है कि योजना सुबह ही तय हो गई थी। अगर मुझे उस समय पता होता, तो मैं तुम्हें जाने नहीं देता। कम से कम तुम्हारे साथ तो आता। छोड़ो, प्रिय! जो पैसा चला गया है, उसकी चिंता करने की कोई बात नहीं है। लगता है तुमने पूरे दिन उपवास रखा है। ऐसे में भी तुम्हें बाहर कुछ नहीं मिलेगा। रुको—’ उसने इधर-उधर पानी का स्रोत ढूंढते हुए कहा, और चावल के कुछ नरम दाने निकालकर बाद के लिए रख लिए।
वह हँसते हुए बोला, ‘चिंता मत करो। मुझे खोए हुए पैसों की परवाह नहीं। आदमी पैसा कमाता है, पैसा आदमी को नहीं बनाता। मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता!’ उसकी बेफिक्री गायब हो गई और उसकी आँखों में आँसू भर आए। उसने उसे गले लगाते हुए कहा, ‘ओह! मेरी जान—’ रोने और थोड़ा राहत महसूस करने के बाद, वह हँसते हुए बोला, ‘चलो चलें! मैंने इसे इस देश में कमाया, यहीं खो दिया। पहले मैं गर्म पानी से नहाऊँगा। बाद में बिस्कुट खाऊँगा।’
सुबह नहाने और कपड़े पहनने के बाद, उसने सोचा, "क्या आपके पास कुछ अतिरिक्त पैसे हैं?"
‘जी हाँ। ये रहा। ये चौदह सौ रुपये हैं। मैं यहाँ रहने आई थी और मैंने इसे बचाकर रखा था। मैं इसे आयोजकों को देने वाली थी। अगर मैं दे देती, तो यह पाँच अंकों की रकम होती!’ वह हँसी।

‘लेकिन तुम्हें अपने गृहनगर वापस जाकर पैसे कमाने होंगे, है ना?’ उसने चार सौ डॉलर वापस देते हुए कहा। उसने ‘धन्यवाद’ कहा और पैसे वापस ले लिए। दोनों ने हिम्मत दिखाई। हमेशा की तरह वह अपने पैसे लेकर उसके पास आई और बोली, 'अटलांटिक सिटी जाकर सब कुछ गंवाने वाले आप अकेले नहीं हैं। मैं दो बार वहां जा चुकी हूं। मुझे पैसों की सख्त जरूरत थी। मैंने एक दोस्त से पैसे उधार लिए थे। हम दोनों ने हर बार सैकड़ों डॉलर गंवाए। ये एक बेतुकी उम्मीद है कि अगर किस्मत अच्छी रही तो मुझे बहुत सारा पैसा मिल जाएगा!' उसने उसकी ओर देखा और कहा, 'धन्यवाद।' थोड़ी देर बाद उसने कहा, 'लेकिन
मैं इसलिए नहीं गया क्योंकि मुझे पैसों की जरूरत थी।'
"क्या आप अपने पास मौजूद इन लाखों डॉलर को भुनाने की उम्मीद कर रहे थे?" उसने उसे विमान में पढ़ी खबर के बारे में बताया। यह सुनकर वह हंस पड़ी। ‘ये वे लोग हैं जो ये कहानियां गढ़ते हैं। कभी-कभी ये झूठी होती हैं। अगर किसी को थोड़ी सी भी रकम मिल जाए, तो उसे बहुत ज्यादा प्रचार दिया जाता है।’
इस पर उन्होंने अपना सिर भी हिलाया।
काम में एक अवसर देखकर उसने अपने शिक्षक को सब कुछ बता दिया। उसने कहा, 'अगर मैंने उसे पैसे अपने पास रखने के लिए दिए होते, तो वह उन्हें सुरक्षित रूप से मुंबई ले आता।'
'हां, लेकिन मेरी हार के लिए आप ही जिम्मेदार हैं! अगर मैंने हर दिन दो मैच खेले होते, तो मैं यहां तक नहीं पहुंच पाता!'
‘मुझे कोई आपत्ति नहीं है। मेरे रिश्तेदारों को दो घंटे देर होने से कोई परेशानी नहीं होगी। इसके विपरीत, आप निजता चाहते हैं और अपने साथी के साथ भाग जाते हैं!’ उसने अपनी हंसी दबाते हुए गंभीरता से हँसा।
मोहनलाल बेहद खुश थे।

चार

१
प्रभु बफेलो में अपने चचेरे भाई के घर पर ठहरे हुए थे। वे वहाँ एक और सप्ताह रुकने की योजना बना रहे थे। इसलिए तिपानिस और मोहनलाल भारत के लिए रवाना हो गए। चूंकि दोबारा मिलने की संभावना बहुत कम थी, और चूंकि वे दोनों जानते थे कि उन्हें फिर कभी एक साथ एक महीना बिताने का मौका नहीं मिलेगा, इसलिए मोहनलाल और भूपली ने हवाई अड्डे पर एक-दूसरे को गले लगाकर और देर तक चुंबन करते हुए विदाई ली। उन्हें हवाई अड्डे तक छोड़ने आए भारतीय, गीत सुनकर भावुक हो गए और उन्होंने अपनी भौंहें ऊपर उठा लीं।
विमान में चढ़ते ही टिप्पानीस ने अपनी जेब से ताश के पत्तों का एक जोड़ा निकाला। मोहनलाल ने सोचा कि जुदाई को भुलाने का यह अच्छा तरीका है, इसलिए वह बैठ गया। उसे पता नहीं था कि कितने पैसे लगेंगे। उसने हमेशा तय किया था कि वह पॉइंट्स पर पैसे खर्च करेगा और जीती हुई रकम से चाय-नाश्ता करेगा। इसी वजह से, जीती हुई रकम का कुछ हिस्सा हारने वालों को भी मिल जाता था। अगर वह पूरे दिन खेलता और हार भी जाता, तो भी उसकी रकम बीस-तीस रुपये से कम नहीं होती। अब भी, वह हिसाब-किताब रखकर ही खेलना शुरू करता था। एक पारी खेलते-खेलते खाना आ गया।
मोहनलाल के मन में यही बात आई। उसने सोचा, 'तो? तुम्हें घर ले जाने के लिए कितने पैसे मिलेंगे?'
"आप चाहे जितना भी लें, इससे कम ही लेंगे!"
‘ये कैसे? तुम्हारी – तुम्हारा मतलब क्या है, हम्म – ट्यूशन फीस तीन हज़ार तीस डॉलर थी। ये सारा पैसा रिश्तेदारों के यहाँ काम करके बचा होगा! गाड़ी का खर्च तो छोड़ो, वो पाँच डॉलर था!’ मोहनलाल हिसाब दिखाने लगा। इन दोनों के बीच हमेशा ऐसी ही गपशप चलती रहती थी, इसलिए कमेंट करने वाले ने भी सोचा, ‘तुमने इस लड़की पर कितना पैसा खर्च किया?’
"तुम उस लड़की को क्यों फोन कर रहे हो? क्या तुम्हें उसका नाम नहीं पता?" 'जी हां, लॉरेन स्मिथ।'
मैंने इसे एक नाम भी दे दिया है। देखते हैं मैं इसे पहचान पाता हूँ या नहीं! अगर पहचान लिया तो मैं तुम्हें दस पैसे दूंगा!

‘तुमने इस पर डॉलर खर्च किए और अब मुझ पर पैसे लगा रहे हो? ये क्या है?’ ‘तुम्हें पहचानना नामुमकिन है। लाखों बार कोशिश करो! मुझे जाने दो, मैं तुमसे कहता हूँ। भूपली!’
वाह! क्या आपने इसका नाम इसकी आत्मा को देखकर रखा है, जो दिव्य से भयावह की ओर उठती है?
‘ये क्या है! इसे तो सिर्फ एक कलाकार ही समझ सकता है!’
रिश्ते में जो भी बातें सामने आती थीं, उन सब पर टाइटनी से बात करना नामुमकिन था। कभी-कभार, जब वो अंतरंगता के मूड में होते, तो किसी सतही विषय पर मज़ाक करने लगते, बस इतना ही। टाइटनी को पूरा यकीन था कि वो दूसरों के सामने इस बारे में बात नहीं करेंगे। हालाँकि टाइटनी खुद इसमें शामिल नहीं थे, लेकिन वो इन बातों को नीचा नहीं समझते थे और न ही मोहनलाल की तारीफ़ करते थे। फिर भी, उन्हें यह अनुभव था कि अगर वो इस बारे में मज़ाक करते, तो पंडित मोहनलालजी खुशी के आँसू बहा देते थे। वो मज़ाक करते समय एक सीमा पार न करने का खास ध्यान रखते थे।
‘मैंने किसी भी चीज़ पर बहुत पैसा खर्च नहीं किया। मैंने बस खाया-पिया और साढ़े चार हफ्ते वहीं रहा, बस इतना ही। अगर मैं गाने में रुचि रखने वाली लड़की के लिए इतना भी नहीं कर सका, तो मैं किस तरह का कलाकार हूँ?’
लेकिन देखो! ये लड़कियां – अगर उन्हें छात्रों के साथ यौन संबंध बनाने हैं
– तो वे खुद तुम्हारे पास आती हैं! कोई हमारे पास नहीं आता।’
‘क्या कला प्रेमियों का किसी रचनात्मक कलाकार की ओर आकर्षित होना स्वाभाविक नहीं है?’
'बस इतना ही? गायक इतना रचनात्मक नहीं है और हारमोनिका वादक इतना रचनात्मक नहीं है, आपको ऐसा क्यों कहना चाहिए?'
"तुम्हें दूसरे हारमोनियम वादकों की चिंता क्यों है? तुम्हें पता है कि मैं तुम्हारे बिना गा ही नहीं सकती!"
यह सुनकर उन्होंने यह भी कहा, ‘भूपली से आपको कितना भी मिल जाए, मुझे परवाह नहीं। क्योंकि मैं वैसा नहीं हूँ; लेकिन जो भी खबर मेरे कानों तक पहुँचती है, मुझे उसे समाचारों में देखना ही पड़ता है। वरना, यह दोस्ती का धोखा होगा।’
'क्या चल रहा है?'

इसमें कोई शक नहीं कि अमेरिकी श्रोता आपके गीतों के दीवाने हैं। वे हर गर्मियों में अमेरिका भर में आपके कार्यक्रम के दौरे की योजना बनाने में बहुत रुचि रखते हैं। इस समय बहुत से लोग आपसे मिलने और आपसे सीखने के लिए उत्सुक हैं। इस देश में गीत कार्यक्रम केवल शनिवार और रविवार को ही होते हैं। बाकी पांच दिनों में आपके छात्र होते। वे आपको यह बताने के लिए बहुत उत्सुक रहते हैं कि वे इस समूह से कितना सीखते हैं, पंडित मोहनलाल से कितना सीखते हैं। यह समूह न केवल आपके गीतों को घर-घर ले जाकर भारतीय महिलाओं का मनोरंजन करता है, बल्कि ऐसे लोगों का एक समूह भी तैयार करता है जिन्हें अपने गीतों पर गर्व है। वे डॉलर में अच्छी-खासी फीस भी देते हैं। आप इस गांव में एक बोर्ड लगाकर एक बड़ा कार्यक्रम आयोजित करते हैं। आप यहां हर साल दो से ढाई महीने काम करके पचास हजार डॉलर से अधिक कमा सकते हैं। हर साल भारत से कलाकार यहां आते हैं और इसी तरह पैसे कमाते हैं। जब वहां गर्मी होती है, तो यहां की हवा भी असहनीय होती है। इस घर की नींव इसी साल रखी जा सकती थी; लेकिन आपकी निजता में दखल दिए बिना आपके पास कौन आएगा? मैंने इस तरह की बातें हर जगह सुनी हैं।
मोहनलाल को भी थोड़ी शर्मिंदगी महसूस हुई; लेकिन वो उसे कैसे छोड़ सकते थे? अगर वो टैम्बो में होती तो वो कितने खुश होते! ये टिप्पणीकार इस बात को नहीं समझेगा और न ही समझेगा। अगर वो समझ गए होते, तो फिर पार्टनर क्यों बनते? वो भी मेरी तरह मुख्य अभिनेता बन जाते!
ठीक है। अगली बार आने पर हम इसका ध्यान रखेंगे। इस बार आप अपने जान-पहचान वालों से पहले ही संपर्क कर लें। लेकिन आपको पार्टी में आना ही होगा! कोई बहाना नहीं चलेगा!’ आखिरी वाक्य महत्वपूर्ण था, इसलिए उन्होंने उस पर ज़ोर दिया।
खाना आ गया। जैसे ही कमेंटेटर ने चाकू-कांटा खोला, उसने पूछा, 'आप अखबार के बारे में क्या सीखते हैं?'
‘का?’
‘कुछ नहीं। बस ऐसे ही ख्याल आया।’
जब मैं सागरम में था, तब मुझे मुंबई में ताश खेलना बहुत पसंद था! मैंने वहाँ पैसे के लिए खेलना शुरू किया। मेरी जेब में ज्यादा पैसे नहीं होते थे। मैं बस मजे के लिए खेलता था। एक पैसे में पाँच अंक मिलते थे।

मैं आपको बताता हूँ कि मैंने ऐसा क्यों सोचा। यह मत सोचिए कि मैं गपशप कर रहा हूँ। हमारी राय में, आप दोनों बराबर महान हैं; लेकिन जब आप पर गलत होने का आरोप लगाया जा रहा हो, तो यह उचित नहीं है कि हम यह बात आपको बताएँ। कोई और आपके पास आकर आपको नहीं बताएगा। वे सभी छोटी-बड़ी बातों पर पलटकर जवाब देना पसंद करते हैं!
‘क्या हुआ? मुझे साफ-साफ बताओ!’ मोहनलाल शांत हो गया।
लगभग तीस साल पहले, आप सीनियर जूनियर नारकर के पास एक कार्यक्रम लेने गए थे। वे कहते थे कि मुंबई में कार्यक्रम दिलवाकर उन्होंने ही आपको प्रसिद्धि दिलाई। जूनियर जूनियर नारकर कहते थे कि भारत के सभी महान कलाकारों को हमारे दादाजी ने ही कार्यक्रम दिलवाकर आगे बढ़ाया है। उन्हें जाने दो। वे कहते थे कि उस समय आपने गाने की धुन सुनी। एक दिन, गाने की धुन के बीच, आपने सीनियर जूनियर नारकर को एक डफली दी और पच्चीस मिनट तक बजाई। पैसा ले लिया गया है, लेकिन हिसाब-किताब अभी तक पूरा नहीं हुआ है, इसलिए मामला ताम्बोरा जूनियर के पास है।
संगत इफतोय, या बड़ा कलाकरन या अत या गो ती अम या दादन या मुथित आहेत!' "उसने जुए के लिए पैसे लिए थे, क्या उसने तुम्हें मार डाला?"
'हां। मैंने भी यही सोचा था।' वह हंसते हुए कहते हैं, 'यह देखते हुए, शायद आप तीस साल पहले खेलने नहीं आते।'
‘क्या इंसान को और कोई परेशानी नहीं होती? इस समय तो मुझे दिन में दो वक्त का खाना भी नहीं मिलता। वो सीनियर जूनियर मुंबई में एक महान हारमोनियम वादक के रूप में जाने जाते थे। वो अपने कई संगीत कार्यक्रमों में भी मशहूर थे। ये भी सच है कि इस कार्यक्रम के मिलने के बाद मैं उनके पास जाया करता था। शुरुआत में हर कलाकार को ऐसा करना पड़ता है; लेकिन क्या आप जानते हैं कि हम दोनों के बीच झगड़ा क्यों हुआ था?’
‘कशाव न?’
मुझे लगा कि वह एक महान हारमोनियम वादक थे। गोविंदराव तब के करीबी शिष्य। तब कहा करते थे कि महान कलाकार गायन कला का अध्ययन करने के लिए घंटों घर पर बैठकर समय बिताते हैं। उन्हें कला का ज्ञान था; लेकिन संगत करते समय आगे बढ़ने की उनकी एक बुरी आदत थी। गायक एक निश्चित बिंदु पर रुक जाता है, उस बिंदु की ओर जाने का दिखावा करता है; लेकिन वह जाता नहीं है। कभी-कभी, वह

अपने मूड के अनुसार ऊपर या नीचे हो जाता है। हर गायक का ऐसा मूड होता है। अगर साथी में ताकत हो तो...
इसी के साथ बने रहें, वरना हम पीछे रह जाएंगे। अगर यह कार्यक्रम सफल रहा, तो गायक आपके पास आ जाएगा।
इस विचार का क्या करें? क्या करें, ऐसा इंप्रेशन बनाएं कि मुख्य गायक आपका छात्र है!
‘हां। मुझे पता है। वह बहुत ही चतुर आदमी है!’
और आप मेरा गाना जानते हैं। मेरे शिक्षक ने मुझे जो धुनें सिखाईं, वे हारमोनियम के साथ नहीं आतीं।
‘इसीलिए तो आपका समर्थन करना मुश्किल है! यह ऐसी चीज नहीं है जिसे कोई भी आसानी से स्वीकार कर ले!’
“अरे, एक मीटिंग में वो बहुत ही आक्रामक हो गए, उन्होंने ये-वो कहा – देखो, मैं ही मुख्य कलाकार हूँ! मेरे पीछे आओ। आगे जाने की कोई ज़रूरत नहीं है! पूरी मीटिंग में सबने बिना माइक के उनकी बातें सुनीं। उन्हें लगा कि जिस लड़के को उन्होंने आगे बुलाया था, उसने उनका अपमान किया है। उसके बाद उन्होंने मुझ पर हमला करने का एक भी मौका नहीं छोड़ा!”
“यह गुण आपको अपने पिता, उनीराम से विरासत में मिला है! मैं हमेशा कहता हूं कि इस परिवार में आपके जैसा हारमोनियम बजाने में महारत भारत में किसी ने हासिल नहीं की है। मुंबई के कुछ संगीत क्लबों के सचिव भी यही मानते हैं!” ‘मनु डेट! लेकिन वो ये भी जानता है कि अगर जुनाकर का नाम लिया गया तो मैं कार्यक्रम नहीं दूंगा। सुनो मेरे तंबो के साथ क्या हुआ। हालत ऐसी थी कि अगर वो आटा लाकर दो रोटी न खाता तो मर जाता। उसका घर पास ही है।’
तो मैं मदद मांगने गया। मुझे बताया गया कि मुझे अगले विदाई समारोह में पच्चीस रुपये उधार लेने होंगे।
प्रशिक्षण के लिए पैसे मिलते ही मैं उन्हें लौटा दूंगा। लेकिन मैंने यह नहीं कहा कि मेरे पास खाने को कुछ नहीं है। भूख लगने पर भी, मुझे अपनी इज्जत तो रखनी ही है, है ना?'
"ज़रूर होगा!" वह और भी ज़ोर से हंसते हुए बोला।
पहले तो उसने मना करना शुरू कर दिया। उसने कहा, "अगर तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है, तो डफली अपने पास रखो।" जब डफली टूट गई, तो उसने मुझे पैसे देते हुए बहाने बनाया, "देखता हूँ - किसी से कहूँगा कि मुझे दे दे।" मैंने

उससे वादा किया कि मैं पैसे ले आऊँगा; लेकिन एक साल बाद भी मुझे डफली वापस नहीं मिली। इसी दौरान मुझे वह नहीं मिली। तो आप क्या सोचते हैं? मैं अपनी बचत के पैसे लेकर चला गया। मैं ब्याज सहित पैसे चुकाता, अगर डफली टूट जाती, तो वह मुझे अगले दिन बुलाता। तब भी, मैंने उसे खेतों में काम करने के लिए भेज दिया। उस दौरान, मेरे पैसे बँट गए। क्या आपको नई शुरुआत के लिए कम से कम चार एल्युमिनियम के बर्तन नहीं चाहिए? तीन महीने बाद, उसने फिर से पैसे लिए और यह कहते हुए चला गया, "समय सीमा बीत चुकी है, और तुम नहीं मिलोगे! मैं क्या करूँ?" मैं शांत भाव से लौट आया। बाद में, मेरा नाम मशहूर होने लगा, मुझे कार्यक्रम मिलने लगे, वह लोगों को उस डफली के बारे में बताने लगा जिसे मैंने गिरवी रखा था। इस पर मैंने बैठक में उनसे कहा, 'मुझे छोड़कर मत जाओ - मेरा साथ दो।' उन्होंने मुझे यह भी दिखाना शुरू कर दिया, 'तुम्हारा डफली इस आदमी के हाथ लग गया है।' फिर वे रुक गए और बोले, 'अगर वह रहना चाहता है, तो उसे रहने दो! इसे ले लो और अपने पास रखो!'
'इसलिए?'
'पिछले पांच वर्षों में, इस ताम्बो के प्रति मेरा मन भी थोड़ा नरम हो गया है। ओह, जिस दिन मेरे भगवान का विवाह हुआ, मुझे शाही पुजारी से आशीर्वाद प्राप्त हुआ।'
उन्होंने डफली मेरी माँ को बजाने के लिए दी थी! सारा स्वाभिमान एक तरफ। क्या आप जानते हैं कि अगर अस्सी साल का कोई भिक्षु चला जाए तो वह क्या करेगा? 'आखिरकार आपको ताम्बो याद आ ही गया, बहुत बढ़िया! आपने पच्चीस साल तक उसकी देखभाल की है, आप उसे क्या देंगे?'
हट्टा, 'अगर आप पैसे को कुछ समय के लिए बैंक में रखते हैं, तो यह पांच साल में दोगुना हो जाता है। पच्चीस साल में,
पच्चीस रुपये मिलाकर आठ सौ होते हैं। इसमें दो सौ और जोड़ दें और कहें, 'मैं तुम्हें एक हजार रुपये दूंगा, ये मेरे भी हैं और तुम्हारे भी।'
"तब क्या हुआ?"
हटारा ने कहा, “मैंने यहाँ बैंक से कभी कोई पैसा नहीं निकाला! मैं आपसे बस इतना ही कह रहा हूँ कि आप इतना पैसा रख लें और डफली ले लें!” मैंने पूछा, “कितना?” उसने कहा, “जब आपने डफली गिरवी रखी थी, तब आप प्रति बैठक पच्चीस पैसे लेते थे। अब आप एक लाख ले रहे हैं।”
तो मुझे समझ आ गया। जयंत मंत्रानी की माताजी के जन्मदिन की सालगिरह पर,

"मुझे पता है तुमने इस मीटिंग के लिए लाखों रुपये लिए हैं! मुझे भी उतने ही रुपये दो और अपने ले लो!" "ये कैसे मुमकिन है, तुम बताओ!"
अरे! कितनी शर्मनाक बात है! बहुत गंदा है!
‘मैं दस हजार देने को भी तैयार था; लेकिन उसने स्वीकार नहीं किया। मैं इस लालची आदमी के सामने क्यों झुक जाऊं?’
"क्या आपको लगा था कि इतनी ऊंची उम्मीदें रखने के लिए आपको नरक जाना पड़ेगा?"
"फिर भी, मुझे याद है कि गंडाबंधन समारोह के दौरान गु द्वारा मुझे दिया गया डफली मेरे हाथों से फिसल गया था।"
यह बिल्कुल वास्तविक लगता है!
‘यह बिलकुल सच है! केवल दिल की गहराई से ही आपकी इस भावना को समझा जा सकता है!’
लेकिन आपको दस लाख रुपये क्यों चाहिए?
‘छे! छे!’ टिपनीस जम्हाई लेते हुए चिल्लाया। एयर होस्टेस ट्रॉली से खाने की खाली प्लेटें लेकर आई। थोड़ी देर में विमान की बत्तियाँ बुझ गईं। सभी अपनी-अपनी सीटों पर झुक गए और रोने लगे। टिपनीस को भी घंटे की आवाज़ सुनाई दी।

२
मोहनलाल ने भी खुची की पीठ पर करवट बदली और आँखें घुमाईं। सचमुच, सत्ता की लालसा कितनी भयानक होती है! अब वह अतीत में अर्जित सारा ज्ञान भूल जाएगा। यह बिल्कुल बेकार है। कुछ लोगों को शायद लगा होगा कि हफ्ते में दो दिन भी आराम न करने के लिए भूपली को साथ ले जाना ज़रूरत से ज़्यादा था; लेकिन अगर मैं उससे न मिली होती तो पाँच हफ्ते कैसे गुज़ार पाती? यह शक्ति, जो मुझे साठ की उम्र में भी इतना परेशान करती है, उसकी उम्र तो सिर्फ़ पैंतीस साल है – नहीं, उससे भी कम। सच कहूँ तो, मैं इस साल को साढ़े आठ साल कैसे गुज़ार पाती!
सीनियर जूनियर नारकर जुआ खेलने के लिए पच्चीस रुपये का डफ गिरवी रख रहा है! मेरी किस्मत! उसे असली वजह का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था! वह उस दिन सुबह से ही मुझे परेशान कर रहा था। मुझे बैठने नहीं देता था, पैसे भी नहीं देता था। अगर मैं बस यूँ ही लेटी रहती, तो मेरे दिमाग में लालच की आग भड़क उठती! मुझे शुक्लाजी रोड नहीं जाना चाहिए, वह खतरनाक जगह है, वहाँ बीमारी लगने का खतरा है, कोई पहचान भी सकता है, बाज़ार में भीड़भाड़ हो तो झगड़े भी हो सकते हैं, लेकिन सब कुछ जानते हुए भी कोई दूसरा रास्ता नहीं था। कर्ज़ कौन चुकाएगा? मुंबई आकर एक झोंपड़ी में रहने वाली गरीब गायिका पर भरोसा करके मुझे पैसे कौन देगा? मुंबई आए जूनियर नारकर को ही मेरी औकात पता थी। जब उसने मना कर दिया, तो मैंने डफ गिरवी रखने का सुझाव दिया। उसने मना कर दिया। इस समय मेरे पास गिरवी रखने के लिए और क्या था?
'अ! इकदान ये! वहाँ तुम्हें क्या दिख रहा है? तुम्हें वहाँ कोई सुंदर दृश्य नहीं मिलेगा!' वह आगे बढ़ता रहा, यह तय नहीं कर पा रहा था कि ढोल बजाने वाली, हाथों से इशारा करने वाली, अजीब कपड़े पहने महिलाओं में से किसे चुने, तभी कहीं से एक आवाज़ उसके कानों में आई: ' ' ' जी एम पी ' एम आर आई एस ' ए ' ' ' ' ' ' ' मत जाओ—'
मेरे कदम हथौड़े की तरह तेज़ थे। भीड़ के शोरगुल और तीर्थयात्रियों को पुकारने के बीच, 'मां बिहाग' की आवाज़ मेरे कानों में पड़ी - केवल मेरे कानों में। हारमोनियम की धुन के साथ। आवाज़ की दिशा में, मैंने इमारत और फर्श को देखा और सीढ़ियाँ चढ़ना शुरू कर दिया। हाँ। सीढ़ियाँ। उस गायिका के साथ सोने की इच्छा और प्रबल हो गई। मैं दो सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर गया। एक

छोटे से कमरे में, एक महिला पलंग पर बैठी एक पुराना हारमोनियम बजाते हुए गा रही थी। मुझे देखते ही वह मुस्कुराई और बोली, 'क्या आप गाना सुनने आए हैं?' मैं सुनने नहीं आया था।
‘पहले आपको गाना सुनना होगा। फिर आगे! मैं सिर्फ एक व्यवसायी महिला नहीं हूँ!’
मुझे यह पसंद है - लेकिन कितना?
‘आप मेरा जितना सम्मान करते हैं, क्या आपको गाना समझ में आया?’
‘माँ बिहागम, आप क्यों क्रोधित हो गईं? यह अच्छा क्यों नहीं होगा?’
उनके चेहरे पर खुशी और प्रसन्नता झलक रही थी। वे नीचे झुके और मेरा हाथ पकड़कर मेरे पैर थामते हुए बोले, ‘शेटजी, मुंबई में आपको इससे ज़्यादा जोखिम भरा काम कभी नहीं मिला होगा! चलिए, चलिए!’ मेरा हाथ पकड़कर उन्होंने मुझे पलंग पर बिठा दिया। सांवला रंग, सूखा बंधा हुआ सलवार-कमीज़, शायद पीले-भूरे रंग का था। उनके हाथों, मुंह और कानों पर पीले रंग के नकली निशान चमक रहे थे।
‘फमाइश, कृपया दयालु बनो!’ वह विनम्रता से हंस पड़ी।
‘अभी आप मां बिहाग के बारे में गा रहे थे, है ना? बस यही बात है।’
लेकिन आपको इसमें गलती नजर नहीं आ रही, है ना?
‘गलत फरिश्ते को मत मारो!’
वह बाहर गए और 'भाईजान' कहकर पुकारा। तभी पन्नाशी से एक आदमी पलंग के पास आया। उसने पलंग के दूसरी तरफ से तबला-दागा खींचा और उसके सामने बैठ गया। उसने तबला बजाया। उसने डफली नहीं बजाई। उसने थोड़ी सी मधुरता के साथ हारमोनियम बजाया और कुछ आलापी की। इसके बाद, उसने मलयालम में त्रिताल पर कुछ देर गाया। कुल मिलाकर, उसका गीत हारमोनियम की तरह ही मधुर था। गीत समाप्त करने के बाद, उसने सोचा, 'शेटजी, एक और?'
"कभी-कभी। मुझे अब आराम करने की जरूरत है।"
निर्देशों को समझते हुए तबालजी चले गए। उन्होंने पास के पच्चीस रुपये रख लिए और कहा, "बस इतना ही।"
'अगर यह काफी नहीं है, तो अगले बैच में और जोड़ो! इतने जोखिम भरे माहौल में गाए हुए काफी समय हो गया है!'
उसने खुद को पूरी तरह से स्वीकार किया। उसने दूसरी महिला व्यापारियों की तरह अपने परिवार की देखभाल में जल्दबाजी नहीं की।

जब मैं पुल पर पहुँचा, तो उन्होंने मेरे पैर पकड़ लिए। ‘गवैराज, क्या तुम मेरा प्रदर्शन देखने आए हो? तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया कि तुम गायक हो? दो हफ्ते पहले, फोरम में कहीं तुम्हारा एक गाना चल रहा था, और तुम उन पाँच लोगों में से एक थे जो आए थे,’ भाईजान ने कहा।
ठीक उसी दिन वे मुझे बताने आए – एक छोटा लड़का इतनी मधुरता से गा रहा था कि इस हिंदू मंदिर में ऐसा दूल्हा कोई नहीं देता। वो आगे चलकर बड़ा गायक बनेगा! अभी तो तबला बजाते हुए उसने तुम्हें पहचान लिया। ये लो तुम्हारा पैसा! एक गाना भी सुन लिया तो तुम्हें मूर्ख समझ लूँगी!
पिताजी! यहाँ कोई तो होगा जो मुझे जानता होगा! मुझे मई से भी ज़्यादा मई जैसा महसूस हो रहा था। मैं भाग जाना चाहता था; लेकिन वह कितनी विनम्रता से विनती कर रही थी! हालाँकि उसे ऊपरी तौर पर ही प्रशिक्षण मिला था, फिर भी वह एक गायिका थी। लेकिन मुझे इस भाई को सबक सिखाने में शर्म आ रही थी, और मैं पीछे हट गया, यह कहते हुए, 'तबला नहीं। कमरे का दरवाज़ा बंद कर दो। हारमोनियम बहुत धीमी आवाज़ में बजाओ। मैं तुम्हें केवल बगीचे की आलापी ही सुनने दूँगा।'
एक आत्मविश्वासी छात्रा की तरह, वह मेरे कहे अनुसार बैठ गई। उसने हारमोनियम की आवाज़ भी धीमी कर दी और अपने ऊपर मोटा कपड़ा ओढ़ लिया। मैंने एक घंटे से अधिक समय तक गाया और मध्य और मध्य पंक्तियों में उंगलियों से उसे बताया कि उसे कहाँ-कहाँ हिलना चाहिए। मैंने कहा, 'देखो इसे। एक मधुर धुन स्वरयंत्रों पर डाली जा सकती है। जब राग को विस्तार नहीं दिया जाता, तब कलाकार अपनी प्रतिभा दिखाता है—' इत्यादि। पता नहीं उसने इससे क्या समझा; लेकिन जब मैंने उसे वही चीज़ करके दिखाई, तो वह समझ गई। उसकी आँखों में आँसू भरे थे और वह कक्षा को देख रही थी!
मैं रुक गया और पाँच मिनट तक चुप रहा। फिर उसने कहा, ‘गुजी, यही तो काम आएगा!
– ये पच्चीस रुपये ले लो। मेरे पास तीस रुपये और हैं। मैं सारे पैसे नौकरानी को दे दूंगी। जब तक तुम उसका किराया नहीं चुकाओगे, वो तुम्हें यहाँ नहीं रहने देगी। वो होटल से खाना मंगवाएगी। तुम्हें आज रात यहीं रुकना चाहिए। आओ और इस नौकरानी की सेवा करो! तुमने इतना सुंदर गीत सुना है! ये नौकरानी तुम्हें और क्या देगी?’

यह सच था! मैंने पहले कभी ऐसी सेवा का अनुभव नहीं किया था। भले ही चुन्नी ने मन बना लिया था, लेकिन वह एक गाँव की महिला थी जिसमें कोई प्रतिभा नहीं थी! मुझे यह बात उसी क्षण समझ में आई।
आज रात हम थोड़ी देर बातें कर रहे थे। वह मूल रूप से उदयपुर की रहने वाली थी। उसकी माँ
वह उदयपुर के दरबार में पावन थीं। राजा के जाने के बाद उनका काम भी छूट गया। गायन के अलावा उनका कोई और पेशा नहीं था। गायन से जीविका कमाने का समय बीत जाने के कारण वह मुंबई आ गईं। यहाँ गाने सुनने का समय किसके पास है? यहाँ तो मेले जैसा माहौल है! वह न केवल इस काम के लिए तैयार नहीं हैं, बल्कि उनका शरीर और उम्र भी इसके अनुकूल नहीं है। यह सब कहते हुए उन्होंने कहा, 'मैं उदयपुर लौटना चाहती हूँ। हालाँकि वहाँ पैसे देने वाले ज़्यादा लोग नहीं हैं, लेकिन मुझे वहाँ बहुत से ऐसे श्रोता मिलेंगे जो पान खाते हुए गाने सुनेंगे।'
सुबह चाय माँगने पर वह हँसी और बोली, ‘गुजी, मेरी बात सुनिए! अगर आप चाहें तो इसे मेरी विनती समझिए। कामवासना पर कोई विजय नहीं पा सकता। अगर शंकर ने अपनी तीसरी आँख खोलकर कामदेव को धूल में मिला दिया था, तो उन्होंने पावती से विवाह क्यों नहीं किया? आपको भी उनसे विवाह कर लेना चाहिए। घर में अच्छी पत्नी होने पर ही आप बचेंगे। वरना यह कामवासना आपको बर्बाद कर देगी! इसके बाद यहाँ मत आना। यहाँ बुरी बीमारियाँ फैली हुई हैं। आप बहुत प्रसिद्ध गायक बनने वाले हैं। आपको यहाँ देखने की खबर पूरे गाँव में फैल जाएगी। भला आप ऐसा क्यों चाहेंगे?’
मुझे डर लगा। मैं समझ गई। जब मेरे भाई ने मुझे पहचाना तो मेरा दिल शर्म और अपमान से भर गया। क्या मैंने दोबारा उस व्यक्ति के सामने जाने से परहेज नहीं किया?
उसके बाद मैंने कभी इधर-उधर कदम नहीं रखा।
लेकिन ये रचना! पूरी रात उसकी यादों में बसी रहने के बाद, उसने उसी दिन इसे फिर से निकाल लिया, है ना? अगर वह इसे दबाने की कोशिश करता, तो भी यह उसके दिमाग में आ ही जाती।
वहाँ ज़बरदस्त हंगामा मच गया। चॉल के पुरुष काम पर चले गए थे, इसलिए घर में औरतें अकेली थीं। उनमें से एक औरत ज़बरदस्ती घर में घुसकर चीखती हुई औरत का दरवाज़ा बंद करके अपनी इच्छा पूरी करना चाहती थी। इस दबाव में वह इतना

डूब गई कि जब भी घर में, घर के बाहर, गली में, स्कूल में, कहीं भी कोई औरत दिखती, तो मन में यही ख्याल आता, 'अब तो काम बन जाएगा! इसे भी काम बना लो!' हालाँकि उसे डर था कि अगर उसने ऐसा किया तो चॉल के लोग उसकी जान ले लेंगे, या कम से कम उसे पुलिस के हवाले कर देंगे, फिर भी उसके मन में ये हलचल जारी रही। कमरों से भरा एक कमरा। इस खाली जगह में एक रसोई और एक शौचालय था। बाहर एक सार्वजनिक शौचालय था। किसी कारणवश, उसने एक ऐसा गीत गाकर इस तनाव को कम करने की कोशिश की जो उसके लिए पर्याप्त था, और फिर उसने अपना डफ गिरवी रख दिया। आखिरकार, मैंने सेठी साहब के घर पर पड़ा हुआ पुराना तंबोरा उठाया, जहाँ मैं सबक लेने जाया करती थी, और गाना शुरू किया, लेकिन मेरे मन में उमड़ता तूफान मुझे बहा ले जा रहा था। चुनी की याद इतनी प्रबल हो गई कि मेरा मन किया कि मैं सब कुछ छोड़कर उसके पास चली जाऊँ; लेकिन वहाँ मैं कहाँ रहूँगी? सबसे अहम सवाल यह था कि क्या वह मुझे दोबारा वही मौका देगी?
इसी मनोस्थिति में रहते हुए, कांशीरामा के पिता, दौलत चंद, जो कमरे के बिल्कुल आखिरी छोर पर रहते थे, ने एक दिन पूछा, 'यो भा या, तुमने गाना क्यों बंद कर दिया? क्या तुम्हारा गला ठीक है?'
मैं अपने दिल में हतारा का भी इंतजार कर रही थी, वह बहू जो दोपहर में चुपचाप कमरे के बाहर बैठकर संगीत सुनती थी। हतारा दिन-रात कमरे के बाहर ही रहती थी।
‘नहीं, चाचा जी! मैं हर समय गाती नहीं रह सकती! मुझे सोचना भी पड़ता है।’ इस जवाब पर हटारा चुप रहे; लेकिन उसके बाद, जब मैंने गाना बंद कर दिया, तो वे आए और बातें करने लगे। उन्होंने मुझसे सवाल भी पूछने शुरू कर दिए। वे मुरादाबाद के पास अमरोही गाँव के रहने वाले थे। जैसे ही उन्होंने सुना कि मैं हीरार से हूँ, दोनों को लगा कि हीरार और अमरोही पड़ोसी गाँव होंगे। वे खुश हो गए।
वह हंसते हुए और भी करीब आ गया, 'मुंबई का दूध भी यहां मिलने वाले पानी के सामने कुछ नहीं है! क्या सच में? यह गंगाजी का पानी है!' मैं यह बात तुरंत समझ गया।
हमारी जान-पहचान के आठ दिन के भीतर ही हटारा ने इस विषय को उठाया। मैं जोर-जोर से चपातियाँ बना रही थी, तभी हटारा हँसते हुए बोली, ‘अरे वाह! किसी आदमी ने कभी ऐसा नहीं देखा!’
रसोई में मत जाओ। तो फिर, पत्नी को घर क्यों न ले आओ?

देखो। तुमने ऐसा क्यों नहीं किया?'
"एक व्यक्ति का पेट भरना ही मुश्किल है। मैं अपनी पत्नी का पेट कैसे भर सकता हूँ?"
‘आप अपनी बेटी को यहाँ ले आइए, कोई दिक्कत नहीं होगी। वो मेरी दोस्त की बेटी है। अमरोहा में रहती है। बहुत प्रतिभाशाली लड़की है। यहाँ की लड़कियाँ कैसी हैं? घर के पुरुषों का पेट भरती हैं और खूब पानी पीकर खुशी से रहती हैं। अगर पति के पास नौकरी नहीं है, तो वो चारों घरों के बर्तन धोने और यहाँ तक कि पति को खाना खिलाने के लिए भी तैयार रहती हैं! वो मुंबई की अभिनेत्रियों जितनी होशियार नहीं हैं!’
चार घरों के बर्तन धोए बिना घर चलाने का मुद्दा उठा और मुझे अपनी माँ की बहुत याद आ गई। मैं दो घंटे खाना बनाऊँगी, तुम ये गाना गाओ।
मुझे पियर्सिंग की भी याद आ गई। मेरे सपनों में, मैं ट्रिगर दबाकर अपनी इच्छा पूरी कर रहा था।
हटारा कह रही थी कि वह भी एक अच्छी बहू है, 'वह बहुत कम बोलती है। वह अपनी सास से बिना नज़रें मिलाए बात करने से बचती है, वह हमेशा राज़ रखती है। झूठ न बोलने से घर का माहौल दोनों के लिए और भी खुशनुमा हो जाता है।'
लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि हक्का की पत्नी को घर ले आओ। उसका नाम क्या था? मुझे याद नहीं और उन्होंने खुद भी नहीं बताया।
अगले दिन, जैसे ही वही विषय फिर से उठाया गया, दौलत चंद वहां से चले गए और बोले, "लेकिन लड़की सुंदर होनी चाहिए।"
‘आप खुद देख लीजिए। अगर पसंद न आए तो मत देखिए। कोई दबाव नहीं है। मैं उस लड़की को फोन कर दूंगा। वो मेरी दोस्त की बेटी है। ये लड़कियां यहाँ कहाँ से हैं?’
12 तारीख को बेटी अपने माता-पिता के साथ मुंबई पहुंची। कांशीराम
तेशनाव उसे घर ले आया। इसी घर में लड़की को विदा करने की रस्म हुई।
अठारह साल की एक लड़की, अभी पूरी तरह से बड़ी नहीं हुई थी। उसकी उम्र किसी चिथड़े की तरह थी। उसके अंदर का गाँव का भाव उस पारदर्शी घूंघट के पीछे साफ झलक रहा था। वह शर्म से लाल हो गई थी। उसने अपनी माँ की तरफ़ चोरी-छिपे नज़र भी नहीं डाली। बाद में भी उसने यही बात दोहराई। कांशीराम और दौलत चंद ने उसे दिलासा देते हुए कहा, ‘मैं पिछले एक साल से उसे देख रहा हूँ। वह बीड़ी या सिगरेट नहीं पीती, सिगरेट नहीं पीती, औरतों की तरफ़ देखती भी

नहीं।’ यह सब सुनकर मेरे माता-पिता मेरी शादी के लिए राज़ी हो गए। उन्हें विश्वास था कि शहर में पेट भरने के काफ़ी साधन हैं, और गाँव में इस तरह उपवास रखने की ज़रूरत नहीं होती। न तो उसके पास और न ही मेरी माँ के पास खर्च करने के लिए पैसे थे। अंबा भवानी के मंदिर में, भक्त ने चार मंत्रों का जाप किया और उसे ताबीज़ पहनाया। उसी रात, उन्होंने उसे उसकी माँ के कमरे में भेज दिया।
जैसे ही मैंने कमरे में कदम रखा, उसने मेरा अभिवादन किया और सिर झुकाए खड़ी हो गई। मैंने उसके चेहरे को देखा, जो हल्दी, केसर और सिंदूर से रंगा हुआ था, उसके घूंघट के नीचे। वह मुझसे ग्यारह साल छोटी थी। अभी पूरी तरह से विकसित नहीं हुई थी, अभी भी बचपन में थी। भविष्य के लिए कोई विचार या आशा न रखने वाली इस लड़की को देखकर, वासना की चमक के बजाय, मुझे गरीबों के क्रोध में शर्म की एक झलक दिखाई दी।

३
राजाराम धीमी लय में खर्राटे ले रहा था। उसके सामने स्क्रीन पर प्रेम और रोमांच से भरपूर एक अंग्रेजी फिल्म चल रही थी। कुछ लोग ईयरफोन लगाकर फिल्म देख रहे थे, उनके अलावा बाकी सभी लोग सफेद चादर ओढ़कर सो रहे थे।
एक लड़की जो घर में पली-बढ़ी, भूखी रही, और वो भी बिना पति के। खेत जोतना, कपड़े धोना, बर्तन धोना, कपड़े इस्त्री करना। एक ही कमरे में रहना। सारा काम जल्दी-जल्दी करना पड़ता था। जब भी मेरा गाना शुरू होता, मैं रसोई में बैठ जाती, ये सोचकर कि कहीं मैं मशाल न जला पाऊँ और रंग न बदल पाऊँ। एक बार मुझे कहा गया कि गाने के शुरू होने के समय मशाल न जलाऊँ, उसके बाद मैंने कभी मशाल नहीं जलाई। न धन था, न व्रत, वो दिन थे। मुझे शिवाजी मंदिर में एक कार्यक्रम मिला, वो रद्द हो गया। दादर गणेश सभा का कार्यक्रम भी रद्द हो गया। मानदेय पच्चीस रुपये तक बढ़ गया था, मेरे हिसाब से ये बहुत बड़ी बात थी। हालांकि, संगीत सम्मेलनों में भाग लेने के मेरे प्रयास असफल हो रहे थे।
एक बार रामकुमारी नाम की पत्नी ने सोचा, 'घर पर यूं ही बैठे रहने के बजाय, क्यों न दो-तीन लोगों के लिए बर्तन धो लूं और कपड़े धो लूं?'
‘नहीं!’ मैंने थोड़े कठोर स्वर में मना कर दिया। लेकिन फिर मुझे याद आया कि मेरी माँ ने भी मुझे इन्हीं तरीकों से पाला था। मेरी माँ के प्रति मेरा स्नेह और बढ़ गया; लेकिन अब वो भी वही तरीके अपना रही हैं।
मेरा मन इसके लिए तैयार नहीं था। मैंने देखा कि मेरे मन में एक कोमल भावना पनप रही थी।
हाँ, ऐसा ही था। चुनी मुझसे बड़ी थी। वो मुझसे ग्यारह साल छोटी थी! मैं झुककर प्रणाम कर रही थी। जब मैंने उसे गले लगाया, तो ऐसा लगा जैसे मैंने अपने सीने से कोई नाजुक और भारी हार लगा रखा हो। हालाँकि मैं नई साड़ी और नई चूड़ी खरीदना चाहती थी, पर मेरे पास पैसे नहीं थे। गेहूँ, आलू, प्याज, तेल और नमक खरीदने के लिए तो पैसे थे, फिर भी घर चलाना मुश्किल था।
चार महीने निरंतर सुख में बीत गए। मुझे अब किसी प्रकार की खुशी का अनुभव नहीं हो रहा था, लेकिन अब दिन बीत चुका था। मुझे यह एहसास नहीं था कि बच्चे की ज़िम्मेदारी बढ़ने वाली है, कि मुझे अधिक कमाना होगा, अधिक बचत करनी होगी। वह अभी छोटी थी। उन्होंने सुझाव दिया कि मैं अपनी माँ को गर्भावस्था

के दौरान नहीं, बल्कि प्रसव के समय बुलाऊँ। इन दिनों मुझे यह भी एहसास हुआ कि प्रसव के लिए गाँव आने की उनमें शक्ति नहीं थी। मुझे यह भी समझ आया कि गर्भवती महिला को दोपहर दो बजे सूखी रोटी और सब्ज़ी भी नहीं मिलती। इसी समय मुझे मुंबई के पास एक कार्यक्रम मिला। इसके लिए मुझे पाँच सौ रुपये मिले। मेरा मानसिक तनाव कम हो गया। मैंने सारे पैसे रामकुमारी को दे दिए और कहा, 'मैं ये पैसे कहीं और खर्च नहीं करना चाहती। मैं हर दिन तुम्हारे लिए एक चौथाई लीटर दूध लाऊँगी। तुम्हारे पीने के लिए।'
यह सुनकर वह कितना आभारी हुआ!
बकुला का जन्म हुआ। एक गेंद जैसी बच्ची, जो डफली की झंकार सुनते हुए आकार लेने लगी! जब वह तीन महीने की थी, एक तरफ मेरा गाना बज रहा होता और वह मेरे बगल में फर्श पर लेटकर बिना पलक झपकाए गाना सुनती रहती। चाहे वह कितना भी रोती, डफली की झंकार सुनते ही उसका रोना बंद हो जाता। दरअसल, उसके जन्म के बाद मेरी किस्मत खुल गई; लेकिन इस बच्ची के जीवन के दरवाजे बंद होने लगे। यह सोचकर मैं दंग रह गई। एक ही गाँव में रहते हुए, उसे देखे हुए बीस साल हो गए थे। उस समय, सब लोग हँसते हुए कहते थे कि वह बिल्कुल अपनी माँ जैसी दिखती है! वे उसकी आँखों और माथे की बनावट में इसका सबूत दिखाते थे। पड़ोस की औरतें भी हँसती थीं – लड़की तो खानदानी औलाद है!
मोहनलाल घर से निकल गया। उस टिप्पणी ने उसका मन बदल दिया। वह मुड़ा और फिर से बोलने लगा। मुझे भी देसाई परिवार से वही शिक्षा मिली थी। मुझे दोनों बहनों को एक साथ पढ़ाना पड़ता था। हफ्ते में दो बार। डेढ़ सौ रुपये प्रति माह! जब मैंने पहली बार पोल्का डॉट साड़ी सिली, तो लड़का कितना सुंदर लग रहा था!
जब वह डेढ़ साल की थी, तब उसने चंपा के घर से शिक्षा प्राप्त की। यह शिक्षा उसे देसाई साहब की जान-पहचान के माध्यम से मिली थी। दोनों घर एक ही सड़क पर थे, इसलिए मेरे लिए यह सुविधाजनक था। उसे देसाई साहब से सौ रुपये मिलने लगे। घर का माहौल इतना अच्छा था कि जब उसके माता-पिता काम के लिए बाहर जाते थे, तो वह घर पर ही गाना सीख सकती थी। उसका एक छोटा भाई भी था; लेकिन वह कॉलेज और क्रिकेट के लिए घर से दूर रहता था। चंपा चौबीस साल की थी। वह बहुत सुंदर थी। उसकी आँखों में आस्था की चमक थी। बिल्कुल मुंबई की लड़की! उसका गायन शुरुआती स्तर का था। उसने कई महान कलाकारों के गीत सुने थे। वह मुख्य रागों को पहचान सकती थी और

वह उनके नाम भी बता सकती थी।
मुझे यह स्वीकार करना होगा कि जिस दिन मैंने उसे पढ़ाना शुरू किया, उसी दिन से मैं उसकी ओर आकर्षित हो गया था। रामकुमारी और उसके बीच का अंतर उसी दिन स्पष्ट रूप से महसूस हुआ। रामकुमारी, एक गाँव की अनपढ़ महिला, मुश्किल से देवनागरी पढ़ पाती थी। एक बार, लगातार दस दिनों तक मैंने उसे एक राग से दूर रखा और दिन में दो बार उससे राग का नाम पूछा। ग्यारहवें दिन, जब मैंने उससे राग का नाम पूछा, तो वह समझदारी से हँसी, 'मुझे इसमें क्या समझ आता है!' तब मुझे एहसास होने लगा कि इसमें बुद्धिमत्ता से ज़्यादा मूर्खता थी। बर्तनों को चमकाते हुए धोना, सफेद कपड़े धोना, साफ-सुथरा खाना बनाना, घर को साफ रखना, यह सब उसका काम था! उसकी मधुर आवाज़ रात की नींद का सुख भी छीन लेती थी, और चंपा को उसकी जगह देखने का सपना मेरे मन को आनंद देने लगा। कभी- कभी - उसका नाम क्या था? - उस उदयपुर की गायिका की याद मुझे बहुत तीव्र रूप से आती थी। रागों पर बातचीत करते हुए,
हां हां, मैं अपनी जगहों के बारे में बात कर रही हूं, लेकिन कितनी मीठी नींद आई! या!
चंपा भी मेरी अनुयायी थी, यह मैं उसकी हरकतों, उसकी उलझन और उसकी आँखों की चमक से समझ गई थी। उस दिन सबसे पहले मैंने जो देखा, वह था उसका उत्साह! जब वह हारमोनियम पर अपनी उंगलियाँ चला रही थी, तो वह ज़रा भी नाराज़ नहीं होती थी, बल्कि उसका चेहरा खुशी से चमक उठता था। जब वह डफली बजा रही थी, तो अगर मैं उसकी उंगली ताजिनी पर दबा भी देती, तो भी वह शिकायत नहीं करती थी। उसकी उंगलियाँ कितनी कोमल थीं! उसका रंग गोरा था! बेदाग। उसके नाखून करीने से कटे हुए थे। उसके बाल करीने से कंघी किए हुए थे और बाईं ओर से मांग निकाली हुई थी। मैंने यह स्टाइल पहली बार मुंबई में देखा था। बहुत अच्छा लग रहा था। हीरा, सागर और चिरपुर की हमारी औरतें अपने बालों को इस तरह स्टाइल करना नहीं जानतीं। जब मैंने उसका मजबूत शरीर देखा, तो मुझे खुशी हुई और खुद में ताकत महसूस हुई।
कितनी होशियार! कमाई के मामले में वह बहुत महत्वाकांक्षी थी! गायन के लिए वह मेहनत करने को तैयार नहीं थी। उनके पिता प्रतापराव नाइक सरकार के वरिष्ठ सेवा एवं सूचना विभाग में एक वरिष्ठ अधिकारी थे। उनकी माताजी बैंक में काम करती थीं। एक बार जब हम पढ़ाई कर रहे थे, नाइक साहब घर पर थे। मेरा

गाना सुनकर वे हँसे और बोले, 'माँ, तुम कितना अच्छा गाती हो! मैंने ऐसी धुनें कहीं नहीं सुनीं। तुम भी कार्यक्रम क्यों नहीं करती?'
मैं तैयार हूँ; लेकिन मुझे मौका कौन देगा, महोदय?
‘हूँ! चलो थोड़ा और गाते हैं!’ लड़की ने डफली उठा ली। मैंने थोड़ी देर और गाया।
वह उस समय के प्रासंगिक गीत गाता रहा। फिर उन्होंने कहा, 'तुम्हारे पास यहाँ बहुत से लोग हैं।'
कभी-कभी शिष्य को गुरु का नाम दे दिया जाता है। आप गुरुजी, आपने कोई संगीत कार्यक्रम नहीं किया है, इसलिए आपको किसी प्रतिष्ठित समारोह में आमंत्रित नहीं किया जाता! मैं कुछ करके दिखाऊंगा!
अगले हफ्ते, गायन की कक्षा के दौरान, परंजपे आया। वह लगभग मेरी ही उम्र का था। मुझसे चार साल बड़ा था। बातचीत के दौरान उसने बताया कि पत्रकार के रूप में आगे बढ़ने में प्रतापराव नाइक ने उसकी बहुत मदद की थी। गाना सुनने के बाद उसने मेरा दस मिनट का साक्षात्कार लिया। मेरा जन्मस्थान, ओंकार बाबा का आश्रम, सागर,
राजसाहेब ने सब कुछ बता दिया। उन्हें राजसाहेब का व्यक्तित्व बहुत पसंद था; लेकिन उन्हें विस्तार से बात करना पसंद नहीं था। जल्दी से अगला सवाल, जल्दी से अगला मुद्दा!
'क्या राजा साहब की कोई फोटो है?'
‘नहीं।’ नामादा नदी, आर्य, महादेव मंदिर के बारे में सुनकर उन्होंने मुझसे सवाल पूछे, ‘राजसाहेब के गीत में क्या खास बात है? आपके गीत में क्या खास बात है?’ मैं इन सभी सवालों के जवाब हिंदी में दे रही थी। चंपा मुझे अंग्रेजी में लिखने में मदद कर रही थी। वह मुझे उसका मराठी अर्थ भी बता रही थी। बाद में, वह मेरे लिए एक माला लाए, मेरे बाएं कंधे पर एक लंबी जरी की शॉल डाली और सात-आठ अलग-अलग कोणों से तंबोरा बजाते हुए मेरी तस्वीरें खींचीं। इसके बाद उन्होंने ‘ठीक है’ कहा और चले गए।
दो सप्ताह बाद, संडे टाइम्स में एक विस्तृत लेख प्रकाशित हुआ। इसे धामानंद परंजपे द्वारा अपने प्रिय चिरपुर की यात्रा के बाद एकत्रित जानकारी के आधार पर लिखा गया लेख बताया गया। इसमें महान साधक, संगीत गुरु रघुवीरसंग राजा की कहानी थी, जो केवल मंदिरों में ही संगीत का अभ्यास करते थे। कहानी में एक ऐसे गद्दार का भी जिक्र था जिसने चालीस वर्ष पहले अपने शिष्य से दस

हजार रुपये लेकर उसे धोखा दिया था। उस राजा ने पिछले आठ वर्षों से अपने शिष्यों को संगीत का जो ज्ञान दिया था। वे शिष्य जो नामदे नदी के किनारे इस जंगल में एकांतवास करते थे। हम इसे चिरपुर परिवार कह सकते हैं।
इस अनोखे अभ्यास का पालन करने वाला इस मठ का इकलौता शिष्य! उन्होंने मुझे चिरपुर स्थित इस मठ के गायन, विशेषताओं आदि के बारे में जानकारी के साथ दो बड़ी तस्वीरें दीं। मुझे उसमें लिखी सारी अंग्रेज़ी समझ नहीं आई। नायक ने सब कुछ समझाया। लेकिपे की हिंदी कहीं बेहतर थी।
अगले सप्ताह, यही जानकारी फ्री प्रेस जर्नल में विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित हुई। उसके बाद, यही जानकारी लोकसा और केसरीम में भी छपी। एक महीने के भीतर, बृजनारायण ने पोटदार कॉलेज परिसर में वामी हिरदास सम्मेलन का आयोजन किया। इस तीन रात्रिकालीन उत्सव की दूसरी रात मुझे गाने का मौका मिला। रात के 10:30 बज रहे थे। परंजपे और नाइक ने कुछ सुझाव दिए। चंपा ने भी कुछ सलाह दी। मुझे इसे दरबार में प्रस्तुत करना चाहिए। चूंकि रात के 10:30 बज रहे थे, इसलिए कोई भी इसे पहले नहीं लेगा। मुंबईकर दरबार के दीवाने हैं। अगर आप पागल होना चाहते हैं! जो व्यक्ति इस स्थान और कमरे में लंबा समय बिताता है, ऋषिकेश में डूब जाता है और शांति से उसे आगे बढ़ाता है, उसे यहाँ महान गायक माना जाता है। चंपा ने एक और सुझाव दिया। अगर किसी कारणवश मैं दरबारी गीत नहीं गा सका, तो मुझे कोई दूसरा राग तैयार करना चाहिए, जो अच्छा था। कार्यक्रम के निमंत्रण के साथ, नाइक द्वारा लिखित मेरे परिचय का एक पैम्फलेट भी छपा था। उन्होंने यह भी तय किया कि मुझे कार्यक्रम के लिए क्या पहनना चाहिए। सफेद पजामा, हल्का गुलाबी गाउन, काली जैकेट। उन्होंने अपने पैसों से कपड़े खरीदे और उन्हें दर्जी के पास नापने के लिए ले गए और ढेरों निर्देश दिए। मेरे बाएं हाथ में सोने का कंगन, मेरे दाहिने हाथ में बीच में चमकती लाल पत्थर की अंगूठी और मेरी कलाई पर सोने की चेन। उन्होंने मेरे बालों का स्टाइल भी तय किया। मंच पर जाने से पहले, उन्होंने मेरे चेहरे पर लगाने के लिए गुलाबी पाउडर और लिपस्टिक भी तैयार रखी थी। चेन, कंगन और अंगूठी एक ही ब्रांड के थे।
हालांकि मैं समझती थी कि संगीत समारोह के लिए ये चीजें भी आवश्यक हैं, फिर भी मुझे इस तरह से प्रस्तुति देना थोड़ा मुश्किल लगा। भगवान के सामने गाते समय मुझे किस तरह के कपड़े पहनने चाहिए और किस तरह का संगीत सुनना चाहिए!

इसी बीच, राजसाहेब भी एक जब्बा-पैज पर आ रहे थे। इस मामले में, उनका आना केवल अनुबंध पर ही तय था!
जो भी हो, मुझे ऐसा लगा कि उस दौर के दरबारी अतुलनीय थे। जैसे-जैसे मैं गाती गई, रंग गहराता गया। यह राग राजसाहेब की गायन शैली से बिल्कुल अलग था! ऐसा कोई दूसरा राग नहीं है जो लय को छोड़े बिना, हर स्वर पर शांति से रुककर समय को कंपकंपा दे! मुझे दिए गए दो घंटों में दो राग प्रस्तुत करने का मौका मिला था; लेकिन मैंने ढाई घंटे दरबारियों के आलाप गाने में बिताए। फिर मैंने एक अदाना ली। मैं आधे घंटे के लिए रुकी।
जैसे ही मैंने अपना प्रदर्शन समाप्त किया, ता से जो अभूतपूर्व गर्जना हुई, उसी के कारण दर्शकों ने मुझे सम्मेलन का राजा घोषित कर दिया! जैसे ही मैं मंच से उतरा, सम्मेलन सचिव दौड़ते हुए आए और हंसते हुए बोले, 'तुम्हें अपनी क्षमता का अंदाजा नहीं था। अगले कलाकार के लिए तुम्हारे द्वारा बनाए गए इस जोशीले माहौल को नए कलाकार के जुनून से दोबारा कायम करना मुश्किल होगा!' मैं गायक के पास गया जो अपनी पत्नी और बेटी के साथ पहली पंक्ति में बैठे थे और उनसे हाथ मिलाते हुए कहा, ‘आपका आशीर्वाद!’ वे भी खड़े हो गए और मुझे गले लगा लिया। चंपा की आँखें चौड़ी हो गईं। खुशी और गर्व उनके चेहरे पर साफ झलक रहा था। सचिव ने मुझे उनके बगल वाली कुर्सी पर बैठा दिया। पंद्रह मिनट में अगले कलाकार का सितार बजना शुरू हो गया। सभी श्रोताओं की निगाहें उन पर टिकी थीं। हालांकि, चंपा की नजरें बार-बार मेरी तरफ जा रही थीं।
अगले दिन उसकी माँ नहीं आई। तभी जब नाइक चाय लेने बाहर गई, तो उसने कहा, 'अब तुम एक बड़ी, मशहूर कलाकार बन गई हो! मुझसे इस तरह क्यों बात करती हो!' मैंने भी सिर हिलाकर कहा, "आप इस मशहूर कलाकार के मैनेजर हैं!" उनके चेहरे पर खुशी देखकर मुझे भी बहुत प्रसन्नता हुई।
दो दिन बाद, जब मैं प्रशिक्षण के लिए उनके घर गया, तो वे एक फाइल लेकर आए और मेरे सामने रख दी। मैंने उसे खोलने के बारे में सोचा भी नहीं। उन्होंने उसे खोला और मुझे दिखाया। उसमें, मेरे गीतों की प्रशंसा करते हुए एक बड़े अक्षर में इस संगीत सम्मेलन की कतरनें सजी हुई थीं। 'टाइम्स' ने 'भारतीय संगीत जगत में एक नए सूर्योदय!' शीर्षक से एक लंबा लेख प्रकाशित किया था। प्रेस
लेख की शुरुआत 'शाही गायक के इकलौते शिष्य' शीर्षक से हुई थी। फ्री प्रेस ने लेख में लिखा था, 'तानसेन ख्याल की गायन शैली आज भी जीवंत है! हिरदास

सम्मेलन की मध्यरात्रि को नवोदित कलाकार मोहनलाल द्वारा प्रस्तुत इस दरबारी प्रस्तुति में हमें शाही वैभव का वास्तविक अनुभव प्राप्त हुआ!'
सब कुछ पढ़ने के बाद मुझे चंपा का अर्थ समझ में आ गया। स्थानीय मराठी लेखकों ने भी इसकी बहुत प्रशंसा की थी। देवनागरी लिपि में होने के कारण मुझे इसका काफी हिस्सा समझ में आ गया। मुंबई आने के बाद से मेरी मराठी थोड़ी बेहतर समझ में आने लगी थी। जरूरत पड़ने पर मैं बोल भी सकता था।
तब चंपा हंसते हुए बोली, "ये क्या है? तुम सोमवार को क्यों नहीं आई?" ‘लेकिन पार्टी तो बुधवार और शुक्रवार को है, है ना?’ मैं हिचकिचाई और तुरंत रुक गई। मुझे एहसास हुआ कि मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए था। क्योंकि उसके एक तीखे वार ने मेरे चेहरे पर जोरदार प्रहार किया। इससे मुझे अपनी गलती सुधारनी पड़ी और मैंने कहा, ‘कौन जानता है कि बाकी दिनों में आपके पास समय होगा या नहीं?’
"अगर तुमने फोन करके पूछ लिया होता, तो तुम्हें समझ आ जाता! तुम्हें पता है मैं दोपहर में कहाँ नहीं जा रही हूँ!" उसने झल्लाकर कहा।
मैं हैरान रह गई। मैंने मन ही मन सोचा, 'चंपा, मेरी सफलता के लिए तुम और तुम्हारे पिता जिम्मेदार हो। अगर तुमने ये सब योजना न बनाई होती, तो मुंबई में कोई मेरे बारे में सोचता भी नहीं!'
‘ऐसा कुछ नहीं! ऐसा कुछ नहीं!’ उसने इशारा स्वीकार करते हुए कहा। उसने आगे कहा, ‘मुझे भी इससे फायदा हुआ। आप घर पर कभी इतना ज़ोर से नहीं गाते! मैं इतनी खुश हूँ कि मुझे नाचने का मन कर रहा है! आप मुझे सिखाएंगे, दरबारी!’ ‘हाँ, बिल्कुल! मुझे अब भी नहीं पता कि आभार कैसे व्यक्त करूँ!’ मैंने उसे गले लगाते हुए कहा। पिछले कुछ दिनों में हमारे बीच घनिष्ठता काफी बढ़ गई थी। मेरे दिल में कृतज्ञता और भी बढ़ गई – और भी ज्यादा –
वह भी उसी तरह जवाब दे रही थी, "नहीं, नहीं।" उसके शरीर की प्रतिक्रिया मेरे मन में उत्साह को और बढ़ा रही थी।
बाद में, उसे गले लगाते हुए, वह हंसते हुए बोली, "तुम बहुत अच्छी गायिका हो! ओह, तुम हो। भविष्य में तुम हमें कैसे याद रखोगी?"
‘यह असंभव है। आपने मुझे इस क्षेत्र में सम्मान दिलाया है! मैं इसे जीवन भर नहीं भूलूंगा। मैं अपने गांव की कसम खाता हूं!’
‘लेकिन ये कैसे मुमकिन है? आप शादीशुदा हैं। आपका एक बच्चा है। मेरा क्या?’ उसने मुट्ठी भींची और दूर हट गया।

"तुम्हारे बिना मैं यहाँ तक नहीं पहुँच पाता। तुम ही मेरी सच्ची पत्नी हो!"
'सत्य!'
'बिल्कुल!'
हाँ। चंपा का यही सामान्य व्यवहार है। किसी भी भावना में पूरी तरह बहक जाने से बचते हुए, विवेक का सहारा लेकर स्थिति पर नियंत्रण रखना उसकी कला है। मैंने उसके जाने से पहले ही उससे वादा कर दिया था!
उसके साथ उसका रिश्ता अच्छा होने लगा और पत्नियों के बीच घर को लेकर आकर्षण धीरे-धीरे कम होता गया। उसे उसकी बाहों में एक तरह की सुरक्षा महसूस होती थी। मानो उसके चारों ओर एक अभेद्य कवच हो। वह असाधारण बुद्धिमत्ता की प्रतीक थी जिसने इस कलाकार को आकाश की ऊंचाइयों तक पहुँचाया, ठीक वैसे ही जैसे चार घरों का प्रशिक्षु चॉल में गिर जाता है! वह बिना किसी झिझक के गाना जानती थी! आज उसने हंसते हुए कहा, 'क्या मैंने आज तुम्हारे दरबारियों को नहीं सुना? इसी समय मेरा दिल तुम्हारी ओर खिंचा चला आया।' एक बार, जब वह मेकअप कर रही थी, तब हंसते हुए बोली, 'आज तुमने इस सभा में अदाना गाते हुए जो कला दिखाई, वह आज के तबलाजी से बिल्कुल अलग थी!' यही है एक सच्चे कलाकार का जीवन साथी!
इस गांव में क्या है? न तो बराबरी की बातचीत का आनंद है और न ही गाने का आनंद।
विचारों का आदान-प्रदान कितना आनंददायक है! इसकी सुगंध तो बस एक चुटकी भर है।

सुंदर, मधुर चेहरे वाली और गोल-मटोल चेहरे वाली चंपा वाकई सबसे अलग दिखीं। वो न सिर्फ गाती हैं, बल्कि अंग्रेजी, हिंदी और मराठी भी बोलती हैं। उन्हें मुंबई की भाषा आती है!
वामी हिरदास सम्मेलन के बाद, क्या त्रिमूर्ति एक महीने के भीतर गिरगांव नहीं आ गई थी?
क्या प्रयोगशाला ने मेरे कार्यक्रम का निर्णय लिया? मैंने सम्मेलन के सचिव से पत्र लिया और सबसे पहले यही किया।
प्रतापराव नाइक के पास गए। मुझे नाइक का संदेश मिला, इसलिए मैं उनके घर गया। चंपा ने सारी व्यवस्था कर रखी थी। उन्होंने मुझे पहले ही बता दिया था

कि अगर कोई मानदेय मांगेगा, तो वे पाँच सौ रुपये लेंगे। यह बात मुझे हिरदास सम्मेलन के सचिव ने बताई थी। उन्होंने एक नोट भी जोड़ा था, 'वामी हिरदास के नाम की वजह से वे पाँच सौ रुपये पर राजी हो गए। वरना वे साढ़े सात सौ रुपये से एक पैसा भी कम नहीं लेते!' चंपा ने आगे कहा, 'वे टैक्सी से आएंगे। आप भी उनके आने और छोड़ने का इंतजाम कर दीजिए।'
अगर सचिव चाली आ जाता, तो कलाकार के लिए कोई समस्या नहीं रहती, इसलिए उसने तय किया, मैं नाइका के घर जाऊँगा, वहाँ टैक्सी आ जाएगी। देश का सबसे बड़ा कलाकार एक हज़ार रुपये माँगता था, उस समय मेरा पहला प्रस्ताव साढ़े सात सौ रुपये था!
इसके बाद मुंबई के आयोजकों ने मुझे फोन करना शुरू कर दिया।
आईएमजी, सचिवालय जिमखाना, पारसी गायन उजेक मंडली, कैनरा सरवते एसोसिएशन आदि के साथ आठ से दस स्थानों पर गायन सभाएँ आयोजित की गईं। विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधि प्रत्येक स्थान पर आए थे। मैंने वादा किया था कि चार महीनों के भीतर मैं मुंबई के प्रसिद्ध गायकों में शुमार हो जाऊँगा।
इसके बाद परगाँव से निमंत्रण आने लगे। पुणे, कोहापुर, सोलापुर, मिराज, बेलगाम, हुबली, नासिक, वडोदरा, औरंगाबाद, अहमदाबाद – लगातार कार्यक्रम होते रहे। रेलवे खर्च और अच्छे होटलों में ठहरने के अलावा, मैं सात सौ पचास से कम एक पैसा भी नहीं लेता था। हर जगह नायक का पता दिया जाता था। चंपा सभी लेन-देन पर नज़र रखता था। उसका फ़ोन नंबर भी उसके घर पर दिया हुआ था। इस बारे में मेरे मन में विचारों का सैलाब उमड़ रहा था। पैसों का सैलाब भी उमड़ रहा था! मुझे कैसे पता चलता कि इतने पैसों का क्या करूं, इसे कैसे संभालूं? बस यही सवाल था।
मैंने अपने घर के पास वाले इस बैंक में खाता खोला है। मेरे माता-पिता के भी इसी बैंक में खाते हैं।
इससे काम में तेजी आई।
सामने वाला सिनेमाघर बंद हो चुका था। इधर-उधर चार-पाँच लोग दीपक की रोशनी में पढ़ रहे थे। उनके अलावा बाकी सभी यात्री गहरी नींद में सो रहे थे। वे भी शायद नींद आने के कारण पढ़ रहे थे। यादों के सैलाब के कारण मेरी नींद उड़ गई थी। ये यादें शारीरिक इच्छाओं की तरह होती हैं। आप इन्हें कितना भी दूर धकेलने की कोशिश करें, ये उसी जोश के साथ लौट आती हैं। मैंने अपने मन

को कितनी ही बार समझाया है कि जो हो गया सो हो गया, अब उसे याद करने का कोई फायदा नहीं; लेकिन इसका कोई असर नहीं होता।
मुझे नहीं लगा था कि अगर मैंने उससे शादी नहीं की तो मुझे अपनी पत्नी और बेटी को छोड़ना पड़ेगा। यह जानते हुए कि मेरी शादी हो चुकी है और एक बेटी है, मुझे यह भ्रम था कि जो भी मेरे पास आएगा वह मेरे घर का सम्मान करेगा। मेरी संपत्ति इतनी बढ़ गई थी कि मैं दो घर चला सकता था। यह स्पष्ट था कि इससे उसके साथ बिताने का समय भी बढ़ जाएगा। क्योंकि यहाँ तबला और डफली थी। मुझे इस घर में हफ्ते में दो बार आना-जाना पड़ता था, ताकि उस घर के साथ भी कोई अन्याय न हो।
चंपा ने जैसे ही यह प्रस्ताव रखा, उसने तुरंत इसे अस्वीकार कर दिया और कहा, "यह असंभव है। मुझे कानूनी तौर पर इस दुनिया को छोड़कर उससे शादी करनी होगी! मैं रखैल बनकर रहने को तैयार नहीं हूँ।"
उसे इस बात की ज़रा भी परवाह नहीं थी कि उसे पूरी तरह से छोड़ देना मेरे लिए अन्याय था। इसके बजाय, उसने कहा, "इस बच्ची को अच्छे घर में इतना लाड़- प्यार देने से पहले तुम्हें सोचना चाहिए था। मैंने शोक मनाने का ज़िक्र कहाँ किया? तुमने खुद मुझसे वादा किया था!"
मैंने कमजोर तर्क देते हुए कहा, "मैं दो जिंदगियां संभाल सकता हूं। तो दो प्रतिज्ञाएं लेने में क्या हर्ज है?"
इस पर उसने फटकार लगाते हुए कहा, 'राजाओं और राजकुमारों के ज़माने में ऐसी बातें मत कहो। अब कानून बदल गए हैं। अगर कोई औरत एक ही समय में दो मर्दों के साथ रहती है, तो क्या तुम इसे बर्दाश्त कर लोगे? ये तो कुछ भी नहीं है। तुम्हें दोनों में से एक को चुनना होगा। अगर चाहो तो उसके साथ रहो, अगर नहीं तो उसे छोड़कर उससे शादी कर लो! मैं तो गृहिणी हूँ! मैंने अभी तक इस बारे में किसी से बात नहीं की है। सोचो अगर मैंने आवाज़ उठाई तो क्या होगा!'
मैं सचमुच डरा हुआ था! मुंबई में पत्रकारिता जगत पर प्रतापराव नाइक का अपार प्रभाव मैं महसूस कर रहा था। ऑल इंडिया रेडियो पर भी उनके शब्दों का काफी प्रभाव था। इस दौरान मैंने रेडियो ऑडिशन पास कर लिया था और मुझे वहां नियमित कार्यक्रम मिलने लगे थे। अगले छह महीनों के भीतर ही मैं राष्ट्रीय स्तर का कलाकार बन गया।

"तुमने मुझे छह महीने से छुआ तक नहीं है, है ना?" उसने कांपती आवाज में पूछा।
मैं बहुत असमंजस में थी। मैंने उसे गले लगाया और चूमा, "ऐसा कुछ नहीं! मुझे कार्यक्रम की तैयारी करनी है। मेरा किसी और से कोई संबंध नहीं है!"
उसने कोई आपत्ति नहीं जताई। इसके विपरीत, पहली बार उसने सक्रिय रूप से भाग लेना शुरू किया।
दो साल की बच्ची गहरी नींद में सो रही थी।

४
देर रात उसने मुझे कसकर गले लगाया। उसने मुझे चूमा और बोली, "मुझे कोई दाग नहीं चाहिए, कोई साड़ी नहीं चाहिए, कोई नया घर नहीं चाहिए। चलो इसी चॉल में रहते हैं। अगर कोई काम नहीं मिला, तो मैं चार घरों के कपड़े धोकर और बर्तन साफ करके तुम्हें रोटी खिलाऊँगी। और कुछ मत करना!"
मैं इस भ्रम में नहीं फंसा कि यह ताज मुझे सम्मान दिलाएगा! मुझे एक बार फिर महसूस हुआ कि मुझे सिर पर छत और पेट भरने के लिए सूखी रोटी के अलावा और कुछ नहीं चाहिए।
चंपा परिवार की ओर से भी विरोध हुआ। इससे पहले, इसी कार्यक्रम में हजारों लोग जमा हुए थे।
देवताओं को जीतने वाला, जिसने पश्चिमी भारत को जीता और उत्तरी, मध्य और पूर्वी भारत पर विजय प्राप्त की।
भले ही मैं एक अच्छी गायिका थी, लेकिन मेरी आर्थिक क्षमता के बारे में एक गायिका के अलावा और कौन सोच सकता था? मैं बचपन में अशिक्षित थी। मुझे अंग्रेजी नहीं आती थी। मुंबई के शिक्षित समाज में मेरा तालमेल नहीं बैठ पाया। एक गायिका का जीवन केवल संगीत जगत तक ही सीमित नहीं था। मंत्रियों, राजनेताओं, वकीलों, प्रबंधकों जैसे प्रतिष्ठित क्षेत्रों के लोगों के साथ काम करना मेरे लिए सौभाग्य की बात थी।
यह उनके काम का हिस्सा था। मैंने हीराराम में हिंदी और संस्कृत सीखी। हालांकि मैंने महादेव मंदिर में गाय के बारे में शास्त्र पढ़े थे, लेकिन मुझे 'सुशीषित' जैसी कोई बात नहीं सिखाई गई थी। मैं विवाहित हूँ और एक बेटी का पिता हूँ। ऐसी पत्नी से तलाक लेना आसान नहीं है, यह अन्याय है, दूसरी शादी के बाद भी बेटे को पहले परिवार में घसीटा जा सकता है। उसने चंपा को इस स्थिति का स्पष्ट और कड़वा अनुभव कराया था। एक बार उसने मुझे बुलाया और मुझसे खुलकर बात की। अंत में उसने मुझसे पूछा, 'क्या तुम सचमुच चंपा से प्यार करते हो?'
मैं क्या कहूँ? मैंने सिर हिलाया और बातचीत करने के लिए बैठ गया। उसने आगे सोचा, 'क्यों नहीं? जब घर पर मेरी पत्नी और बेटी हैं?'
जैसा मैंने सुझाव दिया था, मैंने चंपा के गुणों और संगीत के प्रति उसके प्रेम की प्रशंसा की। चंपा की पत्नी को भी यह बात पसंद नहीं आई। उसने चंपा

से बहुत बातें कीं। अंत में, मैंने कहा, 'इसके बाद, आपको अजनबियों से मिलना बंद कर देना चाहिए। दो महीने में सब ठीक हो जाएगा।'
आइए इसका कार्यक्रम तय करें। जिसने इतना गायन सीखा हो, उसके लिए यह असंभव नहीं है।
लेकिन चंपा ने हार नहीं मानी। अगर वह हार मान लेती, तो मैं इस पूरे मामले से बच जाता। अब तक मैंने उसकी ज़िद कई बार देखी थी; लेकिन इस बार मैंने मान लिया था कि वह अपनी माँ से बहुत प्यार करती है, इसलिए इतनी ज़िद्दी है। चंपा पढ़ाई में अच्छी थी; लेकिन जब उसे एहसास हुआ कि विज्ञान और गणित में उसकी कोई रुचि नहीं है, तो उसने बी.ए.सी. की पढ़ाई छोड़ दी। उसकी माँ ने उसे बार-बार समझाया था कि कम से कम डिग्री तो मिल ही जाएगी; लेकिन उसने उनकी बात नहीं मानी। बाद में, उसने एक साल तक टाइपिंग और अकाउंटेंसी की पढ़ाई की। वह एक साल और पढ़कर डिप्लोमा हासिल कर सकती थी; लेकिन उसने उसे भी बीच में ही छोड़ दिया। उसने गायन सीखना शुरू किया; लेकिन उसमें भी उसने कोई खास मेहनत नहीं की। विदाल ने उसे 'यू एज' नाम की पत्रिका में एक साल तक संगीत पर लिखने का मौका दिया था। वह उसकी अंग्रेजी जाँचते थे। उसे कोई पैसा नहीं मिलता था; लेकिन उसके लेख छपते रहते थे। उसने वह भी छोड़ दिया। मुंबई में इस लड़की को, जो कुछ नहीं करती, पति कहाँ मिलेगा? उसकी माँ ने एक बार ऐसा कहा था।
लेकिन मुझे यह स्वीकार करना होगा कि उस समय मैं उसके व्यक्तित्व को पूरी तरह से नहीं समझ पाया था। उस समय मेरा जीवन भी अनिश्चित था। वह हमारे गुप्त शारीरिक संबंध का ज़िक्र इस तरह कर रही थी कि मेरे मन में यह डर बढ़ता जा रहा था कि मैंने कोई पाप कर दिया है।
आखिरकार, वह मुझे गोरेगांव में चमनलाल विकल के पास ले गई। उन्होंने शुरू से ही एक हजार रुपये फीस मांगी। मैंने भी बिना किसी झिझक के दे दी। बहुत ही चतुर वकील! उनका कार्यालय बहुत बड़ा था। उनके अधीन दस सहायक काम करते थे। मैं वातानुकूलित कार्यालय में बैठा और उनसे बातचीत की। सब कुछ सुनने के बाद उन्होंने कहा, 'इसमें कुछ नया नहीं है। ऐसी घटनाएं होती रहती हैं। कला के क्षेत्र में, सिनेमा के क्षेत्र में, और अन्य क्षेत्रों में भी। बहुत से लोग मुझसे सलाह लेने आते हैं। पहली पत्नी तलाक के लिए तैयार नहीं है। सिर्फ विवाह प्रमाण पत्र पर उसके हस्ताक्षर लेना तलाक नहीं है। मुझे लगता है कि आप दोनों को पंजीकरण करवा लेना चाहिए। पहली पत्नी की आर्थिक मदद

करें ताकि उसे हर महीने कोई नुकसान न हो। मैं आपकी इस बात से भी सहमत हूं कि किसी के साथ अन्याय नहीं होना चाहिए। आप दोनों के प्रतिनिधि होंगे। क्या आपने अंबा भवानी मंदिर में पूजा नहीं की? तो फिर डरने की कोई बात नहीं है। आप उसे बता सकते हैं कि उसमें अदालत जाने की हिम्मत नहीं है।' अगर आप जाते भी हैं, तो आप उस पर दबाव डाल सकते हैं। अगर वह सहमत नहीं होती है, तो आप उससे जिरह कर सकते हैं। आप यह भी कह सकते हैं कि 'वह मेरी पत्नी नहीं है।' यहां तक कि पड़ोसी के दुकानदार ने भी यही कहा।
अगर वह आती है, तो कहा जा सकता है कि वह घर के कामों के लिए आई थी, और एक-दो बार पैसों के लिए सोई भी। एक बात तो यह है कि वे सब गाँव के लोग हैं। उन्हें शायद हाल ही में आए दिवाभया-प्रीतिपक के दर्शन का ज्ञान न हो। अगर वे इस दुनिया में किसी चीज की कमी न होने का ध्यान रखें, तो उन्हें कोई आपत्ति नहीं होगी। अगर आप इस तरह चार साल बिताते हैं, तो आपका अपना लक्ष्य पूरा हो जाएगा।
चंपा ने सब कुछ तय कर दिया था। एक बार जब उसने फैसला कर लिया, तो उसका विरोध करने की शक्ति उसके पास कैसे बची? नायक ने विरोध करते हुए कहा, 'यह सब किसके खिलाफ हो रहा है?'
मैं सरकारी कर्मचारी हूँ। मैं इस योजना में शामिल होने के लिए अनिच्छुक हूँ, भले ही मुझे इसके बारे में पहले से पता हो, मेरी नौकरी प्रभावित होगी। मेरा घर का पता कहीं भी मत देना। मैं आपको बता दूं, मुझसे झगड़ा होने के बाद वह घर से चली गई, उसके बाद क्या हुआ, हमें कुछ नहीं पता। समझे?
इस अवसर का लाभ उठाते हुए मैंने चंपा से कहा, 'आपकी जमादाता, आप मां यावर की इतनी ऋणी हैं! मुझे उनका विरोध क्यों करना चाहिए और उन्हें स्वीकार क्यों नहीं करना चाहिए?'
इस पर वह ठंडी हंसी हंसते हुए बोली, 'चिंता मत करो। वे कहाँ जाएँगे? वे चार दिन बाद घर की तलाश में वापस आ जाएँगे! यही तो माता-पिता का प्यार होता है! तुम्हें कैसे पता?'
फिर उसने विज्ञापन देखा और कुया में दो घाटियों का विवरण पता किया। पाँच हज़ार पगड़ियाँ और पाँच सौ किराया। शादी से पहले, वह उसके साथ रहने आ गई। बाद में, उसने उसी पते पर शादी दर्ज करा ली। उसने संगीत जगत के कुछ लोगों को बुलाया और उन्हें कागज़ात सौंप दिए। परंजपे को छोड़कर, उनमें से किसी को भी मेरी पहली शादी के बारे में पता नहीं था। हालाँकि, वह पहले ही परंजपे

से मिल चुका था और उसे बता चुका था, 'वह शादी पूरी तरह से धोखा थी।' फिर भी, वह उससे मिला और मामला सुलझाने के लिए पच्चीस हज़ार रुपये दिए। पैसे मिलते ही, उसने एक पत्र लिखकर उस पर हस्ताक्षर कर दिए, जिसमें लिखा था, 'हमारा कोई संबंध नहीं है, हमें दूसरी शादी से कोई आपत्ति नहीं है।' वह भी अपने गाँव चली गई। फिर भी, दादा ने ही सुझाव दिया कि मैं तुमसे मिलूँ ताकि यह बात इधर-उधर न फैले। यह वही थे जिन्होंने इस समय विदाल का ज़िक्र करने का सुझाव दिया।
जब चंपा से पूछा गया कि रामकुमारी को प्रति माह कितना पैसा चाहिए, तो उसने जवाब दिया, "क्या तुम सचमुच जाना चाहती हो?"
लेकिन विकल ने तुम्हें बताया था, है ना?
‘किसने कहा कि आपको विकलांगों के बारे में सब कुछ सुनना होगा? हमें हर चीज के लिए भुगतान करना पड़ता है।’
अगर आपको खुजली करने की आदत पड़ गई, तो आप मरने तक खुजली करते रहेंगे! फिर इस पैर पर खड़े हो जाइए।
आप अपना जीवनयापन करने के लिए कैसे संघर्ष करेंगे? यात्रा की कठिनाइयों और गला चूसने की कठिनाइयों को सहने के अलावा आप पैसे कैसे कमाएंगे?
लेकिन विकाल ने कहा था, 'चार साल में गुस्सा शांत हो जाएगा।'
‘मैं तुम्हें दे देता हूँ! लेकिन मैं कहता हूँ, मुंबई में अब तुम्हारे पास क्या है? पूरा देश महंगाई की चपेट में है! इसके बजाय, मैं कहता हूँ – जाओ और अपने गाँव में रहो, मैं तुम्हें हर महीने पैसे भेजूँगा। इस गाँव से कम से कम चार लोग तो वहाँ होंगे ही!’
मैं चंपा की बात पूरी तरह समझ गई थी; लेकिन मामला पेचीदा लग रहा था। जब गाँव के भूखे लोग शहर आ रहे थे, तो वो गाँव कैसे जा सकती थी? यहाँ उसे कम से कम घरेलू कामगार की नौकरी तो मिल सकती थी। ये सब कहे बिना ही मैंने बस सिर हिला दिया। इसके बाद हर महीने कितना पैसा भेजना है, ये सवाल उठा। चंपा ने कहा, 'पैसे भेज दो।'
‘कीमत क्या है? कमरे का किराया तीस पैसे है।’
काफी विचार-विमर्श के बाद यह तय हुआ कि यह दो सौ रुपये थे। सभी आर्थिक लेन-देन एक समान माने जाते थे, इसलिए मेरे हाथ में कुछ भी नहीं था। उसने मेरे हाथ में गिनकर देखा तो पाया कि यह दो सौ दस रुपये थे।
मुद्रा रखना।

पंद्रह दिन बाद जब मैं बोरीवली चॉल गया, तो बकुले ने मुझे तुरंत नहीं पहचाना। शर्म से वह दरवाजे के पीछे छिप गई। चंपा ने मुझे जो दस रुपये दिए थे, उनमें से मैंने एक लेमोनेड निकाला। इसे देखकर उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई। मैंने उसका बढ़ाया हुआ हाथ पकड़कर उसे अपनी गोद में बिठा लिया। उसने अपनी माँ को 'पिताजी' कहकर पुकारा।
रामकुमारी रसोई में सिर झुकाए खड़ी थी। मुंबई लौटने के बाद उसने घूंघट पहनना छोड़ दिया था। उसका चेहरा पीला और मुरझाया हुआ लग रहा था। शायद वह इस स्थिति का सपना देख रही थी क्योंकि मैं पंद्रह दिनों से घर नहीं आया था। उसने पैसे देते हुए कहा, "ये दो सौ रुपये हैं। मैं हर महीने उसे ये दूंगा। मैं उसकी और भी मदद करूंगा। मैं कभी-कभी आता भी रहूंगा। मैं तुम्हें अकेला नहीं छोडूंगा।"
वह कुछ नहीं बोली। उसने पैसे नहीं लिए। मैंने कहा, "ले लो।"
नहीं। तुमने बिना सोचे-समझे बर्तन धोने का फैसला कर लिया था। इसके लिए भी अनुमति लेनी पड़ी थी!
मैं बिना किसी झिझक के उठा और उसके पास गया, लेकिन वह दूर खड़ी थी। मैंने उससे कहा, ‘मेरी ग्रह स्थिति ठीक नहीं है। शास्त्रों में लिखा है कि चाहे कितना भी हिल जाओ, दूसरा मौका नहीं चूकता। अगर किस्मत अच्छी हो तो भला कोई कैसे चूक सकता है? मेरी आमदनी भी बढ़ रही है। जल्द ही मैं तुम्हारे नाम पर घर खरीदूंगा। तुम्हारे नाम पर बैंक में दस-पंद्रह हजार जमा करूंगा। मैं तुम्हें नहीं छोडूंगा। अगर तुम्हें मेरी जरूरत हो तो चार दिन के लिए अपनी मां के घर आ जाना।’
वह मुझे डांटने लगी। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ, इसलिए मैं भी उठ गई। मैंने पैसे अलमारी के शेल्फ पर रखे और चली गई। मैंने बकुले से कहा, 'मैं वापस आऊँगी, बेटा,' और बाहर निकल गई। जाने से पहले मैं पीछे मुड़ी। बकुले को देखते ही मुझे चुनी के बेटे की याद आ गई। मेरा उससे कभी कोई रिश्ता नहीं था। जन्म देने वाली होने के नाते, वह मुझे कभी पहचान ही नहीं पाता। बकुले भी पंद्रह दिनों में मुझे भूल गया था। मैं रामकुमारी और बकुले के साथ वैसा ही रिश्ता कैसे रख पाऊँगी? क्या मैं भी इसके बाद बकुले को भूल जाऊँगी? मेरे गले में एक गांठ सी बन गई।
उसे महीने में सिर्फ एक बार बोरीवली जाने की इजाज़त थी। चंपा का मुझ पर नियंत्रण धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा था, और मुझे इसका एहसास भी नहीं हो रहा

था। वह मेरे सभी कार्यक्रमों की प्रबंधक बन चुकी थी। इसी वजह से, उसकी जानकारी के बिना बोरीवली जाने के लिए दो-ढाई घंटे का समय निकालना भी नामुमकिन था।
इसके बाद जब मैं पैसे लेने गया, तो रामकुमारी ने मेरा बहुत सम्मानपूर्वक स्वागत किया। मैंने बकुले से पूछताछ की। वह नीचे वाले कमरे में बच्चों के साथ खेलने गई थी।
‘आओ!’ मैंने रामकुमारी को पास बुलाया। वह आई। उसने अपना हाथ छड़ी पर रखा और पूछा, ‘क्या तुम नाराज़ हो?’
वह हंसते हुए बोली, 'मैंने मंदिर में पूजा के बारे में सोचा। मैंने लक्ष्मी लगाई, बस। उन्होंने मेरा हाथ देखा और कहा, मेरे ग्रह खराब हैं। शनि की मुसीबतें शुरू हो गई हैं। मुझे हर रोज शनि देव के नाम पर मंदिर में तेल का दीपक जलाने को कहा जाता है। कल शिंवारी को यह शुरू हुआ और आज आप आ गए!'
‘वह मेरे सिर पर बैठी है। उसे नीचे उतारने का संकल्प लो!’
'हां। मैं हर दिन इसी तरह प्रार्थना करता हूं।'
मुझे उस पर तरस आया। मेरी आँखों में आँसू भर आए। यही तो मेरी असली पत्नी है! मैंने दरवाजा बंद किया और मुखौटा पहन लिया। उसने भी मना नहीं किया। कितना बड़ा तोहफा! ऐसा तोहफा और कहाँ मिल सकता है?
दरवाजा खुला और उसने कहा, "बाकुले को बुलाओ और उसे ले आओ।"
"मेरे पिता के आते ही बकुला दौड़ती हुई आई। बिना किसी झिझक के वह मेरी मां के पास आई।"

५
चंपा बेहद खुश थी और ऐसा ही हुआ। दो महीने बीत गए। एक दिन उसके माता-पिता घर आए। उन्होंने श्रीखंड-पूरी का भोजन किया। वे बेटी के लिए रेशमी साड़ी और दामाद के लिए सूट लाए थे। उन्होंने उसे ये सब दे दिया। सब कुछ बहुत सहजता से हो गया। सुगंध सूंघते हुए चंपा ने मन ही मन सोचा, 'देखो, मैंने जो कहा था वही हुआ!'
मैं सिर हिलाए बिना नहीं रह सकती। हर मामले में, वह मेरी आवाज़ है।
मैं समझ गया, मैंने भी यही सोचा था।
जैसे ही घर पर फोन आया, उसने हमारे फोन नंबर वाला लेटरहेड प्रिंट कर दिया। उसने हमारे नाम वाले लिफाफे भी प्रिंट करवा लिए थे। चिट्ठियों और फोन का काम वही संभालती थी। उसने मुझे यह भी चेतावनी दी थी, 'अगर ऑफिस बंद है, तो हमें एक सेक्रेटरी की ज़रूरत पड़ेगी। अगर हम सेक्रेटरी से बात करने का फैसला करते हैं।'
इसमें एक तरह का तनाव है। आपको सब कुछ अपने आप तय करने की ज़रूरत नहीं है। अगर कोई सोचता है...
चंपा ने मोहन को यह बात मन में ही बता दी होगी। वरना, आप इसे किस तरह का व्यवहार समझते हैं?
वह कार्यक्रम का दिन और समय तय करने से लेकर, मानदेय निर्धारित करने, विज्ञापन की राशि तय करने, चिट्ठियों की कतरनें इकट्ठा करके उन्हें तारीख के अनुसार फाइल में लगाने तक, सब कुछ करती थीं। वह अपनी डायरी में कुछ और बातें भी लिखती थीं। वह लिखती थीं कि किस गाँव में, किस संगीत कार्यक्रम में कौन सा राग प्रस्तुत किया गया। फिर, अगर उस गाँव में वापस जाने का मौका मिलता, तो वह मुझे उस राग को छोड़ देने की सलाह देती थीं। वह अक्सर मुझे चेतावनी देती थीं, 'अगर मुझे मेरी माँ जैसी कोई पत्नी मिले जो तुम पर नज़र रखे, तो मुझे लगता है कि वह सतज माची की पत्नी है! तुम तो अभी से कलाकार हो, अनपढ़ और देश के बारे में अनपढ़!'
मेरी आदत है कि मैं आयोजकों द्वारा दिए गए पैसों के बारे में नहीं सोचती। एक बार मंच पर बैठने के बाद, मैं तीन-चार घंटे आराम से गाती हूँ। प्रतियोगी की उम्र, उनका उत्साह, तैयारी और दर्शकों से जुड़ने की उनकी क्षमता संगीत कार्यक्रम को और भी रंगीन बना देती है।

एक बार पूजा में एक कार्यक्रम था। एक बुजुर्ग व्यक्ति ने कहा, 'थोड़ा आराम करने के बाद भैरवी आएंगी।' यह भारतीय तरीके से मिलने का रिवाज था। ये बुजुर्ग खड़े हो गए और
उन्होंने कहा, "यहीं रुको।" चंपा, जो मेरे बगल में सड़क के किनारे बैठी थी, ने माइक्रोफोन छीन लिया और कहा, "अगली बार!"
बूढ़े आदमी ने कहा, "अगली बार तुम कब आओगे और मेरी बात सुनोगे?"
उसने जवाब दिया, 'अगर आप फोन करेंगे तो मैं अगले हफ्ते आ जाऊंगी। तारीखें तय हो चुकी हैं!'
मुझे यह बिल्कुल समझ नहीं आया। जब कोई व्यक्ति खाना खा रहा हो और मुट्ठी भर चावल मांगे, तो वह कहे 'अगली बार', ऐसा कैसे हो सकता है? क्या यही धर्म है? मैंने तुरंत गाना शुरू कर दिया। श्रो ने ऐसा दिखाया जैसे वह बहुत शोर मचा रहा हो। चंपा बहुत गुस्से में थी और उसके ढोल की आवाज़ से मुझे यह पता चल गया। ललितसर के कोमल राग की कर्कश ध्वनि इस संगत से और भी तेज़ हो रही थी, जिससे मुझे परेशानी हो रही थी। मैंने उसकी तरफ देखा। उसकी आँखों में कोई भाव नहीं था। गुस्सा होने पर भी वह ऐसे ही गाता रहा। अगर किसी और ने ऐसा अपमान किया होता, तो मैं इसे बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करता; लेकिन मैं उसकी बात समझ गया। बड़ी मुश्किल से मैंने राग के छोटे-छोटे कणों को अलग किया। राक्षस का अभिनय कर रहे बूढ़े व्यक्ति को भी यह सब समझ आ गया था, और उसके चेहरे पर दिख रहे हल्के दर्द से उसे यह बात स्पष्ट हो गई। पंद्रह मिनट में राक्षस का अभिनय समाप्त हो गया और भैरवी ने अभिनय शुरू किया।
फिर भी वह पूरे दृढ़ संकल्प के साथ डफली बजा रही थी।
जब रे मुंबई लौटी तो वह हंसते हुए बोली, "तुमने मेरा अपमान किया!"
‘अगली बार तुम हँसे। क्या इसका मतलब यह नहीं है कि कार्यक्रम तय करने के लिए तुम्हें पैसे देने पड़ते हैं? एक कलाकार के लिए इस तरह बात करना उचित नहीं है।’
‘तो सारे कार्यक्रम मुफ्त हैं! फिर आप पैसे क्यों लेते हैं?’
मुझे गुस्सा आया और मैंने कहा, 'देखो, एक बार रैंडे पैसे ले लेगा, तो गिग हाइक उसे वापस मांगेगा।'
काश मैं कर पाता। अगर तुम चुप रहकर अगले बैच पर ध्यान दोगे, तो कौन सुनेगा?' ‘अरे! तुमने तो घटिया उदाहरण दिया! तुम्हारा अनुभव साफ दिख रहा है!’ वह कड़वाहट से हंसी। उसकी हंसी में कुछ गलत नहीं था। वह पहले उदयपुर के गणपति

के दर्शन करने गई थी और उन्होंने उसे डांटते हुए कहा था, ‘पांच दिन में क्या मांग रही हो? पहले उठो।’
मुझे नहीं लगता कि मैंने जो उपमा दी थी उसमें कुछ गलत था। हालांकि, उसने इसे नजरअंदाज कर दिया।
हमें हर बकरी को स्वयं क्यों देखना चाहिए! चलो इस दावत में गाते हैं!
मैं यावहारा को बताना चाहता था कि उसे इस स्तर तक न लाए।
उसे तुरंत समझ नहीं आया कि क्या कहे। कुछ देर सोचने के बाद उसने कहा, 'तो हम दो कीमतें तय कर लेते हैं। अगर आपको पूरा कार्यक्रम चाहिए तो एक हजार रुपये, और अगर आपको प्रोडक्शन चाहिए तो सात सौ पचास रुपये। प्रोडक्शन कार्यक्रम ढाई से तीन घंटे में पूरा हो जाएगा।'
‘यह तो होटल में मिलने वाले पूरे भोजन और सीमित भोजन जैसा है! मुझे यह पसंद नहीं आया। इस व्यक्ति को भरपेट भोजन मिलना चाहिए, पर्याप्त मात्रा में। ‘इसके ऊपर दही और चीनी की मात्रा बढ़ानी चाहिए!’
"अगर आप ऐसा करेंगे तो एक कलाकार कैसे जीवित रह पाएगा?"
‘क्यों? क्या अब तुम्हें कुछ हो गया है?’
अरे, तुम तो किराए के मकान में रह रहे हो! क्या तुम्हें शर्म नहीं आती? तुम तो चार मंजिला घर में रहते हो।
आप एक लैटे पीने क्यों नहीं आते?
धीरे-धीरे उन्होंने एक और तरीका अपनाया। कार्यक्रम से पहले, उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि पंडित मोहनलाल जी, उनकी संगीत प्रतिभा और संगीत प्रेमी श्रीमती चंपा मोहन जी को विशेष धन्यवाद दिया जाए। आयोजक ने भी इससे सीख ली और कहा कि अगर वह उनका ज़िक्र करें तो कोई बात नहीं; लेकिन उन्होंने उनके प्रति सम्मान का कड़ा नियम बना लिया। लोगों द्वारा अनुरोध किए गए रागों की सूची सबसे पहले उन्हें दी जाती थी। मैं दृढ़ निश्चय के साथ केवल उन्हीं रागों को प्रस्तुत करता था जिन्हें वह मुझे प्रस्तुत करने की अनुमति देती थीं। मैं नहीं चाहता था कि कोई भी मुझसे बिना अनुमति के रागों का अनुरोध करे।
धीरे-धीरे ये सारी बातें संगीत जगत तक पहुँच गईं। ये सब मेरी जानकारी के बिना हो रहा था। इसी वजह से मुझे इस संदर्भ में कुछ भी कहना उचित नहीं लगा। संक्षेप में कहूँ तो, ‘एक कलाकार नाज़ुक फूल की तरह होता है। अगर उसकी रक्षा न की जाए, तो उस पर चारों ओर से हमले होते हैं।’ चंपा ने स्वयं अपने

रक्षक-देवता के लिए एक स्थान बनाया, जो मुझसे भी श्रेष्ठ है, और वहीं बस गए।
मुंबई और पश्चिमी महाराष्ट्र के संगीत समारोहों के दम पर उत्तर, पूर्व और मध्य भारत में ख्याति अर्जित करना उतना मुश्किल नहीं था। इसी दौरान दिल्ली-दरबारी में भी मेरा नाम गूंजने लगा था। नाइक ने उचित माध्यमों से दिल्ली स्थित शंकरलाल संगीत शैव के आयोजकों से संपर्क किया और यह सुनिश्चित किया कि दिल्लीवासियों द्वारा मेरे नाम की सिफारिश की जाए। मैंने यह भी सुनिश्चित किया कि मुझे सम्मेलन में देर रात का समय मिल जाए। वहां मैंने जो बागेश्री पुरस्कार प्रस्तुत किया, उसने न केवल दिल्ली, बल्कि पूरे उत्तर भारत को मंत्रमुग्ध कर दिया। नाइक के प्रभाव के कारण दिल्ली के सभी प्रमुख समाचार पत्रों के कला समीक्षकों ने मेरी प्रशंसा में लेख लिखे। इसके बाद पूरे भारत से, कलकत्ता, लखनऊ, इलाहाबाद, बनारस, पटना, भुवनेश्वर, कटक, भोपाल, वाराणसी, हैदराबाद से गाने के निमंत्रण आने लगे। प्रत्येक सम्मेलन में एक हजार से डेढ़ हजार रुपये आने लगे। चंपा ने शुल्क बढ़ाकर दो हजार रुपये कर दिया। आयोजकों ने भी वही शुल्क देना शुरू कर दिया।
इसी समय के आसपास, कु याम ये गुडविल हाउसिंग सोसाइटी की स्थापना हुई। मैंने जो पैसे बचाए, उनसे मैंने वहाँ चार कमरों का फ्लैट खरीद लिया। मैंने किराया चुकाया और मुझे अपने पैसों से किराया चुकाने का मौका मिला। क्या चंपा के बिना यह सब संभव हो पाता? एक कलाकार को ऐसी जगह की ज़रूरत होती है, और मैंने तो इस बात को और भी मज़बूत शब्दों में कहा, 'कितनी अफ़सोस की बात है! मुझे सच में इसकी ज़रूरत है!'

६
शादी के तीन साल बाद चंपा गर्भवती हो गई। यह भी उसकी योजना थी। वह चाहती थी कि उसकी असली संपत्ति इसी घर में हो। चार कमरों और दो बालकनियों वाले इस घर की वास्तुकला देखने के बाद ही वह गर्भनिरोधक का सहारा लिए बिना करीब आने के लिए राजी हुई।
उसकी गर्भावस्था उसके लिए एक बहुत बड़ी घटना थी। उसने स्वतंत्र रूप से रहना शुरू कर दिया। उसकी माँ घर आकर उसकी देखभाल करने लगी, उसे प्रसव कराने के लिए दाइयाँ भेजने लगी। माँ ने भी उसे प्यार से अपने घर बुलाया और उसे

खुशियाँ देने लगी। वह गाँव के सबसे बड़े स्त्री रोग विशेषज्ञ से नियमित रूप से जाँच करवाने लगी। वह यह पता लगाने में बहुत समय बिताने लगी कि उसे लड़का होगा या लड़की। अगर उसे बाईं ओर ज़्यादा हलचल महसूस होती, तो वह लड़की और अगर दाईं ओर, तो वह लड़का होने का मज़ाक बनाने लगी। उसने नई साड़ियाँ खरीदना शुरू कर दिया क्योंकि उसे लगता था कि गर्भावस्था उसके शरीर पर अच्छी लग रही है। नए कपड़े भी खरीदे गए। संक्षेप में, दुनिया पागल हो रही थी।
चंपा के गर्भवती होने पर मैं खुश क्यों न होती? लेकिन साथ ही, जब रामकुमारी को पता चला कि वह एक दिन भी नहीं रुकेगी, तो वह बहुत दुखी हो गई। मुझे इसकी चिंता नहीं थी क्योंकि वह उससे सिर्फ एक बार मिलने जा रही थी। मुझे उससे एक दिन भी रुकने की उम्मीद नहीं थी, न ही मुझे कोई डर था। सच कहूँ तो, मुझे कोई उम्मीद ही नहीं थी। अगले दिन, जब मैं उसके पैसे लेने गई, तो उसने मुझे बताया, और तब मुझे यह बात समझ आई।
‘हे भगवान! अब मुझे क्या करना चाहिए?’
‘नहीं, बकुला को अकेला छोड़ दिया गया था। अब, शनि देव ने प्रतिदिन तेल का दीपक जलाकर उसे अपना आशीर्वाद दिया है!’ उसका चेहरा उदास लग रहा था। उसने मेरे दोनों हाथ अपने हाथों में पकड़कर कहा, ‘अगर तुमने मेरे साथ दोबारा ऐसा किया भी, तो भी तुमने मुझे इस हालत में नहीं छोड़ा!’
मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। कमरे का दरवाजा बंद करने का ख्याल भी मेरे मन में नहीं आया। ऐसा लग रहा था कि उसकी भी ऐसी कोई उम्मीद नहीं थी। उसने बस एक ही इच्छा ज़ाहिर की, 'चलो साथ में मंदिर चलते हैं और प्रसाद लेकर आते हैं।'
मैंने भी बस सिर हिला दिया। उन्होंने कोई तारीख तय नहीं की, मैंने भी कुछ नहीं किया। उन्होंने बकुले को बुलाया। वह आई और कुछ देर उनकी गोद में बैठी रही, खुशी-खुशी लिमलेट का दूध का थैला पीती रही। बकुले अब पाँच साल की हो चुकी थी। किसी ने यह नहीं सोचा कि उसे किस स्कूल में दाखिला दिलाया जाए, कौन उसे स्कूल ले जाएगा। रामकुमारी को पूरा विश्वास था कि शनि देव की दृष्टि उस पर है, कि इसके बाद सब ठीक हो जाएगा।
मैंने मुस्कुराते हुए बकुले को चूमा, रामकुमारी के बालों में हाथ फेरा और मुस्कुराते हुए वहां से निकल गया।

अगले एक सप्ताह तक रामकुमारी की गर्भावस्था मेरे मन में ताज़ा रही। प्रसव के समय, बच्चे के पिता का नाम रखने का सवाल मेरे मन में मंडरा रहा था। अगर मैं गर्भपात करा दूं तो क्या होगा? मैंने सोचा: चंपा, जो इस गर्भावस्था में इतनी मग्न थी, उसे याद किए बिना बोरीवली जाना मेरे लिए नामुमकिन था। इसके अलावा, डॉक्टर के खर्चों को पूरा करने के लिए ऋण लेना भी संभव था।
दो दिन बाद, जब मैं बोरीवली गई, तो रामकुमारी मुझे देखकर खुशी से खिल उठी। बकुला खेलने बाहर गई हुई थी। दरवाजा बंद करके मैंने रामकुमारी को अपनी गोद में उठा लिया। उसके हल्के, पतले शरीर को थामकर मुझे बहुत खुशी हुई। तभी मुझे चंपा का भारी-भरकम शरीर याद आया। गपशप करते-करते बकुला ने अपनी पढ़ाई का विषय मोड़ दिया। इसी दौरान मैंने कहा, 'देखो, बच्चे बहुत ज्यादा हो गए हैं और हम उन्हें ठीक से पाल-पोस नहीं पा रहे हैं। हर कोई इतना खर्च नहीं उठा सकता। क्यों न हम गर्भपात करवा लें?'
उसकी आँखों में डर और चिंता साफ झलक रही थी। खुद को संभालते हुए उसने दृढ़ता से कहा, 'अगर तुम नहीं चाहते थे, तो तुम्हें चिंता करनी चाहिए थी! एक बार भी ऐसा होना पाप है। मैं नहीं आऊंगी। मैं एक प्लास लेकर तुम्हारे पेट पर मार दूंगी। अब तक तुम नहीं चाहते थे, इसलिए मैं घर पर ही रही। इसके बाद, अगर तुम चाहो तो मैं घर के चार काम कर दूंगी!'
अगले दिन, जब मैं मंदिर में रियाज़ कर रही थी, तब मेरे मन में यह विचार आया। भले ही हम इस खबर को गुप्त रखें, आज तो किसी को पता नहीं चलेगा। इस समय यह कहना कि 'यह बच्चा मेरा नहीं है' व्यभिचार का आरोप लगाने के समान होगा।
मुझे इसके बारे में क्यों नहीं बताते? मैं चीख पड़ूँगी। मुझे थोड़ा सा दो।
मुझमें ऐसा करने की हिम्मत कभी नहीं होगी।
इसका निर्माण हो चुका था। मुझे यह भी समझ में आ गया था कि अगर अब अफवाहें फैलना बंद हो जाएं, तो वे धीरे-धीरे खत्म हो जाएंगी।
मैंने हाथ में पकड़ी हुई डफली को एक तरफ रखकर उठ खड़ी हुई। मैंने अपने शयनकक्ष का दरवाजा खोला और अंदर चली गई। उन्होंने यह नियम बना रखा था कि सुबह के इस समय दोनों कमरों के दरवाजे बंद होने चाहिए। उनका यह भी मानना था कि इस समय सोना लोगों के लिए, विशेषकर गर्भवती महिलाओं के लिए, अत्यंत आवश्यक है।

‘क्या तुमने सुना? मैं तुम्हें कुछ बताना चाहती हूँ। रामकुमारी भी गर्भवती है। अगर मैं डॉक्टर के पास जाकर गर्भपात करवाती हूँ, तो वह तैयार नहीं है।’
चंपा अभी भी वहीं था। उसने सोचा, 'रामकुमारी? रामकुमारी कौन है?'
‘मेरी पत्नी।’
वह सतर्क हो गई। 'आपकी पत्नी कौन है?'
"पहली पत्नी!" मुझे समझ आ गया कि क्या हो रहा है और मैं पीछे हट गया।
'आओ और देखो!'
मैं उसके पास गया।
"यहाँ बैठो—" वह हंस पड़ी।
मैं बिस्तर पर बैठ गया।
‘देखो, तुम्हारी एक ही पत्नी है। तुमने उससे शादी नहीं की है। न ही तुम्हारा कोई पंजीकरण है। तुम्हारा किसी और औरत से कोई संबंध नहीं है। समझे? अगर वो किसी और से गर्भवती है, तो उससे तुम्हारा क्या लेना-देना? और मेरी सुबह की नींद खराब करके मुझे ये सब क्यों बता रहे हो?’
मुझे आश्चर्य हुआ कि वह क्या सुझाव देने वाली है। लेकिन मैंने कहा, 'वह उस तरह की महिला नहीं है। मैं हर महीने उसके घर जाया करता था, और फिर ये सब हुआ!'
चंपा का दिल ज़ोर से धड़क रहा था। उसे गुस्सा भी आ रहा था। उसने कहा, 'अगर मैं, एक गरीब औरत, उसे खरीदकर भेज देती, तो क्या तुम ऐसा करतीं? यह बच्ची ज़िंदा नहीं रहेगी! वह बुढ़िया भी ज़िंदा नहीं रहेगी! मेरी जीभ पर काला तिल है। मेरा श्राप सच हो जाएगा!' यह कहकर उसने अपने दोनों हाथों की उंगलियां तोड़ दीं। फिर वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। अचानक रोना बंद करके उसने कहा, 'गर्भवती औरत को तीन महीने के बच्चे को पेट में लेकर नहीं रोना चाहिए। अगर उसे कुछ हुआ तो तुम्हारी गलती होगी! वह बच्ची मोहनलाल जी का नाम लेगी! उसे बाज़ार में कोई न बेचे!'
मेरी आत्मा सजीव हो उठी। इस गर्भ में भी एक आत्मा है। वही गर्भ जो मेरे जन्म से बना हुआ है! मेरे हृदय का साहस जरा भी कम नहीं हुआ। मैं हमेशा की तरह चुपचाप बैठी रही।
दिन भर उसने इस विषय को दोबारा नहीं उठाया। रात तक, माया सिर झुकाए, अपने बालों में उंगलियाँ फेरती हुई, इस विषय को उठाती रही, 'मैं पेप्पर्वा को

लेकर बहुत चिंतित हूँ! तुमने इतनी कम उम्र में इतनी शोहरत हासिल कर ली है कि दूसरे गायक, जो जुनून से भरे हुए हैं - यहाँ तक कि गुलाटी, यास या जाफर भी
- तुम्हारा मज़ाक उड़ा रहे हैं। मैंने तुमसे इस बारे में कभी बात नहीं की ताकि तुम्हारे करियर पर इसका असर न पड़े। अगर कुछ लोग ऐसे हैं जो कला के इस रास्ते से प्रभावित नहीं हो सकते, तो वे बस यह देखने का इंतज़ार कर रहे हैं कि कुछ हासिल होता है या नहीं। कौन जाने, शायद उन्होंने सीआईडी वालों को भी छोड़ दिया हो!'
अखबार इस खबर का फायदा क्यों नहीं उठाएंगे? अगर वे आपको बड़ी हेडलाइन दें और खबर छाप दें कि आपका एक बच्चा वेश्या से है, तो क्या होगा? यह सब जानने के बाद, हमारे दादा-दादी आपके बारे में अच्छा कैसे सोच सकते हैं? शायद उनका मन भी बदल जाए!
मैं सचमुच बहुत डरा हुआ था! क्योंकि नायक साहब द्वारा आशीर्वाद वापस लेने का मतलब कार्यक्रम में शामिल न होना, पत्र में प्रतिकूल टिप्पणियाँ मिलना और भी बहुत कुछ हो सकता था! वे अपने बालों में उंगलियाँ फेरते हुए बचाव के सुझाव देने लगते थे।
कुछ देर बाद वह सो गया, लेकिन मैं जागती रही; मैंने कितनी बड़ी गड़बड़ कर दी थी! रामकुमारी के पास जाते समय मुझे सावधान रहना चाहिए था – हे भगवान! मैंने गलती कर दी।
सुबह चाय पीते हुए वह हंसते हुए बोली, 'मैं तुम्हें एक हजार रुपये दूंगी। बोरीवली में किसी डॉक्टर के पास जाओ। डॉक्टर से कहना कि मैं गरीब हूं, बच्चे का पालन-पोषण नहीं कर सकता; लेकिन मेरी पत्नी मेरी बात नहीं सुनती। जब मैं उसे जांच के लिए लाऊं, तो उसका गर्भाशय निकलवा देना। एक हजार रुपये।'
काम पूरा हो जाएगा।
बाहर निकलने का रास्ता सपने जैसा लग रहा था; लेकिन बस यही था। वह चार घरों का काम किए बिना बच्चे को पालने के लिए तैयार थी। ऐसी स्थिति में, उसे धोखा देना और गर्भपात कराना पाप है। इसके बाद हमें सावधान रहना चाहिए। पेप्पर्वा द्वारा चंपाना के बारे में फैलाया गया डर भी झूठ है। कौन सा पत्रकार ऐसी बातों में दिलचस्पी लेगा? लोग मेरे गाने सुनने आते हैं, ऐसी बातों का उन पर कोई असर नहीं पड़ेगा। फिर भी, मुंबई में शायद ही कोई कार्यक्रम मिलेगा। दिल्ली, कोलकाता, आगरा, बनारस – कितना विशाल देश है!

मेरा दिल भारी हो गया। मैंने बोरीवली में दो घंटे इधर-उधर भटकते हुए बिताए। मैंने होटल में चाय पी। लेकिन रामकुमारी से मिलना मुश्किल लग रहा था। मैं डरी हुई भी थी। मैं लोकल ट्रेन से घर लौटी। मैंने चंपा से कहा, 'मैं चार-पाँच डॉक्टरों से मिली। सबने एक ही बात कही, उसकी सहमति के बिना गर्भपात संभव नहीं है। ऐसा लग रहा है जैसे कोई कानून आ गया हो!'
‘फिर उसे बताओ कि गर्भावस्था ठीक से विकसित नहीं हो रही है, तुम्हारी और बच्चे की जान खतरे में है।’
मैं तुम्हें यही बताने वाला था; लेकिन डॉक्टर गुस्सा हो गया! उसने कहा, ‘क्या तुम मुझसे झूठ बुलवा रहे हो? मैं पुलिस को बता दूंगा!’ मैंने उसके सामने एक हजार रुपये रख दिए और चला गया। इस पर
इस बार तो उसने कुछ सोचा ही नहीं। उसकी आँखों में आँसू भर आए, लेकिन उसने उन्हें ज़ाहिर नहीं होने दिया।
वह मुड़ी और चली गई। मुझे राहत महसूस हुई।
अगली सुबह, उन्होंने हमेशा की तरह भगवान गणेश की पूजा की और मुझे पास बुलाया। मैं गया। उन्होंने मुझसे डफ लाने को कहा। मैं ले आया। उन्होंने कहा, 'मैं
"हैनन, बस यही है!"
मैंने सावधानी से सोचा, 'मुझे पहले बताओ क्या है!'
वह गुस्से से हंस पड़ी, "क्या? तुम उससे मिलना बंद नहीं करोगे?"
'मैंने ऐसा कहां कहा था?'
तो मेरी बात मान लो। इसके बाद तुम उससे कभी नहीं मिलोगे। अगर मिल भी गए तो उसके गर्भ में पल रहा बच्चा वहीं मर जाएगा! संकल्प गणपति ने मुझे ऐसा वरदान दिया है। मैंने इसे अपने दर्शन में देखा है!
तो बात यहीं खत्म होती है। दूसरे वादे का सवाल कहां से उठा?
उसने मेरा दाहिना हाथ खींचकर अपने पेट पर रख दिया और बोली, "अगर तुम उससे दोबारा मिले तो यह बच्चा मर जाएगा! स्वयं गणेश जी ने ऐसा कहा है। मेरा बच्चा जीवित रहे!"
वह कराहने लगी।
मुझे घबराहट होने लगी। उसका पेट मृगतृष्णा से लाए गए तंबू जैसा लग रहा था। हर सांस के साथ उसका पेट गुड़गुड़ा रहा था। यह असहनीय था। इस स्थिति से बचने के लिए, मैं दूर हट गई, 'ठीक है! मैं उससे नहीं मिलूंगी।'

एक सप्ताह के भीतर ही, मुझे उस समय के सारे झूठ पूरी तरह समझ आ गए; लेकिन यह सब शब्दों के माध्यम से हुआ था।
उस टिप्पणी ने विषय बदल दिया। वह तो बड़ा आलसी है! वह ऐसे सो रहा है जैसे घर में गद्दे पर सो रहा हो। अब वह पैंतालीस साल का है। वह तैंतीस साल का था।
पच्चीस साल पहले, उसकी मुलाकात रामकुमारी से हुई थी, और तब वह अपनी गर्भावस्था और बच्चे के जन्म पर ध्यान दे रही थी। शायद इस बार भी मैं ज़िम्मेदारी से बचना चाहती थी! इसीलिए मैंने मन ही मन यह झूठा वादा किया। उसने उसे गले लगा लिया था।
क्या मुझे टिपानिस को जगाना चाहिए? अगर मुझे इन यादों से छुटकारा पाना है, तो मुझे गपशप शुरू करनी होगी। इसे देखकर मुझे पच्चीस साल की गहरी आस्था याद आ गई।
नेह। इससे पहले भी वह तीन साल से इसी रास्ते पर चल रहा था। फिर भी, असली नेह का जन्म हुआ।
ये पच्चीस साल पहले की बात है। यकीन मानिए, ऐसी स्थिति में बिना दोस्त के दोस्ती कैसे हो सकती है? मैं उससे सब कुछ कह सकती हूँ। जो कुछ भी सुनती हूँ, मन में बसा रहता है। वरना क्या मैं उसके साथ इतना समय बिताती? वैसे, मुंबई में कुछ अच्छे हारमोनियम वादक एक साथी की तलाश में थे!
दक्षिण दिल्ली में एक संगीत कार्यक्रम था। चंपा छह महीने की गर्भवती थी, इसलिए वह नहीं आई थी। उसकी अनुपस्थिति के कारण, इतनी लंबी यात्रा में मुझे अकेलापन महसूस हुआ। मैं प्रथम श्रेणी के डिब्बे में खिड़की के पास चुपचाप अकेली बैठी थी। बाहर पहाड़ों, पेड़ों, नदियों, खेतों, लोगों और दौड़ते हुए मवेशियों को देखते हुए, मेरे हृदय में उमड़ता क्रोध कितनी बारीकी से देखा जा रहा था! उसके कुछ सूक्ष्म भाव स्वतः ही प्रकट हो गए। मुझे पता भी नहीं चला कि कितने घंटे बीत गए। उस दिन मैंने पूरी श्रद्धा से प्रार्थना की, 'हे भगवान, मुझे इस तरह अकेले यात्रा करने का अवसर और अधिक बार मिले!'
उस समय टिप्पानिस डलास से गुजर रहे थे। जब ट्रेन रुकी,
वह कभी-कभार आकर बातचीत करता था।
कैलाश ईस्ट स्टेशन पर संगीत मंडली के कार्यक्रम के बाद रहने वाले लोग श्रीवा ताव? मुझे नाम याद नहीं आ रहा। उन्होंने निवेदन किया, 'पंडितजी, मैं आपसे हमारे घर की सफाई करने की उम्मीद करता हूँ। कल रात के लिए इस कार की बुकिंग है, है ना? इसे बदलना मेरी ज़िम्मेदारी है। क्या हम कल शाम अपने घर

पर एक छोटी सी सभा कर सकते हैं? लगभग बीस लोग होंगे। सभी जानकार श्रोता हैं। आपको बहुत अच्छा अनुभव होगा!'
निजी मुलाकात कुछ इस तरह रही! चंपा संगीत ने मुझे ऐसा महसूस कराया मानो मैं गा रही हूँ, मानो मोहनलाल जी का गीत सुन रही हूँ! इस मुलाकात में मुझे कितना हल्कापन महसूस हुआ, इसका मैंने अनुभव किया। दर्शकों से मुझे कितना प्यार और स्नेह मिला! वाह!
उन्होंने वापसी यात्रा के लिए टिप्पानीस के लिए प्रथम श्रेणी का टिकट भी बुक कर दिया था। ट्रेन फरीदाबाद से गुजरी और मैंने टिप्पानीस से सहजता से बातचीत शुरू कर दी।
"राजरामराव, क्या मैं आपसे बात कर सकता हूँ? मैंने अभी तक किसी से बात नहीं की है।"
उन्होंने मेरे हाथ की ओर देखा और अपनी आंखों से इशारा करते हुए कहा, "यह राजाराम है।"
इसमें कोई संदेह न करें कि यह सच्चे पिता का है!
"क्या आपको इस परिवार के मामले के बारे में पता है, माँ?"
"बहुत ज़्यादा थोड़ा।"
"आप क्या जानते हैं?"
वह हँसते हुए बोला, "बस, पहला वाला हो गया, एक लड़की है, यह दूसरा है, और इसी तरह आगे भी।"
"आप यह कैसे जानते हैं?"
"संगीत जगत में हर कोई यह बात जानता है। अब कोई इस बारे में बात नहीं करता।"
'जी?' यह कहते हुए मुझे थोड़ी शर्मिंदगी महसूस हुई, लेकिन ऐसा लगा जैसे मैं आखिरकार आज़ाद हो गई हूँ। इससे मुझे यह कहने का मन हुआ, 'मुझे तो उन चार दमादों के बारे में पता भी नहीं है, तुम्हें पता है?'
भारत में इन संगीत संस्थानों से जुड़े सभी लोग यह बात जानते हैं!
मुझे अपने चचेरे भाई की मूर्खता पर गुस्सा आ रहा था। उसने झट से बात काटते हुए कहा, "मुझे कल की निजी बैठक के लिए उपहार स्वरूप एक हजार रुपये मिले हैं। मैं तुम्हें बोरीवली स्थित घर का पता दे दूंगा। क्या तुम ये पैसे उसे दे दोगे? वैसे भी, निजी बैठक की खबर गुप्त रखनी चाहिए। चंपा सोचेगा कि वह देर से क्यों आया। आरक्षण में गड़बड़ हो गई थी।"

मेँ आपको बताना चाहता हूँ।
चिंता मत करो। मैं इन्हीं उंगलियों से तुम्हारा साथ देता हूँ!
पिछले पच्चीस वर्षों से वह अपना वादा निभाती आ रही थी। इस समय मुझे दृढ़ विश्वास था कि वह गर्भवती है, यह कितना अद्भुत था! हालाँकि वह कार्यक्रम में शामिल होने की योजना नहीं बना रही थी, फिर भी वह वहाँ आयोजित होने वाली निजी पारिवारिक बैठकों के लिए राजाराम को पाँच लाख रुपये दे सकती थी। राजाराम सचमुच एक सच्चे पिता हैं! जब मैंने उन्हें एक हजार रुपये दिए, तो उन्होंने तुरंत सुझाव दिया, 'पंडितजी, कौन जाने रामकुमारी को दिए गए पैसों का सही इस्तेमाल करना आता है या नहीं। अगर आप उसे इसी तरह पैसे देते रहेंगे, तो आपका भी उससे कोई हिसाब-किताब नहीं रहेगा। मेरे घर के पास एक बैंक है। मुझे मेरा पता देकर वहां एक खाता खुलवा दीजिए। आप जो भी पैसे देंगे, मैं उसमें जमा कर दूंगा। जरूरत पड़ने पर मैं यह चेक आपके हस्ताक्षर के लिए ले आऊंगा। अगर आप उसे हर महीने एक निश्चित राशि देंगे, तो आपका भी उस पर नियंत्रण रहेगा।'
समझदार आदमी! अगर इन सभी लेन-देन में केवल विश्वास ही कायम रहता, तो किसी न किसी मोड़ पर कोई न कोई उनके विश्वास को धोखा देता और रिश्ता टूट जाता! यही असली बात है।
यवहार बरा!
सुप्रभात! हमारा विमान एक घंटे में फ्रैंकफर्ट में उतरेगा। नाश्ता पाँच मिनट में परोसा जाएगा। कृपया अपना कमरा साफ कर लें।
मोहनलाल ने घड़ी देखी। घड़ी में अभी भी न्यूयॉर्क का समय चल रहा था। न्यूयॉर्क से फ्रैंकफर्ट, कितना समय लगेगा? सात घंटे लगेंगे? मुझे एयर होस्टेस के बारे में सोचना पड़ेगा। सात घंटे आगे। यहाँ उजाला कितने बजे होता है? मैं पर्दे खींचकर बैठा हूँ।
उसने टिपानी को जगाया। दोनों किसी तरह शौचालय तक पहुँचने के लिए संघर्ष करने लगे।
हमें फ्रैंकफर्ट में चार घंटे इंतजार करना पड़ा। हम अपना सामान लेकर मुंबई पहुंचे।
वह गिरने ही वाला था। हवाई अड्डे पर अपने हाथ अच्छी तरह धोते और चेहरा पोंछते समय, उसे गाने की तीव्र इच्छा हुई। वह डफली और हारमोनियम के पास आया था। इस देश में इतनी सार्वजनिक जगह पर रागदारी गाने से लोग चुप कैसे रह

सकते थे? उसका मन विषैला हो गया था। उसे लगा कि अगर वह थोड़ा गा ले, तो शायद वह इस स्थिति से बाहर निकल सके।
जैसे ही मुझे वह बात याद आई, वह मुझे एक कोने में कांच के दरवाजों और खिड़कियों वाली एक इमारत में ले गया। सामने के कांच के पार, चालीस से पैंतालीस छोटे-बड़े हवाई जहाज खड़े दिखाई दे रहे थे। बाहर ठंड होने के बावजूद, अंदर गर्माहट थी। यात्री भी इधर-उधर घूम रहे थे; लेकिन उस कोने में सन्नाटा छाया हुआ था।
ʻ हं– हणा!’
"कितनी मधुर?"
"बाहर ठंड है। सुबह हो गई है। अहीर भैरव बनो!"
मोहनलाल ने धीरे-धीरे गुनगुनाना शुरू किया। एक सुंदर धुन शुरू हो गई थी।
नोट लेने वाले की उंगलियां ताल दिखा रही थीं। मधुर स्वर में गीत बहने लगा।
रात भर जागने और हवाई यात्रा के तनाव के बावजूद, मंत्र की लय सहजता से बहने लगी। जल्द ही, गीत बिना किसी रुकावट या दबाव के स्वतंत्र रूप से बहने लगा।
गीत इस विश्वास के साथ शुरू हुआ कि ताल और हारमोनियम इसके साथ चल रहे हैं।
मध्य और द्वितीय ताल भी स्वाभाविक रूप से एक साथ आ गए। मन संतोष से भर गया।
गाना खत्म हुआ और मैंने सिर हिलाया। सात-आठ गोरे लोग चुपचाप गाना सुन रहे थे। उनमें से एक ने कहा, "बहुत बढ़िया!" दूसरे ने चिल्लाकर कहा, "कैबेलो।" तीसरे ने चिल्लाकर कहा, "केल बेले युज़िक!"

पाँच

१
न्यूयॉर्क से आए हुए मुझे एक हफ्ता हो गया था। टेलीफोन और बिजली के बिल आ गए थे।
हाँ, ऐसा ही था। इसके साथ ही एक सूचना भी आई थी कि वह लाट आया है। कुल बीस हज़ार रुपये देने थे। उसके पास कोई कार्यक्रम तैयार नहीं था। जब वह पिछले ढाई महीने से गाँव में ही नहीं था, तो कार्यक्रम कौन तय करता? बरसात का मौसम था। एकमात्र उपाय तिपानियों से कर्ज लेना था। वह जुए में तेरह हज़ार डॉलर - तीन लाख नब्बे हज़ार रुपये तो नहीं लुटाएगा; लेकिन इसके बारे में सोचे बिना नहीं रहेगा। रहने दो। वह कुछ समय से इसके बारे में सोच रहा होगा। यह मोहनलाल तो एक गैर-जिम्मेदार, बेलगाम आदमी है, इसमें नया क्या है! लेकिन मैंने उससे लिया हुआ एक-एक पैसा लौटा दिया है। तो मुझे उससे क्यों डरना चाहिए? मैं तो ब्याज भी देने को तैयार हूँ; लेकिन वह देना नहीं चाहता। उसकी इतनी मदद करने में क्या बुराई है? बिना कोई नया पैसा खर्च किए, घर के बाहर किसी होटल में एक कप चाय भी पिए बिना, कमाया हुआ पैसा चक्रवृद्धि ब्याज से बढ़ता जा रहा है! तो जरूरी चीजों के लिए चार पैसे ले जाने में क्या बुराई है? सिवाय इसके कि मैं इसे हर जगह अपने साथ ले जाता हूँ।
जैसे ही मेरे मन में फोन उठाने का ख्याल आया, फोन की घंटी बज उठी। ये उसका फोन था। नहीं!
‘ओह, चा! तुम्हारी उम्र सचमुच सौ – अहम् – एक सौ एक साल है! हे भगवान! मैं तुम्हें बुला रहा था, तुम्हारा फोन आ गया।’
"क्या तुम घर पर हो? मैं इधर आ रहा हूँ।"
'घर कैसा है? चलो बताओ! वह घर तुम्हारा ही है!'
यहां तक कि कथावाचक भी जानता था कि मोहनलाल कभी-कभी इस मनोदशा में आ जाते थे। वर्षों से यह सब सुनते-सुनते वह इस पीड़ा को महसूस करने में असमर्थ हो गया था।
‘लेकिन लैटिन भाषा में होने से एक अलग ही अपनापन और आनंद मिलता है, है ना?’ वह हँसे। मोहनलाल को थोड़ा बेहतर महसूस हुआ।
मैं जाता हूँ। क्या कोई और है? मैं एक निजी मामले पर बात करना चाहता हूँ।
"क्या आपको नहीं पता कि इस लैथम हॉल के साथ तीन घाटियाँ हैं?"

विचैट शाम को पोकर खेलने के लिए कुछ बार इस जगह पर आया था; लेकिन फोन का जवाब नहीं दिया गया।
मैं ऐसा कभी नहीं करना चाहता। बड़े शहर में दूरियाँ इतनी ज़्यादा होती हैं कि बेवजह चक्कर लगाना ठीक नहीं होता।
इसके पीछे जो भी कारण हो, यहाँ कई बातें सुनने को भी मिलती हैं। हमेशा
वह माहिम स्थित अपने घर से यहाँ तक पैदल चलकर आते थे; लेकिन आज वे लोकल ट्रेन से आए और बाद में पैदल चले।
टिप्पणियों में चाय-बिस्किट और अन्य नाश्ते का जिक्र किया गया, 'बकुला आ गई थी। वह कह रही थी कि उसका गंतव्य तय हो गया है।'
‘जी?’ हालाँकि यह विस्मयबोधक शब्द निकला, लेकिन मोहनलाल का चेहरा इस टिप्पणी पर खिल उठा। यह तो अपेक्षित ही था, है ना!
वह आपसे शादी की तारीख दोबारा तय करने का इंतजार कर रही थी।
‘क्या अब भी समझ नहीं आया?’ मोहनलाल ने बिना सोचे-समझे मन में कहा। उसे यह भी एहसास हुआ कि उसका सवाल बेवकूफी भरा था। अगर समझ आ गया होता, तो क्या तुम समझ नहीं जाते? लेकिन कैसे समझते? कौन बताता? तुमने समझने की कोशिश कहाँ की? बल्कि, तुम तो न समझने के लिए ही समझने की कोशिश कर रहे थे। मेरे मन में अपराधबोध भर गया। मैं उस टिप्पणी पर चुप रहा था।
मैं खिड़की से बाहर देख रही हूँ, मन में उठ रही इस तड़प को निहार रही हूँ! बकुला की उम्र कितनी है? उसका जन्म तब हुआ था जब मैं तीन साल की थी। वह ज़रूर तीन साल की रही होगी! तुमने इतने साल पहले ऐसा क्यों नहीं किया? शायद टिप्पणी करने वाले को इसका कारण पता हो; पर मैं तुम्हें नहीं बताऊँगी। अगर मुझे याद आया, तो शायद बता दूँगी। लाना, ये कैसे होगा? क्या किसी को पहल करके नहीं आना चाहिए? मेरा दिल बैठ गया। उसे देखे हुए चौबीस साल हो गए हैं। हालाँकि मैं उसी गाँव में रहती हूँ। मैं नए स्टेशन पर उतरकर घर जा सकती हूँ; लेकिन पिछले पंद्रह-बीस सालों में मुझे लोकल ट्रेन में बैठने का समय ही नहीं मिला। एक बार टैक्सी से सफ़र करने की आदत पड़ जाए, तो लोकल ट्रेन के सफ़र की यादें भी मुझे सिहरन पैदा कर देती हैं।
एक छह साल की बच्ची। जब मैंने पुकारा, "पिताजी, आइए," तो वह अपना खेल छोड़कर दौड़कर कैसे आ सकती थी? नींबू पानी के लिए नहीं, बल्कि अपने पिताजी से मिलने के लिए! यह उसकी आँखों में साफ दिख रहा था। उसकी आँखें, नाक, भौहें और माथा बिल्कुल मेरे जैसे थे।

चंपा ने उस समय अपनी माँ से शपथ ली थी। रामकुमारी, मैंने गर्भ की कसम खाई थी! इस नोट से मुझे समझ आ गया था कि एक लड़के का जन्म हुआ है; लेकिन मैं उसे देखने नहीं गई। मैंने उसे इसी कारण से नहीं देखा! धीरे-धीरे मेरे मन से डर भी दूर होने लगा। अगले साढ़े तीन साल तक मैंने गाना छोड़ दिया और दिल्ली चली गई, मैं अपने पिछले जीवन को पूरी तरह से भुला देना चाहती थी। वहाँ से मैं रामकुमारी और चंपा दोनों से दूर रहने लगी। चंपा हर महीने इस खर्च के लिए पैसे इकट्ठा करती है; लेकिन उसने कभी कुछ नहीं माँगा, और न ही मैंने कुछ दिया। राजाराम को पता होना चाहिए कि लड़का कैसा है। मैं बिना सोचे- समझे उसे नहीं बताऊँगी। मैंने पूछताछ क्यों नहीं की?
"क्या मुझे फैसला करना चाहिए?"
तो क्या हुआ? विदाला को ही लड़की की शादी करवाने की पहल करनी चाहिए थी, है ना? विदाला को ही अपने नाम से विवाह प्रमाण पत्र जारी करवाना चाहिए था! मोहनलाल पूरी तरह भावुक हो गए थे। यह सच है! जब वे छह साल के थे, तब उन्होंने देखा था
काश वो प्यार आज भी वैसा ही होता! मेरे गले में एक गांठ सी आ गई। लेकिन पिता ही क्यों नहीं? यह तभी उचित होगा जब विवाह किसी बुद्धिमान व्यक्ति द्वारा संपन्न कराया जाए। बकुला भी एक बुद्धिमान लड़की प्रतीत होती है जो परंपराओं और रीति-रिवाजों का पालन करती है।
मैं चाहती हूं कि वह आकर मुझसे मिले। क्या उसके पास फोन है?
‘वह घर पर नहीं है। वह दफ्तर में है। वह सचुरी मिल्लम में सचिव के रूप में काम करती है। उसके पास बी.कॉम की डिग्री है, है ना?’
‘अरे वाह!’ वह खुश हो गया। ‘यह तो समझदारी भरा कदम लगता है! यह फैसला किसने लिया?’
लेकिन अब फैसला बदल गया है। बेटा उसके साथ काम करता है।
‘इस पर भी, आप हंसते हैं!’
तिपानिस को समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या कहें। उन्हें पता था कि आगे जो कहेंगे वह संवेदनशील विषय होगा। यह सोचकर कि इस मामले में उन्हें उम्मीद के मुताबिक सफलता मिल गई है, उन्होंने विषय बदल दिया। उन्होंने सूरत में अपने चचेरे भाई के प्रयासों के बारे में बताया, जो उनके नेतृत्व में काम कर रहे थे।

उन्होंने कहा, ‘वे इस कार्यक्रम की शुरुआत आपके साथ करना चाहते हैं। इसमें कई सदस्य हैं; लेकिन
इस संस्था के पास बहुत पैसा है। मेरा मानना है कि पैसे की परवाह किए बिना, यह कार्यक्रम उनके द्वारा दिए जाने वाले अधिकतम धन से किया जाना चाहिए। मुझे संस्था से एक पैसा भी नहीं चाहिए। अगर भविष्य में संस्था की आर्थिक स्थिति सुधरती है, तो मुझे पूरा विश्वास है कि वे इस एहसान का कई गुना चुकाएंगे!
‘राजाराम, मैं तुम्हें यह बताने के लिए फोन करने ही वाला था कि मुझे तुम्हारे बीस हजार रुपये देने हैं। तभी तुम्हारा फोन आ गया।’
"बीस हजार? वे इतना खर्च नहीं उठा पाएंगे।"
मैंने अपनी जरूरत बता दी है। आप यह भी जानते हैं कि आज मेरा रेट एक रुपया है।
‘इस कला को आंकना सरासर बेवकूफी है। मैं आपको अपना अनुभव बता रहा हूँ। सूरत इलाके में कुछ बहुत अच्छे श्रोता हैं। मेरी बात सुनिए, इतनी जल्दी में कुछ मत कहिए। सोच-समझकर फैसला कीजिए!’ वह खड़ा हो गया। उसे पूरा यकीन था कि आपकी बात का इस पर कुछ असर जरूर पड़ेगा।

२
मोहनलाल उस लड़की की शादी की खबर सुनकर बहुत खुश हुआ जो अचानक समोआ आ गई थी। उसने बी.कॉम किया है। वह नौकरी भी करती है। वह अपने पैरों पर खड़ी है। वाह! मैंने गांव वापस आए बिना शादी की तारीख तय करने से मना कर दिया, लगता है मुझे अपने पिता से बहुत प्यार था! अगर मैं उसे मिलने के लिए बुलाऊं तो? वह मुझे पहचान लेगी। उसने अखबारों में मेरी तस्वीरें जरूर देखी होंगी। अगर उसे गाने का शौक है तो उसने मुझे इस कार्यक्रम में जरूर देखा होगा। जब वह छोटी थी, उसकी मां उसे अपनी मां के सामने सुलाती थी और वह चुपचाप डफ की आवाज सुनती रहती थी। जब टीवी सीरियल में कोई गाना बजता था, तो वह आंखें फाड़कर सुनती रहती थी! एक बार, एक छोटी सी धुन में, तारों के छह चक्कर एक के बाद एक लगे और वह रोने लगी। उसे लगा कि मैं नाराज हूं, पता नहीं क्या! उसकी मां दौड़कर आई और उसे गोद में उठाकर सीने से लगा लिया, तब जाकर उसका रोना बंद हुआ। पता नहीं अगर वह मेरे साथ पली-बढ़ी होती तो क्या वह गाना सीख पाती!

वहाँ आधी रात हो चुकी है। हम अपनी नींद क्यों खराब करें? हम रात में कर सकते हैं।
मधु का ख्याल बार-बार याया के मन में आ रहा था। कितना अच्छा दूल्हा है! पर कितनी चंचल लड़की है! अचानक, बिना सोचे समझे वह चली गई। अगर वह यहीं रुकती, तो तैयार हो जाती। उसे विक्रम जैसा पति मिल गया। उसमें एकता का भाव है, जो दूसरी लड़कियों में नहीं होता। उसकी भक्ति भैरवी जैसी है। आह! भैरवी तो क्यान राग जैसी नहीं है! भैरवी में विरह और दुःख है। प्रेम और स्नेह के बीच एक बारीक रेखा है। लेकिन मधु में एकता का भाव है, साथ ही दुल्हन की शर्म, संकोच, डर और उत्साह भी! उसकी उपस्थिति में कितने सूक्ष्म और अभिव्यंजक भाव छिपे हैं?
सफलता मिल रही है। साथ ही, यह दुनिया में दीर्घकालिक खुशी का वादा भी करती है।
एक सुखद और अविस्मरणीय अनुभूति! यह कोई अप्रत्याशित बात नहीं थी कि उन्होंने मुझे कायना राग की रचना करने और उनके साथ गाने का अवसर दिया। यह वही राग था जो उनकी भावनाओं से मेल खाता था। अनजाने में ही मैंने भी वही राग चुना।
दोपहर में आराम करते समय, मुझे उसके कोमल शरीर की याद बार-बार सताने लगी। उसकी कोमल बाहों का आलिंगन, जो निप्पल से शुरू होकर जांघों तक जाती थीं, फिर धीरे से कमर तक पहुँचती थीं, एक ही चेहरा! इतनी ताकतवर होते हुए भी, वह इतनी कोमल थीं! कितनी ताकतवर!
इसे पहनने की ताकत ही नहीं है। अगर हड्डियों की बनावट ही नरम है, तो ताकत कहां से आएगी?
कोई बात नहीं, कयानी। जैसा कि कर्नाटक संगीत में कहते हैं। प्रिय – ओह, कयानी, तुम्हारी प्यारी कयानी, यह शुभ है! यह विवाह की भावना है, विवाह की भावना है। जल्दी आओ, कयानी! सिर्फ दो सप्ताह के लिए नहीं, दो महीने के लिए आओ। चलो साथ रहें। मैं गाना भी सीखूंगा। मैं तुमसे तैयारी करूंगा। केवल शारीरिक सुख आम लोगों के लिए है। समझ रही हो ना? तुम एक असाधारण स्त्री हो जिसमें इसे संगीत और नृत्य में बदलने की शक्ति है! मैं आज रात तुम्हें फोन करूंगा और तुम्हारा नया नाम बताऊंगा। मैं तुम्हें इसके पीछे का आध्यात्मिक अर्थ भी विस्तार से बताऊंगा!

पूरी शाम इसी मनोदशा में गुज़री। यहाँ तक कि इस निर्णय को लेकर मन में जो शंकाएँ थीं, वे भी दूर हो गईं।
उसने दस बजे फोन उठाया। उसकी मौत हो चुकी थी। मुझे याद आया, दोपहर के बाद से एक भी फोन नहीं आया था।
अभी तक फोन नहीं आया। अब तो दो-तीन दिन तक चिंता रहेगी! अमेरिका में ऐसा कभी नहीं होता! बैंक में पैसे नहीं हैं, इसलिए कुछ नहीं कर सकता। अगर राजाराम ने मुझे बीस हज़ार रुपये दिए होते, तो मैं हज़ार रुपये खर्च किए बिना उससे बात कर लेता। चाहे कुछ भी हो जाए, अगर मैं उसे अभी पैसे दे दूं, तो कम से कम कल से फोन तो आने शुरू हो जाएंगे।
वो चप्पल पहने ही बाहर निकल गया। उसने पूरा नंबर पता किया। दूसरी तरफ से जवाब आया, ‘हमने बिल नहीं भरा है। इसीलिए हमारा नंबर बंद कर दिया गया है—’ अरे आलसी! कितनी लापरवाही है! अगर हम पैसे दे भी दें, तो कनेक्शन तुरंत नहीं लगेगा, साहब! पैसे लेने के बाद दूसरे विभाग को सूचना देंगे। फिर इस विभाग के लोग भी सुस्ती से काम करने लगेंगे! अगर मैं पंडित मोहनलाल भी कह दूं, तो भी किसी को पता नहीं चलेगा। ये चोर तो इतनी गंध भी नहीं पहचान पाते! ये वाडेकर तो बिलकुल बेवकूफ है। भले ही मैं गाँव में नहीं हूँ, फिर भी बिल चुकाने के लिए कहीं से पैसे लेने में क्या दिक्कत थी? लेकिन मुझे याद आया, अमेरिका जाने से पहले मैंने बहुत सारे कॉल किए थे, जिसकी वजह से साढ़े चार हज़ार का बिल आ गया। इतना पैसा वो कहाँ से चुकाएगा? इसके बाद तो विदेश से आने वाले कॉल बंद हो जाने चाहिए। कॉल को बेवजह देर करने का कोई मतलब नहीं। मुझे राजाराम को सुबह आठ बजे कॉल करना चाहिए था। तब तक तो मुझे नींद आ गई थी।
लेकिन उठते ही मैंने अपना ध्यान फिर से इस बात से हटा लिया। मुझे याद आया कि दो हफ्ते पहले उन्होंने न्यूयॉर्क फोन किया था। इस बार उन्होंने कहा, 'मुझे फोन मत करो, अगर हो सका तो मैं कर लूंगा।' क्या वे नाराज़ थे? इस बार कोई दूसरा रास्ता नहीं था। भूपली हमेशा पास ही थे। उन्हें हिंदी आती थी, तो मैं क्या करता? मुझे उन्हें बाद में फोन करना चाहिए था; लेकिन मैं भूल गया। मेरा मन भूपली में खोया हुआ था। अगर काव्यानी की धुनें तब शुरू हो जाएं, तो क्रोध की पवित्रता कैसे कायम रखी जा सकती है? विशेष पूजा के लिए विशेष स्पर्श मंत्र
उन्हें वहां से चले जाना चाहिए था, है ना?

अगर मैं इस नज़रिए से देखूँ तो मैंने अपना पूरा जीवन इन्हीं दो लोगों को समर्पित कर दिया था। मनोहरी और भूपली। मनोहरी के साथ मेरा रिश्ता टूटे पंद्रह साल हो गए हैं; लेकिन मुझे उस समय की गहरी आत्मीयता का एहसास आज भी याद है। मधु के साथ इस रिश्ते में, आत्मीयता का वो एहसास मुझसे नहीं है। फिर भी, दोपहर से ही उसकी याद मुझे जुदाई का एहसास दिला रही है।
एक राग पहले ही बन चुका है। इसके बाद, वह बिना किसी पूर्वधारणा के उस राग को गाता है।
नहीं आऊँगी! मधु, तुम दूसरों से कहीं अधिक श्रेष्ठ हो। तुम ही तो मेरे नाम की रक्षा करती हो! क्या तुम पंडित मोहनलालजी की शिष्या नहीं हो, बल्कि मोहन परिवार या हीरा परिवार को बढ़ावा देने जा रही हो? नहीं। इसे चिचिरापुर परिवार कहना अधिक उचित होगा। मधु, तुम मेरी ढोल हो! तुम्हारी उपस्थिति में सबसे शांत और सुखी व्यक्ति भी इस भूमि के सुख का अनुभव करते हैं।

३
सुबह नहाने के बाद जब मैं बाथरूम से बाहर आ रहा था, तभी दरवाजे की घंटी बजी। मैंने जाली से झाँका – तगादालाल! चौबीस साल का। उसने शायद एक हफ़्ते पहले ही दाढ़ी बनवाई थी। गर्दन तक कटे बाल। वह अपनी माँ की तरह छोटा सा लड़का था। उसने सफेद कमीज़ और सिर पर क्रिकेटर की टोपी पहनी हुई थी। जैसे ही दरवाजा खुला, उसने कहा, "हाय पापा," और अंदर आ गया।
मोहनलाल को अपने बेटे का यह अभिवादन करने का तरीका कभी पसंद नहीं आया। उन्हें तो पैर छूने का वो तरीका पसंद था, जो संगीत जगत में प्रचलित है। वो उसकी कोई बात नहीं सुनता! उसकी माँ भी उसे अक्ल सिखाने में नाकाम रही। उसका व्यवहार तो पहले ही बेकाबू हो चुका है। जब वो छह साल का था, तब मैंने उसकी माँ से दूरी बना ली थी। उसने उसे पागल कहकर उसके बारे में उसकी राय बिगाड़ दी होगी। वो उसे सिर्फ पैसे लाने भेजती है! तीन महीने से पैसे नहीं मिले, तो वो कहता है - अरे! मैं भूल ही गया! बीस हज़ार काफी नहीं होंगे। उसे तीस हज़ार गुजारा भत्ता देना है। दरअसल, अब दोनों बच्चे बड़े हो चुके हैं। अब सिर्फ उसकी पत्नी को गुजारा भत्ता देना पड़ता है। ये सब कब तक ऐसे ही चलता रहेगा?
वह अंदर गया और सिर्फ जूते पहने सोफे पर बैठ गया। फिर उसने कहा, 'मम्मी ने कल दोपहर से पंद्रह-बीस बार फोन किया है। आज सुबह भी दो बार फोन किया। आखिर में उन्होंने मुझे भेज दिया।'
बिल का भुगतान न होने के कारण फोन काट दिया गया है।
"क्या आपने विदेश जाने से पहले कोई व्यवस्था की थी? अगर हमने उसे पैसे दिए होते, तो हम बिल चुका देते।"
‘यहां इसके लिए भुगतान करने वाले बहुत से लोग हैं। सवाल तो पैसे का है!’ मोहनलाल ने जवाब दिया।
"तुम यहाँ एक हफ्ते से हो, है ना? गुड़िया से छुटकारा पाने में इतने दिन क्यों लग रहे हैं?"
‘अमेरिकी राष्ट्रपति ने मुझे गुड़िया का पर्स नहीं दिया! क्या तुम्हारी माँ ने तुम्हें इसे भेजना सिखाया था?’
‘इससे क्या सीखने को मिलता है? ये तो एक सीधा-सादा सामान्य ज्ञान का सवाल है!’ अपनी कलाई पर घड़ी देखते हुए वो हँसा, ‘मुझे ब्राबंट स्टेडियम जाना

है।’ माँ हँसी – ‘फोन खराब है और मैं तुम्हें फोन कर रही हूँ, तो आकर देख लो कि मैंने रस्सी हटाई है या नहीं।’ वो हँसा।
मैं यहां इसलिए आया क्योंकि मेरे घर में कोई नया पैसा नहीं था।
मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैं अपना टेलीफोन बिल कैसे चुकाऊं!
"आपने ये तीन महीने कैसे गुज़ारे?"
‘क्यों? तुम चौबीस साल की हो। तुमने बी.ई. किया है। तुमने स्नातक की डिग्री हासिल कर ली है। स्नातक हुए छह साल हो गए हैं। कहीं नौकरी ढूंढ लो। तुम्हारी बहन ने भी स्नातक की डिग्री हासिल कर ली है। वह भी बाईस साल की है। उसने एम.ए. किया है, है ना? उसे भी कहो कि नौकरी ढूंढ ले। माँ अपना खर्च खुद चला रही है।’
‘पिताजी, मेरे पास भी चुकाने का एक सुरक्षित ज़रिया है! मैं आपका कर्जदार बने रहना बिल्कुल नहीं चाहता; लेकिन समझदार भी अपने बच्चों की ज़िम्मेदारी से बच नहीं सकते। आजकल बी.ई. तक पढ़कर कौन बड़ा होता है? स्नातकोत्तर तो करना ही चाहिए। आप जानते हैं कि विदेशी डिग्री के बिना शिक्षा बेकार है, पिताजी! मैं दो साल इंग्लैंड में पढ़ना चाहता हूँ। वहाँ दाखिला दिलाना मेरी ज़िम्मेदारी है और आगे पढ़ाना आपकी। सभी अमीर लोग डॉलर में कमाते हैं और अपने बच्चों को विदेश पढ़ने भेजते हैं। उन्हें हर साल विदेश भेजते रहिए। मैं अपनी पढ़ाई सिर्फ़ दो साल में पूरी कर लूँगा। अगर जगप्रिस मोहनलाल जी का बेटा बी.ई. करके कहीं छोटी-मोटी नौकरी करने लगे तो आपकी इज़्ज़त का क्या? ज़रा समझदारी से काम लीजिए, पिताजी!’
मैं तो बस अपनी माँ से बात करने आया था! मुझे जुए में हारे हुए डॉलर याद आ गए। फिर मैंने सोचा, मुझे इस आदमी की तारीफ़ क्यों करनी चाहिए? मैंने कहा, 'अरे, जो बच्चे इंजीनियर बनते हैं, वे अमेरिका भाग जाते हैं। क्या तुम इंग्लैंड जाओगे?'
‘अमेरिका एक ऐसा देश है जो कोई कार्रवाई नहीं करता!’
‘सम कृति? सम कृति क्या है?’
‘इस देश में क्रिकेट नहीं है। फुटबॉल, बास्केटबॉल, बेसबॉल – हर कोई उच्च कोटि के खेल खेलता है। मैं इंग्लैंड जाना चाहता हूँ। वहाँ मैं अमेरिकी टीम का कप्तान बन सकता हूँ। इसके अलावा, डॉलर कमाना भी मुश्किल नहीं है!’ वह उठा, ‘मुझे देर हो रही है। क्या आप मुझे अभी पैसे देंगे या हमेशा की तरह घर भेज देंगे? मेरे पास बार-बार मैदान में जाने का समय नहीं है।’

‘बैंक में जमा इन पैसों पर मिलने वाले ब्याज का क्या हुआ? अपनी माँ के बारे में सोचो। तुम्हें भी वापस आने की ज़रूरत नहीं है।’
बिना सोचे-समझे वह चला गया। पीछे मुड़कर उसने सोचा, वह अपनी माँ की तरह लंबा, मजबूत और तगड़ा है! इतने भारी शरीर के साथ वह किस तरह का क्रिकेट खेल रहा है? इस लड़की ने पेट पर हाथ रखकर उसे कसम खिलाई थी। मैंने उसकी बात मान ली, लेकिन क्या मुझे उस पर भरोसा था? या मैंने उसकी सुविधा के लिए उसके डर के आगे घुटने टेक दिए और रामकुमारी को छोड़ दिया? बिलकुल नहीं। राजाराम हर महीने पैसे भेजते थे! लेकिन कितने सालों तक? जब तक वह दिल्ली नहीं गए। पाँच साल। मैं उनसे या बच्चों से मिलने कभी नहीं गई! लेकिन यहाँ, इस परिवार का खाना कैसा है, बच्चों का स्कूल कैसा है, लोगों को अच्छा खाना कहाँ मिलता है! जो लोग आए थे, उन्होंने बच्चे को सोने की चेन, चाँदी की अंगूठियाँ, खिलौने और पालने भी दिए! सब लोग तालियाँ बजा रहे थे, 'वह विदाल जैसा महान गायक बनेगा, वह विदाल से भी बेहतर गायिका बनेगी! वाह! रोते हुए भी क्या मधुर आवाज़ है!' क्या नाम रखे थे! वर्मोहन और ष्टिमोहिनी! वाह! इस बार तो मैं भी ललचा गई! मैं झूला झुलाते हुए गा रही थी! लेकिन उन्हें अक्सर बकुला की याद आती थी, जो ज़मीन पर लेटकर मेरे रियाज़ को सुनते हुए अपने हाथ-पैर हिलाता रहता था। उन्होंने राजाराम से बस इतना ही सुना था कि वे अपने दूसरे बच्चे का नाम किशन रखेंगे, बस इतना ही। उन्होंने उसे पहले कभी नहीं देखा था।
एक-दो लोग - शायद कोई कार्यक्रम आयोजित करने आया होगा - अंदर आए और बोले, 'क्या फोन खराब हो गया है? मैं कल से आपको फोन करने की कोशिश कर रहा हूँ। आइए, मुझसे मिलिए!'
एक बार मुझे बिना ज्यादा झंझट किए इस रकम के लिए एक कार्यक्रम तय करने का ख्याल आया; लेकिन बाद में मैंने सोचा कि जब पारिश्रमिक कम हो जाएगा, तो हर कोई इस रकम पर निर्भर करने लगेगा। हालांकि, मौजूदा कमी को राजाराम से कर्ज लेकर पूरा किया जा सकता है। दूसरे कर्जदाता भी हैं; लेकिन इस मामले को हाथ से निकलने क्यों देना? राजाराम ठीक हैं।
जब वह अंदर आया तो खड़ा था। वह थोड़ा हिचकिचाया, लेकिन खड़ा ही रहा। उनमें से एक ने कहा, 'हम एक छोटा सा संगीत समारोह शुरू कर रहे हैं। अगर संभव हुआ तो हम ऐसे महान कलाकार को पूरे सम्मान के साथ आमंत्रित करेंगे। अब, इस उद्घाटन समारोह के लिए हमारी शुभकामनाएं। हम इसे लिख लेंगे।'

मोहनलाल को ऐसा लगा जैसे किसी ने उसकी आँखों पर ठंडा पानी डाल दिया हो। वह पानी लेकर आया और जाने से पहले चार शुभ शब्द बुदबुदाए। उसने दरवाजा बंद किया और टेलीफोन बूथ में चला गया। उसने दूसरी तरफ कहा, 'मैं कल से कोशिश कर रहा हूँ। कल और आज मुझे बकुले का फिर से फोन आया। आज पत्रिका छपने वाली थी। अब मुझे क्या करना चाहिए?'
मैंने एजेंट के काम के लिए फोन किया था। कल मैंने बीस हजार मांगे थे। अब तीस हजार लेकर आओ। तुरंत आओ। बिल का भुगतान न होने के कारण मैंने फोन काट दिया है। मैं तुम्हें उस दिन सब कुछ बता दूंगा। अगर घर पर नकदी नहीं है, तो बैंक से निकाल लो। नुकसान की भरपाई मैं कर दूंगा।
‘अरे! तुम इससे किस तरह का मजाक निकालना चाहते हो?’
‘यह सच नहीं है। बैंक जो भी पैसे काटेगा, मैं आपको दे दूंगा। लेन-देन तो लेन-देन होता है! यदि कोई व्यक्ति अपने लेन-देन में ईमानदार है, तो दोस्ती लंबे समय तक टिकती है! लेकिन जल्दी आइए। बिल चुकाने का समय निकल जाएगा।’ 'ठीक है!'
फोन रखने के बाद मोहनलाल सोचते हुए वापस लौटा। मैं उसे सिर्फ दस हजार ही दूंगा। ये दोनों बच्चे तो बच्चे ही हैं। मैं और कितने दिन अपना पेट भर पाऊंगा? वैसे भी, उसकी नियमित रूप से पूजा-अर्चना हो रही है। यह सोचकर मुझे बहुत राहत मिली, मानो एक सवाल हल हो गया हो। राजाराम एक घंटे में आ जाएगा। तब तक मुझे शादी की सालगिरह का ख्याल किनारे रख देना चाहिए।
मैं क्या सोचूँ! अजनबी लोग मुझसे आशीर्वाद मांगने आए थे, मैंने उन्हें आशीर्वाद दिया। तो ये मेरी बेटी है।
नहीं! बात इतनी आसान नहीं है। मैं अपने नाम से किताब छपवाना चाहती थी, मुझे करवा लेनी चाहिए थी; लेकिन उसकी माँ के सामने खड़े-खड़े मैंने यह अधिकार खो दिया! अब तो रामकुमारी के सामने जाने की हिम्मत भी नहीं रही। हमें मिले हुए चौबीस साल हो गए! मेरी बेटी ने भी बी.कॉम कर लिया है। अब मैं उन दोनों के सामने खड़े होकर उसकी आँखों में आँखें डालकर कैसे देखूँगी? मुझे न सिर्फ शर्म आएगी, बल्कि डर भी लगेगा! कौन जाने, किताब में अपना नाम छपवाने की माँ की ज़िद है या बेटी की इच्छा! या शायद वो सिर्फ सबके सामने परिवार की इज़्ज़त बचाना चाहती है?
यह पहली बार था जब मुझे यह बात गहराई से महसूस हुई कि चंपा को दंडित करना संभव था; लेकिन

रामकुमारी के सामने खड़ा होना नामुमकिन है। वो अब उनसठ साल की हो चुकी हैं। वो कैसी होंगी? क्या पहले की तरह ही पतली? वो मोटी तो नहीं हो सकतीं।
चंपा हर महीने दस हजार कमाती है।
पैसा, खूब ब्याज देने वाला पैसा, चार-खो लात। शिवय ये गाने गाता है।
इसे स्वीकार करो। शरीर पर मांस की परतें बढ़ना स्वाभाविक है, है ना! रामकुमारी का जीवन ऐसा नहीं है। उसका सांवला चेहरा तेल या क्रीम न लगाने के कारण लाल हो गया होगा। मेकअप न करने की वजह से उसके बाल सफ़ेद हो गए होंगे। नतीजतन, वह अपनी उम्र से बड़ी दिखती होगी। बड़े घरों में रहने वाली परिपक्व महिलाएं अपनी उम्र छिपाने के लिए क्या करती हैं, यह मुझसे बेहतर कौन जानता है! सच कहूं तो, पनाशी के आसपास महिलाओं को पुरुषों के साथ खुलकर मिलने-जुलने का मौका भी मिलता है।
रामकुमारी जैसी किसी व्यक्ति ने शायद ऐसे अवसर की उम्मीद नहीं की होगी; लेकिन क्यों नहीं? पिछले चौबीस वर्षों से वह इतनी पवित्र क्यों नहीं रही? यह सवाल सबसे पहले उसके मन में आया और फिर उसे समझ नहीं आया कि मैं क्या कहूँ। जब मैं वहाँ से गया तब वह सिर्फ चौबीस साल की थी।
इस विचार ने उसका जीवन दयनीय बना दिया। सचमुच, उसकी आर्थिक समस्याएँ? उसकी शारीरिक भूख? इन सवालों का सीधे सामना करने के बजाय, उसके दिमाग ने एक रास्ता खोज निकाला, किशन अब क्या कर रहा होगा? जवाब मिल गया - यह नहीं कि वह क्रिकेट नहीं खेल रहा था।
कौन जाने बकुले की शादी कहाँ होगी, कितना खर्चा हुआ होगा? या फिर ऐसा नहीं है? अगर मुझे अपने नाम से शादी की मैगज़ीन निकलवानी होती, तो क्या मैं शादी का सारा खर्चा उठाती? मुझे जुए में हारे हुए पैसे फिर याद आ गए। अगर वो पैसे होते, तो मैं तीन लाख नब्बे हज़ार खर्च करके शानदार शादी कर सकती थी। इससे बीते सालों की सारी मेहनत वसूल हो जाती। ओह! मैं अमेरिका बेकार ही चली गई। अगर मैं यहीं रहती, तो तीन-चार कार्यक्रमों में इतने कम समय में इतना कमा लेती! इसके अलावा, यहाँ चाहे जितने भी खेल खेलती, इतना नुकसान नहीं होता।

४
वह एक पुराने कपड़े के थैले के साथ दुकान पर आया, जिसमें शायद एक किलो सब्ज़ी या दो कपड़े रहे होंगे। जब वह लोकल ट्रेन से आता और कोई ज़रूरी सामान लाना होता, तो हमेशा उसी थैले का इस्तेमाल करता था। आया-आया ने मोहनलाल के सामने सौ-सौ रुपये के तीन बंडल रखे और कहा, 'ये तीस हज़ार हैं। एक और ज़रूरी खबर है! इसे देखो।' हनीता ने थैले से एक और बंडल निकाला। नोटों को देखते हुए मोहनलाल ने कहा, “पहले मेरी बात सुनो। मैंने इस बारे में सोच लिया है। मेरे नाम से पासपोर्ट मत बनवाओ। पासपोर्ट के लिए मैं तुम्हें एक लाख रुपये दूंगा। मैं तब भी दे देता; लेकिन तुम हालात जानते हो। इस पैसे के लिए भी मुझे तुम्हारी मदद चाहिए। क्या तुम्हारे बैंक खाते में पैसे जमा हैं? अगर तुम ज़मानतदार बनोगे, तो तुम्हें लाखों रुपये मिलेंगे।”
व्यवस्था हो सकती है। कार्यक्रम मिलते ही मैं तुरंत भुगतान कर दूंगा। मेरे नाम पर।
मेरे बैंक खाते में पैसे नहीं हैं। इस वजह से मेरे लिए धन जुटाना असंभव है। टिपानिस यह सब देखता रहा। सवाल समझकर वह हँसा, ‘बकुले की सेहत मेरी ज़िम्मेदारी है, यह सच है। यह भी सच है कि अब तक मैं अपने कर्तव्य में कमी कर बैठा हूँ। अब अगर मैं लकना और आने वाले धार्मिक अनुष्ठानों में फँस गया, तो मेरे लिए मुश्किल हो जाएगी। उनके लिए भी मुश्किल होगी। आपको यह पैसा उनकी माँ को दे देना चाहिए।’
‘ ही क यादान क न आशीवादावा, अशी बकुळेची तीव्र इ छा आहे.’
"शादी के बाद, दूल्हा आता-जाता रहता है, और आशीर्वाद निरंतर मिलते रहते हैं।"
उसे अब भी लग रहा था कि टिप्पणी करने वाला उसके जवाब से संतुष्ट नहीं है, और वह सोच रहा था, 'आप पूछते हैं कि और क्या महत्वपूर्ण है? इस थैले में क्या है?'
राजाराम ने रबर बैंड हटाकर कागज़ के थैले में लिपटे डिब्बे को खोला। उसमें छह कैसेट थीं। ये वही पुरानी कैसेट थीं। उन्होंने उन्हें उठाया और हाथ में लेकर एक-एक करके देखा। एक कैसेट पर उनकी तस्वीर थी जिसमें वे दो डफली के बीच बैठकर विनम्रता से गा रहे थे। दूसरी पर उनकी तस्वीर थी जिसमें वे

प्रणाम कर रहे थे। तीसरी पर उनका दाहिना हाथ आकाश की ओर उठा हुआ था, मानो तारों की एक लड़ी हो।
वह उन्हें दिखा रहा था। सभी छह कैसेटों पर अलग-अलग शैलियों में तस्वीरें छपी हुई थीं।
प्रत्येक तरफ एक राग लिखा था। सबसे ऊपर राग का नाम और संगतकार प्रभु और तिपानिस के नाम लिखे थे। संकलनकर्ता का नाम श्रीमती चंपा मोहन था। निर्माता
तो नाम था ‘मोहन मेलोडीज़, मुंबई’। कॉफ़ी बहुत स्वादिष्ट थी। कीमत साठ रुपये थी।
कैसेटों की बारीकी से जांच करते हुए मोहनलाल ने टिप्पणी की, 'इसमें हारमोनियम संगतकार के रूप में मेरा नाम है। ओमकार का तबला भी है। मैंने इस व्यक्ति से फोन पर बात की। वह भी हैरान था। इस निर्माता या आयोजक ने हमारी अनुमति नहीं ली है, हमें कोई मानदेय नहीं दिया है। हमने कोई अनुबंध भी नहीं किया है। आपका सवाल अलग है। यह पति-पत्नी का रिश्ता है।'
मोहनलाल विस्मय से सुन रहे थे। उन्हें पता था कि क्या हुआ है; लेकिन वे अवाक थे क्योंकि उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि इस पर क्या प्रतिक्रिया दें। उन्होंने आगे कहा, “मैं आपको बता सकता हूँ कि इसमें से हर राग को हटा दिया गया है। रागों को विस्तार से प्रस्तुत करने का आपका यही सामान्य तरीका है। एक घंटे से भी ज़्यादा। उन्होंने उसी राग को संपादित करके पच्चीस से छब्बीस मिनट में बना दिया! उन्होंने रागों का मज़ाक उड़ाया है, उनके हाथ-पैर, नाक-कान काट दिए हैं! क्या आपने इसकी अनुमति दी थी? उन्होंने कितनी और कैसेट बनाई हैं, कितनी प्रतियाँ बेची हैं? इसमें मेरी तनख्वाह क्या है? मैं तो कोटा जाने की सोच रहा हूँ। कोटा की सीढ़ियाँ चढ़ते ही, खेतों में लगने वाली शक्ति, उपकला का खर्च, विरोधी पक्ष द्वारा लगाए गए सही-गलत आरोपों को नकारने में बर्बाद होने वाली शक्ति, उपकला! यह सब एक बुखार है!” ‘मुझे भी इस दुष्ट पत्नी के लिए जेल जाना होगा या मेरे हाथ-पैर तोड़ दिए जाएँगे!’ वह झट से उठा और डायरेक्टरी ढूंढने लगा। इस घर का फ़ोन नंबर भी उसके नाम पर था। उसने एक कागज़ पर नंबर लिखा और चुपचाप बाहर आ गया। वह बूथ पर गया और नंबर डायल किया। उसने फ़ोन उठाया।
‘मैं पंडित मोहनलाल बोल रहा हूँ!’ उनकी आवाज कठोर थी।
उसने शांत भाव से उत्तर दिया, "मैं उनकी पत्नी बोल रही हूँ।"

वह हिचकिचाया। इस बात को समझने में उसे कुछ पल लगे। फिर उसने कहा, "हेलो, क्या आप सुन रहे हैं?"
वह क्रोधित हो गया और पूछा, "तुम कब से चोरी कर रहे हो? अब तक तुमने कितना चुराया है?"
‘पंडित मोहनलाल जी की पत्नी कभी चोरी नहीं करेंगी! क्या हुआ? मुझे स्पष्ट-स्पष्ट बताएं!’
‘मोहन मेलोडीज़ की इन कैसेटों का क्या मामला है? आपने बिना सलाह लिए ये सब कैसे किया? समझौता कहाँ है?’
‘समझौते का सवाल कहाँ से आया? ये सारे समझौते इसी समझौते से निकले हैं। मैंने हर राग के लिए अलग-अलग शोध करके कैसेट तैयार किए हैं। ये काम मैंने किया, इसलिए हो पाया। वरना कौन करता? तो फिर मैंने ये सब काम इतने दिनों तक क्यों नहीं किए? पति उस पत्नी के बारे में सोच रहा है जिसने पत्नी के उतारे हुए कपड़े धोए और इस्त्री किए हैं, समझौता कहाँ है! पहले भी ऐसे ही कैसेट बनते रहे हैं। क्या आपको उनका हिसाब पता है? और फ़ोन
के हा दु त झाला?’
‘विषय मत बदलो! हमने तो अपने साझेदारों के साथ अभी तक कोई समझौता भी नहीं किया है। इसका भुगतान कौन करेगा?’
‘तुम हिसाब-किताब किए बिना ही फैसला कर लो। बस मुझे बता दो कि तुम्हें कितने पैसे चाहिए। फोन पर ये सब तय करना नामुमकिन है। तुम घर आ जाओ। मैंने तुम्हारी इस गीत को अगली पीढ़ी के लिए ज़िंदा रखने की नेक नीयत से इतनी मेहनत की, लेकिन तुम हर सुबह ये समझौते कर रहे हो! क्या तुमने भी सुबह आना शुरू कर दिया है?’
"कुछ बुदबुदाओ मत! मैं शराब नहीं पीता!"
'तो तुम बड़बड़ा क्यों रहे हो? घर आओ और जो कहना चाहते हो वो मत कहो!'
वह आगे कुछ नहीं बोल सका। वह अपनी रस्सी वहीं छोड़कर घर लौट गया। राजाराम का क्या हुआ?
उन्होंने कहा, 'देखो! हमेशा ऐसा ही होता है। मुझे इससे घिन आती है। मैं चाहे किसी से भी बहस करूं, सुनने वाला यही सोचेगा, "यह बेचारा मूर्ख की तरह बकवास कर रहा है!"'

तिपानियों को सारी पृष्ठभूमि पता थी। मोहनलाल समय-समय पर सब कुछ समझाते रहते थे। उन्होंने कहा, 'मोहनजी, मैं पश्तो में बोलता हूँ। क्या आप बिना किसी गलतफहमी के इसे ठीक से समझा सकते हैं?'
'मुझे बताओ।'
वे आसानी से कह सकते हैं कि उन्होंने कानूनी तौर पर कुछ भी गलत नहीं किया है। इस घर का टेलीफोन आपके नाम पर है। आप अपने नाम पर चल रहे इस टेलीफोन का बिल भर रहे हैं।
इन लोगों ने मेज पर एक तख्ती रखी जिस पर लिखा था 'मोह्स कूल ऑफ म्यूजिक' और वे उसे गाने लगे।
आप ही इसे चला रहे हैं। आपका उनसे कानूनी संबंध है। अगर आपको कुछ हो जाता है, तो दोनों को ही इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा। कुया के पिता ने ज़मीन अपने नाम करवा ली है। अगर कोई पूछता है, तो वे कहते हैं कि यह ज़मीन उनके माता-पिता ने उन्हें दी थी। उन्होंने ऐसा इंतज़ाम कर रखा है कि रामकुमारी और उसके बच्चों को कुछ भी न मिले! और आप भी बकुले पत्रिका में अपना नाम न छपवाकर गुमनाम ज़िंदगी जी रहे हैं!
‘अरे! ये कैसे? इस बार तो मैंने भवानी मंदिर में मंगलसूत्र पहनाया और रामकुमारी से शादी की! वो मेरी पत्नी है! तुम सब कुछ जानते हो और फिर भी मेरा दिल दुखा रहे हो!’ मोहनलाल के पति ये कहते हुए अवाक रह गए। उनकी आँखों में दिख रही बेबसी साफ झलक रही थी।
वह उस टिप्पणी को लेकर आशंकित थे। वे जानते थे कि संगीत जगत में अपार लोकप्रियता हासिल कर चुके और जिसका नाम सुनते ही श्रोता खुशी से झूम उठते हैं, ऐसे कलाकार से एक कलाकार को कितना कुछ कहना चाहिए। उन्होंने कहा, 'मैंने तुम्हें बता दिया कि मैं किस पक्ष में हूँ। मैंने तुम्हें बताया कि चंपाबाई कैसे बहस कर सकती हैं। तुम्हें इस पर विश्वास नहीं है, इसलिए मत कहो। तुम इसे वहीं कहो, जैसे कहना है कहो।'
मैं जाने के लिए तैयार हूँ; लेकिन याया-आया का कोई त्योहार क्यों नहीं है? कोई खास उम्मीद नहीं है। इसीलिए मुझे लगता है कि आपको किसी योग्य वकील से संपर्क करके व्यवस्था करनी चाहिए! बंद्यासर जैसी जगह में ऐसे दो प्लॉट की कीमत पैंतालीस से पचास लाख से भी ज्यादा होती है। अब तो आपकी उम्र भी बढ़ चुकी है। कौन बता सकता है कि कोई कितने दिन जिएगा? अगर आपके पास जन्म प्रमाण पत्र है, तो शायद। माहिम में सुया प्रसाद शास्त्री नाम के एक महान

ज्योतिषी रहते हैं। अगर आप उन्हें अपना जन्म प्रमाण पत्र ठीक से दिखाएं, तो वे आपको हर साल का भविष्य बता देंगे।
"मुझे अपना जन्म प्रमाण पत्र कहां मिल सकता है? आप जानते हैं कि मेरा बचपन कैसा था।"
"आप प्रिंटर को अपना हाथ दिखाइए। महल के सामने हिरसागर नाम का एक आदमी रहता था। उसने पच्चीस साल पहले जो कहा था, वह आज भी सच है।"
उस समय उनकी उम्र छप्पन वर्ष थी। देखते हैं कि वे अभी जीवित हैं या नहीं। ‘तुम जांच करो। जल्दी करो! मुझे लग रहा है कि मेरे लिए बुरे दिन आ गए हैं!’ मोहनलाल को एक पल के लिए कुछ ऐसा ही महसूस हुआ।

५
पद छोड़ने के बाद भी, भविष्य के बारे में सोचने के लिए हाथ दिखाने का विचार कुछ समय तक उनके मन में बना रहा। ऐसे लोग बहुतायत में मिलते हैं; लेकिन एक योग्य व्यक्ति से मिलना उतना ही मुश्किल है। पुव्वी में भविष्य के बारे में सोचने की अद्भुत प्रतिभा थी। उन्होंने कला जगत के किसी व्यक्ति को अपना एक हाथ दिखाते हुए कहा, 'आप एक कलाकार हैं! इस जीवन में आप एक कलाकार हैं।'
तीन सौ के इतने सकारात्मक प्रभाव होते हैं।’ और यह बात बिलकुल सच साबित हुई। आज भी सच है।
अगर मुझे कोई ऐसा मिल जाता जो मेरे हाथ की इन रेखाओं को देखकर इतनी सटीकता से मेरा भविष्य बता देता, तो मैं हज़ार रुपये भी देने के बारे में नहीं सोचता। तभी मुझे ख्याल आया, मैं उस व्यक्ति के पास गया था, उसने एक सुंदर कढ़ाईदार वस्त्र पहना हुआ था। उसके बाल भी गर्दन तक लंबे थे। क्या यह वही व्यक्ति था जिसने मुझे भविष्य बताया था? क्या हाथ देखकर भविष्य बताना गलत है? लेकिन मेरा मन इस बात को मानने को तैयार नहीं था। मैंने तिपानिस से उसका हाथ दिखाने को कहा। मैं इस महल में रहने वाले सिरसागर को अपना हाथ दिखाऊंगा। यानी, अगर वह जीवित हुआ तो। मैं तिपानिस से पत्र लेकर अकेला जाऊंगा। भविष्य के बारे में सोचते समय मेरे साथ कोई और न हो तो बेहतर है! अगले दिन दोपहर में फ़ोन की घंटी बजी। इतनी गर्मी थी कि बंद पड़ा पंखा अचानक चलने लगा और ऐसा लगा जैसे ज़िंदगी में सुकून आ गया हो। एक महिला की आवाज़ ने नंबर की पुष्टि की और कहा, 'आपका फ़ोन चालू है।' इससे मेरे अंदर उमड़ रहा गुस्सा थम गया। अगर वे इतनी सख्ती नहीं बरतते, तो बिल नियमित रूप से कौन भरता?
उन्होंने तुरंत टिपानिस को फोन किया। टिपानिस हँसे और बोले, 'मैं भी कोशिश कर रहा था।'
मैंने बैंक में पूछताछ की। उन्होंने कहा कि गारंटी देने पर मुझे ऋण मिल जाएगा; लेकिन इसके लिए मुझे पहले आपके नाम से बैंक में एक खाता खोलना होगा। यह काम जल्दी नहीं हो सकता।
तो मैं अपने नाम से लोन लेकर रामकुमारी को दे दूंगा। क्या इससे काम चलेगा?

अपने घर क्यों नहीं बुलाया? दूसरे शब्दों में, हर घर की अपनी कहानी होती है, कौन जाने।
सुबह आठ बजे टिपानिस ने फोन किया, 'मैंने कल बहुत सोचा। आपको किसी विक्रेता से मिलना चाहिए और उचित व्यवस्था करनी चाहिए। क्या आप किसी को जानते हैं?' "मैं ऐसे किसी व्यक्ति को नहीं जानता। संगीत प्रेमी तो बहुत कम ही होते हैं।"
‘हमें ऐसे उत्साही लोग नहीं चाहिए। हमें ऐसे लोग चाहिए जो कानून को अच्छी तरह जानते हों। गोरेसाहेब इसमें माहिर हैं! उन्हें आपके देश से भी बहुत लगाव है। इन दो लट्टे को खरीदते समय, वे ही बोली लगाने वालों से संपर्क करने और आवश्यक सुविधाएं हासिल करने के अवसर का लाभ उठा रहे हैं, है ना?’ 'हाँ मैं मुझे याद है!'
'उससे मिलने के बाद, ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए कि चंपाबाई अब और कोई कैसेट न रिलीज़ करें। इसके अलावा, दोनों साथियों को भी कैसेट के बारे में सूचित किया जाना चाहिए। मैं सोच रहा हूँ।'
क्या इसमें कोई फायदा है या नहीं?
‘तुम्हारा कत्ल बहुत उचित है। उन्हें मेरा पैसा भी ले लेना चाहिए! सिवाय इसके।
उसे लैट्स को छूना भी नहीं चाहिए। मैं गोर साहब से मिलूंगा। मुझे पता है। यह उनका दफ्तर है। कालबादेवी का, है ना?'
‘उन्हें रामकुमारीबाई के बारे में भी सब कुछ बताना होगा। क्या आप जानते हैं, वह पिछले सत्रह-अठारह वर्षों से इस गोरे साहब के लिए खाना बना रहे हैं?’
‘जी हाँ? आपको यह पता है? तो फिर आपने मुझे क्यों नहीं बताया?’
मैं खुद इस विषय को कैसे उठाऊं? मुझे लगा था कि आपको पता होगा और आप इस विषय पर बात नहीं करना चाहेंगे। अब जब संदर्भ सामने आ गया है, तो मैंने आपको बता दिया है! अब मैं आपको सब कुछ बताऊंगी। जब आप दिल्ली गए थे, तब आपके खाते में सिर्फ एक हजार रुपये थे। आपके हस्ताक्षर वाला एक भी चेक नहीं था। अगर होता भी, तो वह मुश्किल से अगले तीन-चार महीने ही चलता। सिगरेट पिए बिना मेरा पेट नहीं भरेगा।
वे मुसीबत में थे। अशिक्षित थे। बस हस्ताक्षर करने लायक ज्ञान रखते थे।

मैं किसी कारखाने में नौकरी ढूंढ रहा था, लेकिन इस क्षेत्र में मेरा कोई परिचित नहीं है। मैं गोरे साहब से मिला और उन्हें सब कुछ बताया। सबसे पहले उन्होंने ही आपके बारे में बात शुरू की।
‘मोहनलाल जी जैसे महान कलाकार का थका हुआ साथी? यह तो सरासर अपमान है!’
जब उन्होंने इस विषय को उठाया, तो मेरे लिए आगे बोलना आसान हो गया। आप दोनों को उनसे मिलना चाहिए।
मुझे भी उस नाम के बारे में पता था। मैंने रामकुमारी और उसके बच्चों को बताया।
मैं उसे उसके घर ले गया। उसने सब कुछ संभाल लिया। उसने बच्चों की भी देखभाल की।
मैंने सोचा, ‘क्या शेफ आता है?’ मैंने तुरंत कहा, ‘हाँ। मैंने कई बार खाया है।’ ‘क्या यह हिंदू थानी रोटी-सज्जी नहीं है? क्या हमारा शेफ महाराष्ट्रीयन है?’ मैंने सिर हिलाया, ‘अगर आप मुझे सिखाएंगे, तो मैं सीख जाऊँगा।’ उसने कहा, ‘हम आलू पोहा, पिठ्ठल, आमटी, पोली, आलू भाजी, श्रीखंड परोसते हैं।’ उसके बाद, हम सुबह आठ बजे ट्रेन से निकलने लगे और दोपहर तीन बजे बिना शेफ के घर लौटने लगे। यहाँ तक कि गोरे लोग भी इस काम की प्रकृति को समझ गए थे। वेतन पाँच सौ रुपये प्रति माह था। अब तो और भी बढ़ गया होगा। अरे! क्या आप सुन रहे हैं?’
उसका गला इतना भर गया था कि वह "मैं सुन रहा हूँ" भी नहीं कह सका।
'गोरे साहब की मदद के बिना, बकुले की शिक्षा, उनका करियर और किशन की नौकरी संभव नहीं होती।'
आपको इसके बारे में कुछ नहीं पता! किसी ने आपको कुछ नहीं बताया। गोरे साहब सब जानते हैं और उन्होंने आपकी मदद भी की है! उन्होंने कई जगहों पर कार्यक्रम के लिए नामों का सुझाव दिया है। उन्होंने अक्सर मेरे गानों की तारीफ की है, भले ही यह तारीफ आम लोगों को पसंद न आई हो; लेकिन उन्होंने कभी उपदेश देने की कोशिश नहीं की। उन्होंने मेरे साथ कभी अन्याय नहीं किया; लेकिन उन्होंने मुझे कभी भी उस तरह से आमंत्रित नहीं किया जैसे वे अन्य कलाकारों को नेहा के घर चाय पर बुलाते हैं। उन्होंने शायद ऐसा इसलिए किया होगा ताकि मुझे असहज महसूस न हो, या शायद उनके मन में यह बात रही हो कि 'मैं इस कलाकार का सम्मान करता हूँ, इसका नहीं'?

‘गोरे साहब सब कुछ जानते हैं। कलाकारों के प्रति उनके मन में एक विशेष लगाव है’ उन्होंने रुकते हुए कहा।
जब तक कुछ मर नहीं जाता, हम गोरे साहब के सामने जाकर खुद को मुश्किल में नहीं डालना चाहते। उन्हें सब कुछ पता है। वे भले ही कठोर न बोलें, पर मुझे दिल में अहमियत ज़रूर देंगे! इससे न सिर्फ उनके दिल में मेरी छवि धूमिल होगी, बल्कि मुझे डर भी था कि अगर मैंने उन्हें ऐसे ही जाने दिया, तो वे एक-एक करके सब कुछ निगल जाएंगे और मुझे देश निकाला दे देंगे! उन्होंने इस एक मुद्दे पर मेरा मुंह बंद कर दिया और कहा कि सब बातें लाना नाम के समझौते में बंध जाती हैं। मैं अब पीछे मुड़कर कुछ नहीं करूंगा!

□

□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□-□□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□, □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□, □□□ □□□□□ □□□-□□□ □□□□ □□ □□□ □ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□, □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□.□□.□□.□□. □□□ □□□□ □□, □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□! □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□, □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□

□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□, □□ □□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□, □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□

‘□□! □□□□, □□□□□□□□!’

‘□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□, □□ □□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□’

□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□, □□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□? □□ □□□□□□ □□ □□, □□ □□? □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□

"□□□□ □□□?" □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□

‘□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□? □□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□, □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□

इसमें वैसी जान नहीं है जैसी शिकागो की उस बड़ी सफलता में थी। मुझे ये बहुत मशीनी लगी। यानी, हर बार एक जैसा माहौल बनाए रखना मुमकिन नहीं है! बस इतना ही।’
प्र. बताइए, आप अमेरिका से कितने डॉलर लाए? मुझे ऐसा क्यों लग रहा है? मुझे बताइए।
मैं आपको बता सकता हूँ कि डॉलर का लाभ कैसे उठाया जाए; क्योंकि इसके बाद आपको अमेरिका अक्सर जाना पड़ेगा। यदि आप सही हिसाब-किताब नहीं रखते और सरकारी करों का भुगतान नहीं करते, तो बाद में आपको परेशानी हो सकती है। पता नहीं क्यों, उसे सच बताने का मन हुआ। वह हँसा, 'मैं क्या कहूँ! मेरे हाथ में तेरह हज़ार डॉलर थे। मैं अटलांटिक सिटी गया और जुए में सब कुछ हार गया। रात बारह बजे, भूखा-प्यासा, कड़ाके की ठंड में न्यूयॉर्क लौटा।'
वाह! बहुत बढ़िया! आप तो सचमुच एक कलाकार हैं!” वे सब ज़ोर से हँस पड़े। वह और भी ज़्यादा सहज हो गया।
‘मैं बहुत बड़ी मुसीबत में हूँ, साहब! मामला पेचीदा है। आप सब जानते हैं, साहब! आप ही मुझे रास्ता दिखाइए!’ उसने बोलना शुरू किया। पहले तो बच्चों के बारे में बताना नामुमकिन था, फिर दूसरे बच्चे के बारे में। शिवाय सब कुछ जानता था, इसलिए बात आसान हो गई। उसने बताया कि जब से वह मुंबई आया है, दिल्ली की खूबसूरती से दूर, अकेले रह रहा है। उसने बताया कि चंपा उससे हर महीने दस हज़ार रुपये लेती है, और आखिर में उसने हाल ही में बनाई अपनी कैसेटों के बारे में बताया। साढ़े छह बज रहे थे।
'क्या आप चाय पीना चाहेंगे?' गोरानी ने सोचा।
"अगर यह उपलब्ध होगा तो मैं इसे ले लूंगा।"
"इलेक्ट्रिक ट्रक खराब हो गया है। मैं इसे ठीक कर दूंगा," उसने उठते हुए कहा।
"तो नहीं, महोदय!" वह हिचकिचाते हुए खड़ा हो गया।
‘यह आसान है। अगर आपके पास चाय है, तो इधर आइए!’ हनत बगल वाले कमरे से चाय लेकर आया और उसे रख दिया। दो मिनट के भीतर, वह चाय के दो कप भी ले आया। मुझे सारी बातें समझ आ गई हैं। अब बताओ, तुम क्या करना चाहते हो? तुम्हारी क्या इच्छा है?

‘वह कहती है कि सारे समझौते इसी समझौते से हुए हैं। मुझे इस बात का डर है। मेरे गाने, मेरी दो लट्टे पर उसका कोई अधिकार नहीं होना चाहिए। उसने दिल्ली में मुझे लिखा है कि उसने इसी कमाई से कु की लट्टे ले ली है।’
यदि आप कानून तोड़ने का फैसला करते हैं, तो आपके सभी सवालों के जवाब दिए जाएंगे। इसके अलावा, ई-अध्याय का मार्ग भी है। पत्र का नाम पत्र के नाम के समान ही है।
इसका ज़िक्र नहीं किया जा सकता; लेकिन आप इस पैसे का इस्तेमाल तलाक के बाद गुजारा भत्ता देने के लिए कर सकते हैं। सबसे पहले, यह स्पष्ट करें कि आपको क्या देखना है।
दूसरी बात, ये मामला मेरे बस का नहीं है। मैं तो टैक्स से जुड़े मामले देखता हूँ, है ना! लेकिन मैं एक अच्छे वकील को जानता हूँ। मैं उनसे उसका परिचय करवा दूँगा; पर फैसला आपको ही लेना होगा। अगर आप ऐसे ही बैठे रहे, तो वे आपको रोक नहीं पाएँगे। अगर आपको कुछ हो गया, तो बंद्या की लट्टे, आपका गाना, आपका नाम – सब कुछ चंपाबाई का हो जाएगा!
मोहनलाल का चेहरा लाल हो गया था।
गोर ने आगे कहा, "भले ही रामकुमारी के साथ आपका विवाह कानूनी रूप से वैध नहीं है, लेकिन इन दोनों बच्चों पर आपका वही अधिकार है जो इन बच्चों पर है। ये आपके बच्चे हैं, क्या आप सहमत नहीं हैं?"
उसके चेहरे के भाव और भी गंभीर हो गए।
‘भले ही आप इसे स्वीकार न करें, वे बच्चे सीख जाएंगे; लेकिन यह महत्वपूर्ण है कि आप इसे स्वीकार कर लें। ऐसे निर्णय कभी भी भाग्य के भरोसे नहीं छोड़ने चाहिए।’
‘ये मेरे बच्चे हैं, इसलिए मुझे यह स्वीकार करना होगा कि रामकुमारी मेरी पत्नी है। और अगर मैं यह स्वीकार कर लेता हूँ, तो क्या मुझे जेल नहीं जाना पड़ेगा?’
उनके चेहरों पर भय देखकर गोरना मुस्कुराई; लेकिन बिना दिखाए।
वह हँसते हुए बोला, "ऐसा कुछ नहीं है। तुम ही तो हो जो कहते हो कि ये बच्चे तुम्हारे हैं, जबकि वे तुम्हारी पत्नी के बच्चे नहीं हैं।"
आप ऐसा कर सकते हैं। साथ ही, भले ही वह आपकी पत्नी न हो, आप उसे वह सब कुछ दे सकते हैं जो वह चाहती है। हालांकि कानून एक पक्ष है, लेकिन आपकी नैतिक जिम्मेदारी भी दूसरा पक्ष है! सबसे पहले, दूसरे पक्ष के संदर्भ में, आपको

स्वयं तय करना चाहिए कि क्या करना है। एक अच्छा वकील इस निर्णय को कानूनी रूप से लागू करने में आपकी मदद करेगा।
सब कुछ इतना स्पष्ट था कि इस बारे में बात करना व्यर्थ था। उसने उसकी ओर देखा और विषय बदलते हुए कहा, 'अमेरिका के बारे में और क्या कहा जा सकता है? कार्यशाला क्या होती है?'

छह

१
कई दिनों तक टिपानी को बोरीवली में सब कुछ अपरिचित सा लगा। उस समय बोरीवली, जो इतनी दूर थी कि उसे मुंबई का हिस्सा भी नहीं माना जा सकता था, दादर-परेल जैसी झुग्गी बस्ती जैसी लग रही थी। पंद्रह-सोलह साल पहले देखी रामकुमारी की चॉल को ढूंढना उनके लिए एक सपने जैसा था। लेकिन यह एक गलती थी। उन्होंने बकुले से फोन पर बात की, और यही एकमात्र तरीका था जिससे उन्हें कोई हल मिल सकता था।
एक जानी-पहचानी इमारत दिखाई दी। यही चॉल है। जी हाँ। यही है। दो सीढ़ियाँ चढ़कर वह 'बकुला लाल' और 'किशन लाल' के बोर्ड वाले दरवाजे पर खड़ा हो गया। उसने घंटी बजाई। दरवाजा खुल गया।
‘ओळखलंत का, बहनजी?’
ठुड्डी के पास के बाल सफेद पड़ गए थे। हालांकि, इस बार चेहरा उतना सूखा नहीं था। फिर भी, उन्होंने तुरंत पहचान लिया, 'तिपाणिसाहब! आज भाई दिवस है! हमारे घर में आपके पदचिह्न मिले हैं! आइए, अंदर आइए!' उनके चेहरे पर खुशी झलक रही थी। कृतज्ञता भी स्पष्ट थी।
घर की दीवारों पर तेल लगा हुआ था। एक सोफा-कम-बेड, कोने में एक डफ, सामने रसोईघर। उसके बगल में एक दरवाजा। शायद दूसरी तरफ एक कमरा या बालकनी थी। चारों तरफ लंबी अलमारियां, थोड़ी ऊंची, दीवारों के किनारे लगी हुई थीं। एक कोने में इस्त्री की अलमारी दिखाई दे रही थी। पास ही इस्त्री करने का स्टैंड। मुंबईवासियों की कम जगह का भरपूर इस्तेमाल करने की कला यहां भी साफ दिख रही थी। उन्होंने कहा, 'बच्चों का उत्साह देखिए! उन्होंने सब कुछ कर दिया है।'
प्यार भरे संदेशों का आदान-प्रदान करने के बाद, कमेंट का विषय था, 'बाकुले का गोल'।
मुझे पता चला है कि फैसला हो गया है। मोहनलाल जी ने खर्चे के लिए पैसे भेज दिए हैं!’ फिर उन्होंने अपने हाथ में पकड़ा थैला खोला और तौलिए में लिपटे नोटों के दस बंडल निकाले। ‘एक लाख हैं—’ और उन्हें एक-एक करके चायदानी पर रख दिया।

रामकुमारी के चेहरे पर लगी गंदगी छिपी नहीं थी, बल्कि साफ दिखाई दे रही थी। उसने सोचा, 'तुम्हें किसने कहा था कि यह निशाना नहीं है?'
"उसने फोन किया था।"
‘जी?’ रामकुमारी का चेहरा पसीने से तरबतर था, ‘आपने मुझे किसलिए बुलाया था?’ मुझे अचानक समझ आ गया कि इसमें किसी तरह का घोटाला है। मैं इसमें बिल्कुल भी नहीं फंसना चाहता था; लेकिन अब कोई उपाय भी नहीं था। मैंने पुलिस को बताया, 'मोहनलाल जी अमेरिका गए थे। वे अपने लौटने पर अखबार छपने का इंतजार कर रहे थे। उन्हें विदाल से मिलने में झिझक महसूस हुई होगी, इसलिए उन्होंने मुझे बुलाया। मैं उनसे मिलने आया था, विदाल को समझाने और उन्हें बताने के लिए। उन्होंने मुझसे कहा है कि मैं यह पैसा आपको कर्ज के लिए दे दूं।'
यह सुनकर रामकुमारी के चेहरे पर उमड़ते भाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे। अपने भावों को काबू में रखते हुए उसने पूछा, 'तो क्या वे आपके नाम से पत्रिका प्रकाशित करने के लिए तैयार हैं?'
मुझे नहीं पता! उन्होंने इसके बारे में कुछ नहीं कहा। उन्होंने बस इतना कहा, 'पैसे लेकर आओ।'
‘क्या? मुझे डर है कि मैं आपको सच बता दूंगा। हाँ, सही कहा ना?’
तिपानीस ने उसकी ओर देखा। उसकी आँखों में जो भाव थे, उन्हें देखकर किसी का पक्ष लेना मुश्किल था। उसने कहा, 'तिपानी साहब, क्या आपका नाम राजारामभया नहीं है? आप सचमुच मेरे भाई हैं। पाँच साल तक आप हर महीने मेरे घर आते थे और मुझे खाने के लिए पैसे देते थे। इसके बाद भी आप मुझे गोरे साहब के यहाँ नौकरी दिलवाते थे। आप नाली का काम करते थे। अब बच्चे बड़े हो गए हैं और अपने पैरों पर खड़े हो गए हैं। आप पिछले कुछ सालों से यहाँ नहीं आए हैं। जो भी हो, मैं आपको आदर की नज़र से देखती हूँ। आप मुझे ये नोट बदले में नहीं देते। अगर बच्चे इन्हें देख लेंगे तो मुझे पैसे वापस नहीं देंगे। भला बच्चे उस औरत के मन को कैसे समझ पाएँगे जो अपनी इज्जत की परवाह करती है? मैंने अपने परिवार के लिए पैसे बचाए हैं। मैंने सोना भी जमा किया है।'
वह चुपचाप वहीं बैठा रहा। उसने नोटों का बंडल अपने बैग में रख लिया। उसने तौलिया अपनी कमर पर लपेटा और कहा, 'सावधानी से यहाँ आओ! अगर किसी ने इस लोकल ट्रेन को छुआ तो उसे सज़ा मिलेगी।'

उन्होंने अन्य पूछताछ भी की, जैसे कि गोरे साहब के साथ चीजें कैसी चल रही थीं, कितना काम था, और क्या हो रहा था?
जाता है, के हा आता है और इसी तरह चलता रहता है। उसने कहा, 'तुम यहाँ बैठो और बात करो। मैं बोलती हूँ-बोलती हूँ।'
व्यानपाक इसे तैयार कर देता है। आधे घंटे में यह तैयार हो जाएगा। आप इसे खाकर जा सकते हैं।
"नहीं। मैं किसी और दिन रात के खाने के लिए वापस आऊंगा। कोई घर आना चाहता है।"
‘पु गिरबा के यहाँ कब आएगा? मैंने तुम्हें फोन भी नहीं किया। अब कोई बात नहीं। अब तुम मुझे फोन कर सकते हो। जल्दी हो जाएगा। पाँच मिनट रुको।’
वह रसोई में गई। उसने मन ही मन सोचा, 'क्या बकुला गाती है? यह डफली किसकी है? क्या यह सीख रही है?'
'विजयपुर नाम का एक आदमी यहाँ पास में पढ़ाता है। वह वहाँ जाता है; लेकिन वहाँ कई मुश्किलें हैं। अगर उसका मन करता है, तो वह रविवार को जाता है।' पोहा बहुत स्वादिष्ट था। उसने कहा, 'मैंने अपनी जिंदगी में इतना पोहा कभी नहीं खाया,' और एक और टुकड़ा मांगा। वह गोरे साहब के घर के बारे में भी बात कर रही थी, 'मैंने उनसे घर के काम करना सीखा है। पति-पत्नी दोनों बहुत अच्छे लोग हैं। उनका स्वभाव कठोर नहीं है। वे बेवजह दूसरों के मामलों में दखल नहीं देते।'
वह चाय लेने गया, लेकिन उसने फिर जोर देकर कहा, 'कभी-कभी मुझसे मिलने आना। मैं 3:30 बजे तक घर आ जाऊंगी।'

२
घर से निकलने से पहले तक दबा हुआ गुस्सा धीरे-धीरे बढ़ता गया। मैंने इसे नौ महीने अपने गर्भ में पाला और जन्म दिया, लोगों के दरवाजों से धूल-मिट्टी इकट्ठा करके इसे पाला-पोसा, इसे सिखाया कि चाहे कितनी भी जानें ले ले, यह हमेशा एक कुत्ते की तरह वहाँ जाएगा! ला नापिट्रिका
यह वह नाम है जिसे हटाया जाना चाहिए! मैंने इसका कड़ा विरोध किया है और इसे नोट कर लिया है, महोदय।
अरे बाप रे! मुझे उसे डांटना चाहिए और आज ही घर छोड़ने को कहना चाहिए। उसका घमंड कितना बढ़ गया है! वो कहती है, 'अगर मेरी शादी नहीं हुई तो मैं चली जाऊंगी। चाहे तुम कितना भी रोओ-गिड़गिड़ाओ, मैं नहीं आऊंगी!' ये तो लड़की को सताने का तरीका है। लड़कियों को अपनी मां को अच्छे से समझना चाहिए! ये सरासर गलत है! बेटी मां के दिल में सबसे अहम होती है। मैं कहां मरूं? अगर किशन की शादी हो गई, तो मैं इस पत्नी को अपनी बेटी मानूंगी। एक बेटी ऐसी कैसे हो सकती है? बिल्कुल होशियार! मां की लाडली। अमेरिका से आने पर वो अपनी मां का कितना ख्याल रखती है? वो उनकी साड़ियों को ठीक करती है, उनके तंग ब्लाउज को समेटती है, छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखती है!
मैं उन्हें यह भी नहीं बताती कि 'मम्मी को यह पसंद है, पापा को वह पसंद है', वह मुझे खड़े होकर सूप या सब्ज़ी बनाना सिखाती हैं। और यह? क्या आपने कभी रसोई में आकर सारा खाना खुद बनाया है? 'ऐसे नहीं कर सकते। बेवजह झंझट कर रहे हो!' वह किनारे से कहतीं। कौन जाने जब उन्हें भूख नहीं होती तो अपने पति के लिए क्या पकाती होंगी!
गहरी सोच में डूबी हुई वह प्रतिभाताई द्वारा अमेरिका से लाए गए चाकू से सब्जियां काटने लगी। उसकी मृत्यु सहजता से हो गई! बिना मुझे बताए वह तिपानीसाहेब से मिलने चली गई। क्यों? इसलिए मैंने उससे कहा कि वह मेरी सिफारिश करे! उसने मुझे लाखों रुपये भेजे और कहा, "पत्रिका में अपना नाम मत छपवाना और मैं दान-पुण्य का काम भी नहीं करूंगी!" तिपानीसाहेब ने कहा कि यह स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया है; लेकिन यही निष्कर्ष निकलता है।
जाने दो। पैसा वापस भेजना सही था या गलत? एक लाख रुपये! कितना होता है? एक लाख रुपये! एक हजार रुपये प्रति माह ब्याज! गोरे साहब ने कहा था, ‘इस पैसे से तुम किसे हाथ लगाओगे? अगर तुम्हारे पास तीन हजार रुपये प्रति माह और

चॉल में दो खोया जगह है, तो तुम्हारा बेटा और बहू तुम्हारा ख्याल रखेंगे! लेकिन इस पैसे को कभी मत छूना। अपने बच्चों को भी बैंक में जमा इस रकम के बारे में मत बताना।’ क्या तुम बैंक से एक लाख रुपये निकाल लोगे? या फिर उसे कहोगे, ‘तुम इतने सालों से कमा रहे हो, ये पैसा तुम्हें खुद खर्च करना चाहिए। मैं पैसा कहाँ से लाऊँगा?’ ये ठीक रहेगा। चाहे तुम अपनी जान की कुर्बानी दे दो, वो तो डंडे की तरह बाप के पास ही जाता है – जाने दो! मैं इसे इस पर क्यों खर्च करूँ?’ यही सोचते हुए उसने कटा हुआ प्याज कड़ाही में डाल दिया।
लेकिन क्या पैसा लौटाना सही था या नहीं? या जमादा को उसे पैसा दे देना चाहिए था और उसे छोड़ देना चाहिए था? तब शायद, यह कैदी अपनी माँ पर गर्व करती और कहती, 'माँ ने अपनी बहू पर इतना खर्च किया!' इससे उसके पिता का स्नेह ज़रूर कम हो जाता। एक लाख! एक महीने के लिए एक हज़ार रुपये! साहब को सोचना चाहिए, मैंने सही किया या गलत? उन्होंने कमरे के बाहर लगी घड़ी पर नज़र डाली। सात बज रहे थे। कभी-कभी वह सात बजे तक दफ्तर में रहते हैं। अगर किस्मत अच्छी रही, तो वह अभी भी वहीं होंगे। उन्होंने कुछ अतिरिक्त पैसों का एक छोटा सा थैला लिया, दरवाजा बंद किया और बिना रुके निकल गए। भाइयों और बहनों, इस बूथ पर मत जाना। वहाँ आपको जान-पहचान वाले लोग मिलते हैं। बापट रोड पर आपको कोई जान-पहचान वाला नहीं मिलता। यह सड़क काफी दूर तक इस जंगल से होकर गुज़रती है। सौभाग्य से बूथ खाली था। मैंने नंबर डायल किया। दो- तीन बार घंटी बजी और बॉस ने फोन उठा लिया।
‘आप भाग्यशाली हैं। मैंने दरवाजे की घंटी सुनकर ही वापसी की। अगर मुझे आधा मिनट भी देर हो जाती, तो मैं आपसे नहीं मिल पाती। आपने फोन क्यों किया?’
वह भावुक हो गया और फूट-फूटकर रोने लगा।
"क्या हुआ, रामकुमारी? तुम तो आज सुबह बिल्कुल ठीक थीं।"
‘मैंने आपको यही बताने के लिए फोन किया था—’ फिर उन्होंने बातचीत के दौरान हुई सारी बातें बताईं और सोचा, ‘मैंने एक लाख रुपये लौटा दिए, क्या मैंने इसमें कुछ गलत किया?’
‘कुछ भी गलत नहीं है! मुझे पता है कि आप हमेशा अपना सम्मान करते हैं। मैं रजिस्टर में अपना नाम दर्ज नहीं कराना चाहता, मैं दफ्तर नहीं आऊंगा, मैं पैसे बर्बाद कर दूंगा और अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ लूंगा। मैं इस व्यक्ति को और क्या जवाब दे सकता हूं?’

‘भले ही वह दान मांगने आए, मैं उसका साथ नहीं दूंगी! भले ही वह उसका पिता हो, वह मेरा पति नहीं है!’
फिर भी, कभी-कभी आपको आधे घंटे तक खड़ा रहना पड़ता है। आपको एक लड़की के मन को समझना होगा, कुमारी!
'कुमारी' कहकर पुकारने के उनके विशेष संबोधन ने लड़की के पहले से ही कोमल हृदय को और भी पिघला दिया।
वह चौंक गया, "क्या यही तुम सोचते हो? तुम भी?"
वह गुस्से से रोना चाहता था।
देखो, आठ बजे दफ्तर आ जाना। हम इस बारे में बात करेंगे। तब तक चुप रहना। लेकिन बैंक में जमा उन फिक्स्ड डिपॉजिट को मत छूना। उनका बैलेंस भी खर्च मत करना। मैं तुम्हें पैसे दे दूंगी। आजकल तो लड़कियां भी शौक के नाम पर पैसे खर्च करती हैं।
लेकिन इसे मौका मत दो। देखो यह थोड़ा-बहुत कैसे फिट बैठता है। बहुत जिद्दी है।
अगर मुझे यह करना ही पड़े, तो संयम से मुझे बता देना कि मैं बस इतना ही कर सकता हूँ।
‘इसके लिए आप कितना भुगतान करना चाहते हैं? बिलकुल नहीं!’
‘यह कितना है? क्या यह सिर्फ एक लड़की की तनख्वाह नहीं है? लड़के की तनख्वाह के लिए आप जिम्मेदार नहीं हैं। वह कमा रहा है। इसमें से चार पैसे रख लीजिए और उसे दे दीजिए।’
यह वाला!'
बूथ के दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी। बाहर दो लोग उसकी कॉल खत्म होने का इंतजार कर रहे थे। इसी वजह से उसने फोन की घंटी बजने दी और कहा, 'उषा आ रही है।' उसका मन काफी शांत हो गया था। उसे यह एहसास हुआ कि उसने सुबह-सुबह याया से बात की थी, उसके गाल याया के कदमों की आहट सुन रहे थे।
मैंने जोर लगाया, अपनी आँखें बंद कीं और तब तक शांत रहा जब तक सारा कष्ट समाप्त नहीं हो गया और आगे क्या हुआ यह मैंने देखा।
आपको अपने आप पता चल जाएगा कि क्या करना है।
घर लौटते समय, मुझे समय का ख्याल आया, सवा सात बज रहे थे। वह अब तक घर आ गई होगी। यह सोचकर कि वह सोच रही होगी कि वह कहाँ चली गई थी, मैंने सब्जी की

दुकान से एक नींबू, धनिये की चार टहनियाँ और चार करी पत्ते खरीदे और घर की ओर चल पड़ा।
बकुला को देखकर ऐसा लग रहा था जैसे वह अभी-अभी घर लौटी हो। उसके सामने छह कैसेट पड़े थे जो वह अभी-अभी लाई थी। अपनी माँ को देखते ही उसने उन्हें एक के ऊपर एक ढेर कर दिया। उसकी माँ रसोई में थी।
उसने उसे उठाया और अपने कमरे में चली गई।
कमरा 7x4 फुट की लकड़ी से बना था और उसमें लकड़ी का फर्श था। लकड़ी ने ही उसे एक खास लुक दिया था, बस इतना ही। चूंकि वह एक लड़की थी, इसलिए उसे एक अलग कमरे की ज़रूरत थी, इसीलिए उसने यह कमरा बनवाया था। उसमें साढ़े पाँच फुट लंबा और ढाई फुट चौड़ा पलंग था। उसने छत के साथ-साथ चारों तरफ़ अलमारियाँ बनवाई थीं। पलंग के एक तरफ़ तकिए रखे थे। पहले तो उसकी माँ को इस तरह का कमरा पसंद नहीं था; लेकिन अब वह भी इससे खुश थी।
जब बकुला कपड़े बदलकर और कैसेटों को करीने से सजाकर बाहर आई, तो उसकी माँ हंगामा कर रही थी। उसे देखते ही उसकी माँ ने सोचा, 'क्या तुम खाना परोसने वाली हो या नन्ही बच्ची का इंतज़ार करने वाली हो?'
'मुझे भूख लगी है!' बकुला चिल्लाया।
वह हाथ में खाने की थाली लिए सोफे पर बैठ गई। ए मान ने बात छेड़ते हुए पूछा, 'क्या तुम मुझे बिना बताए इस जगह गई थीं? किसी गायक की सिफारिश करने?' बकुले को बात समझने में थोड़ा समय लगा। वह अपंचा को गवई कहकर पुकारती है, वो भी एकवचन में। वो उसे कभी ‘तुम्हारा पिता’ नहीं कहती। लगता है उसे अपने मामाओं से फोन पर बात करने और उनसे मिलने का विचार समझ आ गया था। हालाँकि उसे इस बात की जिज्ञासा थी कि क्या हुआ था, फिर भी वह चुप रही। अगर वो इस बारे में सोचती तो उसे गुस्सा आ जाता। इसके विपरीत, अगर वो चुप रहती तो उसे सब कुछ बता देती।
और फिर वही हुआ। माँ रसोई से बाहर आईं और बोलीं, 'क्या तुम्हें ज़रा भी गर्व या सम्मान है? क्या मैंने तुम्हें इतना बड़ा बनने के लिए नहीं पाला था? क्या मैंने तुम्हें अपनी पूरी क्षमता से वह करने के लिए नहीं कहा था जो मैं कर सकती हूँ?'
‘हमने इस विषय पर कई बार बात की है। चलिए देखते हैं आज क्या हुआ!’
इसी समय किशन भी लौट आया। उसने सुना था कि उसकी मां और भाभी के बीच कुछ कहा- सुनी हो रही है।

आ गया। ऐसा लग रहा था जैसे बहुत-बहुत समय बीत गया हो, लेकिन यह होना ही था। बुकुले से छह इंच लंबा, उस तकिये के बाल गर्दन तक लंबे थे। जींस, पैरों में पावर शूज़, हाथ में चमड़े का बैग। उसने यही बात हज़ार बार सोची थी, और उसने इसे एक बार फिर दोहराया, 'अगर मैं बिना कोई निशान छोड़े यहाँ से चला गया, तो मेरी माँ चिंतित हो जाएगी।'
हालांकि मां को लगा कि बच्चे को देखते ही उसे बोलना बंद कर देना चाहिए, लेकिन उसे एहसास हुआ कि उसे भी सब कुछ जानना चाहिए। उसे दोनों को एक साथ बताना चाहिए।
"अपने जूते उतारो, हाथ-पैर धो लो, और आकर देखो! खाना तैयार है।"
उसने ऐसा ही किया। उसने पसीने से भीगे हुए कपड़े दो अलमारियों के पीछे कपड़े सुखाने वाली रस्सी पर टांग दिए।
उसे हैंगर से बांध दिया गया था। उसने अपने शरीर पर दो तांबे के सिक्के रखे और उसके ऊपर कपड़े की पट्टियों से लिपटी हुई लुंगी पहन ली। जब वह झोपड़ी से बाहर आया, तो उसने टीपी पर खाने की एक थाली देखी। उसने उसे हाथ में लिया और दीवार के सहारे पैर फैलाकर फर्श पर बैठ गया। जब उसने उसे टिपनीसाहेब के घर लौटने और लाखों रुपये भेजने की सच्चाई बताई, तो उसने कहा, 'क्या यह सच है कि मैंने उसकी जानकारी के बिना गायिका को संदेश भेजा था?'
यह सब बकवास सुनकर किशन को गुस्सा आ गया, 'यह सच है कि उसने हमारी देखभाल नहीं की, हमारा पालन-पोषण नहीं किया; लेकिन उसने जो पैसे भेजे थे - वह भी पाँच-दस या पंद्रह-बीस हज़ार नहीं थे! एक लाख रुपये! तुमने उसे वापस भेज दिया? इसमें क्या समझदारी है?'
वह किशन के स्वभाव को जानता था। अगर वह पहले आ जाता, तो ये सब बातें न बताता। कॉलेज की पढ़ाई पूरी न करने के बावजूद, गोरेसाहेब ने उसे नौकरी दे दी है। उसे इधर-उधर भागदौड़ करनी पड़ती है, लेकिन तनख्वाह अच्छी है। अगर वह मन लगाकर काम करे, तो पैसों की कमी नहीं होगी। मालिक ने एक साल में तनख्वाह दुगुनी करने का वादा भी किया है, लेकिन वह इससे संतुष्ट नहीं है। वह एक दोस्त के साथ व्यापार करना चाहता है! उसके पास इसके लिए पूंजी नहीं है और वह लगातार संघर्ष कर रहा है। वह अपनी तनख्वाह में से चार पैसे भी घर नहीं भेजता और न ही बचाता है। अगर उसे अपने व्यापार से एक लाख रुपये मिल जाते, तो वह करोड़पति बन जाता!
‘आप और क्या सोच रहे थे, तिपानिसाहेब?’

‘कुछ नहीं। वे कह रहे थे कि उन्हें पता नहीं कि उन्हें पैसे मिलेंगे या नहीं। इसका मतलब यह नहीं है कि उन्हें पैसे नहीं मिलेंगे। तुम उनका पीछा क्यों कर रहे थे?’ आखिरी सवाल बकुले के लिए था।
‘आपने मेरी बेटी के लिए भेजे गए पैसे वापस क्यों भेज दिए?’
इस पर किशन ने पलटकर कहा, “अगर तुम्हें पैसे चाहिए होते तो तुम मुझे फोन करके बुला लेते। तुमने वो पैसे अपनी माँ को क्यों दिए?” फिर उसने अपनी माँ से पूछा, “लेकिन तुमने तो घर पहुँचे हुए पैसे वापस भेज दिए। अब शादी के खर्चे कैसे पूरे करोगे?”
‘लोगों के घरों में खाना बनाकर जो पैसे बचेंगे, मैं उन्हें खर्च कर दूंगी! मैं किसी से भी बचे हुए पैसे खर्च करने के लिए नहीं कह रही हूं। इस बारे में किसी को कुछ कहने की जरूरत नहीं है!’ इतना कहकर मां ने बात खत्म कर दी।

३
बाकुले ने तुम्हारे कमरे में लैंप जलाया और दरवाजा बंद कर दिया। तकिये के पास रखा पंखा चलाने के बावजूद भी गर्मी कम नहीं हुई। बाहर से हवा चलने के बावजूद भी कमरे में आराम महसूस हो रहा है। बाहर सोने का मौका मिला है, ये तो छोटी नदी के किनारे है।
वे कमरे में रहेंगे।
मेरी मां के प्रति मेरा गुस्सा बढ़ता जा रहा था। कुछ टिप्पणीकार तब आए जब मैं घर पर नहीं था, जिससे हंगामा मच गया। उन्होंने फोन पर पूछा था कि मेरी मां किस समय घर आएंगी। वे मेरी मां को इतनी बड़ी रकम देने के लिए तैयार नहीं होंगे। किसकी? मेरे पिता की। उन्होंने मुझसे कहा होगा कि मैं यह पैसा अपनी पत्नी को दे दूं। जब उसने पैसा लेने से इनकार कर दिया, तो वह अदालत में कैसे पेश होता और दान करता? वह अपना नाम अखबार में कैसे छपने देता? उन्होंने पैसा मुझे वापस भेज दिया होगा क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि मैं आऊं। मेरे पिता उसकी ज़िद से नाराज़ होकर किसी दूसरी औरत के पास चले गए होंगे!
उसने बिस्तर के नीचे कोने में रखे बक्से से एक फाइल निकाली। यह उसके पिता की तस्वीरों की फाइल थी, जो अलग-अलग पुराने पत्रों के साथ आई थीं। क्या भाव थे! क्या मुद्राएँ थीं! सच में! कलाकारों के भावों का ख्याल रखने वाला कितना सच्चा साथी! पिता उसे छोड़कर चले गए, लेकिन उन्होंने कुछ भी गलत नहीं किया।
फाइल को वहीं रखते हुए उन्होंने कैसेटें निकालीं। उन पर नंबर साफ़ दिखाई दे रहे थे। कैसेटों का रैपर हटा दिया गया। उन्होंने सभी कैसेटें सुन ली थीं। मुझे सरप्राइज देने के लिए उन्होंने मुझसे कहा था कि घर जाने तक इन्हें न खोलूं। उन्होंने एक-एक कैसेट हाथ में लेकर ध्यान से देखा। हर कैसेट पर पिताजी की अलग-अलग मुद्रा में तस्वीर थी। आत्मनिरीक्षण, विनम्रता, जोशीले मोड़ लेने का जुनून, राग के आनंद को श्रोता तक पहुंचाने का भाव! ये सभी मुद्राएं एकदम सही थीं। अगर तस्वीर बड़ी होती तो उसे फ्रेम करवाकर दीवार पर लगाया जा सकता था। हर कैसेट के पीछे राग का नाम, संगतकारों के नाम लिखे थे। अरे! टिप्पणी! संगीत निर्देशक चंपा मोहन। घर कुछ देर के लिए खाली था। उनकी दूसरी पत्नी। मैं अपने पिताजी के बिखरे हुए गीतों को

इकट्ठा कर रही हूं, उन्हें संकलित कर कैसेटें बना रही हूं। महान महिला! ऐसी महान महिला को कितने कष्ट सहने पड़ते होंगे? मैं इसे सुनते-सुनते थक गया हूँ!
छहों कैसेट पर लिखे बारह नाम पढ़ने के बाद, उन्होंने केदार राग की पहली कैसेट निकाली। हेडफ़ोन लगाकर कैसेट बजाते हुए उन्होंने सोचा, ‘वाह!’ कितनी सुरीली आवाज़ है! बेस बढ़ाने पर केदार राग की भावनाएँ महसूस होती हैं। और किस गायक में यह प्रतिभा है? अविनाश, यशा के अलावा इस दुनिया में और कौन सा महान उपहार है? मैंने तुमसे शादी करने का फैसला किया था, कितना सही फैसला था! मैं तुमसे प्यार करती हूँ – मैं तुमसे प्यार करती हूँ, अविनाश! वाह! षड्ज से मध्यमा तक पहुँचने पर कितनी भावनाएँ उमड़ती हैं! नियमों का पालन करने वाले दूसरे गायक श्रो को ऐसी ऊँचाइयों तक क्यों नहीं ले जा पाते?
वह एक साथ सुर गुनगुनाने लगी, मानो वह तबले की संगत में गा रही हो और ताल के साथ चट बजा रही हो। उसे सुरों का क्रम समझ नहीं आ रहा था। फिर भी, वह मन ही मन सुर दोहराती रही, मानो बिना एक भी सुर छोड़े गा रही हो। अनजाने में ही वह 'वाहवा' भी बोल रही थी।
मां ने डांटते हुए कहा, "क्या हो रहा है? इस समय तुम लोगों की नींद क्यों खराब कर रहे हो?"
उसने संशयपूर्वक गाना बंद कर दिया। हालांकि, उसकी माँ को गुस्सा आ गया। उसने अपने गुस्से को दबा लिया और अगला गाना सुनने लगी।
दूसरी लय में गाते समय भी कितनी सुंदर धुनें चाहिए होती हैं! अगर मेहनत न की जाए तो श्लोक आपस में मिल जाते हैं, यह बिल्कुल सच है, जैसा कि विजयपुर के उस्ताद कहते हैं। पता नहीं ऐसे श्लोक पाने के लिए मुझे कितने साल मेहनत करनी पड़ेगी! समय बीतता गया। कोई दैनिक अनुष्ठान नहीं था। पिताजी को प्रतिदिन दस से बारह घंटे मेहनत करनी पड़ती थी! मंदिर में, नदी के किनारे! यह लेख कितना अद्भुत था! उन्होंने पिताजी पर लिखे लेखों की फाइल निकाली। जी हाँ। यही वह लेख है। यह ‘धामयुग’ में आया था।
उन्होंने पूरा लेख एक बार फिर पढ़ा। बार-बार पढ़े इस लेख को दोबारा पढ़ते ही उनका हृदय उसी श्रद्धा भाव से भर उठा। क्या ही अभ्यास है! संगीत के प्रति क्या ही समर्पण है! भले ही इसमें छपी तस्वीर पुरानी है, फिर भी पिताजी इसमें कितने सुंदर लग रहे हैं! उनके चेहरे पर क्या भाव हैं, उनकी आँखों में क्या ही चमक है!

कुछ देर तस्वीरों को देखने के बाद, उसने फाइल को डिब्बे में रखा और धीरे से डिब्बे को बिस्तर के नीचे सरका दिया। वह फिर से उसी केदार को सुनना चाहता था; लेकिन अगर उसने ऐसा किया, तो उसे नींद नहीं आएगी। शादी की सभा के दौरान उसे ज़मीन पर खड़ा रहना पड़ेगा। आखिर कर्ज़ कहाँ है?
यह कहना असंभव है कि किन फ़ाइल विवरणों पर विचार किया जाएगा। अगले दिन जब वह जागा, तो उसे एहसास हुआ कि उसका दिमाग काम नहीं कर रहा है, उसने अपने इयरफ़ोन निकाले, टेप रिकॉर्डर को एक तरफ रख दिया और लाइट बंद कर दी। लेकिन मुझे सोने का मन नहीं कर रहा था। केदार राग मेरे कानों और मन में गूंज रहा था। उसे सुनने की इच्छा को रोकना मुश्किल था। पिताजी कभी भी कोई राग डेढ़ घंटे से कम नहीं गाते। केदार जैसा राग तो एक घंटे से कम का होता ही नहीं; लेकिन ये कैसेट सिर्फ पच्चीस-छब्बीस मिनट की ही क्यों है? कितना अच्छा होता अगर केदार राग दोनों तरफ होता! काश मैं अपना डफ निकाल कर केदार गा पाती; लेकिन मैं पाँच मिनट से ज़्यादा नहीं गा सकती। और तो और, मैंने महीनों से डफ नहीं बजाया है। अविनाश से दोस्ती शुरू होने के बाद से मैं घर देर से आने लगी हूँ। अब अगर मैं इस समय डफ निकालकर शाद्ज़ बजाऊँगी तो मेरी माँ रो पड़ेगी! पड़ोसी भी चिल्लाएँगे।
मेरी माँ की गायन के बारे में अलग राय है। उन्होंने मुझे नौकरी मिलने तक गायन नहीं सिखाया। उनका पक्का मानना है कि गायन से लोग बिगड़ जाते हैं। अगर मैं चौदह साल की उम्र में सारेगम सीखना शुरू करूँगी, तो गायन में आनंद कैसे आएगा? इस उम्र में लय, ताल और रागों का बुनियादी ज्ञान विकसित हो जाना चाहिए। गायन पर पकड़ मजबूत होनी चाहिए। जैसे मछली जन्म के बाद पानी में तैरती है, वैसे ही होना चाहिए। जब मैं छोटी थी, मेरे पिताजी मेरे सामने गाते थे और मैं चुपचाप सुनती थी! मेरी माँ मुझे यह बताती हैं। मेरे पिताजी ने यह क्यों नहीं सोचा कि इस लड़की को जन्म से ही गायन का शौक है, तो उसे गायन सिखाना चाहिए? अगर वह और कुछ नहीं भी करती, तो मुझे गायन सिखाने में क्या दिक्कत थी? मेरी बेटी में संगीत की प्रतिभा है। वहाँ आते रहो, मुझे पैगंबर ने कहा था!
वह अपने पिता पर गुस्सा हो गई। इसमें भी कोई नई बात नहीं थी! कॉलेज में पढ़ाई के दौरान वह दो बार उनके गीत सुनने गई थी। एक बार चिबलदास हाई स्कूल के मैदान में और दूसरी बार बिला मातोश्री के सभाघर में। उस दिन शकुंतला दवे भी उसके साथ थीं। उन्हें भी हिंदुस्तानी संगीत बहुत पसंद था। वह गंधव

महाविद्यालय में पढ़ती थीं। अपने पिता के गीत से वह कितनी खुश होती थीं! उस दिन भी उन्होंने ज़िद की, 'अगर आप पंडितजी का गीत नहीं सुनेंगी, तो आपका जीवन व्यर्थ है! एक बार सुन लीजिए! मैं एक बड़ी व्यवसायी हूँ।'
मैं व्यवस्था कर रहा हूँ। गीत समाप्त होने पर स्थानीय सभा आयोजित करने की व्यवस्था भी मैं करूँगा।
मेरी माँ को भी मेरे पिताजी से मिलने की बहुत उम्मीद थी। मैंने इसके बारे में पहले रेडियो पर सुना था, बस इतना ही। मैंने अपनी माँ से कहा, 'कॉलेज में एक कार्यक्रम है। मेरे दोस्त भी मेरे साथ हैं। मुझे आने में देर हो सकती है।'
शकुंतलाबेन की नज़रों में पिताजी एक महान नायक थे! उनके मन में उनके लिए इतना प्रेम और सम्मान था जितना किसी फिल्म अभिनेता या क्रिकेटर के लिए कभी नहीं होता, और इसीलिए वह हमेशा उनकी प्रशंसा करती रहती थीं। उन्हें पता होना चाहिए था कि मैं उनकी बेटी हूँ, लेकिन उन्होंने नहीं बताया। मैं उन्हें कैसे बताती? एक बार मेरे मन में आया कि मुझे कोई बहाना बनाकर सीधे घर चले जाना चाहिए।
गीत शुरू हुआ। पूरी सभा उनकी आराधना कर रही थी। वे एक गुणी पुरुष थे, एक ऋषि थे, उनके पास ऐसी कला थी जो शास्त्रों को न जानने वालों को भी उनकी दिव्य उपस्थिति के आनंद में लीन कर देती थी!
वे उत्सुकता से उसके चेहरे को देख रहे थे। नाक, आंखें और माथा सब अलग थे। माया से मेरा गहरा जुड़ाव है! हालांकि मैं बहुत गुस्से में थी और उठकर जाना चाहती थी, लेकिन गाने की शक्ति ने मुझे वहीं रोके रखा। शकुंतला ने जो कहा वह बिलकुल सच है। किसी और गायक के पास ऐसा गाना नहीं है! लेकिन मैंने दो कॉन्सर्ट सुने और फिर दोबारा जाने का मन नहीं हुआ। दर्शकों के सामने बैठकर गाना सुनते हुए मुझे महसूस हुआ कि मेरे अंदर का दर्द अभी भी बरकरार है, साथ ही गाने का असर भी।
एक दिन वह शकुंतला से कह रही थी, 'क्या तुम्हें पता है? पंडितजी की पहली शादी हुई थी! उसके बाद उन्होंने अपनी बेटी से शादी की। दो बच्चे होने के बाद उन्होंने उसे भी छोड़ दिया और अपने गुरु सर मनोहरी दास के साथ दिल्ली चले गए! तीन-चार साल बाद वे मुंबई वापस आ गए और एक फ्लैट में अकेले रहते हैं!'
'अकेला?'

‘तुम इतनी अकेली क्यों हो? उसके पास गोपियों की कितनी कमी है! उसका नाम मोहन है!’ वो भौंहें मटकाते हुए हंस पड़ी। मेरी उम्र की उस लड़की की आंखें नीले भावों से भर उठीं। सब कुछ जानते हुए भी मैं हैरान रह गई। मैं खुद को रोक नहीं पाई और बोली, ‘सब कुछ जानते हुए भी लोग उसके गाने सुनकर कैसे टूट जाते हैं?’
‘क्यों? इसका इससे क्या लेना-देना है? अगर कोई कलाकार चला जाता है, तो वह जोखिम भरा हो जाता है। इस विषय पर जितनी अधिक जोखिम भरी कहानियां होंगी, कला का यह विषय उतना ही आकर्षक हो जाएगा! आप जानते हैं?’
मुझे उस पर गुस्सा आया। मुझे डर था कि अगर वह इस तरह बोलने लगी तो उसे गुस्सा आने में देर नहीं लगेगी। बाद में, वह कुछ कलाकारों की कहानियाँ सुनाने लगी। बिल्कुल वैसे ही जैसे कॉलेज की लड़कियाँ अभिनेताओं की हरकतों के बारे में गपशप करती हैं! मैंने सोचा, 'तुम्हें ये सब कौन बता रहा है?' ‘लासम, इधर आओ, गपशप करने का यही समय है!’
अपनी मूर्खता का एहसास होने पर मुझे शर्मिंदगी महसूस हुई। इस संदर्भ में कुछ भी सुनना मुझे शर्मनाक लगा; लेकिन वह शकुंतला से भी यही बात कह रही थी, मानो यह कोई विशेषाधिकार हो।
उसने मुझे कॉलेज के पास स्थित गंधव महाविद्यालय के बारे में बताया। उसने कहा, 'दो साल की पढ़ाई काफी है। रागों की पहचान हो जाती है। जब आप रागों को पहचानना सीख जाते हैं, तो गीत सुनना बहुत आनंददायक हो जाता है। गीत सुनते समय आपको बहुत आनंद मिलता है!'
मैं भी उत्साहित थी। माँ को कॉलेज के बारे में बताकर उनकी जानकारी के बिना क्लास का समय तय करना संभव है; लेकिन अगर वह वहाँ जाती हैं, तो उन्हें अपने पिता के बारे में सुनना ही पड़ेगा। इसमें कौन-कौन शामिल है?
पता चला कि उनकी पहली पत्नी बोरीवली में रह रही थी और बकुला लाल भी वहीं थे।
अगर मुझे पता चल जाए कि नवाब मेरी बेटी है तो क्या होगा? नहीं। अगर हम अदालत भी जाएं तो भी यह बात किसी के ध्यान में नहीं आएगी, हमें इस बारे में सावधान रहना चाहिए।

४

बोर्ड की बैठक दोपहर 3 बजे होनी थी, लेकिन प्रबंध निदेशक सुबह से ही काम कर रहे थे। यह बताना असंभव था कि वे कहाँ होंगे और किस जानकारी की मांग करेंगे। इसी वजह से वे एक पल के लिए भी अपनी डेस्क से नहीं उठ सकते थे। अविनाश की भी यही स्थिति थी।
उन्हें अपने केबिन से बाहर आने की भी अनुमति नहीं है। वे एक बैठक में चर्चा के लिए उपस्थित हैं।
मार्केटिंग ही एकमात्र समस्या होगी, मार्केटिंग मैनेजर या पीए को आराम कहाँ मिलेगा? मीटिंग के बाद, सब लोग कार में बैठ गए और आराम का तो सवाल ही नहीं उठा। अविनाश को उनके साथ शेरेटन जाना ही पड़ेगा। क्या उनके खाने-पीने का इंतज़ाम करना मार्केटिंग का काम नहीं है? ज़्यादातर कारोबार तो खाने की मेज़ पर ही होता है, वो भी पेट में इम्पोर्टेड ड्रिंक्स भरने के बाद! अविनाश ही तो सब कुछ बताता है।
लेकिन तिथि की नजरों में मामला बदलने को तैयार नहीं था। उसने पैसे भेज दिए; लेकिन लाना नहीं आई! तिथि के सामने असली सवाल यह था कि वह अविनाश को कैसे बताए कि वह काम नहीं करेगी।
भले ही उसे अपनी गलती का एहसास सौ बार हो चुका था, लेकिन अब इसका कोई मतलब नहीं था। अगर उसे सब कुछ पहले ही स्पष्ट रूप से बता दिया गया होता, तो यह सवाल ही नहीं उठता। उसे उस समय सच क्यों नहीं बताया गया? उसके पिता क्रोधित थे, इसलिए उसकी माँ ने लाखों रुपये का बक्सा वापस भेज दिया! अब वह क्या करती?
अविनाश के साथ मेरी दोस्ती गाने के प्रति इसी जुनून से पनपी। वो अपनी फिल्मों में रागों पर आधारित गाने कितनी खूबसूरती से गाते हैं! मुझे उनकी धुन या लय में एक भी कमी नहीं दिखती! कितना भावपूर्ण! उन्होंने शास्त्रीय संगीत की शिक्षा नहीं ली है; लेकिन वो लय से झट से पहचान लेते हैं कि कौन सा गाना किस राग का है। कभी-कभी तो मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। वो यू थिएटर से लेकर नौशाद तक के सभी गाने कितने शौक से सुनते हैं! उन्होंने कहा कि इसी वजह से मुझे शास्त्रीय संगीत सुनने की आदत पड़ गई।
मैं खुद आपको बताता हूँ। हमने साथ में कम से कम आठ या दस संगीत कार्यक्रम सुने हैं। धीरे-धीरे
मैंने अपनी मां के साथ संगीत सुनने का आनंद और संतोष महसूस किया है। लेकिन अब कैसेट खरीदने की होड़ बहुत कष्टदायक होती है! पहले मुझे सिर्फ पुरानी

फिल्मों के गाने और ग़ज़लें ही पसंद थीं। लेकिन अब तो मैं पागलों की तरह सिर्फ शास्त्रीय संगीत ही सुनता हूँ।
एक बार वो भी यही बात कह रहे थे। दफ्तर से निकलते समय किसी ने उन्हें उनके पिता की सभा के बारे में बताया, तो वो वहाँ चले गए। किस्मत से उन्हें टिकट मिल गया। ऐसी सभा के बारे में सुनकर उनके पिता चौंक गए! वो मुझसे ये भी कह रहे थे, ‘अगर पंडित मोहनलाल जी फिल्मों के लिए गाने लगें, तो सारे गायक पीछे छूट जाएँगे! वो बिना किसी सहारे के सिर्फ़ शब्दों के दम पर कितना भाव व्यक्त कर सकते हैं! कमाल! कमाल!’
लेकिन मैं इसे सुनना बंद नहीं कर पाई। 'अविनाश-' अचानक मेरी आँखों से आंसू बहने लगे। आधी रात को बिना सोचे-समझे ही मैं रोने लगी। ये बात पहले से ही मेरे मन में थी।
क्या यह प्यार था या अपने पिता के प्रति उसकी भावनाओं को देखकर पैदा हुआ था?
जाना!
उन्होंने भी मेरी भावनाओं की तीव्रता को महसूस किया। यह उनकी आंखों में साफ झलक रहा था।
हाँ, ऐसा ही था। जब वह मेरी आँखों में कारण जानने की कोशिश कर रहा था, तब मैंने हल्के से उसे कहा।
मैंने कहा, 'वो मेरे पिता हैं, अविनाश! मैं उनकी बेटी हूँ!'
‘कौन? मोहनलाल जी? आपने इतने दिनों से मुझसे बात क्यों नहीं की?’
"मैं आपको दोपहर के भोजन के समय बताऊंगी," मैंने उठते हुए कहा।
दोपहर के भोजन के दौरान जब मैं सब कुछ सहजता से बता रही थी, तब अनजाने में मेरा चरित्र भी इस कहानी में शामिल हो गया। मैंने अपने पिता को उस छात्रा के साथ उनके रिश्ते के बारे में बताया, मैंने अपनी माँ को भी उनकी भावनाओं के बारे में बताया। इसके विपरीत, मैंने अपने पिता के उदार और शांत स्वभाव का विस्तार से वर्णन किया। मैंने बहुत बातें कीं। उन्होंने यह भी कहा, 'कलाकार के जाने पर ऐसी घटनाएँ तो होती ही हैं। तुम्हें परेशान होने की कोई ज़रूरत नहीं है। तुम्हें रोने का मन क्यों हुआ?'
सुचेल ने जवाब दिया, 'कुछ नहीं। मुझे डर था कि तुम बहुत प्रभावित हो जाओगे।' यह सुनकर यान ने मेरा हाथ पकड़ा और उसे दबाया।

अगले दिन हमारी आँखों में एक अलग ही भाव था। दोपहर करीब 12 बजे, जब मैं कंप्यूटर पर कुछ काम कर रहा था, वह मेरे पास आया और बोला, 'चलो लंच ब्रेक पर चलते हैं, मुझे तुमसे बहुत कुछ कहना है। बहुत कुछ, जैसे कि समुद्र!'
दफ्तर के गलियारे के एक कोने में एकांत पाकर वह हँसा, 'पूरी रात इधर-उधर की बातों में ही बीत गई! मुझे मालिक का नाम तुम्हारे पिताजी के गीत में मिला। मैं उन्हें कुछ समय से गाते हुए सुन रहा हूँ। सिनेमा तो बस इस क्रोध की एक झलक है।'
उपयोग; लेकिन पिताजी, आपने इसका कितना सुंदर रूप दिखाया है। आपने इसकी विशालता को सागर की तरह दिखाया है। आपने इसकी लहरों को समुद्र की तरह दिखाया है। कल से मैं इसका असली रूप देख रहा हूँ! आप ही हैं! मैं कितना मूर्ख हूँ कि इतने दिनों तक इसे पहचान नहीं पाया। क्या आप मुझे इसकी मुद्रा दिखाएंगे? बहुत धीमी आवाज़ में।
मुझे भी रोमांच महसूस हुआ। गलियारे के इस तरफ शोर कम था। मैंने गुनगुनाया, "मैं गुनगुनाती हूँ, मैं गुनगुनाती हूँ।" मैं गुनगुनाती रही, "मैं गुनगुनाती हूँ, मैं गुनगुनाती हूँ।" वह सुनकर दंग रह गया। उसकी आँखों में कितनी शांति थी! "बस इतना ही कह सकती हूँ—" मैं रुक गई, लेकिन उसने मेरे होंठों को धीरे से चूम लिया! मैंने अपना सिर नीचे झुकाया और अपना दाहिना हाथ कसकर पकड़ लिया, "मैं तुमसे प्यार करती हूँ! तुम मेरे हो!"
अगले दिन वह ‘आप’ और ‘तुम’ के शो में आए। उस दिन वह कह रहे थे, ‘अगर गौर से देखो तो तुम अपने पिता से बहुत मिलते-जुलते हो! यहाँ तक कि तुम्हारी आवाज़ भी! तुमने गायन छोड़कर यह काम क्यों चुना? संगीत उद्योग को नुकसान हुआ है। बल्कि मुझे तो फायदा हुआ है!’
‘मुझे भी गाने का शौक है; लेकिन आपसे मेरी मुलाकात काम की वजह से हुई! अब मुझे कुछ नहीं चाहिए। गाना भी नहीं!’ मेरा गला भर आया। किसी के देखने की परवाह किए बिना, मैंने अचानक ही उनका हाथ कसकर पकड़ लिया।
मैंने उसे कभी नहीं बताया कि मेरे पिता से मेरा कोई रिश्ता नहीं था। मुझे डर था कि अगर मैंने उसे बताया तो वह मुझसे दूर चला जाएगा। हमारा प्यार मेरे पिता के गीत की नींव पर पनपा और फला-फूला। मुझे डर था कि अगर वह स्रोत गायब हो गया तो प्यार का पौधा मुरझाकर मर जाएगा! 'कितने कार्यक्रम हैं, है ना!' 'अगर वह एक दिन गाँव में रुकता है, तो अगले दस दिन दौरे पर रहता है।' 'जब वह

हमसे मिलने आता है, तो वह दूसरी पत्नी खूब तमाशा करती है!' मैं उसे कारण बता रही थी। वह भी
हाना ने कहा, “जब कोई और यह काम करता है तो ऐसी कठिनाइयाँ आना स्वाभाविक है!” हाना ने मन ही मन कहा: “मैंने इस हाथ से अपना कर्तव्य पूरा कर लिया है, यही काफी है। मैं इस हाथ से तुम्हारे लिए और भी बहुत कुछ करूंगी।”
कोई उम्मीद नहीं है।
‘बिल्कुल!’ मैंने भी खुशी से सिर हिलाया। इस समय, मेरी स्थिति बताने के बजाय, वह मुझे दूसरी कहानियाँ सुनाने लगे। उन्होंने बताया कि वह अपनी माँ से कितना प्यार करते थे, कॉलेज में पढ़ते समय मेरे लिए पैसे कैसे कमाते थे, एक बार जॉयस को पाकिस्तान ले जाकर उसे जी भर के मलाई खिलाई थी, और भी बहुत कुछ। ‘वह मुझे गाना सिखाना चाहते थे, लेकिन अगर वह उन्हें सिखाने देतीं, तो क्यों नहीं!’ यह कहते हुए उन्होंने अपनी दूसरी पत्नी के दुर्व्यवहार की दो-तीन घटनाएँ भी बताईं। जब उनके माता-पिता घर आए, तो उनकी माँ और छोटू ने उन्हें चेतावनी दी कि वे वही माहौल बनाए रखें। उन्होंने पहले उनसे कहा, ‘उन्हें अचानक भोपाल जाना पड़ा। नहीं तो, वह ज़रूर आते!’
मैंने झूठ का इतना लंबा जाल क्यों बुना? मुझे पहले ही पूरी सच्चाई बता देनी चाहिए थी।
पूरा दफ्तर शांत था। हर कोई अपने काम में मग्न था। बोर्ड की बैठक चल रही थी। हर कोई इस बात को लेकर चिंतित था कि एमडी इंटरनेट से कौन सी जानकारी मांग सकता है। उन्हें क्लर्कों को फोन करके यह सोचना चाहिए था कि असल में क्या हुआ था।
उसने नोटों पर लिखे नंबर पर डायल किया। उसने फोन उठाया। लड़की ने धीमी आवाज़ में कहा, 'चाचा जी, मैं एक बदमाश हूँ। आप कल आए और चले गए, है ना? आपने क्या कहा, पिताजी? माँ अभी भी सदमे में हैं। वह ठीक से कुछ नहीं बोल पा रही हैं।'
‘मैंने तुमसे एक लाख रुपये उधार लेकर मेरे पास आने को कहा था। मैंने मना कर दिया, बकुले ने पैसे नहीं मांगे। वह बस इतना चाहती है कि तुम खुद शादी में आकर उसे आशीर्वाद दो।’ उसने कहा, ‘वह आ गया है, शादी के बाद तुम उसके पति को घर ले आना!’
"लेकिन वे इस पर ताला क्यों नहीं लगा देते?"

"मैं तुम्हें यह कैसे बताऊं, जान? हमारा रिश्ता ऐसा नहीं है, जिसमें एक-दूसरे के विपरीत सवाल और विचार हों।"
‘अगर मैं व्यक्तिगत रूप से मिलूं और इस बारे में सोचूं तो क्या होगा?’
‘मैं क्या कहूँ? अगर तुम मुझसे मिलो भी तो मेरा नाम मत लेना। मैं उनका रक्षक हूँ। वे मेरे रक्षक हैं!’
‘हंजे? क्या तुम्हें अच्छा नहीं लगेगा अगर मैं उससे मिलूँ?’
‘तुम बहुत समझदार हो, बच्ची! मुझे इस सवाल का जवाब कैसे देना चाहिए? क्या तुम्हें खुद फैसला नहीं करना चाहिए?’
'चाचा जी, आप मुझे जवाबदेह नहीं ठहराना चाहते; लेकिन बताइए, इस मामले में मैं और किससे बात करूं? मेरे पिता शादी समारोह में भाग नहीं लेना चाहते और "मां इसमें भाग लेने के लिए तैयार नहीं हैं।"
“हाँ, सही है। मैंने तुम्हारे पिता को भी बता दिया है कि उन्होंने पैसे लेने से इनकार कर दिया है। उन्हें भी बुरा लगा होगा; लेकिन मुझे समझ नहीं आता कि तुम इतनी ज़िद्दी क्यों हो? तुम्हारी माँ ने तुम्हें इतने सालों तक पाला-पोसा और सिखाया। अब तुम भी अपने पैरों पर खड़ी हो गई हो, तुमने शादी न करने का फैसला कर लिया है। अगर तुम इस मौके पर उनसे मिलने जाओगी, तो तुम्हारे पिता तुम्हें ज़रूर आशीर्वाद देंगे। शायद इस बार वो तुम्हें सांसारिक जीवन के लिए उतने ही लाखों रुपये दे दें। अगर तुम चाहो, तो मैं भी इस मामले में अपनी राय दे सकती हूँ।”
उसे महसूस हो रहा था कि अपने चाचा पर और दबाव डालने का कोई फायदा नहीं है। वह कब तक इस कमजोर आवाज में बोलता रहेगा? 'धन्यवाद चाचा! आपके सिवा मेरी मदद कौन करेगा? क्या मैं फोन पकड़े रहूँ? बॉस का फोन आ रहा है!' उसने फोन काट दिया।
उस समय अविनाश से मिलने का कोई रास्ता नहीं था। शाम 6:30 बजे, बोर्ड की सभी बसें शेरेटन के लिए रवाना हो गईं। जैसे ही यह बस निकली, बाकी सभी लोग अपनी- अपनी बसें पकड़ने के लिए दौड़ पड़े।
उस रात बकुले को नींद नहीं आई। लाना की शादी में मौजूद न रहने की कीमत लाखों रुपये थी।
ऐसा लगता है कि इस तरह की बात कहना उचित नहीं है। मेरी माँ ने पैसे लेने से इनकार कर दिया।

इसमें कोई शक नहीं कि यह गर्व की बात है; लेकिन वह छोटा बच्चा अपनी माँ के साथ बाहर सोफे पर सो रहा है।
उन्होंने तर्क दिया, 'पैसा मेरे पास था। अगर आप इसे इस प्रोजेक्ट पर खर्च न करने के लिए दृढ़ थे, तो ठीक है; लेकिन मेरे द्वारा वह पैसा लेने में क्या समस्या थी? लेकिन आपको ऐसा क्यों लगता है कि मैं आपका बहुत बड़ा प्रशंसक हूँ?'
‘तुम तो ज़ुबान की हड्डी हो! तुम ऐसे बात कर रहे हो जैसे दामाद नहीं, बल्कि बेटी के पति हो! अगर तुममें ज़रा भी स्वाभिमान होता, तो तुम उस विषय को दोबारा नहीं उठाते! तुम कितने बेशर्म हो!’ माँ शिकायत कर रही है। यह सच है। लाना के न होने पर तुम क्या करोगे?
उसका पैसा? लेकिन वह अविनाश को क्या कारण देगा? वह दो महीने के लिए चला जाएगा – लेकिन
आप पैतृक संपत्ति में अपना नाम शामिल न करने का क्या कारण बताएंगे? सोच-सोचकर उसका दिल थक गया। आखिरकार उसे एक उपाय सूझा। किसी पर भरोसा करने का कोई फायदा नहीं। माँ उसकी बात नहीं समझती। छोटू ऐसा ही है। शुरू से ही खोखला है। बी.कॉम किया। शादी तक लड़ता रहा! गोरे साहब ने उसे बुलाया और सब कुछ समझाया – कंप्यूटर का कोर्स कर लो, नहीं तो नौकरी नहीं मिलेगी। कुछ भी काम नहीं आया। अशिक्षा है ही नहीं। इससे बेहतर नौकरी कैसे मिलेगी? उसने अपनी नौकरी छोड़ दी और धंधा शुरू कर दिया और मैं तो सोच भी नहीं रही! ऐसा मूर्ख बच्चा अपनी बड़ी बहन की बात कैसे समझ सकता है? मेरा विनाश इससे बेहतर है! मैंने अपने सीने में दर्द छिपाया और कहा, ‘मुझसे गलती हो गई, महाराज! मैं ये सब सपने में देख रही हूँ! पिछले उन्नीस सालों से मेरे पिता से मेरा कोई रिश्ता नहीं रहा है।’ और उसे जाने दिया।
बस यही सोचकर उसकी आँखों में पानी आ गया। अगर ऐसी बातें उसके दिल पर आ गईं, तो मेरा विनाश पूर्ण हो जाएगा। तब मुझे इस दुनिया में किसी की ज़रूरत नहीं रहेगी! मुझे किसी का आशीर्वाद नहीं चाहिए और मैं नहीं चाहती कि कोई मेरे घर आए! मुझे आज शाम ढलते ही उसे ये बात बतानी थी। लेकिन कहाँ? मुंबई में एकांत कहाँ है? इसलिए, काम का बहाना बनाकर मुझे शनिवार और रविवार को होटल के कमरे में जाना पड़ता था! वहाँ मुझे शाम ढलते तक सुकून भरा एकांत मिल जाता था! 'चिंता मत करो, सभी प्रेमी ऐसा ही करते हैं!' उसका यही तर्क था। यह समझने के बाद भी, शाम ढलते ही होटल से निकलकर भीड़ में घुलमिल जाने तक मेरे

□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□, '□□□□ □□□□!
□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□
□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□'
□□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□? □□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□?
□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□?

जैसा कि उम्मीद थी, अविनाश भी मान गया। लड़की जानी-पहचानी है। हम साथ काम करते हैं, वो मुझे पसंद करती है। मैं भी उसे पसंद करता हूँ। उसका नाम परिवार में है या नहीं, ये उसकी माँ पर छोड़ दो। ये सब एक-दो घंटे का खेल है। उसके बाद, हम दोनों साथ रहना चाहते हैं, है ना?
लेकिन इससे बड़े-बुजुर्ग खुश नहीं हुए। वे हँसे और बोले, ‘पहले तो वो कहती थी कि उसके पिता उसे अंगूठी देंगे। अब ये कहती है। इधर-उधर से कुछ जानकारी लिए बिना आगे बढ़ना ठीक नहीं होगा।’ माँ भी हँसी और बोली, ‘लड़की की शादी हो रही है, तुम दफ्तर आ रहे हो – अगर बात यहीं खत्म कर दो तो क्या फर्क है? परिवार के प्रति जरा भी श्रद्धा नहीं है। गाँव के लोग तो बस ऐसे ही हैं! इस जाति की औरतें कितनी जल्दी गुस्सा हो जाती हैं! इतनी जल्दी में क्या है? कहीं लड़की मिल ही न जाए?’
इस पर पिता ने जवाब दिया, "अरे, सब लोग यहाँ हैं। लड़कियों, इस परिवार के बारे में और जानकारी जुटाओ। आगे क्या करना है, हम बाद में तय करेंगे।" अविनाश अपनी माँ की बातों पर कभी ज्यादा ध्यान नहीं देता था; लेकिन विदला की बातें दवाल की बातों से बिल्कुल अलग थीं। विदला के सोचने का तरीका हर तरफ से अविनाश पर असर डाल रहा था। उसने सोचा, 'तो क्या? तुमने क्या फैसला किया है? क्या तुम इसे कर पाओगे या नहीं?'
‘नहीं। मैं समझ गया!’ वह हँसा। वह भी समझ गया था। ये मेरे शब्द नहीं हैं। वे सिर्फ मेरे फायदे के लिए मुझे बता रहे हैं, है ना? हम जानकारी जुटा लेंगे। लेकिन सवाल यह था कि जानकारी कैसे निकाली जाए। आखिरकार, एक रास्ता मिल गया। इस बार, बकुला को अलविदा कहने के बाद, वह सीधे सनेगुजी मार्ग पर स्थित मेलोडी हाउस गया। वह मालिक - कपड़िया - को अच्छी तरह जानता था। वह पिछले सात-आठ सालों से नियमित रूप से कैसेट खरीदता आ रहा था। कपड़िया उसे कुछ छूट भी देता था।
अविनाश को देखते ही कपड़िया ने पूछा, "परसों तुम्हें ये छह कैसेट कैसे मिले?"
उसने इस बात को पकड़ लिया और अविनाश से छुपाए रखा। उसे पता चला कि चंपा लाल मोहनलाल की पत्नी है और वह कुया में रहती है। उसे पता और फोन नंबर भी मिल गया। बाद में अविनाश ने सोचा, 'क्या यह सच है कि पंडितजी की दो पत्नियां हैं?'

‘दो? भगवान कृष्ण की कितनी पत्नियाँ हैं? ये सब तो ऐसे ही है! जहाँ तक मुझे पता है, चंपाबाई उनकी आधिकारिक पत्नी हैं। बहुत अच्छी महिला! व्यापार में माहिर! कोई झंझट नहीं, कोई परेशानी नहीं। जितनी कैसेट बिकती हैं, उतना कमीशन मिलता है। कितना सीधा-सादा कारोबार। मैंने अकेले पंडितजी को तीस हज़ार की कैसेट बेची हैं! मैंने एक कॉल किया और दो घंटे में सामान डिलीवर हो गया! कितनी कुशलता! मुंबई में कोई भी संगीत कंपनी इतनी कुशल नहीं है। एचएम, इत्रीफ हाउस – कोई नहीं।’
मार्केटिंग के क्षेत्र में काम करने वाले अविनाश भी चंपाबाई से प्रभावित हुए। उन्होंने और जानकारी जुटाई और मोहन संगीत विद्यालय के बारे में पता चला। यह सुनकर कि उनके पति एक कार्यक्रम के लिए गांव जाते हैं, उन्होंने भी उन्हीं कक्षाओं को देखा, और उनकी प्रशंसा सम्मान में बदल गई।
दुकान में भीड़ बढ़ने लगी। जगह कम थी, इसलिए दुकानदार ने उसकी तरफ देखे बिना ही उसे अलविदा कहा, "अगले हफ्ते फिर आना। नए कैसेट आ रहे हैं। और दूसरी बात, मोहन मेलोडीज़ मुफ्त में कैसेट नहीं देते। वे सिर्फ दुकानदारों को ही छूट देते हैं। क्या आपने इस पते पर आने का सोचा है? मैंने कहा था ना।"
अगले दो दिन चिंतन में व्यतीत हुए। एक समाधान सुझाया गया। मैंने कपड़िया द्वारा दिए गए नंबर पर डायल किया और कहा, 'मैं चंपाबाई से बात करना चाहता हूँ।'
‘बातचीत।’
मेरा नाम विनय चंद्र प्रसाद है। मैं एक पत्रकार हूँ। मैं पंडित मोहनलाल जी का प्रशंसक हूँ। मुझे अभी-अभी इस गाने की छह कैसेट मिली हैं। मैं इस पर एक लेख लिख रहा हूँ। आपका साक्षात्कार।
संपादकों ने मुझे आने के लिए कहा है।
‘कौन सा अक्षर?’
दिल्ली से प्रकाशित। चार भाषाओं में: हिंदी-बंगाली-ओडिया-असमिया। भाषा का नाम।
नहीं, अभी पाँच बजे हैं, चार बजे आ जाना। क्लास पाँच बजे शुरू होती है।
उसने अपने बॉस से अनुमति ली और कंप्यूटर पर 'भाषा' के लिए एक लेटरहेड बनाया।

मैं अपने साथ एक शॉर्टहैंड नोटबुक ले गया। मैंने बैग से कंपनी का नाम हटा दिया और चला गया।
टैक्सी से ही संगीत विद्यालय का बोर्ड दिखाई दे रहा था। प्रधानाचार्य पंडितजी थे। द्वारपाल मुझे अंदर ले गया। लगभग उनसठ वर्ष की एक हष्ट-पुष्ट महिला ने दरवाजा खोला। उसके कान में हीरे की बाली ने मेरा ध्यान खींचा। उसने सोने का हार और कलाई में मंगलसूत्र पहना हुआ था। उसने कटक रेशम की भारी साड़ी पहनी हुई थी। उसका चेहरा चिकना और युवा दिख रहा था, मानो फेशियल से निखरा रहा हो, और उसके हाथ कोमल थे।
अपना परिचय देते ही उन्होंने कहा, "बैठ जाइए।"
हॉल बड़ा था। दीवारों के किनारे चार डफ रखे थे। फर्श पर चार हारमोनियम और दो तबले थे। पूरे कमरे में जैज़ संगीत गूंज रहा था। एक तरफ सोफा रखा था। दीवार पर पंडितजी और मैडम की जवानी की तस्वीर लगी थी। वह अंदर से चाय और बिस्कुट लेकर आए।
जब उन्हें पंडितजी के संगीत प्रशिक्षण, बचपन आदि के बारे में जानकारी मिली, तो वे हँसते हुए बोले, "मैंने सुना है कि आप नृत्य के देवता हैं। आपका क्या हुआ? क्या मुझे आपकी एक तस्वीर मिल सकती है? काम पूरा होने पर मैं आपको बता दूंगा।"
इसी बीच उन्होंने यह विषय उठाया, 'महोदया, मैं आपसे एक और बात पूछना चाहता था। लोग आते हैं।'
कुछ गलतफहमियां हैं। पत्रकारों का यह कर्तव्य है कि वे इन्हें दूर करें। आपके क्या विचार हैं?
'क्या चल रहा है?'
"क्या यह सच है कि पंडितजी बंद्या में रहते हैं, वे यहां नहीं आते?" 'बिल्कुल नहीं! यह एक आवासीय क्षेत्र है। यहाँ कई विज्ञान विषय पढ़ाना संभव नहीं है। इसलिए हमने बंद्या में एक शाखा खोली है।'
‘देखो! और ये तुम्हारी हालत है और लोग बेतुकी बातें कर रहे हैं! कहते हैं पंडितजी ने पहले सपना देखा था। क्या ये सच है?’
‘अरे! यह तो सरासर झूठ है!’
‘बोरीवली की एक पत्नी, एक तीस वर्षीय बेटी और एक चौबीस वर्षीय बेटा है—’ 'बिल्कुल झूठ!'
लेकिन उन बच्चों के सरनेम भी लाल रंग के हैं! ये कैसे हो सकता है?

‘□□□□ □□□□□□, □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□? □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□?’ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□
□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□, □□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□, □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□
‘□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□? □□□ □□□□□?’
‘□□□!’
□□ □□□□ □□, □□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□, □□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□
□□□ □□□□ □□□□□ □□□! □□□ □□□ □□□□, □□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□
□□ □□ □□□-□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□! □□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□? □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□! □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□ – □□□-□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□
□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□-□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □ □□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□
◌□□□□□□□.

सात

१
मैं सुबह जल्दी उठ गया। मैंने बिस्तर देखा, पाँच बज चुके थे। रात के एक बज चुके थे और मैं गहरी नींद में सो रहा था। काश मैं थोड़ी देर और सो पाता; पर नींद नहीं आ रही थी। रात में बारह घंटे जागना और दिन में पर्याप्त नींद लेना एक गायक के लिए बहुत ज़रूरी है। नहीं तो वो कार्यक्रम कैसे प्रस्तुत कर सकता है? अगर मैं कैलिफ़ोर्निया भी चला जाऊं, जहाँ साढ़े बारह घंटे का समय अंतर है, तो मैं यहाँ के समय में आसानी से कैसे ढल पाऊंगा? ये तो कुछ भी नहीं है। मुझे तो दो मिनट में ही सो जाना चाहिए था!
जब मैं अपनी आँखें बंद कर रहा था, तभी यह विचार मेरे मन में फिर से आया। एक ऐसा विचार जिसने मुझे पूरी रात परेशान किया। यह भी सामान्य है। अगर मेरे मन में विचारों का सैलाब उमड़ता रहता है, तो मुझे रात में जल्दी नींद नहीं आती और इसके विपरीत, मैं सुबह जल्दी उठ जाता हूँ।
मैंने एक लाख रुपये लौटा दिए! उस लड़की ने मुझे लाना लाने के लिए इतनी मेहनत की थी! उसने ऐसा नहीं किया! रामाराम ने रात आठ बजे फोन किया था – लेकिन मुझे इसे इतना बड़ा मुद्दा क्यों बनाना चाहिए था? मैंने उसे चौबीस साल पहले छोड़ दिया था। मैं पिछले उन्नीस वर्षों से पूरी तरह ब्रह्मचर्य का पालन कर रही हूँ। अगर मैं राजाराम की इस बात के लिए पैसे लेने जाती हूँ – उसने गहरी नींद में वापस जाने की कोशिश की। एक बार जब वह इस गंदे मूड में आ गया,
यदि मैं बीमार हो जाता हूँ, तो चार-पाँच दिन तक अस्वस्थ महसूस करता हूँ। वह उठा और बैठ गया। उसने ठंडे पानी से स्नान किया। उसने दाढ़ी नहीं बनाई। उसने केतली में चाय बनाई। चाय पीकर उसने डफली जलाई। यही इन सभी विचारों का अचूक इलाज है! यदि मैं सुबह एक घंटे के लिए मंदिर में आकर ध्यान लगाता हूँ, तो मेरे मन की परेशानियाँ दूर हो जाती हैं। रात को मेरी नींद भी गहरी हो जाती है। यह मेरा नियमित अनुभव है! औषधि ज्ञात है; परन्तु रोग को समझकर औषधि का प्रयोग करना उचित नहीं है। क्या यही प्ररद्ध है? मेरे मन में जो दूसरा विचार उत्पन्न हुआ, वह स्वतः ही बैरागी भैरव की ओर मुड़ गया। फिर बैरागी भैरव वहीं विलीन हो गए और दूसरा विचार विलीन हो गया। मंदिर का वातावरण बैरागी भैरव की अनुभूति से भर गया।

आठ बजे भी बैरागी भैरव जाग रहे थे। मंद्रा शतक के बाद वे तार शतक में भी गए। माहौल खुशनुमा था। अगर तबला-हारमोनियम का साथ होता तो और भी मजा आता। यह सच है कि वाद्य यंत्रों के साथ गाने से अंतर्मुखता कम होती है। लेकिन कोई कब तक सिर्फ अंतर्मुख रहकर गा सकता है? क्या कोई सिर्फ फटा का अभ्यास करके जीवन यापन कर सकता है? अगर कोई सिर्फ अंतर्मुख रहकर गाता रहे तो रस-निप्री कैसे हो सकता है? वाह! यह तो अद्भुत है!
मुझे सुझाया गया विचार अच्छा लगा। दरअसल, मुझे ऐसे विचारों को लिख लेना चाहिए; लेकिन मैं लिख नहीं सकता। यह कठोर लगता है।
गुस्से को और बढ़ाना न चाहते हुए, वह हॉल में इधर-उधर घूम रहा था, अगले कॉल का इंतज़ार कर रहा था, तभी फ़ोन की घंटी बजी। उसने घड़ी देखी। आठ बज चुके थे। लोगों के फ़ोन करने का समय हो गया था। उसने अपना डफली नीचे रखा और रस्सी उठा ली।
‘क्या पंडितजी यहाँ हैं? महावीर प्रसाद। दिल्ली से। मैं यहाँ आया हूँ। मैं आपसे मिलना चाहता हूँ। मैं एक कार्यक्रम तय करना चाहता हूँ। क्या मैं एक घंटे में आ सकता हूँ?’
‘हो. या
यह अच्छा है। दिल्ली में इस कार्यक्रम का एक साल का खर्च एक लाख रुपये से अधिक रहा है। हवाई किराया, चार सितारा होटल में ठहरना आदि के अलावा, राजाराम को तीस हजार रुपये लौटा देने चाहिए और बाकी पैसे का सही प्रबंधन करना चाहिए। इतने बड़े कलाकार के लिए इतनी बड़ी रकम का कर्ज लेना ठीक नहीं है!
दाढ़ी बनाने और नहाने के बाद उसने नाश्ते में ब्रेड, जैम और दूध लिया। अब वह दोपहर में मेस से लंच बॉक्स आने तक बेचैन है। क्या आज ही वह दिन है? रेवती को आना था। अमेरिका से आने के बाद से उसने शिकवा की ठीक से देखभाल नहीं की है। उसका मूड नहीं है।
उसने जोर से जम्हाई ली। रात को पर्याप्त नींद न मिलने पर यही होता है। दिल्लीवासियों
अगर वो न आता तो मैं सो जाती। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। जब वो ऊंघ रहा था, तभी दरवाजे की घंटी बजी।
‘कौन? कमीन लीज-’

अंदर से कुंडी न होने के कारण दरवाजा खुल गया। वह चौंक गया। मनोहरी दास दरवाजे पर खड़ी थी! उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था।
अंदर आते ही उन्होंने विनम्रतापूर्वक पूछा, "पंडित जी, क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?"
सलवार-कमीज-दुपट्टा, कंधे पर हैंडबैग, सँवारी हुई भौहें, चमकती हुई घुंघराले बाल, गालों पर ब्लश, होंठों पर लिपस्टिक, आंखों में ढेर सारा मस्कारा –
यह स्पष्ट नहीं है कि इसे 'हां' कहा जाए या 'ना'।
‘क्या आप नाराज़ हैं? अगर मैंने आपको बुलाया होता, तो आप मुझसे मिलने से इनकार कर देते। अगर आप सचमुच नाराज़ हैं, तो मुझ पर थूक दीजिए! मुझे चार थप्पड़ मारिए। अगर आप चाहें तो मुझे लात मारिए! जैसा आप चाहें। अगर इसके बाद बात करनी है, तो मैं करूँगी। अरे! मुंबई में आपको इतनी गर्मी क्यों लग रही है! दिल्ली में भी इतनी गर्मी है; लेकिन आपको इतनी गर्मी नहीं लगती। पंखे का स्विच कहाँ है?’ फिर उसने पंखा चालू कर दिया। फिर, उसके बगल में बैठकर, उसने उसका दाहिना हाथ अपने हाथ में लिया और कहा, ‘पंडित मोहनलाल जी! आप मुझे क्यों बुलाना चाहते हैं? पंद्रह साल हो गए हैं, है ना? मैंने इसके बाद एक पत्र लिखा था और माफ़ी माँगी थी; लेकिन आपने मुझे माफ़ नहीं किया। यह एक रहस्य है जिसे भरत मुनि भी नहीं सुलझा सके कि इतने महान कलाकार इतने कठोर कैसे हो सकते हैं। आपने पिछले पंद्रह वर्षों में मेरा एक भी कार्यक्रम नहीं देखा है। लेकिन मैं दिल्ली में आपके किसी भी कार्यक्रम को कभी नहीं छोड़ती – मतलब, अगर मैं गाँव में होती हूँ। सिर्फ़ दिल्ली ही नहीं,
वाराणसी में तानसेन उत्सव, पुडुचेरी में सवाई गंधव, मुंबई में महाराष्ट्र, ये सभी।
मैंने कार्यक्रम सुन लिया है। क्या आप बता सकते हैं कि आपको किस बात पर गुस्सा है? आप मुझ पर विश्वास नहीं करते, आप मेरे नृत्य से भी नाराज़ हैं! लेकिन मुझे आप पर गुस्सा नहीं है और न ही आपके गीत पर। आज भी मुझे आपके गीत के प्रति सम्मान है।
यह मुश्किल लग रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे बहुत खुजली हो रही हो। खुजली होना स्वाभाविक है।
क्या इसीलिए वो ऐसा कह रही है? लेकिन मुझे याद आया, एक समय था जब सवाई गंधवम

हम दोनों एक ही समूह में थे। पहले दिन मैं सबसे पीछे बैठी थी। उसका कार्यक्रम तीसरे दिन था। हरीम के साथ भी ऐसा ही था। इलाके में सभी जानते हैं कि हमारा रिश्ता टूट चुका है, इसलिए कार्यक्रम के आयोजक इस बात का ध्यान रखते हैं कि हम दोनों के कार्यक्रम एक ही दिन न हों। शायद वह पहले आकर गाना सुन चुकी हो। शायद उसे दूसरों से पर्याप्त जानकारी न मिली हो। नहीं। उसे भी गाना सुनना अच्छा लगता है। उसकी समझ भी अच्छी है। उसका ज्ञान अन्य नृत्य कलाकारों की तरह सतही नहीं है।
वह गाती है; लेकिन जब वह नाच रही होती है, तो मैं झट से उसके सिर से पगड़ी हटा देता हूँ।
वह पैदल चलता था।
‘आप तो कालका में आईटीसी के साथ सिर्फ दो घंटे ही रहे हैं, है ना? उसी समय से बंगाली गायक आपको नंबर वन गायक मानने लगे। मैं वहां मौजूद था। क्या आप बता सकते हैं कि उस समय आपने किस रंग का गाउन पहना था?’
हालांकि उसने अपने चेहरे पर आने वाली मुस्कान को दबा लिया, फिर भी उसके चेहरे पर खुशी झलक रही थी।
‘मोहन, मुझे पता है तुम भी मेरी तरह अकेले हो। लेकिन जब मैं घर आऊँ तो क्या तुम मुझे एक कप चाय नहीं पिलाओगे? तुम्हारी रसोई कहाँ है? मैं तुम दोनों के लिए चाय बना दूँगी!’
उन्हें यह घनिष्ठता पसंद नहीं आई। वे थोड़ा हँसे और बोले, 'पहले चाय परोसी जाएगी।'
मुझे बताओ तुम क्यों आए हो!
‘क्या हुआ? तुम तो गुस्सा भी बर्दाश्त नहीं कर सकते! सिर्फ तुम ही गुस्से में हो!’ वह बेतहाशा हंस पड़ी।
‘अच्छा! आप क्यों आए? अगर आप मुझे कारण बता दें तो बेहतर होगा!’
पंडित जी, अब ये नाटक करने का कोई फायदा नहीं! मैं हवाई अड्डे के लिए निकल चुका हूँ। गाड़ी नीचे खड़ी है। शाम को दिल्ली में दूतावास का कार्यक्रम है, इसलिए मैं रुक नहीं पाऊँगा। भारत-जर्मन सांस्कृतिक उत्सव की पूरी तैयारी हो चुकी है। मैं आपको जल्दी से बता दूँ कि मैं क्यों आया हूँ। पेरिस में एक अंतरराष्ट्रीय नृत्य सम्मेलन होने वाला है। मुझे वहाँ एक दिन का प्रदर्शन देना है। फिर नृत्य कार्यक्रम है। इसका मुख्य विषय है 'भारतीय नृत्य और संगीत का आंतरिक संबंध'। यह विषय आयोजकों ने चुना है। बताइए, इस

विषय को आपके अलावा और कौन इतनी खूबसूरती से निभा सकता है? मैंने इस बारे में काफी सोचा है। हम तीन राग चुनेंगे। अलग-अलग समय के तीन राग। आपको उन रागों को विस्तार से प्रस्तुत करना है। प्रत्येक राग पैंतालीस मिनट का है। मैं इस पर नृत्य करूँगा। मेरा अभिनय आलापी के अनुसार होगा। नृत्य का भाग बहुत छोटा रखना है; लेकिन दोपहर और मध्यरात्रि के रागों में नृत्य अधिक करना होगा। इसके लिए मैं तराना रखूँगा। सबसे पहले, आपका आलापी और इसके बाद मेरा नृत्य और अभिनय होगा। आइए साथ में अभ्यास करें ताकि हम इसकी बारीकियों को सीख सकें।
बात और स्पष्ट हो जाएगी। अभ्यास के लिए आठ दिन काफी हैं। आप दिल्ली आ सकते हैं। मैं भारतीय संगीत और नृत्य को पूरी दुनिया में फैलाना चाहता हूँ। "लेकिन मुझे नाचने के लिए गाना छोड़े हुए कई साल हो गए हैं!" वह हँसे।
‘अगर तुम पुरानी बातें मन में रखोगी तो नए विचार कैसे आएँगे? एक कलाकार को यह शोभा नहीं देता। मैं तुम्हें फिर से बता रही हूँ, तुम इसमें मुख्य कलाकार रहोगी। मैं तुम्हारे गीत पर नृत्य करूँगी। मैं हर आइटम को राग का नाम दूँगी जैसे तोड़ी, दुगा, कायना, भैरवी, भूपली, सारंग। तुम शांत होकर सोचो। मैं तुम्हें बुलाऊँगी और हम शांति से बात करेंगे। ज़रूरत पड़ी तो मैं फिर आऊँगी। देखते हैं कि क्या मैं अपने मन का क्रोध दूर कर पाती हूँ! एक कलाकार अपने मन को कैसे शांत रख सकता है!’ वह करीब आया और उसे गहराई से चूमा। ‘अलविदा’ कहकर वह उठी और जाने लगी, लेकिन उसकी आँखों में एक भाव था कि ‘इसके बाद कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है।’

२
पंद्रह साल बाद हम आए। उनका व्यवहार पहले जैसा ही आत्मीय था। आपने उन्हें नंबर वन गायिका कहा! भले ही वह हिली-डुली नहीं, लेकिन उनके दिल का एक कोना खुश था। बहुत ही महत्वपूर्ण शब्द! वह जो भी मन में आएगा, ज़रूर करेंगी। इसमें कोई शक नहीं कि वह नृत्य के क्षेत्र में शीर्ष पर हैं। वह अपने शरीर को फिट रखने के लिए बहुत मेहनत करती हैं। वह हर दिन नृत्य प्रशिक्षण के साथ-साथ योग भी करती हैं। नृत्य के माध्यम से नए-नए विचारों को व्यक्त करने के लिए उनका दृढ़ संकल्प ही काफी है। इसके लिए आवश्यक दृढ़ता भी उनके चरित्र में भरपूर है! उनके सामने उन्हें समझाने के लिए, वह नृत्य में अभिनय की सारी कलाबाजियां आजमाती हैं। वह सुबह तक इंतजार नहीं करेंगी। आज, दूतावास का कार्यक्रम समाप्त होते ही, वह घर आने से पहले मुझे फोन करेंगी। आपको उस समय तक सब कुछ सोच-समझकर अपना जवाब तैयार कर लेना चाहिए था।
मुझे याद आया। नागपुर के एक कॉलेज में आयोजित उस निःशुल्क कार्यक्रम की कहानी। आयोजक को भले ही भारी नुकसान हुआ हो, फिर भी उन्होंने चंपा के वाथी वाग का समर्थन किया और सैकड़ों जोखिम से बचने वाले श्रोताओं को निराश नहीं करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने उन्हें निःशुल्क गीत सुनाया। बिल्कुल सही। जोखिम से बचने वाले श्रोताओं और गायकों को पैसे से प्रभावित नहीं होना चाहिए! मंदिर में गायन अच्छा था। निःशुल्क। कोई भी आकर गीत सुन सकता था। उस दिन तीन-चार हजार श्रोता एकत्रित हुए थे! उस दिन क्या अद्भुत गीत सुनने को मिला! उस दिन, सामने बैठा श्रोता स्वयं भगवान था और वह गीत गा रहा था। दो दिन पहले, उसे शिव शंकर का ध्यान करना चाहिए था, जिनकी हत्या कर दी गई थी। अगले दिन, मैं सुबह-सुबह प्रियंका सपौल के घर पहुंचा और उनसे अपना परिचय देते हुए कहा, 'मैं मनोहरी दास हूं। मैं दिल्ली से आया हूं। आज शाम मेरा एक कार्यक्रम है। अगर आप आ जाएं तो मैं इसे अपना सौभाग्य समझूंगा। मैंने कल आपका गाना सुना... आपके चरणों को स्पर्श करने के अलावा मेरे मन को तृप्त करने का कोई और तरीका नहीं है, इसलिए मैं आया हूं। मैं होटल पहुंच गया हूं। क्या आप भी वहां आएंगी? मैं आपके लिए एक अलग कमरा बुक करा दूंगा। मुझे आपसे बहुत सारी बातें करनी हैं। गायन के बारे में, नृत्य के बारे में। इन दोनों कलाओं के बीच संबंध के बारे में।'

मैंने मनोहरी दास का नाम भी सुना था। वह एक प्रतिभाशाली नर्तकी थीं और पूरे भारत में उनका बहुत सम्मान था। साड़ी में लिपटा उनका सुडौल शरीर, दृश्य भ्रम – अठारह साल पहले वह छत्तीस या छत्तीस साल की रही होंगी; लेकिन वह बाईस या पच्चीस साल की लग रही थीं। उनके गाल, माथा और आँखों के कोने चिकने थे। इस होटल के कमरे में उन्होंने अभिनय और भ्रम के ज़रिए 'हटले' गीत की लय प्रस्तुत की। फिर उन्होंने कहा, 'मोहनजी, आपका गीत आपको सांसारिक दुनिया से दूसरी दुनिया में ले जाता है। मुझे ऐसा अनुभव पहले कभी नहीं हुआ। आप गाते रहिए, मैं सामने बैठकर सुनूँगी।' मेरे इस नृत्य में भी कुछ ऐसे ही पहलू हैं।
"वे मेरे सामने साकार होंगे!" यह कहते हुए उन्होंने अपने शिष्यत्व में कितनी विनम्रता दिखाई!
मैं शाम के कार्यक्रम में सबसे आगे वाली पंक्ति में बैठा था। बहुत शोर था। 'गणेश-वंदना' से पहले, वह माइक पर आईं और बोलीं, 'आज महान गायक पंडित मोहनलाल इस सभा में उपस्थित हैं, मैं उनका आदर कर रही हूँ। उनकी उपस्थिति ने न केवल मुझे, बल्कि पूरी सभा को गौरवान्वित किया है!' लोगों ने तालियों की गड़गड़ाहट से उनका स्वागत किया। इससे मेरे मन में कृतज्ञता का भाव जागा। मुझे लगा कि मुझमें भी सामने बैठे कलाकार को पहचानने और उनका अभिवादन करने की विनम्रता है। सच कहूँ तो, मैंने इससे पहले कभी सभा पर इतना ध्यान नहीं दिया था।
यह पहली बार नहीं था। इसके विपरीत, वह इसे शरीर को तराशने की कला मानता था। मेरे हाथों और पैरों की हरकतों पर मुझे थोड़ा गुस्सा आ रहा था।
लेकिन उस दिन, उसे नृत्य करते हुए देखकर मुझे लगा कि यही वह कला है जो संगीत के अमूर्त उपहारों को आकार देती है! शायद यहाँ संगीत अपने आप को पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकता। किसी को बदले में कुछ भी अपेक्षा किए बिना केवल भावनाओं को देखना चाहिए।
उन्होंने यह भी महसूस किया कि नृत्य में एक अलग ही आकर्षण है जो गीत में नहीं होता। यहाँ पूरा शरीर लय का हिस्सा बन जाता है! हाथों और पैरों की मुद्रा, गर्दन की हरकतें और दृष्टि का भ्रम लय की गति के साथ घुलमिल जाते हैं। लय की एक संरचना होती है। जब हम गाते हैं, तो भावना गीत के माध्यम से व्यक्त होती है, जबकि गीत में भावना शरीर के माध्यम से व्यक्त होती है। ऐसा होता है। अब तक मुझे पता ही नहीं था कि मेरे शरीर में ऐसा दिल भी है।

एकाग्र मन से देखने पर ऐसा लगा मानो तबले के बोल और संगीत का भी एक नया अर्थ निकल आया हो। बाद में मुझे एहसास हुआ कि केवल गीत से यह सब हासिल करना असंभव है। प्रस्तुति देखते हुए मुझे महसूस हुआ कि नृत्य की लयबद्ध संरचना और आंतरिक प्रवाह इसकी जटिलता को दर्शाते हैं! ऐसी संरचना तो तबला वादन में भी नहीं मिलती। यहाँ, इन कदमों में, सच्ची लय उतर आई है!
कार्यक्रम समाप्त हो गया। गायकों ने मंच पर एक ही गीत गाया। मैं अपनी कुर्सी पर सिर झुकाए बैठा था। वह और उसकी साथी कपड़े बदलने के लिए अंदर चली गईं। मैं तरोताज़ा होकर होटल लौटा। खाना खाने के बाद मैं अपने कमरे में सो गया; लेकिन मेरा मन उसी धुन पर झूम रहा था।
इसके साथ ही मन में एक विचार आया, 'उषा दिल्ली जाएगी और मैं मुंबई जाऊंगी'। एक तरह की उदासी बाकी रह गई थी।
कुछ देर बाद कमरे के दरवाजे पर दस्तक हुई। वह थी! वह सचमुच दरवाजे पर खड़ी थी। उसने कहा, 'यह क्या है? क्या तुम अकेले बाहर आए हो? क्या तुम नृत्य देखते-देखते थक गए हो?'
उसने अपनी शादी की पोशाक उतार दी थी और एक हल्की साड़ी पहनी हुई थी जिससे उसकी पतली कमर निखर रही थी। उसका मेकअप भी गायब था।
चलो ना। तुम्हारे दोस्त तुम्हारे आस-पास जमा थे। मैं ज्यादा मुश्किल नहीं पैदा करना चाहता था, इसलिए मैं चला गया। क्या तुमने खाना खत्म कर लिया? चलो ना—’
मुझे पता है कि आपने खाना खा लिया है। मैंने भी अपने दोस्तों के साथ खाना खाया। अब मुझे अपनी राय बताइए। आपको मेरा नृत्य कैसा लगा?
वह अंदर आई और कुर्सी पर बैठ गई। मैं बिस्तर पर बैठ गया।
‘यह सच है कि नृत्य के हर पहलू से पहले प्रेम का कोई दृश्य नहीं होता। वाह! बहुत अच्छा लगा! उम्म! मानव शरीर भावनाओं को कैसे व्यक्त कर सकता है! इस पंक्ति में कितनी रचनाएँ दिखाई जा सकती हैं! मैं चकित होकर देखता रहा! आप इन कदमों से नज़रें नहीं हटा पाएंगे।’
'वास्तव में?'
‘कौन जाने मैं इसे ठीक से कह पाऊंगा या नहीं? लेकिन मैं यह सिर्फ शिष्टाचारवश नहीं कह रहा हूं, आप यह जानते हैं ना?’

उसने मेरी आँखों में गहराई से देखा। मैंने नज़रें नहीं हटाईं और दृष्टि परी के सामने चली गई। जब वह आश्वस्त हो जाती, तो वह कहती, 'हाँ! तुम सच कह रही हो!'
‘आपकी भावपूर्ण अभिव्यक्ति और आपके नृत्य की अदाएं बार-बार देखने लायक हैं। जब आप चलती थीं, तो बिजली चमकती थी। मंच के पास आते ही आपकी आंखों में जो चमक आती थी, वह अद्भुत थी! वाह! उस क्षण आपका पूरा शरीर प्रकाश से जगमगा रहा था!’
उसकी आंखें चौड़ी हो गई थीं, जो एक गहरी भावना को प्रकट कर रही थीं। 'मनोहारी, तुम्हारा नृत्य मेरे गीत के बराबर है! मुझे ऐसा लगा जैसे मैं आज अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकी, उन्हें अपनी बाहों में भर सकी! यही मेरे गीत का सार है।'
यह स्पष्ट था। आज आपका नृत्य देखते हुए मुझे एहसास हुआ कि आप मुझसे कहीं अधिक सुंदर हैं।
शरीर में, चेहरे में, हाथों में, पैरों में, भौहों में, आंखों में, कलाकार की शक्ति कहीं अधिक होती है!
उनकी आँखों में समर्पण भाव था। उनमें अनेक भावनाओं का मिश्रण था। मुझे दृढ़ निश्चय था कि हम दोनों एक ही भावनात्मक स्तर पर हैं। मेरी निगाहें उनकी निगाहों से मिलीं। मैंने पूरी शक्ति से उनके अंतर्मन में प्रवेश किया। जैसे ही मुझे एहसास हुआ कि वह भी दिल से काम कर रहे हैं, मेरी आवाज कांप उठी, 'यहीं रुको, मनोहरी!'
उसकी आँखें चौड़ी हो गईं। तीन पल खामोशी छा गई। मैं ऐसे हट गया मानो अपना चेहरा दोबारा दिखाना चाहता हो, 'आज यहीं रहो!'
नहीं! मुझे सुबह जल्दी उठने की आदत है। अपने दोस्तों को समझना मेरे लिए अच्छा नहीं है।
"मैंने पहले कभी ऐसा अनुभव नहीं किया कि एक महिला का शरीर इतना स्थायी होता है, जो हर तरह की भावनाओं को प्रदर्शित करता है। उसके शरीर के हर हिस्से को महसूस किया जा सकता है।"
शरीर पर अनावश्यक चर्बी नहीं है और न ही बनावटी जीवन जीने वाली स्त्रियों की रूखीपन है! तुम्हारे जैसी नर्तकी ही शरीर के हर अंग को कामुक सुख के लिए तैयार रख सकती है! पैरों की उंगलियों से लेकर बालों के सिरों तक, शरीर के हर हिस्से में अनेक स्थान हैं। जब उंगलियां स्पर्श करती हैं, तो इन

स्थानों का सुख मन के अंतरिक्ष में अनुभव होता है! कलाकार अपनी धुन नहीं बजा रहा है, मनोहरी! वह तुम्हारी पूजा कर रहा है। 'मैं तुमसे प्यार करता हूँ' कहना उबाऊ, अर्थहीन और निरर्थक होगा। मैं तुम्हारी पूजा करता हूँ, अगर नहीं तो यह किसी छिपी हुई बात की तरह होगा। मैं तुमसे यह नहीं माँगूँगा। मुझ पर दया करो, मुझ पर रहम करो। तुम सब कुछ जानती हो। तुम सभी स्थानों को जानती हो। प्रेम की खोज ही मेरा एकमात्र सहारा है, और तुम भी, इस लय को बढ़ाए बिना, समय बर्बाद किए बिना एक स्थान से दूसरे स्थान पर विचरण करती रहो!
‘मोहन, हमारे देश में दो प्रकार के नृत्य होते हैं, लय और तांडव। तांडव में कौशल का प्रदर्शन होता है, जबकि लय में भावों और भ्रमों का खेल दिखाया जाता है। आपके गीतों में भावों को प्राथमिकता दी जाती है और मैं भी ऐसा ही महसूस करता हूँ। इसीलिए आपका गीत मुझे सीधे छू जाता है!’
‘ये, मनोहरी-’
‘मोहन, तुम सोच रहे होगे कि तुमने ये सब इतनी जल्दी कैसे कर लिया? ये तो तुम्हारी गायकी का जादू है! तुम ये भी जानते हो कि बड़े-बड़े लोग भी तुम्हें पसंद करते हैं और अपनी संवेदनाएं भेजते हैं; पर मैं किसी को अपने पैरों की धूल भी नहीं छूने देता। मैं एक रहस्यवादी हूँ, है ना?’ उसने अपने दिल पर नज़र डालते हुए सोचा।
‘नहीं। बिलकुल नहीं! मैं ऐसा गायक नहीं हूँ जो किसी दिखने वाली महिला का अनुसरण करता हो। आप ही एकमात्र ऐसी महिला हैं जो मेरे अंतर्मन के विचारों को प्रभावित कर सकती हैं!’
उसके चेहरे पर खुशी झलक रही थी।
सच कहूँ तो, मोहन! कल, तुम्हारा गीत सुनते हुए मुझे भी ऐसा ही महसूस हुआ, मानो मैं आज ही के दिन तुम्हारा गीत सुन रहा हूँ! यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे भी इसे सुनने का अवसर मिल रहा है! इस बार मैं अपने आप पर काबू नहीं रख पाया। मेरा मन तुम्हारे चरणों में लीन नहीं हुआ। मैं झूठ नहीं बोलता। झूठ बोलकर मुझे क्या लाभ होगा!
मेरी आँखें चौड़ी हो गईं। इससे उसका दाहिना गाल गीला हो गया। उसने मेरा सिर अपने सीने से लगा लिया। उसका शरीर मेरे खून की गर्म धाराओं से कांप रहा था। उसे सब कुछ बताकर उसे जाने देने का मन कर रहा था। वह चंपा के बुरे

बर्ताव के बारे में भी जानती थी। जैसे ही उसने यह बात उठाई, मैंने उसे सारी बातें बताना शुरू कर दिया। चलिए, पहले इस बात को समझते हैं।
तो चलिए इस घटना के बारे में बात करते हैं। इसे समझाने के लिए थोड़ा पीछे चलते हैं।
ऐसा कहा गया था। चंपा की भावनाओं के बारे में रामकुमारी के साथ इस प्रसंग का जिक्र किए बिना बात करना असंभव है। फिर मुझे आपको उन परिस्थितियों के बारे में बताना पड़ा जिनके तहत मुझे रामकुमारी के साथ शारीरिक संबंध बनाने पड़े। यानी, मैंने लगातार परेशान करने वाली और पीड़ादायक वासना का जिक्र करने से परहेज किया।
इससे गायक का जिक्र करने से बचना आसान हो गया। बाकी सब बचपन की यादें थीं। वितारा ने चिरपुर के राजसाहेब हीरा सागर के आश्रम और वहाँ प्राप्त संगीत प्रशिक्षण के बारे में विस्तार से बताया। वितारा ध्यान से सुन रही थी।
उनकी निर्मल दृष्टि से वितारा समझ गई कि सब कुछ उनके अंतर्मन तक पहुँच रहा है।
सब कुछ सुनकर वो हंस पड़ी, ‘मोहन, लगता है तुम मुझसे ऐसे ही बातें करते रहना चाहते हो! लेकिन अब लोगों के उठने का समय हो गया है। अब मुझे जाना होगा।
मुझे गुस्सा मत दिलाओ—’ इतना कहकर उसने मुझे खूब प्यार किया, उठी, साड़ी और ब्लाउज पहना, पीछे से कंघी लेकर अपने बाल संवारे, दरवाजा खोला और तेज़ी से कदम बढ़ाते हुए चली गई।
उसके जाने के बाद, वह गहरी नींद में सो गया।
घंटी की आवाज़ से मेरी नींद खुली। सुबह का समय था। उसने दरवाज़ा खोला। वह दरवाज़े पर खड़ी थी। उसने स्नान कर लिया था। उसने दूसरी साड़ी पहनी हुई थी। उसके माथे पर कुमकुम लगा हुआ था। उसने सोचा जैसे वह कोई देवी हो। दरवाज़ा खुलते ही वह अंदर आई और पलंग पर बैठ गई।
"मैं तीन घंटे सोया। तुम चार घंटे सोए, है ना? क्या तुम जल्दी वापस आकर फ्रेश हो जाओगे? मुझे तुमसे कुछ ज़रूरी बात करनी है।"
स्नान करने के बाद, उसने मेरा हाथ पकड़कर कहा, ‘तुम मुंबई में क्यों रुके हो? पूरा देश तुम्हारा है। काशी-बंगाल-बिहार क्षेत्र के लिहाज़ से दिल्ली मुंबई से ज़्यादा सुविधाजनक है। तुम दिल्ली जाओ और वहीं अपना जीवन शुरू करो। मेरे साथी सुबह की जनता एक्सप्रेस से चले गए। इस ट्रेन में एसी या फर्स्ट क्लास नहीं थी, इसलिए मैं रुका रहा। तीन ट्रेनों में एसी बर्थ

आरक्षित हैं। अगर तुम आयोजकों को बताओगे, तो वे तुम्हारे लिए भी बर्थ का इंतज़ाम कर देंगे। मेरे साथ आ जाओ। मेरे संगीत विद्यालय में भी एक कमरा है। बाद में, तुम इसके लिए आस-पास कोई कमरा ढूंढ सकते हो।’
आप अक्षांश भी देख सकते हैं। हमारे शहर में घर ढूंढना इतना मुश्किल नहीं है। वहाँ हम
हम दोनों एक-दूसरे के लिए बने हैं, और हम दोनों स्वतंत्र हैं। आपकी कमाई आपकी है और मेरी मेरी। कोई किसी से बंधा नहीं है। आपकी जो भी इच्छा हो, आप मेरे साथ गीत गाएँ, मैं आपके साथ ताल मिलाऊँगी।
मैंने तुरंत सोचा, आखिर समस्या क्या है? चंपासर, चलो भी, चलो भी।
इस संदर्भ में एक नया विचार लाने में बहुत समय लगता है – यहाँ तक कि जो गीत मिल भी गया है, वह भुला दिया जाएगा। लेकिन इस संदर्भ में, गीत नए-नए स्वरों से भर उठेगा! यहाँ वह बस बिस्तर पर बैठी है; लेकिन इसमें भी एक नर्तकी की सारी सुंदरता झलकती है। उसका बैठना, उठना, चलना, खड़ा होना, देखना – यहाँ तक कि सबसे सूक्ष्म गतिविधियों में भी भावनाएँ हैं। इसमें संवाद, लय और ताल है। इस तरह के कलाकार को और क्या चाहिए?
"लेकिन मेरे पास ट्रेन टिकट के लिए भी पैसे नहीं हैं।"
‘अब हमें कुछ नहीं करना है, मैं तुम्हें बताता हूँ!’ उसने अपनी जेब से भरा हुआ बटुआ निकालते हुए कहा और उसे अपनी गोद में रख दिया।

३
बिस्तर की खिड़की से बाहर विशाल समुद्र दिखाई दे रहा था। समुद्र में एक बड़ी नाव दिख रही थी। लकड़ी की नाव। ज़रूर कोई मछली पकड़ने वाली नाव रही होगी। नाव की आवाज़ सुनकर मुझे समुद्र के मौसम की कल्पना होने लगी। आसमान की लहरें मुझे अंतरिक्ष का भ्रम देती हैं, ऐसा ही कुछ! ऐसी नाव देखकर मुझे वो सपना याद आ गया जो अब भी मेरे मन में बसा हुआ है। एक नाव जो इस दिशा में, इस तरफ लगातार चलती रहती है। मैं गलत था। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। अब तो कोई और रास्ता भी नहीं है।
इस बार, मुंबई से निकलते और दिल्ली की ओर यात्रा करते समय मेरे मन में यही भावना थी।
ऐसा ही था। ट्रेन चल रही थी। एसी ट्रेन में सफर करते हुए, पेड़ों, झाड़ियों, चट्टानों, घरों और गांवों को पीछे छोड़ते हुए, मनोहरी की उंगलियां उसकी हथेलियों में गुंथी हुई थीं और उसके दिल में प्यार का भाव था।
उस पर शादी का कोई दबाव नहीं है। उसका मुझ पर कोई दबाव नहीं है। मुझे भी उस पर कोई दबाव नहीं है, वह मेरी नहीं है! वह मेरे गीत का विषय है और मैं उसके नृत्य का विषय हूँ। सांसारिक अर्थों में कोई दूसरा रिश्ता नहीं है। यही मेरा रिश्ता है! यह रिश्ता समुद्र पर तैरती नाव जैसा है!
बारिश की बूँदें मेरी आँखों में तैर रही हैं, खिड़की से बाहर देखते हुए। ये मेरी बूँदें हैं। एक भी शब्द इन बूँदों को टूटने मत देना! उसकी उंगलियों की पकड़ कसती जा रही थी।
उसने अपनी कहानी भी सुनाई। उसने उससे शादी कर ली थी। पंद्रह साल पहले। उसने यह भी बताया कि अब वह अठारह साल का है। उस समय वह बाईस साल की थी। उसने सोचा, 'तुमने सोलह साल की उम्र में उससे शादी क्यों नहीं की?'
उसने बताना शुरू किया, 'उनकी पत्नी का निधन हो गया था। बेटी को खोने के बाद वह लखीमपुर में रह रही थीं। उनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं था। दिल्ली में घर किराए पर लेने की आर्थिक स्थिति उनके पास नहीं थी। समय बदल रहा था। नृत्य कला से जरा भी समझौता न करने के उनके रवैये के कारण उन्हें कोई कार्यक्रम नहीं मिल रहे थे। इसी वजह से उन्होंने अपनी बेटी के पास जाने का

फैसला किया था। जैसे ही मुझे यह पता चला, मैं स्तब्ध रह गई। उनकी कलात्मक प्रतिबद्धता, प्रशिक्षण और ज्ञान
मैं इससे अभिभूत हो गई। पूरे दिल्ली में कोई और ऐसा नहीं था जो इतने उत्साह से नृत्य सिखाता हो। मैं इस वजह से उन्हें खोना नहीं चाहती थी। मैंने मन ही मन ठान लिया कि मैं उनकी मित्र बनूँगी और उनकी कला सीखूँगी। बाईस साल की उम्र में। मैंने कर दिखाया! मैं क्या करूँ? मैं उनकी निरंतर सेवा करना चाहती हूँ! उन्होंने दुल्हन को क्या दिया? अपनी कला! उसका एक अंश भी। अपने तक सीमित न रखते हुए, अपने कर्तव्यों में कंजूसी न करते हुए, उन्होंने लगातार तीन वर्षों तक देते रहे और मैं उन्हें लेता रहा। उन्होंने अभिनय और नृत्य के सभी रहस्य उजागर किए - उन्होंने मुझे भी इसमें निपुण बनाया। उन्होंने मुझे लय की सूक्ष्म संरचना को पहले कदम के रूप में दिखाया।
इसके बाद उन्होंने अपने पैरों में घूंघट बांधा और नृत्य करने लगे। हर बार, एक-एक करके,
मैंने इसे एक बार में दस बार सीखा। पंचविशा वर्ष में आयोजित नृत्य प्रवेश कार्यक्रम भारत में इस नंबर एक नृत्य शैली के उदय का प्रतीक था। यह बात कई अखबारों में भी छपी थी। समारोह से पहले ही मैं उनसे आठ साल से सीख रही थी; लेकिन समारोह के बाद के तीन वर्षों में उन्होंने मुझे जो सिखाया, वह उन आठ वर्षों में सीखी गई शिक्षा से चार गुना अधिक था! उस समय भी उनमें हर एक आसन को दिखाने की शक्ति नहीं थी। वे तुरंत थक जाते थे। वे नृत्य का थोड़ा सा हिस्सा दिखाते और बाकी मुझसे करवाते। वे तबला मंगवाते और घंटों मेहनत करते। अभिनय की बात करें तो वे आज भी असीम ज्ञान से भरे हैं! उनके पास अपार ज्ञान और उतनी ही विशाल कल्पना शक्ति है!
"तुम्हारा नाम क्या है?"
‘सोहन गु!’
‘ओह! मैंने यह नाम सुना है। मैंने यह भी सुना है कि उनमें संगीत की बहुत प्रतिभा है।’
‘गान!’ उसने मुझे बीच में ही रोकते हुए कहा, ‘उन्हें महाराज की उपाधि दी गई थी। महाराज की उपाधि उसे दी जाती है जो सौ शिष्यों को प्रशिक्षित करता है। उन्होंने गीतों की रचना भी की हो। उन्हें संगीत पर पूर्ण महारत हासिल हो। इसके बाद, अखिल भारतीय नृत्य सम्मेलन में उन्हें नृया-गुरु की उपाधि दी गई। महाराज से भी उच्च उपाधि!’

[illegible]
[illegible]
[illegible]

वह उठा और बिस्तर पर रखे सूटकेस को खोलकर उसमें से लेटरहेड वाला एक पैड निकाला। सबसे ऊपर 'मनोहरी दास' का बड़ा लेटरहेड था और उसके नीचे छोटा लेटरहेड था। फोन नंबर दिया गया था। बाईं ओर पता और निदेशक का नाम लिखा था। इसीलिए इसका वह नाम था।
लेकिन इसमें मुख्य संरक्षक का नाम नहीं है?
‘मैंने तुम्हें ये बात अकेले में बताई थी। उन्हें ये बिल्कुल पसंद नहीं कि उनका नाम कहीं भी लिया जाए!’ फिर, माँ पर अपनी तीखी निगाहें टिकाते हुए, उन्होंने पूछा, ‘तुम्हारे सवाल का क्या मतलब है?’
‘कुछ नहीं। बस ऐसे ही ख्याल आया।’
वह मेरा हाथ पकड़कर फिर से बैठ गई, हाथ में पैड पकड़े हुए। सामने वाली बेंच पर बैठी दोनों लड़कियां खेल में मग्न थीं। कुछ देर की खामोशी के बाद, वह मेरे करीब आई और मेरे कान में फुसफुसाकर बोली।
वह हंस पड़ी, 'इसे अपने तक ही रखो। सच्चा प्यार केवल दो कलाकारों के बीच ही हो सकता है।'
इन सभी नामों में ये व्यवहारिक क्रियाएं आदि शामिल हैं। नावा के साथ रहते हुए सीखने के लिए कई रहस्य और महत्वपूर्ण बातें हैं। अपना मन शांत रखें! मुझे खुद पर शर्म आ रही थी। मुझे उस पर गर्व महसूस हो रहा था, क्योंकि मुझे उसकी बुद्धिमत्ता की प्रतिभा का एहसास हो रहा था।

४
मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था कि 'मनोहरी दास स्कूल ऑफ इंडियन डांस' की इमारत, और तो और उसका बोर्ड, इतना बड़ा होगा। इस पूरी इमारत के मालिक तो यही हैं! व्यावसायिक परिसर के एक बड़े भूखंड के बीचोंबीच, हाथीदांत रंग की यह दो मंजिला भव्य इमारत खड़ी थी। भूतल पर बीस फीट चौड़ा और तीस फीट लंबा एक बड़ा हॉल था। इसके अलावा, चार छोटे कमरे थे जहाँ कक्षाएँ ली जाती थीं। हर कमरे के लिए अलग शौचालय था। मुझे दिए गए कमरे में बॉयलर भी लगा हुआ था। पलंग और सोफे वाला कमरा वातानुकूलित था। ऊपर के एक कमरे और नीचे के हॉल में एसी लगा हुआ था। हर कमरे में एक छोटी रसोई थी जहाँ चाय आदि बनाई जा सकती थी। इसके साथ ही, बिजली से चलने वाला जल शोधक भी था। बाकी कमरों में एयर कूलर लगे हुए थे। इमारत में प्रवेश करते ही बाहर की कोई आवाज सुनाई नहीं देती थी। परिसर हरे-भरे पेड़ों और लताओं से घिरा हुआ था। दरवाजे पर एक

चौकीदार तैनात था। हालांकि दिल्ली में ऐसी जगह पर जमीन की कीमत का कोई सटीक अनुमान नहीं था, लेकिन पहली नजर में ही यह स्पष्ट हो गया था कि इस इमारत की लागत करोड़ों में होगी। इतनी बड़ी इमारत का रखरखाव भी आसान नहीं था। मुझे इस बात का भी गर्व था कि यह एक कलावती की संपत्ति थी।
हर सुबह एक महिला उनके घर खाना बनाने आती थी। मनोहरी अपना नाश्ता खत्म करने के बाद मेरा नाश्ता लेकर आठ बजे कूलम आती थी। गाड़ी मिलने के बाद वह रात को ही घर लौटती थी। दोपहर में एक नौकर हम दोनों के लिए खाना लाता था। पन्नाशी से जयसुखलाल जी सुबह और शाम नृत्य की प्रारंभिक शिक्षा देने आते थे। सुबह बाईस छात्र आते थे और शाम को चालीस। मनोहरी एक छोटे से कमरे में एक या दो छात्रों को मार्गदर्शन देते थे। उन्हें तबला का गहरा ज्ञान था। हालांकि, शाम को एक अलग तबला वादक आते थे।
सुबह 10:30 बजे से शाम 4:30 बजे तक पूरे थिएटर में कोई नहीं होता था। इससे हमें पूरी तरह से एकांत मिलता था। मनोहरी सामने का दरवाजा बंद करके ऊपर अपने कमरे में चली जाती थी। वह तभी नीचे आती थी जब चौकीदार घंटी बजाता था।
बाकी समय वह दिन भर बिस्तर पर लेटी रहती और गपशप करती रहती, किसी को पता भी नहीं चलता था।
कभी-कभार फोन आता था। इनमें सुबह 10:30 बजे और शाम को लगभग 6:30 बजे मिल्साहेब का फोन भी शामिल था। लेकिन वह उन्हें जल्दी में फोन करती थी।
उनके लिए फोन महत्वपूर्ण नहीं था, वे अपनी खुशी के बारे में सोचते थे। चौकीदार रात में आता, बढ़ई को बुलाता और उससे घर के सभी नलों के वॉशर बदलने, टंकी साफ करने, घर की सामने की दीवार पुरानी दिखने पर उसे रंगने आदि के लिए कहता।
कभी-कभी जब फोन बजता था, तो मिलान का फोन बजता था। फोन पर उससे बात करते समय, वह मेरा हाथ पकड़ लेती थी, अपनी बाहों को मेरी गर्दन के चारों ओर लपेट लेती थी और मुझे अपनी गोद में खींच लेती थी। कभी-कभी तो वह मेरी गोद में भी बैठ जाती थी।
मैं उनसे स्नेहपूर्वक बातें किया करता था। स्वाभाविक रूप से, इससे मेरे मन में भी उनके साथ रहने की इच्छा जागृत हुई।
मुझे खुशी महसूस होती थी, ऐसा लगता था जैसे वह मेरे करीब है, मेरी आंतरिक शक्ति का स्रोत है। लेकिन फोन रखने के बाद, वह हमेशा मुझे प्यार से, देर तक चूमता था।

अगर जयसुखलाल चला गया होता, तो मैं इसी आवेग में बिस्तर पर चली जाती। मिलसाहेब का वो फोन उन दोनों के लिए एक चेतावनी थी!
फोन पर वो कहतीं, ‘तुमने मेरा हाथ थामा था, अब मुझे कुछ नहीं चाहिए! लेकिन अगर तुम मुझे काम के शोर में भूल जाओगे तो मेरा क्या होगा! इस नौकरानी के महल को तीन हफ़्तों से सम्राटों ने रौंद डाला है! अगली पीढ़ी इस बारे में एक शब्द भी नहीं बोलेगी!’ ये कहते हुए वो मुझे मुट्ठी में कसकर पकड़ लेतीं। बोलते-बोलते वो नाटकीय अंदाज़ में अपना माथा छू लेतीं। उनका मेकअप और उनके मज़ाक मेरे दिल में बसे राजकुमार को और भी ज़्यादा उत्साहित कर देते। मिलों की एक अच्छी बात यह थी कि वे सूचना देने में कभी असफल नहीं होते थे। वे फोन करके अपने सुविधाजनक समय, पढ़ाई के समय आदि के बारे में पूछते थे।
वे 7:30 बजे के बाद आते थे और आने के एक घंटे बाद ही चले जाते थे। काम के कारण उनके पास दोपहर में आने का समय कभी नहीं होता था। उन्होंने कहा था कि तीन-चार साल में एक बार वे दोपहर में आते हैं और तब भी फोन करके बता देते हैं।
एक बार शाम सात बजे उन्होंने कहा, 'मिलासाहेब आ रहे हैं। तुम ऊपर वाले कमरे में ही रहना। मैं नीचे टेप पर नाचने का अभ्यास करूँगा। जब वो आएँगे, तो मैं तुम्हें बुलाऊँगा। मैं तुम्हारा उनसे औपचारिक परिचय करवाऊँगा। जब यह सब हो जाए, तो उन्हें बता देना कि तुम किसी दोस्त के यहाँ रात के खाने पर जा रहे हो और निकल जाना। वो एक घंटे से ज़्यादा नहीं रुकते। पौने आठ बजे के आसपास दूर से उनकी सफेद बज़ कार देखना। जब वो चली जाए, तब आना। तब तक थोड़ा समय ले लो। या फिर इस होटल में सोफे पर बैठ जाओ।'
'आग बुझ रही है!'
नहीं। तुम्हें उन्हें बता देना चाहिए था कि तुम यहाँ रहती हो। किसी और को बताना ठीक नहीं है। रात का चौकीदार, माली, सफाई करने वाले नौकर - कौन जाने कहीं वे तुम पर नज़र तो नहीं रख रहे! वे आसानी से मान जाने वाले लोग नहीं हैं। वे पढ़े-लिखे हैं। फिर भी, हमें सावधान रहना चाहिए। मैं कार्यक्रमों के लिए ग्रामीण इलाकों में घूमती रहती हूँ, और मेरे साथी ज़्यादातर पुरुष होते हैं। उन्हें ऐसी छोटी-मोटी बातों से कोई फ़र्क नहीं पड़ता। आज मेरी बात मानो।
उन आदमियों को देखकर मुझे निराशा हुई। मैंने सोचा था कि वह मोटा-ताज़ा, तगड़ा आदमी होगा, जिसने फटे-पुराने कपड़े पहने होंगे; लेकिन उसके सामने एक

सफारी जैकेट पहने, काले रंग से रंगे बालों वाला, गोरा और भरा-पूरा चेहरा, गुलाबी फ्रेम का चश्मा और कलाई पर चमड़े का भारी पट्टा बांधे एक आदमी खड़ा था, जो हाथ मिलाने के लिए हाथ आगे बढ़ाए खड़ा था। मुझे समझ आया कि मनोहरी ने उसकी उम्र बताई थी। वरना मैं उसे चालीस या साठ साल का समझता।
‘मैंने आपका नाम सुना है। आप एक महान कलाकार हैं! अगर ऐसा न होता तो मनोहरी जी आपको इतना सम्मान न देते! दिली में आपका स्वागत है! यहाँ का वातावरण गायन के लिए अनुकूल है-’ उन्होंने प्रसन्नता से मुस्कुराते हुए कहा। फिर उन्होंने कहा, ‘तस्वीरों को देखिए-’ और सो की ओर इशारा किया।
मैं थोड़ी देर बैठा रहा और उसकी दयालुता की प्रशंसा करता रहा, फिर उठकर बोला, 'क्या मैं जाऊं? मैं अपने दोस्त के घर रात के खाने पर जाना चाहता हूं। कुछ और लोग भी आ रहे हैं। वे मेरा इंतजार कर रहे होंगे!'
‘रुको। ड्राई हार से कहता है। वह तुम्हें अकेला छोड़ देगा।’
‘क्यों? मुझे यहीं पीछे वाली गली में जाना है। दस मिनट भी नहीं लगेंगे। मनोहरी जी, मुझे देर हो सकती है। क्या यहाँ कोई चौकीदार होगा?’
"हाँ। तुम इसी समय आए हो-" उसने अलविदा कहते हुए कहा।
हालांकि मैंने दर्शकों के सामने निर्देशों का पालन किया, लेकिन मेरा दिल मुरझा गया था। मैंने अभी तक आपको अपने पति गुजी से मिलवाया नहीं है। इसके विपरीत, इस दिन ने मुझे अपनी भावनाओं के विरुद्ध जाकर नाटकीय ढंग से व्यवहार करने पर मजबूर कर दिया है। मेरी जिंदगी क्या है!
यही सोच मन में लिए मैं बाज़ार की ओर चलता रहा। मुझे इस इलाके की थोड़ी- बहुत जानकारी थी। मैं हौज़ खास, यूसुफ़ सराय, सफ़दरजंग होटल को जानता था। मैंने घड़ी देखी। घर से निकले हुए पंद्रह मिनट हो चुके थे। इन दोनों के साथ क्या हुआ होगा, ये ख्याल बार-बार मेरे मन में आ रहा था और मुझे जी मिचलाने लगा था। मुझे गुस्सा भी आ रहा था।
मैं: चाचा। मैं ऐसी महिला पर भरोसा करके यहाँ कैसे आ गया? इसी तरह मैं आईआईटी में पहुँचा।
हम उस दिशा में चलने लगे। यह मुंबई जैसा कोई गाँव नहीं है। यहाँ पैदल भी आराम से घूमा जा सकता है।
जब मैं घर लौटा तो पौने आठ बज रहे थे। दरवाजे पर कोई घंटी नहीं बजी।
चौकीदार भी नहीं आया था। मैंने घंटी बजाई और दरवाजा खुलने का इंतजार किया।
कुछ देर बाद मनोहरी ने दरवाजा खोला। उसके बाल गीले थे। ऐसा लग रहा था जैसे

उसने अभी-अभी स्नान किया हो। उसकी साड़ी भी जगह-जगह से नम थी। उसके चेहरे पर कोई मेकअप नहीं था, माथे पर समोसा भी नहीं था। उसकी कलाई पर हमेशा की तरह कंगन भी नहीं था। जब मैं अंदर आया और दरवाजा बंद किया तो वह हंस पड़ी, 'कितनी देर हो गई! वे आठ बजे चले गए। मुझे लगा था कि तुम कोने वाली चाय की दुकान पर खड़े होकर उनकी गाड़ी के जाने का इंतजार कर रहे होगे!'
मुझे कुछ भी कहने का मन नहीं कर रहा था। मेरे दिल की भावनाएँ गायब हो गई थीं। उसने भी मेरे चेहरे पर दर्द महसूस किया। वह हँसी, 'मोहन, मैं तुम्हें क्या बताऊँ! वह चला गया। मुझे भी तबीयत खराब लग रही थी। इसलिए मैंने तुरंत स्नान किया। मैंने अपने बालों में दो-तीन बार शैम्पू लगाया, साबुन से शरीर को रगड़ा, थोड़ा अच्छा लगा! फिर भी, मुझे लगता है, आज मुझे तुम्हारा स्पर्श नहीं चाहिए। तो कम से कम आज रात को जाने दो!'
मैंने उसे घूरकर देखा। वह वहीं खड़ी घूर रही थी। उसके निचले दांत उसके ऊपरी होंठों पर थे।
ज़मीन खाली थी। सिर झुका हुआ था। वातावरण में सन्नाटा पसरा हुआ था। फिर वह हँसी।
मुझे पहले कभी ऐसा महसूस नहीं हुआ। मैं चाहे जो भी करूँ, वे ही मेरे संरक्षक हैं। उनके बिना यह इमारत, यह घर नहीं बन सकता था। यह संस्था इतनी विकसित नहीं हो पाती। मैं उनके प्रति कृतज्ञता से भरा हूँ। इसके बदले में मैं उन्हें क्या देता हूँ? कभी-कभी बस एक घंटे का साथ; लेकिन सच कहूँ तो, आज मैं आपको बता नहीं सकती कि मैं इसे लेकर कितनी उत्साहित थी!
उसने अपना सिर उठाया, आँखें चौड़ी हो गईं। बिना सोचे समझे मैंने अपना हाथ आगे बढ़ाया, लेकिन वह पीछे हट गई, "नहीं, नहीं! मुझे मत छुओ। कम से कम आज रात तो मुझे जाने दो!"
उसके जाने के बाद, मैंने डिब्बा खोला और खाना खाया। मेरे मन से उदासी गायब हो गई थी। मेरा मन हल्का हो गया था। मैं तुरंत सो गया।
अगले दिन, सुबह के विद्यार्थियों के चले जाने के बाद, वह हमेशा की तरह मेरे कमरे में आई और बिस्तर पर बैठ गई। उसने मेरा हाथ पकड़ा। मैंने भी उसका हाथ हल्के से दबाया। उसने कहा, 'अब जब हम फिर से करीब आ रहे हैं, तो तुम क्या सोच रहे हो? अगर तुम्हारे मन में कोई नकारात्मक विचार हैं, तो उन्हें दूर कर दो। तभी तुम्हारे मन को शांति मिलेगी।'
मुझे भी यह बात समझ आ गई थी।

इसके बाद, मेरी बाहों में सोते हुए, वह हंसते हुए बोली, "कितनी जगह खाली है।"
मैंने सोचा, इसके लिए आप किसी दूसरी जगह क्यों आएंगे? लेकिन कल ऐसा ही हुआ। हनाले - आप एक प्रतिभाशाली कलाकार हैं और वह भी एक प्रसिद्ध गायक हैं, आप लोगों को क्यों नहीं बताते?
आप मुझे कहानी रचने का अवसर क्यों दे रहे हैं? मैं उनके बोलने का तरीका जानता हूँ। वे सीधे-सीधे नहीं बोलते, इशारों में बात करते हैं। ऐसा नहीं है कि उनके मन में कुछ चल रहा है। शायद हम दोनों कलाकार हैं, इसलिए मेरा दिल आपकी ओर खिंचा चला जाएगा।
उन्होंने सोचा होगा, चलो पास में ही कोई दूसरा घर देख लेते हैं। दोपहर में तुम वहाँ अकेले रह सकते हो।
मैं इसे ले आऊंगा। नहीं तो मैं यहां आ जाऊंगा। आज तो उषा को भी तुम्हारे रिश्ते के बारे में पता चल जाएगा; लेकिन अभी अचानक मत समझो।
मुझे भी यह बात समझ आ गई थी। कम से कम दो हफ़्तों में एक बार तो मैं इतना अपमानित नहीं होना चाहती थी कि उनकी वजह से मुझे बाहर निकाल दिया जाए। भला मुझे वहाँ नृत्य सीखने आने वाले हर किसी को क्यों दिखाना चाहिए? सिवाय सुबह-शाम होने वाले नृत्य और उसके बाद होने वाले हंगामे के! यहाँ आने के बाद से मेरा अभ्यास तो पहले ही बंद हो चुका था।
वह मुझे पास के एक एजेंट के पास ले गया। दो घंटे के भीतर, मुझे थिएटर से मात्र छह मिनट की दूरी पर तीन कमरों का एक फ्लैट मिल गया। मुंबई में इतनी शांत जगह की कल्पना करना नामुमकिन था और सामने की पूरी छत मेरी थी! छत पर लेटकर मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं आसमान के करीब हूँ। मैं चाहे जितना भी संगीत बजाऊँ, वहाँ इतनी खामोशी थी कि कोई मुझे सुन ही नहीं सकता था! पूरे घर में ढेर सारी अलमारियाँ और दराजें थीं। इन सब सुविधाओं के साथ, किराया तो बिलकुल ही कम था! इतना कम कि मुंबईवासी यकीन ही नहीं करेंगे। सिर्फ डेढ़ हजार रुपये प्रति माह!
मनोहरी ने तुरंत दस महीने के किराए का चेक दे दिया। उन्होंने कहा, 'मैं इस एक कमरे में एसी लगवा लूंगा। कालीन, पलंग, मेज आदि लाने की कोई जरूरत नहीं है। ये सब मेरे पास हैं।'
नुरशा के घर से एक डफली भी वहां लाई गई और वहां रख दी गई।

□

मैंने इसके सामने ढेर सारी बर्फ की क्यूब्स रख दीं। मैं आगे भी ऐसा ही करता रहूंगा।
उसने बकरी का शव अपने पास रख लिया। उसने सोचा, ‘क्यों? क्या मुझे अकेले ही पाप करना चाहिए?’
‘नहीं। सिर्फ तुम ही इसके लायक हो! इससे उन्हें कुछ नहीं मिलेगा!’ वह जल्दी से हंस पड़ी।
‘देखो क्या हुआ! मैं अपने वचन का पक्का हूँ! चाहे आने में कितनी भी देर हो जाए, मैं यूँ ही नहीं बैठूँगा और खुद ही आ जाऊँगा। ये कितनी कंजूसी है, तुम्हें नहीं लगता? तुमने कितना दिया है? एक नियम ये भी है कि और नहीं माँगना चाहिए। मैं इन सभी नियमों का पालन करता हूँ! चास—’ वह खुशी से मुस्कुराया।
मनोहरी खाना गर्म करने के लिए रसोई में गए। दो-तीन घूंट पीने के बाद वे हँसे और बोले, "मनोहारी कह रहे थे कि आपको गंभीर राग ज़्यादा पसंद हैं।" क्या बागेश्री की हत्या कर दी जाएगी?
'अगर आप चाहें तो मैं कर दूंगा; लेकिन पिछले तीन हफ्तों से रियाज़ का कोई पता नहीं है।'
‘रहने दो। कुछ भी गलत नहीं हो रहा है, मनोहरी!’
मनोहरी बाहर आ गई।
‘यह बागेश्री का कार्यक्रम होने वाला है। खाने के बाद। उनके लिए गर्म चाय या दूध लाना। वह ठंडा कोक मत पीना। मनोहरी, तबला लाना। तुम अपने साथी के साथ बैठो। तबला भी लाना।’
जब गरम दूध आ रहा था, मैं डफली बजा रहा था। उसने तबला बजाना शुरू कर दिया। उसका शरीर खाली था। उसने कहा, 'मैं गाना सुनना चाहता हूँ। तुम ही तो कहते हो कि महान गायक होते हैं।'
तुम मार रही थी। बागेश्री! कंजूसी मत करो!
उन्होंने उनकी बात सुनी। उन्होंने कंबल को ज़मीन पर बिछा दिया, ताकि उसे ले जाया जा सके। वे भी उनके पास आ गए और बोले, 'कोई बात नहीं! चाहे आप जवान हों या बूढ़े, आपको गीत का सम्मान करना चाहिए!'
मरहम लगाने के लिए अंदर जाने से पहले, मेरी नज़र स्वाभाविक रूप से उस पर पड़ी। अठारह वर्षीय सोहंगू मुझे द्रोणाचार्य की तरह लग रहा था। दाँतों से सँवारी हुई ठुड्डी, ऊँचा माथा, लंबी, पतली और नुकीली नाक, अभिनय के लिए

सँवारी हुई और आदेश पर रंग बदलने वाली आँखें, आँखों पर पगड़ी, और एक तेजस्वी चेहरा। इतने महान गुरु को अपने सामने गाते हुए देखकर मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे गुरु राजसाहेब मेरे सामने बैठे हों और आदेश दे रहे हों, 'तुमने पूरे देश में गाकर नाम कमाया है! देखते हैं तुम यह राग कितना अच्छा गाते हो!'
मैंने बड़ी कोशिश से इस भावना को दूर धकेल दिया। मैंने मन ही मन सोचा, 'यह चाहे कितना भी छोटा क्यों न हो, गाँव के प्रति मेरा समर्पण इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है!' इस विचार को मजबूत करके खुद पर भरोसा फिर से कायम करने में मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ी।
जैसे ही मैंने इस तरह गाना शुरू किया, उनके चेहरे पर क्रोध के भाव उभर आए। वे तुरंत ताल में गाने लगे। मेरे मन में बची हुई सारी झिझक गायब हो गई और बागेश्री ने मुझे पूरी तरह से घेर लिया। प्रेम और स्नेह का भाव चारों ओर फैलने लगा। चाहे मैं किसी भी तरह से अपनी बात कहूँ, पूजा का भाव एक जैसा ही था! प्रेम, प्रेम, शांति, आस्था और भीतर का निर्मम भाव। धम्म के मार्ग में कितना अद्भुत सामंजस्य बनता है! मैं अपने आप में खोई हुई गा रही थी। मैं अपनी आँखों से देख सकती थी कि मेरे गीत में जो क्रोध का भाव था, जो भाव अहम-अलाप के हर छोटे से अंश में महसूस हो रहा था, वह उनके चेहरे पर प्रकट हो रहा था। उनके हाथों की मुद्रा से भी मैं समझ सकती थी कि वे केवल श्रोता नहीं थे। उनके हाथ इस गीत में अभिनय के प्रदर्शन को अद्भुत रूप से सहारा दे रहे थे!
जैसे ही मैंने यह सुना, मैंने उसकी ओर देखा और उसके लिए गाना शुरू कर दिया। मैं उत्साहित हो गई, मेरा जोश बढ़ गया। अगर साथ में हारमोनियम होता, तो शायद वह अगली पंक्ति सुन लेता; लेकिन उसका भाव गीत की लय के अनुसार ढल रहा था। मुझे उसके इस भाव के अनुरूप गीत को ढालना या बदलना चाहिए था, और गीत को और अधिक सुंदर बनाने का प्रयास करना चाहिए था।
हालांकि भावनाओं के आधार पर छंदों की रचना करने की विधि शुरू में गीत की सहजता के विपरीत प्रतीत हुई, लेकिन जल्द ही यह राग को प्रस्तुत करने का एक नया तरीका लगने लगा। यह महसूस करते हुए कि हमारे गीत में केवल छंद और भावना ही नहीं, बल्कि अभिनय का भी एक पहलू है, मुझे एक ऐसा आनंद महसूस हुआ जो मैंने पहले कभी नहीं महसूस किया था। हम दोनों ने इसमें पूरी तरह से लीन होने का आनंद अनुभव किया।

□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□, □□□□□□□□□□

□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □ □□□□ □□□ □□□□ □□□□, □□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□, □□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□ □□-□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□, □□□□□□□, □□□□□, □□□□□, □□□□□□□□□, □□□□□, □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□

□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□

□□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□

□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□; □□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□-□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□, ‘□□□□! □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□!’ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□, □□ □□□□□□□□ □□□ □□□ □□-□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□, □□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□! □□□□□□□□, □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□

□□ □□□□ □ □ □□ □□□□□□□□□□ ‘□□□ □ □□ □ □ □□ □□□ □□ □ □□ □□□ □ □ □□□’ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□, ‘ □ □ □□ □□ □□□ □□□ □ □ □□□ □□ □□ □□□ □ □ □ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□ □□ □ ’

□□□□□ □□ □□□□-□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□, □□□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□; □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□ '□□□□ □□' □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□; □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□, □□□□□ □□□ □□□□

अजनबी जैसा महसूस कर रहा था। सोहंगुन की हाथों की ताल उसकी ओर मुड़ गई। अब दोनों के बीच एक संवाद स्थापित हो गया था और ताल की चंचल गति शुरू हो गई थी।
अचानक सोहंगू खड़ी हो गई। इतने लंबे समय से स्थिर बैठी नृत्य मुद्राएं अब कदमों के साथ शुरू हो गईं। मनोहरी का उत्साह सौ गुना बढ़ गया। वह और भी ज़ोर से तबला बजाने लगी। मैं रुक गई। सोहंगू ने कहा, 'नहीं, नहीं! रुको मत। तुम भी नाचो!' मैं भी उसी ताल में नाचने लगी। हम पाँच मिनट तक नाचते रहे। उसने शी ये को आदेश दिया, 'घंटी लाओ!' उसने मुझ पर चिल्लाते हुए कहा, 'रुको मत!'
उसने अलमारी से घंटी निकाली और झटपट उसके पैरों में बाँध दी, फिर वह वापस आ गई। मेरी बागेश्री का लहंगा तैयार था। उसका नृत्य शुरू हुआ। मेरे मन में जो शंका उठी थी, 'क्या वह नृत्य कर पाएगी?', वह दूर हो गई। मैं चौंक गया और लहंगा पकड़ लिया। मैं तुरंत नृत्य छोड़कर दूल्हे की ओर मुड़ा।
म ग न सा ग म. धाཽम. म ग. नाचते-नाचते बागेश्री के भाई मिले। कुछ देर तक उनका तबला और पद्यसंभन चलता रहा; लेकिन अब उनकी सांस फूलने लगी थी। नाच रोककर उन्होंने सिर्फ अपने दाहिने पैर से ताल दिखाना शुरू किया। उन्होंने उसे मजबूती से बिठाया और उसके पैर से घुंघरू निकाल दिया। उन्होंने उसे पूरब की अलमारी में रख दिया और घुंघरू सहित चॉल को उसके सामने लाकर उसे प्रणाम किया और फिर उसे उसके पैर में बांध दिया। उन्होंने उसकी कमर पर दुपट्टा बांध दिया। अब सोहंगू ने तबला बजाना शुरू किया और वह नाचने लगी। उन्होंने एक साधारण अनुबंध रखा था; लेकिन वह उसमें मौजूद बांसुरी की मदद से नाचने लगी। मेरे गीत की ताल अभी भी चल रही थी।
अब वह पूरी तरह नृत्य में लीन थी। उसका संपूर्ण शरीर बागेश्री राग की लय का अनुभव करने का माध्यम बन गया था। पैरों में घुंघरू, शरीर पर सलवार-कमीज़ और कमर पर दुपट्टे के अलावा, उसके शरीर पर कोई अन्य आभूषण नहीं था और चेहरे पर कोई रंग नहीं था। हाथों, भुजाओं या टांगों पर कोई निशान नहीं थे, फिर भी ऐसा लग रहा था मानो अतीत की बागेश्री और आज की बागेश्री अपने पूरे शरीर से यह नृत्य कर रही हों। न तो साहित्य में वर्णित इस अर्थ का कोई आधार, न ही शब्दों या कविता का कोई साथ! बस लय! वह अपने शरीर और कदमों की शुद्ध लय से मेरे विवाह के गीतों को आकार दे रही थी। मेरे मन में एक भाव उत्पन्न हुआ,

‘तुम भी थक गए हो। तुमने अच्छा नृत्य किया! तुमने भी एक पैग पीने के लिए काफी कमा लिया है। पी लो। मैं मना नहीं करूंगा।’
"सिर्फ इसलिए कि मैंने इसे हासिल कर लिया है, तुम्हारा अधिकार काम नहीं करेगा!" उसने दृढ़ता से कहा।
‘ये हमारे मेहमान हैं। इन्होंने बहुत अच्छा गाया! अगर इनका गाना न होता तो मैं न नाचती। आप भी न नाचते। हमारा फर्ज है कि हम इन्हें कम से कम थोड़ा सम्मान दें। इनके आने पर हमें अपने घर पर थोड़ा गर्व भी होना चाहिए। क्या सच है, मोहनलाल जी? इतना अच्छा गाना सुनकर भी आपका नाखुश होना मेरे नेक दिल का अपमान होगा। आपकी उम्र कितनी है? बयालीस? आप मुझसे थोड़े छोटे होंगे!’ वह उसकी बातों पर हँस पड़ा। उसने तीन गिलास भर दिए। हालाँकि मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है।
नहीं, मैं नहीं कर सका।
खाना परोसे जाने तक एक बज चुका था। सोहंगू जी की आँखें कमजोर होने लगी थीं। इतना नाचने और तीन फुट ऊपर की रोशनी का नजारा उन पर काफी असर डाल चुका था। लेकिन एक फुट का उन पर कोई खास असर नहीं हुआ था। फिर भी, आधी रात को मुझे कार से छोड़ना उनके लिए नामुमकिन था। उन्होंने कहा, 'ऊपर आओ और अपना बिस्तर अपनी माँ के बिस्तर पर लगा लो।'
"सभी व्यवस्थाएं कर दी गई हैं। सुबह उठ जाना।"
पहले उन्होंने सोहंगू जी को सहारा दिया और उन्हें अपने कमरे में सुलाया। बाद में, वे मुझे ऊपर का कमरा दिखाने आईं। पलंग पर चादर और कंबल बिछा हुआ था। उन्होंने मुझे कसकर गले लगाया और कहा, 'आप मेरी देवी हैं! मैं पूरी रात आपकी बाहों में सोना चाहती हूँ; लेकिन मैं बार-बार जाग जाती हूँ!' एक-दूसरे की बाहों में पूरी रात सोने का ख्याल मुझे बहुत अच्छा लगा। हालांकि मैंने अक्सर दिन भर उसके साथ अकेले समय बिताया था, लेकिन मुझे कभी भी पूरी रात एक-दूसरे के साथ सोने का मौका नहीं मिला था। कुछ देर पहले उसके शरीर पर मेरे गीत की झलक थी। कुछ समय पहले ही दिव्य आभा से परिपूर्ण उसके शरीर को अपने सीने पर टिकाने से बड़ा सम्मान और क्या हो सकता था?
लेकिन उसका डर वास्तविक था। उसने कहा, "चले जाओ!"
बिस्तर पर लेटने के बावजूद मुझे नींद नहीं आ रही थी। मुझे बार-बार उनकी शानदार एक्टिंग और उनका जोशीला डांस याद आ रहा था। गाना और नाचना! इसमें दिक्कत क्या है? लेकिन ऐसा करने से...

यह राग को साही और ठुमरी के स्तर तक लाने जैसा है।
क्या ऐसा नहीं होगा? राजसाहेब को ठुमरी से हमेशा आपत्ति थी। शुद्ध संगीत।
शुद्ध रस, ठुमरी, आत्मा के रस की पूर्णता के चक्रों में उलझ जाती है।
यह उनका विचार था। मैं भी यही समझ गया। क्या अभिनय एक भावना है, हाँ या ना? यह सवाल मेरे दिमाग में बार-बार गूंज रहा था। जैसे कोई भ्रम हो।
भ्रमर के शब्दों से मुझे और भी ज़्यादा दुख हुआ, उन्होंने अच्छा काम किया; लेकिन तबले के बिना मज़ा नहीं आता। हालाँकि गुजी ताल बनाए रखते हैं, पर वो असली तबला वादक नहीं हैं। इसके अलावा, मनोहरी जैसी फुर्तीली नर्तकी के साथ इस उम्र में तबले की संगत करने की ताकत होना नामुमकिन है। मुझे उनकी याद आई और बहुत अकेलापन महसूस हुआ।
जैसे ही मैं मुड़ा, मुझे कदमों की आहट सुनाई दी। मैंने आँखें खोलीं और उसे झोपड़ी के बाहर खड़ा देखा। वह मेरे पास झुकी और मेरे कान में फुसफुसाई, 'मुझे यकीन था कि तुम भी जाग रहे होगे!'
मैंने अपना हाथ बढ़ाया। पर्दे के पीछे से दीपक की रोशनी आ रही थी। इस मंद रोशनी में उसकी मनमोहक आकृति दिखाई दे रही थी। धीरे से दरवाजा बंद करते हुए, वह मेरे बगल में सो रही थी और हंसते हुए बोली, 'रसोई में दीपक जल रहा है! अगर वे जाग भी जाएं, तो कमरे से बाहर नहीं आएंगे, यह अच्छी बात है। अगर आ भी जाएं, तो सतर्क रहेंगे। इससे डरने की कोई बात नहीं है।'
‘तुम आ गए! एक ही घर में रहते हुए भी अलग सोना मेरी जिंदगी का सबसे बुरा हिस्सा था। चलो चलते हैं!’ मैंने अनिच्छा से सहमति जताई।
"लेकिन आप तो भटक गए हैं। मुंबई में आपकी पत्नी और बच्चे हैं।"
मैंने मुंबई छोड़ दिया। अब इनका क्या होगा! मैं एक दमदार तस्वीर लूंगा। उसने अपनी पकड़ और कस ली। उसकी खुशबू बढ़ गई थी; लेकिन उसने खुद को संभाला और कहा, 'जब तक गुजी जीवित है, उसकी देखभाल करना मेरा कर्तव्य है।'
मैंने उससे शादी नहीं की है। फिर भी, उसके पति पर उसकी कोई पाबंदी नहीं है। ये मुझ पर थोपे नहीं गए हैं। इनसे मुझे कोई परेशानी नहीं होती। अगर मैं तुमसे शादी कर लूँ, तो ये मेरा खाना नहीं खाएँगे। ये पाप किसके सिर पर है? मुझे पता था कि उसके दिल में न केवल कृतज्ञता थी, बल्कि प्रेम और स्नेह भी था। मैंने इन भावनाओं की गहराई को महसूस किया। उसने आगे कहा, 'चाहे कुछ भी हो, मैं उन्हें भगवान के समान पवित्र मानती हूँ। आज भी, जब मैं नाचना शुरू करती हूँ,

मैं उनकी पूजा करता हूँ और उनके चरणों में नमन करता हूँ।
मैंने इस बारे में कुछ नहीं कहा। मेरा दिमाग इन भावनाओं को सुलझाने की कोशिश में लगा हुआ था। उसने भी सोचा, 'क्या मुझे बुरा लगा? या क्या मुझे गुस्सा आया?'
‘का?’
‘आपने सोचा होगा, यह माँ इसे कैसे प्यार कर सकती है? सच है या नहीं?’
मैंने कुछ नहीं कहा।
‘आओ, मेरी प्रियतमा! लेकिन एक बकरी ले लो। वह मेरा पति है। तुम मेरे मोहन-कृष्ण हो! राधे के प्रेम का स्वामी कौन है? उसका पति या कृष्ण? यदि तुम नर्तक होते, तो तुम मेरी बात समझ जाते। तुम्हारे जैसे गायक को सारेगमपधीन के अलावा कुछ समझ नहीं आता! वह प्रेम को समझता है, वह भी प्रेम को समझता है!’ वह सच कह रही है, इसमें कोई बनावट नहीं है, मेरे मन ने मुझे बताया। उसने फुसफुसाते हुए कहा, 'अब अपने मन से चिंता दूर करो! अभिसारिका अपने असली रूप में तुम्हारी बाहों में आई है। मैं राधा हूँ, जो इस चांदनी रात में यमुना के किनारे बसे इस रेगिस्तान में उत्सुकता से आई हूँ! यह राधा भक्ति भाव से तुम्हारे पास आई है, मोहन! उसे जैसे चाहो वैसे अपना लो, मनमोहन! वह रात के अंत तक और सुबह होने तक तुम्हारी है!'
दोनों एक ही कंबल के नीचे कुछ देर तक सोए रहे। फिर उसने धीरे से फुसफुसाते हुए कहा, 'इसके बाद मैं समझाऊंगी कि यह एक ग्राम कार्यक्रम है।'
मैं काम करने के लिए आपके घर आता रहूंगा। दिन में मुझे चाहे कितनी भी शांति मिल जाए, रात को चैन नहीं मिलता।
‘बिल्कुल सही! रात की शांति अलग ही होती है। तो चलिए अच्छी नींद लेते हैं!’ मैंने भी तुरंत यही सोचा।

६
कार्यक्रम के आयोजकों को यह बताना ज़रूरी था कि मैंने मुंबई छोड़ दिया है और दिल्ली आ गया हूँ। इसलिए मैंने मनोहरी दास नृयाशाला के पते वाला एक कार्ड छपवाया और उसे संगीत कार्यक्रम आयोजित करने वाले समूहों को भेजा ताकि उन दोनों को याद दिलाया जा सके। मनोहरी ने अपनी पहल पर दिल्ली में भी एक कार्यक्रम आयोजित किया। इस विज्ञापन में 'मोहनलाल, जिन्होंने मुंबई छोड़कर दिल्ली में बस गए' के रूप में विशेष उल्लेख किया गया था। बाद में दिए गए भाषण में भी इस बात का ज़िक्र हुआ। इसी वजह से अखबारों में इस कार्यक्रम के बारे में छपी समीक्षाओं में भी इसका उल्लेख हुआ। मुंबई के अखबारों ने इस मुद्दे को 'बातमी' के रूप में उठाया। एक स्थानीय अखबार ने नागपुर की घटना का विस्तृत वर्णन किया और मुंबई के अखबारों ने इसे महत्वपूर्ण मुद्दा बनाया। परंज ने मुझे मुंबई से डाक द्वारा मराठी और अंग्रेजी पत्रों के अंश भेजे। पत्र में निम्नलिखित लिखा था: 'कुछ लोग कहते हैं कि आपने मुंबई इसलिए छोड़ा क्योंकि आप घर के कला-विरोधी माहौल से तंग आ गए थे। अगर हो सके तो कृपया मुझे सच्चाई बताएँ।'
परंज को मुझसे और मेरे परिवार से खास लगाव था। हमारी मुलाकात चंपा के जरिए हुई थी, लेकिन हमारी दोस्ती यहीं तक सीमित नहीं रही। इसी वजह से मैंने भी लिखा था, 'यह सच है। चिट्ठी में सब कुछ लिखना नामुमकिन है। दिल्ली आने पर हम इस बारे में बात कर सकते हैं।'
दो सप्ताह बाद, उन्होंने एक और मराठी वीडियो भेजा। उसमें लिखा था, 'मोहनलाल जी, ठीक इसी दिन, नागपुर में कुमारी मनोहरी दास का नृत्य देखने के बाद।'
वह इस होटल में आया और तुरंत दिल्ली चला गया। संगीत
मैं नृत्य के बारे में भूल गई, मुझे संगीत की ओर आकर्षण महसूस हुआ। अगर मैं संगीत की बजाय नृत्य को ध्यान में रखकर मुंबई आई होती, तो मुंबई के कला जगत में एक बड़ा बदलाव आ जाता। इस घटना ने कला जगत में इस विषय पर बहस छेड़ दी है कि 'क्या संगीत एक संपूर्ण कला है या नृत्य?'! लेख का लहजा थोड़ा व्यंग्यात्मक और थोड़ा मनोरंजक था। मैंने परंज को यह बताने नहीं गई कि मुझे यह क्लिपिंग मिली है। यह स्पष्ट था कि इस घटना ने मुंबई के कला जगत में खूब हंसी-मजाक पैदा किया होगा। साथ ही, मुझे अपनी मूर्खता पर शर्म भी आ रही थी। मनोहरी के थिएटर का पता देकर मैंने कुछ भी सही नहीं किया था। उस

समय मैंने बस यही सोचा था कि मैं किराए के मकान में रहती हूँ, शायद मैं अपना घर फिर से बदल सकती हूँ। मुझे हर बार यही झंझट क्यों करना पड़ता है? इसका कोई न कोई मतलब तो जरूर होगा।
इस बार हम दोनों में से कोई भी गुस्सा नहीं था।
एक हफ़्ता इसी हालत में बीत गया। फिर, ‘यही तो बात है! आखिर लोग दूर चले गए, तो फिर क्या गड़बड़ हुई?’ मेरे मन में उम्मीद की एक किरण जगी। धीरे-धीरे मेरा मन इस बात का आदी हो गया। बल्कि, मुझे इस पर गर्व होने लगा। मैंने सोचा कि इतना मशहूर अभिनेता मेरी तरफ आकर्षित हुआ, वो भी एक गायिका! लोग मुझे इस भूमिका से भी देखने लगेंगे। मुझे भी इस बात पर गर्व होने लगा कि लोग मुझे ‘उस अभिनेत्री के रूप में देखेंगे जिसने इतने बड़े गायक को आकर्षित किया’। एक बार तो वह हँस भी पड़ी।
‘स्थायी मंगलसूत्र बांधकर और उसे एक दूसरे से बांधकर कितनी अधिक सार्वजनिक मान्यता प्राप्त की जा सकती है, है ना!’

७
सुबह के नौ बज रहे होंगे। मैं घर पर रियाज़ कर रही थी। दरवाज़े की घंटी बजी। नौकरानी सुबह ही काम से चली गई थी। जब से मैं आई थी, कोई मुझसे मिलने नहीं आया था। मनोहरी के आने का यह समय नहीं था। इसके अलावा, हम भोजन कक्ष में खाना खा रहे थे, इसलिए नौकर का खाना लाना तो नामुमकिन था।
मैं उठा और दरवाजा खोला। चंपा दरवाजे पर खड़ी थी।
इस अप्रत्याशित घटना ने मुझे बेचैन कर दिया। साथ ही, मेरी अधीरता भी बढ़ती गई। बिना कुछ कहे, मैं फिर सीढ़ियों से ऊपर गया और डफली के सामने बैठ गया। वह भी मेरे पीछे आई और दीवार से लगे सोफे पर बैठ गई। उसने सोफे को आरामदायक बना दिया था। मैं डफली बजाता रहा; लेकिन गाना असंभव था। वह दस कदम दूर बैठी थी; लेकिन मैंने उसकी ओर देखने से परहेज किया; लेकिन मैं कब तक ऐसे बैठा रह सकता था, यही सवाल था। मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं किसी दूसरे कमरे में चला जाऊं या ताला-चाबी हाथ में लेकर घर से निकल जाऊं। मेरी उंगलियां डफली के तारों को बजा रही थीं। आखिरकार, मैंने फैसला कर लिया, कुछ कहने और इस समस्या को सुलझाने के अलावा कोई और रास्ता नहीं था।
मैंने मन ही मन सोचा, 'क्या बात है? जल्दी बोलो। मुझे बाहर जाना है। मुझे दोपहर में गांव जाना है।'
"तुम ऐसा क्यों कर रहे हो?" उसके चेहरे पर गुस्से का भाव था।
"जो बात हम दोनों को पहले से पता है उसे दोहराने का कोई फायदा नहीं है।" "अगर आप चाहें तो इसके बाद आप अपना कार्यक्रम तय कर सकते हैं। लेन-देन से लेकर वसूली तक, सब कुछ आप ही संभाल सकते हैं। मैं किसी भी मामले में दखल नहीं दूंगा। मुझे आपकी मंजूरी मिल चुकी है।"
‘मेरे कार्यक्रम को और कौन मंजूरी देगा, यह सवाल कहाँ से आया?’
लेकिन दुनिया को क्या हो गया है? बच्चे सोच रहे हैं कि उनके पापा कहाँ हैं! हम उन्हें क्या जवाब दें?
‘बोरीवली जाओ, रामकुमारी के बारे में सोचो। अपने बच्चों को वही जवाब दो जो वह अपने बच्चों को देती है!’
मेरी आवाज़ तेज़ हो गई। उसका चेहरा उतर गया। एक पल के लिए मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा सिर कुचल गया हो। वह हँसी रोके बिना बोली, 'क्यों? क्या ये तुम्हारे बच्चे मुझसे पैदा नहीं हुए हैं?'

‘रामकुमारी से जन्मे बच्चे भी मेरे ही हैं; लेकिन आपको यह बात कहाँ से पता चली?’
लेकिन वह इस पर चुप रही। हालाँकि उसकी निगाहें उस पर टिकी हुई थीं, फिर भी जवाब देने की सोचकर उसके होंठ काँप रहे थे। वह गुस्से से हँसी, 'अगर तुम्हें मंदिर में मुफ्त में गाना चाहिए! तो मैं एक शब्द भी नहीं सोचूँगी!' मैं कहीं भी गाऊंगी! मैं चाहूं तो रेडियो पर भी गाऊंगी! इस बारे में सोचने का किसी को कोई अधिकार नहीं है।
लेकिन मैं और मेरे बच्चे कैसे जीवित रहेंगे?
मैंने इस पैसे से अपने चाचा के लिए एक घर खरीदा है। अगर मैं इसे किराए पर दे दूं, तो आसानी से दस हजार रुपये मिल जाएंगे। क्यान या डी बिवाली में एक हजार रुपये में घर किराए पर ले लो और बाकी बचे पैसे से गुजारा कर लो। इसके अलावा, बैंक में रखे इस पैसे पर कितना ब्याज मिल रहा है? मैं सारे खातों की जांच करने जा रहा हूँ!
‘हांजे? क्या तुम विकास से बात करने जा रहे हो या नहीं?’
‘क्या आप इसे बेचे बिना यहां आए हैं?’
हालांकि वह फिर से चुप हो गई, लेकिन हंसते हुए बोली, 'मैं एक साधारण परिवार की लड़की हूं जो सादा जीवन जीती है! और तुम यहां बकवास कर रहे हो!' ‘विकलांगों की सलाह लेकर किसी को शादी का पंजीकरण न कराने के जाल में किसने फंसाया?’
लेकिन अब उसने हाथ में मौजूद हथियार निकालते हुए कहा, 'देखते हैं कि तुम सचमुच उसका सम्मान करते हो या नहीं! वह इतनी आकर्षक है कि उसके पीछे पड़े हो! मेरे दो बच्चे हैं! उसमें तुम्हें क्या आकर्षण लगेगा?' उसने एक गहरी आह भरी। उसने उसकी आँखों में पानी डाला। उसने उसकी आँखें ढँक दीं।
मेरा मन उलझन में था। एक तरफ तो नमी भी गायब हो गई। वह उठी और मेरे करीब आकर मुझे गले लगा लिया। उसे शायद अंदाज़ा हो गया होगा कि मैं उसके शरीर के नीचे दब जाऊँगा; लेकिन मुझे उसकी गर्माहट महसूस हुई। वह गठीला शरीर, वह भावहीन चेहरा, वे आँखें जिनमें आँसू नहीं थे। तभी मुझे मनोहरी का बेहद खूबसूरत शरीर याद आया, जो नींद में भी अपनी कामुकता नहीं छोड़ता था और जिसे देखकर दूल्हे के बाल भी झड़ जाते थे। मैंने आह भरकर उठकर सोफे पर बैठ गया।
वह शरमा गई। उसने कपड़े से अपनी आँखें पोंछीं। उसकी आँखों में आँसू आने लगे। मैं भी हठपूर्वक बैठा रहा।

‘वो बेवकूफ कौन है! वो इसे अपने पैरों से फाड़ रही है!’
नाचते-नाचते उसके पैर अकड़ गए हैं! अगर उसने किसी खंभे को लात मारी, तो उसे मरने तक बिस्तर पर लेटना पड़ेगा! जब वह इस आवाज़ को छुए तो सावधान रहना! वह एक दिली है! अगर उसने पुलिस को बता दिया और तुमने गाना गाया, तो उसे छह साल तक वहीं सड़ना पड़ेगा!
हालांकि मेरी आंखों में आंसू थे, लेकिन मैं इस बहस से थक चुकी थी। मुझे अंदर से लग रहा था कि अब इसे खत्म कर देना चाहिए। मैं उठी और अंदर चली गई। मैंने चार कपड़े एक एयरबैग में पैक किए, इस्त्री किए हुए कपड़े पहने, ताला हाथ में लिया और बाहर आने लगी, यह कहते हुए, 'मुझे ट्रेन छूट रही है। तुम भी जाओ।'
‘इस गांव में कार्यक्रम कहां है?’
यह तो कमाल है! इन सब घटनाओं के बाद, इस सवाल पर दोबारा सोचना स्वाभाविक ही है! मैं हिचकिचाई, 'तुम क्या करना चाहती हो?'
मैं नहीं जाऊँगा! मैं यहीं रहूँगा!
‘पुलिस को बुलाएं? यह दिल्ली है, इसे नियंत्रण में रखें!’
नैलाजन उठ खड़ा हुआ। दरवाजा बंद करके जब वह नृत्यशाला में आया, तो माली ने कहा, 'एक विधवा आपको ढूंढ रही है। मैंने आपका पत्र आपको दे दिया है और भेज दिया है।'
मनोहरी ने उसके हाथ में एयरबैग देखकर उसकी आँखों में आंसू आ गए। मैंने तुम्हें पूरी कहानी बता दी है। 'शायद वह यहाँ आ जाए,' उसने कहा।
मनोहरी हंसते हुए बोली, 'माली बहुत देर से बाहर गया है। बक्सा दोपहर 1:30 या 2 बजे आएगा। अगर कोई घंटी भी बजाए तो उसे मत खोलना। अगर मुझे कोई ऐसा मिला तो मैं उसका ध्यान रखूंगी। अगर मुझे लगा तो मैं पुलिस की मदद भी लूंगी।'
मनोहरी की उपस्थिति में मुझे ऐसा लगा जैसे मैं तूफान से सुरक्षित हूँ। उस रात मैं थिएटर में ही सो गया।
चंपा आज रात भी नहीं आई। मनोहरी ने कहा, 'लगता है वो मुंबई लौट गई है; लेकिन' पीछे हटना और चुप रहना उसके स्वभाव में नहीं है। वह इस काम के सिलसिले में कुछ न कुछ किए बिना नहीं रहेगी। एक बार वह इस काम के जाल में फंस गई, तो समझो काम खत्म! मैं एक वकील को जानता हूँ। मैं उससे मिलवा दूँगा। उससे बात करो। उसे सब कुछ बताओ। सिवाय तुम्हारे रिश्ते के! पहले मुझे तुम दोनों के

बारे में बताओ। वह तुम्हें बताएगा कि भविष्य में क्या सावधानियां बरतनी हैं।
तो, वकील रामू वालिया से मिलने पर उन्होंने पूछा, "आपके पास अभी कितने पैसे हैं?"
"उनकी संख्या छप्पन हजार होगी।"
एक लाख रुपये कमाएँ और उनके नाम पर एक चेक भेजें। साथ में एक पत्र भी लिखें
– मैं यह चेक उस निर्णय के अनुसार भेज रही हूँ जो हम दोनों ने आपके आने से एक दिन पहले लिया था। मैंने ऋण लेकर पैसे बचाए हैं। मुंबई में रहते हुए, मैं फ्लैट के किराए और आपके नाम पर लिए गए सावधि जमा पर मिलने वाले ब्याज से घर का खर्च चलाती थी और अपने बच्चों की शिक्षा भी करती थी। मैं यहाँ इसलिए आई हूँ क्योंकि मुंबई में मेरी आर्थिक स्थिति बिगड़ने लगी है। जैसे- जैसे मेरी आमदनी बढ़ेगी, मैं समय-समय पर पैसे भेजती रहूँगी।
मुझे इस वाक्य का अर्थ समझ नहीं आया। मुझसे तुरंत पचास हजार रुपये से अधिक राशि जुटाने को कहा गया। आप बिना कुछ किए लाखों रुपये क्यों मांग रहे हैं? रामूवालिया ने कहा, 'पंडितजी, आप इस क्षेत्र में तो महान हो सकते हैं; लेकिन इस क्षेत्र में नहीं।'
आपको इस क्षेत्र की समझ नहीं होगी। पत्र का पाठ और लाखों रुपये पढ़िए।
वे तुरंत चेक को बैंक में जमा कर देंगे। यह इस बात की पुष्टि करने जैसा होगा कि मुंबई में फ्लैटों और सावधि जमा में जमा धन आपकी आय है।
इसके बाद कुछ भी भेजने की आवश्यकता नहीं है। आप सीधे इसी पेज पर भेज सकते हैं।
द्रुति को लेकर चिंता करने की कोई वजह नहीं है। लेकिन मैं आपको बता दूं, वे कुछ नहीं करेंगे।
मनोहरी ने उसे तीस हजार रुपये दिए और बैंक से बीस हजार रुपये का कर्ज लिया। चतुर चंपा आसानी से रामुवालिया के जाल में फंस गई। उसने जवाब दिया, 'आपने जो लाखों रुपये भेजे हैं, वे वित्तीय कोष में जमा कर दिए गए हैं। सत्रह रुपये हैं।'
ब्याज अर्जित होता है। शिवय के पास पहले से ही बारह लाख रुपये जमा थे; लेकिन आगे

यदि बच्चों की शिक्षा का खर्च बढ़ जाता है, तो ब्याज पर्याप्त नहीं होगा।
कार्यक्रमों के लिए पैसे भेजते रहें। दिल्ली जैसे किसी अनजान गांव आदि में पैसा निवेश करने के चक्कर में न पड़ें।
इस पत्र का उत्तर देने का कोई सवाल ही नहीं उठता। मैंने निर्देशानुसार अपना पत्र और ये शब्द संभाल कर रख लिए और बैठ गया।

८
विशाल जहाज जल और अंतरिक्ष के बीच संबंध का प्रतीक था। विशाल सागर में एक अकेला जहाज हमेशा मन में एक लालसा का भाव जगाता है। एक लाख
प्रेम के इस मोड़ पर, रामूवालिया ने मुझे एक रिश्ता दिया। चंपा से हमेशा के लिए।
उन्हें रिहा कर दिया गया; लेकिन उन्हें आर्थिक रूप से शांतिपूर्ण जीवन जीने का भी कोई तरीका ढूंढना पड़ा।
मैंने व्यवस्था क्यों नहीं की? मैंने उसे हर महीने इतनी रकम क्यों नहीं भेजी?
अगर राजाराम को यह ज़िम्मेदारी सौंपी गई होती, तो वह इंतज़ाम कर देते। यह कहना गलत है कि रामकुमारी को भुला दिया गया था। चंपा के बच्चों के बंधन से मुझे पैसे देकर मुक्ति मिली थी। रामकुमारी के बच्चे मेरे मन से पूरी तरह निकल चुके थे।
उनकी उपस्थिति मेरे दिल में बसी हुई है। बच्चों की सुंदरता, बिना किसी अव्यवस्था के।
कितनी आज़ादी है! काश मैं भी उसकी तरह आज़ादी से जी पाती। बच्चों का बोझ कलाकारों को दबा देता है।
इस विचार ने रामकुमारी के बच्चों को और भी अधिक भ्रमित कर दिया।
एक गलती। मुझे रामकुमारी को लाखों रुपये न देने के लिए कह देना चाहिए था; लेकिन ये तो गलती हो गई! इस बार मैं कैसे समझूँगी, अब मैं यही करूँगी!
क्या शिदा इस नाव में अकेली है या दो नावों में? मुझे तो ऐसा नहीं लगता। श्रीमती यूलर को देखना चाहिए। अमेरिका में तो छोटे बच्चों के पास भी श्रीमती यूलर होती हैं। वो सबके साथ बगीचे में होती हैं, पहाड़ों में घूमती हैं, पिकनिक पर जाती हैं। मुझे उन्हें भी लाना चाहिए था। क्या इस नाव में दो लोग होंगे? क्या इसमें भी एक औरत और एक मर्द होंगे? या दोनों मर्द? सही जीवनसाथी ढूंढना कोई आसान काम नहीं है। मेरी मुलाकात मनोहरी से हुई! वो भी हंसती थी, जैसे मैं उससे मिली थी! जैसे ही हम एक हुए, एक माला आ जाती। लाया की ऊर्जा और दूल्हों का झुंड! वो हंसते हुए कहती थी कि मैं अक्सर नींद में गुनगुनाती हूँ। मनोहरी ने मुझे ये बात पहली बार बताई। मैंने ये भी

देखा है कि नींद में उसके कदम कांपते हैं और वो मुझे भी ताल देती है। सबसे महत्वपूर्ण बात ये है कि वो नींद में भी ताल नहीं छोड़ती!
एक बार जब वह मेरी बाहों में थी, तो उसने कहा, 'मोहन, मैं तुम्हें बताती हूँ कि मंच पर तुम्हारा बागेश्री नृत्य करना कितना मज़ेदार होगा! यह एक नया नृत्य प्रदर्शन होगा। इसके लिए हम गुजी की मदद भी ले सकते हैं। तुम जी भर के गाओ, जी भर के। इसकी बारीकियों को जानते हुए, मैं अभिनय और नृत्य करूँगी। गुजी तुम्हें इसकी बारीकियां सिखाएँगी। चलो, हम तबला जी को अपने घर बुलाएँगे और घर पर ही सारी व्यवस्था कर लेंगे।'
मैं खुश हूँ।
मुझे यह भी पता था कि कोई भी महान गायक नृत्य के साथ गाने नहीं गाता। कभी-कभी नर्तक को आशीर्वाद दिया जाता है। जब यह स्पष्ट न हो, तो नर्तक के लिए एक गीत गाया जाता है।
मैं मानती हूँ कि नर्तकी मुझसे बेहतर है; लेकिन मैंने मनोहरी के साथ गाते समय इस तरह के उतार-चढ़ाव वाले भाव से बचने का फैसला किया! शिवाय कोई साधारण नृत्य कार्यक्रम नहीं है। इसमें सबसे पहले गायिका की कलात्मक प्रस्तुति होगी! और मनोहरी नृत्य के माध्यम से उसी कलात्मक प्रस्तुति को प्रस्तुत करेंगी। यह कलाकृति संगीत और नृत्य का संगम है।
Hanjech a ha ha दो या नहीं या एक वोट का एहसास हुआ सारांश!
मैंने तुरंत सहमति दे दी। अभ्यास शुरू हो गया। मुझे ठुमरी में कभी रुचि नहीं थी। राजसाहेब की तरह, मैं भी मानता था कि कविताओं के शब्दों और भावों के स्तर पर गायन शुद्ध संगीत नहीं है; लेकिन अब ऐसी आलापी करना आवश्यक था जिससे प्रस्तुति सुगम हो सके। अगर मैं राग की पूरी शक्ति और सामर्थ्य से आलापी करता भी, तो वह क्या करती? स्वाभाविक रूप से, मेरी आलापी गीत के स्तर की नहीं थी।
यह गाना इसलिए आया क्योंकि हम बागेश्री की सोच को दिखाना चाहते थे। गाने के बीच में
चीज़ी ने गायन को नृत्य की सुविधा के अनुसार ढाल लिया। मुझे भी यह स्वीकार करना पड़ा। जब किसी राग को नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत करने का निर्णय हो जाता है, तो नृत्य के पाँच सिद्धांतों का उल्लंघन किए बिना यह कैसे संभव है? वे मुझसे राग के ढांचे और संरचना से समझौता करने को नहीं कहते। यह एक प्रयोग है। यहाँ, प्रत्येक कला रूप को दूसरे कला रूप में इन गुणों को

स्वीकार करना चाहिए। हालांकि, अंत में, प्रस्तुत किए जाने वाले नृत्य रूप में, यह नृत्य के माध्यम से लय को व्यक्त करने में सफल होता है। मुझे तबला ताल की बारीकियां नहीं पता; लेकिन इस बार भी, जो लहर मैं थामे हुए हूँ वह बागेश्री की है, इसलिए यह मेरे बागेश्री का ही विस्तार होना चाहिए, मैंने उनकी बात भी मान ली।
दिल्ली के 'अभिनया' संगठन ने हमारे प्रयोग को प्रस्तुत करने के लिए आगे कदम बढ़ाया। मनोहरी ने कार्यक्रम का भरपूर प्रचार किया। 'संकल्पना - पं. मोहनलालजी और गुरु सोहनलालजी' नामक विज्ञापन में उन्होंने हमारे नाम को प्राथमिकता दी, ताकि हम भी इसे प्राथमिकता दे सकें। उन्होंने राग की प्रस्तुति के रूप में नृत्य की अवधारणा के बारे में बात की।
मैंने दस या बारह गाने लिखे। बागेश्री का प्रदर्शन एक घंटे बीस मिनट तक चला।
ऐसा ही था। कार्यक्रम की दृष्टि से यह पर्याप्त नहीं था, इसलिए गणेश-वंदना और दो छोटे नृत्यों के बाद मुख्य कार्यक्रम प्रस्तुत करने का निर्णय लिया गया। सुवती को इन प्रस्तुतियों के लिए पारंपरिक दुगप्रसाद गाना था। कार्यक्रम वाले दिन कमानी हॉल की सभी खाली सीटें भर गईं। दो सीटों को छोड़कर, बाकी सभी सीटों पर लोग खड़े थे। आगे और बीच की खाली सीटें भी पूरी तरह भरी हुई थीं।
इस समय कुर्सी की सहायता से बैठने की प्रणाली का विस्तार हुआ।
उन्होंने कहा, ‘दिलीम ये नरिया जैसे कार्यक्रम के लिए इतनी लंबी कहानी होना अपने आप में खास बात है!’ संगीत प्रेमियों और नृत्य प्रेमियों, दोनों ने ही इस कार्यक्रम को खूब सराहा। विज्ञापन में आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया गया नारा था, ‘मोहनलाल खुद गाने बैठेंगे’।
इसमें कोई शक नहीं कि यह कार्यक्रम अभूतपूर्व रूप से सफल रहा। दर्शक बेहद खुश थे। सभी पत्रकारों ने इसकी जमकर प्रशंसा की। ‘हिंदू थाना टाइम्स’ में बृज भूषण ने लिखा, ‘सब जानते हैं कि जब भारतीय संगीत में नए प्रयोग किए जाते हैं या कोई नई शैली जन्म लेती है, तो उसका प्रभाव नृत्य के क्षेत्र में भी दिखाई देता है। इसी प्रकार, संगीतकारों ने इस प्रयोग को अपनाते हुए नृत्य में एक नई लय का सृजन किया है। लय का आधार न हो तो लय का सृजन संभव नहीं है, और लय का आधार न हो तो राग का लयबद्ध प्रदर्शन संभव नहीं है। इसी को आधार बनाकर मोहनलालजी और सोहनलालजी ने बागेश्री में इस नए माध्यम पर

अपना हाथ आजमाया है। इस प्रस्तुति ने कवि के अभिनय और गहन भावों को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया है। मनोहरी का अभिनय और मोहनलालजी का गीत-काव्य बेजोड़ है।’
दूल्हा और दुल्हन के बीच का असीम प्रेम एक उपहार है, जो 'बागेशरी' को एक अविस्मरणीय अनुभव बनाता है।
मैं इसे देता हूँ!’ अन्य समाचार पत्रों ने भी इसी तरह की प्रक्रिया का विस्तारपूर्वक वर्णन किया था।
‘बागेश्री’ के पाँच पूर्वाभ्यास दिल्ली में ही हुए। इसके बाद, दो महीने के भीतर जयपुर, वाराणसी, भोपाल, बनारस, नागपुर, कटक, कोलकाता और लखनऊ में आठ कार्यक्रम आयोजित किए गए। हर जगह मीडिया और दर्शकों ने मेरे गायन की सराहना की।
यह कार्यक्रम के मुख्य आकर्षणों में से एक था। नागपुर इस कार्यक्रम का आरंभिक स्थल था।
दुगाप्रसाद गीत गाते थे; लेकिन कुछ निजी कारणों से वे कटक, कलकत्ता, लखनऊ और बनारस नहीं आ सके। उन्होंने पहले से ही कुछ कार्यक्रम तय कर रखे थे, इसलिए तारीखें मेल नहीं खा सकीं।
तब मनोहरी मुझ पर हंसते हुए बोली, 'मोहन, मैं भी समझती हूं कि इस नृत्य के लिए तुमसे गाना ठीक नहीं है; लेकिन कार्यक्रम केवल 'बागेश्री' के लिए नहीं हो सकता। अगर तुम पहले तीन आइटम के लिए गाओगे, तभी तुम यह कार्यक्रम कर पाओगे, वरना सारे कार्यक्रम रद्द करने पड़ेंगे। क्या तुम्हें लगता है कि मेरे नृत्य के लिए गाना कोई छोटी बात है, मोहन?'
मनोहरी इस बारे में तब सोच रही थी जब हम एक-दूसरे की बाहों में थे। तब तक कला जगत में हमारे रिश्ते की खबर इतनी फैल चुकी थी कि आयोजक हमें चांग के होटल में छोड़ रहे थे, हमें अगल-बगल के कमरे दे रहे थे और बाकी साथियों के लिए वेज के होटल में ठहरने का इंतजाम कर रहे थे। रात के इस समय एक-दूसरे का साथ पाकर हम दोनों को बहुत खुशी हो रही थी।
ऐसे समय में मैं कैसे मना कर सकता हूँ? दुगा प्रसाद जो गाना गा रहे हैं, वह मुश्किल नहीं है। मैं पिछले कई दिनों से उसे सुन रहा हूँ। इसके अलावा, उन्होंने अभ्यास भी किया है।
‘बागश्री’ की वजह से मेरी शोहरत को एक नया आयाम मिला। मनोहरी दसारा के साथ एक खूबसूरत प्रस्तुति देने वाली गायिका के रूप में मेरी रोमांटिक छवि

मुझे बेहद पसंद आई और इससे मेरी लोकप्रियता भी बढ़ती गई। साथ ही, मेरे स्वतंत्र कार्यक्रम का बजट भी बीस हजार से बढ़कर तीस हजार हो गया और आयोजकों ने भी इसे मंज़ूरी दे दी! मनोहरी ने भी बागश्री की तरह नृत्य के माध्यम से एक और राग प्रस्तुत करने जैसे नए विचार देना शुरू कर दिया। उनका मानना था कि सिर्फ नृत्य करना उबाऊ था, इसलिए उन्होंने कम से कम तीन और महिलाओं को साथ लिया और नृत्य का आनंद दिखाया। मैंने भी इस विचार को स्वीकार कर लिया।
इसके बाद ही असली मतभेद शुरू हुआ।
मेरे अपने गायन कार्यक्रम हुआ करते थे, और उनके भी अपने नृत्य कार्यक्रम होते थे। हालाँकि ‘बागेश्री’ ने अपने प्रेम प्रसंगों से धूम मचा दी थी, लेकिन नृत्य के क्षेत्र में उनका स्थान कहीं अधिक ऊँचा था। वे बहुत लोकप्रिय भी थीं। कार्यक्रम चाहे जो भी हो, जब वे मंच पर आती थीं, तो मुझे ऐसा लगता था मानो उनके प्रेम प्रसंगों से प्रेरित एक अलग ही ऊर्जा उनमें समा जाती थी। मुझे अपने कार्यक्रमों को उनके अनुसार ढालना पड़ता था। उपलब्ध कार्यक्रमों की संख्या बढ़ती जा रही है, जिससे मेरे लिए प्रत्येक कार्यक्रम के अनुकूल होना मुश्किल हो जाता है।
आना आवश्यक था। कार्यक्रम तय करते समय, सुविधाजनक हॉल और छुट्टियों का ध्यान रखें।
मुझे हमेशा समय सीमा का पालन करना पड़ता था। कार्यक्रम की तारीख तय होते ही, मैं तुरंत उसका कार्यक्रम बदल देता था। इसके लिए कोई खास त्योहार, कोई खास दिन महत्वपूर्ण हो जाता था। कभी किसी शहर में मेरा कार्यक्रम बहुत पहले तय होता था, और उसी दिन या उससे दो दिन पहले या बाद में बड़ौदा या अहमदाबाद में कार्यक्रम आ जाता था। जब यह स्पष्ट हो जाता था कि मेरे कार्यक्रम को पूरा करना असंभव है, तो वह पूछती थी, 'गायन का कार्यक्रम तो सिर्फ आपके लिए है। नृत्य का कार्यक्रम तो दोनों के लिए एक साथ है! तो कौन सा कार्यक्रम महत्वपूर्ण है?' इस तरह, उसे कार्यक्रम से लगाव हो गया और उस पर भरोसा भी हो गया।
इस दौरान दुगाप्रसाद पूरी तरह से हाशिए पर चले गए और मैं अकेली गायिका रह गई। प्रशंसकों और आयोजकों ने हमें एक कलात्मक जोड़ी के रूप में चुपचाप स्वीकार कर लिया था। किसी ने भी इस बारे में कोई कानाफूसी नहीं की और हमें 'भंगड़' नहीं कहा।

इस क्षेत्र में ऐसे कई लोग हैं जो इस प्रकार के रिश्तों में रुचि रखते हैं और जो कभी-कभी विरोधाभासी चर्चाएँ उत्पन्न करते हैं।
अखबार भी इस पर चुप थे। इसके विपरीत, एक-दो जगहों पर लेख छपे जिनमें कहा गया था, 'यही तो असली वैवाहिक जीवन है!' ऐसी स्थिति में हमें 'तुम्हारा-मेरा' वाला रवैया नहीं अपनाना चाहिए, यह भावना मेरे मन में पक्की तरह बैठ गई थी। नतीजतन, मुझे कुछ महत्वपूर्ण कार्यक्रमों को ठुकराना पड़ा। धीरे-धीरे, मैं नृ के साथ गाने वाला गायक बन गया। मैं बागेश्री के साथ नृ के लिए उपयुक्त गीत, भजन, ठुमरी, जो भी उपयुक्त होता था, बड़े भाव से गाता था। इससे मेरा यह विश्वास और मजबूत हो गया कि 'नृ के साथ मोहनलाल जैसा कोई दूसरा गायक नहीं हो सकता!'
साथ ही, एक गुणी गायक के रूप में मेरा नाम दुनिया भर के लोगों तक पहुंच चुका है।
दुनिया थम सी गई। एक समय, कुछ संदर्भों में उठी बहसों के दौरान, पाठकों और श्रोताओं ने आश्चर्य व्यक्त किया, 'पंडित मोहनलालजी का क्या हुआ? नृत्य के साथ-साथ उनकी गायन प्रतिभा कहाँ चली गई?'
जैसे ही मुझे स्वतंत्र कार्यक्रम मिला, मेरे गायन में भी बदलाव आने लगा। पहले मैं कई रंगों का प्रयोग करती थी, लेकिन अब लयबद्धता से लोगों को आकर्षित करने लगी। मंदिर जाकर गांधार नृत्य करना असंभव हो गया। क्योंकि पिछले कुछ महीनों से मैंने सुबह जल्दी उठकर मंदिर में अभ्यास करना छोड़ दिया था। मुझे लगने लगा था कि गायन केवल नृत्य के साथ ही किया जाता है। तीन साल बीत गए और संगीत जगत में मेरी प्रतिष्ठा पूरी तरह से धूमिल हो गई। मुझे कोई कार्यक्रम नहीं मिल रहा था। मेरी आमदनी कम हो गई। अब मैंने तंबोरा बजाना भी छोड़ दिया था। आयोजक जो हारमोनियम देते थे, उसी से काम चलाने लगा। तीस हज़ार की फीस वाले बड़े कार्यक्रम और दस-पंद्रह हज़ार की अतिरिक्त आमदनी वाले एक-दो निजी कार्यक्रमों का क्या फायदा? संगीतकारों, नर्तकियों और वेशभूषा निर्माताओं पर होने वाला खर्च तो उसमें से कट जाता था। अक्सर, जब मंच के यात्रा खर्चे होते थे, तो मैं मनोहरी से अपनी फीस पूछता था? मुख्य नर्तकी की तुलना में मेरी फीस कितनी होगी? वह हमेशा कहती थीं, 'गायन मेरा जुनून है'; लेकिन दो साल में इसका अर्थ खो चुका था और मुझे भी इसका एहसास हो गया था।

फिर भी, हिसाब-किताब के मामले में 'तुम्हारा और मेरा' करना मेरे लिए मुश्किल था। घर का किराया, खाना और कपड़े का खर्च वही उठाती थी। इसलिए मैंने उससे कभी कुछ नहीं माँगा।
एक बार उसने कहा, ‘तुम्हारा मकान मालिक किराया बढ़ा रहा है। किराया क्यों देते रहो? यहाँ फर्श पर कितनी जगह है। मिलसाहेब को भी तुम्हारी गैरमौजूदगी के बारे में पता होगा। आजकल तो उनका आना-जाना भी कम हो गया है। वो तीन-चार हफ्तों में एक बार आते हैं। तुम एक घंटे के लिए क्यों नहीं आ जाते?’ हालाँकि उसकी हर महीने दो हज़ार बचाने की योजना थी, लेकिन मैंने उसकी बात नहीं मानी।
जब मैं दिल्ली आया, तो मुझे यह आभास हुआ कि यह प्रेम स्थायी, अमर है। किसी कारणवश, मैंने स्थायी का अर्थ शाश्वत समझ लिया था। प्रत्येक राग में स्थायी और क्षणिक दोनों प्रकार की भावनाएँ होती हैं। स्थायी भावना राग के प्रारंभ से अंत तक विद्यमान रहती है; परन्तु वह स्वतंत्र रूप से व्यक्त नहीं होती। वह क्षणिक भावनाओं के सहारे ही पोषित होती है। गीत की संपूर्ण प्रक्रिया गीत में ही समाहित है।
हालांकि यह सच है कि निश्चित कीमतों को बनाए रखने और बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किया गया है, प्रक्रिया
जब यह रुक जाता है, तो भावना भी समाप्त हो जाती है। केवल साथ रहकर, एक साथ जीवन बिताकर ही प्रेम नामक यह चिरस्थायी भावना निरंतर प्रवाहित होती रहेगी।
हाल ही में, इस विषय के प्रति मेरा आकर्षण कम होता जा रहा था। उसका नृत्य, प्रत्येक पैर में बंधी दो-दो सौ घंटियाँ, उनकी लय, उसकी आँखों-गर्दन-हाथों- उंगलियों-शरीर से झलकने वाले भाव, ये सब रोज़ाना के अनुभव के कारण धुंधले पड़ गए थे। उसे याद था कि वह किस समय कौन से गीत गाती थी, उसकी उड़ान की क्या विशेषताएँ थीं, वह मुझे कैसे ले जाती थी, कहाँ और कैसे मेरी प्रशंसा करती थी। मैं वहाँ बैठा सोचता रहता था कि गीत कहाँ से शुरू करूँ, अपनी आवाज़ कैसे उठाऊँ, ये सब। धीरे-धीरे, मेरे प्रति उसका आकर्षण कम होता जा रहा था।
इसका असर हमारे शारीरिक संबंधों पर भी पड़ने लगा था। शुरुआत में यह बहुत तीव्र था।
कक्षा में दूसरों की उपस्थिति में मुझे दिव्य आनंद का अनुभव हुआ।

मैं उस चीज़ का अनुभव कर रहा था जो असंभव और अवास्तविक थी। पहले रति की पूजा करने में मुझे अत्यंत आनंद आता था; लेकिन अब यह महज़ एक शारीरिक आवश्यकता बनकर रह गई थी। पर मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था। एक ओर तो वह निरंतर काम में लगी रहती थीं। फिर भी, बीच-बीच में समय निकालकर मेरे पास आती थीं। ऐसे समय में मैं असमंजस में पड़ जाता था, मुझे क्या हो गया है? जब मैं इस सवाल का मतलब समझने की कोशिश कर रहा था, तभी मुझे कुछ काम आ गया। नए नृत्य के लिए कपड़े सिलवाना, शिक्षकों के लिए भागदौड़ करना, रेलवे स्टेशन पर आरक्षण के लिए डेढ़ से दो घंटे लाइन में खड़ा रहना, तबला और सितार वादकों के साथ-साथ सह-नर्तकियों के लिए टिकट लेना, आदि। ज़्यादातर समय सह-नर्तकियाँ वही छात्र होते थे। मनोहरी कहतीं, 'मोहन, तुम तो काम के इतने दीवाने हो! चाहे कितनी भी ट्रेनिंग ले लो, फिर भी गलतियाँ कर बैठते हो। आज तुम्हें आकर अभिनय और नृत्य करना है। दुगाप्रसाद ने भी हद पार कर दी है! मैं क्या करूँ? क्या तुम इतना आरक्षण देख पाओगे?' मैं उनकी इस दिल से निकली विनती को कैसे मना कर सकता था? कभी-कभी वह कहतीं, 'हमारे पास इतने सारे लोग आने वाले हैं। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि सब लोग व्यवस्थित रहें। क्या तुम समन्वयकों को एक पत्र लिखोगे?' आपके अलावा यह ज़िम्मेदारी भरा काम और कौन करेगा?’ यह कहते हुए वह अपनी आँखों, भौहों और चेहरे से अपनी बेबसी दिखाती और होठों पर एक लंबा चुंबन देती। भला वह मना कैसे कर सकती थी? जब भी वह अपने चेहरे पर नाराज़गी दिखाती, तो कहती, ‘मैं आपको काम करने को कहती हूँ तो आप क्यों नाराज़ हो रहे हैं? मैंने आपको बताया था कि आप भी उतना ही समय देते हैं। मेरे पास तो सिर खुजलाने का भी समय नहीं है।’ समय बचाने के लिए उसने हवाई जहाज़ से सफ़र करना शुरू कर दिया और मुझे समझाने लगी, ‘मुझे गलत मत समझिए! मुझे इन लड़कियों को ट्रेन से भेजने में डर लगता है! अगर आप यहाँ होते, तो मुझे तसल्ली होती!’ अगर वह ट्रेन से भी आती, तो एसी या फर्स्ट क्लास में सफ़र करती। लेकिन मैं इन लड़कियों की संरक्षक हूँ! अगर मुख्य अभिनेत्री ट्रेन से सफ़र करने लगे तो आयोजक क्या कहेंगे!
अगर यह श्रीमती यूलर होतीं, तो मैं स्पष्ट रूप से देख पाता; लेकिन मैंने सब कुछ क्यों स्वीकार करना जारी रखा? मैंने उनसे यह क्यों नहीं कहा, 'मैं आपसे कहीं बेहतर कलाकार हूँ?'
"मैं एक स्वतंत्र गायिका हूँ, मेरा और तुम्हारा कोई रिश्ता नहीं है"? प्यार का आदान-प्रदान एक कर्तव्य बन गया है।

हाँ, मैं भी इतनी समझदार नहीं थी कि इस बात को समझ पाती। अगर मैं आने का फैसला करती हूँ, तो मुंबई आकर उमा बीना यूलर से क्यों न मिलूँ? शायद मुझे कोई अच्छी इंसान न मिले। मुझे मधु को इस बारे में बता देना चाहिए। वो आने पर इसे ले आएगी।

९
प्रेम नामक वस्तु स्थायी नहीं है। यह क्रोध के रस के समान है। चाहे हम इसमें कितना भी लिप्त हो जाएं, यह अपने आप समाप्त हो जाता है। क्या मैं इस समय यह नहीं जानता? भले ही इसमें मौजूद प्रेम चला गया हो, यह मुझमें शेष है। ठीक वैसे ही जैसे चावल का दाना धरती से जन्म लेता है।
जब काटिकराम आए, तब मैं भी असमंजस में था। नवीनता और प्रस्तुति के बिना कोई भी कला रूप व्यावसायीकरण में टिक नहीं सकता। इसी बात को ध्यान में रखते हुए वे निरंतर नई नृत्यकला और नए विषयों की खोज में लगे रहते थे। उनके मन में पेरिस में आयोजित नृत्य सम्मेलन में भारतीय शास्त्रीय संगीत पर नृत्य प्रस्तुति देने का विचार था। 'बागेश्री' इसी का परिणाम था। नृत्य के प्रति उनका समर्पण और इसके लिए आवश्यक प्रयास करने की उनकी तत्परता ही उनकी विशेषता थी! भोपाल के काटिकराम लाई इस मामले में जयपुर परिवार को अपने बराबर मानते थे। उनका अभिनय लखनऊ परिवार जैसा था, जो रंगमंच में भी नृत्य में अभिनय करने पर जोर देता था। उन्होंने कार्तिकराम को कृष्ण का रूप दिया, जो भावनाओं से अधिक कर्म को महत्व देते थे, और वे स्वयं भावुक राधा बन गए और विरह के अनेक रूपों का अनुभव करने लगे। जैसे ही उन्होंने इस कल्पना पर विचार करना शुरू किया, उन्हें अनेक संभावनाएं दिखाई देने लगीं। कर्मप्रधान पुरुष को बंधन में रखना असंभव था, इसलिए उन्होंने सुझाव दिया कि वे 'गीता गोविंदा' के इन श्लोकों का चयन कर उस भावुक स्त्री के दुःख को दर्शा सकते हैं, जिसे यह दुःख सहना पड़ा।
जल्द ही उन्होंने नृत्य-प्रक्रिया के बारे में भी सोचा। मंच के एक हिस्से में राधा विरह नीम से भागती हुई दिखाई देती हैं, और दूसरे हिस्से में कृष्ण। पूरा दृश्य सुंदर है।
यह एक बेहद रोमांचक नृत्य है। इसमें प्रत्येक मुद्रा ठुमरी द्वारा की जाती है, जिनमें से प्रत्येक
अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए, वे पहले मध्य ताल में गाते थे, फिर दूसरी ताल में गाते थे, और फिर जयपुर शैली में गाने लगते थे।
उन्होंने भोपाल से काटिकराम को आमंत्रित किया था। वे इस बात से बहुत उत्साहित थे। उनके अनुसार, इस प्रसिद्ध नर्तक के साथ प्रस्तुति देना एक शानदार अवसर था; लेकिन प्रस्तुति की सफलता के लिए दोनों का एक साथ अभ्यास

□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□
□□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□, □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□, □□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ '□□□□' □□!
□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□-□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□, □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□ □□, □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□, '□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□'
□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□, □□□□□□ □□□, □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□, '□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□ □□□ - □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□? □□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□'
□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□, □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□, □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□, □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□! □□□□! □□□□!
□□ □□□□! □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□! □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□!
□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□, "□□□ □□□□□□□□□" □□ □□□□□□ □□ □□□ □□, □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□
□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□-□□□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□ '□ □□□□□□' □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□
' □□ □□□□□ □ □□□□□□□ □□ □
□□□□□□□□□
◌□□ □□□ □□□□□ □□□ □□
□□ □□ □□□ □□□

जब अतपड़ी का पूरा प्रांगण पूरी तरह से सुनसान हो गया, तो मैंने बिना देरी किए इस गीत के एक-एक शब्द को गाना शुरू कर दिया। अनजाने में ही मैं देवताओं के मंदिर में पहुँच गया।
‘ न न, न – प, धं धं धं – म प’
मैं मन्द्र सातका की धुनों पर थिरकते हुए बेहोश हो गई थी। बहुत धीमी लय में उन नृत्यों को करते हुए, मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और दरबार के आनंद में डूब गई। जब मैंने अपनी आँखें थोड़ी सी खोलीं, तो देखा कि पहली पंक्ति में बैठे फ़ैयाज़ अहमद मुझे बड़ी संतुष्टि से देख रहे थे और ताल मिला रहे थे। मेरा उत्साह और बढ़ गया, मैं और भी ज़ोर से नाचने लगी। हम वादी ऋषभ पहुँच गए। मन्द्र सातका में भी ज़रा भी बड़प्पन नहीं था। फ़ैयाज़ के चेहरे से लग रहा था कि वे एक अद्भुत कला का अनुभव कर रहे हैं। धम्म के साधक फ़ैयाज़ साहब की प्रतिक्रिया ने मेरा उत्साह दोगुना कर दिया! उनकी हरकतें ऐसी थीं मानो वे माँग रहे हों, 'मुझे ऋषभ का थोड़ा और हृदय दिखाओ'।
यह वही महिला है जो बाईं ओर बैठी है और धीरे से मुझे होश में लाने की कोशिश कर रही है।
पुकारा, 'पंडितजी, पंडितजी!'
मैं व्यवस्थित ढंग से गा रही हूँ! न तो दूल्हे को परेशान किया गया है और न ही उस पर हमला किया गया है। न ही कोई दूसरा राग शामिल किया गया है। फिर ये बात मुझे क्यों परेशान कर रही है? मैंने गुस्से से उसे घूरा और दरबार की ओर वापस चल पड़ी। उसी क्षण मुझे एक आवाज़ सुनाई दी, फ़ैयाज़ साहब अपनी उंगली से मुख्य अभिनेत्री की ओर इशारा कर रहे थे। उन्होंने बार-बार उंगली से इशारा किया और देखा कि मनोहरी एक ही जगह पर गुस्से में खड़ी है। वे धीरे से शीला के पास गए और उससे गाने को कहा।
शीला ने अपने सामने से माइक्रोफोन खींच लिया और किरदार के अनुरूप लय में गाना शुरू कर दिया। मनोहरी ने फिर से अभिनय करना शुरू कर दिया।
और ठीक-ठीक क्या हुआ, यह मेरे दिमाग में आया। जब मैं फर्श पर उतरा, तो गति बहुत धीमी थी, और जब मैं और नीचे गया, तो वह अस्थिर हो गई। प्रांगण में, यही गति, गति का सार है। यहीं पर गायन का सर्वोत्तम रूप प्राप्त किया जा सकता है। भले ही नीचे की ओर बहता पानी हो, जैसे ऊपर जमा बर्फ की ओस की बूंदें स्थिरता का भ्रम पैदा करती हैं, उसी प्रकार, समय की आंतरिक सतह को कनपटी में कंपन करते हुए स्थिर रहना चाहिए! यही गायन में योग-सिसी है! वहाँ केवल

गति ही नहीं आती। अभिनय, जो नृत्य कला का मुख्य भाग है, वहाँ कौशल का रूप भी प्राप्त कर लेता है। वहाँ गायन पूरी तरह से एकाग्र हो जाता है, मुझे यह सब स्पष्ट रूप से समझने में तीन-चार मिनट लगे।
वह बहुत घबराई हुई थी क्योंकि उसने अतापड़ी नृत्य करने की पर्याप्त तैयारी नहीं की थी। अचानक उस पर आ पड़ी ज़िम्मेदारी से बचने के लिए, उसने सीखे हुए नृत्य के बोल गुनगुनाना शुरू कर दिया। वह एक नर्तकी भी थी। उसे गाने का भी हुनर था।
मुझे बस इतना ही पता था। फिर सूत-सूत उपहार-संचार या वैवियतु का स्रोत है। वह कूदने वाला नहीं था। इस वजह से उसे बहुत परेशानी हुई थी।
संगीत में रुकावट से मनोहरी की एकाग्रता भी भंग हो गई थी। उसी क्षण तीसरी पंक्ति से एक आवाज़ आई, 'मोहनलाल जी, शुरू कीजिए! यह लड़की नाचने लायक नहीं है!' फ़ैयाज़ साहब भी उठ खड़े हुए और उन्होंने भी यही कहा। शीला ने मुस्कुराते हुए माइक उनके सामने रख दिया। गाना शुरू हुआ, नृत्य शुरू हुआ; लेकिन मनोहरी का मूड बिगड़ गया था। अभ्यास की मदद से नृत्य करने के बावजूद, उनके अभिनय में दिखने वाली स्वाभाविक प्रतिभा का कोई अंश नहीं था। मैं मन लगाकर गा भी रही थी; लेकिन मेरे मन में दरबारी की धीमी लय गूंज रही थी। काफी देर बाद भी संगीत और नृत्य में सामंजस्य नहीं बन पाया। सभा में मौजूद कई लोग इससे चौंक गए, लेकिन आम जनता को कुछ समझ नहीं आया। वे मजे ले रहे थे। कार्तिकराम के मंच पर आते ही माहौल सुधर गया। सभा का माहौल बनते ही मनोहरी ने भाव करापे नृत्य पर ध्यान केंद्रित करना शुरू कर दिया।
कुल मिलाकर, सभी को लगा कि प्रस्तुति का मूल विचार तो सफल रहा, लेकिन पूरा कार्यक्रम उम्मीदों पर खरा नहीं उतरा।
कार्यक्रम समाप्त होते ही फैयाज साहब सीढ़ियाँ चढ़कर माँ या के पास पहुँचे। माँ या को विशेष रूप से तैयार किया गया 'विदा' गीत सौंपते हुए उन्होंने कहा, 'कुछ मत करो! गायक के बिना कोई भी इस स्तर पर नृत्य नहीं कर पाएगा!'
मां तो बस अपने मन की बात कह रही थी!
उन्होंने आगे आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा, 'आपने यह गाना क्यों छोड़ दिया? आप स्वतंत्र कार्यक्रम क्यों नहीं प्रस्तुत करते?'
पिछले साल, हमारी पटिया मगध संगीत सभा के आयोजकों ने आपसे संपर्क किया था। आपने जवाब क्यों नहीं दिया?

आप क्या जवाब देंगे? मैंने कहा, 'अगर इस बार मुझे उनसे निमंत्रण मिला, तो मैं ज़रूर आऊँगा!'
इसी समय शीला आई और बोली, ‘गु मनोहरी जी आपको बुला रही हैं।’ यह स्पष्ट था कि वह मुझे मेले में ले जाने के लिए बुला रही थीं। मैं चुप रहा और फैयाज साहब से बातचीत करने लगा। मनोहरी के शिष्य नटवरलाल मंच पर गिरी घंटियों को इकट्ठा कर रहे थे।
शीला ने एक बार फिर उसी श्रद्धापूर्ण विदाई दी। मैंने भी शांत भाव से फैयाज साहब को अलविदा कहा। मैं मंच के दूसरी ओर आ गया। लड़कियाँ आकर्षक कपड़े पहने इधर-उधर घूम रही थीं और खुश दिख रही थीं। दाहिनी ओर के कमरे में मनोहरी बिना अपने कपड़े उतारे मेरा इंतज़ार कर रही थी। मुझे भी गुस्सा आ रहा था।
उसने अनवर के गुस्से को बढ़ने नहीं दिया और पूछा, "क्या तुम कार्यक्रम को बांटने के लिए ही यहां आए हो?"
‘तुम किस बारे में बात कर रहे हो? किस तरह का घाट? मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा!’ ‘अगर मुझे अलग से कार्यक्रम करना होता, अगर मैं नृत्य में साथ नहीं देना चाहती, तो मैं अभ्यास शुरू होने से पहले ही आपको बता देती! मैं अलग व्यवस्था करती! क्या इतने दिनों तक अभिनय करने के बाद आज अपना असली रंग दिखाने की आपकी यही योजना थी? खुलकर बोलो!’
‘देखो! अगर तुम अपनी जुबान पर काबू रखो और कुछ शब्द सोचो, तो मैं बोलूंगा।’ 'अजपयंत मा या गपा या मलिकानिला इज्भेवर तबा थेवयला कुनि सनिगतलम न हातम!' ‘मैं किसी का नौकर नहीं हूँ और तुम मेरे मालिक नहीं हो, इसे अपने तक ही रखो!’ ‘शटअप, रा कल!’
‘तुम मुझे मार डालोगी!’ – मैंने भी अपना हाथ उठाया और उसके बाएं गाल पर रख दिया। उसकी चीखें बाहर सुनाई दीं। शीला और दो छात्राएं दौड़कर दरवाजे पर आईं, उन्होंने यह दृश्य देखा। मनोहरी ने भी वही देखा और दूसरी छात्रा ने मेरे गाल पर एक थप्पड़ मार दिया।
यह मेरे लिए अप्रत्याशित था। जब मैंने दोबारा हाथ उठाया, तो वह सतर्क हो गई, हार मानने से इनकार करते हुए। उसने दोनों हाथों से मेरा हाथ कसकर पकड़ लिया। हम दोनों के बीच हाथापाई हुई। वह मुझे दरवाजे की ओर घसीटती रही। दरवाजे पर जमा हुए छात्रों ने मुझे रुकने नहीं दिया। वह मुझे दरवाजे से बाहर घसीटकर ले गई और चिल्लाई, 'निकल जाओ, रकल!'

मेकअप लगाए हुए लड़के-लड़कियां, तबला वादक जय वाल, सारंगी वादक सिराजुद्दीन, सितार वादक सफराज – सभी ने यह दृश्य देखा। मेरा सिर चकरा गया। इस वजह से होस्टेस चिल्ला उठी।
उनमें से कोई भी उसे सांत्वना देने या समझाने की कोशिश करने के लिए आगे नहीं आया।
कोई आगे नहीं आया। मैं चुपचाप बैठ गई। वह ग्रीन मम के पास गया और बैठ कर दरवाजा बंद कर लिया। अगर मैं उसे मारने के लिए अंदर जाती, तो सब मुझे रोकने आ जाते, तभी मेरे मन में एक और महत्वपूर्ण विचार आया। वह मुझसे शारीरिक रूप से अधिक बलवान थी। नाच-गाकर उसने अपनी सेहत को मजबूत बनाया था। वह अपने शरीर की सुंदरता बनाए रखने के लिए प्रतिदिन योगा करती थी। इसके विपरीत, मैंने अपने जीवन में गायन के अलावा कोई और परिश्रम नहीं किया था। जब वह बाहर आया, तो केवल मैं ही बाहर आई, मुझमें उसका विरोध करने की शक्ति नहीं थी।
मुझे वहां इंतजार करने में शर्म आ रही थी। इंतजार करते रहने से मुझे क्या फायदा! मैं वहां से निकल गया। मेरे सामने जो साइकिल-रिक्शा आया, उसमें बैठकर मैं होटल चला गया। अपने कमरे में जाकर मैंने अपना सूटकेस उठाया और मैनेजर से कहा, 'डॉक्टर साहब पार्टी में नहीं आ रहे हैं। मैं अकेला जा रहा हूं।' उसी साइकिल-रिक्शा में बैठकर मैं रेलवे स्टेशन चला गया। वहां मैंने पता किया कि हावड़ा-दिल्ली एक्सप्रेस एक घंटे में आने वाली है।
मुझे याद है बचपन में माँ से मिली मार; लेकिन वो मुझे गले लगाती और प्यार से सहलाती थीं। गली के लड़कों ने भी मुझे पीटा था; लेकिन हीरा के आश्रम में आने के बाद से मैंने ऐसा कुछ कभी अनुभव नहीं किया था। यह सच है कि मैंने मनोहरी पर पहले हाथ उठाया था; लेकिन जब उसने मुझ पर कार्यक्रम को जानबूझकर बिगाड़ने का झूठा आरोप लगाया तो मैं गुस्सा क्यों न होती?
ट्रेन समय पर आ गई। मुझे आखिरी मिनट में बड़ी मुश्किल से सीट मिली। बाकी लोगों ने तो अगले दिन की ट्रेन आज सुबह ही बुक कर ली थी। उनकी फ्लाइट दोपहर 1:30 बजे थी। सुप्रभात! एक ही प्लेन या एसी की सवारी मुझे स्लीपर में कैसे धकेल सकती है!
मेरे दिल में क्रोध उबल रहा था। टूटे हुए रिश्ते के दुख का कोई नामोनिशान नहीं था।

दोपहर 1:30 बजे जब ट्रेन नई दिल्ली स्टेशन पहुंची, तब तक मैंने मन बना लिया था। मैं घर चला गया। बचे हुए कपड़े भी ले लिए। मैंने अपनी बैंक पासबुक देखी, उसमें एक सौ बीस रुपये थे। मुझे याद आया कि मेरे बटुए में छह हजार रुपये थे। रेलवे टिकट लेने के बाद कुछ पैसे बच गए थे। इससे परेशान होने की कोई बात नहीं है। मेरी आठ से दस लाख रुपये की वार्षिक आय तो इससे बर्बाद हो गई! मैंने नीचे रहने वाले मकान मालिक को घर की चाबियां दे दीं और कहा, 'मनोहारी जी आएंगे, आप उनसे मिल लीजिए।'
मैं स्टेशन गया। सामने मुंबई की एक ट्रेन खड़ी थी। मैंने टैक्सी के लिए बीस रुपये दिए और उतर गया।
वह स्थान मिल गया।
लेकिन जब ट्रेन चली गई, तो मुझे थोड़ा दुख हुआ। मैं उसे बिना बताए चली गई, क्या उसे डर नहीं लगा होगा? क्या मुझे निज़ामुद्दीन या मथुरा वापस जाकर उसके सामने खड़े होकर कहना चाहिए, 'इसके बाद तुम्हारा और मेरा कोई काम नहीं है - मैं चली गई।' और चली जाऊं? इस पर वह कहेगी, 'चली जाओ!' मथुरा पहुँचने तक तो मैंने मन ही मन अपना फर्ज निभा दिया था, कोई ज़रूरत नहीं थी। मैंने दूसरों के खिलाफ हाथ तक नहीं उठाया! अब हमें ऐसे ड्रामे क्यों चाहिए?

१०
घंटी बजी। लंच बॉक्स आ गया। इस जगह से खाना खाते हुए मुझे उन्नीस साल हो गए थे। दिल्ली के दिन भी आ गए। चंपा को थाली में बढ़िया पका हुआ खाना मिलता था। रामकुमारी भी घर पर खाना बनाती और उगाती थीं। घर का बना खाना चाहिए तो कुछ और करना पड़ता है। जैसे-जैसे कारोबार बढ़ता है, खाने की गुणवत्ता घटती जाती है। कभी-कभी तो इसी जगह से खाना खाते हुए मुझे उल्टी जैसा महसूस होता है। अगर मैं किसी कार्यक्रम के लिए गांव भी जाता हूं, तो मुझे होटल का खाना ही खाना पड़ता है। होटल चाहे कितना भी अच्छा और महंगा क्यों न हो, वहां का खाना एक जैसा ही होता है। दादर का प्रशांति गुजराती खाना अच्छा था। मैं बचपन से ज़मीन पर बैठकर खाना खाता आया हूं। ऐसा खाना मुझे कहीं और नहीं मिला।
इस बार मैं दिल्ली से आया, दादर में उतरा और विट्ठल लॉज में एक कमरा बुक कराया।
मुझे इसके लिए भुगतान करना पड़ा। दो ब्लॉक दूर प्रशांति मेस था। मैं वहाँ आठ-दस दिन रुका और खाना खाया। मैं साढ़े तीन साल बाद मुंबई लौट रहा था। मुझे सब कुछ नए सिरे से शुरू करना था। मुझे कार्यक्रम के आयोजकों से दोबारा संपर्क करना पड़ा। अगर मुझे टिपानीज़ पहुँचना था, तो मुंबई में सभी फ़ोन नंबर बदल चुके थे। मैं माहिम पैदल गया। सौभाग्य से
गाड़ी ने घर नहीं बदला। राजाराम घर पर नहीं थे। मैंने अलविदा कहा और कमरे में लौट आया।
अगली सुबह, वह सज्जन कमरे में आए। सब कुछ सुनने के बाद उन्होंने कहा, "आपको दोबारा उठने में ज्यादा परेशानी नहीं होनी चाहिए; वैसे आपका स्वागत है, है ना?"
नज़र से दूर, मन से भी दूर? यहाँ कुछ लोगों ने आपके बारे में गलत जानकारी फैलाई है, जैसे, ‘यह सब तो बस आपके साथ नाचने के लिए था!’ हाल ही में कहीं भी आपका नाम नहीं लिया गया है। मुझे लगता है हमें परंज से मिलना चाहिए। यह उचित रहेगा।
"लेकिन वह चंपा से है। उसके उन विदलों के साथ व्यापारिक संबंध भी थे। वह मेरे लिए परेशानी का सबब बन सकता है।"

“ऐसा नहीं है। उस घटना के बाद, परांजप का उस लड़की से ज़्यादा संपर्क नहीं रहा। एक बार वो तुम्हारे बारे में मुझसे कहा करता था – ‘अगर तुम्हारी पत्नी है, तो उसे छोड़ दो, मुंबई छोड़कर डॉक्टर साहब के पीछे क्यों जा रहे हो?’ मेरे पास उसका नंबर है। मैंने खुद उसे फोन किया था।”
मैं इससे और उससे बात करता हूँ।
यह खबर सुनकर कि लॉज के कार्यालय से मैंने फोन किया था, परंजपे हंसते हुए बोली, 'क्यों? क्या तुम मुझसे मजाक कर रहे हो या क्या?'
"तुम्हें उससे बात करनी चाहिए," टिपानिस ने मुझे रस्सी देते हुए कहा। अगले दिन हमारी मुलाकात हुई। वह मुझे रात के खाने के लिए एक होटल ले गया। मैंने उससे खुलकर बातचीत की।
‘पंडितजी, मेरा एक सवाल है, नाराज़ मत होइए। क्या आप चंपा के साथ दोबारा रहना चाहते हैं? मैं ज़बरदस्ती नहीं कर रहा; लेकिन अगर आप रहना चाहते हैं, तो मैं उससे बात कर सकता हूँ और यह सुनिश्चित कर सकता हूँ कि वह दोबारा ऐसा व्यवहार नहीं करेगी।’
‘इस लड़के से बचने की कोशिश में मैं उसके सामने गिर पड़ा! अब क्या मैं उससे बचकर फिर से उसके चंगुल में फँस जाऊँगा? इसके बाद मैं कभी किसी के चंगुल में नहीं फँसूँगा! मैं साधु बन जाऊँगा।’
"तुम कुछ भी नहीं बोल रहे हो। तुम एक कलाकार हो!"
‘क्यों? वामी हिरदास तो संन्यासी थे, है ना? अगर यह मुकाम हासिल कर लिया जाए तो कला के क्षेत्र में भी खूब कमाई की जा सकती है। मैंने भी यही करने का फैसला किया है।’
‘यह संन्यास के बारे में एक गीत था। मैं तुम्हारे गीत का भाव समझती हूँ। अब से इसके बारे में बात करने में कोई बुराई नहीं है! किसी के भी सामने संन्यासी बनने की बात करने की इस आदत में मत फँसो। आज तुम्हारा मूड ठीक नहीं है। अगर तुम चंपा के साथ नहीं रहना चाहते, तो उसे रहने दो।’
उसने आगे सोचा, 'उन्हें यहीं रहने दो। लॉज में आओ, बाकी व्यवस्थाएं ठीक हैं? पहले तुम
"एक हफ्ते आराम करो। मैं देखता हूँ कि मैं क्या कर सकता हूँ। लेकिन किसी और से मत मिलना। अपनी हालत के बारे में किसी को मत बताना। एक बार खबर फैल गई तो मुश्किल हो जाएगी।"
उनकी बातें समझ में आने वाली थीं। राजाराम भी इससे सहमत थे।

छठे दिन परंज ने पुकारा, “पंडितजी, मेरी बात ध्यान से सुनिए। देवलाली के पास कोरेगांव नाम का एक छोटा सा गाँव है। वहाँ देसाई नाम का एक खुशहाल परिवार रहता है। उसके अच्छे दोस्त हैं। आप तो मेरे भाई जैसे हैं! उसका एक बड़ा खेत है। वह गाँव से एक मील दूर है। उसने वहाँ एक घर बनाया है। आपको वहाँ कुछ दिन रुकना चाहिए। उसके घर में तीन सुंदर डफली हैं। उसने उन्हें अपने बच्चों के लिए खरीदा है।”
इनमें से एक चुनें। कुछ दिन आप शास्त्रीय संगीत का अभ्यास करेंगे।
ऐसा करो। तुम साढ़े तीन साल से इस मंदिर साधना में लगे हो! एक-दो महीने के लिए इस दुनिया को भूल जाओ और खुद को इसमें लीन कर लो। मैं इस सांसारिक स्तर पर तुम्हारा स्थान खोजने के लिए पूरी कोशिश करूंगा...'
मैं उनकी बातों से बहुत प्रभावित हुआ। राजाराम ने भी इस पर सहमति जताई। उन्होंने आगे कहा, ‘पिछले साढ़े तीन वर्षों में रागों का कुछ ज्ञान लुप्त हो गया होगा। मेरे पास भातखंड की किताबें हैं। आशा है कि वे भी सही हों।’ जैसे ही मैंने उस ग्रामीण का बगीचा और वहाँ का घर देखा, मुझे राजसाहेब का जंगल और पास में बहती नदी याद आ गई। अगर कोई कमी थी तो वह सिर्फ मंदिर की थी; लेकिन यहाँ बाकी सभी सुख-सुविधाएँ मौजूद थीं। डेढ़ सौ एकड़ में फैला सुंदर बगीचा जिसमें आम, आड़ू, नाशपाती और अन्य पेड़ लगे थे! यह किसी आधुनिक बगीचे जैसा लग रहा था। बगीचे के पास कुछ और बड़े पेड़ भी लगे थे।
जयवंत देसाई को शास्त्रीय संगीत बहुत पसंद था। हालांकि उन्हें शास्त्रीय संगीत की पूरी समझ नहीं थी, फिर भी उसे सुनकर उनके कान प्रशिक्षित हो गए थे। जब मैं गा रही होती थी, तो वे बगल वाले कमरे में सिर ढके लेटे रहते थे।
मैं सुबह जल्दी उठकर मंदिर में साधना करती थी। दस बजे एक और सभा होती थी।
रात के खाने के बाद सो जाती थी। चार बजे के बाद फिर से रात तक गाती रहती थी।
देसाई भरपेट और स्वादिष्ट भोजन करते थे। रात को सोते समय वे खजूर और गर्म दूध पीते थे, जिसमें बादाम और काजू का पाउडर मिला होता था।
धीरे-धीरे मुझे महसूस होने लगा कि मेरी संगीत प्रतिभा वापस लौट रही है। न केवल मेरी आवाज़ सुधर गई थी, बल्कि मेरा गायन भी अधिक स्पष्ट हो गया था। रागों की बारीकियां अपने आप उभरने लगीं। कभी-कभी मुझे किताबों का सहारा लेना पड़ता था।
लेकिन परंजपाणि ने मुझे बताया, यह बिलकुल सच था। वामी हिरदास और मेरे खून में एक बुनियादी अंतर था। मेरा जीवन शांत होने लगा और मेरी यौन इच्छा फिर

से जाग उठी। इस जंगल में, इस शिवालय में, मैं राजसाहेब को इतनी तीव्रता से महसूस करता था। यह मेरे मन पर इतना हावी हो जाता था कि मेरी एकाग्रता भंग हो जाती थी। उन्नीस साल बाद भी, मुझे वह याद है। मैं सुबह जल्दी उठकर मुंबई जाने वाली ट्रेन पकड़ना चाहता था और वहाँ किसी दूसरी औरत के साथ संबंध बनाना चाहता था! लेकिन एक बार मनोहरी के साथ संबंध बनाने के बाद, किसी दूसरी नीरस औरत के साथ सोने का ख्याल भी नामुमकिन हो गया। हालाँकि उसके प्रति मेरा गुस्सा उतना ही था, लेकिन उसके साथ बिताए उस अकेलेपन की याद ने मुझे किसी और औरत से मिलने का सपना भी नहीं देखने दिया। जब मैं सुबह टहलने निकलता था, तो खेतों में काम करती जवान लड़कियों और मजबूत महिलाओं को देखता था। उस पल, मैं मन ही मन सोचता था, "इस स्तर की शारीरिक शक्ति तो कोई और नहीं पा सकता!" बाग में काम करती महिलाओं को देखकर, मैं खुद को समझाता था कि यहाँ की वास्तविकता ज़्यादा से ज़्यादा एक या दो महीने की ही होगी। उसके बाद मैं कुछ व्यवस्था कर सकता हूँ।
एक रात नौ बजे, देसाई का ड्राइवर एक पत्र लेकर आया। वह ट्रैक्टर भी चलाता था, बोरवेल की देखभाल करता था और बिजली से जुड़े कुछ छोटे-मोटे काम भी करता था। पत्र में लिखा था, 'परंजप का एक संदेश है, वह आपसे फोन पर बात करना चाहता है।' मैं ड्राइवर के साथ वार्ड में गया। देसाई ने मुंबई फोन किया।
‘आप क्या कह रहे हैं? आप तो पूरी तरह से गाने में डूबे हुए हैं! देसाई कह रहे थे, आपका गाना फिर से प्रथम स्तर पर पहुँच गया है! यहाँ एक लैन है। मुझे लगता है आपको इसे स्वीकार करना चाहिए। मुंबई में एक प्रेस-लैब मीटिंग है। इसके साथ ही एक कार्यक्रम आयोजित किया जाना चाहिए। आपको या टिप्पणीकारों को कोई मानदेय नहीं मिलेगा, बल्कि आपको खुद ही एक अच्छा तबला वादक ढूंढना होगा। अगर कोई मुफ्त में तबला वादक मिल जाए तो अच्छा है। इन पत्रकारों की योजना टिकटों की बिक्री से कम से कम दस लाख रुपये जुटाने की है। कार्यक्रम प्रेस-
यह प्रयोगशाला इसी लाभ के लिए बनाई गई है। इससे कार्यक्रम में शामिल सभी शोध पत्रों को काफी प्रोत्साहन मिलता है।
हम देंगे। कार्यक्रम से पहले आपके बारे में लेख भी प्रकाशित किए जाएंगे। तस्वीरें और साक्षात्कार भी प्रकाशित किए जाएंगे। एक समूह का मानना है कि आपने अपनी सीमा के कारण किसी डांस पार्टनर के लिए कार्यक्रम छोड़ दिया है।
एक दमदार और गंभीर गीत गाया जाना चाहिए जो उनकी परेशानियों को दूर कर दे!

कार्यक्रम की रिपोर्टें आएंगी, यह हमारी जिम्मेदारी है। अगर यह मुलाकात सफल रही, तो आप पहले की तरह दुनिया में फिर से गाएंगे!
मुझे उनकी बातें सुनकर रोमांच हुआ। मैंने कहा, 'आप ही तो गा के बारे में बात कर रहे हैं।'
चिंता मत करो! तुम भी पहले से दस उंगलियां ऊंची आवाज़ में गाने का अनुभव करोगे!
अच्छा! मैं आपको एक और बात बता दूं। पत्रकारों के भी अपने हथकंडे होते हैं। वे नृत्य के संदर्भ में आपसे विरोधाभासी और शर्मनाक सवाल पूछेंगे। इस बार मैं गुस्सा नहीं करना चाहती। मैं सही जवाब देना चाहती हूं। अगर आप चाहें तो बस इतना कह दीजिए – मैंने सोचा था कि नृत्य क्रोध की भावनाओं को और अधिक तीव्रता से उजागर करेगा; वहां जाने के बाद मुझे एहसास हुआ – हालांकि यह सच है कि नृत्य के लिए गायन आवश्यक है, गायन एक स्वतंत्र कला है, इसलिए मैं अपनी कला पर लौट आई। चाहे कुछ भी हो जाए, मैं इस बारे में एक भी कड़वा शब्द नहीं बोलना चाहती।
हालांकि मुझे यह चिल्लाने का मन कर रहा था कि यह कलाकार एक असफल कलाकार था, लेकिन मैं परंजपा की बात समझ गया था।
मुंबई के अंग्रेज़ी, मराठी और हिंदी अखबारों में मेरी वापसी की खबर छपी। देसाई और उस घर की तस्वीरें भी छपीं जहाँ मैं रियाज़ कर रहा था। राजसाहेब द्वारा जंगल में की गई साधना की पृष्ठभूमि भी इसमें जोड़ दी गई। यह जानबूझकर सनसनी फैलाने की कोशिश थी। देसाई कार्यक्रम के लिए अपनी एसी कार लेकर आए थे। वे मुंबई के एक पांच सितारा होटल में काम करते थे।
देसाई ने कहा कि कार्यक्रम अच्छा था। उन्होंने कहा, ‘आपकी कला आपके गायन से दस गुना अधिक ऊँची पहुँच गई है! आपके नृत्य की जीवंतता आपके प्रदर्शन में स्पष्ट रूप से झलकती है। भावनाओं की एकाग्रता में न केवल वृद्धि हुई है, बल्कि
इससे प्रस्तुति में अपार विविधता आई है! नृत्य में आपका साथ देना ही आपका काम है।
"उन्होंने इसका फायदा उठाया है! ठीक वैसे ही जैसे एक समय में नाट संगीत शास्त्रीय संगीत की शोभा बढ़ाता था!"
कार्यक्रम के समापन के समय, दर्शकों में से एक संदेश आया, 'एक नृत्य प्रस्तुति दी जानी चाहिए!' लेकिन मैंने दृढ़ता से कहा, 'नहीं! मैंने वह

विचार त्याग दिया है और पूरी तरह से शास्त्रीय संगीत की ओर रुख कर लिया है।'
पुराने अखबारों ने कार्यक्रम की रिपोर्ट में इसे इस तरह से प्रस्तुत किया और आगे कहा, 'इसका मतलब यह नहीं है कि मनोहरी दास और मोहनलाल हमेशा के लिए अलग हो गए हैं!'
बाद में मुझे पता चला कि इस कार्यक्रम का जिक्र दिल्ली के अखबारों में भी हुआ था। एक अखबार ने तो 'आप, एक कलाकार जो अपनी मूल कला में लौट आए हैं' शीर्षक से विस्तृत खबर भी दी थी। मुझे यह जानकर विशेष खुशी हुई कि उन्होंने इसे जरूर पढ़ा होगा।
तीन हफ्ते बाद, परंजपा का एक और फोन आया, 'फोट स्थित वरिवलस संगीत सभा ने आपके पते के बारे में पूछताछ की है। वे आपका कार्यक्रम बुक करना चाहते हैं। पिछले तीन सालों में गायकों ने अपनी फीस बढ़ा दी है। राष्ट्रीय स्तर के सितार और सरोद वादक भी अपनी सामर्थ्य के अनुसार फीस लेने लगे हैं! 50,000 रुपये से कम पर समझौता मत कीजिएगा। वे इसे स्वीकार कर लेंगे। एक बार पता दे दिया तो आगे सोचने की कोई जरूरत नहीं है। एक नंबर वन कलाकार के रूप में,'
अगर आपको जगह चाहिए तो आपको पहले आना होगा, भले ही आपके पास टोपी न हो! अगले दिन, संगीत सभा के सचिव समरचंद कपूर मेरे घर आए, पचास हजार रुपये के अनुबंध पर हस्ताक्षर किए और शेष दस हजार रुपये अपने हाथ में लेकर चले गए। खाना खत्म हो गया है। लेटने पर भी नींद नहीं आ रही। दोपहर में नींद न आने पर शाम को मन उदास हो जाता है। रात दस बजे उसका फोन आएगा। मैं क्या कहूँ? इतने सालों में उसकी कोई खबर नहीं मिली। अब अचानक आई और बोली, 'तुम गाओ - मैं नाचती हूँ।'
तो उसने कहा, "मुझे क्या करना चाहिए? मुझे क्या कहना चाहिए?" यही सोचते हुए उसने विषय बदल दिया।

आठ

१
मुझे पूरी रात नींद नहीं आई।
यह सच है कि उसे हाथ नहीं उठाना चाहिए था। लेकिन उसने पहले हाथ क्यों उठाया? उसका व्यवहार ऐसा था मानो वह तीन-तेरह मिनट का पूरा कार्यक्रम खुद चला रहा हो, लेकिन क्या मुझे बैठकर बातें करनी चाहिए थीं? अगर वह तमीज़ से पेश नहीं आता, तो इतने बड़े समूह को कैसे संभालता? लेकिन उसने नृत्य क्यों बिगाड़ा? अरे! और क्या! कार्तिक के आने के बाद से मुझे उसके लिए बुरा लगने लगा। मैंने सोचा था कि वह धीरे-धीरे आएगा। अगर उसने देर की, तो इस लड़के ने बड़ी योजना बनाई है! मैं उसे साफ-साफ बताना चाहती थी कि क्या वह धैर्य रख सकता है। चाहे वह कितना भी बदल जाए, उसे नींद नहीं आती। किसी भी संदेह से बचने के लिए, मैंने कार्तिक को भी सबके साथ होटल में बुलाया है। वह भी सबके साथ सफर करता है। सारी व्यवस्थाएं उसने संभाली हैं, फिर भी उसने ऐसा व्यवहार कैसे किया?
कोई अपनी जगह कैसे भूल सकता है? आखिर, वह एक गायक है। अन्य साथियों के साथ। उसका काम एक तरफ बैठकर गायक का साथ देना है। एक नर्तक जो मंच पर चमकता है! एक नर्तक जो मेरे साथ नाचता है! एक नर्तक जो प्रणाम करता है और प्रियतम की प्रशंसा पाता है। एक कृष्ण जो राधे के प्रेम का आनंद लेता है! गायकों के लिए नर्तकों से चिढ़ना आम बात है। इसीलिए वे हमें नीचा समझते हैं!
यह सोचकर मुझे थोड़ा बेहतर महसूस हुआ।
फिर भी, बात एक-दूसरे की जान लेने तक नहीं पहुंचनी चाहिए थी; लेकिन इसके लिए वह जिम्मेदार है। इस मामले को यहीं नहीं छोड़ना चाहिए। दिल्ली को इसके लिए जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए।
यह आदमी मुझे इस गलती के बारे में समझा सकता है, भले ही वह इस कलाकृति के माध्यम से न समझा पाए। यह आदमी मुझे इस गलती के बारे में समझा सकता है। हमें सावधान रहना चाहिए कि ऐसा दोबारा न हो। हमें सीरियल किलर पर हाथ उठाने की हिम्मत नहीं करनी चाहिए, हमें उसे इसी तरह तड़पाना चाहिए!
अरे! अगर मैंने कार्यक्रम के बाद आइसक्रीम की एक गोली खा ली होती, तो मुझे इन बेकार की चीजों से सिरदर्द होने के बजाय अच्छी नींद आती। बस एक गोली। इतना ही काफी है। मैंने कभी वो सीमा पार नहीं की! दो बज गए हैं। कार्तिक भी

सो गया होगा। शायद वो भी मेरी तरह जाग रहा हो। आँखों से कितना प्यार झलकता है!
वह कहता है, 'मनोहारी जी, मैंने सौंदर्य की कला आपसे ही सीखी है! बिल्कुल सही।'
मेरे शिक्षक ने मुझे यह सिखाया था। मैं भी आंखें घुमा रहा था और भौंहें ऊपर उठा रहा था!
यह उनके जीवन का पहला ऐसा गहरा प्यार है! प्रेम कहानी
अगर ऐसा होता तो बात यहीं खत्म हो जाती। लेकिन अब वो सचमुच प्यार में हैं। मनोहरी दास और कटिकाराम जैसी जोड़ी पूरे नृत्य जगत में बेमिसाल है! ऐसा कृष्ण और ऐसी राधा देखकर पूरी दुनिया मुग्ध हो जाएगी, मैंने ऐसा कृष्ण पहले कभी नहीं देखा! मैं ऐसा कृष्ण बनाऊंगा। अगर जयपुर के इस परिवार के पथिया को मेरे लखनऊ परिवार के इस भावपूर्ण अभिनय का संगम मिल जाए, तो यह सचमुच एक अद्भुत अनुभव होगा!
मैंने उससे कहा कि प्रेम के गुण को पोषित करके उसे समभाव की अवस्था तक पहुँचाया जा सकता है। मैंने उसे चरण-दर-चरण समझाया, ‘कटिक, तुम मुझसे छोटे हो, इसलिए संकोच मत करो। याद रखो कि राधा कृष्ण से बड़ी थीं। जैसे तुम्हारे और मेरे बीच दस साल का अंतर है, वैसे ही उनके बीच भी था। फिर भी, बिना संकोच किए, कृष्ण को प्रेम का खेल खेलने के लिए क्यों नहीं प्रेरित करते? देखते हैं कि तुम्हारा संकोच दूर होता है या नहीं! यह मत डरो कि मोहनलाल मेरे पास आ जाएगा। यदि बिना दबाव के प्रेम हो, तो तुम मेकअप आर्टिस्ट हो और मैं तुम्हारी नौकरानी! यह मत सोचो कि मैं तुम्हारी रखैल हूँ। यहाँ, इस एकांत में, मैं तुम्हारी नौकरानी हूँ! मीरा की तरह नहीं! राधा की तरह नहीं!’
एयर कंडीशनर चालू था, लेकिन कमरे में हवा बिल्कुल नहीं चल रही थी। बाहर से हल्की सी भी आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। खिड़की पर लगे मोटे पर्दे खुल गए और रोशनी अंदर आ गई। उसने दीवार पर लगी घड़ी देखी, साढ़े छह बज रहे थे। 'पिताजी,' उसने कहा और उठ गई। सब लोग आठ बजे कार से निकलेंगे। उसने जल्दी से अपने दांत साफ किए और कपड़े बदले। सब लोग तैयार होंगे। कौन जाने शीला जागेगी या नहीं! वह आलसी है, उसने कहा और नीचे आ गई। सचिव इंतज़ार कर रही थी। होटल जाकर साग से मिलने के लिए काफी समय था।
गाड़ी चलाते समय मेरे मन में यह विचार आया कि कृष्ण सैकड़ों गोपियों से प्रेम करते थे, लेकिन उन्होंने कभी किसी से शिकायत नहीं की। ऐसा क्यों था?

क्या कोई ऐसा पुरुष नहीं होता जिसकी समय-समय पर दो या तीन पत्नियाँ हों? तो अगर किसी स्त्री के दो प्रेमी हों तो इसमें क्या गलत है? अगर वह दोनों से समान रूप से प्रेम कर सकती है, तो उन्हें एक-दूसरे के साथ शांति से क्यों नहीं रहना चाहिए? मुझे इस और उस गायिका का साथ क्यों नहीं मिलना चाहिए? मैं मानता हूँ कि मैंने उसे क्रोध में आकर मार डाला। मैंने उसे इसलिए मारा क्योंकि उसने मुझे मारा था; लेकिन यह एक संवादात्मक क्रिया थी। इसके पीछे प्रेम था। मैं इससे और उससे भी प्रेम करता हूँ। मैंने यहाँ और वहाँ जाना बंद नहीं किया है। हालाँकि प्रारंभिक आवेग समाप्त हो गया है, मेरा प्रेम शांतिपूर्वक बह रहा है! मुझे इस बात का विश्वास दिलाइए।
मैं उसे देखना चाहती थी। मैंने सबके सामने उसका हाथ अपने हाथ में लिया और उसका हाथ मांगा।
की पटेल। आज सुबह आपको इस मिठाई का आनंद लेने के लिए समय निकालना चाहिए। इसे 'कार्तिक को मित्र के रूप में स्वीकार करना' के रूप में संबोधित किया जाना चाहिए।
सभी लोग अपने सामान के साथ लॉज के नीचे वाले हॉल में खड़े थे। उसने एक नज़र में ही पहचान लिया कि वह नहीं है। कहीं न कहीं शर्मिंदगी छिपी हुई थी! या हो सकता है कि वह मुझे देखे बिना स्टेशन के लिए निकल गया हो।
शीला उसे एक तरफ ले गई और बोली, 'कल रात, मेरे यहां आने से पहले ही, मास्टर जी अपना सामान लेकर चले गए थे! मुझे सुबह काउंटर पर आने के बाद ही इसका एहसास हुआ!'
मनोहरी का चेहरा कांप उठा। अगर उसने सबके सामने माफी मांगने का फैसला किया होता, तो वह पल भर में गायब हो जाती! उसका दिल दुख से भरा हुआ था। लेकिन फिर भी उसने खुद को रोक लिया।
उसने कहा, 'कोई और भी कहीं गया होगा। उन्होंने भी इसी कार के लिए बुकिंग कराई होगी, है ना?'
वे स्टेशन पर आएंगे!’ बाद में, अड़तीस साल बाद, मैंने अपने ससुर को फोन किया और कहा, ‘मैं आपसे स्टेशन पर ज़रूर मिलूंगी। अगर हम नहीं भी मिल पाते हैं, तो भी आप उन सभी के लिए ज़िम्मेदार हैं। अगर आप आते हैं, तो आप एक साहसी महिला हैं। आपको सबको घर ले जाना चाहिए और खुद घर जाना चाहिए!’
वह स्टेशन नहीं गई। वह फिर से इसी तीन सितारा होटल में आ गई। उसे ग्यारह बजे तैयार होकर हवाई अड्डे जाना था। वह बहुत शर्मिंदा लग रही थी। क्या

शर्मिंदगी गुस्से की संक्रामक भावना हो सकती है? क्या वह रात में ट्रेन से निकली थी? उसे याद आया कि उसके पास छह हजार रुपये थे।
जब वह हवाई अड्डे पहुँची, तो उसे पता चला कि किसी अपरिहार्य कारण से उड़ान दो घंटे लेट हो जाएगी। वह जल्द से जल्द दिल्ली पहुँचकर इस देरी की भरपाई करने के बारे में सोच रही थी! वह स्तब्ध होकर इधर-उधर हाथ पटकने लगी। फिर बिना देर किए, वह हँस पड़ी! उसे याद आया कि सब लोग हमेशा कहते हैं कि पटना जाने वाली उड़ानों का यही हाल होता है। उसने आयोजकों को ज़बरदस्ती अलविदा कहा और स्तब्ध होकर अकेली बैठ गई, यह सोचने लगी कि वह क्या शब्द कहे जिससे वह अपनी गलती सुधार सके। तभी एक और घोषणा हुई – ‘उड़ान एक घंटे और लेट हो गई है – जिन यात्रियों ने चेक-इन कर लिया है, वे अपने कूपन खरीद लें और खाना खा लें।’ इसका मतलब था कि उड़ान तय समय से पहले ही रवाना हो जाएगी! जितनी देर होगी, उसका गुस्सा उतना ही बढ़ेगा! इस पायलट को फाँसी पर लटका देना चाहिए! उसका खाना-पीना जल गया!
जो विमान 1:30 बजे रवाना होने वाला था, वह 5:30 बजे रवाना हुआ। अपना सामान घर पर छोड़कर, वह ग्रीन पार्क में या या के घर के लिए गाड़ी चलाकर गई। उसने दरवाजे की घंटी बजाई। दरवाजा नहीं खुला। ऊपर की सामान्य बत्ती भी बंद थी। जैसे ही मकान मालकिन ने दरवाजे की घंटी बजाई, उसने दरवाजा खोला और कहा, 'अंदर आ जाइए, अंदर आ जाइए।' उसने अंदर से चाबी निकाली और कहा, 'आपने मुझे अंदर आने के लिए कहा था।'
‘वे कहाँ गए?’ उसने भय से भरी आवाज में पूछा।
उन्होंने ऐसा नहीं कहा।
वह ऊपर गया और देखा। वह अपने कपड़े लेकर चला गया था। पलंग, सोफा, बर्तन, वीणा – सारा सामान वहीं था। यहाँ तक कि एक डफ भी था। लेकिन उसने उन छह हज़ार लोगों को मार डाला था! उसे गुस्सा आया, लेकिन साथ ही अजीब सी संतुष्टि भी महसूस हुई। ऐसे चोर जैसे आदमी के लिए उसे तड़प क्यों होनी चाहिए? लेकिन वह कहाँ गया था? दिल्ली में किसका घर था? नहीं। यहाँ कोई इतना जाना-पहचाना नहीं था। मुंबई? अपनी पत्नी के पास? क्या वह ज़िला छोड़कर अपने पैरों तले भागने चला गया था? उसका दिल दुख रहा था। कहीं क्यों नहीं गया! लेकिन तुमने उसे लात मारी और फिर दूसरी औरत के पास उसके पैर तले भागने चला गया? ऐसा लगा जैसे किसी ने उसके पेट में छुरा घोंप दिया हो। क्यों नहीं! उसने गुस्से

में मुझसे बच निकलने में वाकई कमाल कर दिया! अच्छा हुआ कि मेरे पास वो छह हज़ार लोग हैं! वरना, भिखारी के लिए मुश्किल हो जाती!
घर लौटते समय मैं सोच रही थी कि अब इस घर का क्या करूँ? मुझे घर खाली करना पड़ेगा क्योंकि बिल गलत हैं। नहीं तो मुझे अगले तीन महीने का किराया देना पड़ेगा। क्यों न इसे इसी घर में रख लूँ? इस तरह मैं कार्तिक के साथ पूरी तरह एकांत का आनंद ले पाऊँगी!
पेग का खून लेते समय, गुजी हमेशा सोचता था, 'यह प्रक्रिया कैसे हुई होगी?' मोहनलाल जी ने थोड़ी गड़बड़ कर दी। शुरू से ही उनका मूड ठीक नहीं था। बीच में शरण को डांटने के बजाय, महाशय मंद्रा मुसीबत में पड़ गए! अब मैं क्या करूँ, का पाल!
लेकिन उन्होंने ऐसा क्यों किया?
पेट दर्द का एहसास होते हुए भी, उसने बड़ी सावधानी से इसे दबा लिया। यह जानते हुए कि इस जवाब से बात गलत दिशा में चली जाएगी, उसने कहा, 'कुछ नहीं! ज़रूरत से ज़्यादा उम्मीद। गायक हमेशा यही करते हैं! वे ज़्यादा पैसे मांगते हैं, वरना कार्यक्रम बर्बाद हो जाएगा!'
गु जी ने कुछ नहीं कहा। उसने एक घूंट लिया। वह कपड़े बदलने के लिए अंदर चली गई। उसने मेज पर एक गर्म प्लेट रखी और उन्हें खाने के लिए आमंत्रित किया। खाना खाते समय वे दोनों अकेले थे।
उन्होंने कहा, "मुझे नहीं लगता कि वह पैसे के लिए कार्यक्रमों में बाधा डालने वाला व्यक्ति है।"
"आप यह पक्ष कैसे ले सकते हैं?"
‘यह किसी का पक्ष लेने का सवाल नहीं है। मैं इस मामले की प्रकृति को जितना समझता हूँ, उतना कुछ नहीं कह रहा हूँ। किसी भी प्रतिभाशाली गायक को देख लीजिए। उनका झुकाव भव्यता की ओर होता है। वे लय को कम कर देते हैं और उसे पूरी तरह से मिटा देते हैं।’
वह चुप रही। अगर हम विस्तार से बात करें तो कार्तिक के बारे में पता चल सकता है। एक बात छुपाते-चुकाते दूसरी बात सामने आ जाएगी! रात को उसे नींद आ गई। कन्या का बेजान, बेडौल चेहरा अजीब सी आवाज़ में खर्राटे लेने लगा। उसे उसे जगाने का मन नहीं हुआ। वह धीरे-धीरे सीढ़ियों से ऊपर गई और अपने कमरे में जाकर सो गई। जैसे ही उसे नींद आने लगी, उसे घर में गाए गए गीत के बारे में अपनी और गुजी की कहानी याद आ गई। फिर वही रात! मोहनलाल के साथ इसी

बिस्तर पर वो गर्म और अकेली रात! तीन - उम्म, साढ़े तीन साल बीत गए! वो गर्मी कहाँ चली गई? क्या कार्तिक के आने के बाद वो फीकी पड़ गई? नहीं। उसके अंदर की गर्मी तो पहले ही फीकी पड़ने लगी थी। बल्कि, कार्तिक के आने के बाद वो और बढ़ गई। हाँ! पिछले एक हफ्ते से मुझे एकांत नहीं मिला। मैं सारा दिन अभ्यास करती रही। शाम को पढ़ाई करती हूँ। मुझे डर लगता है कि मोहन 7:30 के बाद आएगा! मुझे डर लगता है! मुझे पूरी दोपहर कार्तिक के साथ बितानी पड़ती है। इस घर का किराया बर्बाद हो रहा है, इस बात का बुरा मत मानिए!
क्या वह वाकई में देरी से होने वाले प्रॉम के मूड में था? मैं तो डांस में खो गई थी।
पूरा सभागार उन पर केंद्रित था। लेकिन उनकी ओर देखने के बजाय, वे पहली पंक्ति में बैठे हुए, हावभाव करने वालों के हाथों को देख रहे थे, और मंदिर की सीढ़ियों से नीचे उतर रहे थे!
उसने कार्यक्रम को बर्बाद करने के इरादे से ऐसा बिल्कुल नहीं किया! इसका यही मतलब है।
नहीं महोदय, ऐसा बिल्कुल नहीं है!
इस विचार से मुझे थोड़ी राहत मिली। इसका मतलब था कि वह मेरा दोस्त नहीं था। क्या हम देख सकते हैं कि ये दोनों दोस्त बन जाएंगे? लेकिन वह तो कहीं भाग गया! अब मैं उसे कहाँ ढूंढूँ? क्या मैंने जल्दबाजी की? यह घटना छात्रों के सामने नहीं होनी चाहिए थी।
अगली दोपहर, कार्तिक के साथ उसके प्रेम प्रसंग के फीका पड़ने के बाद, उसे अचानक यह खबर मिली कि मोहनलाल का निधन हो गया है। यानी, उसका
इस गुलदस्ते में इसके साथ शारीरिक संबंध बनाए रखना। वह बस हंस पड़ी, 'बस इतना ही।'
शास्त्रीय संगीत गाने वाले कलाकार! इस डांस पार्टनर के लिए गाते हुए मेरे रोंगटे खड़े हो जाते थे।
‘मनोहरीजी–’
‘मैंने तुम्हें कितनी बार कहा है कि वो चीज़ पहनना बंद करो!’ उसने गुस्सा दिखाने की कोशिश की। पहले तो वो भी उसे यहाँ के दूसरे छात्रों की तरह दीदी कहकर बुलाता था। जब उनका रिश्ता शुरू हुआ, तो उसने उसे ‘मनोहारी जी’ कहना शुरू कर दिया। उसकी कम उम्र के कारण,

यह लड़की अपने नाम के आगे से 'G' अक्षर हटा देती है। उसने उसे हाथ से थप्पड़ मारा और कहा, 'अरे, हम दोनों बराबर हैं। अहा। तुम मुझसे बड़े हो! देखो।' अगर तुम चाहो तो! तुम्हारे पैर मेरे पैरों से एक फुट लंबे हैं!
उन्होंने खुलकर अपनी बात रखी। उन्होंने कहा, ‘क्या वह दुनिया का इकलौता गायक है? सच कहूँ तो, ऐसे ‘बड़े’ गायक संगतकार के रूप में आना नहीं चाहते। उन्हें तो बस और अधिक कष्ट सहना पड़ता है। केवल वही गायक आना चाहिए जो नृत्य की लय को समझता हो। नर्तक का स्थान महत्वपूर्ण होना चाहिए। गायक तो केवल संगतकार है! कोई दूसरा गायक चुनिए। एक सप्ताह की तैयारी से उसी रचना को दोबारा प्रस्तुत किया जा सकता है।’
वह खुश था। यह काम एक हफ्ते के अंदर हो जाना चाहिए। और इसे इस तरह से किया जाना चाहिए कि खूब प्रचार मिले। ताकि उसे खुद भी समझ आ जाए कि वह कहां है! उन्होंने सबसे पहले दुगा प्रसाद को संदेश भेजा और फिर उन्हें फोन किया। उन्होंने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा, 'पंडितजी, आपका गुस्सा होना स्वाभाविक है। कलाकार तो बड़े और मशहूर हैं। आपने उन्हें बागेश्री पुरस्कार के लिए यह सोचकर चुना था कि वे काम आएंगे; लेकिन क्या आप जानते हैं कि उन्होंने आगे क्या किया? उन्होंने ज़िद की कि मैं ही ये सारे गाने गाऊँगा! मैं आपको हटाना बिल्कुल नहीं चाहता था। लेकिन क्या कर सकते हैं! कभी-कभी बड़े कलाकारों की ज़िद भारी पड़ जाती है! इसके बाद आप ही हमारे मुख्य गायक होंगे!'
‘आपने ही यह विषय उठाया है, तो अब मैं बोलूँगी! अरे, क्या उसका कोई दूल्हा है? बिल्कुल, उसकी आवाज़ सिनेमा के लिए उपयुक्त है, इसलिए वह गा सकता है!’ ‘आप बिलकुल सही कह रहे हैं! मेरी माँ को भी गुस्सा आया था। इसीलिए उन्हें नौकरी से निकाल दिया गया!’
दुगाप्रसाद के लिए समूह में दोबारा शामिल होने के लिए यह काफी था।
दिल्ली की नूपुर ने इस कार्यक्रम को आयोजित करने का निर्णय लिया। एक महीने बाद की तारीख तय हुई। फिर से कमानी हॉल को ही चुना गया। कार्यक्रम का खूब प्रचार-प्रसार हुआ। अखबारों में दो अंग्रेजी और तीन हिंदी लेख प्रकाशित हुए जिनमें कार्यक्रम की विशेषताओं का वर्णन था। मनोहरी ने जोर देकर कहा कि इस कार्यक्रम के कारण उनका नाम चार उंगलियों पर होना चाहिए। कार्यक्रम की तैयारियां पूरे जोश के साथ शुरू हुईं। समूह में सभी को पूरा विश्वास था कि कार्यक्रम अभूतपूर्व सफलता प्राप्त करेगा।

२
दोपहर में मुझे एक फोन आया, ‘महोदया, मेरा नाम डी. एल. गुहा है। धिनकलाल गुहा। मैं एक पत्रकार हूँ। मैं ‘नूपुर’ द्वारा आयोजित ‘पिराक्रमा’ कार्यक्रम के सिलसिले में आपका साक्षात्कार लेना चाहता हूँ। मुझे आपके प्रदर्शन की दो-चार तस्वीरें चाहिए। मैं अपना कैमरा लेकर आऊँगा। क्या आप साक्षात्कार देंगी?’
वह खुश थी। यह तो किसी फिल्म की तरह प्री-लिस्टिंग थी! तो क्या हुआ, दो दिन में सारे टिकट बिक जाएंगे! किसी भी दूसरे डांस प्रोग्राम को इतनी प्री- लिस्टिंग कभी नहीं मिली!
चलो भी। शो तो पाँच बजे शुरू होता है। तुम्हें पता ही है ना कि मुझे कब आराम करना होता है?
"एक पत्रकार जो मनोहरी दास के स्कूल को नहीं जानता, वह दिल्ली में कैसे काम कर सकता है?" वह उनके जवाब से भी प्रभावित हुई।
वह 6:30 बजे पहुंचा। उसका रूप-रंग एक पुरुष जैसा था। करीने से कटी दाढ़ी, कई जेबों वाली कमीज, लंबे बाल, दाहिनी कलाई पर एक कंगन और बाएं कंधे से लटका हुआ कैमरा।
आ या-आ या ने मुझे विनम्रतापूर्वक नमस्कार किया। दस से पंद्रह मिनट तक यह तमाशा देखने के बाद, मैंने सात या आठ तस्वीरें लीं। शो के दर्शनीय भाग की तस्वीरें लेने के बाद, नृ यशले ने कहा,
साक्षात्कार का विषय उठाया गया। उन्होंने कार्तिक को साक्षात्कार की जिम्मेदारी भी सौंपी। गोपी को शिकायतकर्ता पर विशेष ध्यान देने के लिए कहकर, वह बगल वाले चार दरवाजों वाले छोटे कमरे में चली गईं। वह भी उनके पीछे गईं। ला कामधला ने कप में चाय डाली और चाय पीने लगीं।
उसने अपना कप उठाया और उसे हाथ में पकड़े हुए स्टूल पर बैठ गई। दरवाजा बंद था, इसलिए
घंटियों की हल्की-हल्की आवाज सुनाई दे रही थी।
इस कलाकृति के बनने की प्रक्रिया, इसकी कलात्मक विशेषताओं जैसे चार-छह सवालों पर विचार करने के बाद, उन्होंने अनायास ही पूछा, 'आपके पूर्व गायक मोहनलाल का निधन हो गया है! क्या यह सच है?'
वह असमंजस में थी, लेकिन बिना किसी झिझक के उसने कहा, 'हां।'

उन्होंने अगला सवाल पूछा, "तुमने क्यों छोड़ा?"
‘वह शास्त्रीय संगीत गायक थे। उन्होंने इस मार्ग को चुनने का फैसला किया था!’ उचित उत्तर न सूझने पर उन्होंने मन ही मन अपनी पीठ थपथपाई।
‘वह साढ़े तीन साल तक तुम्हारे साथ रहा। तुम्हारे और मेरे बीच, तुम्हारे नृत्य और उसके गायन के बीच का बंधन गहरा था!’
लेकिन कला के क्षेत्र में, अपनी रुचि का पता लगाने में अक्सर समय लगता है! 'यह सच है! लेकिन अंत में, तुमने उसे थप्पड़ मारा और उसके हाथ से पैसे छीन लिए! इसलिए वह तुम्हें छोड़कर चला गया। क्या यह सच है?'
लेकिन इस अप्रत्याशित सवाल ने उसे शर्म से लाल कर दिया। अपनी आँखों से झलकने वाली सच्चाई को दबाते हुए, वह हँसी और बोली, 'यह तो सरासर झूठ है! तुम्हें यह किसने बताया?'
‘झूठ? क्या यह झूठ है?’ उसने ध्यान से देखते हुए सोचा। दबंग अंदाज़ में पेश आने वालों की आँखों में अंधेरा छाया हुआ था। उसके मन में यह सवाल कौंध गया, ‘उसे यह किसने बताया?’ इससे वह सोचने लगा, ‘मैं उसका सामना कैसे करूँ?’
'आप दोनों के बीच मतभेद किस बात पर था?'
‘आप इसके साथ क्या करना चाहते हैं? आपका मेरी कला से एक जुड़ाव है। ‘पिरक्रमा’ के संदर्भ में, मैं यह कहना चाहता हूँ कि-’
क्षमा कीजिए महोदया! मुझे आपके निजी मामलों में दखल देने में कोई दिलचस्पी नहीं है; लेकिन इस घटना के बारे में सबको पता है। कला जगत में इस बारे में खूब अफवाहें उड़ रही हैं। एक पत्रकार के तौर पर मेरा फर्ज है कि मैं सच बताऊं। मैं आपकी कला का प्रशंसक हूं। मैंने आपसे यह सवाल इसलिए पूछा ताकि इस संबंध में आपकी तरफ से भी लिख सकूं। अगर लोगों के मन में कोई बात पूरी तरह से झूठी है, तो क्या उसे दूर किया जाना चाहिए या नहीं?
उसे इस बात पर यकीन होने लगा। 'लेकिन मुझे बताओ, यह बात तुम्हें किसने बताई?'
हर तरफ कानाफूसी हो रही है। इसके बारे में किसी को बताना जरूरी नहीं है। ऐसा कहना सही नहीं है। आपने इस आदमी को मुंहतोड़ जवाब दिया है, इसमें कोई बुराई नहीं है। गपशप करने वाले को यह अधिकार है। बस मुझे इसके पीछे का कारण बता दीजिए!
एक बार मैंने सोचा कि मुझे सब कुछ भुला देना चाहिए और कह देना चाहिए कि मैंने ऐसा नहीं किया। बाद में मैंने सोचा, अगर वो चार और सबूत देकर मुझ पर

'झूठ मत बोलो' का आरोप लगा दे तो क्या होगा? क्या मोहनलाल ऐसा कर सकता था? नहीं। वो ऐसा कहकर खुद को अपमानित नहीं करेगा। ये उसकी अपनी गलती थी। इस समय सभी छात्रों को इस बारे में चेतावनी दी जानी चाहिए थी।
उसकी चुप्पी देखकर वह हँस पड़ा, "जो हुआ वो सच है!"
वह उठी और बोली, 'देखिए, मुझे अभी भी अस्पताल जाना है!' वह भी उठा और बोला, 'माफ़ कीजिए महोदया! मैंने आपको परेशान किया।' उसके चेहरे पर वही धीमी मुस्कान थी।
साप्ताहिक कला पत्रिका ‘हॉराइजन’ में उन्होंने जो लेख लिखा, वह बिल्कुल अलग था। इसका शीर्षक था ‘एक प्रेम कहानी का अंत’। इसमें, ‘कला के क्षेत्र में एक नया प्रयोग’ उपशीर्षक के अंतर्गत, उन्होंने गीत-गोविंदा की उन रचनाओं की प्रशंसा की, जिन्हें वे प्रस्तुत कर रही थीं। इसके बाद, परिशिष्ट में लिखा गया था, ‘इस कला प्रयोग के परिणामस्वरूप जो विशेष घटना घटी, वह यह है कि...’
नर्तकी काटिकराम का मनोहरी दास के जीवन में प्रवेश और उसका परिणाम गायक मोहनलाल का विदा होना! पाठकों को याद रखना चाहिए कि इसी मोहनलालजी ने साढ़े तीन साल पहले मनोहरी दास के नृत्य को बढ़ावा दिया था। इसी मोहनलालजी को बढ़ावा देने का काम इसी नर्तकी ने किया था।
इस थप्पड़ से उन्होंने न केवल उस सज्जन का अपमान किया, बल्कि उन्हें दंडित भी किया।
जब उन्हें जबरदस्ती कमरे से बाहर घसीटा गया तो वे जमीन पर गिर पड़े! कला जगत में इस बात का अफसोस जताया जा रहा है कि इस प्रतिभाशाली कलाकार ने शर्म के मारे अपना दर्द छुपाया। जब हमारे संवाददाता ने इस संदर्भ में इस बारे में पूछा तो मनोहरी दास ने कहा,
मैंने तुरंत जवाब दिया।
इस लेख के साथ मोहनलाल के गायन करते हुए एक पुरानी तस्वीर थी और उसके नीचे लिखा था, 'दिवंगत गायक।' लेख में, कार्तिक राम की एक बड़ी तस्वीर थी, जो नृत्य के तीन चक्कर पूरे कर चुके थे और दोनों हाथ जोड़कर विजयी भाव से मंच पर लौट रहे थे। तस्वीर के नीचे लिखा था, 'नए गीत का आगमन।'
यह मनोहरी की तस्वीर है, जिसमें उन्होंने राधे का वेश धारण किया हुआ है और अपना घूंघट थोड़ा सा उठाया हुआ है।
यह संभवतः मार्च में आयोजित किसी कार्यक्रम से प्राप्त हुआ था।

मनोहरी को सचिव नूपुर का फोन आया, तब उन्हें इस लेख के बारे में पता चला। लेख पढ़ते ही उनका गुस्सा भड़क उठा। उन्होंने गुस्से में आकर उस गुफा पर चप्पल से लात मार दी। उन्हें याद आया कि उस दिन उन्होंने अपना नाम कार्ड भी नहीं दिया था। इसलिए उन्होंने डायरेक्टरी से 'हॉराइजन' के संपादक का नंबर ढूंढा। 'संपादक महोदय, गुहा नाम के एक बदमाश ने आपके अखबार में झूठा लेख लिखा है। उसने मुझसे अनुमति जरूर ली होगी। वरना मैं यहां से नहीं जाऊंगी!' दूसरी ओर से शांत भाव से उत्तर आया, “महोदया, उन्होंने जो लिखा है उसमें क्या गलत है? आप इस सरल जानकारी को अगले रविवार के परिशिष्ट में इसी स्थान पर प्रकाशित कर दीजिए। आपका पत्र संक्षिप्त होना चाहिए। इसे एक-दो दिन के भीतर भेज दीजिए। क्योंकि रविवार का परिशिष्ट तो तीन दिन पहले ही प्रकाशित हो चुका है।”
वह संपादक पर भी भड़क गए। उन्होंने लेटरहेड निकालकर कहा, "आपने यह लेख गलत जानकारी के आधार पर लिखा है - किसी कलाकार के निजी जीवन में तांक-झांक करना गैरकानूनी है। इस पत्रकार के लिए यह आवश्यक है कि वह मुझसे सार्वजनिक रूप से माफी मांगे, अन्यथा मैं इसे स्वीकार नहीं करूंगा।"
अब मैं हर्जाने का दावा दायर करूंगा-' मैंने इस पाठ के साथ एक पत्र लिखा और पत्र को घर के सामने वाले डाकपेटी में भी डाल दिया गया था।
जैसे ही उसने पत्र छोड़ा, उसके मन में विचारों का सैलाब उमड़ पड़ा। क्या पत्र लिखना सही था या गलत? क्या उसे पत्र में और बातें जोड़नी चाहिए थीं? उसे कार्तिक से इस बारे में बात करनी चाहिए थी; लेकिन वह अपनी पत्नी और बच्चों से मिलने भोपाल गया है। वह दो दिन तक वापस नहीं आएगा। समय कहाँ गया? यह पत्र ही काफी है। जैसे ही गुहा यह पत्र पढ़ेगा, वह मायाचाने को पत्र भेजने से खुद को रोक नहीं पाएगा!
अगले रविवार को वह पत्र प्रकाशित हुआ। उसका शीर्षक बड़ा था, 'नटकी मनोहरी दास का स्पष्टीकरण'। इसके साथ उनकी नाराज़गी दर्शाने वाली एक तस्वीर भी थी। जैसे ही उन्होंने उतना ही बड़ा शीर्षक, 'गुहा का जवाब' पढ़ा, उनकी तबीयत बिगड़ गई।
उन्होंने लिखा, 'एक कलाकार के निजी जीवन में झाँकने की निरर्थकता।'
उ लेख क न वत: मनोहरी दास यांनी मा या लेखनात या मुालाच
मैंने अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त कर दी है। मैं एक बार फिर स्पष्ट रूप से कह रहा हूँ कि मैंने जो कुछ भी लिखा है उसमें कोई असत्य नहीं है।

जब वह गुस्से से आग बबूला हो रही थी, तभी सचिव नूपुर ने फोन किया, “महोदया, पिछले सप्ताह आपके कॉलम में चार हिंदी लेखकों ने लेख लिखे हैं। इन लेखकों के नाम लिख लीजिए। नहीं तो मैं आपको भेज दूंगी। मैंने आज ‘हॉराइजन’ में उत्तर देखा। आप उत्तर लिखने क्यों गईं? ऐसी जगह जाने की क्या ज़रूरत थी? आपके पत्रों के बल पर ही आज का अखबार रोचक बन गया है!”
मैं यूं ही नहीं बैठूंगा! मैं तुम्हें कोने में ले जाकर बाहर निकालूंगा! ‘मेरी बात सुनो। कुछ भी करने से पहले सोच लो। जल्दबाजी में फैसले मत लो। अगर तुम अदालत जाओगे, तो विरोधाभासी सवाल तुम्हारे दिमाग को उलझा देंगे। वे तुम्हें दिलचस्प सवालों से भर देंगे और जवाब भी दे देंगे! क्यों न तुम सिर्फ मामले पर बात करो? तुम्हें चुप रहना चाहिए। मेरे आते ही हम शांति से बात करेंगे।’
वह चुप नहीं रह सका। सचिव भी नहीं आया। यहाँ आए छात्रों ने भी अखबार पढ़ा होगा। कोई भी उसके सामने बोलने को तैयार नहीं था; लेकिन उसे यह महसूस होने लगा कि छात्रों के मन में उसकी छवि बदल गई है।
उन्हें यह भी एहसास हो गया था कि इस मामले में कार्तिक से किसी भी तरह की मदद मिलने की कोई संभावना नहीं थी। बल्कि, वह ज़रूर डरा हुआ होगा। वह कह रहा था कि जब उसकी पत्नी गुस्सा होती है, तो वह राजकुमारी की तरह व्यवहार करती है। वह अखबार नहीं पढ़ती; लेकिन फिर भी कोई न कोई कहानी सुनाए बिना नहीं रह पाएगा। वह इस सोच से परेशान लग रहा था। उसमें अपनी पत्नी से यह कहने की हिम्मत नहीं थी, 'अगर तुम चुप रहो और चुप रहो, तो ठीक है! नहीं तो खेल खत्म!' उसमें यह कहने की हिम्मत नहीं थी। वह उससे प्यार करता था; लेकिन वह इसके लिए अपने दूसरे रिश्तों को बर्बाद करने को तैयार नहीं था! गुस्सा आने पर भी उसने खुद को काबू में रखा। मैंने किसी का क्या बिगाड़ा है, तुम इतना क्यों चिल्ला रही हो? मैं एक कलाकार हूँ, क्या तुम्हें इसके लिए शुक्रगुजार नहीं होना चाहिए? कार्तिक को बुलाने की कोई ज़रूरत नहीं थी। अगर कोई देख रहा होता, तो इतना हंगामा नहीं होता!
सचिव गुरुवार को आए। उन्होंने कहा, ‘मैं यह देखने आया हूँ कि तैयारियाँ कितनी आगे बढ़ चुकी हैं। शनिवार को कार्यक्रम के लिए मंच तैयार किया जाएगा। कार्यक्रम अच्छा रहा होगा!’ एक और बात यह है कि वे गुहा से मिले थे। गुहा इतने हैरान रह गए कि उन्होंने इस बारे में कुछ सोचा ही नहीं। वे एकदम शांत हो गए! लेकिन क्या आप जानते हैं कि वे क्या कह रहे थे?

हनाला – आपको और मैडम को मेरा शुक्रिया अदा करना चाहिए। सीधे आरोप लगाए बिना,
लोग तंग आ चुके थे! अब देखिए कितना मज़ा आ रहा है! मैं भी समझती हूँ, है ना? आपको पता है खबर फैलते ही और बहस शुरू होते ही टिकट कितनी तेज़ी से बिक गए? हॉल खचाखच भरा था! उन्होंने बीच की जगह में दोनों तरफ लोहे की छड़ें लगाकर टिकटों की संख्या बढ़ा दी है; इतना ही नहीं, बीच और आगे की सीटों पर भी टिकटों की संख्या बढ़ा दी है। लोगों ने उन सीटों के टिकट भी खरीद लिए हैं! दिल्ली के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है कि किसी नृत्य कार्यक्रम के टिकट इतनी बड़ी संख्या में बिके हैं! अभी भी मांग है। हम अगले हफ्ते एक और कार्यक्रम आयोजित करने जा रहे हैं। उसकी घोषणा भी एक-दो दिन में कर दी जाएगी।
मनोहरी कीचड़ में गिर पड़ी। तीन सौ लोग ये खाली कपड़े पहने हुए थे और रोने लगे! बिना देर किए, अगला कार्यक्रम शुरू! गुस्सा शांत हो गया था।
सचिव ने आगे कहा, "गुहा मजाक कर रहे थे - फिल्म वाले कहते हैं कि वे पैसे के लिए गपशप छापेंगे, लेकिन मुझे उस महिला की बात समझ नहीं आई जिसने मेरी मदद की!"
सचिव के जाने के बाद, उसने ऊपर वाले कमरे में मौजूद कार्तिक को सब कुछ बताया और हंसते हुए कहा, 'मेरी पत्नी और मेरे दोस्तों ने कार्यक्रम को सफल बताकर खूब हंगामा मचा दिया है। बिल्कुल सिनेमा के अभिनेताओं की तरह। मैं उन्हें दीदी कहता हूँ, वे मुझे पाड़ा पाला कहते हैं। चलो भोपाल में कार्यक्रम के दौरान हम दोनों मिलते हैं। चलो चारों, तुम मेरे पैर पकड़ो और उसके पैर भी गिरा दो। ठीक रहेगा।'
या या के चेहरे से तनाव कम हो गया और उसने कहा, "वाह! यही तो समाधान है!" नाटक का कार्यक्रम बेहद सफल रहा! अधिकांश दर्शक राधा-कृष्ण के नाटक में मनोहरी-कटिका की तलाश कर रहे थे। कुछ दर्शकों ने वयस्क मनोहरी और युवा कटिकाराम में राधा-कृष्ण के प्रेम की कल्पना की। प्रेस ने कार्यक्रम की सराहना की। हालांकि, हिंदुस्तान टाइम्स और टेस्टमैन के कला समीक्षकों ने यह राय व्यक्त की कि 'लखनऊ परिवार से राधे का अभिनय और जयपुर परिवार से कृष्ण की भूमिका आपस में मेल नहीं खाती थी'।

लेकिन इससे कला के प्रति आम जनता का उत्साह कम नहीं हुआ। इसके बाद आगरा, जयपुर, जोधपुर, लखनऊ, इलाहाबाद और अन्य शहरों में प्रदर्शन के निमंत्रण आने लगे।

उस दिन सुबह करीब 10 बजे गुहा मनोहरी साउथ स्टेशन पर पहुंचीं।
वह घर लौट आए। मनोहरी नरिया जयपुर-जोधपुर की यात्रा पर गई हुई थीं। जैसा कि उम्मीद थी, घर पर केवल गु सोहनलाल ही थे। वायम्पाकिनबाई ने दरवाजा खोला। अपना परिचय देते हुए गुहा ने गु जी की महानता, प्रसिद्धि, उनकी साधना, उनकी जन्मजात प्रतिभा और कला की शुद्धता पर उनके दृढ़ विचारों की प्रशंसा की। आँखें खुल गईं। आँखों में चमक थी। हालाँकि आँखों की चमक फीकी नहीं पड़ी थी, लेकिन आँखों के आसपास की त्वचा मुलायम हो गई थी। सुंदर दाँतों का एक नया सेट चमक उठा। उसने उस समय की परंपराओं और आरंभ के बारे में बताना शुरू किया।
गुहा ने कविता की धारा को अपेक्षित मोड़ देते हुए पूछा, 'गुजी, आपकी उम्र कितनी है? अस्सी, है ना?'
'हां। यह अस्सी-सत्तासी-सत्तासी है।'
‘कुछ हालिया तंत्र नर्तक लखनऊ और जयपुर के घरा नृत्य का मिश्रण कर रहे हैं! इस बारे में आपकी क्या राय है?’
मेरी राय? यह एक हाइब्रिड है! यह एक मिथक है! जयपुर शहर से मोहित होना भगवान कृष्ण के रथ छोड़कर मोटरसाइकिल पर सवार होने जैसा है!
वाह, गुरु जी! वाह! आपने कितनी चतुराई भरी तुलनाएँ की हैं! आप ऐसी चतुराई भरी तुलनाएँ केवल कालिदास से ही करते हैं! आपकी पत्नी और शिष्या मनोहरी जी ने राधा को लखनऊ शैली की भूमिका दी है और कृष्ण की भूमिका कार्तिक राम को जयपुर शैली की! कृष्ण की पूरी भूमिका जयपुर शैली में है! इस पर आपकी क्या राय है?
‘क्या मनोहरी ने ऐसा किया? क्या आप सच कह रहे हैं?’
'दिल्ली में दो प्रयोग हुए हैं। शायद उन्होंने आपको यह नहीं बताया है कि आप गुप्त प्राधिकरण के अधीन होंगे।'
क्या उसने ऐसा किया? और ये कार्तिकराम कौन है? पहले तो मैं उसे बिना लड़ाई के घर से बाहर निकाल दूँगा! ये जयपुरवासी खुद को खोखले कलाकार समझते हैं और हमें मुसलमानों के प्रभाव से भ्रष्ट कलाकार कहते हैं! वे हमारी आलोचना भी करते हैं; लेकिन मैं कहता हूँ, क्या घोड़े की तरह नाचना गलत है? अगर इस नृत्य से भी भाव व्यक्त नहीं होते, तो फिर यह किस तरह का नृत्य है?
गुहा ने उनकी बात काटते हुए पूछा, "कैतिकारम के बारे में आपकी क्या राय है?"

‘यह कटिकारम कौन है?’
‘क्या आपको नहीं पता? जयपुर शैली का अभिनेता। आपकी पत्नी ने उसे कृष्ण के रूप में चुना है।’
मैंने उसका नृत्य नहीं देखा है। आप इसमें क्या देखना चाहते हैं!
गुहा ने गुजी के गुस्से में बोलते हुए चार-पाँच तस्वीरें लीं। दीवार पर उन दोनों की एक तस्वीर भी लगी थी, जो गुहा ने ही ली थी। उसने घर के सामने, कमरे और अटारी की भी तस्वीरें लीं और गुजी की तारीफ करने के बाद चला गया।
उसी दिन उनका लेख रविवार के कला-पूर्वानी में प्रकाशित हुआ। शीर्षक था – छल की कला! – गुरु सोहनलालजी की ‘द्रोणचय’ मुद्रा की एक तस्वीर।
अस्सी वर्षीय गु सोहनलालजी, उनके इकतालीस वर्षीय शिष्य मनोहरी दास और इकतीस वर्षीय नर्तक कटिकाराम नृत्य कला के अपने प्रयोग को ‘यिबचारा’ कहते हैं। वृद्धावस्था के कारण वे घर से बाहर नहीं निकलते। गु जी, जो अपनी पत्नी के साथ अपने कलात्मक जीवन की यादों में खोए रहते हैं, दक्षिण स्टेशन जाते हैं और कटिकाराम के बारे में कुछ नहीं जानते। गु सोहनलालजी ने कटिकाराम द्वारा उन्हें दी गई पवित्र कला का अपमान किए जाने पर अपनी नाराजगी व्यक्त की। गुहा ने स्वयं एकत्रित सामग्री का दोहरे अर्थों में प्रयोग करके लेख को रोचक बना दिया। इसके साथ ही, नृत्य वेशभूषा में गु जी, कटिकाराम और मनोहरी की भावुक तस्वीरें भी बड़े आकार में छापी गईं। इसके अलावा, तेरह वर्षीय गु जी और तेईस वर्षीय मनोहरी की विवाह के समय की एक तस्वीर भी दी गई। साथ ही, कटिकाराम की एक मुस्कुराती हुई तस्वीर भी ‘कृष्ण से दस वर्ष छोटे!’ शीर्षक के साथ दी गई। यह सब नृत्य के क्षेत्र में उत्साह बढ़ाने के लिए किया गया था।
रविवार शाम जोधपुर में एक नृत्य कार्यक्रम था। उसी सुबह उन्होंने ‘हॉराइजन’ अखबार देखा। अखबार पढ़ते-पढ़ते उन्होंने सबसे पहले आर्ट-फर्नीचर खोला और देखा कि वह तो बिल्कुल ही अलग था! शीर्षक में ‘यिभचार’ शब्द था, और चार बड़ी-बड़ी तस्वीरें! उन्होंने लेख को दो बार पढ़ा। अंग्रेजी से बहुत परिचित न होने के बावजूद, लेख का दोहरा अर्थ उनके दिमाग में बैठ गया!
जब मैं घर पर नहीं थी, तब वो घर में घुस गया! लेकिन गु जी ने ऐसा क्यों कहा? वो तो उनका इतना ख्याल रखता है, गाँव में न होते हुए भी, रसोई बनवाकर ये सुनिश्चित करता है कि उन्हें समय पर खाना-पानी मिले। क्या तुम्हें थोड़ी

सी दया नहीं चाहिए? ये आलसी मुर्दा आदमी गुहा माँ के पीछे क्यों पड़ा है? मेरे पास पैसे हैं।
अगर ऐसा होता, तो क्या यह अपेक्षित नहीं होता? ऐसी चीजें आकर्षण कैसे बढ़ा सकती हैं?
वह दिन भर गुस्से से उबलती रही।
हालांकि, शाम के समय मेज पर बैठते हुए उन्होंने संयम बरता। ऐसी कठिनाइयाँ आने पर भी हमें अपनी कलात्मक सोच में कमी नहीं आने देनी चाहिए। कार्तिकराम को इस लेख के बारे में जानकारी नहीं है। दूसरों को भी नहीं होनी चाहिए। यह महत्वपूर्ण है कि इससे कुछ भी खराब नहीं होगा।
यह पूरी तरह से मां की जिम्मेदारी है!
कार्यक्रम बेहद रंगीन था। अंत में दर्शकों ने जमकर तालियाँ बजाईं। अंत में, प्रत्येक कलाकार का परिचय कराने के बाद, उन्होंने सभा को संबोधित करते हुए कहा, ‘आप लोगों ने नृत्य का आनंद लिया, इससे बड़ी सफलता और क्या हो सकती है! कुछ लोग घरानी, घरानी का मिश्रण, कला की शुद्धता जैसे मुद्दों पर चर्चा करेंगे। सभी घरानी भारतीय नाट्यकला की अलग-अलग शाखाएँ हैं। इस प्रयोग के लिए, मैंने जयपुर घरानी की क्रिया शैली अपनाई है, जबकि राधे की भूमिका के लिए मैंने लखनऊ घरानी की भाव-भंगिमा, लय और अभिनय शैली को शामिल किया है। अगर इससे नृत्य और भी रंगीन हो गया है, तो बस इतना ही काफी है! आपको पसंद आया या नहीं?’
बैठक में पुहाता को भारी समर्थन मिला। ‘वासमोरे’ ने भी कुछ विरोध जताया। उसे लगा कि उसकी सांसें वापस आ गई हैं। बच्चे चाहे जितना भी चिल्लाएं, चिंता करने की कोई बात नहीं है।

४
दोपहर के चार बज रहे थे जब वह हवाई अड्डे से सीधे घर पहुंची। सुबह की दिनचर्या पूरी करने के बाद उठ रही गुजी ने दो-तीन बार घंटी बजाई और फिर दरवाजा खोला।
उसके चेहरे पर गुस्सा साफ झलक रहा था।
अपना बैग कमरे में छोड़कर वह हॉल में आई। गु जी सो वहीं बैठा उसकी हरकतों को देख रहा था। वह सोच रहा था, 'अगर कोई बदमाश पत्रकार घर में घुस आए और जो चाहे सवाल पूछे, तो क्या तुम उनका जवाब दे पाओगी?'
‘कौन सा पत्रकार? मैंने क्या कहा?’
वह बहस करता रहा, 'देखो, देखो! मैं सोच रहा हूँ! बिना किसी कारण के तुम यह क्यों लिखोगे?'
‘अरे वाह! यही तो वो विचार है जिसका मैं इंतज़ार कर रहा था। अगर आप इस कार्यक्रम में जयपुर शैली को शामिल कर रहे हैं, तो फिर और क्या है? क्या आप मुझे इससे दूर रखे बिना ही अपना व्यवसाय चला रहे हैं? मैं क्यों नाराज़ होऊँगा?’
इसमें गलत क्या है? पूरा देश तो यह जानता है!
"क्या पूरे देश को गु सोहनलाल की पत्नी द्वारा चलाए जा रहे व्यवसायों के बारे में पता है?" उनकी आवाज तेज हो गई।
मैंने क्या किया? आप इतने गुस्से में क्यों हैं?
‘तुमने वो किया जो तुम्हें नहीं करना चाहिए था! और तुमने ऊपर दिए गए विचार का क्या किया?’
इन लोगों की तीखी निगाहों को देखना उसके लिए मुश्किल था। वह विचलित था। उसने कुछ सवाल सोच रखे थे। उदाहरण के लिए, ‘अगर घर कला के लिए बंद रहेगा तो कला का विकास कैसे होगा? क्या हिंदुस्तानी संगीत ने भी कर्नाटक संगीत से कुछ राग नहीं लिए हैं? क्या ये सभी नृत्य शैलियाँ भरत मुनि के नियमों से उत्पन्न नहीं हुई हैं?’ आदि; लेकिन इन सवालों के अंत में, सारे सवाल उलट गए। उनका जवाब देना मुश्किल लग रहा था, इसलिए वह रसोई की ओर मुड़ गई। समय बिताने के लिए उसने गैस पर चायदानी रख दी। चाय की एक घूँट पेट में जाते ही उसे लगा कि ‘इसकी वाकई बहुत ज़रूरत थी’। इसलिए वह वापस रसोई में आ गई और चाय और बिस्कुट अपने पास रखी चायदानी पर रख दिए।

रात में, जब वह उसके बगल में सो रही थी, वह उससे बार-बार एक ही सवाल पूछता रहा – मैंने क्या किया? हालाँकि उसने मन ही मन उससे बहस की, लेकिन सवाल की तीव्रता कम नहीं हुई। पेट में एक अजीब सी हलचल और गर्म भोजन के बाद, वह गहरी नींद में सो गई और
इस निराकार शून्य से वे एक निराकार ध्वनि में प्रवेश कर गए। यह ध्वनि सदा जीवन है।
मैं पहले बाथरूम में सोता था; लेकिन आज ऐसा हुआ; पर मैं इस शोर को सहते हुए यहाँ क्यों सो रहा हूँ? मैं इस कमरे में क्यों नहीं सो जाता? ये मेरी ही गलती है।
सच है! पंद्रह साल पहले, पुरुष और स्त्री का रिश्ता पूरी तरह खत्म हो गया था, फिर मैंने अलग-अलग सोना क्यों नहीं शुरू किया? हम व्यर्थ में "पिताभ ति-गुभ ति" कहते हुए साथ क्यों सोते रहे? और आज, बिना किसी कारण के, हम यह कह रहे हैं, "तुमने ऐसा क्यों नहीं किया?" यह तो बस कृतज्ञता का मामला है। इस प्रकाश गुफा की तरह, इस प्राण के भी दो अर्थ हैं। कौन जाने, शायद वे इसे केवल दो भावों के संदर्भ में ही समझते हों। शायद वे माया और कार्तिक के रिश्ते के बारे में कुछ नहीं जानते। गुफा ने इस संदर्भ में भी उनकी आँखों में कुछ तो भर दिया होगा, है ना?
मैंने कुछ लोगों से कभी अपना परिचय नहीं दिया। अगर मैं उन्हें अपने घर बुलाकर अपना परिचय देता, तो वे तुरंत उनके परिवार के बारे में पूछना शुरू कर देते। फिर वे उस व्यक्ति के परिवार के बारे में सवाल करने लगते।
जैसे ही वह पीठ फेरता, वह पूछता, "यह यहाँ क्या कर रहा है?"
तब मुझे आपको उस अजीब दिन के बारे में बताना पड़ता जो इस दिन के साथ मनाया जा रहा था।
वे तो बिल्कुल भी अनुमति नहीं देते। वे तो इसके विपरीत करने पर जोर देते। बेढंगी खर्राटे की आवाज़ लगातार आती रही। कभी-कभी यह असहनीय हो जाती थी। उसने सिर घुमाकर देखा। रात के धुंधले प्रकाश में चेहरा और भी बेढंगा लग रहा था। कोई दांत नहीं था। आँखों के ऊपर दिखने वाली कोई बाल रहित आँखें भी नहीं थीं। बीस साल पहले ऐसा नहीं था। बारह साल पहले, पेड़ ने वहाँ पैर रखा था; लेकिन उसने हमला नहीं किया था। मैं क्या समझूँ? बाईस साल पहले, अपने आस-पास के पेड़ों को देखते हुए, यह समझना आसान था कि 'कुछ ही सालों में यह भी ऐसा ही दिखेगा'; लेकिन कला के प्रति उस आकर्षण ने मुझे उसकी ओर खींच लिया!

जी हाँ। यह सच है! मुझे अच्छी तरह याद है। वह बीमार पड़ गए थे। घर में कोई नहीं था। उनकी पत्नी का पहले ही देहांत हो चुका था। उनकी बेटी बिना इलाज के अपने ससुराल चली गई थी। मैं सुबह जल्दी उनके घर जाकर झाड़ू-पोछा करती थी। वह गरमा गरम खिचड़ी बनाते थे। डॉक्टर को बुलाते थे। बर्तन साफ करते थे। उन्हें एक हफ्ते तक तेज बुखार रहा। बुखार तो उतर गया, लेकिन बीमारी से उनकी हालत बहुत खराब हो गई थी। वे कहने लगे थे, ‘मैं कितने दिन अकेला रहूँगा? मेरी बेटी मुझे बुला रही है, मैं हमेशा के लिए यहाँ से चला जाऊँगा!’ उन्होंने दिल्ली को स्थायी रूप से छोड़ने की इच्छा व्यक्त की और मुझे हवाई अड्डे ले जाया गया।
ऐसा ही हुआ। अगर वो चले गए तो मुझे कौन सिखाएगा? उस समय भी दिल्ली में नृत्य के कई शिक्षक थे; लेकिन गु सोहनलालजी जैसा कोई नहीं था। एक बार जब मैंने उनसे सीखना शुरू किया, तो ऐसा लगा जैसे कोई और मुझे सिखा ही नहीं सकता। अभिनय की उनकी अद्वितीय प्रतिभा, एक ही पंक्ति को पच्चीस-तीस अलग-अलग तरीकों से बोलने की उनकी क्षमता, भारत में किसी और के पास नहीं थी! ऐसे लोग थे जो केवल शारीरिक हाव-भाव से ही अविश्वसनीय करतब दिखाते थे; लेकिन उनके जैसा दृश्य और नाटकीय प्रभाव पैदा करने वाला कोई नहीं था। 'अगर वो चले गए तो मेरा क्या होगा?' मैं इस बारे में सोचकर सो नहीं पाई थी। अगर मेरी नज़र मथुरा जा रहे कृष्ण पर पड़ती, तो मैं राधा से प्यार कर बैठती, जिसने उन्हें रोकने के लिए हर संभव कोशिश की। और पोती, जो कई मायनों में विनय की भूमिका निभाती है, उसी सोलह वर्षीय युवती के रूप में लौटती है और कहती है, 'नहीं, शाम! मैं तुम्हें कभी जाने नहीं दूंगी!'
पांच-छह दिनों में कितने अजीबोगरीब विचार आ गए! जी हाँ। उनके लिए खाना बनाने वाला या घर संभालने वाला कोई नहीं है। उनकी पत्नी को गुज़रे सात-आठ साल हो गए हैं, इसलिए मैंने उन्हें नहीं देखा; लेकिन वह नर्तकी नहीं थीं। वह एक साधारण गृहिणी थीं। ऐसे महान कलाकार को सहारा क्यों न दिया जाए? इससे उन्हें जीवन में पहला मौका मिलेगा। शायद इससे उन्हें और भी जोश से नृत्य करने, सीखने और नई रचनाएँ करने की प्रेरणा मिलेगी!
उन्होंने अपनी उम्र कभी नहीं छिपाई। तेरह साल के थे। तो फिर हुआ क्या? अभिषेक के

जब तुम शुरुआत करती हो, तो तुम सोलह साल की लड़की बन जाती हो, और तुम एक परिपक्व राधा बन जाती हो! ‘जैसा है वैसा ही है’। नहीं! मैं इस लड़की को जाने नहीं दूँगा!
मैं उठा और तुकमान गेट स्थित बस चालक के घर गया। जब मैं वहाँ पहुँचा तो वह चावल चुन रहा था।
‘अरे चा, मनोहरी! कशी आलीस?’
क्या आपने अपनी बेटी को पत्र लिखा था?
'हां। मुझे उसे लिखनपुर ले जाने के लिए कहा गया था। मैंने उसे नाव में ही छोड़ दिया।'
मैं नहीं जानता कि मैं क्या कहूं।
उन्होंने खुद ही पूछा, 'क्या आपने इस बारे में सोचा?'
'अगर तुम चले गए तो क्या होगा?'
‘बिल्कुल सही! इस शरीर में प्रतिभा है। इसके लिए तुम्हारा शरीर और मन दोनों ही अनुकूल हैं। सीखने की क्षमता है, बुद्धि है; लेकिन देखो, मैं यहाँ अकेले नहीं रह सकती! इसके अलावा, लिखानपुर इतना पास नहीं है कि मैं आसानी से वहाँ जाकर वापस आ सकूँ। मैं क्या करूँगी? जीवन में ऐसी परिस्थितियाँ भी आती रहती हैं!’
मैंने वो बात कहते हुए कहा, ‘गु जी, मेरी बात सुनिए। आप दिल्ली छोड़कर मत जाइए! मैं आपकी हाला हूँ।’
मैं तुम्हारे लिए खाना बनाऊँगी, तुम्हारे कपड़े धोऊँगी – मैं तुम्हारी हर सेवा करूँगी! मैं तुम्हारे साथ रहूँगी!
उन्होंने कुछ देर सोचा। फिर कहा, ‘इतनी ज्यादा मत बोलो! अगर तुम्हारे जैसी कुंवारी लड़की मेरे साथ रहेगी, तो क्या मेरे दिल में बसे लोग चुप रहेंगे? तुम्हारी मां कैसे चुप रह सकती है?’
‘मैं तुमसे शादी करूँगा! तब क्या सबकी परेशानियाँ खत्म हो जाएँगी या नहीं?’ ‘क्या तुम पागल हो! तुम्हारी उम्र कितनी है! और मेरी उम्र! तुम मुझसे चालीस साल छोटे हो!’
‘तो क्या हुआ? मैंने भी इस कला में आपके साथ शामिल होने का फैसला किया है! और क्या कला कभी बूढ़ी होती है? क्या दुनिया में सारी परेशानियों की जड़ आप ही नहीं हैं?’ मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि मैं गुजी से इतनी स्पष्टता से बात कर पाऊँगी!

‘देखो, पागलों की तरह बड़बड़ाना बंद करो। ऐसा नहीं लगता कि तुमने खाना खत्म कर लिया है। तुम अभी-अभी तो यहाँ आए हो। मैं अभी दाल-चावल बनाने की सोच रही थी। मेरे पास अलमारी में कुछ पैसे पड़े हैं। मैं उन्हें लेकर कुछ सब्जियां ले आती हूँ। लेकिन यहाँ कोई पोल नहीं है। मैंने ये इंतज़ाम इसलिए नहीं किया था कि मुझे लगा था कि कोई आस-पास बैठा होगा।’
इसी क्षण रसोई में मिट्टी के तेल का दीपक जलाया गया। 'ढेर सारा खाना!' उसने कहा।
मैंने भरपेट खाना खाया। मैंने ढेर सारा खाना भी पकाया। इस इरादे से कि अगर उन्हें पसंद आया तो वे मुझे अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कर लेंगे!
एक हफ़्ता बीत गया। योजना के मुताबिक, मैंने हफ़्ते में दो दिन शारीरिक संबंध बनाए; लेकिन उसने इस विषय पर कोई बात नहीं की। एक तरफ़ मुझे शर्म आ रही थी। दरअसल, इस मामले में पहल करने की ज़िम्मेदारी तो वही आदमी की थी। उस दिन उसने भावनाओं में बहकर ये बात कह दी थी। अब अगर मैं दोबारा इस विषय पर बात करना चाहूँ, तो मेरे अंदर का कोई हिस्सा मुझे रोक देगा। अहंकार! शर्म? मुझे समझ नहीं आ रहा था; लेकिन मैंने मन ही मन ये बात रखी और प्रार्थना की।
ठीक इसी दिन, यानी आठवें दिन, जयंती का उत्सव मनाया जाता है।
झा यावर ने मुझे रुकने को कहा। जयंती चली गई। उन्होंने मुझे आगे बैठने को कहा और पूछा, 'आपने उस दिन यह मुद्दा उठाया था। क्या अब भी आपकी राय वही है?' मैंने अपना सिर झुका लिया। उन्होंने कहा, 'देखिए, अगर अब भी आपकी यही राय है, तो मैं अगली बार बोलूंगा।'
मुझे अब भी समझ नहीं आ रहा कि क्या कहूँ।
‘स्पष्ट रूप से बोलिए। यह एक महत्वपूर्ण विषय है। अगर आज आपको बस इतना ही कहना है, तो कह दीजिए। मैं कोई ज़िद नहीं कर रही हूँ। मेरी बेटी और दामाद मुझसे मिलने आ रहे हैं। उनके जाने से पहले मुझे उन्हें एक पत्र लिखना है!’ हांजे शादी के लिए तैयार है! मुझे डर लगा, मेरे सीने में गर्मी सी महसूस हुई। उसके बाद,
अब मुझे एहसास हुआ कि वो विचार मेरे मन में उतना प्रबल नहीं रहा था; लेकिन उसे कहने की हिम्मत भी नहीं थी। वैसे भी, अगर ये सब खत्म हो गया तो मेरे नृत्य का क्या होगा?

‘तुम गपशप करती हो, तुम्हारे मन में ऐसा कुछ नहीं है! तुम्हारे जैसी उम्र की लड़कियों के मन में ऐसे भावनात्मक उतार-चढ़ाव आते हैं और वे शांत नहीं होते। शायद मेरे साथ भी ऐसा ही है। अगर तुम्हारे मन में कोई विचार है, तो मैं अगला कदम उठा लूंगी। क्योंकि लाना का विचार सबसे पहले तुमने ही पेश किया था।’
क्या मैं सचमुच फँस गई थी, या यह मेरे शब्दों के आधार पर उनके द्वारा बिछाया गया जाल था? उस समय, मुझे इस तरह के अंतर का ख्याल भी नहीं आया! क्योंकि मैं इस घटना से इतनी हैरान थी।
हटला ने कहा, 'एक बार मुंह से निकला शब्द हमेशा के लिए मेरा हो जाता है!' उन्होंने आगे कहा, "मैं आपसे कुछ भी छिपाना नहीं चाहता। मैं हर महीने पांच सौ कमाता हूं।"
पैसा प्राप्त हो गया है। आपको इसमें योगदान देना होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि पुराना किरायेदार
घर का किराया चालीस रुपये है। अगर मैं घर छोड़ दूं, तो मकान मालिक को सात से आठ सौ रुपये किराया मिलेगा। इसलिए वह मुझे निकालने की जल्दी में है। यह तो नहीं कहा जा सकता कि छात्रों की आमदनी हमेशा एक जैसी रहेगी; लेकिन मैं आपको एक बात पक्के तौर पर बता सकता हूं, अगर आप चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हैं, तो अगले तीन से साढ़े तीन साल में मैं आपको अखिल भारतीय स्तर की राजनीति के लिए तैयार कर दूंगा! इसके बाद, इस दौरान हमारी आर्थिक स्थिति सुधरेगी, हम दिल्ली में अपना घर भी खरीद पाएंगे!
मैंने भी सिर हिलाकर कहा, "मैं भी आपकी तरह ही कड़ी मेहनत करने के लिए तैयार हूँ!"
‘शिव, ऐसे ही करते रहो! बुढ़ापे में भी मेरी ताकत कम नहीं हुई है! नाचने के लिए खूब कसरत करने के बाद भी मेरे शरीर ने अपनी शक्ति बरकरार रखी है! आज भी अगर मैं पैरों में घूंघट बांधकर और कृष्ण के वेश में मंच पर खड़ा हो जाऊं, तो कौन मेरा मुकाबला कर सकता है? बनारस का कौन सा तबला वादक मेरे साथ घूंघट बजाने की हिम्मत करेगा?’
मुझे भी यह बात समझ में आ गई। क्योंकि मैंने भी बनारस के बंदु महाराज के साथ उड़ते हुए भौंरों को देखा था। इस उम्र में शरीर के आकार और आकृति में अंतर कैसे देखा जा सकता है? उस समय, उनके सिर से भरी हथेलियाँ मुझे कृष्ण

की हथेलियों जैसी लग रही थीं, जो हाथ में बांसुरी लिए हुए कोई भाव प्रकट कर रहे हों।
सवाल यह था कि मैं अपनी माँ को इस नृत्य के बारे में कैसे बताऊँ। वह जानना चाहती थीं कि मैंने बी.ए.सी. क्यों किया; लेकिन मेरी आँखें विज्ञान और गणित से भरी नहीं थीं। मैं बीजगणित के सवाल हल नहीं कर पाती थी। इसके विपरीत, ताल के कितने ही सरल हिसाब-किताब क्यों न कर दिए जाएँ, मैं उन्हें अपने आप समझ जाती थी। चाहे एक हो, दो हो, तीन हो, चार हो, पाँच हो, छह हो, या फिर तत तत त्रिगड़ा, दी दी त्रिगड़ा, त्रिगड़ा त्रिगड़ा तत तत था – मैं तुरंत हिसाब लगा लेती थी। ताल में कितना भी बदलाव कर दिया जाए, मैं तुरंत नृत्य में मग्न हो जाती थी। यहाँ तक कि नींद में भी मेरे कदम बिना रुके चलते थे! कॉलेज शुरू होने वाला था। किसी तरह मुझे अगली कक्षा में जाना था। मेरी माँ को एक बार एहसास हुआ कि अंतिम वर्ष इस तरह बिताना असंभव है; लेकिन बी.सी. झा अपने अनुभव से यह भी जानते थे कि ए.सी. करने के बाद शिक्षक की नौकरी पाना आसान है, लेकिन बी.ए. करने के बाद नौकरी पाना उतना आसान नहीं है। अगर आप डांस में डिप्लोमा करते हैं, तो आपको किसी बड़े स्कूल में नौकरी मिल सकती है; लेकिन ऐसे बड़े स्कूल कितने होंगे? वेतन, पदोन्नति आदि को छोड़कर, एक डांस टीचर हर मामले में सबसे निचले पायदान पर होगा!
मेरी मां, जो तेईस साल की उम्र में दो बच्चों के साथ विधवा हो गई थीं, ने एक शिक्षिका के रूप में काम करते हुए और अपनी शिक्षा के आधार पर बी.ए.सी. करके अपने दोनों बच्चों का पालन-पोषण किया था, और इसी ने शिक्षा के प्रति उनके विचारों को आकार दिया था। हालांकि उन्हें अपने बेटे के इंजीनियरिंग में दाखिला मिलने की चिंता नहीं थी, लेकिन मुझे चिंता थी। नृत्य के प्रति मेरे जुनून को देखकर, वह अक्सर मन ही मन कहती थीं, 'तुम्हें नृत्य कक्षाओं में भेजकर मैंने तुम्हारा नुकसान कर दिया है।'
लेकिन मेरी नज़र में, नृत्य नौकरी पाने का ज़रिया नहीं था, बल्कि मेरा घर था! गुलसम में पढ़ाते ही घर आकर पैर में घंटी बांधकर नाचने की मेरी बहुत इच्छा होती थी; लेकिन पाँचवीं मंज़िल के इस छोटे से हॉल में यह मुमकिन नहीं था। जब भी नृत्य अभ्यास शुरू होता, नीचे वाली मंज़िल के लोग ऊपर आकर दरवाज़ा खटखटाते और कहते, ‘अरे बच्ची, क्या तुम पुलिस को बुला रही हो?’ जब मेरी माँ स्कूल से लौटतीं, तो वह उनसे शिकायत करतीं, लेकिन बात अलग थी! अगर जयंती से मेरी दोस्ती न हुई होती, तो क्लास के बाद अभ्यास करना नामुमकिन

होता। विदाल के घर में जयंती का अलग बंगला होने की वजह से यह मुमकिन हो पाया। मैं तब भी अपने घर आती थी, क्योंकि मेरा नृत्य उससे कहीं ज़्यादा साफ़-सुथरा और सुंदर है!
यह स्पष्ट था कि मेरी माँ मेरा सम्मान नहीं करेंगी। इस उम्र में वह ऐसा सोचने की हिम्मत कैसे कर सकती हैं! इतनी विपरीत परिस्थितियों में पली- बढ़ी लड़की अपने दादाजी की उम्र के आदमी से प्रेम संबंध बनाने के लिए कैसे तैयार हो सकती है? उन्होंने शिकायत की, मेरी टांगें तोड़ने की धमकी दी और यहाँ तक कि गुजी के घर जाकर खूब हंगामा किया; लेकिन मैं नहीं झुकी। इसके विपरीत, मेरा दृढ़ संकल्प और भी मजबूत हो गया। मैंने अपने पड़ोसी के सामने उसे डांटते हुए कहा, 'पुलिस के पास जाने से भी कोई फायदा नहीं होगा! मैं बाईस साल की हूँ!'
वह गुस्से में चली गई। इसके बाद तीन साल तक मेरी उससे मुलाकात नहीं हुई। जब दिल्ली में मेरा पहला प्रदर्शन हुआ, तो सभी मीडिया ने इस पर ध्यान दिया और उसे खूब प्रशंसा मिली, लेकिन वह अपने असली रूप में मुझसे मिलने आई। इस समय तक, हालांकि अपने पति के प्रति उसका गुस्सा शांत हो गया था, फिर भी वह अपनी उम्र के किसी व्यक्ति को दामाद के रूप में स्वीकार करने को तैयार नहीं थी। उसने उसे डांटते हुए कहा, 'देखो, मैं तुम्हारी बेटी की शादी अपने पति से नहीं करूंगी।'
इसलिए हिलना मत। यह उसका विचार था। जिस बात पर गुस्सा करना चाहो करो। गुस्सा!
इससे अपमानित महसूस करते हुए वह चली गई। इसके बाद उसने कभी मेरे घर में कदम नहीं रखा। मैं कभी-कभार उससे मिलने जाता था। लेकिन उसने मेरा जरा भी सम्मान नहीं किया। सेवानिवृत्ति के बाद वह अपने बेटे के साथ रहने के लिए हैदराबाद चली गई। लेकिन इसके बाद हमारी कभी मुलाकात नहीं हुई। अब मुझे हैदराबाद जाकर उसे बुलाना पड़ता है, 'मां, अब मैंने अपनी संपत्ति से घर बनवाया है। एक महीने के लिए आकर शांति से रहिए।' उसे यह कहा जा सकता है, 'अगर तुम यह दर्द नहीं देखना चाहते, तो वेश्यालय के इस कमरे में ही रहो।'
मैंने इस बात से अपनी माँ को नाराज़ कर दिया, लेकिन उन्हें इससे क्या फर्क पड़ता है? खर्राटे लेते हुए भला कौन सो सकता है!
उन्होंने साढ़े तीन साल तक इसी तरह कड़ी मेहनत की। किसी तरह का भाषण।

कितने प्रकार के नृत्य, कितनी प्रकार की चालें! उन्होंने मुझे नृत्य के माध्यम से सब कुछ सिखाया! अभिनय की जननी, कवि, कविता के अनेक अर्थों को दर्शाने वाले कवि, बिना रुके अर्थ को प्रकट करने वाली कल्पना। थक जाने पर भी मैं रुकना नहीं चाहती थी। वे मेरा साथ देने के लिए बैठ जाते थे। मैं साँस भी नहीं लेना चाहती थी। वे कहते थे, 'मैं वह शब्द बोलना नहीं चाहती। मुझे नृत्य करना है और साँस छोड़नी है!' उन्होंने मुझे योग और प्राणायाम करवाया। 'यदि मुझे शरीर की संरचना बनाए रखनी है, तो मुझे अपनी साँस पर नियंत्रण रखना होगा! जो लोग योग और प्राणायाम करते हैं, वे इसके बाद भी हिरण की तरह नाच सकते हैं!'
उसकी प्रेमिका उसकी सांस थी।
इसे सुनकर मुझे अपने शरीर में हल्कापन महसूस होने लगा!
ऐसा लग रहा था जैसे मैं हवा में तैर रही हूँ। उन्होंने मुझे अपने कदमों को इस तरह नियंत्रित करना सिखाया कि मैं अपने पैरों में बंधी चार सौ घंटियों में से एक की झंकार सुन सकूँ। आज भी, इस आदेश के लिए मुझे अपने माता-पिता से बहुत प्रशंसा मिलती है! उन्होंने मुझे कितना कुछ सिखाया! उन्होंने मुझे कितना कुछ सिखाया! उन्होंने मुझे कितना कुछ सिखाया! रात को सोने से पहले, वे मेरे थके हुए पैरों पर अरंडी का तेल मलते थे। उनकी यह सेवा करने में मुझे झिझक होती थी, इसलिए मैं 'ना' कह देती थी और वे कहते थे, 'मुझे आज का दर्द आज ही दूर करना है। क्योंकि मुझे पहले से भी ज़्यादा मेहनत करनी है! दूसरे पैर को थैली में रख दो, अगर तुम अपने पैर में घंटी बाँधोगी, तो तुम न तो मेरी पत्नी रहोगी और न ही मेरी गुरु! इस समय तुम कृतज्ञता की देवी हो!' नृत्य कक्षाओं के साथ-साथ, मैं हर दिन अपने पैरों की मालिश भी करती थी, घिसी हुई घंटियों को ठीक करती थी, और एक-दो घंटियाँ ठीक करती थी। मैं उस तरह की एकाग्रता का अनुभव कर रही थी जो पत्थर तराशने वाले शिल्पकार में होती है।
क्या ये प्यार है, बहन? या ये सच्चाई है? या ये उम्मीद है कि भविष्य में मेरा नाम याद रखा जाएगा? अगर उन्होंने मुझे इतनी अच्छी तरह से न सिखाया होता, तो मैं ऐसी नर्तकी कैसे बन पाती? कारण चाहे जो भी हो, बुढ़ापे में भी मुझे घर जाकर आश्रित जीवन नहीं जीना पड़ता, मुझे नृत्य का जीवन नहीं जीना पड़ता, बल्कि मैं उस लड़की को आत्मनिर्भर बना देती जो मेरे दरवाजे पर पैसे

लेकर आई थी। क्योंकि चाहे कुछ भी हो, इसमें कोई शक नहीं कि उन्होंने मुझे बहुत अच्छी तरह से सिखाया।
साढ़े तीन साल कितनी जल्दी बीत गए! नई लय, नए कदम, नृत्य कला पर मेरी महारत, हर शब्द को अलग-अलग बोलना, शब्दों के अनुसार कदमों को कम करना – यह सब करना कितना आनंददायक था! आईने के सामने बैठकर आँखों और भौहों की हरकतों का अभ्यास करते हुए नए भावों का रोमांच! शरीर की हरकतों को उंगलियों, हाथों, आँखों और भौहों की हरकतों के साथ मिलाकर अर्थ को पूरा करने का संघर्ष! उस समय, मुझे इससे आगे कुछ भी दिखाई नहीं देता था, मैं देखना भी नहीं चाहती थी। मुझे यह भी एहसास नहीं था कि इसके परे भी एक दुनिया है। मुझे उम्र का अंतर भी महसूस नहीं हुआ। भले ही उन्होंने कभी शरीर की भूख मिटाई हो, उस समय मुझे उम्र की कोई सीमा महसूस नहीं हुई। इसके विपरीत, उस समय मैंने सोचा, लोग ऐसी चीज़ के लिए इतनी मेहनत क्यों करते हैं? मैं सारा दिन नृत्य करती। दोपहर में थोड़ा आराम, फिर नृत्य। शाम को गायन का अभ्यास। फिर नृत्य। रात के खाने के बाद, मैं गहरी नींद में सो जाती। नींद में भी, गीत के बोल गीत के बोलों के अनुरूप होते थे और नृत्य के बोल भी गीत के बोलों के अनुरूप होते थे। वृंदावन के कृष्ण भी गीत के बोलों और नृत्य के बोलों में प्रकट होते थे! उस समय वे किसी ऐसे मित्र की तरह नहीं लगते थे जो मधुर भावों को जगाता हो!
जब इतनी तपस्या चल रही थी, एक दिन मुझे समझ आ गया कि मैं जी नहीं पाऊँगी। वो भी इतनी समझदार नहीं थी कि अपने आप समझ जाऊँ; लेकिन डॉक्टर मुझे बताई गई बातों को लेकर बहुत उलझन में थे! गर्भावस्था – मातृत्व और नन्हे बच्चे की देखभाल! मेरे नृत्य अभ्यास का क्या होगा? इसी समय गुजी पहली बार क्रोधित हुए। सब कुछ जानते हुए भी उनका ऐसा व्यवहार क्यों?
मेरी परेशानी को न समझते हुए डॉक्टर हँस पड़ा, "क्या तुम्हारी माँ नहीं है? माँएँ तो अपनी बेटियों से यही कहती हैं। तुम अपनी माँ के बजाय अपने दादाजी के साथ क्यों आई हो?"
‘वह मेरे पति हैं! वह मेरे दादा नहीं हैं!’
डॉक्टर को अफसोस हुआ, बल्कि बुरा भी लगा, 'यह सच है कि गिरबी की हालत खराब है!'
‘मैं अपनी मां के साथ इन लोगों से भावनात्मक रूप से जुड़ गई हूं। ये मेरे गुरु हैं। मैं इन लोगों से नृत्य करना सीखती हूं।’

डॉक्टर का चेहरा गुस्से से लाल था। उन्होंने कहा, "आप जो चाहें करें, यह आपकी मर्जी है; लेकिन इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि तेरह साल की उम्र के पुरुष से पैदा हुआ बच्चा स्वस्थ ही होगा।"
"इसे उतार दीजिए, डॉक्टर! हम दोनों ने मिलकर यह फैसला किया था। इससे मेरे नृत्य में बाधा आएगी।"
"फिर अगले रविवार की सुबह रिका के घर आना।"
डॉक्टर के कमरे से निकलते समय, एक तरफ तो मुझे राहत महसूस हुई, लेकिन दूसरी तरफ एक असहनीय उदासी भी छा गई। ऐसा लगा जैसे यात्रा के दौरान गहनों समेत छोटी-बड़ी सभी चीजें चोरी हो गई हों। इससे पहले मुझे कभी पता नहीं था कि मेरा गर्भ मुझे इतनी खुशी दे सकता है। गर्भावस्था के दौरान मैंने कभी कोई खास खुशी महसूस नहीं की थी। मैंने उसकी इच्छा पूरी कर दी थी, बस इतना ही; लेकिन गर्भ निकलवाने के फैसले ने कितना दर्द दिया! यह बड़ी बात थी, एक कमजोर बच्चे को जन्म देना ठीक होता, लेकिन बच्चा तो होना चाहिए! करवट लेकर नाचने से भी हो सकता है।
लेकिन मैंने इस बारे में गु जी को कुछ नहीं बताया। उन्होंने भी कुछ नहीं कहा। मुझे अपनी माँ को बताने का मन नहीं हुआ। इस बार मैंने जीवन की सारी कठिनाइयाँ अकेले ही झेलीं! मैं अकेले ही बहुत रोई। बुधवार को, सूजे हुए स्तन के साथ डॉक्टर से मिली और उन्होंने कहा, 'इसे निकाल दीजिए, ऑपरेशन कर दीजिए ताकि मैं फिर कभी बच्चे पैदा न कर सकूँ।'
‘इतनी कम उम्र में?’
"इसके बाद तो मेरे पति और बूढ़े होते चले जाएंगे। तो फिर से वही मेहनत क्यों करनी?"
मैं गहरी नींद में हूँ! वे मेरे बलिदान को पूरी तरह भूल चुके हैं। उन्होंने पत्रकारों के सामने कहा कि उन्होंने ऐसा किया है, और वे इसके बारे में बात करते रहेंगे। भले ही वे दो परिवारों के मिश्रण हों, क्या बाईस साल की लड़की को हमेशा के लिए मातृत्व से वंचित करना इतना बड़ा पाप है? उन्हें इस बारे में सोचना चाहिए! अरे!
उसका बायां हाथ उसे उठाने के लिए बढ़ा; लेकिन उसने सोचा, हाता से बहस करने का कोई फायदा नहीं। अगर वह ईमानदारी से भी सोचे, तो वह कहेगा, 'तुमने नाचना इसलिए सीखा क्योंकि तुम चाहते थे! मेरा सवाल कहाँ से आया?' या वह कहेगा, 'तुम हाता की पत्नी से बच्चा नहीं चाहते थे, है ना? तो तुम क्या सोच रहे थे?

क्या तुम किसी से संपर्क करके एक स्वस्थ बच्चा पाने वाले थे?' मुसीबत में पड़ने पर यह आदमी सीधे-सीधे बोलता है!
ऑपरेशन के बाद उनका उत्साह और भी कम हो गया। वे केवल ज़रूरत पड़ने पर ही पास आते थे। धीरे-धीरे वह भी बंद हो गया। उन्होंने अपनी पत्नी को परिवार के लिए तैयार करने में बहुत मेहनत की; लेकिन उन्होंने कभी इस बारे में नहीं सोचा कि उसके साथ क्या हुआ था। अब
वे लोग ये सब घटिया हरकतें कर रहे हैं!

५
शिक्षा के समापन के लिए नृत्य कार्यक्रम शुरू हुआ और अब तक दबी हुई उम्मीदें मानो फूट पड़ीं! गुरु सोहनलालजी के इकलौते शिष्य और
इस कला की विरासत को बढ़ावा देने के लिए एक रैली का आयोजन किया गया।
बंधन का कार्यक्रम बेहद सफल रहा। रंग-प्रवेश के बाद उन्हें अपने आप कार्यक्रम मिलने लगे और उनसे आय होने लगी। शिक्षा का बोझ खत्म होने के बाद उन्हें नृत्य का आनंद मिलने लगा और उन्होंने पिसात तांडव नृत्य शुरू कर दिया।
छब्बीस वर्ष की आयु, मजबूत शरीर, दमकता हुआ चेहरा, ऐसी आँखें जो किसी भी पुरुष के भीतर की गहराई को आसानी से भेद सकती हैं, चाहे वह कितना भी कठोर क्यों न हो, एक ऐसी नज़र जो मन को मोह लेती है! और इन अवसरों पर, वह अपने वास्तविक स्वरूप से भलीभांति परिचित थीं! मेरा मन एक साल से तड़प रहा था। सोहनलाल जी, जो एक शिक्षक और पति दोनों थे, के प्रति बेवफाई करना कितना बड़ा पाप होगा, अगर मैंने कोई गलती की, तो मुझे डर था कि वे मुझे अपनी बेवफाई का श्राप देंगे।
उसी समय, मुझे ऐसा लगा कि मेरे सामने खड़े लोग भी उस दृश्य को देखकर अंधे हो रहे थे।
अपने मन को हतोत्साहित न होने दें।
उस समय उनकी मुलाकात हुई – श्रीमान।
पहली ही मुलाकात में उन्होंने बिना उम्र बताए ही अपनी उम्र का अंदाजा लगा लिया, इसलिए मुझे उन पर विश्वास करना पड़ा। पहली बार में तो मुझे उन पर विश्वास नहीं हुआ। उनके बाल भी इतने घुंघराले थे।
हालांकि उन्होंने इस स्थिति का जिक्र किया था, फिर भी मुझे लगा कि यह झूठ है।
उनके चेहरे पर एक भी झुर्री नहीं थी। मैंने उन्हें चालीस साल का समझा था। उन्होंने नया सूट पहना हुआ था, जिसे देखकर मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे अभी-अभी नौकरी मिली हो। उन्होंने कहा, 'मैंने ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया की वार्षिक बैठक में एक घंटे का नृत्य कार्यक्रम प्रस्तुत किया था।' कार्यक्रम के अंत में, रामचरण मिल्स, जिन्होंने मुझे उपहार दिया था और पाँच गुलाब की पंखुड़ियों की माला पहनाई थी, ने अभिवादन के रूप में मेरा

हाथ हल्के से दबाया, जो उनके लिए एक मौन संदेश था। उनकी आँखों में कोई भ्रम नहीं था। साथ ही, उनके चेहरे पर वह आत्मविश्वास झलक रहा था कि वे पूरे कार्यक्रम के स्वामी हैं। मुझे लगा कि मेरा हाथ इतनी ज़ोर से दबाकर, जिससे मुझे थोड़ा दर्द हुआ, वे मुझे कोई विशेष संदेश दे रहे हैं।
बाद में, खाना खाते समय, उन्होंने मुझे अपने पास बिठा लिया। कौन जाने गुजी और बाकी साथी कहाँ बैठे थे! लगभग दो सौ लोग खाना खा रहे थे। इतने कम समय में भी आपकी उम्मीदों पर खरा उतरने की उनकी बातचीत करने की कला वाकई सराहनीय है! कौन जाने इसके पीछे उन्होंने कितने सालों का अभ्यास किया होगा! उनके माता-पिता कौन हैं? उनका फ़ोन नंबर क्या है? जैसे ही मैंने मना किया, उन्होंने तुरंत मुझे अपना कार्ड दिया और कहा, 'क्या आप मुझे फ़ोन करेंगे? या मेरे घर के पास का कोई नंबर दे दीजिए। मैं आपको फ़ोन कर सकता हूँ। मैं आपसे अकेले में बात करना चाहता हूँ। क्या यह ठीक रहेगा?'
मुझे तो यही भ्रम था कि उन्होंने अभिनय का गहन अध्ययन किया है! आपके हर शब्द से मेरे मन में उठने वाली भावनाओं को वे कितनी सटीकता से समझते थे! मैं कैसे समझ पाती कि वे एक अनुभवी व्यक्ति हैं? लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं था कि इतने बड़े व्यवसाय को संभालते हुए भी, उन्हें लोगों की गहरी समझ थी। 'मिल ट्रांसपोर्ट कॉर्पोरेशन के मालिक! डेढ़ हजार कारों के मालिक।' मुझे यह भी पता चला कि वे पिछले दो वर्षों से अखिल भारतीय परिवहन संघ के अध्यक्ष थे। यहां तक कि जब हमने रात के खाने के बाद विदाई ली, तब भी उन्होंने मुझसे हाथ मजबूती से मिलाए।
उन्होंने मुझे बाद में कॉल करने के लिए कहा। उन्होंने मुझे समय भी बताया, 'सुबह 10 बजे से दोपहर 1 बजे के आसपास।'
अगर आप शाम को चार से सात बजे के बीच ऐसा करेंगे, तो आप शांति से बात कर पाएंगे।’ बाद में उन्होंने अपने खास ड्राइवर को बुलाया और कहा, ‘मैडम, इसे और इसके साथियों को घर ले जाइए। और देखिए, आकर घर को ठीक से देख लीजिए!’
इस सुझाव का अर्थ समझने के बाद भी मेरा दिल खुशी से भर गया। मैंने पहले कभी इतनी आलीशान गाड़ी में सफर नहीं किया था! लेकिन गुजी शिकायत कर रही थी, 'ये तो मौत का जाल है! मुझे जहां भी सीट मिली, वहीं बैठकर खाना खाना पड़ा!' मिलसाहेब ने मुझे सब कुछ बता दिया था। उन्होंने सब कुछ मेरे भरोसे छोड़ दिया था। मुझे गली के आखिर में बने बूथ से उन्हें फोन कर देना चाहिए था! उस रात, आँखें नहीं मिलीं। मुझे उनकी मज़बूत पकड़ याद है। हाथ।

उस दर्दनाक अनुभव को याद करके मेरा दिल खुश हो गया। उसका वो आत्मविश्वास से भरा चेहरा, कुछ ऐसा जो मैंने अपने जीवन में मिलने वाले लोगों से बातचीत करते समय महसूस किया! 'यह गुजी के अभिनय से कितना अलग था! इसमें भी कितनी विविधता थी! मुझे पता नहीं था। मुझे इसे भी आत्मसात करना पड़ा। वो स्वाभाविक गुण जो बिना किसी कृत्रिम प्रशिक्षण के अभ्यास से विकसित हुआ था!'
भोर हो चुकी थी। नींद न आने के कारण मुझे आलस आ रहा था। सुबह उठते ही मैंने देखा कि जब मैं बाहर आया तो गु जी हंसते हुए बोली, 'देखो, तुम्हारी तस्वीर आ गई है!'
मैंने उनके द्वारा तैयार किया गया कागज देखा। तस्वीर में, श्री मिलसाहेब मेरा हाथ पकड़े खड़े हैं।
वह सच में मुझसे चार उंगल लंबा था। तस्वीर के नीचे कैप्शन था, 'रामचरण मिलाल मनोहरी दास को बधाई दे रहे हैं, जिन्होंने अपने मनमोहक नृत्य से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।'
इसके नीचे परिवहन उद्योग की समस्याओं के बारे में एक समाचार था। फोटोग्राफर ने मुझे बताया।
मिलसाहेब के पीछे आने का यही मुख्य कारण था। मैं फोटोग्राफर से नाराज़ था। चेहरा धोते और योग करते समय मुझे यह आभास हुआ कि यह ठीक नहीं है। हे बुद्धिमान व्यक्ति! मैं इस जाल में क्यों फँसूँ? मैं कला से आसक्त हो गई हूँ। जीवन में जो सुख और संतोष मैं चाहती हूँ, वह मुझे केवल इसी कला से मिलेगा! मेरा मन चाहे कितना भी अशांत हो जाए, कम से कम शारीरिक स्वच्छता तो मेरे हाथ में है! भले ही वह वृद्ध हैं, मैं उनसे आसक्त हो गई हूँ और मंगलसूत्र बाँधा है। मैंने अग्नि की ज्वाला से उनका हाथ थामा है। उन्होंने भी मुझे बिना किसी संकोच के अपनी कला दी है, और आज भी दे रहे हैं। भले ही मेरा शरीर दुर्बल है, मैं उनसे एकाग्र रहूँगी। यदि मेरा मन इधर-उधर भटकने लगे, तो मैं इस फ्रेम में अपने सामने की कहानी में पूरी तरह लीन होकर नृत्य करूँगी। नृत्य के बाद जब शरीर का दर्द शांत होगा, तो मैं रात को गहरी नींद में सो जाऊँगी। यदि मैं इस प्रकार अपनी आस्था को मजबूत करूँगी, तो मेरी आत्मा भगवान को समर्पित हो जाएगी और मैं एक महान कलाकार बनूँगी। क्या यही वह साहस नहीं था जो मेरे हृदय में तब था जब मैंने इस व्यक्ति से विवाह किया था? इस अभ्यास से मुझे ऐसा लचीला शरीर प्राप्त हुआ है जो शायद

ही किसी अन्य नर्तक को प्राप्त हो। मैं कितना भी नृत्य करूँ, कितना भी भार उठाऊँ, मैं कभी नहीं थकूँगी, यह शक्ति मैंने प्राणायाम से प्राप्त की है! बिना ब्राचा के योग नहीं! क्या नृत्य भी योग का एक रूप नहीं है? ब्राचा का पालन करके मैं इस जीवन में परम सिद्धि प्राप्त करूँगी!
इस मनःस्थिति में मैंने स्नान किया, गुजी को प्रणाम किया। मैंने भी वही किया। नृत्य प्रारंभ हुआ। गुजी मेरी घंटियों की ध्वनि, मेरे शरीर की सुंदर संरचना और लय की विविधता की सराहना कर रही थीं। मैं भी नृत्य में लीन हो गई। मुझे यह अनुभव होने लगा कि परम ब्रह्म, जो इसके माध्यम से प्रकट हो रहे थे, मेरे शरीर पर अधिकार करने और चेतन होने का प्रयास कर रहे थे। गायन, लेखन, शब्दों या धुनों का सहारा लिए बिना, मैं नृत्य करती रही, शुद्ध नृत्य का अनुभव करने की अनुभूति में डूबी हुई। मेरे मन में नई लय, नए विचार, नई रचनाएँ उभरने लगीं। उनकी गति इतनी तीव्र थी कि उनके शब्दों और गतियों का अनुसरण करना कठिन हो गया; परन्तु उनके कदम सहज थे! मैंने गहनता से महसूस किया, क्या यही समाधि की वह अवस्था नहीं है जिसके लिए योगी प्रयास करते हैं? लय की गति और भी तेज हो गई – और भी – और भी! मैंने विलंबित ल्या या प्रारंभ किया। मैं वह बन गई जिसने तांडव और संसार के विनाशक को स्वीकार किया और उसका नाश किया!
गुजी इतने भावुक हो गए थे कि इस तेज़ लय में तबला बजाना उनके लिए मुश्किल हो रहा था। उन्होंने कहा, “वाह! कमाल! तुमने अब तक जो कुछ भी सिखाया है, उससे कहीं आगे बढ़कर बहुत कुछ हासिल कर लिया है! जय वाला को इस आइटम के लिए इस तबले पर खूब मेहनत करने दो – फिर देखना! पूरे दिल्ली में तुम्हारा कोई मुकाबला नहीं, यह ज़रूर सफल होगा!” गुजी, जो तारीफ करने में कंजूस थे, आज उनकी इतनी दिल खोलकर तारीफ कर रहे थे! दोपहर के भोजन के बाद झपकी लेते समय भी मेरे मन में यही भावना उमड़ रही थी। मुझे भी भक्ति की भक्ति का अर्थ समझ आ गया था। अब से मैं अपना पूरा जीवन इसी तरह जीऊंगा! मैं मिल्साहेब द्वारा दिया गया कार्ड फेंक दूंगा।
लेकिन यह मनःस्थिति केवल एक दिन तक ही रही। अगली सुबह योग करते समय मुझे अपने प्रिय भगवान कृष्ण की याद आ गई। वे ऐसे योगी नहीं थे जिन्होंने अपने सभी मित्रों के साथ यज्ञ किया हो। उन्होंने राधा और अन्य गोपियों के साथ आनंद का अनुभव किया और उन्हें नृत्य कराया।

वह स्वयं नृत्य कर रहे थे। यहां तक कि शिव, जो तांडव नृत्य करते हैं, उन्हें भी इसके लिए प्रमाण की आवश्यकता होती है।
ऐसा लगता है!
गु जी ने तुरंत टिप्पणी की, 'पोस्ट तो कल जैसी ही थी; लेकिन अभिनय अच्छा नहीं था!'
मुझे असली अभिनय का ज्ञान कैसे हुआ? मैंने उतना ही मेकअप किया जितना मैंने किताबों में पढ़ा था और गुरुजी ने मुझे सिखाया था! मैंने अपने जीवन में कभी यौन सुख का अनुभव नहीं किया, इसलिए मैंने विरह की पीड़ा भी नहीं झेली। किसी भी अभिनेता ने यह अनुभव नहीं किया है कि 'यह मेरा नहीं है। मैं किस तरह का अभिनेता हूँ?' ऐसी स्थिति में, रामचरण मीमाला – अहम – कृष्णचरण मीमाला कह रहे हैं –
धार्मिक और राजनीतिक उथल-पुथल में एक सप्ताह बीत गया। अंततः, मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि यदि मुझे पागल हुए बिना विद्वान बनना है, तो मुझे मिल्साहेब से मिलना ही होगा! इस निष्कर्ष पर पहुँचते ही, मैंने अगली सुबह अपना सामान लाने के लिए निकलने का निश्चय किया। मुझे गुस्सा आया और मैंने बूथ को फोन किया। उन्होंने खुद फोन उठाया।
"मैं! क्या आप मुझे पहचानते हैं?" चिल्लाते हुए मेरी आवाज कांप रही थी। "एक मिनट! मैं कैबिनेट को फोन करता हूँ," पु हा की आवाज़ सुनाई दी और दफ्तर में मची अफरा-तफरी गायब हो गई, चारों ओर सन्नाटा छा गया।
‘मनोहारी जी, आपने मुझे कितना लंबा इंतजार करवाया!’ ये शब्द मुझे जुदाई की पीड़ा से भर रहे थे।
‘क्या आप नाराज़ हैं? निर्णय लेने में वाकई काफी समय लग गया!’
तो अब फैसला हो गया? बचत हो गई! हम कब मिलेंगे? मैं आपको कहाँ से लेने आऊँ? मैं घर से अकेले कैसे निकल सकती हूँ? मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा है।
‘क्या तुम्हारी कोई गर्लफ्रेंड नहीं है? आज उसका जन्मदिन है, उससे कहो कि तुम उसके साथ डिनर पर जाना चाहते हो!’
मुझे हाई स्कूल की यह प्रेम कहानी याद आ गई। शादी के बाद चार साल तक मैंने उसे नहीं देखा था। मेरी पत्नी के अनिर्णय के कारण उसने मुझसे संपर्क तोड़ दिया था। मैंने भी उसे ढूंढने की कोशिश नहीं की थी। मैंने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मेरी एक गर्लफ्रेंड है।'

“तो कल सुबह 10:30 बजे, रफी मार्ग पर कृषि भवन के सामने बस स्टॉप पर रुक जाना। मेरी गाड़ी का नंबर लिख लेना – बस इतना ही, प्रिय। मैं 10:30 बजे वहाँ पहुँच जाऊँगी। देर मत करना। गाड़ी में इंतज़ार करने का कोई फायदा नहीं। पाँच-सात मिनट पहले आ जाना। ज़्यादा मेकअप मत करना; लेकिन अच्छे कपड़े ज़रूर पहनना।”
‘मैं डरी हुई हूँ!’ मेरी आवाज कांप उठी।
डरने की कोई वजह नहीं है। मुझ पर पूरा भरोसा रखो। मुझे यकीन है कि जब तक तुम मेरे साथ हो, कोई तुम्हें कुछ नहीं करेगा। तुम्हारी देखभाल करना मेरी ज़िम्मेदारी है! मुझे बताओ कि घर लौटने का समय हो गया है।
मुझे और बात करने का मन नहीं था। उसने मन ही मन सोचा, 'तुम्हें समझ आया या नहीं? इसमें कोई शक नहीं है, है ना?'
'नहीं।'
तो क्या हम फोन रख दें?
‘हूँ!’
मैं आटा और चावल लेकर घर लौटी। मैं अपने जन्मदिन की बात कैसे शुरू करती? मुझे गुजी को देखकर डर लग रहा था। जब गरमागरम खाना पक रहा था, मैंने कहा, 'मैं आपके लिए खाना बना दूंगी; लेकिन आपको आकर खाना होगा! मुझे अपने जन्मदिन पर अपने दोस्त के घर जाना है।'
‘ये दोस्त कौन है? ये कहाँ रहती है? मैंने तो इनका नाम पहले कभी नहीं सुना, है ना?’ उन्होंने पूछा। कहते हैं, झूठे को झूठ बोलना सिखाने की ज़रूरत नहीं होती। उस दिन मुझे इस बात का सही अर्थ समझ में आ गया।
इससे पहले मैंने केवल मेरिडियन होटल का नाम सुना था। वह भी, वहाँ एक अध्याय था।
वहाँ एक हॉल है, जहाँ दर्शकों के लिए नृत्य कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। मुझे उम्मीद थी कि आज उषा आप को भी वहाँ मौका मिलेगा। मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि मैं मिल्साहेब के साथ लॉबी से होकर इमारत की चौथी मंजिल पर बने एक आलीशान कमरे में जाऊँगी। जब मैंने दरवाजा बंद करके घंटी बजाई, तो उन्होंने कहा, 'मनोहारी, डरने की कोई जरूरत नहीं है। जब तक तुम मुझे नहीं बुलाओगी, कोई यहाँ नहीं आएगा, कोई दरवाजा भी नहीं खटखटाएगा! इस जगह और इस समय पर तुम्हारा पूरा अधिकार है! अब बताओ, मैं तुम्हें आप कहूँ या तुम्हें?'

उसने मेरा हाथ अपने हाथ में कसकर पकड़ा और मुझे वापस चूमा।
मेरे मुंह से ये शब्द निकले, "क्या मुझे इस बारे में सोचना चाहिए?" मेरी आंखों में आंसू भर आए।
आज दोपहर मुझे एक सच्चाई का एहसास हुआ – कि प्रेम शरीर के माध्यम से प्राप्त नहीं किया जा सकता है।
प्रेम का कोई अर्थ नहीं! प्रेम न हो तो शारीरिक अंतरंगता बिलकुल असंभव है! लेकिन अगर अलौकिक शक्ति में गहरी आस्था न हो तो कुछ भी संभव नहीं। उस समय उन्होंने मुझे बताया कि उनकी उम्र पैंतालीस वर्ष है। मुझसे अट्ठाईस वर्ष बड़े! लेकिन उस समय मुझे यह अंतर बिल्कुल भी महसूस नहीं हुआ, न ही मुझे यह एहसास हुआ कि वह एक अमीर आदमी हैं, या उन्होंने मुझे यहाँ लाने के लिए बहुत पैसा खर्च किया है।
दोनों शरीर एक हो गए। मन भी। बाद में, आत्मीयता से बात करते हुए, मैंने उनसे कहा, "तुम हो
बात शुरू हुई। उसने कहा, 'जी सर, मुझे ऐसा ही लगता है! सच कहूं तो, अगर आपकी कोई और गर्लफ्रेंड है, तो मैं बिल्कुल नहीं जाना चाहता!'
‘तुम्हारी कसम – कोई नहीं! चलो। एक बार में सिर्फ़ एक। हम दोनों ही थे। एक मेरे दफ्तर में सेक्रेटरी थी। प्यार पनपा। मुझे लगा कि एक ही कंपनी में कर्मचारी और मालिक के तौर पर रहना हमारे लिए ठीक नहीं है। इसलिए मैंने उसे दूसरी कंपनी में नौकरी दिलवा दी। हम हर हफ़्ते पाँच-छह घंटे मिलते थे। हम फ़ोन पर बात नहीं करते थे। बाद में उसका तलाक हो गया। वह रिश्ता जारी नहीं रखना चाहती थी। मैंने उसकी भावनाओं का भी सम्मान किया। मैंने उसके पति को अच्छी तनख्वाह वाली नौकरी दिलवा दी।
उन्होंने उसकी मदद भी की। इसके बाद से वह पच्चीस वर्षों तक लापता रही। इसके बाद, एक रिश्ता
रिश्ता तो बन गया था, लेकिन वो बहुत लालची निकली। मुझे पैसों की कभी चाह नहीं थी, पर उसकी पैसे चुराने की आदत ने मुझे गुस्सा दिला दिया। इसलिए मैंने उसे छोड़ दिया। बताओ, तुम्हारी गु की शादी सोहनलालजी से कैसे हुई? मैंने उन्हें सब कुछ खुलकर बता दिया। इससे पहले मैंने कभी किसी से इस विषय पर इतनी खुलकर बात नहीं की थी। उन्होंने सहानुभूति से सब कुछ सुना। उन्होंने गु जिन के बारे में भी सम्मानपूर्वक बात की। फिर उन्होंने कहा, 'मनोहारी, हमें कम से कम सप्ताह में एक बार मिलना चाहिए।'

मेरी आँखों में आंसू भर आए। मैंने कहा, 'मैं तुम्हें धोखा तो नहीं दे रही हूँ? अगर तुम मुझे उस तरह का प्यार दोगे, तो मैं आ जाऊंगी।'
‘तुम इतने सालों से खुद को धोखा दे रही हो! अब किसी और को धोखा नहीं देना चाहती!’ उसने मेरी पीठ थपथपाई और कहा, ‘तुम्हें मुझ पर पूरा भरोसा है। मैं भरोसे और प्यार को एक ही मानता हूँ।’ जाते हुए उसने सोचा, ‘मैं तुम्हें यहीं उतार दूँगा। क्या तुम्हारे पास शादी के लिए पैसे हैं? अगले बुधवार को भी आना। इस बार भी तुम्हारे पास पैसे होने चाहिए।’ मैंने मन ही मन सोचा, ‘मैं इसके लिए तुम्हें कुछ हज़ार रुपये दे सकती हूँ; लेकिन मैं अपने रिश्ते को दिखावा नहीं बनाना चाहती। क्या तुम मेरी बात समझ रही हो?’
मुझे इसका अर्थ समझने में एक मिनट लगा! जब मुझे इसका अर्थ समझ आया, तो उनके प्रति मेरा सम्मान कई गुना बढ़ गया। मेरा मन रुका और सोचने लगा, 'जब से मैंने प्रोग्रामिंग शुरू की है, मेरे पास भी पैसे हैं। मैं घर के खर्चों का ख्याल रखता हूँ। अगर आप मुझे यह भी दे दें, तो भी मुझे अभी पैसों की ज़रूरत नहीं है।'
उनके चेहरों पर खुशी झलक रही थी।
घर लौटते समय, मैंने कुछ जलेबी ली और कहा, 'मेरे दोस्त ने इसके लिए तुम्हें ये दी थी।' 'चलो इन सभी पुराने दोस्तों से मिलते हैं।' मैंने यह भी कहा कि मैंने इसके बाद हर हफ्ते मिलने का फैसला किया है। बाद में, हमने रिश्ते, गपशप और सच्चाई के बारे में थोड़ी बात की। यहाँ तक कि मैं उसके लिए अपने मन में उठ रही भावनाओं से भी तंग आ गया था।
छह महीने इसी तरह बीत गए। हर हफ्ते हम अलग-अलग मशहूर जगहों पर मिलते थे। कमरा पहले से बुक कर लिया जाता था। कमरे का दरवाजा बंद करने तक मेरा दिल ज़ोर से धड़कता रहता था। बाहर जाते समय भी यही हाल होता था। बीच-बीच में अखबारों में डांस कार्यक्रमों की तस्वीरें आती रहती थीं। क्या कोई मुझे पहचान पाएगा? क्या कोई मुझे पहचान पाएगा? मन में इस लगातार डर के बावजूद, मुलाकातें हर हफ्ते होती रहती थीं।
एक बार मिलसाहेब ने कहा, 'इस तरह के होटल के कमरे में रहना उचित नहीं है। मैं व्यापार जगत में हूं। आपका क्षेत्र मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अब आपको अलग तरह से सोचना चाहिए। न केवल अपनी यात्रा के बारे में, बल्कि अपनी कला के विकास के बारे में भी। चलिए एक इमारत बनाते हैं। आप वहां अपने नाम

से एक कक्षा शुरू कर सकते हैं। जब आपकी अपनी इमारत होगी, तो आपकी कला का भी महत्व होगा।'
क्लास का समय सुबह और शाम का रखें। अगर आप चाहें तो दोपहर में उनसे वहीं मिल सकते हैं।
कक्षा और भवन पूरी तरह से आपके नाम पर होने चाहिए। इस संबंध में गुजी की राय का इससे कोई लेना-देना नहीं है।
"वहाँ कोई उच्च वर्ग नहीं होना चाहिए! शुरू से ही यह स्पष्ट कर दें कि वे शव लेने भी वहाँ नहीं आएंगे।"
मैंने सोचा, "लेकिन दिल्ली में इस तरह की इमारत बनाने में कितना पैसा लगेगा! मैं उस पैसे का क्या करूँ?"
इस पर भरोसा मत करो। मैं न सिर्फ तुमसे, बल्कि तुम्हारी कला से भी प्यार करता हूँ! एक बात और याद रखना। ज़मीन खरीदने से लेकर इमारत के निर्माण तक, सब कुछ तुम्हारे नाम पर होगा। इससे सवाल उठेगा कि यह सारा पैसा कहाँ से आया। लोग कहेंगे कि मैंने कर्ज़ लिया है। मेरा नाम इसमें कहीं भी नहीं आना चाहिए।
मैं आपको इसके पीछे का कारण बताता हूँ। मैंने अपने तीन बच्चों में से दो को अपना व्यवसाय शुरू करने का अवसर दिया है।
मेरे परिवहन व्यवसाय में थोर को नौकरी मिल गई है। अगर तुम्हें इतनी बड़ी रकम मिलने की खबर अखबारों में फैल गई, तो हंगामा मच जाएगा और यह खबर मेरी पत्नी तक भी पहुँच जाएगी। उसका इस नई नौकरी से नाराज़ होना स्वाभाविक है। वह इस मौके का फायदा उठाकर बच्चों को खूब खरी-खोटी सुनाएगी। यह रकम मेरी कुल आमदनी का हज़ारवाँ हिस्सा भी नहीं है; लेकिन बच्चों के पास इतना धन कहाँ से आता है? मैं उनके साथ काम कर रहा हूँ ताकि वे पैसे का मतलब समझ सकें। यह उनके अपने फायदे के लिए है; लेकिन मेरी पत्नी इतना क्यों सोचेगी? तुम अपनी एक गलती की वजह से मेरे बच्चों को क्यों नुकसान पहुँचाओगे? मेरी दयालुता और हर जगह मेरी तारीफों से तुम भी अभिभूत हो जाओगे! काश, यह सब इस पैसे में भी शामिल हो!
वह कितनी गहरी नींद सोता है? क्या उसने कभी इस तरह बिना सोए रात बिताई है? इस बार उसकी हिम्मत कैसे हुई यह पूछने की, 'आप इतनी दूर का स्कूल कहाँ बना रहे हैं? आस-पास कहीं देखिए। आपको इतना पैसा कहाँ से मिला?'
मैंने बैंक से ऋण लिया।

"लेकिन आप भुगतान कैसे करेंगे?"
‘कार्यक्रम संख्या’
‘मेरा नाम है मनोहरी दास कूल ऑफ दास! वाह! लगता है हम आज़ाद हो गए! पति के रूप में मेरा कोई नाम नहीं है और गुलाम के रूप में भी मेरा कोई नाम नहीं है!’
‘यह घर तो आपके नाम पर है, है ना! अगर कोई महिला पढ़ाएगी, तो अमीर परिवारों की लड़कियाँ क्लास में आएँगी। वे तबला और सरोद के लिए भी लड़कियों को काम पर रखेंगी। पुरुषों को वहाँ जाने की अनुमति नहीं होगी!’
'मुझे भी नहीं?'
‘हां। आप अकेले नहीं हैं!’
‘ठीक है! मैं भी जीवन में इतनी दूर नहीं जाऊंगा!’ उसने वादा किया और राजकुमार गायब हो गया।
इमारत तैयार थी। सुबह दस बजे से शाम चार बजे तक, पूरी तरह सन्नाटा था! चेक-इन और चेक-आउट की झंझट के बिना भरपूर शांति थी! थोड़ी देर में फोन की घंटी बजी। मिल्साहेब अपनी सुविधानुसार फोन करने लगे। हमने फोन पर बातचीत शुरू की।
छह महीने बाद, एक दिन उसने कहा, ‘माना, साउथ स्टेशन में एक घर बिक रहा है। घर नया है। चलो इसे तुम्हारे नाम पर ले लेते हैं। साथ ही एक कार भी ले लेते हैं। गाड़ी चलाना सीख लो। इस छोटी सी गली में तुम अपनी कार कैसे पार्क करोगी? यह घर यहाँ से सिर्फ साढ़े तीन से चार किलोमीटर दूर है। इससे तुम्हें हर दिन बारह किलोमीटर पैदल चलने की परेशानी से छुटकारा मिल जाएगा। नया घर अच्छी हालत में है। उसमें भरपूर हवा और रोशनी आती है।’
एक बार मैंने सोचा, ‘इतना पैसा क्यों खर्च कर रहे हो? यह डांस स्कूल काफी बड़ा है। इतना काफी है।’ लेकिन मैंने चुप रहना ही बेहतर समझा। जब उन्होंने खुद इतनी तैयारी की थी, तो मैं क्यों चुप रहूँ? इसके विपरीत, मैंने उनके गालों पर चुंबन करते हुए कहा, ‘धन्यवाद! आपका बहुत-बहुत धन्यवाद!’
जैसा कि उम्मीद थी, गुजी ने नए घर में आने से मना कर दिया। उन्होंने कहा, 'मैं नहीं आऊंगा! मैं तीस साल से यहीं रह रहा हूं। मैं यहीं व्यापार करता हूं। अगर मैं यह जगह छोड़ दूं तो भी मैं नहीं आऊंगा। तुम अकेले जाओ!' मैंने यह भी कहा, 'ठीक है! आप मत आइए; लेकिन मैं इस घर में रहने नहीं जाऊँगा! अगर आप चाहें तो मैं घर के खर्चों का भुगतान कर दूँगा!'

"तुम आजकल क्या कर रहे हो? मुझे सब पता है!" वह चिल्लाया।
‘तुम्हें क्या पता? अगर तुम इस देश में अंग्रेज़ी बोलोगी, तो तुम्हें मनचाहा पैसा मिलेगा। इसके बजाय, इस गंदी गली में क्यों सड़ रही हो? बेवजह बड़बड़ाओ मत! मैं तुम्हें बता दूँगी!’ मुझे भी गुस्सा आ रहा था। हालाँकि, वे चुप रहे; लेकिन वे नए घर नहीं आए। मैं भी नए घर में अकेले रहने चली गई। मैंने गाड़ी चलाना सीखा, लाइसेंस बनवाया। फिर भी, मैं हर हफ्ते गुजी से मिलने आती रही। लेकिन मेरे पति ने कहा:
खाना बनाते समय उन्हें अपराधबोध होने लगा। साथ ही, उन्हें यह भी महसूस हुआ कि यह सिलसिला बहुत लंबा चलेगा। वे जल्द ही ऊब जाएंगे और खाना बनाना बंद कर देंगे।
वे घर लौटने के लिए तैयार होंगे।
मेरी भविष्यवाणी सच हो गई। पंद्रह दिनों के भीतर ही वह बीमार पड़ गया। मैंने देखा कि इस बीमारी में भी थोड़ा ड्रामा था! मैंने कहा, 'मैं हर दिन आना-जाना नहीं कर पाऊंगी! क्या वह वहां आएगा?'
उन्होंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "मुझे खेद है!"
वे उसे कार में बिठाकर डॉक्टर के पास ले गए। वे दवाइयाँ भी लाए थे। अगर वे दवाइयाँ न भी लाते, तो भी वह ठीक हो जाता! उसने गली में स्थित पुराना किराए का मकान मकान मालिक को दे दिया।
वह खुशी से खिलखिला उठे बिना नहीं रह सके!
छह महीने और बीत गए। श्री मिलसाहेब, जो 10:30 बजे पहुंचे, अपने साथ एक सूटकेस लाए थे।
‘माना, क्या तुम्हारा बैंक पास में है? ये दस लाख रुपये हैं। लंबी अवधि के लिए जमा करवा लेना। मैं नहीं आऊँगी। हर महीने दस हजार रुपये का इंतजाम हो जाएगा। मुझे पता है कि तुम्हें आजकल कार्यक्रम मिल रहे हैं, पर वो अच्छे नहीं हैं; पर कला के क्षेत्र में गर्व से वही कलाकार जी सकता है जो इन पर निर्भर न हो! इसी वजह से वो कहीं भी संतोषजनक कमाई कर सकता है।’
मुझे समझ नहीं आ रहा था कि इस बारे में क्या कहूँ। हालाँकि उनकी नज़र में यह रकम छोटी थी, लेकिन मेरी नज़र में बहुत बड़ी थी! साथ ही, मैं यह भी समझ गया था कि वह अपनी पत्नी और बच्चों को वंचित किए बिना यह रकम दे रहे थे। उनकी पत्नी को क्या चीज़ खुश रखती है? अगर वह उन्हें खुश रख पाते, तो मेरे पास क्यों आते?

मैंने उसकी पत्नी को कभी नहीं देखा था। मैंने बहुत ज़िद की, और उसने मुझे उसकी तस्वीर दिखाई। एक अमीर परिवार की गृहिणी, बेरोज़गार, मोटापे से ग्रस्त। इसके विपरीत, उसने बुढ़ापे के स्पष्ट निशानों को छिपाने के लिए अपने शरीर को गहनों और माणिक्यों से सजाया हुआ था। मुझे गुस्सा आ गया। मैं पागलों की तरह भड़क उठा। उसने कहा कि उसके पास तो बस दस लाख रुपये हैं! उसकी क्या कीमत है? यह लड़की करोड़ों रुपये कमा रही है और मज़े कर रही है! ये सब उसकी गलती है! तो फिर मैंने उसे दस लाख रुपये देकर क्या बिगाड़ा? मैंने अपने विचार मन में ही रखे और कृतज्ञता भरी निगाहों से उन्हें गले लगाया। चुंबन देना नहीं भूली। मैंने यह सुनिश्चित किया कि बैंक से लौटने पर उन्हें कोई परेशानी न हो और उन्हें पूरी खुशी दी। क्या कृतज्ञता भी प्रेम की एक संक्रामक भावना नहीं है?
वामी, मुझे ये सब देकर मेरा अपमान मत करो! मैं इसके बदले में तुम्हें कैसे चुका सकती हूँ? मैं तुम्हें केवल अपने दिल का प्यार दे सकती हूँ। मुझे पता है कि इसके अलावा भी तुम्हारी और ज़िम्मेदारियाँ हैं! इसके बाद, मेरी कला तुम्हें समर्पित है। किसी की चिंता मत करो। मेरे मन में जो भी कार्यक्रम हो, तुम बिना किसी झिझक के आ सकते हो। अगर तुम चाहो, तो मैं अपने साथियों को बुलाकर सिर्फ़ तुम्हारे लिए नृत्य करूँगी। क्या तुम्हारा दोस्त सिर्फ़ तुम्हारे लिए नृत्य नहीं करेगा? अपने साथियों को बुलाना है या नहीं, यह भी तुम्हारी मर्ज़ी है। वरना, मैं कैसेट के साथ नृत्य करूँगी!
मैं उसकी आंखों से समझ गया था कि उसके दिमाग में बहुत कुछ चल रहा था।
मेरे विचार से उस दिन उन्हें जो खुशी मिली, वह एक उदाहरण थी।
सब कुछ स्पष्ट था। हीरों और माणिक्यों से सजे इस घर में होना कितना आनंददायक था।
सिर्फ शक्ति ही नहीं! कला भी नहीं! इसीलिए वे मेरे पास आए हैं। इसके बाद, मैंने हर मुलाकात में इसी अद्वितीय आनंद का अनुभव करने का निश्चय किया। लेकिन उन्होंने अपनी पत्नी के प्रति अपने स्नेह और अरुचि को कभी ज़ाहिर नहीं किया! इस चुप्पी का क्या मतलब है? अपने सबसे करीबी दोस्त से अपनी असंतुष्टि ज़ाहिर करने में क्या बुराई है?
धीरे-धीरे मुझे ऐसा लगने लगा कि पूरी दुनिया में मैं ही एकमात्र प्रतियोगी हूँ। अपनी उम्र के किसी भी विषय के प्रति मैंने कभी इतना जुनून महसूस नहीं

किया था। अगर कोई मुझसे कम उम्र का, अधिक प्रशिक्षित और प्रतिभाशाली युवा सामने आता, तो शायद मेरे अंदर इस विषय के प्रति ऐसी चाहत पैदा ही न होती! उस रात, तस्वीर में उसकी निगाहें मुझे बार-बार परेशान करती रहीं, 'दो इमारतें, एक कार।'
और दस लाख रुपये – बस यही तुम्हारी कीमत है! तुम कभी मेरी जगह नहीं ले सकते!’ मैं चाहे जितनी कोशिश कर लूँ, जिस औरत को मैंने रखा था और वो? एक गृहिणी! एक गृहिणी! मैं पूरी रात सो नहीं पाया। वे मेरी इतनी तारीफ करते हैं; लेकिन वे कभी क्यों नहीं कहते, ‘तुम कुछ मायनों में उनसे बेहतर हो’? ‘माना, इसके बाद हमें फिर नहीं मिलना चाहिए। बच्चे अपने पैरों पर खड़े हो गए हैं। मैं दोष लूँगा, तुम दोष लोगे।’ वे ऐसा क्यों नहीं कहते?
हो सकता है कि उन्हें ब्रेकअप का कोई कारण न मिले; लेकिन यह मुश्किल नहीं है। कोई न कोई उसके लिए दोस्त ढूंढ ही लेगा। क्या होगा अगर उसे कैंसर जैसी कोई गंभीर बीमारी हो जाए? या अगर उसकी किसी दुर्घटना में मौत हो जाए? अगर ऐसा हुआ, तो एक दिन वे मेरे घर आएंगे और
वे कहेंगे, 'माना, ये सारी समस्याएं दूर हो गईं! अब हम हमेशा साथ रहेंगे।' 'कर सकते हैं!' फिर रोटरी, हर जगह के व्यापारियों के संगठन के सदस्यों से मिलें।
लाबिम आओ, पटरियम आओ, मैं भी उनके साथ रहूंगा। जब मैं उनसे मिलूंगा तो उन्हें पहचान लूंगा।
वे कहेंगे, 'श्रीमती मनोहरी से मिलिए!'
यह दृश्य उसकी आँखों के सामने आया और वह उसमें मग्न हो गई। और अगर ऐसा नहीं होता, तो क्यों न रात के इस समय रबर के दस्ताने पहनकर खुद को सुई चुभो लेती? एहतियात के तौर पर, डग्गा को यह आभास देना चाहिए था कि उसकी चोरी के आरोप में हत्या कर दी गई है।

६
एक दिन वो कुछ खाली समय बिताने आए थे। उन्होंने कहा था कि वो चार घंटे रुकेंगे। इस मौके का फायदा उठाते हुए मैंने उन्हें खूब लुभाया। काफी देर तक आनंद लेने के बाद, हिंदू झूलों पर झूलने लगे और चिल्लाने लगे, ‘चलो चलें! खूब चलें!’ कुछ पल की खामोशी के बाद, मैंने उनके कान में फुसफुसाया, ‘एक विचार? कहीं आप नाराज़ तो नहीं हो जाएँगे?’
‘क्या? कोई जानकारी नहीं?’
"क्या आपको अपनी पत्नी से कभी इतनी खुशी मिली है?"
‘ हे?’
"तुम इसके बारे में कभी बात नहीं करते!" मैंने उसकी निगाहों को देखते हुए मन ही मन सोचा।
वह अंतर्मुखी हो गए। मुझे डर लगा। मुझे याद आया, ये हमारे महान गुरु हैं! जब वे गहन चिंतन में डूबे हुए थे, तब कुछ भी सोचना बचकाना लग रहा था। मैं भी चुप रही।
कुछ देर बाद, उसने भौंहें चढ़ाते हुए मेरी ओर हाथ हिलाया। उसके चेहरे के अंत में एक हल्की सी मुस्कान आई और मुझे एहसास हुआ कि वह गायब हो गया है, लेकिन मैंने इसके कारण के बारे में नहीं सोचा।
उन्होंने कहा, 'हम सभी ने स्कूल में सीखा है, एक ज्ञानी व्यक्ति ने हमें बताया था, आशा दुख की जड़ है। अगर मैं और अधिक बुद्धिमान होता, तो मैं और गहराई में जाकर आपको बताता कि तुलना ही वास्तव में दुख की जड़ है! हमारे व्यवसाय में कड़ी प्रतिस्पर्धा है। हमें दूसरों को कुचलकर आगे बढ़ना है! लेकिन मैंने इससे पूरी तरह परहेज किया है। मैं कभी दूसरे व्यापारियों से नहीं मिला।'
मैंने प्रतिस्पर्धा नहीं की। मैं कभी तुलना के जाल में नहीं फंसा। सच कहूं तो, मैंने कोशिश की थी।
मेरा व्यवसाय बढ़ गया है। इसीलिए मैं खुश हूँ!
मेरा सिर ऐसे चकरा गया जैसे किसी ने अचानक मुझे थप्पड़ मार दिया हो। शर्म से मेरी आँखें चौड़ी हो गईं। मुझे लगा जैसे मेरे किसी सवाल की वजह से उन्होंने मेरा मज़ाक उड़ाया हो। मुझे इसका कोई औचित्य समझ नहीं आ रहा था। मैं 'माफ़ कीजिए, मुझसे गलती हो गई' भी नहीं कह पा रही थी। वहाँ रहना

मुश्किल लग रहा था, इसलिए मैं बाथरूम गई और वहाँ तब तक धोती रही जब तक मुझे आराम नहीं मिला।
उस दिन से, उस अजीब आकृति के कारण मुझे जो बुखार आ रहा था, वह कम हो गया।
फिर भी, हमारे रिश्ते को लेकर मेरे मन में जो आशंकाएं थीं, वे वैसी ही बनी रहीं।
इसके लगभग एक महीने बाद – नहीं, तीन सप्ताह बाद – परिवहन संघ की बैठक हुई।
इस बार, तीसरी बार, मिल्साहेब अध्यक्ष थे।
इस उद्देश्य से आयोजित कार्यक्रम का विवरण दस्तावेज में दिया गया है।
वह आ गया था। सत्र के अंत में एक नृत्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम दिल्ली के उसी स्थान से था।
खबर पढ़कर मुझे गहरा सदमा लगा। मैं उनसे ऐसी ही एक बैठक में मिला था। और अब ये तस्वीर! हालांकि मुझे पता था कि फैसला आयोजकों का ही होगा, फिर भी मेरा दिल दुख रहा था। लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे उन्हें इसकी कोई परवाह ही नहीं थी।
अगली बार जब वे आए, तो मैंने सोचा, 'मुझे इस तस्वीर के बारे में कुछ भी पता नहीं है, महोदय। मैं आपको बधाई देने के लिए इस कार्यक्रम में मुफ्त में नृत्य करती। आप मेरे लिए कुछ कह भी सकते थे, है ना? मुझे बहुत बुरा लगा कि मंदिर में अपने भगवान के सामने नृत्य करने का अवसर मुझसे छिन गया!'
पहले तो उन्होंने कुछ नहीं कहा। लेकिन फिर वे ऐसे हंसने लगे जैसे कुछ हुआ हो।
"अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो क्या आप मुझे कुछ बता सकते हैं?"
"नहीं, मैं गुस्सा नहीं होऊंगा। मुझे बताओ।"
‘मैं भी चाहता था कि तुम नाचो। उसका नृत्य देखने के बाद भी तुम ही देख रहे थे; लेकिन यह पहले से ही तय था कि तुम अपनी पत्नी के साथ कार्यक्रम में आओगे। आयोजकों ने मेरी पत्नी के लिए चांदी की थाली और चांदी की साड़ी मंगवाई थी। मुझे पता था कि उसे तुम्हारे बगल में देखकर तुम अपने नृत्य कौशल खो दोगे, इसलिए मैंने यह सुझाव नहीं दिया।’
उसमें कुछ भी गलत नहीं था; लेकिन मेरे दिल का दर्द सौ गुना बढ़ गया।
वह गुस्से से मुंह फेरते हुए बोला, "क्या मैं तुम्हें इतना मूर्ख समझता हूँ? अगर मैं तुम्हें अपनी बड़ी बहन मानता तो खुशी से नाचता!"

"तो फिर ठीक है। अगर ऐसा दोबारा हुआ तो मैं इसे अपने तक ही रखूंगा!" उसने सहमति जताते हुए कहा।
मैं उस मुद्दे को भी नहीं उठाना चाहता।

७
पता नहीं कब सो गया। जब जागा तो दीवार पर लगी घड़ी में नौ बज रहे थे। इतनी देर सोने का ख्याल आते ही उसे थोड़ा अच्छा लगा, पर उसे ये भी एहसास हुआ कि ‘उसे थिएटर घंटों पहले पहुंच जाना चाहिए था’; फिर भी वो उठकर तैयार नहीं होना चाहता था। कपड़े बदलते समय उसे कल के शब्द याद आए, ‘क्या तुमने वो नहीं किया जो तुम्हें नहीं करना चाहिए था?’ और वो नज़र जो उसके सीने में चुभ गई थी! वो उठ गया! उसने देखा कि वो नहाए बिना ही बिस्तर पर बैठा है!
वह महिला रसोई में खाना बना रही थी। उसने बिना समय बर्बाद किए जल्दी से स्नान किया।
रिश्ता बन चुका था। अगर वो मुझे कम से कम दो दिन चुप रहना नहीं सिखाएगी, तो वो ऊंट की तरह बक-बक करना बंद नहीं करेगी! उसकी तरफ देखे बिना उसने कहा, 'माफ़ कीजिए, दरवाज़ा बंद कर दीजिए-' और अपना बैग लेकर बाहर चली गई। छात्रावास में सुबह की कक्षा समाप्त हो चुकी थी। अगली कक्षा के बच्चे उनका इंतज़ार कर रहे थे। उनमें से एक ने कहा, 'कोई कह रहा था कि जयपुर-जोधपुर कार्यक्रम बहुत अच्छा रहा! शानदार सफलता थी, है ना? यह पंजीकृत पैकेट आ गया है—'
एक छोटा सा लिफाफा था। उसके अंदर कई कागज़ रहे होंगे। ये कहाँ से आया? 'जयंत देसाई, ज़मींदार, कोरेगांव, देवलाली मार्ग, महारा त्रा।' पता पढ़कर कुछ समझ नहीं आया। ज़रूर कोई अपील रही होगी। शायद मार्ग पर हुए कार्यक्रमों की जानकारी और कतरनें रही होंगी। उसने लिफाफा नदी में फेंक दिया। एक घंटे सोचने के बाद वह बाहर आई, दरवाज़ा खटखटाया और ऊपर चली गई। कार्तिक अपने कमरे में सूटकेस पैक कर रहा था। उसके चेहरे पर डर झलक रहा था। उसे देखते ही उसने अपने पड़ोसी का टेलीग्राम उसे थमा दिया। टेलीग्राम में उसकी माँ के गंभीर रूप से बीमार होने की खबर थी।
"मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था। नहीं तो मैं फोन कर देता। रे एक घंटे में निकल रहा है।"
बातचीत करने का समय नहीं था। वह उनके साथ कुछ समय बिताने की उम्मीद से आई थी, क्योंकि पिछले छह दिनों में उसे ऐसा मौका नहीं मिला था। उसका मन उदास था। लेकिन बिना दिखाए उसने घड़ी देखी। उसे तुरंत निकलना था। फिर भी, उसने सोचा, 'अगर हम रात में कार से जाएं तो कैसा रहेगा?'

‘मैंने आपको बता दिया है कि मामला गंभीर है!’ उनकी आवाज़ नरम थी। बिना कुछ कहे, उन्होंने अपनी जेब से दो हज़ार रुपये निकाले और उसके हाथ पर रख दिए। उन्हें बैग में रखकर उन्होंने अपने दफ्तर का ताला खोला। कुर्सी पर शांति से बैठकर उन्होंने जेब खोली और बटुआ निकाला। उसमें एक और बटुआ बड़े करीने से बंद था। उन्होंने कैंची से उसे सावधानी से खोला। अंदर नोटों का एक बंडल था। उसके साथ कोई पत्र नहीं था। उन्होंने नोटों को ध्यान से गिना। सौ में साठ नोट थे। यह देसाई कौन है? उसने मुझे छह हज़ार रुपये क्यों भेजे? यह कोरेगांव कहाँ से आया? नासिक के पास देवलाली नाम की जगह से।
मुझे स्टेशन याद है, लेकिन मैं वहां कभी नहीं गया, वहां देसाई नाम का कोई व्यक्ति रहता था।
मैं तो मकान मालिक से कभी मिला भी नहीं! ये कैसा आदमी है?
मुझे याद है। उसने छह हज़ार लिए थे। चेक कोरेगांव से था। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि अगर वह चेक भेजता तो उसके ठिकाने का पता चल जाता। उसने देसाया का छपा हुआ लिफाफा भी इस्तेमाल किया। उसने एक विज्ञापन भी भेजा था। उसे रसीद तो मिली ही होगी। वह अपनी चतुराई दिखाते हुए कह रहा है, 'मैं कमा रहा हूँ, ले लो अपना पैसा!'
दस मिनट बाद मुझे एहसास हुआ, उसने मुझे धोखा दिया है! हमें पैसे नहीं भेजने चाहिए थे। क्या उसने भी अखबार पढ़ा था? हाँ। उसे पढ़ने के बाद उसने पैसे भेज दिए, यह दिखाने के लिए कि ‘तुम्हारा पैसा मेरे जूतों का है’! उसमें एक भी लाइन नहीं थी। कोई सबक भी नहीं दिया! शास्त्रीय संगीत की एक लहर आई और बहुत धीमी धुनों में उतर गई! उसने मंदिर जाने की कोशिश की; लेकिन वह जैसे सम्मोहन में चला गया। वह रोना चाहता था। उसने अपना सिर मेज पर रख दिया और आह भरी। उस घटना को तीन महीने बीत चुके हैं!
वो आवेग फीका पड़ गया। मुझे वो सब बातें अच्छी तरह याद थीं। एक खास औरत का गर्मजोशी भरा आलिंगन! वो जोशीला आदमी। उसने दुनिया को ठुकराकर मेरे पास आया था। मेरे लिए।
उन्होंने तो अपना सिंगिंग प्रोग्राम ही छोड़ दिया! मेरा दिल बैठ गया। घंटी बजी। लंच बॉक्स आ गया। दोनों के लिए। यह एक गलती थी। मुझे घर फोन करके बता देना चाहिए था कि कार्तिक नहीं आया है। उसने अपनी थाली का खाना खा लिया। क्या मैंने उसके सामने उसे कम आंका, जो उसके साथ नाच रहा था, जो कृष्ण बनकर आया था?

खाना खत्म हुए एक बज चुका था। भोपाल जाने वाली ट्रेन अब तक निकल चुकी होगी। कार्तिक को बैठने की जगह मिल गई होगी।
उन्हें अचानक दृढ़ विश्वास हो गया कि टेलीग्राम ज़रूर नकली है। परसों ‘हॉराइज़न’ का परिशिष्ट इस गाँव में भी पहुँच गया होगा। भले ही घर में कोई अंग्रेज़ी अख़बार न पढ़ पाता हो, कोई न कोई मस्जिद जाकर उन्हें ज़रूर बता देता। या फिर कोई स्थानीय हिंदी भाषी व्यक्ति।
अखबार ने शायद इसका एक छोटा सा हिस्सा लेकर उसे एक दिलचस्प कहानी बना दिया हो।
उनकी पत्नी हाने कहाँ हैं? वह उन्हें फर्जी टेलीग्राम भेजती थीं और फोन करती थीं।
व्यवस्थाएँ अवश्य की गई होंगी। ट्रेन किस स्टेशन पर रुकती है? अगर हम कार से वहाँ पहुँच सकें तो कैसा रहेगा? लेकिन इतनी बड़ी रेलवे लाइन में हमें कार कहाँ मिलेगी?
उसने मन ही मन अनुमान लगाया था कि इसके बाद वह नहीं आएगा! उसने अपना घर का पता दिया है, लेकिन घर पर फोन नहीं है। वह देर रात भोपाल पहुंचा और सुबह उसे आश्चर्य हो सकता है।
यही वो है जो कॉल करेगा। रजत को अगला मैसेज भेजने के ख्याल से मैं इतनी भावुक हो गई कि मुझे लगा कि यह महज़ एक संयोग है।
दुखी क्यों होना? फोन तो बजेगा ही!
लेकिन अगली सुबह कोई फोन नहीं आया। दोपहर या शाम को भी नहीं। क्या उसने फोन नंबर यहाँ ले लिया था? यह इतना आधुनिक नहीं है कि इस बैग में रखा जा सके। शायद वह चिट्ठी लिखेगी। इसलिए दो दिन इंतज़ार करने की ज़रूरत नहीं है। उसने रात में भी गुजी से बात नहीं की। उसने ठान लिया था कि जब तक वह चला नहीं जाता, तब तक उससे बात नहीं करेगी। वह दूसरी तरफ सोना चाहती थी, लेकिन उठी नहीं। उसे उसके बगल में सोना था और उसके दिल को गर्म करना था।
छठे दिन कलकत्ता से एक फोन आया, ‘मैं दक्षिण कलकत्ता के कलविकास संघ के सचिव डॉ. अमित घोष से बात कर रहा हूँ। मैं आपके ‘पिराक्रम’ का एक प्रयोग करना चाहता हूँ। तारीख: शनिवार शाम ठीक रहेगी। अन्यथा, रविवार। समूह में कितने लोग होंगे? मैं आप सभी के लिए एक-एक बस का किराया दूंगा। होटल में प्रत्येक कमरे में दो लोगों के लिए व्यवस्था करें। इसके अलावा, आपका कुल मानदेय कितना होगा?’

'कम से कम तीन सितारा होटल में मेरी उड़ान और लैंडिंग की व्यवस्था करें।' ‘ठीक है! और मानदेय?’
‘बाकी पैसे पचास हजार के बराबर हैं। अगर आप मुझे इतना दे दें, तो मैं मना नहीं करूंगी!’ उसने मनमोहक मुस्कान के साथ कहा।
‘अगर मुमकिन होता तो मैं दे देता, महोदया! लेकिन अगर हवाई जहाज और तीन सितारा होटल का खर्चा हटा दिया जाए तो अकेले उसी में आठ से दस हजार रुपये का खर्चा आएगा। बेहतर होगा कि आप तीस हजार रुपये देने को तैयार रहें!’ ‘अगर यह एकल कार्यक्रम होता, तो मैं भी तैयार होता; लेकिन इसमें दो मुख्य कलाकार हैं, पाँच अन्य कलाकार हैं। इनके अलावा, सहयोगी भी हैं। आप देख ही लीजिए, हर एक के साथ कितने लोग जुड़ेंगे!’
‘ठीक है। तीस हज़ार के लिए मना मत करो। हम इसे बिक्री के लिए रख देंगे। जो पैसा मायने रखता है, वही रहना चाहिए, है ना?’
‘आपको इस बारे में सोचना चाहिए और मुझे बताना। मेरे दामाद भी गांव गए हैं। उनके लौटने पर मैं उनसे बात करके तारीख बता दूंगी। आपका नंबर?’
उन्हें याद आया कि 21 तारीख को लखनऊ में उनका एक कार्यक्रम है। अगर वे इस कार्यक्रम को कार्यक्रम के ठीक बाद कर लें, तो उनके यात्रा खर्च में काफी बचत हो जाएगी। कार्तिक गए हुए उन्हें छह दिन हो गए थे। अभी तक उनकी कोई खबर नहीं मिली थी। क्या वे कार्यक्रम के बारे में भूल गए हैं?
शाम होते-होते उसने फैसला किया कि खुद भोपाल जाना बेहतर होगा। वह हमेशा इसी ट्रैवल एजेंट को फोन करता था। भोपाल की फ्लाइट सुबह सात बजे थी। पालम से भोपाल तक का सफर एक घंटे का था। वापसी की फ्लाइट शाम छह बजे थी। ट्रेन का सफर पाँच मिनट में पूरा हो जाता था और दस मिनट में लड़का थिएटर पहुँच जाता था।

८
वह कार्तिक द्वारा उपहार में दिए गए सर्वती विद्या मंदिर के प्रवेश द्वार पर पहुँची। यह एक छोटा संगीत समूह था। इसमें चार जोड़ी हारमोनियम और चार डफली थीं। समूह में पंद्रह से अठारह वर्ष की आयु के पाँच बच्चे थे।
‘बेटा, क्या यहाँ कोई बड़ा नहीं है? क्या तुम्हारा कोई शिक्षक नहीं है?’ मैं चाय लेने गया था।
‘उसे जल्दी बुलाओ और वापस लाओ! मैं उससे मिलना चाहता हूँ। जल्दी!’
एक लड़का उन्हें बुलाने गया। पंद्रह मिनट बाद, चालीस वर्ष का एक व्यक्ति, कड़े पायजामे, बिना इस्त्री किए हुए चोगे और सिर पर गांधी टोपी पहने, उस लड़के के साथ आया। उसने कटिकाराम से सवाल किया, जिन्होंने जवाब दिया, 'यह सच है कि कटिका जी यहाँ नृत्य सिखाते थे; लेकिन अब वे कक्षा नहीं लेते। वे अब एक बड़े नर्तक बन गए हैं! वे दिल्ली में रहते हैं!'
मुझे उसका घर दिखाओ।
‘देखो, शू लाजी इस घर को जानती है!’
‘शू लाजी कहाँ मिलेगा?’
मुझे बताओ कैसे जाना है—
मैंने उसे रोका और उसने मुझे बताया कि वह दिल्ली से आया है। उसके पास एक टैक्सी है और वह घर जा रहा है।
उसे सब कुछ दिखाने के बाद, वह उसे वापस यहाँ लाने और छोड़ने आदि के लिए तैयार हो गया। गली में भटकते हुए वह शुलाजी के घर पहुँचा। इसके बाद वह भी एक टैक्सी में बैठकर बैठ गया।
टैक्सी चलते ही शूलाजी सवाल पूछने लगे, ‘आप कौन हैं? दिल्ली से क्यों आए हैं? कटिकाराम को क्या हुआ है?’ इससे बचने के लिए उन्होंने सोचा, ‘कटिकाराम उनकी मां के साथ क्या कर रहे हैं?’
‘किसकी माँ?’ उसके चेहरे पर निराशा के भाव आ गए। फिर उसका लहजा बदल गया, ‘देखो, मैं किसी को मुसीबत में नहीं डालना चाहता! मैं तुम्हें उसका घर नहीं दिखाऊँगा। अरे, गाड़ी रोको—’
‘डरो मत! मैं तुम्हें नहीं बताऊंगा कि घर किसने दिखाया। कसम से! मुझे घर दूर से दिखाओ और फिर एक पैसा लेकर घर जाओ। ये लो एक पैसा!’ उसने सौ रुपये का नोट दिखाते हुए कहा।

शूलाजी के चेहरे का भाव बदल गया। दोनों की आँखों में चमक आ गई। फिर वे हँस पड़े।
‘तुम्हें यहाँ के दामों का अंदाज़ा नहीं है! इसके अलावा, हम दोनों को दो अलग-अलग दिशाओं में जाना है। एक और सौ रुपये!’
मुकट द्वारा उसे सौ रुपये और देने के बाद, वे लाल रंग दिखाने लगे। थोड़ी देर बाद, लड़की और लड़का दोनों गाड़ी से बाहर निकल आए। शूलाजी ने कहा, ‘देखो, वह दरवाजे पर बर्तन धो रही है, है ना? वह कटिकाराम की माँ है। लेकिन हमें हमारे नाम मत बताना! तुमने शपथ ली है!’ और वे गली में गायब हो गए। कूड़ेदान के बगल में बैठे हुए, वह बर्तन साफ कर रहे आदमी के पास गया और पूछा, "कटिकरामजी कहाँ हैं?"
'यह ऊपर है!' हटारी ने सतर्क होते हुए सोचा, 'तुम कौन हो?'
‘मैं कार्यक्रम के लिए आई हूँ’ –’ उसने कहा और सीढ़ियाँ चढ़ने लगी। उस तल पर एक हॉल और दो कमरे थे। कार्तिक वहीं था। उसे देखते ही उसके चेहरे पर खुशी और डर का मिलाजुला भाव एक साथ उभर आया। वह वहीं खड़ा रह गया, ‘आओ, बैठो’ कहने की हिम्मत ही नहीं हो रही थी। जैसे ही उसे लगा कि वह थोड़ा सहज हुआ है, उसके मुँह से शब्द निकल पड़े, ‘आओ, बैठो। तुम्हें घर कैसा लगा?’
जैसे ही उसने यह सुना, अंदर से एक महिला बाहर आई। वह उसकी पत्नी ही रही होगी।
वह नज़र आई। गोल-मटोल चेहरा, ऐसा शरीर जिसे नर्तकी की नज़रों में देखना नामुमकिन था, साड़ी जो बाएँ से दाएँ लिपटी हुई थी, गंदी-गंदी साड़ी, पसीने से चमकता काला रंग! किसी कर्तव्यनिष्ठा से भरे कार्तिक ने उन्हें संबोधित करते हुए कहा, 'ये हैं मनोहरी जी, मेरी – मनोहरी दीदी! मैं दिल्ली से आया हूँ। बैठ जाइए दीदी जी –' और फिर उसने औज़ार को हिलाया।
‘दिल्ली से!’ वह चीखी और दरवाजे की ओर दौड़कर चिल्लाई, ‘ओह साजन! तुम कहाँ चले गए? जल्दी भागो! बाबा को बुलाओ! जल्दी आओ, जल्दी आओ। वह दिल्ली से आई है! जल्दी भागो!’ वह वापस अंदर आई और दीवार के पास खड़ी हो गई। उसके चेहरे से साफ पता चल रहा था कि जब तक वह नहीं आएगी, साजन के पिता कुछ नहीं बोलेंगे!
माहौल में तनाव कम करने के लिए, कटिकाराम ने बात शुरू की, 'क्या आपने नाश्ता कर लिया, दीदीजी? क्या दिल्ली में सब ठीक हैं? गुजी कैसी हैं?'
उसी समय, तेल और कालिख से ढका एक सफेद कपड़ा

क्या यहाँ बंदरों का नाच चल रहा है? तुम यहाँ क्यों हो? बूढ़ा जिन्ना टूट जाएगा –’ उसने चिल्लाकर कहा।
मनोहरी का परिवार कहीं बाहर गया हुआ था। सड़क पर भी लोग जमा हो गए थे। उसकी माँ हँसी और इशारे से बोली, 'क्या सच है और क्या झूठ! इतने सालों तक गरीब रहने के बावजूद उसने हमारी मदद की! अब वह हमारे घर आई है! देखो – देखो! कितनी भीड़ है!'
‘मैं आप पर दिल्ली में रहने का दबाव नहीं डाल रहा हूँ। अगर आप इस गाँव में कार्यक्रम चाहते हैं, तो आपको पार आना चाहिए। अगर आप कभी-कभार एक हफ्ते के लिए प्रशिक्षण के लिए आते हैं, तो यह काफी है। अगर आप अभी नहीं आते, अगर आप चले जाते हैं, तो उन्होंने आपको विज्ञापन दे दिया है, वे कैसे चुप बैठ सकते हैं?’
दशरथ को यह समस्या समझ आ गई होगी। उन्हें कोई हल नहीं सूझ रहा था। पत्नी रसोई से बाहर आई और बोली, 'अरे बाप रे! तो मैं भी आपके साथ चलूँगी। कार्यक्रम खत्म होते ही घंटी बजेगी और मैं आपके साथ चली जाऊँगी। क्या यह अच्छा विचार है?'
मनोहरी इस अपमान से स्तब्ध रह गया। तुम क्या समझते हो, इस गाँव की लड़की को! वह क्रोध से भर उठा। वह एक ऐसे बच्चे की तरह सिर झुकाए खड़ा रहा जिसने कोई गलती कर दी हो। यह स्पष्ट था कि उसमें अपनी पत्नी की रक्षा करने का साहस नहीं था। वह पूरी तरह से निराश था।
वह ज़ोर से हंस पड़ी, ‘दशरथ जी, आपने कार्यक्रम क्यों रद्द कर दिया? आप दो हज़ार रुपये लाए थे, लेकिन आपके भाई में फ़ोन करने की भी तमीज़ नहीं थी! कार्यक्रम रद्द करना ही पड़ेगा, मुझे पता है कि खजाने से इस नुकसान की भरपाई कैसे करनी है! ओह! इन निकम्मों से कितना अपमान हुआ!’ वह बाहर चली गई। दशरथ ने भी रास्ते में उन लोगों को आवाज़ लगाई, ‘महोदया के लिए रास्ता बनाइए’। वह भोजन देने के लिए आगे बढ़े; लेकिन उनकी पत्नी उन्हें पीछे खींचती चली गईं, क्योंकि वह यह सज़ा सहन नहीं कर पा रही थीं।
जब टैक्सी आई और चली गई, तो उसने कहा, 'सीधे हवाई अड्डे पर आओ!'
टैक्सी गली से गुज़र रही थी। उसने अपने पूरे जीवन में कभी ऐसी बेइज्ज़ती नहीं झेली थी। वह जानता था कि उसकी पत्नी उस पर अत्याचार कर रही है; लेकिन उसे यह नहीं पता था कि वह इतना डरा हुआ है। उसका क्या होगा! उन लोगों का क्या होगा! साउथ स्टेशन की ओर।

हालांकि मेरे आने से पहले वह तुकमान गेटा के पास रहती थी, फिर भी वह मुझसे कुछ बेहतर थी। दिल्ली और भोपाल का फर्क गलियों में भी दिखता होगा! जिस गली में मुफ्त मनोरंजन मिलता है, वहां कितने लोग जमा हो गए थे! सब मुझे ऐसे देख रहे थे जैसे मैं किसी औरत का पति छीनने निकली हूँ। मैंने उसे दो थप्पड़ भी मारे – लेकिन मुझे उसकी सजा याद आ गई। हे भगवान! इन घटिया लोगों से लड़ना हमारी अपनी बेइज्जती है! हमने वहां से जाने का फैसला किया, यही बेहतर है। टैक्सी बिना ज्यादा शोर किए चल रही थी। अभी पौने ग्यारह बजे थे। फ्लाइट छह बजे थी! उसने इतना समय कैसे बर्बाद कर दिया? उसका रोने का मन कर रहा था, लेकिन उसने खुद को यह कहकर रोका, 'रोना कमजोरी की निशानी है।' उसे हवाई अड्डे पर मक्खियों का पीछा करना याद आया, क्या उसे समझ नहीं आया था कि टेलीग्राम झूठा था? या शायद इसलिए कि वह समझ ही नहीं पाया था?
उन्हें मोहनलाल याद आ गए। वो तो सचमुच हीरो थे! नागपुर से इतनी दूर आए थे। उनकी पत्नी ने उन पर दिल्ली आने का दबाव बनाने की कोशिश की, लेकिन फिर भी उन्हें घर से निकाल दिया। यही तो सच्चा प्यार है! यही तो सच्ची वफादारी है! इस देहाती लहजे में मैंने इस प्यार का अपमान किया – कितना मूर्ख था मैं! पद की तैयारी के अलावा और क्या काम है?
दो घंटे बीत गए। कैंटीन से सैंडविच और सस्ती चाय पीने के बाद, जब वह दफ्तर लौटा तो उसकी निगाहें अनजाने में ही उम्मीद से उसकी ओर मुड़ गईं। उसे पता है कि मैं हवाई जहाज से यात्रा करती हूँ। उसे लगा था कि उसकी पत्नी ने उससे झूठ बोला होगा। जब उसने दरवाजे की ओर देखा तो उसे अपमानित महसूस हुआ और उसकी आँखों में दर्द होने लगा, इसलिए उसने अपनी सीट बदल ली।
घर लौटते समय मेरे मन में यह ख्याल आया, क्या होगा अगर रजत को कृष्ण की भूमिका के लिए तैयार किया जाए? मोहनलाल के बाद, दुगाप्रसाद को क्यों न लिया जाए? मैं मुख्य अभिनेता हूँ! मैं ही वह हूँ जो दूसरों को गौरवान्वित करता है! इस शर्मीले लड़के का अभिनय अच्छा था।
उसे आगे लाया गया। वह इस अवसर का लाभ नहीं उठा सकता, मैं उसके साथ क्या करूँगी?
यह सोचकर मुझे थोड़ा अच्छा लगा। मेरा अहंकार खुश हो गया। रजत को एक महीने तक सुबह, दोपहर और शाम, लगातार मेहनत करनी चाहिए। अगर उसे नौकरी मिल जाती है, तो काफी होगा। अभिनय का काम मैं संभाल लूंगी। स्वतंत्र रूप से काम करने

से कार्यक्रम को और बेहतर बनाया जा सकता है। बस एक ही समस्या है – वह इंजीनियरिंग का छात्र है। कॉलेज और पढ़ाई छोड़कर, वह
उसके माता-पिता उसे अभ्यास के लिए भेजने को तैयार नहीं होंगे। अगर वे उसे कार्यक्रम के लिए हवाई जहाज़ से भी ले जाएं, तो भी वे उसे हर जगह नहीं भेजेंगे; लेकिन कुछ तो करना ही होगा, किसी न किसी से संपर्क करना ही होगा और यह नृत्य कार्यक्रम भोपाल में ही प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
रात में, गु जी के बेढंगे शरीर में पेट में तेज दर्द हुआ। उसे तीव्र पीड़ा हुई, वह सोच रही थी, मैं अस्सी साल से इस व्यक्ति के साथ क्यों सो रही हूँ? जब मेरा मन कहीं और है तो साथ सोने का क्या फायदा? वह ऊपर बड़े पलंग पर गई और सो गई। इस बड़े पलंग पर अकेले लेटना अच्छा लगा। तभी उसे इसी पलंग पर मोहनलाल के साथ हुए यौन संबंध याद आए। उसे अपनी उत्तेजना याद आई। उसका पूरा शरीर जल रहा था।
मैंने मोहन को अपने हाथों से दूर रखा है। हाल ही में, मिल्साहेब आना बंद कर दिया है। उन्हें भी शारीरिक संबंधों में कोई खास दिलचस्पी नहीं है। वे बूढ़े हो रहे हैं। हाली ने बालों में गहने पहनना छोड़ दिया है। 'हमें अपनी उम्र स्वीकार कर लेनी चाहिए', इस तरह की बातें वे कहते हैं। हटारे गुजी तो पहले से ही
यहाँ हथौड़े हैं!
कम उम्र में ही मैंने शादी का प्रस्ताव रखा; लेकिन वह सब कुछ जानता था, है ना? उसने शादी के लिए क्यों हाँ कहा? उसने मुझे इन शब्दों से क्यों फंसाया? 9
गुस्से से उसकी सांसें और भी तेज हो गईं।

सुबह 9:30 बजे एक फोन आया, एक महिला की आवाज थी।
'मैडम, मैं कल पूरे दिन फोन करता रहा। किसी ने फोन नहीं उठाया। मैंने कहा, 'भिगानी संथे की उपाध्यक्ष, डॉ. सरला श्रीवत्था। मैं आपका साक्षात्कार लेना चाहता था।'
"मैं पेप्परवा को इंटरव्यू नहीं दूंगी!" वह हंस पड़ी।
“यह कोई अखबार नहीं है, महोदया! हम एक ऐसा संगठन हैं जो आपको महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों के बारे में जागरूक करता है। हमारा काम चुपचाप किया जाता है। क्या आप साक्षात्कार देना चाहेंगी?”
यदि नहीं, तो भी आपका स्वागत है! हम आपसे मिलकर और आपको अपने संगठन से परिचित कराकर प्रसन्न होंगे।
"जी हां। अगर आपको हम पर भरोसा है, तभी बोलिए। ठीक है?"
मनोहरी ने उसे एक घंटे बाद आने को कहा।
वादे के मुताबिक, वह एक घंटे के भीतर आ गई। उसने एक साधारण सूती साड़ी पहनी हुई थी। उसके शरीर पर बाएं हाथ में चमड़े की बेल्ट के अलावा कोई निशान नहीं था। उसके माथे पर केसरिया या सिंदूर नहीं लगा था। पहले तो मनोहरी को लगा कि वह विधवा है। हालांकि उसका रंग गोरा था, लेकिन उसके चेहरे पर मेकअप का कोई निशान नहीं था। उसके बाल कटवाने का मकसद आधुनिक नहीं बल्कि अनौपचारिक था। उसके हाथ में एक प्लास्टिक का थैला था।
मनोहरी जैसे ही अपने कार्यालय में बैठीं, उन्होंने हमें अपने संगठन के बारे में बताना शुरू कर दिया, "हमारा काम लोगों को इस बात से अवगत कराना है कि घर पर महिलाओं के साथ उनकी माताओं द्वारा कैसा व्यवहार किया जाता है, शिक्षा और रोजगार में महिलाओं के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है, और दुनिया में उनके ससुराल वालों और पतियों द्वारा उनके साथ कैसा व्यवहार किया जाता है।"
उन्होंने मनोहरी के सामने पाँच-छह अंक रखते हुए कहा, ‘इसमें आपको पुराने अखबारों की तरह सनसनीखेज सुर्खियाँ और भड़काऊ लेख नहीं मिलेंगे। हम केवल वही लेख प्रकाशित करते हैं जो सभी पक्षों से परामर्श करने के बाद सड़कों पर घटित घटनाओं का यथार्थवादी चित्रण प्रस्तुत करते हैं। इसका वितरण भी सीमित है। हमारा अखबार कोई लोकप्रिय मासिक पत्रिका नहीं है जो किताबों की दुकानों पर आसानी से मिल जाए! तुम एक टॉर्चर डांसर हो और तुम्हारा नाम लामार है, यह हमारे लिए कोई मायने नहीं रखता। हमें लगता है कि तुम्हारे साथ

अन्याय हुआ है! तुमने गस का ज़िक्र तक नहीं किया, जो तुमसे चालीस साल बड़ा है!’
क्या उन्होंने आप पर इस तरह दबाव डाला? क्या उन्होंने कहा, "जब तक मुझे लाइसेंस नहीं मिल जाता, मैं नृत्य नहीं सिखाऊंगी?" इसी वजह से कला के इस क्षेत्र में महिलाओं का कई तरह से शोषण होता है।
हम यही जानना चाहते हैं। संगीत, नृत्य, साहित्य, नाटक – कला के हर क्षेत्र में यही हो रहा है! इसी संदर्भ में, पत्रकार अपने भाषण को मसालेदार अंदाज में प्रस्तुत करते हैं।
ये महिलाएं भी उत्पीड़ित हैं। वे चालीस साल छोटी हैं।
उन्हें तनिषी के साथ नाचने में कोई बुराई नहीं दिखती! तो फिर दस साल छोटे तनिषी के साथ नाचने पर इतना हंगामा क्यों?
मनोहरी इसे पूरी तरह समझ गई थी।
उन्होंने आगे कहा, ‘अगर पत्रकार सनसनीखेज खबरें छापेंगे, तो चुप रहने से सच्चाई जनता के सामने कैसे आएगी? आपको हमारे अखबार पढ़ने चाहिए, कम से कम उन्हें समझने की कोशिश तो कीजिए। फिर, अगर आपको लगे तो मुझसे बात कीजिए। यही मेरा तरीका है। एक बात पक्की समझ लीजिए, मैं आपकी सहमति के बिना, आपको दिखाए बिना इनमें से कुछ भी प्रकाशित नहीं करूंगी।’
मनोहरी ने उनके बारे में भी पूछताछ की। उन्होंने पीएचडी की थी और लेडी श्री राम कॉलेज में लेक्चरर के रूप में काम कर रही थीं। मनोहरी ने पत्रिका पर सरसरी नजर डाली। उसमें अनावश्यक तस्वीरें नहीं थीं। लेखों के शीर्षक भी भड़कीले नहीं थे। लेखन शैली किसी गंभीर पुस्तक जैसी थी।
मनोहरी को इस बात का पूरा भरोसा था। उन्हें लगा कि इस बारे में अपने दिल की बात कहने में कोई हर्ज नहीं है। ‘बताओ, मुझे बताओ,’ उन्होंने कहा और बताना शुरू कर दिया। सरला श्रीवा भी कलम और कागज लेकर बैठ गईं। माँ, परिवार की पृष्ठभूमि, नृत्य के प्रति उनका गहरा प्रेम, गुजी की बीमारी, उनकी सेवा, बेटी के पास जाने का उनका फैसला, उनकी मन की स्थिति, अब तक जो कुछ भी हुआ था। गुजी ने इस बारे में अपने विचार और मन की स्थिति ठीक से नहीं बताई थी, इस पर उन्होंने विस्तार से बताया, ‘बात यहीं खत्म नहीं होती, मैं अभी भी इंतजार कर रही हूँ!’ उन्होंने ऊपर बताई गई बातें भी बताईं।
‘आपकी अपनी माँ के साथ कैसा रिश्ता था?’

‘उन्होंने ही हमें विधवा के रूप में जीना सिखाया था। हमारे इस फैसले से उन्हें बहुत दुख हुआ। वह अपनी उम्र के किसी व्यक्ति को दामाद के रूप में स्वीकार करने को तैयार नहीं थीं। इससे उनकी मां हमेशा के लिए टूट गईं। अब वह हैदराबाद में रहती हैं और अपने भाई और परिवार पर अपना सारा प्यार और स्नेह बरसाती हैं।’
‘इतनी बड़ी इमारत कैसे बनाई गई?’
'बहुत सारा कर्ज लिया गया है। देश भर में चलाए गए कार्यक्रमों के माध्यम से कई ऋण चुका दिए गए हैं; लेकिन अभी भी बहुत सारा कर्ज बाकी है।'
"क्या तुमने कभी मां बनने की ख्वाहिश नहीं की?" सरला श्रीवा की आवाज ने मुझे अवाक कर दिया।
मनोहरी घुटमळली.
बोलो! तुम ‘बिहानी’ के प्रति अपना मन खोलने के लिए बार-बार इधर-उधर क्यों देख रहे हो?
फिर उसने गर्भावस्था की कहानी सुनाई। गर्भपात कराने का निर्णय और लैंडिंग के मूल कारण का पता न चलना अत्यंत असंभव है।
मुझे आने के लिए कहा गया था।
जैसा कि उन्होंने स्वीकार किया, सरला श्रीवा ने साक्षात्कार की पूरी टाइप की हुई प्रति निकालते हुए कहा, 'टाइप की हुई प्रति को ध्यान से पढ़ें। यह न कहें कि आपने इसे लिखा है और यह गलत छपा है। जो आपको लगता है कि नहीं छपना चाहिए, वह छपना चाहिए।'
इसे नोट कर लें। यह प्रिंट नहीं होगा।'
मनोहरी सोच रही थी कि उसे यह सब क्यों छापना पड़ा? बाद में उसे सब कुछ याद आ गया।
यह सुनकर मुझे बहुत राहत मिली। भला ऐसी बातचीत हम और किससे कर सकते हैं? वह कितनी ज्ञानी भी हैं! वह आपको कितनी अच्छी तरह समझती हैं! वह ऐसा नहीं करेंगी। ऐसा न करने से महिला का दुख ही बढ़ेगा। उन्हें सरला श्रीवा पर दया आई। उन्होंने लेख प्रकाशित करने की सहमति दे दी।
एक सप्ताह बाद, लेख वाला अंक डाक से आया। उसमें दो और लेख थे; लेकिन उन्हें देखे बिना ही उन्होंने वात का साक्षात्कार पढ़ लिया। उन्होंने सोचा, मैं सब कुछ क्यों बता रहा हूँ और शोर मचाने वालों पर क्यों चिल्ला रहा हूँ?

[illegible]
[illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

एक सप्ताह बीत गया। दोपहर का समय था। वह थिएटर में थी। तभी राजी ने आवाज़ दी, 'दीदी, गु जी की बेटी आई है! आपको उसके पिता को लेने आना है। आपको बुलाया गया है।'
काफी देर तक उसे कुछ समझ नहीं आया। गु जी की बेटी जो लिखमपुर में रहती है। माँ आई।
वह बूढ़ी है, लगभग साठ साल की। वह शुरू से ही अपने गुस्से की शिकायत करती रही है। मैंने तुम्हारे पिता को भ्रम के जाल में फंसाकर उनकी सारी प्रतिभा बर्बाद कर दी! उसने उससे यह कहा और चली गई। पिछले बीस सालों में वह विदला से पांच-छह बार मिलने आई है। हर बार उसने कहा है, 'तुम मेरी विदला की ठीक से देखभाल नहीं कर रही हो, तुम उसी हालत में जी रही हो!' और हर बार हटारा ने चुप्पी साध ली है और चुप रही है! कृपया चुप रहो! लगता है उसने अखबार पढ़ लिया है। मनोहरी ने उसे बुलाया है।
उसने कहा। राजी ने यह कहकर उसकी ओर देखा; लेकिन वह हंसते हुए बोली, 'घर तो तुम ही आ रहे हो।'
अब मुझे लगता है कि मेरे पिता और पुत्र मुझसे पूछताछ करने वाले हैं! जो भी हो, होने दो। 'चलो,' उसने रस्सी पकड़े हुए कहा।
घर में कदम रखते ही लड़की फूट पड़ी, "ये क्या बकवास है! माँ, पिताजी, तुम सब गंदी औरतें हो! इस अच्छे परिवार की कैसी औरत अखबार के लिए सब कुछ कुर्बान कर देगी, भले ही वो उसका पति न हो? कैसी पत्नियाँ हो तुम! तुम सब गंदी औरतें हो!"
क्या कोई सच्चा पति अपनी पत्नी को वेश्या कहता है?
‘तो? वो किस बारे में झूठ बोल रहा है?’ उसने हंसते हुए इशारा किया।
मनोहरी को यह सब बेतुका लगा। इस स्तर पर बहस करना स्वयं का अपमान है। उन्होंने सीधे इस विषय पर बात की, 'आप अब क्यों आए हैं?'
‘मेरे पिता के पास आओ। मेरे पास उनके लिए एक उपहार है, जिससे वे मेरे घर में एक बुशेल चावल उगा सकते हैं!’
उसने गुजी की ओर मुड़कर पूछा, "इस बारे में तुम्हारा क्या विचार है?"
‘अगर तुमने इस हाथ का फल खाया, तो मुझे रौरव के नरक में गिरना पड़ेगा। मैं जाऊँगा! मैं यह श्राप देते हुए जाऊँगा कि मैंने जो कला दी है, वह नष्ट हो जाएगी!’

‘देखो, मेरे घर में चिल्लाने की कोई ज़रूरत नहीं है। जिसे जाना है वो चुपचाप चला जाए! राजी, उसके कपड़े और सामान पैक करो!’ राजी वहीं खड़ी रही, खुद उसके कपड़े कमरे से बाहर ले जाते हुए चिल्लाई, ‘क्या तुमने मुझे नहीं बताया था? जिसे जाना है वो चुपचाप चला जाए? मुझे और भी बहुत सारे काम करने हैं!’
लड़की अवाक रह गई। बूढ़ा आदमी भी स्तब्ध रह गया। खुद को संभालते हुए लड़की बोली, 'मेरे पास अपने पिता के लिए दो कपड़े सिलने की ताकत है। ये दो कपड़े मेरे घर का फर्श पोंछने लायक भी नहीं हैं!'
"फिर, बिना कुछ कहे, मैं अपने पिता के साथ चलना शुरू कर देता था।"
ज़मीन पर छोटा सा थैला लिए, लड़की अपने पिता का हाथ पकड़कर चलने लगी। इससे पहले कि वह कमरे से बाहर निकल पाती, गुजी मुड़कर हँसते हुए बोले, 'तुम मुझे भगोड़ा बना रही हो! मुझे घर से निकाल रही हो! मैंने जो भी कलाएँ सीखी हैं, सब नष्ट हो जाएँ - नष्ट हो जाएँ - नष्ट हो जाएँ! तीसरा श्राप सच है! इसके बाद अगर तुम आकर प्रणाम भी करो, तो मैं वापस नहीं आऊँगा!'
जब वह चला गया, तो मनोहरी को लगा मानो उसके मन से कोई बोझ उतर गया हो। वह पिछले बीस दिनों से अलग सो रही थी। उसने यह भी नहीं सोचा था, ‘तुम ऊपर क्यों सो रही हो?’ उसने उसे बताया तक नहीं था। दूसरों के साथ उसका ‘मुझे बताओ और सुनो’ जैसा कोई रिश्ता नहीं था। उसे खुशी हुई कि वह चला गया। उसकी तीसरी गाली का भी उस पर कोई असर नहीं हुआ। वह परशुराम नहीं है और मैं कांग नहीं! मेरा मन कर रहा था कि उसके कपड़ों का गट्ठा इसी पलंग पर रख दूं, उसे इसी चादर में लपेट दूं और अलमारी में छिपा दूं, अब मैं अपने घर में कहीं भी चैन से सो सकती हूं!
अगले दिन, अनाथालय से घर लौटते ही मुझे अकेलापन महसूस हुआ। मोहन चला गया था। थोड़ी झिझकती हुई हटारा बड़े सलीके से घर से बाहर निकली। मैं अकेली थी। अनाथालय में भी अकेली और घर में भी अकेली! हिलती-डुलती भी नहीं, मुझे अजीब सा लग रहा था। खाना खाते हुए मुझे मिल्साहेब की याद आ गई। आजकल वो बहुत कम आने लगे हैं। जी हाँ। पिछले डेढ़ महीने से आए ही नहीं हैं। इस घर के असली मालिक तो वही हैं! मुझे उन्हें फोन करना चाहिए। मुझे उनसे कहना चाहिए, आप घर आ जाइए, ये घर आपका है, किसी की नज़र से मत डरिए। मैं खाना बनाना सीखे बिना ही बड़ी हो जाऊंगी। मुझे मिल्साहेब के प्रति कृतज्ञता का

भाव आया। वो कितने नेक थे! मैंने पढ़ा था कि घर मेरे नाम पर है! वरना हटारा इसे दूसरी लड़की को देकर अपना कर्ज़ चुका देती!
उसने घड़ी देखी, रात के 10:30 बज रहे थे। उसे सुबह फोन करना चाहिए था। उसे पूरी रात बिस्तर पर सोना चाहिए था।
फोन पर श्री मिलसाहेब ने कहा, "अंदर आ जाइए। मैं भी आपसे थोड़ी देर बात करना चाहता हूं।"
‘बस बात करनी है?’ मन में एक अजीब सा सवाल आया, लेकिन उसने इस पर ध्यान नहीं दिया। यह महसूस करते हुए कि फोन पर इस तरह बात करना उचित नहीं है, उसने बस इतना कहा, ‘घर आ जाओ। तुम्हें घर आए कितना समय हो गया है!’
वह घर आया। हालाँकि उसके बाल भूरे नहीं थे, लेकिन सफ़ेद हो गए थे। इससे वह एकांतप्रिय लग रहा था। उसने दरवाज़ा बंद किया और उसे गले लगाया। उसने उसका कोट उतारने में मदद की। गले लगाने और चुंबन पर उसने ठंडी प्रतिक्रिया दी। उसने उसका हाथ पकड़ा और उसे सोफे पर बिठा दिया। उसने इसे एक सुविधा के रूप में लिया - घर उसका है, समय की कोई पाबंदी नहीं है। इसलिए उसे सोने की कोई जल्दी नहीं थी।
तो, वहीं बैठे-बैठे वह हँसते हुए बोला, "मनोहारी, मैंने अखबार पढ़ लिया। तुम इस जाल में कैसे फँस गई?"
किसी से बात करने का मौका मिलना अच्छा लगा। गुहा ने गुजी से मिलने का समय मांगा और वहीं से उसने अपनी कहानी शुरू की; लेकिन वह अटक गया। मोहन की कहानी बिना शक पैदा किए बताना उसके लिए मुश्किल था। यही बात कारकीविश्री के साथ भी हुई। वह एक बात जानता था। ये गृहस्थ बहुत चालाक होते हैं! वे आसानी से सब कुछ नहीं बोलते; लेकिन अगर उन्हें एक भी सुराग मिल जाए, तो वे पूरी बात समझ जाते हैं और उसकी कीमत का सही-सही अंदाजा लगा लेते हैं! ऐसे व्यक्ति के सामने सारी बातें सावधानी से बताने का उसे दबाव महसूस हो रहा था।
उसकी बातें सुनते हुए उसके चेहरे पर सहानुभूति के भाव थे। सब कुछ सुनने के बाद उसने उसके कंधे पर थपथपाते हुए कहा, 'अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो मैं बात करूंगा।'
उसने अपनी उंगलियां उसकी उंगलियों में फंसा लीं और हंसते हुए कहा, "बोलो! यही मुझे ताकत देगा।"
हाँ!

'तुम्हारे और मेरे बीच अट्ठाईस साल का उम्र का अंतर है। उम्र का एक नियम है। हमें उसका सम्मान करना चाहिए।'
‘हमारा प्यार केवल शारीरिक संबंधों पर आधारित नहीं है। मैं तुम्हारा हूँ और तुम्हारा ही रहूँगा। तुम ही मेरी प्रेमिका हो!’
अपने बालों में हाथ फेरते हुए उन्होंने कहा, 'दो कलाकारों के बीच जितना स्नेह होता है, उतना स्नेह एक कलाकार आम लोगों के लिए नहीं रखता। ऐसी अपेक्षा करना कलाकार के अधिकारों का हनन होगा, मैं जानता हूँ!'
‘तुम किस बारे में बात कर रहे हो!’ चूंकि दूल्हे के अभिनय से ही उचित तीव्रता प्राप्त नहीं हो सकती थी, इसलिए उन्होंने इसमें अभिनय का भी समावेश किया।
‘पत्रकारों को आपके निजी जीवन के बारे में लिखने का कोई अधिकार नहीं है। मुझे लगता है कि उन्हें कानूनी कार्रवाई करनी चाहिए और उसे जेल भेजना चाहिए; लेकिन बिना संघर्ष के धुआं नहीं निकलता। क्या आप मोहनलाल से लगाव महसूस नहीं करते थे? इसके बाद क्या आपको कटिकारम के लिए स्नेह का भाव नहीं आया? मैं यह सब आपकी आलोचना करने के लिए नहीं कह रहा हूँ। आपके दृष्टिकोण से, यह एक वास्तविक दुनिया है। यह आपकी दुनिया है। मेरे अनुसार, इस दुनिया से बाहर के व्यक्ति को वहाँ कोई पहुँच नहीं है, और न ही होनी चाहिए; लेकिन व्यवहार-धर्म भी इससे अलग नहीं है! या तो पैसा ढूंढो या हाथी!
उसके लिए उसकी निगाहों में देखना मुश्किल था। फिर भी, उसने कहा, 'आपने मेरे लिए जो भी एहसान किए हैं, वे कभी भी सार्थक नहीं हैं! आप इतने खुले दिल के क्यों नहीं हैं?'
‘उपकार करने में कोई समस्या नहीं है; लेकिन इसके बाद मुझे दूर से ही आपकी कला का आनंद लेना चाहिए था; पर किसी के लिए इतना विरक्त रहना असंभव है। कलाकार के प्रति आकर्षण इस विरक्तता में बाधा बन जाता है। इससे कुछ गंभीर समस्याएं उत्पन्न होती हैं। अगर मेरे पास प्रेम और धन होता, तो मैं भी ऐसा ही व्यवहार करता। आपने मुझसे कभी कुछ नहीं माँगा। मैंने जो कुछ भी दिया है, पूरी तरह अपनी इच्छा से दिया है। वह भी मेरी कुल कमाई का बहुत छोटा हिस्सा है! मैं आपको जानता हूँ। आपमें कोई व्यक्तिगत आशा नहीं है और न ही किसी पुरुष को भ्रम के जाल में फंसाकर अतिरिक्त सुख भोगने की लालसा है। इसीलिए आज भी मेरा विश्वास आप पर बना हुआ है!’

अच्छा लगा। उसने उसे गले लगाया और कहा, "तुम ही हो जो मुझे समझते हो!" यह कहते हुए उसकी आँखों में आँसू आ गए।
अपनी उंगली से आंखों से पानी पोंछते हुए उन्होंने कहा, 'इसीलिए मुझे उम्मीद है कि हमारा रिश्ता इसके बाद भी कायम रहेगा। जब भी तुम्हें मेरी ज़रूरत हो, मुझे पुकार लेना। जब तक मैं जीवित रहूंगा, तुम्हारी मदद करता रहूंगा। ऐसा इसलिए नहीं है कि तुमने अपना शरीर अपने कलात्मक मित्रों को सौंप दिया है; बल्कि इसलिए कि मैं जानता हूं कि तुम्हारा मन भी उनकी ओर झुका हुआ है, इसीलिए मेरे दिल में तुम्हारे लिए कोई प्रेम नहीं है। प्रेम के बिना शारीरिक रूप से तुम्हारे करीब आना मेरी दृष्टि में हीन है। इस घर में केवल शारीरिक सुख ही संभव नहीं है और न ही यह मेरी आवश्यकता है। आज भी मेरा मानना है कि जब तुम पूरी तरह से मेरी थीं, वह मेरे जीवन का सबसे खूबसूरत दौर था।'
उसकी निगाहें ज़मीन पर टिकी हुई थीं, और वो पहले जैसी ही थीं। उसकी नज़रें उसकी गर्दन पर टिकी होने के कारण उसके शब्दों को नकारना उसके लिए नामुमकिन था। लेकिन उसके हाथ पर उसकी पकड़ पहले जैसी ही थी – पंद्रह साल पहले जैसी थी वैसी ही!
वह कुछ कहना चाहती थी। वह कुछ ऐसा कहना चाहती थी, "अपने प्यार की तुलना मोहनलाल और कार्तिक के रिश्ते से मत करो, वह तो बिल्कुल स्पीड की तरह था," लेकिन उसके मुंह से शब्द नहीं निकल रहे थे।

११
मुझे अकेलेपन ने घेर लिया था। थिएटर में रहते हुए मुझे अपना राज़ छुपाना ज़रूरी था; लेकिन जब मैं घर लौटा, तो वहाँ कोई नहीं था।
यह स्थिति क्यों उत्पन्न हुई? यह प्रश्न बार-बार मन में उठता है। इसके बाद, वृ पात्रा जैसे लोगों को यूं ही घूमने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए; लेकिन अगर उन्हें पूरी तरह से अलग-थलग कर दिया जाए, तो नृत्य जगत में अग्रणी बने रहना असंभव है।
उन्होंने कार्तिक को अपने मन से पूरी तरह निकाल दिया था; लेकिन मोहनलाल की यादें उनका पीछा नहीं छोड़ रही थीं। मिलसाहेब ने कहा, यह सच है। कलाकार एक-दूसरे के लिए उतना गहरा प्रेम महसूस नहीं करते जितना दूसरों के लिए करते हैं। छह हज़ार एक रुपये भेजे गए! लगता है इसके लिए एक अच्छा कार्यक्रम मिल

गया है। क्या हमें देवलाली रोड पर कोरेगांव जाना चाहिए? लेकिन मेरे दिल में यह गुस्सा?
एक दिन डाक से श्री संगीत सभा द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम का विज्ञापन आया। मोहनलाल दिल्ली में प्रस्तुति देने वाले थे। टिकट की कीमत, टिकट खरीदने का स्थान और फोन नंबर दिया गया था। इसके अलावा, गायक का संक्षिप्त परिचय भी दिया गया था।
मोहनलाल के गायन करियर के बारे में मुंबई के समाचार पत्रों में व्यक्त की गई कुछ राय यहाँ दी गई हैं, जबकि उस समय तक उन्होंने गायक के रूप में वह मुकाम हासिल नहीं किया था:
साढ़े तीन साल की अवधि में, मैं एक पूर्ण नर्तकी-गायिका और विद्वान बन गई। इसमें कोई शक नहीं कि संगीत की दुनिया से विदा ले चुके पंडित मोहनलाल ने मुंबई के संगीत जगत में बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी वापसी कर ली है। उनका पुनर्जन्म बेहद सशक्त रहा है। ना-संगीत, नृत्य-गायन, ठुमरी-ग़ज़ल जैसी विभिन्न विधाओं में गायन की गहमागहमी के बीच उन्होंने अपने गायन को सार्वभौमिक और विशिष्ट बना दिया है।
यह इंस्टॉल हो गया है!
वृप्त की सादगी को भी छोड़ दें तो मोहनलाल की विद्वत्तापूर्ण रचनाएँ संगीत उद्योग की वापसी संगीत उद्योग में एक महत्वपूर्ण घटना है।
नृत्य के क्षेत्र में उनके अनुभवों ने उनके मूलभूत बंधन को और भी मजबूत बना दिया।
कला के स्तर पर, प्राप्त होने वाले अनुभवों को वर्गीकृत किए बिना, व्यक्ति को इन अनुभवों की भावनात्मक तीव्रता को समझना चाहिए और यह देखना चाहिए कि वे कितने उपयोगी रहे हैं।
इस संदर्भ में, पंडित मोहनलाल का संगीत थ्री एंड ए हाफ इयर्स और थाना ना होने के लिए उल्लेखनीय है।
ऐसा लगता है कि ये छह लोग मजबूत हो गए हैं। इसका कारण यह है कि
संक्षेप में कहें तो, संगीत को नृत्य की दुनिया के साथ सामंजस्य बिठाना चाहिए।
उन्हें लगा कि आयोजकों ने यह आवेदन दुर्भावना से नहीं भेजा होगा। कार्यक्रम का प्रचार करना उनका काम था। जी हाँ। उनका यह कृत्य रद्द कर दिया जाना चाहिए था। पत्रकारों द्वारा आयोजित कार्यक्रम का ज़ोरदार

प्रचार किया गया था! अगले दिन, संगीत सम्मेलन की खबर अखबारों में छपी। इसका मतलब था कि दिल्ली के अखबारों ने भी कार्यक्रम को कवर कर लिया था! एक बार जब सकारात्मक प्रतिक्रिया मिलती है, तो वह अन्य अखबारों में भी दिखाई देती है, उन्होंने भी इसका अनुभव किया था।
उसने इस कार्यक्रम में जाने का फैसला किया। टिकट कहाँ से मिलेंगे? संगीत सभा कार्यालय से? नहीं। वह कार लेकर करोल बाग के कैलाश होटल गई और वहाँ काउंटर से टिकट खरीदे। काउंटर पर एक आदमी के पास एक किलो मिठाई थी। यवहारा उराकावा ने एक टिकट दिया। खुची का नंबर बीच वाली तरफ था। यह भी उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण था।
मैंने सोचा था; लेकिन बैठक में कुछ लोग आपको पहचान लेंगे। पत्रकार तो आपको ज़रूर पहचान लेंगे।
अगले डेढ़ दिन तक वह सोचती रही कि जाए या न जाए। फिर उसने फैसला किया, कोई बात नहीं, उसे जाना ही होगा। वह दुकान गई और एक नकाब खरीदा। निकलते समय उसने अपनी आँखों पर खूब सारा काजल लगाया। उसने ठुड्डी और आँखों के नीचे के नकली तिल हटा दिए। उसने काजल की लाइन को आँखों के बीच से कानों तक फैला दिया। अब उसे नकाब अजीब सा लग रहा था। जब बत्तियाँ धीमी हुईं, तो वह हॉल में गई और बैठ गई। बत्तियाँ पूरी तरह बुझने तक उसने नकाब ओढ़े रखा।
हाँ! आप अपनी मूल शक्ति से चमक रहे हैं! यह न केवल शुद्ध और भावपूर्ण है, बल्कि इसने भावपूर्ण शांति भी प्राप्त कर ली है! जैसे ही यह प्रकाशमान हुआ, वह भावपूर्ण शांति हॉल में फैल गई। जल के समान गहरा - अहम - दूध के समान गाढ़ा - चे:! शांति सफेद, सुखद चंद्रमा की तरह फैल रही है। यहाँ गपशप के लिए कोई जगह नहीं है। फिर कोई आक्रामक बात नहीं होती। बाहर से कुछ भी इस दुनिया में प्रवेश नहीं करता। एक विलंबित गति जो ऐसे अकल्पनीय आंतरिक सार को जीतने के लिए आगे बढ़ती है। शुद्ध! नया नहीं!! शुद्ध कोई शब्द नहीं है! कोई तांडव नहीं है!!
केवल सभा ही उस परम शांति में डूबी नहीं थी, बल्कि पूरा हॉल मशीनों से घिरे एक विशाल गुफा में बदल गया था। कुछ ही क्षणों में मनोहरी को भी यह शांति महसूस हुई। इस मामले को लेकर उनका क्रोध और लालच गायब हो गया और उनके मन में केवल शांति छा गई। काजल लगी उनकी आँखों में आँसू भर आए। अर्धचंद्र की रोशनी में गाते हुए मोहनलाल मंच पर दिखाई दे रहे थे। मनोहरी की आँखें बंद हो गईं।

वह इन आशीर्वादों में पूरी तरह लीन हो गई।
वह उसे एक घंटे तक पीटता रहा और फिर रुक गया। वह उसके पनीर लेने का इंतजार कर रहा था।
जब श्रोता मौजूद थे, तब वह अचानक रुक गया। उसने तबलाजी को मौका ही नहीं दिया। सारी घटना तब शुरू हुई जब उसने अपना सिर घुमाया। यह राग गायन नहीं, मंत्रोच्चार है!
जब उन्होंने गाना बंद कर दिया, तब भी श्रो का मन बांसुरी बजाने का नहीं हुआ। इसके बाद, खमाज गाने के बाद उन्होंने विश्राम किया। लोग चाय लाने के लिए उठे, लेकिन वह नहीं उठीं। वह चेहरे पर नकाब ओढ़े वहीं बैठी रहीं। उनके सामने बेंच पर बैठी दोनों सहेलियाँ भी बाहर निकले बिना बातें कर रही थीं। शरत बर्तन से लाई गई सब्जियाँ खाते हुए बातें करने लगीं।
"अच्छा हुआ कि वह चला गया।"
‘बात सिर्फ इतनी नहीं थी कि उसने गाना छोड़ दिया था। वह तो फेंके हुए जूठे टुकड़े चबाकर गुजारा कर रहा था! वराखचा के हाथ में चार दमार भी नहीं थे। क्या आपको पता है कि अब उसकी विदाई में कितना खर्च हो रहा है? उसे गए पाँच महीने हो गए हैं और इस मुलाकात में उसका पचास हजार खर्च हो गया! हवाई यात्रा का खर्च तो अलग है! उसने इंपीरियल होटल में उतरने का इंतजाम किया था! वह कह रहा था कि कोषाध्यक्ष मेरा सहकर्मी है।’
अंतराल के बाद, उन्होंने ‘शहाना’ शुरू किया। दिल्ली के दर्शकों की नज़र में, यह एक अटूट क्रोध था। इस क्रोध ने उन्हें कुछ हद तक सहारा दिया। ‘अदन’ के उत्साह और ‘दरबारी’ की गंभीरता को दर्शाते हुए, ‘महार’ के भाव के साथ-साथ कठिन समय में उत्पन्न होने वाली बेचैनी और ‘दुःख अंत नहीं है – अगर आप जीते हैं, तो यही जीवन है’ वाली भावना उनके मन में प्रबल होने लगी।
इसे सुनकर वह इतनी प्रसन्न हुई कि उसने धम्म के ऊपरी भाग पर दाहिने हाथ के इशारे के आधार पर उस भावना को आत्मसात करने का प्रयास किया। जब संवादात्मक भावनाओं से भरा क्रोध बह रहा था, तब मुझे अपने हृदय में दृढ़ता से महसूस हुआ - बस यही है! यही वह है जो इतना वास्तविक है! कोई और नहीं है! ऐसा महान कलाकार! वह मेरी हर बात सुनता था! वह पूरी तरह से मेरे वश में था। फिर भी, मेरा हृदय उसकी ओर खिंचा चला गया। इसलिए उसने मुझे सिखाया! मोहन, तुमने सही किया। तुम मूर्ख नहीं हो, तुम एक उदाहरण हो! सिखाना भी एक हद तक गलत होगा, है ना? कृपया। इसके बाद, मेरे नृत्य के लिए मत गाना। अब मेरा घर खाली

है। वहीं रहो। अपनी इच्छानुसार अभ्यास करो। मैं केवल कमरे के बाहर तुम्हारी बात सुनूँगी और मुझे मन की शांति मिलेगी! अपनी इच्छा अनुसार कार्यक्रम तय करो, मनचाहा पैसा लो।
मुझे इससे कोई नया पैसा नहीं चाहिए। आपके रहने, खाने, कपड़े और आश्रय की जिम्मेदारी मेरी है।
मैं यहीं रहूंगी। मेरे पास और कौन है? मिलसाहेब ने जो कहा वो बिलकुल सच है। सिर्फ़ दो कलाकार ही एक-दूसरे से इतना प्यार कर सकते हैं! भारत में कोई और कलाकार ऐसा नहीं है जो भावनाओं का ऐसा सैलाब ला सके! नी पम् पासन! वाह! यहाँ से जाने के बाद, क्या तुम पति-पत्नी के झंझट में नहीं फँसी? गाना खत्म होने के बाद, मैं एक घंटे में इंपीरियल होटल पहुँच जाऊंगी। अगर वहाँ कोई और हो, तो रहने दो। मैं बुर्का उतारकर गाड़ी में ही छोड़ दूंगी। जब हम साथ हैं तो हमें क्या होगा, इस बात से क्यों डरना चाहिए? अगर ऐसे पवित्र क्षण में शहनाई बजती है, तो शुभ होगा और अगर कुत्ता भौंकता है, तो किसी को पता भी नहीं चलेगा!
गाड़ी स्टार्ट हो गई। हवा तेज़ होते ही उसे होश आ गया। मुझे पता है, लेकिन वह कैसा व्यवहार करेगा? अगर वह चार लोगों के बीच अपना अनादर दिखाए तो क्या होगा?
घर जाकर एक घंटे में मुझे फोन क्यों नहीं करते? घर पहुँचकर मैंने मन ही मन सोचा, ऐसे समय में भला क्या हो रहा है?
फोन पर बात करने से और अधिक मनमुटाव पैदा होगा। आपको उस व्यक्ति से आमने- सामने मिलना चाहिए। आपको आमने-सामने खड़े होना चाहिए। आपको उसकी आँखों में देखना चाहिए और उसके अंतर्मन में प्रवेश करना चाहिए! अपने बाएं हाथ से छड़ी पकड़ें, अपने दाहिने हाथ से खंभे को स्पर्श करें। पहले सभी प्रतिरोध को नष्ट कर देना चाहिए। अब अगर मैं इस कमरे में जाऊं तो क्या होगा? गाना खत्म हुए एक घंटा हो गया है। अगर मैं रात 10 बजे के बाद जाऊं, तो मुझे काउंटर पर फोन करके अनुमति लेनी होगी। मेरा नाम सुनते ही वह मुलाकात से इनकार कर देगा! तो क्या?
बिना कुछ मांगे, उसने फ्रिज से रोटी निकाली और बिना गर्म किए ही प्लेट पर फैला दी। नागपुर में सब कुछ कितना आसान था! एक बार रोटी टूट जाए तो कई मुसीबतें खड़ी हो जाती हैं। उसने घड़ी देखी। अब तो ठंड भी उसे फोन करने नहीं दे रही।

दो सप्ताह बीत गए। कोई समाधान नहीं निकला।
सुबह जब मैं थिएटर में थी, तभी मुझे एक फोन आया, ‘क्या आप मुझे पहचानती हैं, दीदी? मैं अवनी अग्रवाल हूँ। आपकी छात्रा। आप मुझे ए. ए. कहकर बुलाती थीं। आप मेरे घर भी आई थीं। आप मेरे घर आई हैं। मैं आपसे मिलने आना चाहती थी। क्या आप आएंगी?’
आप मुंबई में हैं, है ना?
‘धन्यवाद बहन! मैं तुम्हें भूली नहीं हूँ!’
‘आप अभी आ सकते हैं। मैं एक घंटे में खाली हो जाऊंगा।’ यह कहते हुए उन्हें याद आया कि आपको भी गाने में रुचि है। यहीं से बात करते हुए
इस मामले की और अधिक जांच होनी चाहिए और उनके निजी जीवन से जुड़ी खबरें भी सामने आनी चाहिए।
देखते हैं कि यह काम करता है या नहीं।
सभी छात्र जा चुके थे। इतनी बड़ी इमारत में घुटन सी महसूस हो रही थी। अगर मिल्साहेब एक बार भी यहाँ आते, तो ऐसा लगता जैसे मेहमान बनकर आए हों। मोहन तो यहाँ एक महीना भी नहीं रुका। लेकिन कार्तिक तो काफी समय तक रहा। फिर भी उसके मन में कभी यह ख्याल नहीं आया कि यह घर मिल्साहेब का है। क्या होगा अगर वह इस घर को किराए पर देकर यहाँ रहने लगे? आठ-दस हजार रुपये प्रति माह आसानी से मिल जाएँगे। इससे आने-जाने की परेशानी भी दूर हो जाएगी और पेट्रोल का खर्च भी बचेगा। हाँ। यह तो फायदे का सौदा होगा।
अदिति आ गई। छह साल हो गए हैं, है ना? वह उसका अभिवादन करने के लिए झुकी, और उसकी आँखों में दिखने वाली चर्बी साफ नज़र आ रही थी।
'दास भी वीरान लग रहा है!'
‘मुझे लगा था कि तुम नाराज़ होगे! तुमने अपने शरीर पर एक ग्राम भी फालतू चर्बी नहीं बढ़ाई है! तुम इतना डाइटिंग करने की कोशिश करते हो, लेकिन...’’ वह मुस्कुराई और अपने छोटे बालों में उंगलियां फेरने लगी। जब वे दफ्तर में आमने-सामने कुर्सियों पर बैठे, तो उसने अपने ससुराल वालों, पति और बच्चों के बारे में बात करना शुरू कर दिया। उसका एक बेटा और एक बेटी थी। बच्चे को जन्म देने के बाद, उसे लगा जैसे किसी ने उससे कहा था कि नाचते-नाचते थकना नहीं चाहिए।
'तुमसे किसने कहा?'
सभी रिश्तेदार एक ही बात कहते हैं।

‘उन्हें नृत्य के बारे में क्या पता है? अगर वे नृत्य करना बंद कर दें, तो वे वजन बढ़ने से कैसे बच सकते हैं?’
'सच है; लेकिन हाल ही में मुझे गायन में रुचि होने लगी है। मैं उनके किसी भी कार्यक्रम को नहीं छोड़ती। मुझे महाराष्ट्र के शास्त्रीय गायन में अधिक रुचि है। आजकल मैं सप्ताह में दो दिन सीखने जाती हूँ। मैं मोहनलाल जी से मिलने गई थी। बात करते-करते वह सतर्क हो गईं और बोलना बंद कर दिया।' मनोहरी ने सोचा, 'मैग? क्या वे तैयार हैं?'
उन्होंने मुझे गाने के लिए कहा। मुझे इसमें ज्यादा दिलचस्पी नहीं थी। सुनने के बाद उन्होंने कहा, ठीक है, जब समय मिलेगा तो मैं सीख लूंगा - लेकिन पहले मुझे किसी शिक्षक से कुछ प्रारंभिक तैयारी करनी होगी।
इस अवसर का लाभ उठाते हुए मनोहरी ने उसके बारे में पूछताछ की। इस दौरान अदिति ने कहा, 'मुझे उसकी पत्नी के बारे में कुछ नहीं पता। क्योंकि वह उसके साथ नहीं रहती। वह खरार में एक छोटे से घर में रहती है। वह हाल ही में वहां रहने आई है।'
इससे पहले वे देवलाली के पास एक घर में रहते थे।
मनोहरी को अच्छा लगा। यह पत्नी इस कोने में नहीं रहना चाहती थी!
उससे उसका फ़ोन नंबर और पता लेना आसान है; लेकिन उसे सब कुछ पता है। इसलिए, उसे जल्दी से जल्दी पता लगाना होगा!
अदिति चली गई। मनोहरी ने फिर से घर किराए पर लेने के बारे में गंभीरता से सोचना शुरू कर दिया; लेकिन अब इसका कोई मतलब नहीं था। वह अपनी पत्नी के पास नहीं गया! उसे आसानी से दिल्ली लाया जा सकता है। क्या पति-पत्नी के बीच कोई झगड़े नहीं होते? मैं जाकर उसके लिए खड़ा होऊंगा। मैं यह भी कहूंगा, 'आपने इसके लिए गुजी को उसकी बेटी के पास भेजा था।' शिव के बिना, करियर के लिहाज से दिल्ली मुंबई से बेहतर कैसे है, यहां से पूरे उत्तर भारत-कलकत्ता- पंजाब-राजस्थान में आसानी से कैसे जाया जा सकता है, यहां से राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलनों में भाग लेना कैसे सुविधाजनक है, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कैसे भाग लिया जा सकता है, आदि। मैं उसे यह कहकर मना सकता हूं, 'मेरे नृत्य के लिए मत गाओ - अगर मैं उससे कहूं कि मैं तुम्हारे गीत की पूजा करूंगा, तो वह क्यों नहीं करेगा?'

१२
एक तरफ तो गुजी के जाने से हल्कापन महसूस हुआ, दूसरी तरफ बेहद निराशा भी हुई। इसी वजह से खान-पान की नियमितता खत्म हो गई थी। रोज़ाना योगाभ्यास करना भी उबाऊ लगने लगा था। मन में ये ख्याल घर कर गया था कि ‘अगर मैं मशीन की तरह काम करता रहूँ तो क्या होगा?’ और इसी वजह से मेरे शरीर में आलस आ गया था। मिल्साहेब के जाने के बाद तो ये हीन भावना और भी बढ़ गई। कभी-कभी कार्तिक के जाने पर मुझे दरवाजे पर आए नर्तक का निमंत्रण ठुकराना पड़ता था क्योंकि उसके पास कोई साथी नहीं होता था। रिहर्सल के दौरान होने वाली उलझन की वजह से मुझे लग रहा था कि मेरे शरीर की फुर्ती कम हो गई है; लेकिन मोहनलाल के गाने सुनकर वो फुर्ती फिर से बढ़ने लगी। उन्होंने तो गाना पूरी तरह छोड़ दिया था, लेकिन उन्हें इतनी शक्ति के साथ गाते देखकर ऐसा नहीं था कि मेरे मन में कोई इच्छा जागी हो। उनके शक्तिशाली गाने सुनकर मुझे लगा कि यही मेरी प्रेरणा है! जिस तरह उन्होंने गायन में महारत हासिल की, उसी तरह हमें भी नृत्य में ईश्वर को खोजना चाहिए! जिस सत्य को वह नादम में पाता है, वही सत्य हमें नृत्य में पाना चाहिए।
वह सुबह उठा और योगासन करने लगा। शुरुआत में, कुछ आसन शरीर पर जमा चर्बी को कम करने में मुश्किल पैदा कर रहे थे। उसे यह चुनौतीपूर्ण लगा। उसने धीरे- धीरे बीस सुनयनम आसन किए। उसने खुद से कहा - तीन दिनों में सारे कठिन आसन पूरे हो जाने चाहिए! आईने के सामने खड़े होकर उसे लगा कि अगर थोड़ा सा भी वजन कम हो जाए, तो उसका वजन काफी कम हो जाएगा।
शरीर की शक्ति कितनी जल्दी कम हो जाती है! आज ही मुझे जय वाला को अलविदा कहना होगा। हर शाम मुझे कम से कम एक घंटा नाचना पड़ता है! लगता है किसी गायक को इसकी ज़रूरत नहीं होती। मोहन यहाँ आने के बाद कुछ दिनों तक प्राणायाम करता था, लेकिन बाद में उसने छोड़ दिया।
मोहन का पता और फ़ोन नंबर मिल गया। 'मैंने नाम बदलकर श्री की सचिव रखने का सोचा। फ़ोन नंबर नहीं है। चिट्ठी लिखना ठीक रहेगा; लेकिन क्या लिखूँ? क्या यह प्रेम पत्र है?' वह असमंजस में थी। तीसरे दिन उसने फैसला किया कि वह उसे यह बात समझाएगी। वह लिखने बैठ गई।
“क्रोध पर कोई काबू नहीं पा सकता। बड़े-बड़े ऋषि-मुनि भी ऐसा नहीं कर पाए हैं। मैं इस हाना पचपा की आग में जल चुका हूँ। माँ केली, अगर मैं तुम्हें

फोन करके इतना भी बता दूँ तो काफी है—आदि।” उन्होंने लिफाफा बंद कर दिया; लेकिन उसे डाक में डालने की हिम्मत नहीं हुई। उन्होंने एक और पत्र लिखा, “मैं ‘श्टी’ कार्यक्रम में आया था। बुर्का पहनकर! ताकि हम दोनों को पत्रकार परेशान न करें! आप मेरी गुरु हैं। यहाँ आइए। गुरु तो लड़की के पास गए हैं। मिल्साहेब भी नहीं आ रहे हैं। मैं कमरे के बाहर आपका गीत सुनूँगा—आदि।” दूसरा पत्र बहुत लंबा था।
एक हफ्ते तक खूब सोच-विचार करने के बाद, मैंने ये दोनों पत्र मेलबॉक्स में डाल दिए। दो दिन तक मैं फोन से दूर नहीं हुई, इस उम्मीद में कि पत्र पहुँचते ही मुझे कॉल आ जाएगा। फिर
मैं खुद से यही कहती रही – मुझे डाकघर पर भरोसा नहीं है। चिट्ठियाँ देर से पहुँचती हैं।
यदि शिवय यात्रा पर गया होता, तो उसे पत्र कैसे प्राप्त होते? इत्यादि। दो-तीन दिन, एक हफ्ता बीत गया है। क्या हमें फोन करना चाहिए? नहीं। अगर उसने मुझे चिट्ठी नहीं लिखी होती, तो यह खुद को और भी कम आंकने जैसा होता। इसके बाद, उसने इसे अपने दिमाग से निकालने की कोशिश शुरू कर दी। सबसे पहले उसने हाथ उठाया, मैंने उसे अंगूठा ऊपर करके इशारा किया, बस इतना ही। असल में, उसने मेरा कार्यक्रम ही बदल दिया।
सब कुछ बर्बाद हो गया था। हर दिन जब वह चिट्ठी खोलती थी, तो उसे जो निराशा होती थी, वह धीरे-धीरे कम होने लगी। बाद में, चिट्ठी खोलने से पहले वह खुद से कहने लगी, 'आज चिट्ठी नहीं आएगी।' जब वह देखती कि कोई चिट्ठी नहीं है, तो उसे लगता, 'मैं क्या सोच रही थी!' धीरे-धीरे यह भी बंद हो गया। उसे सिर्फ थिएटर की मालकिन बनकर नहीं रहना चाहिए, बल्कि नाचते रहना चाहिए, उसे किसी और पर निर्भर हुए बिना अपना काम खुद संभालना चाहिए, सिर्फ सीखने वाले लड़के-लड़कियां ही मदद के लिए उसके पास आएं। ढांचा भी उसके हिसाब से चुना जाना चाहिए।
उसने इस निर्णय के अनुसार अपने जीवन की योजना बनाना शुरू कर दिया।

१३
निमंत्रण पत्र आया। समाचार पत्रों में भी यह खबर छपी थी। दिल्ली की ठुमरी सभा ने भारत के पांच अलग-अलग स्थानों पर ठुमरी गायकों के गायन का कार्यक्रम आयोजित किया था। इस कार्यक्रम में गिरिजा देविंसारा जैसे गायकों के नाम भी शामिल थे, जिन्होंने लोक गायन में ख्याति अर्जित की थी। मनोहरी इस कार्यक्रम में तीसरी बात देखकर हैरान रह गई। गु-सोहनलाल जी का 'भाव-बताव'! उनका दिल्ली आना न सिर्फ चौंकाने वाला था, बल्कि उनकी नज़र में चिंताजनक भी था। यानी, वे 'दिल्ली में कदम न रखने' का वादा किए बिना नहीं गए! उनके लिए एक जगह बैठकर बिना किसी झिझक के अपनी भावनाएं व्यक्त करना आसान है; लेकिन अगर यह बात न होती तो कार्यक्रम सुचारू रूप से चलता। शुशा त्रिया
ठुमरी, संगीत की तरह, नृत्य को नई ऊर्जा देती है। हर धुन, शब्दों का हर समूह, कभी-कभी तो सिर्फ एक शब्द भी, उसमें अर्थ के विभिन्न रंग बिखेरने का अवसर पाता है। उन्हें याद आया कि गुजी ऐसे भावों को व्यक्त करने में बेहद दृढ़ थीं। उन्होंने ठुमरी सुने हुए बहुत समय हो गया था! ऐसे में भी, इस कार्यक्रम को छोड़ना खेदजनक होता जिसमें महान देवी गिरिजादेवी उपस्थित थीं! वास्तव में, गुजी का भाव-प्रधान प्रदर्शन तो सबसे आगे की पंक्ति में ही देखने को मिलता! लेकिन अगर कोई कठोर पत्रकार इतना लिखता, तो वह इस अखबार में मेरी तस्वीर लगाकर इसे एक हल्की सी हेडलाइन में नहीं बदलता।
मोहनलाल के कार्यक्रम के दौरान खरीदा हुआ घूंघट उसने निकाला और तीसरी पंक्ति के बीच में एक कोने में बैठ गई। घूंघट के कारण कोई उसे पहचान नहीं पाया। मोहनलाल के कार्यक्रम के दौरान उसे जो डर, गुस्सा और बेचैनी महसूस हुई थी, वह अब गायब हो गई थी। हॉल दिल्ली से आए ठुमरी प्रेमियों से भरा हुआ था। कुछ लोहे की छड़ें भी फेंकी जा रही थीं।
वह गुजी को देखने के लिए उत्सुक था। घर छोड़ने के बाद उसने उसे न तो फोन किया और न ही चिट्ठी लिखी। उसकी बेटी उसे धमकाकर मेरे पास लाने की धमकी देने आई थी। गुस्सा तो उसी को आया! पता नहीं अब वह विदाला का ख्याल कैसे रखती होगी! मेरी भी गलती थी। मुझे उसे हर महीने कुछ पैसे भेजने चाहिए थे; लेकिन मैं उस आदमी की मदद क्यों करता जिसने उसे 'भिखारी' कहा था?

प्रस्तुतकर्ता ने ठुमरी गायन के बारे में भी थोड़ी जानकारी दी और कहा कि यह कार्यक्रम ठुमरी के विकास के लिए है। सबसे पहले बृजनारायण ने ठुमरी गाना शुरू किया। उनका मन ठुमरी के भाव में डूब गया। उन्होंने ठुमरी के प्रत्येक शब्द का अर्थ समझाना शुरू किया, उन्होंने यह प्रेम गीत गाना शुरू किया। उन्हें दृढ़ विश्वास हुआ कि प्रेम गीत के बिना रस संभव नहीं है। वे कमरे में इधर-उधर घूमने लगीं और शब्दों के बारे में सोचने लगीं। वे आँखों और भौहों के बारे में सोचने लगीं। उनके मन में जो डर था कि कोई उन्हें पहचान लेगा, वह पूरी तरह गायब हो गया।
कुछ घंटों बाद बनारस के विनय वर प्रसाद मंच पर आए। उनका परिचय शिश्री वर देवी के शिष्य आसा ने कराया। वे अच्छा गा भी रहे थे! ये तो कुछ भी नहीं! गाना तो ठुमरी है! शास्त्रीय संगीत में ठुमरी जैसी भावनाओं की गहराई कहाँ मिल सकती है? यही तो तपस्या की कला है! सचमुच। इसीलिए इतने लंबे-लंबे पत्र लिखने के बावजूद इस बदमाश ने न तो एक पत्र लिखा और न ही एक फोन किया! कुछ नहीं! ये लोग तो सिर्फ अपने आप में ही खुश रहते हैं! दूसरों के सुख-दुख से इन्हें कुछ लेना-देना नहीं। अहंकारी!
तीसरे कलाकार, गु सोहनलालजी का नाम घोषित हुआ और जैसे ही वे मंच पर आए, पूरा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। उन्हें अपने सीने की धड़कन महसूस हो रही थी। वे थोड़े थके हुए लग रहे थे। उनके कपड़े में उनके पैर और तलवे सूखे-सूखे लग रहे थे। उनके हाथों की हड्डियाँ साफ दिखाई दे रही थीं। उनके सिर पर सफेद कोट पुराना था। उन्होंने इसे खुद सिला था। उन्होंने इसे अच्छी हालत में रखा था।
मंच पर आते ही वे पहले की तरह पद्मासन में बैठ गए। साहिबिसंग केजरीवाल भी उनके साथ गायन में शामिल हो गए। पिछली पीढ़ी के एक प्रसिद्ध गायक, गु जी के अच्छे मित्र, सारंगी और तबला वादन कर रहे थे। गु जी ने अपने कंधों पर ओढ़े शॉल से अपने पैर और ठोड़ी ढक ली। कथावाचक ने कहा, ‘गु सोहनलाल जी, जो एक लड़की से शादी करने के लिए दिल्ली छोड़कर चले गए थे, आज पहली बार दिल्ली आए हैं! पूरे भारत में कोई दूसरा नर्तक नहीं है जो अभिनय के माध्यम से अर्थ और भाव व्यक्त करने की उनकी क्षमता की बराबरी कर सके! वे आज दिल्ली के लोगों को इस उम्र में भी अर्थ और भाव व्यक्त करने की अपनी शक्ति दिखाने आए हैं!’ इसी समय गिरिजादेवी हॉल में आईं, पहली पंक्ति में बैठ गईं और बोलीं,

उन्होंने विनम्रतापूर्वक गु जी से हाथ मिलाया। गु जी ने भी इसे स्वीकार किया और उनका अभिवादन किया।
साहिबियों का गायन सु था। गुरुजी ने अभिनय करना शुरू कर दिया।
‘ आई बादरा–’
यही एक तरीका था जो उन्हें आता था। बुढ़ापे में भी साहब इतने भावपूर्ण ढंग से गाते थे! उभरी हुई हड्डियाँ, आँखों के आसपास बिखरे बाल, गर्दन के आसपास की ढीली त्वचा और आँखों के ऊपर के चमकदार बाल उनके चेहरे को, जो उनकी उम्र से कहीं अधिक बूढ़ा दिखता था, भावपूर्ण बना देते थे। उनके हाव-भाव भी उपयुक्त थे। मुझे लगा जैसे गुजी बहुत जवान हों।
आकाश से उतरकर बंजर हो चुकी धरती को शांत करने आए बादलों को उन्होंने अपने अभिनय से कितनी सहजता से चित्रित किया! गिरिजादेवी और सिसरे वारीदेवी ने एक साथ गायक के अभिनय की प्रशंसा की। बादल मंत्रमुग्ध हो गए। गायक की आवाज राग के अनुसार बदल रही थी और उनका अभिनय भी! या वे अभिनय के अनुसार गा रहे थे? ऐसा लग रहा था मानो वे एक ही गीत गा रहे हों, क्योंकि गुजी के सामने माइक्रोफोन लगा था। वे उस एक पंक्ति को कितने अलग-अलग तरीकों से गा रहे थे! बादल आपस में टकरा रहे थे, भय पैदा कर रहे थे और आंखों को चकाचौंध कर रहे थे! हवा की ठंडी बयार मन को सुकून दे रही थी। गर्मी थम गई और राहत की सांस ली गई। एक के बाद एक भावों के विभिन्न रंगों को दर्शाते हुए, उन्होंने पहले बादलों में दिखाई देने वाले का यभोर का किरदार निभाया, और फिर भैरवी की भावुक अवस्था को, जिससे प्रेमियों के दिलों में संदेह के कई रंग उठ खड़े हुए! जुदाई के कितने रंग! बादलों से बरसती जलधाराओं ने दिल की गर्मी को कम नहीं किया, बल्कि इसके विपरीत, दिल में पनपी विरह की गर्मी ने आँखों में पानी ला दिया! एक पंक्ति में कितना अर्थ छिपा है! इसके अलावा, अनगिनत सूक्ष्म अर्थ छिपे हैं। अगर हम उन्हें गिनते, तो पच्चीस या उससे भी अधिक अर्थ निकलते। कौन जाने इस अभिनय प्रतिभा में कितने और अर्थ छिपे हैं! उन्होंने मुझे ये सब बातें भी सिखाईं; लेकिन मैंने इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया।
इन सभी बारीकियों को सिखाना असंभव है! मैं इस प्रतिभा का ऋणी हूं।
चलिए कोशिश करते हैं। ये अस्सी साल के गु जी, जिनकी मूंछें और टेढ़ी नाक है।

जब कृष्ण यमुना नदी के किनारे इस निर्भीक धारा में बहते हुए आते हैं और राधा को एक कठिन परिस्थिति में पाते हैं, तो राधा की भावनाओं का कितना सुंदर चित्रण किया गया है! बस अद्भुत! उनका मन देवी के प्रति विस्मयकारी भाव से भर गया था।
सभी प्रेमी दंग रह गए और उनका प्रदर्शन रुक गया! गिरिजादेवी और सिसरे वारीदेवी खड़ी हो गईं और बोलीं, 'अद्भुत!'
मनोहरी पूरी तरह बेहोश हो गई थी। वह उठी और मंच की ओर दौड़ी। मंच की सीढ़ियाँ चढ़ते समय उसने मंच का पर्दा गिरने नहीं दिया। सबने उसे पहचान लिया। मंच पर पहुँचकर उसने गुजी के दोनों पैर कसकर पकड़ लिए और चिल्लाई, 'गुजी, मुझे माफ़ कर दीजिए! मैं आपको जाने नहीं दूँगी। आप मेरे घर के मालिक हैं! अगर आप नाराज़ हुए तो नाराज़ होकर चले जाइए!'
बिना माइक्रोफोन के भी उनकी आवाज पूरे हॉल में गूंज उठी। दस-बारह कैमरों की फ्लैश चमकी और उन्होंने उस दृश्य को कैद कर लिया। माइक्रोफोन ने उनकी आवाज को दूर-दूर तक पहुंचाया।

१४
तीन साल बीत चुके हैं। अब यह पैंतालीसवाँ साल है। रोज़मर्रा के कामकाज में कोई खास मुश्किल नहीं है। कक्षाएं लगती हैं, रिहर्सल होती हैं। यात्रा भी होती है। नृत्य कार्यक्रमों की वजह से समय बहुत जल्दी बीत जाता है।
लेकिन कभी-कभी एक रात ऐसी भी आती है जब बिना किसी कारण के नींद नहीं आती। शरीर थका हुआ होने के बावजूद, आँखें बंद नहीं होतीं। अगर कोई सपने के सच होने के दौरान जाग जाए,
इससे कोई नुकसान नहीं होता; लेकिन इस बारे में सोचें कि आपको क्या मिल रहा है और क्या खो रहा है।
जब नींद आती है और शांति भंग हो जाती है, तो अकेलेपन की भावना हमारे साथ बनी रहती है।
मनोहरी ने गुजी को घर बुलाया था, फिर भी उसने ज़मीन पर अकेले सोने का प्लान बना लिया था। वह खुद को समझा रही थी कि जब शारीरिक आकर्षण और प्यार दोनों खत्म हो चुके हैं, तो साथ सोने का कोई मतलब नहीं। उसने कभी यह भी नहीं कहा, “यहीं सो जाओ। चलो, जब तक नींद न आ जाए, बातें करते हैं।” वह इस नतीजे पर पहुँची और बोली कि मैंने जो भी इंतज़ाम किए थे, वे उसके अधिकार का हिस्सा थे, और इस तरह वह अपनी ज़िम्मेदारियों से मुक्त हो गई!
मैं भी उनके फोन का इंतज़ार कर रही थी, कौन जाने! यहाँ आने के बाद भी उनकी प्यारी बेटी ने मुझे फोन नहीं किया! उन्होंने मुझे कभी नहीं बताया कि उन्होंने तुम्हें इस घर में कैसे रखा है। मैंने ऐसा क्यों सोचा? ऐसा लगता है जैसे वो किराया देने के बजाय घर को अपने लिए ही रख रहे हों। दस हज़ार रुपये महीना किराया, घर की देखभाल के लिए नौकरानी की तनख्वाह, बिजली का बिल
- सारे बिल बढ़ते चले गए और मुझे बहुत बुरा लगा, मैं कर्ज़ के इस भावनात्मक भंवर में कैसे फंस गई!
इस बार तो पत्रकार वहां बैठकर तस्वीरें ले रहे थे! यही सबसे बड़ी खबर है। केली पेप्परवा! मानो ऐसी ही किसी घटना का इंतज़ार कर रहे गुहा तुरंत मौके पर पहुँच गए और 'पागल! पागल!' शीर्षक से एक बड़ी खबर छाप दी। इसमें मेरे साथ एक छोटी बच्ची जैसा बर्ताव किया गया। अगर मैं फ़ोन पर लड़ाई लड़ने जाती, तो कैसे कह पाती, 'मैडम, मुझ पर भरोसा कीजिए! एक हफ़्ते इंतज़ार कीजिए!' सचमुच, इन सभी बड़े अख़बारों ने 'पागल!' शीर्षक से लेख छाप दिए।

फिर एक दिन उन्होंने मुझे फोन किया और थिएटर में आकर बोले, ‘लगता है तुम्हें इसका मतलब समझ नहीं आ रहा! इस लेख में तुम्हारा ‘छोटी लड़की’ वाला ज़िक्र भी बहुत अहम है। योग के ज़रिए तुमने जो शरीर संवारा है, वही तुम्हारी सबसे बड़ी खूबी है! हर कोई तुम्हें लड़की ही समझेगा। चाहे तुम थोड़ी सनकी ही क्यों न हो जाओ। सनकी होना भी एक कलाकार का स्वाभाविक गुण माना जाता है। यकीन मानो, इन बीस सालों के बाद भी तुम बीस साल की डांसर ही रहोगी! मैं तुम्हारे ऊपर एक सचित्र निबंध लिखने जा रहा हूँ। मेरी मदद करो, देखते हैं मैं तुम्हें देश की नंबर एक डांसर बना पाता हूँ या नहीं!’ "चिंता मत करो! मैं इस दोहरे अर्थ में नहीं फंसना चाहता।"
“वह कदम पीछे छूट गया है, महोदया! और आपको यह मानना ही होगा कि इससे आपको लाभ हुआ है!” बाद में वह उसे घर ले आया। उसने वृ गु के पैरों, पीठ, उसे खाना खिलाते हुए, उसे कुर्सी पर बिठाते हुए, उसे नृत्य सिखाते हुए कई तस्वीरें लीं और “परंपरा में गहरी जड़ें जमाए एक पागल लड़की का निजी जीवन!” शीर्षक से एक लंबा लेख लिखा। उसने सुबह के योगासन, नृत्य, गुरु सेवा, और नृत्यशाला में नृत्य प्रशिक्षण के प्रमाण के माध्यम से नृत्य को योग की ऊंचाइयों तक ले जाने वाले एकमात्र नृत्य शिक्षक जैसे विषयों पर लेख लिखा। उसने बिना किसी शोध के यह लेख लिखा। अन्य समाचार पत्रों ने भी इस लेख की सामग्री प्रकाशित की है।
तो इसका इस्तेमाल करें और अपनी रिक्त जगह भरें।
परिणामस्वरूप, हिंदुस्तान के भक्तों को इस नृत्य की महानता का एहसास होने लगा! उनका नाम सरकार के उच्च अधिकारियों की नजरों में भी आया। उन्हें राष्ट्रीय कार्यक्रमों में अवसर मिलने लगे। फिर उन्हें राज्य सरकार की ओर से भी महत्वपूर्ण समारोहों के निमंत्रण आने लगे।
जल्द ही मनोहरी दास एक हिप-हॉप कलाकार बन गईं और सरकारी विभाग और एयरलाइंस भी उन्हें नृत्य के लिए बुलाने लगीं। उनके नृत्य कौशल और उनके बारे में लेख सरकारी और एयरलाइंस की चमकदार पत्रिकाओं के पहले पन्नों पर छपने लगे। इन तीन सालों में कितना फर्क आ गया! और फिर भी यह अकेलापन!
मुझे गुजी से जरा भी प्यार नहीं है। मुझे उनसे कभी कोई अपनापन महसूस नहीं हुआ। मैं दीवानी क्यों बन गई? कला के प्रति अपने जुनून को वास्तविक जीवन में मोड़कर मैंने सारे पुराने बोझ अपने ऊपर क्यों ले लिए? मेरी राय में, क्या कला में निहित भावना ही एकमात्र सच्ची चीज है? वरना, कला के लिए मैं

अपने हाथों से ही चिपकी रहूँगी और अपनी माँ से दूर हो जाऊँगी - भला कौन समझदार लड़की ऐसा करेगी?
मैं एक पागल लड़की हूँ, जैसा कि गुहा कहती है, यही सच है!

□□

□□□□ □□□□, □□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□, '□□□□□□□□, □□□□□□! □□□□□ □□□□□, □□□□□□ □□! □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□?'

□□ □□□□□ □□□□ '□□□□' □□□□ □□□□□□ □□, □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□! □□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□, □□□ □□ □□□□ □□□, '□□□!'

"□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□?"

"□□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □ □□□ □□? □□□ □□□□ □□?"

‘□□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□,’ □□□□ □□□□

◌□.’

"□□□□ □□, □□ □□□! □□□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□?"

□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□, □□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □ □□□ □□□

□□□□ □□□□□ □ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□

□□□□□ □□ □□□, □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□, □□□□

"□□□□ □□□ □□ □□□□," □□□□ □□□□ "□□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□"

□□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□, □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□, □□ □□ □□□ □□□□, '□□ □□□□! □□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□!'

□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□, '□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□?'

□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□, "□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□!"

"□□□, □□□□□□□□!" □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□

‘□□ □□□– □□ □ □ □□!’

□□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□, □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□

□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□

लेकिन वह सतर्क थी। ऐसी स्थिति में भी, वह महसूस कर सकती थी कि उसका मन इस ओर नहीं झुक रहा था। वह हंसते हुए बोली, 'गुहाजी, आप मुझसे दस साल छोटे हैं!' नहीं। तुम मुझसे दस साल छोटे हो। मुझे पता है तुम्हारे राज़ सिर्फ राज़ ही हैं। मैं तुमसे शादी करूँगी!
‘सच में?’ उसने सीने पर हाथ रखकर, आँखें चौड़ी करते हुए सोचा। उसने भौंहें चढ़ाईं। मौका देखकर वह हँसी, ‘चलो चलते हैं, तुम तो एक जवान आदमी के लायक भी नहीं हो!’
'झूठ मत बोलो! कटिकारम तुमसे दस साल छोटा था, है ना?'
वह चुपचाप खड़ी हो गई। हंसते हुए बोली, 'लेकिन मेरा इससे या उससे कोई लेना- देना नहीं है। आपने ये झूठ प्रकाशित करके मेरा अपमान किया है!'
‘सचमुच?’ का विचार अब गायब हो चुका था।
‘तुम्हारा रास्ता!’ उसने उसके सिर पर हाथ रखा और हंसते हुए कहा, ‘तुम मेरे छोटे भाई हो। तुम अकेले रहते हो! अगर तुम मुझसे शादी करोगे, तो मैं तुम्हारे लिए एक अच्छी, प्यारी लड़की ढूंढूंगी और तीन महीने में तुमसे शादी कर लूंगी! इस बार, मैं नई लड़की के लिए साड़ी पहनूंगी।’
मुझे यहां आकर बहुत खुशी हो रही है!
फिर भी, वह कड़वाहट से हँसते हुए बोला, "मैं इस उम्र के अंतर में विश्वास नहीं करता।"
‘तुम्हें विश्वास नहीं है, लेकिन इससे कोई बच नहीं सकता। सच्चाई समय और लय में निहित है। क्या तुम सहमत नहीं हो? मुझे अपना चेहरा दिखाओ! मैं सीख लूंगा। मैं समझ गया।’ फिर उसने हल्के से उसके गाल पर थप्पड़ मारा।
उसका चेहरा लाल हो गया। उसने कहा, "आपने ही तो मुझे पढ़ाने का अधिकार दिया था।"
आप हैं। ‘मैं तुमसे प्यार करता हूँ’ कहना! प्यार, प्यार होता है। प्यार, प्यार और सच्चाई है। यशोदा भी शरारती कृष्ण को इसी तरह थप्पड़ मारती थीं, आपको पता है ना?
उसने कहा, 'माफ़ कीजिए।' उसने कहा, 'क्या! कृष्ण आकर अंग्रेज़ी में मदद कैसे मांग सकते हैं? उन्हें हिंदी या ब्रजभाषा में बताइए। नहीं तो संस्कृत में बताइए!'
वह उठ खड़ा हुआ। उसे प्रेस कॉन्फ्रेंस में जाने की याद आई। उसने कहा, 'तुम कब वापस आओगे? मैंने अंग्रेज़ी में एक लेख लिखा है। तुम्हें उसे देखना

चाहिए! अब से मैं तुम्हें सिर्फ़ एक बार ही फ़ोन करूँगी!' फिर उसने उसकी पीठ थपथपाई।
उसके जाते ही उसने राहत की सांस ली। इस पत्रकार के साथ रिश्ता बनाए रखने में जोखिम तो है; लेकिन वह तो अब निराशाजनक साबित हो चुका है! उसे सावधान रहना होगा कि यह रिश्ता हाथ से न निकल जाए। है ना मुश्किल! बस उसे बड़ी बहन की भूमिका निभानी है! चाहे कुछ भी हो जाए।

नौ

१
वह गहरी नींद में सो रहा था। फोन की आवाज से उसकी नींद खुली। यह उसका फोन था।
उसने दीपक उठाया और उसे जलाया। ठीक है।
‘नमस्कार, मोहनजी! मैंने आपको गलत समय पर जगा दिया, क्षमा करें! मैं आपको बताना भूल गई थी कि नृत्य के बाद रात्रिभोज है। राजदूत और उनकी पत्नियाँ रात्रिभोज के लिए आ रहे थे। फ्रांसीसी, इतालवी – पाँच लोग थे। इन पाँचों देशों से निमंत्रण मिलने की संभावना है। देखिए – क्षमा करें – मैंने थोड़ी सी बात कह दी, लेकिन फिर भी आप इस पर हँसी नहीं उड़ा सकते! अगर आप चाहें तो मुझे मैडम कह सकते हैं, मैडम, लेकिन मैं आपको मोहन कहूँगी! मेरा अंतर्मन कह रहा है कि आप हर चीज़ के लिए तैयार हैं, पेरिस। अब तक मेरे अंतर्मन की आवाज़ वहाँ नहीं गई है। मैं उन्हें आपकी सहमति के बारे में बता दूँगी। ठीक है?’
उनकी बातें सुनते हुए मैं लगातार सोच रहा था, "इससे पांचों राजदूतों के साथ मेरी घनिष्ठता बढ़ रही है! अगर मैं पेरिस जाता हूँ, तो यूरोपीय देशों की यात्रा करना आसान हो जाएगा। इस अवसर को क्यों गंवाना चाहिए?"
सुनो, मैं इस नृत्य का गायक नहीं हूँ। पहले मैं आधे घंटे गाऊँगा। उसके बाद मैं लय बढ़ाऊँगा और जो चाहूँगा वो करूँगा, तुम जैसे चाहो नाचो। मेरा नाम सबसे पहले आना चाहिए। मुझे किसी विदेशी से कोई मतलब नहीं है। मैं अभी-अभी ढाई महीने अमेरिका में बिताकर लौटा हूँ।
'मान लो महाराज, सब कुछ मान लो! आपका नाम पहले आएगा, वो भी मैं आपसे बड़ा गाउन पहनने को कह रहा हूँ; लेकिन पहले आपको एक हफ्ते तक साथ में अभ्यास करना होगा। आपको साथी चाहिए; लेकिन आपको उनके लिए धीमे गाने का अभ्यास करना होगा, है ना? धन्यवाद मोहन, धन्यवाद! रात रुकने के लिए माफ़ करना! क्या मैं इसे रख लूँ? शुभ रात्रि!'
मुझे याद आया कि अठारह साल पहले मैंने उनके साथ बागेश्री की रस्म अदा की थी। मुझे जम्हाई आई। अगर मैंने सुबह फोन किया होता तो क्या होता? उन्होंने दीपक बुझा दिया।

लेकिन एक बात बिलकुल सच है! दिल्ली में दूतावासों, राजदूतों, सांस्कृतिक विभागों, सरकारी परिषदों से संपर्क करना आसान है। मुंबई में ऐसा नहीं है। यहाँ बैठकें सार्वजनिक होती हैं। लोग छोटे-मोटे उपहारों के साथ बैठकें करते हैं। इन लोगों को कलाकार की बेबसी पसंद नहीं आती। जनता को भी बेबस कलाकार पर तरस आता है। इसके विपरीत, दिल्ली में सब कुछ अलग है! यही सोचकर उसने फिर से नींद को अपनाना शुरू कर दिया।

२
मैंने बारह साल तक प्यार और स्नेह जैसी इन भावनाओं का कोई कारण नहीं बताया और अब क्या हुआ? उन्होंने पेरिस कार्यक्रम करने की अनुमति दे दी है। शायद इससे पुहा के साथ मेरा रिश्ता फिर से मजबूत हो जाएगा! यह कार्यक्रम मैंने नहीं बनाया है। इसे कला विभाग ने बनाया है। उन्होंने मुझसे भारतीय कला और संस्कृति को प्रदर्शित करने के लिए तीन घंटे का कार्यक्रम प्रस्तुत करने की मांग की है। इतने महत्वपूर्ण कार्यक्रम के लिए मैं और किसे चुनूँ? अगर विदेश जाना ही है तो पहल तो करनी चाहिए थी! उन्होंने भी इसे स्वीकार कर लिया है। वह आएंगे। यहाँ प्रशिक्षण होगा। वह मेरे दोस्त, मेरे साथी बनेंगे। मैं अपनी बातचीत से यही चाहती हूँ।
इस मुकाम तक पहुंचना संभव होना चाहिए था; लेकिन इस संबंध में कहीं भी कोई समाधान नहीं निकलेगा।
ध्यान से!
मोहन, दिल्ली पहुँचने की आपकी क्या योजना है? फ्रेज़ियर परिवार पाँच सितारा होटल में ठहरने के लिए तैयार है; लेकिन आपके थिएटर में तो मेहमाननवाज़ी ज़बरदस्त है! अगर आप वहाँ पहुँचते हैं, तो आप खूब रिहर्सल कर सकते हैं। है ना?
"क्यों? जो लोग होटलों पर इतना खर्च करते हैं, वे टैक्सियों पर इतना खर्च तो नहीं करेंगे, है ना?"
'जी हां, बिल्कुल! लेकिन जब मेरे पास अपनी कार है तो आप टैक्सी क्यों लेंगे?'
उनके साथ तालमेल बिठाना आसान था। वे अपने सहकर्मियों के साथ बहुत सहयोगी थे। वे बिना किसी आनाकानी या बहस के दिए गए सुझावों और सलाह को स्वीकार कर लेते थे।

उन्होंने रचना की कलात्मकता को बढ़ाने के लिए इनमें से कुछ मौलिक अवधारणाओं को शामिल किया।
गाड़ी चलाते समय, वह आसानी से अपना हाथ उसकी गोद में रख देता था, और वह भी बिना हिचकिचाए उतनी ही सहजता से उसे स्वीकार कर लेती थी। होटल पर उतरते समय, वह पूछता, 'आज सुबह इतनी दूर गाड़ी क्यों चला रही हो? मैं टैक्सी से आ जाऊँगा!' बस इतना ही। उसने उसे कभी अपने कमरे में नहीं बुलाया।
उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह कितनी दूर तक जा सकता है। क्या यह सिर्फ एक वित्तीय घोटाला है? क्या उसने अभी तक तुम्हें मारा नहीं है? या उसकी मर्दानगी खत्म हो गई है? उसके युवा महिलाओं से कुछ संबंध जरूर रहे होंगे। इसी कारण
तो ये सभी लैटिनो अकेले रहते हैं। गायन क्षेत्र में लोग बोलते हैं, वे शारीरिक रूप से मौजूद होते हैं।
इस गीत में रिश्तों की ही ऊर्जा है! किसी ऐसे व्यक्ति से दोबारा जुड़ना बेहद जरूरी है।
क्या यह अपने आप को इतने निचले स्तर तक गिराने जैसा नहीं होगा?
मेरा मन पूरी रात तड़पता रहा। मैं यह सुनिश्चित करूँगी कि वह एक बार मेरे पास आए, और किसी दूसरी स्त्री के पास न जाए! उसकी नज़र इस शुभ सुगंध से मिली। एक बार उसने मुझे बताया था कि उसके जाने के बाद से वह कितनी दुखी थी। उसने मुझे कटिकाराम के जाने के बारे में बताया, उसकी शर्म के बारे में बताया – लेकिन इस तरह से कि यह न लगे कि उसका उससे कोई शारीरिक संबंध था! उसने मुझे मिल्साहेब के जाने की घटना के बारे में भी बताया। गुजी के जाने और उसे इतने भावुक होकर घर वापस लाने के बारे में भी बताया; लेकिन उसने यह नहीं कहा कि उसका मन उसके लिए तड़प रहा था। क्या मुझे यह स्पष्ट रूप से बताना ज़रूरी है?
उसे समझ आ गया होगा। वह उसकी हर बात सुन रहा था, बस इतना ही।
इसमें किसी भी प्रकार की नमी नहीं मिलाई गई।
पेरिस की यात्रा में उनके साथी साधारण थे। लेकिन उन दोनों के बीच एक विशेष रिश्ता था। इसलिए, रात में ट्रेन में एक अतिरिक्त सीट पर सफर करते हुए, उसने अपना हाथ अपने कंबल में डाल दिया। उसने उसे थामे रखा; लेकिन वह हिला नहीं। फिर भी, वह उसे छोड़े बिना सो गई। वह अंधेरे में काफी देर तक बाईं ओर खिड़की से बाहर देखता रहा। फिर किसी तरह वह भी सो गई।

३
कार्यक्रम उम्मीद से कहीं अधिक सफल रहा। पाहाची तोड़ी, सन्याकालची भूपली, मायारात्रिची मलक्षम जैसे रागों के गायन और नृत्य प्रदर्शनों के माध्यम से व्यक्त भावों की उस दिन के कला प्रेमियों ने खूब सराहना की। कार्यक्रम में संगीत मधुर था। मोहन मुख्य कलाकार थे, जिसके कारण उनका मूड भी अच्छा था। वे प्रसन्न भी थे। इसके बाद, पाँच दिनों तक उन्होंने सुबह अन्य कलाकारों के साथ चर्चा की और दोपहर और शाम को अन्य पारंपरिक गीत सुने।
वे दोनों साथ-साथ इधर-उधर भटक रहे थे। वे एक ही होटल में, अगल-बगल के कमरों में ठहरे थे। उसने उसे अपने कमरे में आने के लिए आमंत्रित नहीं किया, और वह भी नहीं गई।
शादी से एक दिन पहले कोई कार्यक्रम नहीं था। दोनों साथ में नदी किनारे टहलने गए। नदी के किनारे बगीचे में टहलते हुए उसने कहा, 'पेरिस में प्रेमी जोड़े और हनीमून मनाने वाले आते हैं। क्या आप यह जानते हैं?'
तो क्या? हनीमून मनाने वाले जोड़े को भी प्रेमियों में नहीं गिना जाना चाहिए?
उसे थोड़ी निराशा हुई क्योंकि उसकी बातें अपेक्षित दिशा में नहीं गईं। क्या वह गलत रास्ते पर जा रहा था? उसने ठान लिया, वह आज हार नहीं मानेगा! "जो लोग यहाँ आते हैं, वे प्रेमी बन जाते हैं! पुराने प्रेमी भी पेरिस आते हैं और अपने प्यार को फिर से जगाते हैं! क्या आप यह जानते हैं?"
‘कुछ और! और क्या!’
उसकी जिद और भी बढ़ गई।
जब वह रात को अपने कमरे में जाता था, तो वह उसके पीछे-पीछे जाती थी।
‘अगर यहाँ पीने को नहीं है तो यहाँ आने का क्या फायदा? लोग कहते हैं कि उसे इसकी बारीकियों का पता नहीं है, वो असली कलाकार नहीं है! अगर मैं तुम्हें इसका स्वाद नहीं चखाऊँगी, तो मैं तुम्हें पेरिस ले जाऊँगी! इसलिए मैं तुम्हें इस कमरे में ले आई हूँ। हालाँकि मुझे पता है कि तुम्हें इसमें ज़्यादा दिलचस्पी नहीं है!’
उसने मेज पर हाथ रखा। उसने दो मध्यम आकार की शराब की बोतलें, एक लज़ान्या और एक शैम्पेन निकाली। ‘यह एक खास फ्रांसीसी शराब है। यह ज़्यादा मीठी नहीं होती! लेकिन यह वाली थोड़ी मीठी है। मैं भी इसे पी लूँगा। मुझे

दोस्ती बढ़ाने के लिए इसकी ज़रूरत है! निजी बातचीत के लिए यह बहुत ज़रूरी है!’
"यह मत सोचो कि मुझे इस मामले में बिल्कुल भी अनुभव नहीं है, भले ही मुझे इसकी आदत न हो!" हनत ने डांटते हुए कहा।
कुछ घूंट पीने के बाद, उसके व्यवहार में मौजूद अकड़ और झिझक कम हो गई। उसने उसे चूमा, और उसने भी जवाब दिया। वह उत्साहित महसूस कर रहा था। उसने सोचा, 'सच बताओ, मोहन! क्या तुमने मुझे चोट पहुँचाई?'
‘अरे! तुमने तो मुझे सम्मोहन की अवस्था में घर से बाहर निकाल दिया, अब तुम इस बात की शिकायत क्यों कर रही हो? मुझे तो तुम्हारा शुक्रिया अदा करना चाहिए था! अगर तुमने ऐसा न किया होता, तो मैं वहाँ से बाहर नहीं आती और दोबारा स्वतंत्र रूप से गाना शुरू नहीं करती! मनोहरी, मैं तुम्हारी बहुत-बहुत आभारी हूँ-’ हनत ने उसे गले लगा लिया।
मुझे नहीं लगता कि आपने मेरा पूरी तरह से सम्मान किया है!
'क्रिटा मेरे लिए एक कदम आगे का सॉफ्टवेयर है, है ना?'
‘तो फिर तुम ऐसा क्यों नहीं करती?’ उसने पहल करते हुए सोचा, और उसने भी मना नहीं किया। दोनों ने खुद को गर्म कंबलों में लपेट लिया।
लेकिन वह सफल नहीं हुआ। असंतोष दिखाए बिना, उसने प्रेम से उसकी उत्तेजना बढ़ाने लगी, 'चिंता करने की कोई बात नहीं, मोहन! शरीर अक्सर मुझे धोखा देता है; लेकिन मैं तुम्हें चाहती हूँ।'
मुझे आपकी दया की आवश्यकता है। अगर आज नहीं तो किसी और समय!
फिर उसने मन ही मन सोचा, ‘पता नहीं क्यों, क्या तुम गुस्सा नहीं होतीं? मुझे पता है तुम्हारे कई प्रेम प्रसंग हैं। क्या यह सच है? इसके लिए मैं भी तो जिम्मेदार हूँ! मेरे इतने मूर्खतापूर्ण व्यवहार के बाद भी तुम कुंवारी कैसे रह सकती हो? या मेरे प्रति तुम्हारे इस गुस्से ने स्थिति को और बिगाड़ दिया और इस प्रक्रिया में तुमने सब कुछ खो दिया?’
उसकी आवाज में कोई भावना नहीं थी, केवल दर्द था।
वह हँसते हुए बोला, 'मेरे दिल में भी तुम्हारे लिए प्यार जागा है! लेकिन तुम भी तो बूढ़ी हो गई हो! तुम मुंबई आई थीं, रास्ते में तुमने मुझे चूमा था! मुझे पंद्रह साल पहले तुम्हारे होठों का स्पर्श याद है! हम दोनों में कितना फर्क था!'

बैठने की इस मुद्रा से खुद को संभालते हुए उसने सोचा, 'इससे क्या फर्क पड़ता है?'
‘किसी की त्वचा एक जैसी नहीं होती। हर त्वचा अलग और अनूठी होती है। ठीक वैसे ही जैसे हर व्यक्ति की उंगलियों के निशान या आवाज अनोखी होती है! लेकिन इन होंठों की कोमलता पंद्रह साल पहले क्यों गायब हो गई और ये रूखे क्यों हो गए? मुझे ये अजीब लगा। आप अपने शरीर का, गर्दन की त्वचा का, अपने वजन का बहुत ख्याल रखती हैं। आप योग से अपने शरीर को फिट रखती हैं। इस बार तो आपने अपने बालों को भी इस तरह से रंगा था कि वे प्राकृतिक लगें। आपने बालों के पतलेपन को छिपाने के लिए उन्हें सुंदर कर्ल भी दिए थे; लेकिन उम्र को कौन रोक सकता है?’
‘क्या? क्या तुम मुझे कायर कहना चाहते हो?’
मैंने आपको अपने विचार बता दिए। मैंने भी यही सोचा था कि जो पेरिस आते हैं, वे प्रेमी बन जाते हैं। क्या ही हैं वो फ्रांसीसी महिलाएं! उनका रंग, उनकी चमक! भले ही वे अभिनेत्रियां, नर्तकियां या गायिकाएं न हों, फिर भी एक सच्ची फ्रांसीसी महिला को देखकर पहचाना जा सकता है। मुझे कहना होगा कि यहां इन महिलाओं को देखकर मुझे भूपली की बहुत याद आई! वह एक फ्रांसीसी महिला है। उसके पिता ब्रिटिश हैं और उसकी मां पूरी तरह से फ्रांसीसी हैं! ‘कोण ही भूपाली?’
‘मैंने ही उसका यह नाम रखा था। वह अमेरिका में मेरे साथ थी। भूपली राग की खुशी और हंसी का एक अंश उसमें समाया हुआ है! जब मैं पहली बार उसके पास गई, तो मुझे तुम्हारी याद आ गई! तुम्हारा शरीर, पतली भुजाएँ और टांगें, तुम्हारा स्वतंत्र स्वभाव! लेकिन जब मैं तुम्हारे साथ रहती थी, तब तुम सैंतीस साल की थीं। वह अट्ठाईस साल की है! ये सब ऐसे हुआ-’
वह बोलता रहा। लेकिन वह पूरी तरह से अवाक थी।
अब मैंने उसे कला विभाग में छात्रवृत्ति के लिए अमेरिका भेजने का फैसला किया है। मुझे अपना सहमति पत्र चाहिए था। दो-तीन साल के लिए। आजकल मुझे किसी भी छात्र को कक्षा के बाद रुकने के लिए कहना अच्छा नहीं लगता। मुझे समझ नहीं आता कि मुझे ऐसा क्यों करना चाहिए। उसका पत्र सामने आ गया है। एक बार मैंने यह अनुभव कर लिया है, तो मैं किसी और को छूना नहीं चाहती। अच्छा हुआ कि वह आ रही है! नहीं तो मुझे अपना अमेरिकी पासपोर्ट बनवाना पड़ता!

धीरे-धीरे उसने बोलना बंद कर दिया। वह सो गया। वह बेचैन हो गई थी। नींद में ही उसने उसे अपनी छाती से लगा लिया और बोली, 'हम्म - ओह माय गॉड! अब मैं चैन से सोऊंगी! हम्म, बोलना बंद करो - तुम क्यों बोल रहे हो?' तभी वह अचानक रोने लगा।
उसने हल्के से खुद को खोल लिया और बिना कपड़े पहने ही अपने कमरे में चली गई और दरवाजा बंद कर लिया।
सुबह, रिसे शिन-तान की आवाज़ से उसकी नींद खुली। उसे याद आया कि उसे जाना है। उसका शरीर और मन अभी भी भारी था। वह उठा और नहाया। उसने कमरे को थपथपाया। उसने दरवाज़ा नहीं खोला। वह अकेले नाश्ता करने चला गया। उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था। वह चाय पी रही थी, मानो उसे देख ही न रही हो।
उसे कुछ समझ नहीं आया। जब तक वह पहुँचा, उसका खाना गायब हो चुका था।
‘ये औरतें कुछ नहीं समझतीं – कभी ऐसे बर्ताव करती हैं, कभी वैसे!’ उसने मन ही मन सोचा और रोने लगा। होटल से एयरपोर्ट जाते समय भी वह चुप रही। यहाँ तक कि जब उसने अपना हाथ उसकी गोद में रखा, तब भी वह बिना कोई प्रतिक्रिया दिए खिड़की से बाहर देखती रही।
एयरपोर्ट पर अपना सामान धकेलते हुए, उसने अपने बैग से अपना टिकट निकाला और कहा, "चेक-इन करें और अपनी मनपसंद सीट ले लें।"
‘क्यों? आप चेक इन करें। वे दोनों बात कर रहे थे-’
नहीं! मैं अकेले यात्रा करना चाहता हूँ। यह दिल्ली से मुंबई का फ्लाइट टिकट है। दोनों हवाई अड्डों पर कोच की सीटें खाली हैं। नहीं तो, टैक्सी ले लो!
अचानक क्या हो गया? इन महिलाओं को कुछ पता नहीं है। वह गुस्से में बोला, 'तुमने पेरिस से सीधे मुंबई का टिकट क्यों नहीं लिया? तुम बार-बार इस एयरपोर्ट को क्यों बदलने की कोशिश कर रही थी?'
"ये मेरा सिर नहीं है! समझ गए? माफ़ कीजिए!" उसने अपना सामान उठाया और चली गई।
पीछे बनी आकृति को देखकर मुझे लगा कि ये महिलाएं बहुत बुद्धिमान होंगी! नहीं तो, इनकी पत्नियां क्यों होतीं?

दस

१
मैं सुबह नहाने के बारे में सोच ही रहा था कि फोन की घंटी बज गई।
'नमस्कार, गु जी! भूपली बोल रहा हूँ! परसों रात 11:30 बजे, यानी बुधवार को, मैं मुंबई पहुँच जाऊँगा। बत्ती मुझे संख्या बता रही है, उसे लिख लीजिए। आप इस बत्ती के पास ही हैं।'
कृपया मुझे इस होटल में आपके लिए एक कमरा बुक करने को कहिए। मैं आज शाम तक वापस आ जाऊँगा।
कैरेन को फोन करो। मुझे इस होटल का नाम, पता, फोन नंबर आदि बताओ।
“हाय भूपली! इस महीने मैं बच्चे की देखभाल खुद करूंगा। मेरे मरने तक मेरे साथ रहना!” वह बहुत खुश था।
तुम मुझे इतना परेशान क्यों कर रहे हो!
‘समस्या क्या है? इसके विपरीत, आपके आने से सारी समस्याएं दूर हो जाएंगी!’ ‘थँ यू, गु जी! थँ यू!’
मैं हवाई अड्डे पर रहूंगा। रात के इस समय आपको अकेले मेरी जगह ढूंढने के लिए इधर-उधर नहीं भटकना चाहिए।
‘थँ यू! थँ यू, हेरी हेरी मच!’
नहाते समय मैंने सोचा, क्या मैंने कुछ ज़्यादा ही उत्साह दिखा दिया? अगर नहीं, तो मैं यहाँ तीन साल तक अपने अपार्टमेंट में रहूँगी; लेकिन उसके आने तक हमें एक महीने साथ रहना होगा, जो कि बहुत बड़ी बात है! मेरी माँ भी इससे बंधी हुई है।
मैं रात को होटल जाता, पूरी रात आराम करता और सुबह ग्यारह बजे उठता।
यह 10:00 बजे आता। फिर शाम तक आपको शांति मिल जाती। मीच उ साहा या भरत ने कुछ भी स्वीकार नहीं किया। पुहा ने बिना फोन किए होटल बुक कर लिया।
अगर मैं तुम्हें बता दूं तो क्या होगा? लेकिन उसने अपना नंबर नहीं दिया।
इस बार राजाराम ने उसे फोन किया।
यह पैसों के बारे में सोचने जैसा था। उसे न्यूयॉर्क और अन्य जगहों पर एक कमरे में बंद रखना कुछ हद तक गलत था। उसे मुंबई में इसके बारे में बात करने की क्या ज़रूरत थी? सिवाय इसके कि
अगर मैं सोफे पर बैठी रहूंगी तो दूसरी लड़कियां प्रतिक्रिया देंगी।

लेकिन अपने देश के बारे में आपकी भावनाएँ वास्तव में क्या हैं? क्या आप इससे प्यार करती हैं? अमेरिका से आने के बाद से, आप किसी के करीब आने की इच्छा नहीं रखतीं। इस तरह का लगाव, अविवाहित रहने की यह इच्छा अच्छी नहीं है। कहीं आप इस जाल में न फँस जाएँ! अमेरिका में बहुत से लोग शादी किए बिना साथ रहते हैं, भले ही उनमें गहरा प्यार हो। यह अमेरिकी महिला भी शायद इसी वजह से इस व्यवस्था को आसानी से स्वीकार कर लेगी; लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा कि उसके मन में क्या चल रहा है? क्या वह मुझसे प्रभावित है या मेरे देश से? यह समझना ज़रूरी है। क्योंकि दोनों में अंतर है।
स्नान करते हुए, सरवती की तस्वीर और ताम्बो का हाथ हिलाकर अभिवादन करते हुए, आँखें बंद करते समय उनके मन में यह विचार आया, "भूपाली के रहने का इंतज़ाम कहीं बाहर करना चाहिए! नहीं तो उसे हवाई अड्डे जाना ही होगा, इस बार वह कुछ ज़रूरी बात बता सकता है।" इस विषय को पूरी तरह से समाप्त करने के बाद, उन्होंने आँखें बंद कर लीं, सतासुरों की मूर्ति को अपने सामने लाया और मन ही मन तीन बार प्रार्थना की, 'ज्ञान प्रबल हो - वह ज्ञान आसानी से प्रकट हो, उसे लुप्त होने की शक्ति मिले।' उन्होंने सरवती की उस तस्वीर को अपने मन में बसाया, जिसके चेहरे पर माँ का प्रेम और उनके चेहरे के चारों ओर ज्ञान का प्रकाश था। उन्होंने आँखें बंद कर लीं और तब तक ध्यान करते रहे जब तक कि वह तस्वीर उनकी बंद आँखों के सामने प्रकट नहीं हो गई। थोड़ी देर बाद, उन्होंने चारों ओर देखा और रसोई में चले गए। उन्होंने कॉफ़ी मेकर में दूध डाला, चाय बनाई, बिजली की केतली में पानी डाला, स्विच ऑन किया और बिस्तर पर लेट गए, अपने लबादे और पजामा पहनते हुए, तभी घंटी बजी।
कौन हो सकता है? आज पढ़ाने के लिए किसे आमंत्रित किया गया था? यही सोचते हुए उसने दरवाजा खोला।
मधुमिता दरवाजे पर खड़ी थी!
‘अरे मधु! न कोई पत्र, न कोई फोन, न ही अलविदा! तुम इस तरह कैसे आ गईं?’
यह दुल्हन का समर्पण है, जीवन भर के समर्थन की उम्मीद का एहसास। हालाँकि मैं ऊपर देखना चाहती थी, मेरा चेहरा शर्म से लाल हो गया था! मैं सब कुछ भूल गई। कयानी! मेरे मन से सब कुछ गायब हो गया था।
‘अरे, चा! तुम दरवाजे पर क्यों खड़ी हो? अंदर आओ! कब आई? तुमने मुझे फोन क्यों नहीं किया? अगर मैं गांव गाने गई होती, तो तुम्हें देर हो जाती!’ उसने अपनी छड़ी पकड़े हुए और उसी का अभिनय करते हुए कहा।

उसके दाहिने हाथ में एक प्लास्टिक की थैली और बाएं हाथ में एक हैंडबैग था। अंदर आते ही उसने दोनों को ज़मीन पर रख दिया और सीढ़ियों पर अपना माथा टिकाकर बैठ गया।
समर्पण और निष्ठा की इसी भावना ने उनके जीवन को सुखमय बना दिया। यही सच्ची निष्ठा है! और पढ़ें
उसके प्रति इतनी श्रद्धा किसी में नहीं! जैसे ही उसने अपना सिर उठाया, उसने बिना किसी परवाह के उसे गोद में उठा लिया। उसके सीने से लगाए हुए उसके गर्मजोशी भरे आलिंगन की याद उसके शरीर और मन में उमड़ पड़ी। उसका हृदय आनंद से भर गया। उसने उसकी ठुड्डी ऊपर उठाई और अपने होंठ उसके होंठों से मिला दिए।
लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। उसका चेहरा उतर गया। वह हमेशा दुल्हन ही रहती है! उसकी सुंदरता ही उसका आभूषण है। चाहे कितनी भी बार उससे संपर्क किया जाए, वह हमेशा सुंदरता से घिरी दुल्हन ही रहती है! यही उसका संवाद साथी है। यही उसका अटल रवैया है। यही तो असली वजह है! यमन
इसमें कोई अर्थ नहीं है। का यानी मूल नाम है, वही मूल भाव है। कर्नाटक संगीत में।
‘क्यानी को पुकारा गया है, यही अंतिम शब्द है। अब से मैं तुम्हें क्यानी ही पुकारूंगा! तुम उस क्यानी राग में इस प्रेम की साक्षात मूर्ति हो जिसे हम दोनों ने साथ मिलकर प्रस्तुत किया था! दुल्हन!’
उसका अभिमान, मानो उसके अभिमान के बोझ तले दबकर, फिर से डूब गया।
‘क्या हाल है? चलो, शुरू करते हैं। हम लॉस एंजिल्स में हर दिन साथ में ऐसा करते थे, है ना? यहाँ तो ऐसी चीज़ें ज़्यादा नहीं हैं।’
वह ये दोनों चीजें लेकर रसोई में आई। उसके दाहिने हाथ में फलों से भरा थैला था। उसने सारे फल निकाले और परोसने वाली थाली में कुछ अंगूर और सेब रखे। ऊपर से कुछ सूखे मेवे भी डाले। अपने सामने एक भरा हुआ कटोरा रखते हुए उसने सोचा, 'टोस्टर कहाँ है? इससे टोस्ट नहीं बनता।'
यह अचानक हुआ। अगर वह नहीं आता तो मैं उसे यह नहीं देती! मेरा पेट भारी था फिर भी मुझे खाने की इच्छा हो रही थी। वह टावर निकालता है और कहता है, 'यह क्या है! तुम भी इसे ले लो।'
'नहीं।' उसने यह कहते हुए इसे इधर-उधर फेंकना शुरू कर दिया कि यह मेरा है।

मिश्रित फलों का एक चम्मच खाते हुए मुझे यह ख्याल आया कि कुछ समय पहले तक मेरा मन, जो ‘भूपली! केवल भूपली!’ कहता था, अब ‘कयानी! केवल कयानी!’ कहने लगा है। यह कैसे संभव है? मुझे बाद में याद आया, ऐसा हमेशा होता है, है ना? जब भूपली क्रोध मन में होता है, तो कोई दूसरा क्रोध उसमें प्रवेश नहीं कर सकता, और एक बार मन कयानी क्रोध से भर जाए, तो वह किसी और को उसमें प्रवेश नहीं करने देता। क्या ऐसा होना आवश्यक नहीं है? अन्यथा क्रोध शुद्ध कैसे रह सकता है?
चाहे कुछ भी हो जाए, उसे होटल तक छोड़ देना ही बेहतर होगा। अगर वह बाद में किराए के फ्लैट में रहने चली भी जाए, तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा। वह अमेरिकी है। वह एक निश्चित समय पर आएगी और एक निश्चित समय पर जाएगी। वह यहाँ दो या तीन सप्ताह के लिए है। इसलिए वह सुबह और शाम को वहाँ रहेगी। तब तक, उसे सप्ताह में तीन दिन, सुबह आठ से नौ बजे के बीच फोन करना चाहिए। यह सोचकर उसे लगा जैसे वह किसी मुश्किल से बच गया हो।
‘क्यानी, मैं तुम्हें बताना चाहती हूँ कि घर छोड़ने के बाद से, और अमेरिका छोड़ने के बाद से भी, मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है! तुम इकलौती छात्रा हो जो मेरा नाम याद रख सकती हो! चलो, कैसेट रिकॉर्डर कहाँ है?’
मैं इसे ले आऊंगा।
‘क्या तुम इसे आज नहीं लाए? तो आज?’ हानाता ने उम्मीद भरी निगाहों से उसकी ओर देखा। उसका चेहरा और भी उतर गया। उसने उसे जबरदस्ती बिस्तर पर लिटाया। उसने पर्दे खींचे और एसी चालू कर दिया।
उन्होंने कहा, "इसकी तुलना इस घर की दौलत से मत करो। इस जगह में तो बहुत हवा है।"
अगर आप मोटे चावल का इस्तेमाल करेंगे तो वह और भी ज्यादा उबलेंगे!
वह एक शब्द भी नहीं बोली। पहली बार उसका चेहरा उसके इतने करीब था। उसके चेहरे पर दुल्हन की शर्म का कोई निशान नहीं था, यहाँ तक कि जीवन की सादगी भी नहीं। तो यह किस तरह का एहसास था? यह अकेलेपन का एहसास था! दीवार की ओर उसकी निगाहों में रूखापन और अलगाव झलक रहा था।
उसे बुरा लगा। उसका चेहरा अपनी ओर घुमाते हुए उसने सोचा, 'क्यों? क्या हुआ?'
क्या सब ठीक हैं? विक्रम कैसा है?
"ठीक है!" वह खुशी से हंस पड़ी।

‘तो क्या? अगर ऐसा हो गया तो क्या होगा?’
वह उठी और रसोई में जाकर एक प्लास्टिक की थैली ले आई। उसने उसमें से पच्चीस-तीस पन्नों का एक बंडल निकाला और कहा, 'इसे पढ़ो। मैं तुम्हें बाद में बताऊंगी कि मुझे क्या बताना है।'
‘तुम बताओ! तुमने क्या लिखा? तुमने किस बारे में लिखा? गाने के बारे में? मैं तो चार लाइनें भी नहीं लिख सकता!’
‘उम। आपको इसे पढ़ना चाहिए। किसी और को मत बताना। मैं अब घर जा रही हूँ। इसे पढ़ने के बाद मुझे कॉल करना। बाद में बात करते हैं। यह मेरा नंबर है।’ उसने मुझे कार्ड दिया और चली गई। दरवाजे की आवाज से वह जाग गया।
क्या विक्रम को कोई शक था? क्या उन दोनों के बीच झगड़ा हुआ था? वह डर गया।
उसने कागज़ हाथ में लिया। वह एक सफ़ेद कागज़ था जिस पर शून्य बने हुए थे।
उसने उस कागज़ पर हिंदी में कुछ लिखा था।

२
‘वराह क्या है? और लम्भ क्या है? तो फिर इसे क्यों सुशोभित किया जाता है?’ "तुम क्या कर रहे हो?" यही वो आग है जो भीतर इतना दर्द जलाती है! और खुद को सजाने-संवारने के बजाय, तुम्हें जलते हुए अंगारों को देखना चाहिए। आकाश यह एक ऐसा एहसास है जो आपको ऊंचाइयों की खुशी की लहर पर सवार कर देता है, और फिर खाई में गिरा देता है। तीस हज़ार फीट की ऊंचाई पर आराम से रहते हुए, ऐसा लगता है जैसे विमान दो टुकड़ों में टूटकर ज़मीन पर गिर पड़े, ऐसा ही महसूस होता है! मैंने अपने जीवन में कभी ऐसा दर्द महसूस नहीं किया था! यहां तक कि जब मैंने अपना वतन छोड़ा और अमेरिका आया, तब भी नहीं। इस बार
हां, ऐसा हुआ था; लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती।
तीन सप्ताह, पिछले दो सप्ताह कितनी जल्दी बीत गए! सच में बहुत अच्छा लगा! जैसे ही मुझे यह अनुभव हुआ, मैं एक महान कलाकार का हिस्सा बन गया! मैं इस धुन के साथ गा रहा था! वह धुन मुझे आसानी से आगे-पीछे ले जा रही थी। मैं इसका एक भी पल चूकना नहीं चाहता! इस धुन का अंत दो हज़ार में होगा। तुम्हारे सामने – लेकिन तुम भी उसी दिन मरने वाले हो, यह मैं दिल से जानता हूँ।
मैंने इसे गंभीरता से नहीं लिया। मुझे ऐसा लगा कि यह साथ, इस गीत का साथ, मेरे जीवन में हमेशा मेरे साथ रहेगा। 'Yot me yot mala ja jogi–'
जब मैं गा रही थी, तब भैरवी की मीठी सुगंध ही उस खुशबू का स्रोत नहीं थी। यह केवल भावना ही नहीं थी।
मेरे हृदय में सुख की प्यास जागृत हो गई!
गुजी, क्या तुम्हें गुस्सा नहीं आया? गुस्सा आने के बावजूद भी तुम आज सुबह आए।
क्या तुम उड़ गए? तब से इस निरंतर यात्रा का एक भी दिन नहीं बीता है।
याद नहीं है?
अच्छा हुआ कि मैं वामनतला नहीं आया। मुझे घर पर भरपेट खाने की इजाजत थी।
रास्ता नहीं दिखाया गया था। अगर ऐसा होता, तो शायद तुम भी भावनाओं में बह जाते। तब सब कुछ सामने आ जाता। काश ये लोग जितनी देर तक लड़ना चाहते, उतनी देर तक लड़ते। और मैं कह रहा था, साठ लोगों को गिनो और मार डालो।

बहुत ही बढ़िया! यही तो भारतीयों का गुण है! आपके गीतों ने उनके दिलों को छू लिया है।
यह हो चुका है। कोई भी आपको इतनी जल्दी जाने देने को तैयार नहीं है।
क्या आपके पास सालकॉन हैली नाम की कोई गाय है? तो आप मधु को एक निवाला भी खिलाए बिना चले गए?
विमान में आठ महिलाएं हैं! चलो कुछ गाने गाते हैं!
ऐसी कोई महिला नहीं है जिसे तुममें आनंद आता हो। तुम्हारा गाना सुनकर तुम फेसबुक बन गए हो।
आओ! आओ, वे मुझसे भी सवाल कर रहे हैं। मेरी तबीयत ठीक नहीं है और मेरा दिल मुझे यही बता रहा है। इस पर उन्होंने यह भी कहा, 'हाँ, यह वही महान देवता है, जिसने कल गीत गाया था!' दामुनुक
ऐसा होगा!’ खूब हंसी-मजाक हुआ।
और मैं खुद पर हंस पड़ा, 'इस तरह मत बैठो। ये दोनों राग एक ही हैं।'
ठीक है? सुनो और अपना रियाज़ जारी रखो। न्यूयॉर्क का कार्यक्रम समाप्त होने के बाद, मैं उससे दो सप्ताह यहीं रुकने और दो और राग तैयार करने के लिए कहूँगा। अगर इससे भी बात नहीं बनी, तो तुम मुंबई चले जाना।' और मुझे तुम पर बहुत गुस्सा आ रहा है।
कई बार ऐसा होता है कि अगर कोई आपके गाने के बारे में आवाज भी उठाता है, तो भी वे इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि 'उसे गाना बिल्कुल समझ नहीं आया'! पत्र पढ़ते हुए उसे ऐसा लगा जैसे वह हवा में तैर रहा हो। उसने पहले कभी प्रेम पत्र नहीं पढ़ा था। इसके बाद भी, वह नव वर्ष, दिवाली के अवसर पर बधाई पत्र भेजता था, और उसके बाद तो वह उन्हें छपवाता भी था। उनमें से किसी ने भी ऐसा कुछ नहीं लिखा होगा। मधु का प्यार कभी फीका नहीं पड़ेगा। उसके लिए किसी और का उतना गहरा प्यार नहीं है जितना मधु का अपने पति के लिए है! उसने आगे पढ़ना शुरू किया –
"आज बुधवार है। आप इस रविवार सुबह चले गए। मैं अभी भी जीवित हूँ।"
क्या आपको लगा कि मैं मर गया हूँ? आपने मुझे फोन क्यों नहीं किया? मैं ज़िंदा हूँ।
आपके आगमन की सूचना देने के लिए कॉल करना केवल शिष्टाचार का हिस्सा नहीं है, बल्कि यह एक

क्या आपको यह भी नहीं पता कि प्रथम पुरुष एक मनुष्य है? यह गीत मैं ही गा रहा हूँ।
मुझे आपका न्यूयॉर्क का पता और फ़ोन नंबर नहीं मिला। मैं आपको सोमवार को कॉल करूँगा।
क्या आपको पता है कि आपने इसमें कितनी मेहनत की है? कल हमने साथ में खाना खाया था।
जब मैं बाहर थी, तब आपका फोन बजा। और आपको यह भी एहसास हुआ कि इस वजह से मैं आपसे खुलकर बात नहीं कर पा रही थी। फिर आज
आपने एक दिन से फोन क्यों नहीं किया?
मैंने तीन बार फोन किया, फिर भी सेवा उपलब्ध नहीं है।
मैं यही तो कह रही हूँ। तुमने मुझे वर्कशॉप का नंबर क्यों नहीं दिया? गुजी, क्या तुम्हें समझ नहीं आ रहा कि मैं इतनी परेशान हूँ कि तुम्हें ये सब फ़ोन पर बता रही हूँ? मैं और किसे बताऊँ? मेरा एक भी दोस्त नहीं है जिसे मैं ये सब बता सकूँ। अगर मैंने ये सब उस औरत के सामने ज़रा सा भी बता दिया जिसका कोई दोस्त नहीं है, तो वो मेरी भावनाओं को समझेगी, बजाय इसके कि वो मुझे समझे।
इसे 'गु-श का मामला' समझा जाएगा! इस भावना का स्रोत कौन है?
क्या तुम समझोगे? क्या यह तुम नहीं हो? इसीलिए मैंने इस पत्र का रास्ता अपनाया है। मैं सारे कागजात डाक से तुम्हारे पते पर भेज दूँगा। तुमने मुझे एक बार भी फोन नहीं किया। तुम पत्थर की मूर्ति हो!
दूसरे पत्र में लिखा था-
‘कल मैंने तुम्हें पत्थर का देवता कहा था। सीधे तूती नदी से…
लगता है भविष्य आ रहा है! तुमने मुझे बुलाया था! चलो!
भले ही आप फोन पर बात न करें, फिर भी हो सकता है कि आपकी आवाज ठीक से सुनाई न दे।
आपके शब्दों में पर्याप्त भावना नहीं थी। मैं कितनी जोशीली होकर अपनी भावनाओं को व्यक्त कर रही थी! आप उसे संतुष्टि से सुन भी रही थीं। लेकिन आपने एक बार भी ऐसा नहीं कहा जिसका मतलब हो, 'मधु, मैं भी तुम्हारे लिए ऐसा ही महसूस करती हूँ।' इसके विपरीत, आप कहती रहीं, 'शांत हो जाओ! इन भावनाओं में मत उलझो। तुम तीन महीने में मुंबई आ रही हो ना?' आदि! हालाँकि आप उम्र और अनुभव में मुझसे बड़ी हैं, फिर भी मैं

आपने मुझे अपने भरोसे सौंपा है; लेकिन मैं कोई कमजोर महिला नहीं हूँ!
वह रुक गया। यह सच है; लेकिन फिर मुझे भी ऐसा ही महसूस होने लगा, अगर मैं 'मैं भी विधवा होने वाली हूँ' जैसी बातें लिखने और बोलने लगूँ, तो ये औरतें समझ जाएँगी और मुझसे और ज़्यादा उम्मीदें रखने लगेंगी और मुझे हँसाएँगी! उन्हें प्रेम के बारे में इन 'अमर', 'चिरंजीव', 'चिरंतन', 'जा माज मंतरी या' की बातें सुननी पड़ती हैं! इन रिश्तों में उलझे बिना इन्हें निभाना चाहिए। मैंने यह आदत देखी है कि लोग अपनी मर्ज़ी से जितना चाहें उतना रिश्ता इस्तेमाल करते हैं। एक बार शारीरिक संबंध सफल हो जाने पर, ये लड़कियाँ शारीरिक सुख से तब तक इनकार नहीं करतीं जब तक कि वे यौन रूप से उत्तेजित न हो जाएँ या कोई ऐसी ही समस्या न आ जाए। चाहे कुछ भी हो, इसके बारे में पढ़ना अच्छा लगता है। हम उसे स्नेह से याद करते हैं और हम भी पूरी श्रद्धा के साथ उसके पास जाते हैं।
यह आकर्षण इतना प्रबल है कि यह आपको किसी के वश में होने की तीव्र इच्छा जगा देता है! आगे पढ़ें
ये शुरू हुआ-
‘आओ! मेरे प्यारे दोस्त! क्या तुम मेरे दोस्त हो? मैंने तुम्हें यह बात एक घंटे पहले बताई थी।’
मुझे गुस्सा आया! लेकिन मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि फोन पर बात करते समय आप किसी के आसपास होंगी! मुझे याद आया कि आपने मुझे बताया था कि स्कूल के शिक्षक भारतीय हैं। इस वजह से आप फोन पर खुलकर बात नहीं कर पाएंगी, यह बात मेरे दिमाग में कभी आई ही नहीं। आप रात को अपने कमरे से फोन कर सकती थीं। और मैं सात बजे से पहले घर नहीं आती। इसलिए, अगर आप रात को नौ बजे वहां से फोन करेंगी, तो आप मुझसे आधे घंटे बात कर पाएंगी। इसके बाद मैं आपको शाम को फोन करूंगी।
एक और सुझाव है। क्या मैं कभी न्यूयॉर्क आऊं?
शनिवार-रविवार को संभव नहीं है। और मेरे ऑफिस में सभी ने छुट्टी पर जाने का फैसला कर लिया है; लेकिन अगले हफ्ते संभव हो पाएगा। केवल एक ही मौका है। और चांद भी निकलेगा।
अगर तुम हंसोगे तो यहां आने की मेरी योजना व्यर्थ हो जाएगी!
"आज सुबह मैंने एक साहसिक कदम उठाया। मुझे यह करना ही था। मुझे बहुत गर्व है।"

आँखें नहीं खुलीं। तुमसे मिलने की तड़प नींद को भगा रही थी। मैं सुबह चार बजे उठी। मैं गहरी नींद में थी। धीरे-धीरे उठी। धीरे-धीरे कदमों से कमरे से बाहर निकली। रिया के कमरे तक गई। दरवाजा बंद किया और तुम्हारा नंबर डायल किया। इस समय तक तुम्हारे लिए सुबह के सात बज चुके होंगे।
मुझे पूरा यकीन था कि रासी हारुत इसे उठा लेगी।
लेकिन गलियारे से अमेरिकी लहजे में एक आवाज आई, "गाइ!"
‘नहाने वाली माँ यहाँ है। कोई संदेश है?’
‘नहीं। मैं आपको बाद में कॉल करूँगा!’ मैंने फोन काट दिया; लेकिन मेरा
सभी को पसीना आ रहा था। ऐसा कभी-कभार होता है, लेकिन स्कूल के एक छात्र के साथ ऐसा हुआ...
मैं खुद को समझा लेता कि यह एक अच्छी जगह होगी। इस देश में कोई किसी के करीब नहीं है।
यह सुबह सात बजे शुरू नहीं होता। तो ये कौन है? मुझे ये भी पता है कि भारतीय संगीत पर औरतें भी दीवानी हो जाती हैं। एक बार मैंने सोचा कि एक घंटे बाद मुझे फिर से फोन करके पूछना चाहिए, 'ये कौन है?' लेकिन अगर आप ये कहें, 'ये यहाँ क्यों है, इनका आपसे क्या लेना-देना है?' तो क्या होगा?
मैंने सुबह आठ बजे दोबारा फोन किया, लेकिन कॉल नहीं लगी।
ऑपरेटर कहेगा 'नो आर पॉज़'। अगर कमरे में कोई है, तो दूसरी तरफ देखें; लेकिन टैन को यह पसंद नहीं आया। रात के नौ बज रहे हैं लेकिन आपने फोन उठा लिया है। बात पूरी हो चुकी है। जुज़बी बोल चुका है। Savad Hoil Te Ha Meech Karen– Tu Phone Ka Nakos,
वे यही कहते हैं।'
उन्हें याद था। भूपली ने ऐसा कहा होगा। अगर आप इस बारे में सोचें तो,
आप कह सकते हैं, 'कुछ छात्र होटल में रुके थे, वे सुबह जल्दी आते थे और रात को रुकते थे।' हाँ। आप ऐसा कहकर बच सकते हैं।
'गु जी, मैंने इसलिए फोन नहीं किया क्योंकि आपने मुझे यह बताया था। सिर्फ आप ही हिलती हैं।'
मैं आपको एक घटना के बारे में सूचित करने के लिए फ़ोन करने की कोशिश कर रहा था। आपका फ़ोन नहीं उठा, इसलिए मैं इसे कागज़ पर लिख रहा हूँ। मैं इसे डाक से आपको भेजना चाहता हूँ; लेकिन मुझे डर है कि यह किसी और के हाथ में न पड़ जाए, इसलिए मेरी हिम्मत नहीं हो रही है।

मैंने कई दिनों से इसके बारे में नहीं सोचा था। मेरी आँखों में आंसू भर आए। सूजन आ गई थी। और मैं सारा दिन कंप्यूटर पर बैठकर अपना काम कर रही थी। जब खाना परोसा गया, तो यावर ने अपनी आँखों से इशारा करते हुए कहा, 'जल्दी आओ'। मुझे ऐसा लगा जैसे,
गु जी! हालाँकि हम पिछले तीन हफ़्तों से एक ही बिस्तर पर सो रहे हैं, उसने हमें ज़बरदस्ती नहीं की। वह इशारे करता, चिढ़ाता और आखिर में कहता, 'तुम अभी इस मानसिक स्थिति से बाहर आने के लिए तैयार नहीं हो!' और करवट बदलकर सो जाता; लेकिन इस रविवार को मैं क्या बहाना दूँ? वैवाहिक जीवन में ऐसी बातों से बचना ठीक नहीं है, बिलकुल भी नहीं।
लेकिन मेरे दिमाग का क्या? यह बिस्तर मेरा नहीं है, यह तुम्हारा है और मुझे ऐसा लगा कि तुम्हारे साथ रहना खतरनाक है।
फिर भी, मैंने इसे दबाकर रखा और चुप रही। मैंने इसे जितना हो सके सहा। मेरे मन में हिंसा का भाव उमड़ रहा था। जन्म से लेकर अब तक मैंने इस संसार में अनगिनत बार सुख और आनंद का अनुभव किया था, लेकिन अब मैं अन्याय और अन्याय के अनुभव से भर गई थी।
आप किसे बताना चाहते हैं?
इसे पढ़कर उसे खुशी हुई। उसे खुद पर गर्व महसूस हुआ। यह सोचकर कि वह पूरी तरह से मेरी है, उसे लगा जैसे उसे जीवन साथी मिल गया हो। कयानी! मैं तुम्हें पढ़ाने के लिए दो-तीन महीने तुम्हारे घर पर ही रहूंगा! लेकिन विक्रम को निराश नहीं होना चाहिए। वह अच्छा लड़का है। कितना समझदार! ऐसा पति सचमुच हीरो होता है! कुछ देर तक वह किताब के पन्ने को देखता रहा। फिर उसने दोबारा पढ़ना शुरू कर दिया।
"तुमने एक और मामले में मुझे निराश कर दिया!"
क्या आपको नहीं पता कि लॉस एंजिल्स और न्यूयॉर्क के बीच की दूरी यहाँ से बहुत ज़्यादा है? मैं चाहता हूँ कि आप शुरू से ही समझ लें कि आपके वहाँ दो शो हैं? क्या आपने यह नहीं सोचा कि यहाँ के संगीत प्रेमी मुझे फ़ोन करके पूछेंगे, 'क्या गु जानी ने आपको नहीं बताया?' भले ही उन्हें आपके शो के बारे में अभी पता चला हो, वे ज़रूर पूछेंगे! अगर आप मेरे साथ वहाँ आने के लिए राज़ी हो जाते तो मुझे बहुत खुशी होती। अगर आपने मुझे बताया होता, तो आप तैयारी करके आते। या फिर आपको आठ दिन की तैयारी में कोई आपत्ति नहीं होती। आप इस तरह क्यों चले गए?

यहां आप मां, सरदेसाई, गोयल, मूट, कुलकन के बारे में पढ़ सकते हैं।
सात-आठ और लोग बस बुक कर रहे हैं। ऐसे समय में हम दोनों के लिए हवाई जहाज से यात्रा करना उचित नहीं है, इसलिए हमने अपने-अपने नाम दर्ज करवा लिए हैं। मैं चौंक गया, "उन्होंने फोन नहीं किया। मैं नहीं आऊंगा!"
लेकिन वे हंसते हुए बोले, 'ओह, अगर यह स्कूल है तो वे पूरे दिन व्यस्त रहेंगे।'
शवाय कलाकार लहरी असतो. जतका मोठा कलाकार, ततका जा त लहरी. तू
क्या तुम अब पहले से कम नखरे वाली हो? फिर भी, मैं बिना गुस्सा किए तुम्हारा ख्याल रखती हूँ, है ना? तुम्हारे पास वो राज़ हैं। सबसे ज़रूरी बात ये है कि हांजे को ये पता न चले कि ये दोनों गाँव एक-दूसरे के करीब हैं।'
वे तुम्हारे भाई हैं! वे हमेशा तुम्हारा साथ देते हैं; लेकिन तुम
मुझे बुरा लगा कि तुम मुझे देख रहे थे, यह सच है।'
"सात घंटे बैठे रहने से मेरा शरीर भले ही थक गया हो, लेकिन जब मैं आपको मंच पर देखता हूं तो मुझे खुशी महसूस होती है।"
मेरे शरीर में एक लहर दौड़ गई। उस पल की उत्तेजना ने मुझे खुली हवा में बैठने पर मजबूर कर दिया। तुम्हारे बगल में बैठकर तुम्हें सहारा देने की बजाय, मैं इस बड़े हॉल की बालकनी में बैठकर तुम्हें देख रही थी! वह गोरी लड़की कौन है? वह मेरी ही उम्र की होगी। उसे ढोल बजाने के लिए तुम कहाँ से लाए? बीच में लटें, चोटियाँ, जूता, कुत्ता, ढीली साड़ी, कांच की चूड़ियाँ! बिल्कुल हॉलीवुड फिल्म जैसी लग रही है! वह भारतीय है।
'टैम्बो' की रचना इस बात का समर्थन करती है, पंडित मोहनलाल इसे कर रहे हैं, मस्त!
लॉरे स मथ!’ अरे वा रे वा! ही कधी श या झाली?
तुमने मुझे पहले मार डाला। मौत भी, लेकिन गुस्सा इतना कठोर है। मैं नहीं शाकवलत! आपने बिना मरे इसे कितनी खूबसूरती से प्रस्तुत किया है! 'एम डी, एन डी,
सा! वा! ध म ग रे, ग म ग, रे सा!’ कती सरळ! तेवढंच कठ ण! हे फ तु हालाच
यह असंभव है! अगर मैं डफली के साथ बैठकर भी ताल मिलाऊं, तो भी मुझे धुन समझ नहीं आती। वह लड़की बहुत अच्छी डफली बजा रही थी। ताल भी बढ़िया थी। इतनी छोटी और

आपने इस गीत को कितनी जल्दी अपना लिया, जबकि यह एक अव्यवस्थित गीत था! गु जी, आप सचमुच प्रतिभाशाली हैं! किसी और गायक में यह क्षमता नहीं है! एक घंटे तक पूरी श्रद्धा से गाने वाली गायिका!
जैसे ही अगला राग, भूपली, गाया गया, लोगों ने "कटी ता!" के नारे लगाए।
मैं भी इस मुहिम का हिस्सा बनना चाहता था! मैंने बीच-बीच में मज़ाक भी किया। धुन ये है...
मुझे डटे रहना चाहिए था। इस लॉरेन ने डटे रहने की कोशिश की। यह एक गलती है, लेकिन तुम इतनी बहादुर क्यों नहीं हो? तुम बिल्कुल सीधी-सादी थीं। तुम मुझे एक मौका दे रही थीं। वह बीच में एक आसान रास्ता अपना रही थी। तुम मुझे अपनी बारी पूरी करने का एक खास मौका दे रही थीं। तुमने यह सब कैसे किया? तुम्हें गुस्सा कब आया? मुझे गुस्सा आ रहा था, ऐसा लग रहा था जैसे तुमने मुझे धोखा दिया हो। मुझे यह भी लग रहा था कि कहीं बीच में एक आवाज़ सुनाई दे रही है। कहाँ?
भूपली सभा को यह बहुत पसंद आया। यह कोई पार्टी नहीं है, इसने बहुत कुछ किया है! समय
यह बीतता है और मनोदशा भी बदल जाती है। अंत में, मैंने जलधर केदार राग लिया। यह भी एक शुद्ध राग है। फिर भी, जैसे ही आपका राग-अवतार शुरू हुआ, केदार और महार का संगम सामने आ गया। दमनुक राग के साथ, मेरे मन में एक सौम्य शांति और एकाग्रता का भाव भर गया। आप
मुझे सदमे में डूबे केदार की याद आ गई। मैं जलधर का काम नहीं कर सका। अब कर सकता हूँ।
लॉरियस वहाँ अवाक बैठा रहा। नीचे भूपली के लिए पर्याप्त जगह होनी चाहिए।
तुम सही कह रहे हो।
वभा उसके लिए शुभ प्रतीक रहा होगा। पहले वह किसी और को ढूंढ रहा था, अब वह तुम्हें ढूंढ रहा है।
यह सनसनी पैदा करने की एक चाल होनी चाहिए।
गाना खत्म हो गया है। लोग आपको घेर चुके हैं। हमारे कोच में, ये लोग अभी भी मौजूद हैं।
मैंने होटल भी बुक नहीं किया था। इसी वजह से मुझे मीटिंग से तुरंत निकलना पड़ा।
जब हमारी बस अपने गंतव्य पर पहुंची तब पांच बज रहे थे।

बहुत देर हो चुकी थी। आपकी मृत्यु निकट थी। वह भी दुर्भाग्यवश।
गुस्सा। हमने कोचम और अन्य लोगों के साथ शर्त लगाई थी, आज तुम्हें यह हार माननी पड़ेगी!
किसी ने मुझसे पूछा, "तुम क्या सोचते हो? तुम मूर्ख हो।"
मैंने पूछा, 'आपका पसंदीदा राग कौन सा है?' और मैंने यह भी कहा, 'उनके पास अलग-अलग राग हैं! आप कभी नहीं जान सकते कि वे कौन सा राग चुनेंगे!'
जैसे ही गाना शुरू हुआ, हमारे दिल की धड़कनें तेज हो गईं और हम पूछने लगे, 'यह कौन सा गाना है?' गु जी,
तुमने तो मुझे गुस्सा भी नहीं दिलाया! मैंने तो सिर्फ दो लोगों को गुस्सा दिलाया था, भैरव और हरभैरव को। जब तक तुम्हारा सारा गुस्सा शांत नहीं हो जाता, मैं चैन से नहीं बैठूंगी! आज भी वो ढोल बजा रही थी। भूपली कहाँ है? कोई बात नहीं। आज सुबह आपके गाने से मुझे बहुत शांति मिली! गु जी,
अगर मैं गुस्से में आपके पास नहीं आता तो मुझे कितना नुकसान हो जाता! इसके बाद आपने गया की सवारी की। शवमत और भैरवझा के बाद आप फिर से वैसे ही हो जाएँगे।
आपने जातिगत क्रोध को क्यों नहीं दूर किया? क्या आपको लगा कि मन की शांति पर्याप्त नहीं है, शत्रुता ही आवश्यक है? इसके बाद, सारंग ने सचमुच प्रकाश और गर्माहट फैला दी! गुजी, क्रोध दूर करते समय आप भी समय सीमा का पालन करते हैं; लेकिन मैं आपको बताता हूँ, यदि आप इस क्रोध को अपने भीतर समाहित कर लें, तो यह किसी भी समय प्रकट हो जाता है, मेरा अनुभव है कि समय तो सदा रहता है! जब आप इस क्रोध को युद्धक्षेत्र में समाहित करते हैं, तो मायरा के लोगों की शांति और गंभीरता वातावरण में उत्पन्न हो जाती है और जब आप मायरा की शीत ऋतु में सारंग वादन शुरू करते हैं, तो मायरा के लोगों की गर्माहट महसूस होती है। आपकी कला में समय को सृजित करने की शक्ति है! गुजी, आप सही हैं! आप बिल्कुल सही हैं!
गु जी, आपने मुझे अपने साथ क्यों नहीं बुलाया? उस रात, भारतीयों
संगीत का कोई अंश नहीं है, तो तुमने ताल को साथी क्यों बनाया? मैं यह बात व्यंग्यपूर्ण लहजे में कह रहा हूँ।
नहीं। वह इधर-उधर से डफली बजा रही है, यहाँ कुछ तो चल रहा है।
भैरवी के सोते समय, वह छोटी बहन का नाम भी लेने लगी। इस क्रोध ने
ये तो जाल है। गु जी, आपने कहा ‘जोगी मत जा–’! मैं रोए बिना नहीं रह सकती।

सुनो! मेरे योगी, मेरे कृष्ण, इस मीरा को मत छोड़ो! यदि मैं चंदन की चिता बनाऊं, तो मैं उस पर सोऊंगा। मैं इन हाथों से तुम्हें ताल और अनी अर्पित करूंगा।
आगे बढ़ो! गु जी, हे पद के नवागंतुक? एकद, मा और तकद के पास जनसमूह नहीं है। बैठी हुई। मैं कैसे रो सकती हूँ? वे क्या सोचेंगे? वह कभी-कभी फुसफुसाती है, 'रो लो'; लेकिन तुमने भैरवी की नब्ज़ को भी नहीं समझा! मीरा, इस दुनिया की गहराई तक पहुँचना तुम्हारे बस की बात नहीं है! भीतरी उथल-पुथल कम हो रही है।
अंतिम परिणाम! लोग खड़े होकर पागलों की तरह तालियाँ बजा रहे थे। बैठक दस-पंद्रह श्वेत लोग भी आए थे। सचिव उन्हें धन्यवाद देने के लिए खड़े थे। टिप्पणियों और ज़मीन के लिए धन्यवाद देते हुए, झा यावर ने कहा, 'Vui o so than sa da
पुरुषों के संगीत कार्यक्रम ने संगीत कार्यक्रम का माहौल बिल्कुल भी बेहतर नहीं बनाया!
बेवकूफ! इसे तो अंग्रेजी भी नहीं आती! इसे एक जोरदार थप्पड़ मारना चाहिए। मुझे गुस्सा आ गया! लेकिन गु जी, जब मैंने ऐसा कहा तो आपने 'धन्यवाद-धन्यवाद' क्यों कहा?
आपने यही कहा? क्यों न थोड़ी अंग्रेजी सीख लें?
आप मुझसे मिलने नहीं आए थे; लेकिन लोगों ने आपको घेर लिया। बाद में, आयोजकों ने...
उन्होंने आपको घेर लिया और कार तक ले गए। वह आपके साथ बस में बैठ गई। उन्हें लगा कि आप सीधे हवाई अड्डे जाएंगे। हमें भी जाना चाहिए था। हमने सुबह ही चेक आउट कर लिया था और अपना सामान बस में छोड़ दिया था। यह चार सौ मील की वापसी यात्रा थी। रास्ते में, हम मैकडॉनल्ड्स पर रुके और अपनी पसंद के बर्गर और सैंडविच खरीदे और तुरंत ही बस आगे बढ़ने लगी।
सभी लोग गाने के मूड में थे। यहां तक कि जिन्हें गाने का कोई औपचारिक ज्ञान नहीं था, वे भी साथ-साथ गा रहे थे।
उसमें से हल्की सी आवाज़ आ रही थी।
गंध गायब हो गई थी। सब लोग शांत हो गए थे। बीच-बीच में कुछ लोग झपकी ले रहे थे।

हाँ, ऐसा ही था। पड़ोसी आपस में बातें कर रहे थे। हमारी जगह सोफे में थी। पड़ोसियों
श्री सरदेसाई यहां हैं। मैं आगे की तरफ चार-पांच लोगों से बातचीत कर रहा हूं।
मेरे सामने वाली पंक्ति में बैठा कुलकान अपने पड़ोसी पर चिल्ला रहा था, "धन्यवाद प्रस्ताव देने वाला सचिव अपनी भाषा का प्रदर्शन नहीं कर रहा था! उसने मोहनलाल को ताना मारने का मौका नहीं छोड़ा! मोहनलाल ने तो पहले ही तंबोरा को अपने साथ आने के लिए कह दिया था।"
अरे! लॉस एंजिल्स में टैम्बो और उसके दोस्तों के साथ कौन लोग घुलमिल नहीं पाएंगे?
उन्होंने कहा, "ताम्बो के दोस्त के पैसे यहाँ हैं। हमारे पास इतने पैसे नहीं हैं!" इस पर मोहनलाल ने कहा, "ठीक है। मैं भुगतान कर दूंगा।"
मैं करूँगा; लेकिन आप हमारे लिए होटल में ठहरने का इंतज़ाम कीजिए।’ इन बैठकों के पास इतना पैसा कहाँ से आता है कि आतना को होटल तक लाया जा सके? कोई उसे घर पर ही रखता है और आस-पास रहने का इंतज़ाम करता है; लेकिन आतना इस बारे में क्या करेगा? एक बड़ा कलाकार! इतने बड़े होटल में ठहरने का सारा इंतज़ाम।
मुझे ऐसा करना ही पड़ा। दो दिन और साठ मिनट में ही मुझे चार-पाँच सौ डॉलर का नुकसान हो गया! लेकिन
मोहनलाल को यह समझ ही नहीं आया कि इससे भी बड़ा मजाक हो सकता है! कितना बेवकूफ!
"धन्यवाद, धन्यवाद!" वह हँस पड़ा।
कुलकन मराठी में बोल रहा था। मुझे सब कुछ स्पष्ट रूप से सुनाई दे रहा था। 'वापस लौटने से पहले, मैं कनफत-मा गया था। वहां मेरी मुलाकात रायकर से हुई थी।'
क्या आप रायकरला को जानते हैं?
‘सॉफ्टवेयर में, है ना? मुझे पता है। डेकन इंजीनियरिंग कॉलेज से।’
'हां, वही है। वह कयाका रानी का सदस्य भी है। वह मुझे यही बता रहा था।'
मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे डांट पड़ रही हो। मेरे अंदर सब कुछ खाली और सूना हो गया।

ऐसा लगा जैसे मैं किसी गुफा में गिर गई हूँ और मुझे सहारा देने वाला कोई नहीं है। मेरी आँखें अपने आप बंद हो गईं। कुलकन जो कह रहा था, वो बिल्कुल सच था! मैं इस गुज्जा को अच्छी तरह जानती हूँ। मुझे उस व्यक्ति से भी जवाब मिल गया जो कल शाम से मुझे परेशान कर रहा था। मैंने लॉरेंस की आवाज़ पहचान ली। मैंने यह आवाज़ सुबह सात बजे फोन पर सुनी थी! इसीलिए तो गुज्जा मेरे जन्म के आठ दिन के अंदर ही मेरे साथ रहने लगी थी!
कुछ समय बाद, भोसले की आवाज आई, 'आप कला जगत में हैं।'
वाह! कलाकार के दिल में झाँक कर देखो, तो वो बिल्कुल अलग है। ऐसा क्यों है? विरोधाभास?
"यही बात मुझे भी अक्सर परेशान करती है!" कुलकान हंस पड़ा।
कोच सुबह नौ बजे सैन जोस कोच स्टेशन पर पहुंचा। सभी लोग उतर गए। कार पार्क जाते समय, कुछ लोगों ने अपने रिश्तेदारों को विदा करते हुए मेरे गीत के लिए एक बार फिर मुझे धन्यवाद दिया। मैंने उन्हें उचित उत्तर देने की जहमत भी नहीं उठाई।
घर पहुँचकर मुझे बहुत अच्छा और खुशी महसूस हुई। मैंने खाना भी खाया। सुप्रभात।
मुझे काम पर जाने की जल्दी थी, इसलिए मैं तुरंत सो गया। मुझे पता नहीं चला कि मैं कितनी देर सोया।
इससे मुझे लॉस एंजिल्स में हुई दो घटनाओं की याद आ गई। साथ ही इस बारे में राजाराम की राय भी।
मुझे याद आ गया। मैंने पहले ही तय कर लिया था कि अब से मैं ऐसा व्यवहार नहीं करूंगा, इसलिए अब मैं इसे पढ़ रहा हूं।
इसके लिए कोई विशेष व्यवस्था नहीं की गई; लेकिन मधु लॉस एंजिल्स समूह के साथ लॉस एंजिल्स चली गई।
उसे पता ही नहीं था कि ये इतना करीब है। उसे याद आया और उसने खुद से माना कि उस समय भूपली के प्रति आकर्षण इतना प्रबल था कि अगर उसे पता भी होता, तो कौन जाने उसका व्यवहार कैसा होता! अगर मधु-विक्रम कार्यक्रम में आ जाते, तो पता नहीं वो क्या करते। जब वो एक गुस्से में डूबा हुआ था, तो उसे दूसरा गुस्सा याद ही नहीं आ रहा था। चाहे वो गुस्सा कितना भी भावुक क्यों न हो! ऐसा ही होता है; लेकिन दो घंटे पहले उसने कायनी को जिस भूपली के रूप में

देखा था, वो उसके दिमाग से पूरी तरह निकल गया था! तो क्या कायनी के लिए मेरा प्यार इतना गहरा है?
इससे कैसे बाहर निकलें? ‘यह सब झूठ है, मैंने किसी को अपने जैसा दूसरा व्यक्ति नहीं मांगा, मैं उसे अपने साथ इसलिए ले गया था ताकि उसे थोड़े समय में सिखा सकूं, किसी ने झूठ गढ़ दिया है।’ उसे कैसे मनाएं? वह यह समझ गया था। इसके अलावा अब उसके पास और क्या रास्ता बचा था? पहले भी ऐसी घटनाएं हो चुकी थीं। ‘मैंने तुम्हारे सिवा किसी और औरत को छुआ तक नहीं, कसम से!’ अगर वह रुक जाता, तो ये औरतें मान जातीं। उसे आत्मविश्वास महसूस हुआ। उसने आगे पढ़ना शुरू किया।
'गु जी, अल तपाने पा हल लेकिन तुम या वाग या अय वात्सरखान
कुछ नहीं। ऐसा करना तुम्हारी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। सब कुछ जानते हुए भी, मैं फिर से तुम्हारे प्यार में पड़ गया, ये मेरी गलती है। सुवातिला को ये गाना सुनाओ।
मैंने आपकी बात सुनी क्योंकि आप आश्चर्यचकित होने के लिए तैयार नहीं थे। छह साल बाद, मैं
मुझे सांसारिक लालसा महसूस हुई और मैंने उससे शादी नहीं की। मुझे एक ऐसा पति मिला जिसने मेरी कला की रक्षा और पोषण किया; लेकिन तीन साल के भीतर ही मुझे लगा कि यह काफी नहीं है। मैं तुम्हारी यादों से आकर्षित हुई। मैंने पहल की और तुम्हें फोन किया। क्या मुझे नहीं पता था कि जब तुम यहाँ आओगे, तो तुम फिर से वही मांगोगे? मुझे पता था। यह तुम्हारे गीत के आकर्षण के पीछे छिपा था। अगर यह छिपा न भी होता, तो भी मैं तुम्हारी स्थिति को अनदेखा कर देती। तुमने अपने भाई की तरह व्यवहार किया, इतना ही नहीं, तुमने हमारे विवाह का भी सम्मान किया! इसका मुझ पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि जब मैं जा रही थी तब भी...
भिखारी होने का एहसास बेहद भयानक है! मुझे यहाँ नींद की कमी हो रही है।
और आप अपनी प्रिय पत्नी के साथ बिस्तर के सुखों का आनंद ले रहे होते।
अब मुझे खुद पर बहुत गुस्सा आ रहा है कि मैं सब कुछ समझ गया। असल में गुस्सा तो तुम पर आ रहा है।
मुझे गुस्सा होने का कोई हक नहीं है। सब मुझे अपनी 'भाचा रानी' कहकर बुलाते हैं।

तो यह एक कार की तरह लग रहा है। और मुझे गुस्सा आ रहा है, 'तुम दिन-ब-दिन आलसी होते जा रहे हो।'
छल्लीस। प्राणायाम शुरू करो, मंत्र साधना करो, तीन-आठवें हिस्से के लिए मुंबई जाओ और गाना सीखो।’ अगले तीन सालों में मैं इस तरह एक प्रथम श्रेणी का कलाकार बन जाऊंगा।
उनकी उम्मीद की जाती है।
अगली सुबह मैं चार बजे उठा। मैंने चाय पी, डफली बजाई और गाने बैठ गया।
मन की शांति लौट आई। संसार में प्रवेश करने की तीव्र इच्छा हुई, पर मैं उसमें लीन था। धीरे-धीरे मैं संसार में प्रवेश करने लगा। हर साँस के साथ संसार बदलने लगा। पीड़ा! मेरे पापों के तार बजने की ध्वनि! इस साँस से निकलने वाली हर साँस ऐसी थी मानो ‘तुम’
भाई 'रानी-पापी' चिल्लाने लगा। जब मैं मंच पर पहुंचा, तो वह अंदर आ गया। मुझे भीतर ही भीतर असहनीय पीड़ा सहनी पड़ी! दुष्ट का मन क्रोध से भरा हुआ है। यहाँ तक कि यह क्रोध, जो दुल्हन के लज्जा के समान है, नरक उत्पन्न करने का गुण रखता है। जौ कड़वा हो गया है।
गाना बंद हो गया। सब कुछ गड़बड़ हो गया। मैं फिर से उसी जगह पर बैठ गया।
वही भयावह दृश्य। वही नरक। पाप का वही अहसास, पाप की वही शक्ति।
दर्द। शरीर की नसों में दर्द। ऐसा दर्द जैसे किसी पागल मरीज को होता है! मैं रुक गया। मैंने डफली को कालीन पर रख दिया।
यह आत्मनिरीक्षण है। यह केवल क्रोध की जड़ तक पहुंचने के बारे में नहीं है, बल्कि अपने भीतर झांकने के बारे में भी है।
इसका अनुभव करें!
क्रोध की आत्मा मन में निवास करती है, यह अनुभव अद्वितीय है।
बचपन में मुझे ऐसा लगता था कि मैं केवल लक्ष्य तक ही पहुँच सकती हूँ। आपको यह भी बताया गया था कि मन में इस लक्ष्य तक पहुँचना ही योग अभ्यास की नींव तक पहुँचना है। मुझे दृढ़ता से यह विश्वास था कि यह एक ऐसा अनुभव था जो हमेशा छिपा रहा और मैं अपने अंतर्मन में प्रवेश करके एक कदम आगे बढ़ सकती हूँ।
मुझे याद नहीं कि मैंने कभी किसी के साथ ऐसा व्यवहार किया हो। यह स्वाभाविक है।

मैंने किसी को धोखा नहीं दिया। मैंने शादी से पहले उसे इस रिश्ते के बारे में नहीं बताया था, और मैंने कभी किसी को धोखा नहीं दिया। मैंने हमेशा उस पर भरोसा किया। मुझे लगता है कि उसने शादी से पहले मुझसे वादा किया था कि शादी के बाद मेरे रिश्ते में कोई बाधा नहीं आएगी और वह अभी भी अपना वादा निभा रहा है। हम दोनों
इस जंगल में, इस घर में चार दिन रुकें, और फिर एक दिन गांव में बिताएं।
एक गहरी सांस, इतनी गहरी कि वो निकल ही जाए! इतना ही नहीं, मेरे गाने में कोई रुकावट नहीं आनी चाहिए।
तो वे भी मेरे 'बच्चे न पैदा करने' के विचार से सहमत हैं! इससे पता चलता है कि मैं उनसे कितनी नफरत करती हूँ।
मी मं षड्जाजवळ पोहोचले ते हा मला ते आ ण यां या नै तकते या धा यानं
मुझे ऐसा लगा जैसे मैं चारों तरफ से घिरी हुई हूँ। इससे मुझे डर लगने लगा और मैं उसके पास जाने से भी डरने लगी। मुझे दर्द भी महसूस होने लगा।
हॉल ऑफ फेम में आपके काम को इस रिकॉर्डिंग स्टूडियो द्वारा रिकॉर्ड किया गया है।
और हाल ही में, इन शिक्षकों ने भी इन्हें हटा दिया है। वे कार्यक्रम सप्ताह में एक या दो बार देखते हैं। वे अध्ययन के दौरान तैयार किए गए पाठों को सुनते हैं। आजकल वे मेरे गीतों पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। वे राग तो पहचान लेते हैं, लेकिन छंदों की बारीकियों को नहीं समझ पाते। फिर भी, रियाज़ के दौरान वे समय-समय पर उपयोगी सुझाव देते हैं। वे हर सप्ताह मेरा गीत सुनते हैं और जाँचते हैं कि उसमें लय है या नहीं।
मुझे डर है कि अगर मैं उन्हें गति नहीं दिखा पाया तो वे क्या करेंगे। वे मेरे अभ्यास की कुंजी हैं!
मैंने पिछले दो हफ्तों में कुछ भी नहीं लिखा है। मैं पहले साठ पत्र लिखा करता था।
अब कोई संदर्भ नहीं बचा। मैंने सोचा, अब मेरा इससे कोई लेना-देना नहीं है। उन्हें न्यूयॉर्क से मुंबई रवाना हुए तीन सप्ताह हो चुके हैं।
हाँ, हैं। मेरे दिल की तड़प बाहर आ गई और मुझे बहुत हल्कापन महसूस हुआ, इसलिए मैंने लिखना चाहा।
मानसा में दूल्हे की शादी पिछले एक सप्ताह से बंद कमरे में हो रही है। कुल मिलाकर

गाने की आवाज़ धीमी हो गई है। मैंने पाठ सुनना बंद कर दिया है। मेरे मन में एक विचार पनप रहा है।
इस दुनिया में हर कोई भूखा रहकर जीवन नहीं जीता। वे भारत से यहाँ आए थे। महिलाओं को तो गाने में भी विश्वास नहीं होता। फिर भी वे खुश रहती हैं, है ना? तो मैं भी घर के काम करके खुश क्यों न रहूँ? मुझे इतने बड़े घर की देखभाल करने की परवरिश नहीं मिली है। इसीलिए यह मुमकिन नहीं है। मैं कुछ समय के लिए माँ के हाथों खाना बनाने का काम संभाल सकती हूँ; लेकिन मैं उससे भी जल्दी ऊब जाऊँगी। क्या होगा अगर मैं कंप्यूटर क्लास में चली जाऊँ? भारत से आई महिलाओं को तो अच्छी तनख्वाह वाली नौकरियाँ मिल गई हैं। मुझे नौकरी की ज़रूरत नहीं है। और मुझे किसी कंपनी में नौकरी भी नहीं चाहिए। वे तो गृहिणी हैं।
वे इस काम में मदद कर सकते हैं।
मेरी यह बात सुनकर मुझे बिल्कुल भी खुशी नहीं हुई। वह हँस पड़ा।
'सिलिकॉन वैली में हजारों लोग कंप्यूटर पर काम कर रहे हैं; लेकिन तुम अकेली हो जिसे गाना आता है और इसके लिए इतनी मेहनत करती हो! तुम क्यों जा रही हो?' मैं कहीं नहीं जा रहा। लेकिन क्या मुझे भी कुछ बदलाव नहीं चाहिए? हमेशा, हमेशा, हमेशा।
अगर हम एक ही जगह पर टिके रहेंगे तो क्या यह उबाऊ नहीं होगा? अगर हम थोड़ा बदलाव करें तो हम देश को थोड़े अलग नज़रिए से देख सकते हैं। कभी-कभी, जो मैं सलाह नहीं देता, आप भी नहीं देते, है ना?
यह विचार उन्हें पसंद आया। उन्होंने कहा, 'तुम्हें कंप्यूटर की क्लास में जाना चाहिए।'
कोई ज़रूरत नहीं। घर पर अभ्यास करो। मैं तुम्हें सिखा सकता हूँ; लेकिन तुम्हें मालिश करके गंधबंधन करना होगा!’ उन्होंने इस भाषा में गाने की कोशिश की; लेकिन मुझे पसंद नहीं आया। मैं कभी टाइप करना नहीं सीख पाया था। वे एक साधारण कंप्यूटर लाए। उन्होंने मुझे इसे खोलना, बंद करना, टाइप करना आदि सिखाया। ‘यह एक स्मृति-तंत्र की तरह है। जब आप आँखें बंद करके खेलते हैं, तो आपकी उंगलियाँ सही जगह पर पड़ती हैं, है ना? यह वैसा ही है। यह एक आदत बन गई है कि अंधेरे में भी आपकी उंगलियाँ उन्हीं कुंजियों पर पड़ती हैं। अगर कभी अटक जाओ, तो यह किताब पढ़ लेना।’

हालांकि वे इस बात से भी खुश थे कि मैं कंप्यूटर से मिलने वाले जूस का आनंद ले रहा था, मेरी पत्नी
यह गाना इससे ज्यादा महत्वपूर्ण है। उनका संगीत बहुत सूक्ष्म है।'
मैंने हाल ही में बिना ज्यादा गलतियाँ किए टाइप करना शुरू किया है। मेरी गलतियाँ
मैं ऐसा कर सकता हूँ। कंप्यूटर की क्षमता के आधार पर, मैं इसे अलग तरीके से भी कर सकता हूँ।
इससे काम हो जाता है। यह एक जादुई दुनिया है! इसमें मौजूद खेल भी बेहद आकर्षक हैं। इसका आकर्षण ऐसा है कि इसकी लत लग जाती है। मैंने तीन महीनों में इतना कुछ कर लिया है और मैं इसकी सराहना करता हूँ। फिर भी, यह कभी-कभी ही होता है।
वे पूछते हैं, 'लेकिन आपने गाने को पूरी तरह से क्यों छोड़ दिया? आपने इतनी दुश्मनी क्यों पैदा की?'
मुझे क्या जवाब देना चाहिए? मैंने गाना नहीं छोड़ा है, मैं यह बात कितने दिन तक कह सकती हूँ? कब तक?
लेकिन मुझे आपको बताना होगा कि एक बार क्या हुआ था।
मुझे और सरदेसाई को भी समय-समय पर फोन आते हैं, 'मैडम, क्या मैं गा सकता हूँ?'
यह कब आएगा? आठवीं कक्षा में वह हर दिन एक या दो घंटे के लिए आता-जाता था। "तुम कर सकते हो। अन्यथा, जो कुछ भी आने वाला है वह भी खो जाएगा!"
अगले दिन मैं घर वापस आ गया। मैं उस गाँव के बारे में पूछताछ कर रहा था। आप मुंबई क्यों गए थे?
मुझे लग रहा था कि मैं यह नहीं कर सकता। उन्हें मेरे कंप्यूटर में भी दिलचस्पी लेनी चाहिए।
मुझे यह पसंद नहीं है।
मैं शनिवार को लगातार फोन करता रहता था। वह कामासाथ कंपनी में चला गया। वो थे। उन्होंने कहा था कि रात के खाने पर घर आएंगे। उनका शरीर दुबला-पतला है, कद बेट्टा जैसा। ध्यान से देखें तो उनके बालों में छिपा शरीर दिखाई देता है। उन्हें पता है कि ये काशी की धरती है, लगता है कि वो यहीं के हैं। उनकी आवाज़ मीठी नहीं है; लेकिन गाने की बहुत इच्छा है। उनकी आवाज़ में अच्छा वजन है। शवाई दिल से गाते हैं, जिससे बहुत भाव भी निकलते हैं। उन्हें

सभी रागों की लय आती है। मुझे बाकी बातें नहीं पता, तारों का तालमेल नहीं।
उनके लिए गाते हुए, मैं
इस राग का ज्ञान गहराता जा रहा है। यह उतना ही है जितना कि इसमें है।
किसी ने भी वह संगीत नहीं सुना है।
वह हँसा, 'महोदया, यहाँ गपशप करने का क्या मतलब है? इस कमरे में आइए।'
चलो। मुझे दो दिनों से चक्कर आ रहे हैं। कम से कम दो घंटे तक गाने का बहुत मन कर रहा है।
देखते हैं मैं कर पाता हूँ या नहीं! नहीं तो मुझे उस वैन में बैठकर काशी जाना पड़ेगा!
वे मुझे नौकरी से निकाल देंगे!’ और संगीता कमरे की ओर चलने लगी। मैं भी चली गई। दो महीने बाद! मारिया का बेटा हर हफ्ते पूरे घर की सफाई करता था, इसलिए कमरा साफ था। उसने दो डफ उठाए और उन्हें ठीक करने लगा; लेकिन इस वजह से तार मेरे हाथ में नहीं थे। मैं गाना नहीं चाहती थी। मैं इस कमरे में बैठना भी नहीं चाहती थी; लेकिन मैं उनके साथ थी, इसलिए मैंने ये दोनों डफ बजा लिए। डेल ने कहा, 'बिल्कुल भी गुस्सा मत करो। अगर तुम मेरे बारे में सोचो, तो मुझे मिले हुए तीन दिन हो गए हैं।'
मैं कोमल बैल की तरह तड़प रहा हूँ! सा रेम्पाधा सा ने गाना शुरू किया। आगामी शादी और शादी के बारे में सोचकर वे गुस्से से भर गए थे।
हालांकि वे जानते हैं कि राग के आंतरिक स्वरूप को ठेस पहुंचेगी, फिर भी वे ऐसी गलती कभी नहीं करते। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे भाव को उसकी मूल अवस्था में ही रखते हैं, जो छह रागों के मध्य में होती है।
मैं भी इसमें शामिल हो गया। उन्हें पुरुषों के बीच तनाव महसूस होने लगा था।
काम करते-करते मुझे इसमें कुछ नई जगहें भी दिखने लगीं। मैं उन्हें दिखा रहा था।
मुझे यह भी पता था कि उनमें इन सभी स्थानों पर जाने की शक्ति नहीं थी। ऐसे समय में, वे बस अपना सिर हिलाते और मेरी ओर देखते। वे अपना सिर हिलाते हुए कहते, 'आह! ओह, ओह!' जब वे हल्की हवा के साथ गांधार से नीचे उतरे,
उनका प्रयास असफल रहा और उन्होंने मुझे हाथ पकड़कर आगे बढ़ने के लिए मजबूर किया।

मैंने अपनी छाप छोड़ी। जैसे ही मैं धीरे-धीरे मंच पर उतर रही थी, मेरा गला भी भारी लगने लगा और मुझे खांसी आने लगी। दो महीने हो गए थे गाना छोड़े हुए, है ना? यही बात उसकी आँखों में भी दिख रही थी। मुझे चुनौती का सामना करना पड़ा। मैंने फिर से कोशिश की। धीरे-धीरे मंच पर कदम रखा। इस बार मैं कामयाब हो गई। आखिरकार मैं मंच पर पहुँच गई! 'कोमल'
"रश्भा ने छलांग लगा दी! भाई तो यहाँ नहीं है!" उसने टिप्पणी की।
मुझे शर्म महसूस हुई। मैंने दोबारा ऐसा नहीं किया।
अब मैं अपना मालिक खुद था और मैं उसका मालिक था। अंततः, जब वह,
एक छोटा बच्चा भी इतनी संतुष्टि से सिर हिला रहा था। वे भी धुन पर चल रहे थे। वे इधर-उधर कर रहे थे और मैं आगे बढ़ रहा था। गाना नया और नया है।
छाती का ऊपरी हिस्सा खुल रहा था। अंत में मैंने लयबद्ध तरीके से गाना शुरू किया।
‘तो तु हरो दास जनुमजनुमक मै’
उन्होंने ताल बनाए रखते हुए अपने बाएं हाथ से ध्वनि को भी मिलाया। फिर जल्दी से
वह उठा, अपने भाई के पास मौजूद वीणा उठाई और नौकरों के साथ संगत करने लगा। हालाँकि वह उन्हें अपने गायन की बारीकियां नहीं दिखा सका, फिर भी उसने बाएं हाथ से गाया।
वे अपने हुनर का प्रदर्शन कर रहे थे। बीच-बीच में वे कहते, 'वाह! क्या बात है!' कमरा
घंटों बिना किसी डर के बीत गए। हालाँकि इनका बार-बार होना अच्छा है, फिर भी मैं इसे रोकना चाहता हूँ।
उनके चेहरे पर भी खुशी झलक रही थी। तबला बजाने या ताल पर कोई रोक नहीं थी। जब मानसो ने गाना गाया और अंत में 'जनम जनम का मैं तो-' गाना बंद किया, तो उनके चेहरे पर न केवल प्रशंसा बल्कि अफसोस भी साफ दिखाई दे रहा था।
‘वाह! अब तो जिंदगी थोड़ी शांत हो गई है!’ वह हँसा। उस समय मैं कमरे में मौजूद था।
आया। 'बहुत बढ़िया! मैं कतार के बीच में था तब आया। मैं आपको यह कहते हुए सुन रहा था कि आप बाथरूम में नहीं जाना चाहते।'
दोपहर के एक बज रहे थे। मैं हिचकिचाया, 'मेरे घर फोन करो।'
उन्हें बता दीजिए, वे यहीं खाना खाएंगे!

गाना बंद होने के बाद भी मेरी उंगलियां तार बजाती रहीं। आओ, जनकारम, आओ, अंतमुख।
मेरा मन उन भावनाओं की यादों को फिर से जी रहा था जो मेरे मन में बसी हुई थीं। ऐसा लग रहा था जैसे मैं कुछ समझ रहा हूँ, और साथ ही, मैं यह नहीं समझ पा रहा था कि वे वास्तव में क्या थीं। संगीत के माध्यम से मुझे ऐसा अनुभव पहले कभी नहीं हुआ था। मुझे किसी तरह लग रहा था कि मुझे इन भावनाओं में अर्थ खोजने और उन्हें कोई आकार देने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। भावनाएँ तो भावनाएँ होती हैं, मैं उनके बारे में कैसे सोच सकता हूँ? लेकिन अब, मेरा ऐसा प्रतीत होता था कि आसवारिम को कोई न कोई रास्ता निकालने की उम्मीद थी। कोमल ऋषभ पिछले एक महीने से गा रही हैं। पिछले चार शनिवारों से।
यह आज की बात नहीं है, यह एक हकीकत है। सरदेसाई भी आने लगे हैं। परसों मैं काम के सिलसिले में जर्मनी गया था। वे चार दिन में आ जाएँगे।
मुझे ऐसा लगता है कि मैं अपना सबसे महत्वपूर्ण निर्णय गाँव से बाहर रहकर ले सकती हूँ। मैंने अपना मन बना लिया है! मुझे उन्हें सब कुछ उनके सामने बताना होगा और फिर बाद में उन्हें सूचित करना होगा, यही तरीका है। (पाँच महीने में लिखा गया)
बस उन्हें यह लेख दे देना ही काफी है। वे सब कुछ समझ जाएंगे। कभी-कभी, आपके सामने बैठकर समझाने पर भी कुछ मुद्दे हल नहीं होंगे। कभी-कभी, यह मुश्किल लगेगा।
दोनों बहुत क्रोधित होंगे। नाघुन गे के बाद मोर्चे पर जाना कायरता है।
यह संभव तो है; लेकिन मुझमें इतनी हिम्मत नहीं है, है ना? यह सच है! चलो, ऐसे।
सच बोलना जरूरी है। सच कैसे बोला जाए, इसी विषय पर मैं बात कर रहा हूं।
यह सच है। अपनी गलतियों के बारे में लोगों को बताकर उन्हें बदनाम करना असभ्य व्यवहार है।
और "कृपया मुझे मार डालो" कहना भी एक प्रकार का ईशनिंदा है।
अगर इससे आपको मन की शांति मिलती है, तो इसे करें। आपका।
मुझे धोखा दिया गया है! मैंने तुम्हें धोखा दिया है। मैं अब और तुम्हें धोखा नहीं दे सकता और अपने पिछले धोखे को छुपा नहीं सकता। मैं सिर्फ इस धोखे को खत्म नहीं करने जा रहा हूँ। इसके बाद, मैं अपना जीवन संगीत को समर्पित करने जा रहा हूँ। भले ही मुझसे कोई गलती हुई हो, मैं जीवन भर इस

बोझ के नीचे नहीं जीना चाहता, यही सोच मेरे इस फैसले के पीछे भी है। मैं मुंबई जा रहा हूँ ताकि वह वापस न आ सके! तुम इन कागज़ात और दस्तावेज़ों को कलाकारों को दिखाकर तलाक ले सकते हो। या मुझे तलाक के कागज़ात भेज दो, मैं उन्हें तुरंत वहाँ भेज दूँगा। मैं जीवन भर तुमसे किसी भी तरह की आर्थिक मदद की उम्मीद नहीं करता। अगर मुझे ऐसा लगा, तो मैं तुम्हें धोखा दूँगा, और इस बार से पहले तुम्हें जाने नहीं दूँगा।
जीवन के बारे में बात न कर पाने के कारण मुझे कठोर दंड की उम्मीद है, और अब जब मैं इस संसार से विदा हो चुका हूँ, तो मुझे आसानी से कोई उपयुक्त पत्नी नहीं मिल पाएगी। आर्थिक दंड इसकी भरपाई नहीं कर पाएगा। मैं केवल आपके चरणों में सिर झुकाकर क्षमा मांग सकता हूँ।
मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि जो कुछ भी हुआ, उसके बारे में मैं किसी को कुछ नहीं बताऊंगा।
ए. 'मैं संगीत को अपनी एकमात्र आशा मानकर और अपनी माँ के समान एक दिव्य सत्ता को साथ लेकर लौटा हूँ।'
तुम इसे चाहे जितना भी खोजो, नहीं पाओगे; लेकिन इस देश में गाँव का विकास होना असंभव है,’ मैं अपने भाइयों, अपने बहनोई और अपनी माँ से बस इतना ही कहूँगा। यानी, यह दायित्व केवल मेरा है। तुम्हें किसी को भी सच बताने का अधिकार है।

३
उसने अपने पति को क्यों छोड़ा? मोहनलाल बहुत क्रोधित था। इसीलिए
उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था। ये तो सरासर पागलपन था! इतना बड़ा फैसला लेने से पहले मुझे एक पल सोच लेना चाहिए था! फोन करना और बात करना कहाँ गया? ये तो ज़ेरॉक्स पेपर्स हैं। लगता है असली कागज़ात उसे दिए ही नहीं गए! वो कितना अच्छा पति था। मैंने उसे सब कुछ क्यों बताया? मैं इसके बारे में क्या कहूँ! गुरु और शिष्य का रिश्ता हमेशा गहरा होता है। कोई साधारण शिष्य नहीं, बल्कि एक खास शिष्य। ये कैसे मुमकिन है कि जिसके पास सब कुछ है, जो अगली पीढ़ी को गुरु के रूप में मेरा नाम सुनाएगी, वो एक साधारण शिष्य हो? या तो वो बहुत करीबी होगी या फिर मेरी ही कोख से जन्मी होगी। भला कौन विष्णु का रहस्य किसी के लिए उजागर करेगा? मैंने उससे कभी उस पवित्र बंधन को तोड़ने के लिए नहीं कहा। मेरा भी विक्रम से बेहद प्यार का रिश्ता है। कुछ नहीं, ये तो बस अतीत की एक सनक है। जब मेरा मन किसी बात पर अड़ जाता है, तो उसी के पीछे भागता है।
दरवाजे की घंटी बजी। मैंने घड़ी देखी। लंच बॉक्स आने का समय हो गया था।
जैसे ही मैंने दरवाजा खोला, खाने की खुशबू अंदर आ गई। बॉक्स को मेज पर रखते हुए भी मुझे भूख नहीं लगी। मुझे याद आया कि सुबह वह कितना भूखा और भारी था। उसे सच में यह अखबार चाहिए था।
कौन जाने उसने उसे यह दिया या उससे मिलने के बाद उसने ऐसा करने का फैसला किया!
मैं इन महिलाओं के बारे में कुछ नहीं कह सकता! लेकिन मुझे यह भी याद आया कि यह कोई चालाक लड़की नहीं है।
उसने खिड़की के पर्दे से बाहर देखा। समुद्र बिल्कुल खाली था। वहाँ एक भी जहाज नहीं था।
वह दिखाई नहीं दे रहा था। मुझे लगा जैसे खाली समुद्र को देखते हुए मेरा मन भी भटक रहा हो। समुद्र में नावें-जहाज तो होने ही चाहिए। अगर जहाज न हों तो कितना भयानक होगा! उसने पर्दे खोले और बिस्तर पर लेट गया। अपनी बेचैनी दूर करने के लिए वह सोचने लगा, क्या पता कोई पागल लड़की - लापरवाही से हरकतें करते हुए - मुसीबत में पड़ जाए?

मुझे उसके साथ क्या करना चाहिए? मुझे उसे बुलाना चाहिए और उसे आने के लिए कहना चाहिए, वह किसी और तरीके से मेरे पास आएगा।
आपको खूब बातें करनी चाहिए और कहना चाहिए, 'मेरा आपके खेल से कोई लेना-देना नहीं है' और हाथ मिलाना चाहिए। हाँ। यही उचित रहेगा। उसने अपने कपड़े बदले। उसे चाय पीने की इच्छा हुई। उसने चायदानी उठाई और दो घूंट चाय पी। उसने चायदानी को तिपाई पर रख दिया।
क्या उसने यह बात अपनी माँ को बताई थी? पत्र में लिखा था कि वह किसी और को नहीं बताएगा; लेकिन भवाने ने इस मनोदशा में अपनी माँ से कहा, अगर भाइयों को उनकी माँ से पता चल गया तो क्या होगा? दोनों भाई व्यापार में अच्छा कर रहे हैं। अगर इस वजह से तुम्हारी बहन का जीवन बर्बाद हो गया और वे दुखी हुए तो क्या होगा? वे मेरा क्या कर सकते हैं? अगर ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई तो वे मुझे इस मामले के कागजात दिखा सकते हैं। अगर वह मेरे जाल में फंस गई तो वे क्या करेंगे? इस विचार से उसे थोड़ा बेहतर महसूस हुआ। वैसे भी, बड़े परिवारों के लोग इस मामले में ज्यादा हंगामा नहीं करते, यह उसका भी अनुभव था।
दो बज चुके थे। उसे भूख लगने लगी। कोच ठंडा था। उसने उतना ही खाना खाया और सोने चला गया। उसे नींद नहीं आई। उसने पर्दे बंद किए और एसी चालू किया, लेकिन फिर भी नींद नहीं आई।
इन सब बातों का मतलब क्या है? वो पहले तो तैयार नहीं थी, मैंने उस पर दबाव डाला, मेरी प्यारी; लेकिन अगर मैं ऐसा नहीं करता, तो कोई भी औरत तैयार नहीं होती। जब वो तैयार हो गई, तो क्या उसने पूरी तरह से हार मान ली? उसने मेरे साथ रिश्ता बना लिया! इसका मतलब है कि मैंने उसके पति को धोखा दिया, जो कि एक गलती है। आप चाहे जैसे भी देखें, इस पूरे मामले में मैं निर्दोष हूँ! ये सोचते हुए वो करवट बदल कर चैन की सांस लेने लगा। फिर भी उसे नींद नहीं आ रही थी। अगर दोपहर में झपकी न ली होती तो शाम तक उसकी तबीयत खराब हो जाती। खैर, ये तो कुछ भी नहीं था। उसे अब सो जाना चाहिए था। साढ़े तीन बज चुके थे। उसे एक बार उसे फोन करके सब कुछ समझा देना चाहिए था और अपनी गलती का दोष उसे दे देना चाहिए था। उसने जो कार्ड उसे दिया था, वो उसके तकिए के पास ही पड़ा था। उसने तुरंत फोन किया।
वह लगभग एक घंटे बाद पहुंची। उसके दाहिने हाथ में एक छोटा सा डिब्बा था। एक रिकॉर्डर। ऐसा लग रहा था जैसे इसे अमेरिका से लाया गया हो। उसमें पुराने

ज़माने की कैसेटें थीं। उसने सोचा, 'लगता है तुम मुझे कोई गाना सिखाने की तैयारी करके आई हो!'
मैं आपके शुरू करने के लिए तैयार हूं।
‘चलो!’ उसने बिस्तर की ओर इशारा किया। वह बेपरवाही से उसके पीछे-पीछे चली गई। उसने तकिया दीवार से टिकाया और उस पर बैठ गया। उसने थोड़ी दूरी पर रखी कुर्सी खींची और बैठ गई। उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था। आने वाली घटना का सामना करने के लिए वह गंभीर थी।
दोनों कुछ देर तक चुपचाप बैठे एसी की आवाज़ सुनते रहे। फिर वह चिल्लाया, 'बोलो!'
उसने कुछ नहीं कहा। वह बस यही कहता रहा, लेकिन वह हंस पड़ी और बोली, "तुम ही बताओ।"
‘क्या तुमने ये कागज़ विक्रम को दिया?’
नहीं। मुझमें हिम्मत नहीं थी। मैं बहादुर नहीं बन सकता था, मुझे लगता था कि यह अहंकार होगा। वह मुझे मुंबई जाकर गाना सीखने के लिए ज़ोर दे रहे थे। वह अपने साथ एक आधुनिक रिकॉर्डिंग मशीन भी लाए थे। वह सैन फ्रांसिस्को हवाई अड्डे पर आए और अलविदा कहा। उन्होंने कहा, 'सिर्फ पंद्रह दिन रुकने का फैसला मत करो। अगर गुजी गांव में हैं और उनका मन है, तो कुछ और दिन रुकने में कोई दिक्कत नहीं है।' इमिग्रेशन चेक के बाद, वह अंदर आए और फोन बूथ पर जाकर घर फोन किया और कहा, 'विक्रम, मुझे फोन करना। तुम्हारे कोट पर एक सफेद पैकेट है। उसमें जो कागज है, उसे पढ़ लेना।' विक्रम रास्ते में थे, इसलिए उन्होंने एक रिकॉर्डेड मैसेज छोड़ दिया। वह कुछ ही मिनटों में घर पहुंच गए होंगे। उन्होंने कागज तुरंत पढ़ लिया होगा।
उसने आगे कुछ नहीं सोचा। वह कुछ देर तक उसी मुद्रा में रही। फिर वह हंस पड़ी।
लंदन पहुँचने के बाद उसे फ़ोन करने की मेरी आदत है; लेकिन मैंने फ़ोन नहीं किया। वो हमेशा मुंबई पहुँचने के एक घंटे के अंदर मुझे फ़ोन करता है, लेकिन वो नहीं आया। दो दिन हो गए हैं मुझे यहाँ आए, फिर भी वो नहीं आया। मैं उससे पूछना भी नहीं चाहती। मैंने सब कुछ खो दिया है। सब कुछ टूट गया है। मुझे अपने खोए हुए का दुख नहीं है; बल्कि ये सोचकर बहुत दुख हो रहा है कि वो कैसा महसूस कर रहा होगा! ऐसे अच्छे इंसान के लिए ये नामुमकिन है! इतना अच्छा पति मिलना। मुझ जैसी किसी से मिलने के बाद उसे इतना दुख क्यों सहना पड़ रहा है?

ये सच है कि वो इस दुनिया में नहीं आता! वरना उसे अच्छी पत्नी मिल जाती!’ ये कहते हुए उसे अचानक दुख का एक गहरा झटका लगा। वो दुख से रोने लगी।
मोहनलाल विधवा हो गईं।
कुछ देर बाद उसने खुद को संभाला और कहा, "मैं तुम्हारे लिए रो नहीं सकी।
क्योंकि मैंने जानबूझकर यह स्थिति पैदा की थी। सिवाय एक बात के।"
जो भी उन्हें दुख पहुंचाएगा, ईश्वर उसे क्षमा नहीं करेगा।
ऐसा लगा जैसे किसी ने उसे ठंडे पानी में डुबो दिया हो। उसकी पानी से भीगी आँखें उस पर टिकी हुई थीं। उसने कहा, 'क्या तुम्हारा मतलब यह है कि मैं इन सब के लिए ज़िम्मेदार हूँ?'
उसने अपनी निगाहें उस पर टिकाए रखीं और कहा, "तुम मेरे राज़ हो। तुम मेरे राज़ हो।"
अगर आप मुझे दोष भी देंगी, तो मेरी कला बर्बाद हो जाएगी। आपने कभी कुछ गलत नहीं किया। जो कुछ भी हुआ, मैंने कभी अपनी ज़िम्मेदारी से मुंह नहीं मोड़ा, और न ही कभी मोड़ूंगी। आपको कला देना असंभव है, बिना यह महसूस किए कि यह मेरी कला है, आपने ही मुझे बताया था। आपने मुझ पर कोई दबाव नहीं डाला। मैंने बिना सोचे-समझे आपको अपना बना लिया। आपने अपना वादा निभाया, मुझे इतना गाना सिखाया। आपके स्वभाव को जानते हुए भी, मैंने आपको अमेरिका बुलाया। इस बार भी, आपने मुझे दो राग पूरी तरह से सिखाए। अब मैं आपको सभी राग सिखाने आई हूं। अपने पति को धोखा देना, अपने पति को छोड़ना, इससे आपका कोई लेना-देना नहीं है। यह पूरी तरह से मेरा मामला है। मैंने इसके लिए जो करना था, वह किया है। आपको संकोच करने की कोई ज़रूरत नहीं है। आज से ही गायन सिखाना शुरू कर दीजिए।
आप बहुत ही समझदारी से बोलते हैं!
‘यह किस तरह की चतुराई है?’
क्या तुमने मुझे इसलिए छोड़ दिया क्योंकि इस दुनिया में रहते हुए मेरे साथ संबंध बनाए रखना मुश्किल था? तो क्या अब से तुम मुझे पूरे दिल से प्यार करोगे?
उसने उसकी निगाहें मिलाने से परहेज किया। उसने बार-बार वही सवाल पूछा। उसने कहा, "आप इसके बारे में सोच रहे हैं, इसलिए मुझे जवाब देना होगा। अगर आप मुझे सच बता देंगे, तो मैं नाराज नहीं होऊंगी।"
तो शब्द।

नहीं, मैं गुस्सा नहीं करूंगा। मुझे बताओ।
‘मुझे ‘सब कुछ दे देना’ शब्द का अर्थ समझ नहीं आता। किसी को भी अपना शरीर किसी को नहीं देना चाहिए। उन्हें यह आसानी से मिलना चाहिए; लेकिन कुछ लोग इसका व्यापार करते हैं, कुछ जीविका के लिए ऐसा करते हैं, कुछ निश्चित धन के लिए, कुछ व्यापार के लिए, कुछ प्रसिद्धि के लिए – इस तरह का जीवन विभिन्न कारणों से चलता है। क्या हर किसी को अपने शरीर का अपनी इच्छा अनुसार उपयोग करने का अधिकार नहीं है? शिक्षा इन सबसे बेहतर है। संगीत की शिक्षा तो इससे भी बेहतर है। अगर मैं अपने शरीर का इस उद्देश्य के लिए उपयोग करता हूँ, तो इसमें क्या गलत है? विक्रमाना ने यह कहते हुए प्रस्थान किया कि विवाह के दायरे में ऐसा व्यवहार गलत है।’
उसका नजारा एक पल में बिजली की तरह चमक उठा।
उसने आगे कहा, ‘मैं आपको एक और बात बता दूं। अब मेरी उम्र तीस साल हो चुकी है। शायद मेरा शरीर अब आपके साथ यौन संबंध बनाने के लायक नहीं है। लेकिन मैं यह नहीं चाहती कि आप इस वजह से इस उबाऊ जीवन में फंसे रहें। मेरे माता- पिता ने मेरे लिए एक बड़ा घर खरीदा है। वह कई सालों से अच्छी हालत में है। उन्होंने बैंक में कुछ पैसे जरूर जमा किए होंगे। मेरी शादी भी उसी बैंक में जमा है। अगर आप इस वजह से मुझसे ऊब जाते हैं, तो मैं आपको जमा की गई रकम भी नकद में दे सकती हूं। जितनी चाहें उतनी। वह सारा पैसा मेरा है।’
हमारा दृष्टिकोण अभी भी वही था।
‘मैंने आपके गीतों के लिए आपको समर्पित कर दिया है। देश में और भी गायक हैं; लेकिन इतने वर्षों तक आपसे शिक्षा प्राप्त करने के बाद, मेरी यही इच्छा है कि मेरी शिक्षा का अंत भी आप ही के साथ हो। अन्यथा, आधार और शिखर में सामंजस्य नहीं रहेगा। मैं अपनी मृत्यु तक पंडित मोहनलालजी के शिष्य के रूप में गाता रहूंगा!’
उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। अब कुछ बचा ही नहीं था। उसने खिड़की का पर्दा खोला।
कुछ देर तक उसने समुद्र को देखा, जो पश्चिम की किरणों से चमक रहा था। फिर उसने दोबारा देखा।
हनाली ने कहा, 'पु कहता है, मैं किसी को नहीं बताऊंगी।' एक अलग लट्टे लेते हुए
मैं यहीं रहूंगी। मैं विक्रम को जाने के लिए भी नहीं कहूंगी।

□

गायब हो गया था। तुम मुस्कुराते हुए नाश्ते के लिए तैयार थे। अब हम क्या करें?'
उसके मन में और कुछ नहीं था। उसने भी सहमति दे दी।
लेकिन बाद में उन्हें अचानक एहसास हुआ कि इसके अलावा उससे बात करने का कोई फायदा नहीं है! न्यूयॉर्क तो उसका गाँव भी नहीं है। वह इस गाँव के बारे में इतना भी नहीं जानता कि उससे बात कर सके। उसका गाँव, वहाँ के घर, गाँव – उसे कुछ भी नहीं पता।
इस जगह के सबसे नजदीक का शहर अटलांटिक सिटी है! मुझे तो यह शहर याद भी है। नहीं! ‘यहाँ आने के बाद से मुझे तुम्हारी इतनी याद आई है कि मैंने किसी और औरत से बात ही नहीं की!’ बस इतना ही वह कह पाया! इसमें भी, ‘मैंने किसी और औरत से बात ही नहीं की’ या ऐसा कुछ भी, समझ में नहीं आता। तो मैं उससे क्या बात करूँ? ऊपर से, अंग्रेज़ी की भी समस्या थी। मुझे बहुत बुरा लग रहा था, बस इसी के लिए हम इतने महीनों से इंतज़ार कर रहे थे? लेकिन जब मैं मधु के साथ होती, तो बात करने के लिए विषयों की कमी नहीं होती। हम दोनों की भाषा एक ही थी, एक ही देश, एक ही गाँव, विदेश यात्रा का एक ही जुनून, और कुछ बातें मिलती-जुलती थीं। अगर गजा की बात आती, तो कई गपशप हो सकती थीं; लेकिन उसने कहा, ‘तुमने अपने पति पर बेवफाई का इल्ज़ाम मुझ पर लगा दिया है। अगर हम इतनी लड़ाई करते, तो वह हमसे बहस करता।’
मैं मान जाता; लेकिन मैंने सब कुछ लिख लिया है और आपको दे दिया है। मुझे यह किसने दिया?
अधिकार? मैंने पहले कहाँ सोचा था? बेचारी लड़की! हमारे अंदर एक प्रबल नैतिक अहंकार है कि हम रहस्य से श्रेष्ठ हैं। यदि इतना अहंकार है, तो कला पर विजय कैसे पाई जा सकती है?
‘गुजी, प्रशिक्षण कब शुरू होगा? तुम यह पत्र मुझे भेज दो और अमेरिका को सूचित कर दो।’
‘आज मैं तुम्हें अपनी लट्टे दिखाऊँगी। तुम चल सकते हो। तुम्हारा शरीर कल सुबह नौ बजे यहाँ होगा। बीस दिन बाद तुम्हारी लट्टे भी आ जाएगी। उसके बाद तुम हर दिन रियाज़ा कर सकते हो। अगर तुम इस होटल में रुके तो दूसरे लोग शिकायत करेंगे।’
उनमें से किसी को समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या कहें। उसे याद आया कि दूसरी महिलाओं के साथ भी ऐसा ही होता था। ‘तुम खूबसूरत हो, उवाशी, रंभा,

वगैरह’ जैसी सारी बातें उसके बाद बेमानी हो जाती थीं। उसके बाद मैं कोई बहाना बनाकर उन्हें घर से निकालने की जल्दी में था। फिर मैं दिल्ली चला गया और पहले कुछ दिन मनोहरी के साथ बिताए।
इसके बाद भी मुझे चित्रकारी करने में आनंद आ रहा था। जब विक्रम परगाँव गया।
मधु के साथ मेरा भी यही अनुभव रहा है, दिन-रात। मनोहरी का व्यवहार ऐसा था और अब अचानक उसे पति प्रेम की बीमारी लग गई! आवेश में आकर उसने अपने पति को पत्र भी लिख दिया। शुभकामनाएँ!

५
भूपली को मुंबई आए पाँच दिन हो चुके थे। एक सुबह वह आई और नौ बजे से साढ़े दस बजे तक गाना गाया। करीब ग्यारह बजे दरवाजे की घंटी बजी। मधु दरवाजे पर खड़ी थी। उसके दाहिने हाथ में एक थैला और बाएं हाथ में फलों का थैला था। उसने उसे अंदर आने के लिए नहीं कहा। उसने कुछ नहीं कहा। वह फलों का थैला लेकर रसोई में आई। वह सोफे पर बैठा था। उसके चरणों में बैठकर उसने उसे प्रणाम किया।
उसने अपना हाथ मजबूती से उसके सिर पर रख दिया। वह चुपचाप वहीं बैठा रहा। उसके चेहरे पर बेबसी साफ झलक रही थी।
उसने कहा, 'आज गुरुवार है। पढ़ाने की शुरुआत करने के लिए अच्छा दिन है। तो आ जाओ। कैसेट भी ले आना।'
वह कुछ नहीं बोले। उन्होंने सिर उठाकर उनकी ओर देखा। उन्होंने नज़रें फेर लीं। उन्होंने कहा, 'गुरुजी, अगर मुझसे कोई गलती हुई हो तो मैं क्षमा चाहती हूँ। अगर मैंने कोई गलत शब्द कहा हो तो कृपया उसे भूल जाइए। अगर आप मुझसे नाराज़ हैं तो इसमें मेरी क्या समस्या है? मुझे आज से पढ़ाना शुरू करना है।'
फिर भी वह कुछ नहीं बोला। उसने उसकी ओर देखने से भी परहेज किया। उसने उसके पैरों को कसकर पकड़ रखा था और कहा, 'जब तक तुम मुझे डफली बजाने के लिए नहीं कहोगी, मैं तुम्हें नहीं छोडूंगा।'
वह चुप रहा। वह हंस पड़ी, 'बोलो! कुछ तो बोलो!'
वह हँसा, 'यान का एक रहस्य है, यान में नैतिक अहंकार नहीं है। क्या तुम्हारी पवित्रता तुम्हारे रहस्य से श्रेष्ठ है? मैं तुम्हें गाना सिखाने की इच्छा कैसे कर सकता हूँ?'
‘यह विचार आया कहाँ से? इसके विपरीत, मैंने तो इस विचार से पूरी तरह मुक्त होने के बाद ही गुरु के चरणों में आत्मसमर्पण किया! यदि मुझे यह अहसास न होता कि गुरु ही सब कुछ हैं, तो मैं ऐसा क्यों करता?’
"तुम ही तो हँसे थे, है ना? कुछ लोग पैसे के लिए अपना शरीर बेच देते हैं, तो तुम कला के लिए अपना शरीर बेचोगे?"
‘यह एक गलती थी! कला के लिए नहीं, बल्कि आपके लिए, आप मुझे अपना बना रहे हैं। चलो चलते हैं,’ वह उठ खड़ी हुई। वह चुप रहा। उसने कहा, ‘गु जी, मेरे दिल में

जरा भी डर नहीं है, बिल्कुल भी नहीं। मैं पूरी तरह से तैयार हूं कि आप मेरे हो जाएं।’
वह उठ खड़ा हुआ। माँ उसे बिस्तर पर ले गई और चली गई। उसने एसी चालू किया और पर्दे बंद कर दिए। उसे पहल करते देख, माँ को आत्मविश्वास मिला। उसका गुस्सा शांत हो गया। हालाँकि माँ जानती थी कि उसे अपने बेटे को समझाना पड़ेगा, फिर भी उसने समझदारी से काम लिया और उसे प्रोत्साहित किया।
उमा ढोल बजा रही थी, फिर भी उससे कोई आवाज़ नहीं निकल रही थी। उसने उसे समझाने की कोशिश करते हुए कहा, 'माँ के प्रति तुम्हारा गुस्सा पूरी तरह शांत नहीं हुआ है, है ना? चलो थोड़ी देर माँ की गोद में सिर रखकर लेटते हैं और एक-दूसरे की बात सुनते हैं! सब ठीक हो जाएगा!'
वह अचानक सीधा बैठ गया। उसने उसे घूरकर देखा। उसने उसके चेहरे पर एक जोरदार थप्पड़ मारा। एक-दो! अचानक लगे थप्पड़ से उसकी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई।
‘वाह! तुम तो बिलकुल बाप जैसे हो! उसे चिट्ठी लिखोगे और मुझसे प्यार का नाटक भी करोगे! यह तुम्हारा असली नाम नहीं है। इसीलिए मेरे शरीर ने तुम्हें ठुकरा दिया है! जाओ! फिर कभी यहाँ कदम मत रखना। वो रिकॉर्डिंग मशीन भी ले जाओ! मैं तुम्हें गाने नहीं दूंगी! ये शैतान का श्राप है! इसे अपने मुँह में रखो!’ वह कुछ देर तक बड़बड़ाता रहा।

ग्यारह

१
जब उजाला छटा, तो उसे समझ नहीं आ रहा था कि कहाँ जाए। उसे पता था कि थोड़ी दूर पर एक टैक्सी स्टैंड है। वह सीधे घर जा सकती थी; लेकिन घर जाकर क्या करती? कुछ नहीं! उसका दिमाग सुन्न हो गया। हमसे भी गलती हुई थी। विक्रम को वह कागज़ दिखाना हमारी नैतिकता का सवाल था। गुजी को दिखाना भी एक गलती थी। इसके बाद भी उसने उसे कई बार कहा, 'यह ज़रूरी नहीं कि मैं भ्रष्ट हो गई, यह ज़रूरी नहीं कि तुम भ्रष्ट हो गए।' फिर भी उसने नहीं सुना। यहाँ तक कि जब उसने उसे बताया कि उसने अपने पति को पूरी तरह से त्याग दिया है, तब भी उसने नहीं सुना। उसने गुस्से में हाथ उठा लिए! उसने अपने पति को कोसते हुए कहा कि वह ज़्यादा दिन नहीं जी पाएगी!
उसके मन का खालीपन और गहराता चला गया। टैक्सी स्टैंड जाने के बजाय, वह बाईं ओर मुड़ गई। आधा मील दूर समुद्र तट था। समुद्र में बना एक बड़ा चौकोर हिस्सा। सौ फीट लंबा, पचास फीट चौड़ा। यह वह जगह थी जहाँ बच्चे खेलते थे, जहाँ आइसक्रीम, लॉलीपॉप और पनीर बेचने वाले अपनी दुकानें लगाते थे; लेकिन दोपहर की तेज़ गर्मी में, वह चौक बिल्कुल खाली था। वह उससे आगे गई और वहीं खड़ी हो गई। वह चारों ओर लगी लोहे की रेलिंग से टिक गई। बीस फीट गहरे समुद्र की लहरें दीवार से टकरा रही थीं। न हवा थी, न ज्वार। फिर भी, इन लहरों में फंसा कोई भी व्यक्ति मर जाता। मैं इस जगह पर पहले कभी क्यों नहीं आई?
वह कुछ देर तक लहरों को निहारती रही। उसके दाहिने हाथ में रिकॉर्डिंग मशीन भारी लग रही थी। उसने उसे ज़मीन पर रख दिया। इन लहरों को देखते हुए उसे अचानक असावरी का मंदिर याद आ गया। नदी में बंधा पवित्र मंगलसूत्र, जो उस दुल्हन के साथ हुए विश्वासघात को उजागर कर रहा था जिसने अपनी पवित्रता बनाए रखी थी! उसमें डूबने की प्रबल इच्छा जाग उठी। एक बार उसमें डूब जाने पर, ये लहरें दीवार से टकराने के लिए दौड़ पड़ेंगी। ओह! फिर कुछ नहीं बचेगा। अंत। अंत। जीवन का अंत। 'यहाँ दोबारा कदम मत रखना, मैं तुम्हें गाने नहीं दूँगी।' चार फुट की चट्टान। दोपहर की हवा चल रही थी। कोई नहीं। अगर तुम यहाँ से कूद भी जाओ, तो लहरें तुम्हें घेर लेंगी और तुम्हारा जीवन पानी में विलीन हो जाएगा। इसके बाद, लहरें इस शरीर को उठाकर दीवार से इस तरह

टकराएंगी कि शरीर का कोई पता ही नहीं चलेगा। बिना किसी झिझक के पानी में कूदने की इच्छा मन में बनी रही। नए से दूर, अतीत से अलग। अब जीवन में संगीत खोखला हो गया है। ऐसी स्थिति में, मृत्यु के सिवा और क्या सुख हो सकता है? यह विचार उसे डरा नहीं पाया, बल्कि उसे गहरे दुःख से भर दिया। वह लगातार सिसकियाँ भरती रही। कमर पर हाथ रखकर वह फूट-फूटकर रोने लगी। उसे इस बात की परवाह नहीं थी कि कोई उसे सुनेगा या नहीं। वह बिस्तर के किनारे बैठ गई। उसकी आँखों में पानी ऐसा लग रहा था मानो समुद्र की लहरों का बल कम हो गया हो, मानो वे जलरंग की पेंटिंग हों।
जैसे ही आवेग शांत हुआ, उसने अपनी आँखें पोंछीं। लहरों की आवाज़ उसके कानों तक पहुँच गई थी। वह उठ खड़ी हुई। लहरों की आवाज़ सुनते हुए उसे ऐसा लगा जैसे कोई उसके पीछे खड़ा हो। उसने पीछे मुड़कर देखा।
उसके पीछे एक बूढ़ा आदमी खड़ा था। उसने रेशम की बिना इस्त्री वाली धोती पहन रखी थी, जिसे घर के अंदर पहना जाता था। उसने एक भिक्षु द्वारा सिला हुआ बनियान भी पहन रखा था। उसके मुँह में सफ़ेद दाँतों वाली कंघी थी। उसकी उम्र लगभग पचासी वर्ष रही होगी। उसकी दाढ़ी थी।
"बेटी, तुम क्यों रो रही हो?" भले ही उसका एक दांत टेढ़ा था, फिर भी वह चार साल का ही था।
उन्हें असहजता महसूस हुई। उन्हें शर्मिंदगी हुई कि किसी ने उनका राज़ जान लिया है। उन्होंने कहा, 'चौथी मंज़िल पर सामने वाला वो फ्लैट हमारा है।
वहीं मेरी पत्नी रात के खाने के बाद गैलरी में इस आरामकुर्सी पर बैठकर नहाती थी। ये तुम्हारी पीठ है। मुझे लगा, कोई लड़की किसी परेशानी में है। वो यहाँ इस तरह क्यों खड़ी है? मैंने तुरंत एक छड़ी उठाई और घर से बाहर आ गया। सुनो बेटा। अगर तुम चाहो तो हमारे घर आ जाओ। अगर नहीं तो घर चले जाओ। दुख समुद्र की लहरों की तरह होता है। एक लहर दूसरी लहर जैसी नहीं होती। एक घंटा दूसरे घंटे जैसा नहीं होता।'
उसने भौंहें चढ़ाकर उसकी ओर देखा। शर्म से उसका चेहरा उतर गया। उसने कहा, 'देखो। मैं तुम्हारे निजी जीवन के बारे में नहीं जानना चाहता; लेकिन मैं अपने अनुभव से कह सकता हूँ कि किसी से अपने दुख बाँटने से दर्द कम होता है। कुछ लोग बिना किसी से बात किए ही इस दर्द से उबर जाते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि जो लोग दूसरों से खुलकर बात करते हैं वे कमजोर होते हैं। क्या तुम मेरी बात समझ रही हो? चलो इस पर गौर करते हैं!'

वह ऐसा नहीं कर सका। उसने अपनी बात दोहराई और कन्या की ओर देखा। कन्या ने उसके चेहरे को ध्यान से देखकर कहा, 'मेरे पास चेहरे पढ़ने और कुछ हद तक भविष्य बताने की शक्ति है। तुम मूर्ख नहीं हो। तुम इस स्थिति से उबर जाओगे। तुम्हें किसी को कुछ बताने की ज़रूरत नहीं है। अब उठो। वह बक्सा उठाओ और घर जाओ।'
वह उठ खड़ी हुई। पता नहीं वह क्या सोच रही थी! उसने झुककर उनका अभिवादन किया। रिकॉर्डर उठाकर वह टैक्सी स्टैंड की ओर चलने लगी।

उन्होंने औपचारिक रूप से खुशी के चार स्तंभों की पहचान की है।
मैंने ये बात कह दी थी, फिर भी मेरे मन में ये ख्याल आया कि उसके पास भविष्य बताने की कोई खास क्षमता होनी चाहिए। वरना, मेरे समुद्र में कूदे बिना वो यहाँ कैसे आ सकता था? उसे उसकी आँखें याद आईं। उन आँखों में कितना अथाह सच छिपा था!
वह पूरा हफ़्ता उसने कुछ नहीं किया। वह घर पर ही रही। घर पर भी, वह अपना समय इसी कमरे में सोकर बिताती रही, किसी से ज़्यादा बात नहीं करती थी, यहाँ तक कि अपनी माँ, देवर और भाभी से भी नहीं। वह बात करना नहीं चाहती थी। लेकिन उसने सबके साथ खाना, चाय और नाश्ता किया। उसने सबको बताया था, 'अमेरिका में गाना सीखना मुमकिन नहीं है, इसलिए मैं अपनी बाकी ज़िंदगी यहीं बिताने वाली हूँ। अब गुजी गाँव में नहीं हैं।' उसने भातखंडे की किताब की एक प्रति अपने तकिए के पास रखी हुई थी। एक-दो बार उसे लगा कि कहीं उसने वो कागज़ विक्रम को दे तो नहीं दिया, कहीं गलती से तो नहीं। लेकिन उसे मानना पड़ा कि इससे उसे थोड़ी राहत मिली थी। उसे विक्रम का फ़ोन नहीं आया था। उसके आने की उम्मीद भी नहीं थी! लेकिन उसकी माँ ने दो-तीन बार इसके बारे में पूछा था। वह यह भी समझ गई थी कि उसकी माँ को विक्रम के गाँव में न होने का कारण समझ नहीं आया था। आखिर दुनिया में कहीं से भी फ़ोन कर सकते हैं, बात अलग है। माँ को यह बीमारी हो गई थी। यहाँ तक कि जीजाजी ने भी इस विषय पर कोई चर्चा नहीं की। ऐसा लग रहा था मानो कुछ खास हुआ ही न हो।
उनका व्यवहार कुछ इस तरह था। एक बार मेरी बड़े भाई से मेरी बैंक पासबुक और चेकबुक के बारे में चर्चा हुई थी।
मुझे बोलना चाहिए था। क्योंकि व्यापार का सार यही तो है! उसे लगा कि एक छोटा सा फ्लैट किराए पर लेकर वहां रहना अच्छा विचार होगा।
लेकिन जिस गुरुजी ने मुझे यह गीत सिखाया था, उन्होंने मुंह मोड़ लिया! उन्हें भी समझ आ गया कि अब दोबारा सोचने का कोई फायदा नहीं। दूसरा सवाल भी वही था। फिर किससे सीखूं? मुझे कौन सिखाएगा? सिर्फ राग या वारों का चलन ही नहीं। भला कौन बिना किसी रुकावट के पूरी भाववरष्टि कर सकता है? अगर कोई योग्य गुरु है, तो मुंबई क्यों नहीं? कोई दूसरे गांव में जाकर घर खरीदकर रह भी सकता है।
एक हफ्ते बाद मुझे एहसास हुआ कि अगर मैं अकेले कमरे में बंद होकर बैठी रहूँगी, तो कुछ भी हासिल नहीं होगा। अगर मैं इस इलाके के इन चार लोगों से

मिलूँ और इस बारे में बात करूँ, तो शायद कुछ हो जाए। लेकिन मैं किससे बात करूँ? उसे याद आने लगा। एक समस्या उभरने लगी। अगर मैं नए गुरु के पास जाऊँगी, तो वे कहेंगे, 'तुमने अब तक जो कुछ भी सीखा है, वह सब पूरी तरह से भूल चुकी हो और अगर तुम इसे फिर से सीखने के लिए तैयार हो, तो मेरे पास आओ।' हर कोई अपने घर में यह दीवार खड़ी करने के लिए संघर्ष करेगा। चाहे वह व्यक्ति कितना भी बुरा क्यों न हो,
इस गायन में परिवार की कोई पाबंदी नहीं है। सभी परिवारों की सबसे अच्छी बात यही है।
यह समाहित हो गया है। यह मधुमक्खी की तरह है! इसने शहद का हर कण इकट्ठा करके अपना स्वतंत्र गायन स्थापित कर लिया है। इसने कुछ दोषों से ध्यान हटाने में सफलता प्राप्त कर ली है।
अगली सुबह अखबार पढ़ते समय उसकी नजर 'आज की खबरें' पर पड़ी। उसमें पंडित मोहनलाल के शाम छह बजे सीजे हॉल में गायन का जिक्र था। उसके मन में एक विचार आया। वह इससे कुछ सीखना नहीं चाहती थी।
यह गाना क्यों सुनना चाहिए? टिपनीस और प्रभु उनके साथ थे। इन दोनों ने सनीवेल में गाना गाया था।
मुझे कार्यक्रम के दौरान मिले लोगों की याद आ गई। वे दोनों घर पर खाना खाने भी आए थे। अच्छे लोग थे। नहाते समय मुझे ख्याल आया कि मुझे कार्यक्रम में जरूर जाना चाहिए। भले ही इसके लिए पैसे देने पड़ें, इस कला के लिए क्यों न दूं? नहाकर बाहर आने पर मैंने फिर से नोट देखा। उसमें सिर्फ दो सौ रुपये का नोट बचा था। फोन पर उन्होंने मुझसे एक नोट निकालकर रखने को कहा था।
दूसरी पंक्ति में बीच वाली सीट खाली थी। वह उसे देख लेगा, पहचान लेगा। क्या मुझे सीट बदल लेनी चाहिए? लेकिन फिर उसे ख्याल आया कि आखिर वह पैसे देकर गाना सुनने आया है। इसमें मुश्किल क्या है? फिर भी, जब कार्यक्रम शुरू हुआ, तो उसने बैठने का मौका लपक लिया; लेकिन इससे भी उसे संतुष्टि नहीं मिली और वह अपनी हमेशा वाली सीट पर नहीं बैठा।
एक अधेड़ उम्र की महिला आई और पहली पंक्ति में बैठ गई। सफ़ेद बाल, सीधी नाक। देखते ही मुझे याद आया कि मैंने उसे कहीं देखा है। जी हाँ। गोरे साहब! मैं आगे बढ़कर उससे बात करना चाहती थी; लेकिन हिम्मत नहीं हुई। कुछ लोग पहले ही उससे बात कर चुके थे। उसी समय, एक और महिला आई और पहली पंक्ति में बैठ गई। खसखस के रंग की रेशमी साड़ी, गुलाबी बॉर्डर वाला लंगोट, लाल साड़ी,

लाल चूड़ियाँ, सफ़ेद कपड़े। क्या यह वही महिला थी जो मेरे साथ लॉस एंजिल्स गई थी? लेकिन इस बार, लंबी टांगों वाली बस के कारण देखना मुश्किल था। शायद वह कोई पर्यटक थी, या किसी विदेशी की पत्नी। वह एक तबला-हारमोनियम लाई और उसे मंच पर रख दिया। शिक्षक आए। हम अपनी-अपनी जगहों पर बैठ गए। पाँचवें दिन, ये दोनों महिलाएँ डफली पर बैठीं। फिर पंडित मोहनलालजी आए। वे असंख्य तारों से घिरे हुए थे। उनका शरीर ज्वालाओं से ढका हुआ था। जब देवता तैयारी कर रहे थे, उनकी दृष्टि अगले गाँव की ओर मुड़ी। गोरे साहब।
उसने उसका अभिवादन किया। उसके बाद, उसकी निगाहें इस पंक्ति में, रेशमी साड़ी पहने उस पर टिक गईं।
वह उसके पास गई। जी हाँ। वह वही थी। बाद में, पहली दो-तीन पंक्तियों का निरीक्षण करते हुए, उसने भी उसे पहचान लिया। उसके चेहरे पर बेचैनी दिखाई दी। परिचय समारोह समाप्त हो जाने के बावजूद, उसकी मनोदशा में कोई बदलाव नहीं आया था। फिर भी, वह सहजता से बैठी रही, मानो कोई अपरिचित श्रोता हो। उसने खुद को शांत करने की कोशिश की। उसने अपना गला साफ किया। उसे लगा कि पिलू कोई राग गा रही है।
उन्होंने यह कहा और मुझे हँसा दिया। उनके इस वरदान से श्रोताओं में वही मदहोशी छा गई जो आमतौर पर होती है। अन्य गायक इस गीत को रुद्र राग कहते हैं, उन्होंने इस राग से संगीत कार्यक्रम की शुरुआत करके श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने मुस्कुराते हुए इस गायन की शक्ति को महसूस किया। इस राग के विज्ञान को याद करते हुए, भैरवी, भीमपाल और गौरी रागों का मिश्रण उनके मन में कौंध गया। सौम्य गंधार, सौम्य धैवत और सौम्य निषाद के प्रभाव में डूबकर मेरा मन भी शांत हो गया। मुझे इस महान विक्रम की याद आ गई। मुझे उन्हें नहीं बताना चाहिए था। मुझे उन्हें बताकर दुखी नहीं करना चाहिए था। अपने हृदय की तड़प को दूर करने की आशा में, मैंने उन्हें सताया। गायन के प्रति उनका कितना प्रेम था! मैंने उसी प्रेम को ठेस पहुँचाई। अब उनके मन में गायन के लिए कोई प्रेम या सम्मान नहीं रहेगा। मैं उन्हें गायन सिखाने के लिए तब तक तैयार नहीं थी जब तक कि उनमें आंतरिक इच्छा न हो और वे अपना शरीर त्याग न दें! वही थे जिन्होंने मुझे यहाँ लाने पर ज़ोर दिया था। वह संगीत में मग्न थे। राजाराम एक उत्कृष्ट संगतकार हैं। संगीत की अनेक सीमाओं के बावजूद, वे कितनी सूक्ष्म सुंदरता प्रस्तुत करते हैं! वे केवल संगीत का अनुसरण नहीं करते, बल्कि उसका साथ देते हैं! वह भी कितनी सहजता

से! उनके चेहरे पर किसी प्रकार की परिश्रमशीलता नहीं झलकती। वे जहाँ जाना चाहते हैं, वहाँ पहुँचते हैं, संगीत को ज़रा भी स्पर्श किए बिना लौट आते हैं, वे यह सब अत्यंत कोमलता से करते हैं।
उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। एक पल के लिए गीत सुनाई नहीं दिया। उसका मन विचारों में खो गया। मैं यहाँ अपनी दुल्हन को धोखा देने नहीं आया था – मुझे यह नहीं कहना चाहिए था कि मैं अब पूरी तरह से आत्मसमर्पण कर दूंगा। वैवाहिक जीवन, जीवन का एक पहलू है। मैंने इसे उसे गाने के लिए सौंप दिया था। मैंने वह काम किया था जो सबसे कोमल और सुंदर था।
मैंने यवहारा को इस स्तर तक ले जाकर गलती की। अब ये दंपति मेरे घर में हैं। बिस्तर पर जो हुआ उस पर दुखी होने का कोई फायदा नहीं। नौ साल पहले उसने जो माँगा था, वही गलती उसके साथ भी हुई थी। अगर उसने गाना न सीखा होता तो क्या होता? अगर उसने किसी और से सीखा होता तो क्या होता? मेरे मन में उस समय उठे सवाल घूमने लगे। वे सवाल मेरे दिमाग में रह गए। उस समय मुझे जो जवाब मिले थे, वे सही नहीं थे, इसीलिए मेरी ज़िंदगी इस मोड़ पर आ गई है! इस सोच ने मेरे मन की बेचैनी और बढ़ा दी।
गाना बज रहा था। उसका मन उसके ज्ञान, उसकी तैयारी, उसकी कला, उसकी प्रतिभा की प्रशंसा कर रहा था। लेकिन उसका मन बार-बार उसी बात को दोहरा रहा था।
मैं इस ओर वापस नहीं लौटना चाहता, मैं उसी सांप में नहीं पाया जाना चाहता।
मेरा अपना शरीर
और मैं नहीं चाहता कि मेरा दिमाग इससे नियंत्रित हो जाए।
वह बैठक में धनुष और बाण लेकर आ रहा था।
शरीर एक पवित्र वस्तु है। शरीर और शरीर के बीच का संबंध भी पवित्र रहना चाहिए। यदि इसमें किसी अशुद्ध चीज का मिश्रण हो जाए, तो यह पवित्र कैसे रह सकता है?
अचानक मुझे एहसास हुआ कि मैं इतना कुछ बना सकती हूँ! इसमें ऐसा कुछ भी नहीं है जो मेरी समझ से परे हो! ताला की गणनाओं से धागों का जाल सुलझने लगता है। इसे छोड़ना और फिर से पकड़ना और लय में विलीन हो जाना - हाँ, यह भी मुश्किल होगा;
लेकिन यह नामुमकिन नहीं है। एक माहिर की तरह, वह इस गाने की बारीकियों को ध्यान से देखती रही।

निम्नलिखित पटकथा को सुनते समय मुझे यह एहसास हुआ कि मैंने इन वर्षों में कितना कुछ सीखा है।
तकनीक में इतनी तरक्की हो गई है। फिर भी मैं इस सारी बेवकूफी के बिना क्यों नहीं सीख सकता?
इस विचार के साथ ही उसके मन में एक नई रोशनी जगी।

३
उस रात उसे अच्छी नींद आई। अगली सुबह उसने टेलीफोन डायरेक्टरी ली और
बैठ गया। तीन पन्ने उपनामों से भरे हुए थे। राजाराम नाम ढूंढना इतना आसान नहीं था। बीस से अधिक ऐसे नाम थे जो 'आर' से शुरू होते थे।
यह ज्ञात था कि उसका घर माहिम में था। माहिम के तीन अक्षर - आर (पढ़ना, लिखना, लिखना, आदि) - जल्दी में निकल गए। पहला
गलत नंबर से कॉल आ गई। दूसरा नंबर उसी का था। उसने तुरंत फोन उठा लिया। ‘मधुमित शाह। अमेरिका। सनीवेल, देवाला, पतंगा, तंबोरा वहाँ थे। मोहनलाल जी के कार्यक्रम के दौरान। आप भी हमारे घर आए थे! क्या आपको याद है, चाचा?’
जी हाँ, बिल्कुल! आप तो एक असाधारण साथी थे! आप कब आए थे? आपकी माँ का क्या हुआ? दादर से, है ना?
‘धन्यवाद! आपका स्वागत है! अंकल, मैं आपसे मिलने आना चाहता हूँ। क्या आप अभी घर पर हैं? क्या आप मुझे बता सकते हैं?’
माहिम टीला को बचपन से जानता था। जैसे ही उसने उसे पता बताया, वह तुरंत उस जगह को पसंद करने लगी। वह पंद्रह मिनट में पैदल ही वहाँ पहुँच गई। जैसे ही उसने दरवाजा खोला, वह अंदर गई और झुककर प्रणाम किया। उसने टिप्पणी पर सुखद मुस्कान दी। फिर भी थोड़ी झिझक रही थी।
वह हँसा, "तुम मेरे प्रति इतनी विनम्र क्यों हो?" और अपनी पत्नी को रसोई से बाहर निकाल दिया।
उन्होंने आवाज़ लगाई, अपना परिचय दिया और चाय लाने को कहा। उसके बाद वे उन्हें अपने संगीत कक्ष में ले गए। कमरा एकदम शांत था। यहाँ तक उगे कटहल के पेड़ों की घनी हरी पत्तियों ने वातावरण को और भी शांत बना दिया था। कमरे में एक जैज़ बैंड बज रहा था। दीवार के सहारे मेजें रखी थीं। पाँच हारमोनियम दीवार के सहारे रखे थे। कोने में दो डफ रखे थे। जब वे एक-दूसरे की संगति का आनंद ले रहे थे, तभी पत्नी चाय और बिस्कुट लेकर अंदर चली गईं। चाय पीते हुए वो हंस पड़ीं, ‘बात बस इतनी सी है। मैंने गाने का फैसला कर लिया है। जब मैं मुंबई आऊंगी, तो चार-पांच महीने गाने के लिए रुकूंगी। मैं अपना सारा समय गाने को ही दूंगी। आप जानते ही हैं कि मेरी तैयारी अब तक कितनी आगे बढ़ चुकी है। इसके बाद आप मेरे गुरु बनकर मेरा मार्गदर्शन

कीजिए। अगले तीन-चार सालों में मैं आपको एक ऐसा गायक बना दूंगी जो हास्यबोध के साथ गाता हो। इसके लिए आप जितना दे सकते हैं, दे दीजिएगा।’ मैं इसके लिए तैयार हूं। इसके बाद भी मैं राजाराम तिपानिस का शिष्य बना रहूंगा।
गाओ!
टिपानिस का चेहरा खिल उठा, 'बेन, तुम्हें सुनना बहुत अच्छा लगता है। महान कलाकार बनने के लिए तुम्हारे पास सब कुछ है! तुम मेरे जीवन भर के साथी रहे हो। अगर मुझे हारमोनियम सीखने को कहा जाता, तो मैं तुरंत तैयार हो जाती; लेकिन मैं गायन की उस्ताद कैसे बन सकती हूँ? कला का ज्ञान और कल्पना होने के बावजूद, गाना असंभव है!'
‘आपको गाने की ज़रूरत ही नहीं है, अंकल! आप बस मुझे विज्ञान समझा दीजिए। मुझे इस तरह नृत्य के बारे में मत बताइए। नहीं तो, हारमोनियम बजाकर देखिए। अगर गाते समय मुझसे कोई गलती हो जाए, तो उसे सुधार दीजिए। अगर एक सितार पंडित बांसुरी वादक को प्रशिक्षित कर सकता है, तो एक हारमोनियम पंडित गायक को क्यों नहीं प्रशिक्षित कर सकता?’
इस पर वह चुप रहे। कुछ देर सोचते रहे। फिर उन्होंने कहा, 'मोहनलाल जी पंद्रह दिन आपके घर पर रहे और उन्होंने आपसे दो राग सीखे थे। वह शुरू से ही आपका मार्गदर्शन करते आ रहे हैं।'
क्या उनसे सीखना आसान नहीं है? शिवाए अम का नाम भी उनके शिष्य के रूप में जाना जाता है।
इमळेल.’
वह इस सवाल के लिए तैयार थी। 'चाचा जी, मैं आपका रहस्य बताने आई हूँ! इसे आपसे छिपाना मेरे हित में नहीं है; लेकिन क्या आप वादा करेंगे कि आप किसी और को नहीं बताएंगे?'
वह सोच में पड़ गया। उसे भी स्थिति का कुछ न कुछ अंदाजा था। वह पिछले पच्चीस वर्षों से पंडित मोहनलालजी को अच्छी तरह जानता था। वह यह भी जानता था कि उनकी बात मानना जरूरी नहीं है। वह चुपचाप बैठा रहा, कुछ नहीं बोला। दो मिनट इंतजार करने के बाद उसने आगे कहा, 'मुझे पता है कि चाहे कोई भी कार्यक्रम हो, वे हमेशा आपको बुलाते हैं और ले जाते हैं। अगर आप उनका विरोध करते हैं, तो वह अवसर हाथ से निकल जाएगा, इसलिए आप चुप रहना पसंद करते हैं, है ना?'

उसने कुछ नहीं कहा। नज़रें फेर लेना हार मान लेने जैसा था, इसलिए वह बस उसे देखता रहा।
‘चाचा जी, जब तक मैं स्वतंत्र रूप से काम शुरू नहीं कर देती, तब तक मैं आपका नाम कहीं नहीं लूंगी। मैं इस लैटिना में रहने जा रही हूँ। आप वहाँ आकर सीख सकते हैं या अगर आप चाहें तो मैं यहाँ आ जाऊंगी। इस बात को गुप्त रखने के लिए जो भी ज़रूरी हो, कर लीजिए। अब आपको मेरी बात सुननी होगी। अगर आपको उनके साथ बजाने का मौका न भी मिले, तो भी आपको ज़्यादा कुछ नहीं होगा, यही आपकी हैसियत है। आप भारत के शीर्ष हारमोनियम वादकों में से एक हैं। उनके अलावा, मुझे पता है कि भारत के अन्य गायक भी आपकी संगत चाहते हैं। मुझे पता है कि अगर कोई महिला अपनी मुश्किल परिस्थिति में मदद मांगने आए तो आप मुँह नहीं मोड़ेंगे।’
एक तरफ तो ऐसा लग रहा था कि वह एक ही ढर्रे पर फंस गया है, लेकिन दूसरी तरफ उसे अच्छा भी लग रहा था।
हनाला ने कहा, 'बोलो। मैं वादा करती हूँ।'
‘मैं भी शुरू से ही मोहनलाल जी से सीखना चाहती थी...’ उसने सब कुछ बताते हुए कहा। बोलते-बोलते वह फूट-फूटकर रोने लगी। भावुक होकर उसने कहा, ‘माफ़ कीजिए! लेकिन यह पहली बार है जब मैं अपने दिल की बात कह पा रही हूँ और रो रही हूँ! मैं अपनी माँ को यह कैसे बताऊँगी? माँ, मेरी मदद कीजिए।’
टिपनीस उसे देख रही थी। उसकी आँखों में भी विनती थी। टिपनीस भली-भांति जानती थी कि अगर उसने उसे सहारा नहीं दिया तो वह गिर पड़ेगी। उसने उसे डफ लाने और बजाने को कहा। तीन तारों वाला डफ। मिराज से मंगवाया हुआ।
एक आह भरते हुए, उसने डफली और छठे स्वर को पोंछा और सोचा, 'क्या मुझे बीच वाला स्वर बजाना चाहिए या पाँचवाँ?'
‘अच्छाई और बुराई के सिवा क्रोध जैसा कुछ नहीं होता।’
वह सोचने लगी। उसे याद आया कि उसे पता था कि इन दोनों रागों का अमेरिका में दो सप्ताह तक अभ्यास हुआ था, इसलिए वह उन्हें अलग-अलग गाने के लिए कह रही थी। उसे क्या गाना चाहिए? उसे कुछ सूझ नहीं रहा था। उसने पीलू राग गाने का फैसला किया। उसने अपना हारमोनियम निकाला और सोचने लगी, 'सुर धा? इनमें से दूल्हा कौन सा है?'
नहीं। अगर आपसे कोई गलती हो तो मुझे बता देना।
ठीक है। शुरू करो। शुरुआत में धीरे-धीरे शुरू करो। जल्दबाजी मत करो।

जैसे ही मैंने गाना शुरू किया, मुझे याद आया कि यह राग मुझे सिखाया नहीं गया था। यह एक मिश्रित राग है। आरोही और अवरोही स्वरों की रचना को लेकर विद्वानों में मतभेद हैं। मैंने इसे कल के कार्यक्रम के प्रभाव में चुना था, यह एक गलती थी; लेकिन शुरुआत हो चुकी थी। फिर, मैंने उनसे पूछा। इसी वजह से वह सहजता से हारमोनियम के सुर गाने लगीं। मैं आगे बढ़कर उनका मार्गदर्शन करना चाहता था।
उसने उससे बचने की कोशिश की; लेकिन चूंकि वह उसके पीछे से आ रहा था, इसलिए उसे नहीं लगा कि वह लापता हो गया है।
उसे आत्मविश्वास महसूस होने लगा। पहले तो उसे लगा कि उसकी परीक्षा ली जा रही है, लेकिन वह भावना गायब हो गई और वह अपने क्रोध और हताशा में डूब गई। वह आधे घंटे तक इधर-उधर घूमता रहा और फिर वह रुक गई। उसके चेहरे पर मुस्कान थी। उसे समझ नहीं आया कि इसका क्या मतलब है। उसके चेहरे पर सवाल देखकर उसने सोचा, 'मुझे लगता है कल सी.जे. हॉल में आया था!'
सच कहूँ तो, मैंने यह क्रोध करना नहीं सीखा है। कल तक मैंने इसे सुनना छोड़ दिया था, बस इतना ही। अब आप मुझे यह सिखाएँ।
उन्होंने हारमोनियम पर धुन बजाना शुरू किया। वह एक के बाद एक गाने लगीं। वह उन जगहों पर भी धुन बजाते थे जहाँ हारमोनियम नहीं बजाया जा सकता था। वह बीच-बीच में उन्हें गाते भी थे। हालाँकि वह सभी बारीकियों को नहीं गा सकते थे, फिर भी वह अपनी कल्पना को पूरी तरह से व्यक्त करने में सक्षम थे। उन्होंने उन्हें सहजता और लयबद्धता से गाया। पहले
स्वरों के साथ और फिर 'अ'। प्रत्येक दुल्हन समूह के लिए दो, तीन।
वह उसे गाते। उसके बाद, वह गायकों के अगले समूह के पास जाते। बीच-बीच में, वह उसे बजाते और कहते, ‘यह आमिर खान की गायकी है। मैंने उनके साथ संगत की थी। यह पंडित तिवारी की गायकी है। यह मिनलाल की पत्नी की गायकी है—’ और उनके चेहरे के हाव-भाव पर ज़ोर देते। एक बार, उनकी पत्नी सोनू ताई चुपके से कमरे में आईं; लेकिन वहाँ उनका कोई निशान नहीं था। दोपहर के 2:30 बज रहे थे जब वे दोनों चुप हुए।
उस दिन वर-विटारा का प्रशिक्षण केवल तीन घंटे का था!
“अगर आप अर्थ को इस तरह समझा दें तो काफी है। ध्वनि की चिंता मत कीजिए। हारमोनियम वादक के नजरिए से ध्वनि की लय और तारों के घुमाव को समझना आसान है!” उनके चेहरे पर मुस्कान थी।

"गु जी, हमें गंडाबंधन कब करना चाहिए?"
“क्या आपने काका के रूप में शुरुआत नहीं की थी? अब आपने इस ‘गु जी’ का जिक्र क्यों किया? गंडा-बंधन जैसी किसी भी प्रकार की दिखावटीपन की कोई आवश्यकता नहीं है। डफ और हारमोनियम को प्रणाम कीजिए। अंदर आइए। हमारे मंदिर में सरस्वती की मूर्ति है। उन्हें प्रणाम कीजिए और कुमकुम लगाइए। बस इतना ही काफी है।”
उसने वैसा ही किया। सोनुताई ने खाने की थाली उठाई। तिपानिस ने भी ज़ोर देकर कहा, 'आज पहला दिन है। रिका के घर मत जाना।'
खाना खाने के बाद भी वही बातें चलती रहीं। उन्होंने कहा, 'किसी को मत बताना कि तुम मेरे साथ पढ़ रहे हो। कुछ भी छिपाने से कोई फायदा नहीं है। जब मैं गांव में होता हूं तो हफ्ते में तीन-चार बार पढ़ता हूं। हर बार दो-तीन घंटे ऐसे ही बैठता हूं। सुबह नौ बजे आना।'
उसने उन दोनों के पैर छुए और उन्हें प्रणाम किया, फिर वह चली गई।
उन्हें नहीं लगा था कि वे इतनी जल्दी पढ़ाने के लिए तैयार हो जाएँगे। इसके अलावा, पहले दिन का शिक्षण इतना सहज रहा था कि उनके मन में एक गहरा खालीपन सा आ गया था। उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे वे आकाश में तैर रहे हों।

४
जब वह घर पहुंची तो उसकी मां उसका इंतजार कर रही थी।
‘ये क्या हो रहा है बेटी! तुम सुबह-सुबह घर से निकल गई थी, और अब आ रही हो! कहाँ गई थी? रात के खाने में क्या खाया? कम से कम एक फोन तो कर दो! मैं परेशान हूँ!’
‘माँ, मैं रहस्य की खोज में गया था। मेरी किस्मत ही अच्छी है! उन्होंने मुझे स्वीकार कर लिया। उन्होंने पहले ही दिन मुझे तीन घंटे पढ़ाया। उन्होंने वहीं खाना खाया। उन्होंने मुझे सुबह नौ बजे फोन किया।’
"उसके द्वारा!" वह जोर से हंस पड़ी।
मां उसके पीछे कमरे में गई। दरवाजा बंद करके वह पुरानी कुर्सी पर बैठ गई।
उसके देवरों के सोने का समय हो गया था। फिर भी, मां का दरवाजा बंद करना इस बात का संकेत था कि उसे कुछ महत्वपूर्ण कहना था। वह पहले से ही अंदाजा लगा सकती थी कि वह क्या कहने वाली है।

मां ने बात उठाते हुए कहा, ‘तुम्हें यहां आए दो हफ्ते हो गए? तुमने अपने पति को एक बार भी फोन क्यों नहीं किया? क्या तुमने कुछ राज़ छिपाने का फैसला कर लिया है? क्या तुम अपनी मां से कुछ छुपा रही हो! बेटा, एक बेटी को अपनी मां से कुछ नहीं छुपाना चाहिए!’
‘छिपाने वाली क्या बात है? मैंने तुम्हें बताया था, इस देश में गायन सीखने की अच्छी सुविधाएँ नहीं हैं। मैं यहाँ दो-तीन महीने सीखूँगी, उसके बाद वहाँ अभ्यास करूँगी।’ यह सुझाव उन्होंने ही दिया था। मैंने उन्हें दो बार फोन किया था। ओह, वो दौरे पर जाते हैं, है ना? वो दौरे पर जाएँगे, लेकिन मैंने फैसला किया है कि मैं वहाँ अकेले रहने के बजाय यहाँ आकर रहूँगी। चिंता मत करो।’
‘कौन जाने, मैडम! मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा!’ माँ हँसी; लेकिन ‘मुझे उन्हें बता देना चाहिए था कि मुझे आपकी बात समझ नहीं आ रही। अगर हम आगे बात करते रहते तो हमारे दाँत मुँह में ही अटक जाते,’ मधुमिता चुप रही। यह स्पष्ट था कि माँ की तबीयत ठीक नहीं थी। इससे दूल्हे के घर में हलचल मच गई, जिसकी जानकारी उसे सुबह ही मिल गई थी। इससे उसे सचमुच दुख हुआ था, हालाँकि उसने उसे इस स्तर तक पहुँचा दिया था कि वह अपने पति से विरह सहन कर सके, लेकिन उसे एहसास हुआ कि उसकी माँ के प्रश्न से उसका मन बेचैन हो रहा है। उसे यह भी याद आया कि भले ही उसने अपनी सास के डर से किसी प्रश्न के बारे में न सोचा हो, वही प्रश्न उनकी नज़र से कठोर ढंग से पूछा जा रहा था। उसे अलग से आरक्षण करवाना चाहिए था। उसे पहले यह भी जाँच लेना चाहिए था कि मेरे खाने में कितने पैसे लगे हैं। मुझे यह भी एहसास हुआ कि भाई-बहनों को विश्वास में लिए बिना यह सब करना उचित नहीं है और यह संभव भी नहीं है। छोटेभैया! हाँ। इस बारे में छोटेभैया से बात करना उचित होगा। आप उसे पृष्ठभूमि की जानकारी दिए बिना फ्लैट ढूंढने के लिए नहीं कह सकते। यदि आप केवल दो-तीन महीने के लिए रुकना चाहते हैं, तो यह सवाल उठेगा कि माहेर के घर पर क्यों न रुकें। 5 खाना खत्म हो गया था। उसने चुपके से छोटेभा को अपने कमरे में बुलाया और कहा, 'मैं तुमसे अकेले में बात करना चाहती हूँ। घर पर नहीं। कब? क्या तुम्हारे पास समय है? सुबह नौ से बारह बजे के बीच का समय है। उसके बाद मेरे पास समय है। मैं तुमसे कहाँ मिल सकती हूँ?'
कुछ देर सोचने के बाद यान ने कहा, 'दोपहर में मुझे दुकान पर फोन कर देना। वे मुझे बता देंगे कि उनसे कहाँ मिलना है।'

ओशन होटल के आइलैंड रेस्टोरेंट के एक कोने में एक शांत मेज पर बैठे अजय ने खाना और पेय पदार्थ मंगवाए और मधुमिता से कहा, "बोलो।"
‘मैं ये बात तुम्हारे सिवा और किसे बताऊँ? किसी और को नहीं। मैं किसी को बताना नहीं चाहता क्योंकि सब मेरी आलोचना करेंगे और दुखी भी होंगे –’ मोहनलाल ने इस घटना के बाद से ही एक शर्त रख दी थी कि मैं उन्हें सब कुछ बताऊँगा। एक घंटा बीत गया। यहाँ तक कि वेटर भी टब साफ़ करने नहीं आया।
यह कहने के बाद, दोनों चुपचाप बैठ गए। उसने कहा, 'मुझे बताओ कि तुम क्या सोचते हो।'
कुर्सी से उठते हुए छोटेभया ने कहा, ‘मैंने भी सुना था कि वह ऐसे ही व्यक्ति हैं; लेकिन मैंने सोचा, वह ऐसे कैसे हो सकते हैं, अगर मेरी बहन ऐसी होती तो क्या होता? मैंने सोचा कि दूसरी लड़कियाँ ऐसी ही होंगी, आपके घर की लड़की ऐसी नहीं होगी। क्या सभी माताएँ और बहनें ऐसा ही महसूस नहीं करतीं? शादी के बाद जब आप अमेरिका चले गए तो उन्हें कोई आश्चर्य नहीं हुआ। विक्रमभाऊजी ने खुद सनीवेल मंदिर में हुई सभा की कैसेट भेजी थी। मुझे सुनकर बहुत खुशी हुई! हमारी बहन इतने महान गायक के साथ तोड़ी गा रही थी!’ इतना कहकर वह रुक गए।
"आप और क्या सोचते हैं? बिना किसी झिझक के बताइए।"
‘हम मुंबई में पैदा हुए और पले-बढ़े हैं। इस गांव में जो आधुनिकता देखने और अनुभव करने को मिलती है, वैसी भारत में कहीं और नहीं है। फिर भी, आपके परिवार में ऐसी घटना पहली बार हुई होगी। मैं यह बात गुस्से में नहीं कह रहा हूँ। हमारा परिवार पारंपरिक है।’
‘तुम्हारे परिवार में आज तक किसी ने भी स्नातक की उपाधि प्राप्त नहीं की है। तुम, बडेभा और मैं, हम सब पढ़े-लिखे हैं। अमेरिका में आज तक किसी ने भी किसी लड़की का विवाह किसी लड़के से नहीं किया है! क्या यह सच है?’
उसने कुछ नहीं कहा। वह हंस पड़ी, 'मैंने यह अपने व्यवहार को सही ठहराने के लिए नहीं कहा। भले ही आपकी बहन धोखे में थी, लेकिन जब वह इस स्थिति से बाहर आई तो उसने अपने पति को सब कुछ ईमानदारी से बता दिया और वह अतीत की आग में झुलस गई, क्या यह मामला आपके ध्यान में नहीं आना चाहिए?'
वह उसे घूर रही थी। उसकी नजरें मिलते ही वह हंस पड़ी, "नव की ओर से एक संदेश।"

मैंने तय कर लिया है कि मुझे कोई पैसा नहीं चाहिए। दरअसल, मुझे उन्हें मुआवज़ा देना होगा; लेकिन यह पैसों के हिसाब से तय करने का मामला नहीं है।
इसके बाद, मेरा सारा ध्यान सिर्फ़ गायन पर होगा। अगले चार-पाँच सालों में, मैं एक गायिका के रूप में नाम कमा लूँगी और अपना गुज़ारा खुद कर पाऊँगी।
इसलिए, अभी जो घर आपा ने मेरे नाम पर दिया है, वही मेरा एकमात्र सहारा है। बड़ेभा को इसके बारे में बता देना, लेकिन कोई और जानकारी मत देना। और मेरे लिए एक छोटा सा प्लॉट किराए पर दिलवा देना।
मैं आपके फ्लैट के संपूर्ण प्रबंधन के लिए जिम्मेदार हूं। हर महीने पचास हजार रुपये किराया आता है। इसके अलावा, आपके नाम पर बीस लाख रुपये की जमा राशि है। इस पर पंद्रह रुपये की दर से ब्याज मिलता है। इसके लिए अलग खाते भी रखे जाते हैं। हर साल पूरा खाता लेखा परीक्षक को दिखाया जाता है और वह कर रिटर्न पर हस्ताक्षर करता है; लेकिन आप इसके लिए जिम्मेदार नहीं हैं। आपको लैटे की क्या ज़रूरत है? इस घर में आपका अपना कमरा भी तो है ना!
अगर आप सिर्फ चार दिन के लिए मेरी मां के घर आ जाएं तो मुझे बहुत खुशी होगी; लेकिन ऐसे हालात में मेरे जीजाजी को आपका घर आना अच्छा कैसे लग सकता है? उनकी तो बात ही छोड़िए, मेरी मां का नजरिया तो आपके प्रति सकारात्मक ही होगा। मैं आपको सब कुछ बता सकती हूं, क्योंकि भले ही आप मुझसे उम्र में बड़े हैं, लेकिन हम बचपन से साथ खेलते-कूदते और लड़ते-झगड़ते बड़े हुए हैं। मैं यह बात किसी और को नहीं बता पाऊंगी।
वह भी यह बात समझ गया था। माहौल में तनाव कम करने के लिए उसने हंसते हुए कहा, "तुम्हें चाहिए कि..."
मैं तुमसे बात करना चाहता था, इसलिए तुम्हें यहाँ ले आया। क्या तुम्हें तिलक पुल के नीचे फुटपाथ पर मिलने वाली गरमा गरम कचहरी पसंद नहीं है?
जब वह बच्चा था और घर उसकी नजरों से ओझल हो गया था, तब उन दोनों को वहां खाना खाते हुए याद करके उसे थोड़ी राहत भी महसूस हुई।
मेरे मन में एक और विचार आया है। मुंबई के इस शोरगुल भरे और अव्यवस्थित वातावरण में वाद्य यंत्र कहाँ मिलेंगे? अगर मैं गाँव से दस-बीस मील दूर किसी शांत जगह पर एक छोटा सा घर किराए पर ले सकूँ, तो मैं वहाँ रहकर रियाज़ का अभ्यास करूँगा। खाना पकाने और अन्य कामों के लिए मैं एक महिला रख लूँगा। लेकिन गाँव के मंदिर जाने के लिए मुझे वाहन की आवश्यकता होगी। इस गाँव में वाहन के रखरखाव और चलाने की कोई चिंता नहीं है।

उन्हें याद आया कि बडेभ उन्हें अच्छी तरह से जानते थे। नौ साल पहले, इसी मोहनलाल सहायता कार्यक्रम के बाद, उन्होंने बडेभ को उनके घर छोड़ा था और फिर अपने चाचा के घर चले गए थे। इसके बाद भी, वे कई अन्य कार्यक्रमों में दिखाई देते रहे। उन्होंने सोचा कि शायद बडेभ भूल गए हों। उन्होंने फिर से छोटेभ से संपर्क किया। दो दिन बाद, उन्होंने कहा, 'मैंने गोरे साहब से बात की है। कल सुबह सात बजे उनसे मिलो। उनके घर जाओ। यह उनका पता और फोन नंबर है।'
घर पहुँचकर उन्होंने गोरे साहब को प्रणाम किया। उनके घने सफेद बाल। पिछले दस वर्षों में उनके चेहरे में ज़रा भी बदलाव नहीं आया था। उन्होंने बड़े उत्साह से उनका अभिवादन करते हुए कहा, 'चलिए! आप हर तीन महीने में मुंबई आइए और गाना सीखिए!'
मोहनलाल जी, क्या यह आपका रहस्य है? अमेरिका जाने से पहले आप टैम्बो का समर्थन कर रहे थे।
वे आजकल बहुत व्यस्त हैं। इसीलिए वे स्कूल नहीं आ पा रहे हैं। अब वे
मैं इस क्षेत्र में विश्वविद्यालय जाना चाहता हूँ। विज्ञान को समझने के बाद, मैं
और मस्सत का निर्णय; लेकिन विज्ञान कोई गीत नहीं है। केवल महान गायकों के गीतों को सुनकर ही शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।
‘क्या मैं थोड़ा गाऊँ? मैं तुम्हें बाद में बताऊँगी’ –’ हनत उसे गायन कक्ष में ले गई। वह एक हॉल था जो बीस फीट लंबा और पंद्रह फीट चौड़ा था। वहाँ चार डफ, एक हारमोनियम और एक तबला-दाग था। खिड़कियाँ बंद थीं, इसलिए वहाँ एकदम सन्नाटा था। एसी भी बंद था। दो खिड़कियाँ खुली थीं। फर्श पर एक छोर से दूसरे छोर तक कमारी की चटाई बिछी हुई थी। उसने कहा, ‘मैं गाता नहीं हूँ। मुझे गाना आता भी नहीं; लेकिन अगर कोई गायक घर आता है तो मैं गा देता हूँ। पुरुषों के डफ और महिलाओं के ढोल जोड़े में रखे गए थे।
हैं। अपने साथ थिरकते हुए डफली उठाओ और अपने साथ थिरकते हुए धुन गाओ।
यह तुम्हारी परीक्षा है, और इसे पास करने के बाद ही तुम्हें उनसे इनाम मिलेगा, उसे एहसास हुआ। एक डफली चुनते हुए, उसने तारों को ठीक किया और सोचा, 'क्या?'
‘बहुत बढ़िया!’ उसने सामने की दीवार से टेक लगाते हुए कहा। उसने आधे घंटे तक गाया और फिर रुककर कहा, ‘अगर मुझे और गाना है तो मेरे पास तबला नहीं है।’

‘तुम गा सकोगे। तुम्हारी आवाज़ सुरीली है। संगत भी अच्छी है। लेकिन अभी भी मन का बहुत प्रभाव बाकी है! जो व्यक्ति इस उम्र तक मन के प्रभाव से मुक्त नहीं हो पाता, वह जीवन भर महान गायक नहीं बन पाता। तुम्हारी उम्र कितनी है? तीस?’
जी हाँ। इसीलिए मैंने अलग-अलग परिवारों और शैलियों के गायकों को सुनने, उनमें से सर्वश्रेष्ठ का चयन करने और स्वयं अभ्यास करने का निर्णय लिया है। इसके लिए मैं आपकी सहायता, मार्गदर्शन और आशीर्वाद मांगने आया हूँ। ‘आओ – इधर आओ –’ उसने कहा। वह उठी और उसके साथ दीवार तक गई। पूरी दीवार पर एक पतला पर्दा लटका हुआ था। उसने पर्दा हटाया। इस दीवार पर एक बड़ा कांच का कैबिनेट था, जो ज़मीन से एक छोर से दूसरे छोर तक आठ फीट ऊंचा था। उसमें छह इंच लंबे छोटे दराज थे। इनमें गायकों की कैसेटें करीने से रखी हुई थीं। उनकी संख्या इतनी अधिक थी कि ऊपर और नीचे केवल कॉफी की खुशबू ही रह गई थी। इसी तरह, कैबिनेट के सामने वाली दीवार पर एक अलमारी थी। उसने कहा, ‘यहां कम से कम दस हजार घंटे की रिकॉर्डिंग हैं। पिछले चालीस वर्षों में मुंबई आए हर महान कलाकार का गायन और वादन इस शेल्फ पर है। मैंने इन्हें कई जगहों से इकट्ठा किया है। केवल यहीं नहीं, दिल्ली और कोलकाता जैसे शहरों में भी संगीत प्रेमियों से मेरा संपर्क है। जो भी वहां जाता है, यह तारीख अपने साथ ले जाता है।’ इस जगह की दीवार पर लगे इंडेक्स बॉक्स में लिखा था
उन्होंने दिखाया। ऐसा लग रहा था मानो किसी बड़ी लाइब्रेरी में हों। हर पन्ना दिखाते हुए उन्होंने कहा, ‘कलाकार के नाम के अनुसार एक सूची है। दूसरी सूची राग के नाम के अनुसार बनी है। आपने इसे भी हटा दिया है, है ना? के. एल. एन. ड्रॉ। किस कलाकार ने किस वर्ष किस राग का प्रदर्शन किया, इन कार्डों में पूरी जानकारी है। कम से कम आपको पन्नास कार्य तो मिल ही जाएगा। इसके भी कई प्रकार हैं।’
उसने मुझे एक और अलमारी दिखाई। चलो ट्रेन आने से पहले डिस्क को वहाँ रख देते हैं।
जी हाँ। दीवार का निर्माण कार्य उन्होंने ही किया था। उन्होंने कहा, 'मैं इन डिस्क कैसेट को चलाने के लिए एक मशीन भी लाया हूँ। मैं एक ऐसे टेलीविजन स्टेशन की तलाश में हूँ जो इन सभी गानों और कलाकारों के नोट्स को चला सके; लेकिन मुझे अभी तक ऐसा कोई स्टेशन नहीं मिला है।'

‘क्या मैं जिस राग को सीख रहा हूँ, उसके चार-छह नमूने जाने-माने गायकों से ले सकता हूँ? पंद्रह-बीस दिनों के बाद, जब दूसरा राग शुरू होगा, तो मैं उसी राग के चार-पाँच नमूने ले लूँगा। मैं सोच रहा था कि मुझे इस पर विचार करना चाहिए या नहीं – लेकिन –’
"कॉपीराइट का मुद्दा भी है। अगर किसी की कैसेट व्यापारियों के हाथ लग जाती है और वे उन्हें फाड़कर बेच देते हैं, तो यह कलाकार के साथ अन्याय होगा।" इसीलिए मैं इसे किसी को नहीं देता; लेकिन तुम तो छात्र हो। मेहता को छोड़कर।
बहन, मैं तुम्हें यह दूंगा। मैं तुम्हें अपनी पत्नी से मिलवाऊंगा। तुम मेरी अनुपस्थिति में भी आकर परीक्षा दे सकती हो; लेकिन तुम्हें यह जानकारी लिखनी होगी कि तुम कहाँ से आई हो, कौन सी कैसेट ले जा रही हो, और यह सब महत्वपूर्ण है।
मेरी असली टेप इस कमरे से बाहर नहीं जानी चाहिए! टेप खत्म होने पर उसे उसकी मूल जगह पर वापस रख दिया जाएगा।
इसे रखा जाना चाहिए। आप पुस्तकालय की शक्ति को जानते ही हैं, है ना?
'मुझ पर भरोसा कीजिए, महोदय! मैं इसे किसी और को नहीं दूंगी। आपकी एक भी टेप इस कमरे से बाहर नहीं जाएगी। मैं कसम खाती हूं। मैं पहले गोली खा लूंगी।' ‘पिलू? मेरे पास चौंतीस हैं। ये खाली कैसेट ले आओ। इन्हें मेरी हाई-स्पीड मशीन पर कॉपी कर लो। मैं अपने टेप कम गुणवत्ता वाली मशीन में नहीं डालना चाहता। टेप खराब हो जाते हैं।’
‘जी हाँ। ठीक है! अब से आप मेरे संरक्षक हैं!’ यह कहते समय उसकी आवाज कांप रही थी।

७
पंद्रह दिन बीत चुके थे। एक रात, जब सबने खाना खा लिया, तो छोटे भाई कमरे में आए और धीरे से बोले, 'मेरे पास एक अच्छा सुझाव है। तुम्हारी इच्छा के अनुसार एक जगह है। चलो हम दोनों जाकर उसे देखते हैं। अगर हमें वह जगह पसंद आई, तो बड़े भाई भी सोचते हैं कि हम वहां यवहार कर सकते हैं। वह पनवेल के पास है।'
‘पनवेल? मैं हाई स्कूल में पढ़ते समय वहां गया था। जंगल कितना हरा-भरा है!’

‘वहाँ एक परिवार के पास बेचने के लिए एक बगीचा है। यह चार एकड़ का है। इसमें बड़े-बड़े आम के पेड़ हैं। फल देने वाले पेड़ भी हैं। इसमें एक पुराना घर भी है। घर में बिजली, बोरवेल, पानी की आपूर्ति – सब कुछ ठीक है।’ वहाँ एक बुजुर्ग दंपत्ति काम करते हैं। उनके पास दो गायें हैं। वे इस बगीचे से फसल उगाते हैं। आप और आपका परिवार इस जमीन के मालिक हैं। उनका मुंबई में कारोबार है। आपके कारण उनका कारोबार बढ़ा है। आइए हम कल सुबह आकर इसे देखें। अगर संभव हुआ तो हम इसे खरीद लेंगे।
"लेकिन वे क्या कह रहे हैं?" उसने सोचा।
"अभी इसकी चिंता मत करो। चलो सुबह चलते हैं। रास्ते में बात कर लेंगे।" सुबह नौ बजे, बगीचे के मालिक सतीश चंद्र घर आए। उन्हें दीवानखा के पास बुलाकर चाय पिलाने के बाद, वे कार से उतरे। उनका छोटा भाई और दीवानखा आगे की सीट पर बैठे और दीवानखा पीछे की सीट पर बैठी। सतीश चंद्र रास्ते में कह रहे थे, 'दादर से सड़क मार्ग से जाने पर डेढ़ घंटा लगता है। हर पंद्रह मिनट में एस.टी. बसें मिलती हैं। बगीचा पनवेल से तीन किलोमीटर दूर है। पैदल जा सकते हैं। नहीं तो, रात दस बजे तक टैक्सी भी मिल जाएगी। दादर से कुयाल जाने पर हार्बर लाइन भी है, हर एक घंटे में। वहां से भी टैक्सी मिल जाएगी। मुंबई की सारी सुविधाएं होने के बावजूद, यहां इतनी शांति है कि महाबलेश्वर जाने जैसा लगता है। खैर, महाबलेश्वर तो पर्यटकों से भरा रहता है। वहां भी शांति है।'
इधर-उधर की बातें सुनते-सुनते उनका मन भटकने लगा। सतीशचंद्र बीच-बीच में कहते, "यह
वाशी – यह सनपाड़ा है – यह जुईनगर है – यह बेलापुर है’ आदि। वह कह रहा था, ‘पनवेल पास ही है। यहाँ एक बस स्टैंड है, हमें यहाँ से बाएँ मुड़ना चाहिए।’ गाड़ी मुड़ी। वातावरण बदल गया। छोटे-छोटे बगीचे, खेत और झाड़ियाँ दिखाई देने लगीं। डेढ़ किलोमीटर घूमने के बाद एक हरी-भरी पहाड़ी नज़र आने लगी। याआधी डावीकडे ‘आमराई असा बोड होता. गेटही होतं. कार उभी क न गेट
दरवाजा खुला और गाड़ी अंदर चली गई। सपने में भी यह जगह इतनी खूबसूरत नहीं लगती थी! आँगन में तीस-तीस फीट ऊँचे नारियल के पेड़ दस-पंद्रह फीट की दूरी पर लगे हुए थे। बगीचे में हर जगह आम के पेड़ लगे थे। बीच में कोंकण की तरह ढलान वाली छत वाला एक पुराना मकान था। ज़मीन गाँव की थी। ऊपरी मंज़िल की ज़मीन भी गाँव की थी। छत पंद्रह फीट ऊँची थी ताकि बारिश से कोई परेशानी न

हो। टाइलें लकड़ी के बीमों पर लगी थीं। नीचे वाले मकान के सामने एक बड़ा आँगन था।
रसोई, भोजन कक्ष, शौचालय और दो स्नानघर। ऊपरी मंजिल पर दो शौचालय-स्नानघर। बाथरूम में एक नल भी था। दोनों में एक-एक पंखा लगा हुआ था। सतीश चंद्र
वह हँसते हुए बोला, 'इस कठिन समय में भी यहाँ किसी पुजारी की आवश्यकता नहीं है। वह तो रात में भी यहाँ आता है।'
मैं पंखा बंद करके सोता हूँ।
ऊपरी कमरे को शयनकक्ष के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता था, और बिस्तर आरामदायक था। बिस्तर से चारों ओर देखते हुए, उसे यह जगह विशेष रूप से आरामदायक लगी। दाहिनी ओर की पहाड़ी घनी वनस्पति से ढकी हुई थी। सामने एक किलोमीटर तक पहाड़ियों की एक श्रृंखला फैली हुई थी। साफ, नीला आकाश। शांत वातावरण। ठंडी हवा। सतीश चंद्र कह रहा था, 'यहाँ अकेले रह सकते हो। चोरी या डकैती का कोई डर नहीं है। क्या काम के लिए कोई साथी मिल जाए? कल्पना कीजिए, यह प्राचीन युग है! चलो, वहाँ चलते हैं।'
वे सब घर के दूसरे हिस्से में चले गए। वहाँ नौकरों के लिए एक कमरा बना हुआ था। वहाँ पनाशी का एक आदमी और उसकी पैंतालीस साल की पत्नी थे। इन दोनों को देखकर बूढ़े आदमी को उन पर भरोसा हो गया। उनके सामने सतीश चंद्र ने कहा, ‘वाघे उपनाम वाले। उनके पास दो गायें हैं। वे यहाँ बगीचे में चरती हैं। उनके खर्चे और उपज दोनों की ज़िम्मेदारी उनकी है। वे सब कुछ बगीचे को दे देते हैं। उन्हें बस हमारी देखभाल करनी होती है। जड़ों के पास थोड़ी सी खुदाई करके साल में एक बार खाद डाल देते हैं।’
जी हां, इस समय पानी देने का समय है। बरसात के मौसम को छोड़कर। यह सब उसकी जिम्मेदारी है।
एक हजार रुपये प्रति माह वेतन। घर के काम, खाना बनाना, कपड़े धोना, बर्तन धोना, सफाई आदि करूंगी। मेरा नाम 'महल' है। अगर मैं इस काम के लिए अपना वेतन तय करना चाहूँ तो कर सकती हूँ। जब यह फूल खिलता है, तो मुंबई से एक ठेकेदार आता है और पूरे बगीचे की देखभाल करता है।
मैं आपको यवहारा के बारे में बताऊंगा। जब तक आप यवहारा की श्वास का अनुभव नहीं करते, चार-
मैं पाँच साल के लिए निर्णय लूंगा। सभी वृक्ष ग्राफ्ट किए गए हैं। यह पौधा विलो वृक्ष का फल है!

दोनों भाई-बहन घर और बगीचे को दोबारा देखने के लिए बाहर गए। घर के चारों ओर घूमते हुए उन्होंने कहा, 'तुम्हारे चेहरे से पता चल रहा है कि तुम्हें यह पसंद आया है। मुझे लगता है हमें इसे ले लेना चाहिए। वह दूसरों को बता रहा है कि यह तीन लाख का है। तुम इसे पच्चीस लाख तक में ले सकते हो।'
वह तैयार है। अगर तुम थोड़ी मेहनत करो, तो बीस, इक्कीस या बाईस तक पहुँच सकती हो। मैं तुम्हें एक और बात बता दूँ। किसी के सामने पैसों की बात मत करना। तुम शादी के दौरान और बाद में कुछ पैसे कमाना चाहती थी। तुम्हारे दामाद का भी अपना तरीका है। उसने वह भी नहीं दिया। हम अमेरिका में रहने वालों को क्या देंगे? वह भी तुम्हें कभी नहीं मिलेगा। एक और बात, इसके बाद हम दोनों पैसे बाँट लेंगे। हमें कर के लिए ऐसा करना होगा। यह सिर्फ कर के लिए किया जाने वाला समझौता है, इसलिए हम इसके बारे में किसी के सामने बात नहीं करना चाहते। हमारे ससुर ने यह व्यवसाय शुरू किया था। इसलिए इसमें तुम्हारा भी हिस्सा है। तुम कभी दुकान पर नहीं आई और न ही तुमने व्यवसाय को बढ़ाने में कोई योगदान दिया है। फिर भी, बड़ेभ को लगता है कि तुम्हें उसे इसका कुछ हिस्सा देना चाहिए और दस्तावेजों पर लिख देना चाहिए कि व्यवसाय में मेरा कोई हिस्सा नहीं है। इस बाग से जो भी खर्च आएगा, मैं वहन करूँगा। तुम्हें खरीदनामा मेरे नाम पर बनवाना चाहिए; लेकिन आपको अपने परिवार को बताना चाहिए कि आप ये पैसा अमेरिका से लाए हैं। इस बारे में आपका क्या विचार है?
उसका दिल टूट गया था। उसने कुछ नहीं कहा। उसकी आँखों में आँसू भर आए। उसने हाथों से अपनी आँखें झपकाईं और बोली, 'यह मेरी नज़र में अप्रत्याशित है। अगर आप ऐसा करेंगे तो मैं इस पर हस्ताक्षर कर दूंगी; लेकिन यह मत सोचिए कि मैंने आपको अपना हिस्सा दे दिया है। मैं इसे तभी स्वीकार करूंगी जब आप इसे मेरे आशीर्वाद के रूप में देंगे।'

बारह

१
उस दिन सुबह सात बजे दरवाजे की घंटी बजी। इस समय कौन आया होगा?
औने-पौने में निकालना?
हाल ही में, अभ्यास करते समय, उनकी मनस्थिति सामान्य नहीं थी। इतने वर्षों की इस आदत के कारण, ध्वनि निकालने में कोई समस्या नहीं थी। राग, उसकी लय आदि स्मृतियों के साथ उनके सामने स्पष्ट रूप से प्रस्तुत थे; लेकिन मन की एकाग्रता प्रबल नहीं थी। मुझे वरसंचरम में कुछ नया खोजने से मिलने वाला आनंद नहीं मिला। मैंने यह नहीं सोचा कि ऐसा क्यों हो रहा है, मुझे कोई उत्तर नहीं मिला। एक दिन, मुझे अचानक याद आया कि यह अनुभव पहली बार सीजे हॉल में पिलू गाते समय हुआ था। क्योंकि मुझे कोई पीड़ा नहीं हुई थी। बाद में मुझे याद आया, वह कयानी नहीं, मधु थी। मधु दूसरी पंक्ति में बैठी थी और मुझे देख रही थी।
इस बार गुस्सा? शर्म या उम्मीद? आपने क्या सोचा? मुझे समझ नहीं आ रहा; लेकिन इस बार
मेरे मन में एक अजीब सी अनुभूति हुई और मुझे यकीन हो गया कि उसने पिछली बातचीत की सामंजस्यता को भंग कर दिया है। क्योंकि इसके बाद मैं जयपुर, बैंगलोर, कोहलपुर गया। किसी भी मुलाकात में मुझे पहले जैसी सामंजस्यता महसूस नहीं हुई। श्रो को गाना पसंद था, और जहाँ भी गाना खत्म होता, तारे चटकने लगते, लेकिन मैं बेचैन ही रहा। क्या उसने कोई जादू किया होगा? इस धंधे से बाहर के लोगों के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता! किसी ने तो कोई अच्छी योजना बनाई होगी; लेकिन अच्छी योजना?
ज्योतिषी कैसे खोजें? हर कोई पैसे के पीछे भागता है! चार दिन बाद,
मैंने सोचा, लगता है वो इसमें शामिल नहीं है। उसे पता है कि अगर मंदिर को नुकसान पहुँचाओगे तो कला को भी नुकसान होगा! इस विचार से मुझे कुछ तसल्ली मिली। फिर भी सवाल वही रहा। उसे मारना गलती थी। मैं और किसे जानता हूँ जो गायन की बारीकियों को उसके जितना जानता हो? भारतीय संगीत का जो ज्ञान उसे है, वो भूपालिमा से नहीं मिला। वो भी एक गायिका थीं। हाँ। ऐसा ही होना चाहिए। गाने वाला कोई नहीं था, इसलिए ऐसा हुआ होगा। यह निष्कर्ष मानो पहले से ही तय था। अगर मैं उसे बार-बार बुलाता, तो वो उसी उत्साह से फिर गाती,

लेकिन एक तरफ तो मैं सोचता था कि वो गायिका-देवी बन जाएगी, पर वो आती ही नहीं, उसने आखिर में कहा। कितना बड़ा धोखा, कितना बड़ा धोखा! कितना बड़ा धोखा! मंत्र का प्रयोग इसका कितना विनाशकारी रूप था! वो अपने आप को उसी आनंद का अनुभव कैसे करा सकती है जैसे मानो वो अपने दिमाग में कुछ देख रही हो?
चार से आठ दिनों के बाद, मुझे लगा कि इस तरह अपने मन को लाड़-प्यार करने का कोई फायदा नहीं है। क्यों न ध्यान का अभ्यास करके अपने मन को मजबूत करूं और अपनी पिछली एकाग्रता को वापस पाऊं? संगीत ही योग है।
दिमाग को तेज रखना जरूरी है। मोहनलाल के लिए इसमें क्या असंभव है!
मैंने दोबारा अपना ध्यान केंद्रित करना और ध्यान करना शुरू कर दिया था। अभी सिर्फ चार दिन ही बीते थे।
आज सुबह मैंने मुश्किल से एक घंटे रियाज़ किया; लेकिन मेरा मन एकाग्र था। मैं तैयार नहीं हूँ। ये रही दरवाज़े की घंटी!
दरवाजा अंदर से बंद नहीं था। उसने अंदर से आवाज़ लगाई, ‘अंदर आ जाओ!’ उसकी उंगलियाँ डफली के तार बजा रही थीं। वह इंतज़ार करता रहा। कोई अंदर नहीं आया। घंटी फिर बजी। कितना अजीब! इसे बदलना चाहिए। यह तो गड़बड़ है। असल में, अंदर से कोई भी व्यक्ति एक शब्द से दरवाजा खोल सकता है। ऐसा तो किसी दूसरे देश में होता है।
वह उठा और दरवाजा खोला। दरवाजे पर एक लड़की खड़ी थी। नहीं, महोदया? नहीं। पच्चीस-तीस साल की एक महिला। उसने सलवार-कमीज पहनी हुई थी, उसके बाल कंधों से भी लंबे कटे हुए थे। वह काम पर जा रही होगी, उसे इस बात का एहसास नहीं था कि उसके हाथ में एक थैला है। मैंने उसे पहले कहाँ देखा है? नहीं। मैंने उसे नहीं देखा।
उसने माथे पर हाथ रखते हुए सोचा, ‘तुम क्या चाहते हो?’ उसने झुककर अभिवादन किया, मानो जवाब दे रहा हो। यह भी सामान्य था, इसलिए उसे इसमें कुछ खास नहीं लगा। उसने सोचा, ‘क्या तुम मुझे पहचानते हो?’
उसने मुस्कुराते हुए उसकी ओर देखा।
‘ऐसा लगता तो है, लेकिन मैं गाँव-गाँव घूमता हूँ। लाखों लोग गाना सुनने आते हैं। उनमें से सैकड़ों लोग पास आकर पैर छूते हैं और ‘नाम ते’ कहते हैं।’
वे कहते हैं, 'नहीं, मुझे याद नहीं है। तुम बताओ!'
‘क्या मैं अंदर आ जाऊं?’ उसने सोचा।

मैं रियाज़ कर रहा था। इसमें एक या डेढ़ घंटा और लगेगा।
"अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो मैं अंदर आकर सुन लूँगा। अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो मैं बाहर खड़े होकर सुन लूँगा! मुझे नौ बजे ऑफिस जाना है।" "क्या बात है? क्या तुम गाना सीखना चाहते हो? अंदर आ जाओ।"
उसे वह धागा आकर्षक लगा। बच्चे के आपसी जुड़ाव के कारण गाँठ कसकर बंधी थी। शरीर
यह आसान नहीं था। उसका मन वासना से भर गया। फिर भी, उसके मन में संदेह उत्पन्न होने लगे, क्योंकि मधु फुसफुसाकर कहा करती थी,
क्या इस तरह का शक्तिशाली हथियार बनाना संभव होगा?
वह अंदर आई और टैम्बो के बगल में बैठ गई। टैम्बो ने सोचा, 'अब तक तुमने क्या सीखा है? अगर तुम बिल्कुल शुरुआत से सीखना चाहती हो, तो मैं तुम्हें नहीं सिखाऊंगा। मेरी प्यारी।'
वे उज़िक-कूल में अन्य शिक्षकों को सिखाएंगे। मैं परीक्षा दूंगा। A◌ad s है
अगर संगीत सिखाने का माहौल अनुकूल हुआ, तो मैं सिखाऊंगा। अभी तो उन लोगों को सिखाने का समय नहीं है जो पहले से ही संगीत में निपुण हैं!’ वह पहले की तरह उसी जगह बैठ गया।
दोनों के बीच मात्र चार फुट का फासला था। उनके बीच सिर्फ एक डफली रखी थी। चलने के कारण उसकी गर्दन और माथे पर पसीने की बूँदें आ गई थीं। वह उसे ध्यान से देख रही थी।
उन्हें इस दर्शन का अर्थ समझ नहीं आया। हम इतनी हिम्मत से आए हैं, इतनी हिम्मत से
वह पास ही बैठी थी और अब बड़ी ध्यान से देख रही थी! लड़की काफी उम्रदराज लग रही है! ये कैसी लड़की है? न शिष्टाचार, न सम्मान, न भक्ति। ऐसी उद्दंड लड़की से मुझे कोई वास्ता नहीं रखना! उसने मन ही मन ठान लिया।
"जो कहना है, जल्दी बोलो। अगर तुम्हारे सामने कोई अजनबी है, तो तुम यह रस्म नहीं निभा सकते। तुम बिना फोन किए या समय बताए सुबह सात बजे आ गए! जल्दी बोलो।"
"मैं तुम्हें पहचान नहीं पा रहा हूँ?" उसने फिर सोचा।

'तुम कितनी बार एक ही बात सोचते हो!' उसकी आवाज गुस्से से ऊंची हो गई, 'लोगों की भाषाएं होती हैं और वे अपना परिचय देते हैं! तुम कैसे गुस्सा कर सकते हो?'
उसकी आँखों में आशा की एक किरण दिखाई दी जब उसने उसे देखा। उसने कहा, 'मेरा नाम बकुला है! बकुला लाल!' उसकी आवाज़ भी काँप रही थी।
यह दृष्टि लक्ष्य से चूक गई। दृष्टि ज़मीन पर टिक गई। शी ताहिन ऊपर-नीचे मुझे ऐसा लगा जैसे मैं गिर ही जाऊँगी। मेरे शरीर में चेतना अचानक रुक गई। कानों में झनझनाहट और आँखों में धमाका सा महसूस हुआ। क्या मैंने यह वाक्यांश पहचाना? मैंने सोचा, मेरी याददाश्त ने धोखा दे दिया है और मेरा मन कहीं भटक गया है! शर्म से मेरी नज़रें ज़मीन पर टिक गईं। बाद में मैंने सोचा, अगर मैंने अंदर आते समय उन्हें अपनी पहचान बता दी होती तो क्या होता? नहीं, मेरे सपने मेरी आँखों के सामने नहीं आ रहे थे। यही मेरी परीक्षा है। मैं यहाँ एक खास मकसद से आया हूँ! इसीलिए मुझसे गलती हुई। इस सोच ने मुझे मजबूर कर दिया।
मुझे तसल्ली हुई। साथ ही, मुझे यह भी हैरानी हुई कि वह अब क्यों आई है। इस माँ ने लाख रुपये कब फेंके थे? वह ज़रूर पैसे माँगने आई होगी।
अगर आप उन्हें देने का फैसला करते हैं तो बेहतर होगा। घर में नकदी नहीं है। क्या मुझे चेक लेना चाहिए या बैंक से नकद पैसे निकालने चाहिए?
क्या मुझे इसे लाना चाहिए?...
वह हंसते हुए बोली, 'क्या आप मुझे पहचान नहीं रहे? मैं आपको छह साल की उम्र से देख रही हूँ। एक समय था जब मैं आपसे पैसे लेने यहाँ आती थी! भले ही मैं किसी और के घर खेल रही होती थी, मैं आपको बुलाती थी और चॉकलेट देती थी। जब मैं छोटी थी, तो मैं रोना बंद कर देती थी और आपको तंबोरा बजाते और गाते हुए सुनती थी। जब मैं छोटी थी, मेरी माँ मुझे ये सब बताया करती थी। लेकिन आजकल, वह इस बारे में बात नहीं करती। मुझे लगता है कि जब मैं स्कूल जा रही थी, तो मैंने स्कूल के बारे में कुछ मनगढ़ंत बातें बना ली होंगी और यह झूठ बोला होगा। उन्होंने मुझे बताया कि आप मेरे पिता हैं। आज भी, वह इस बात से इनकार नहीं करतीं। वह आपके बारे में बात नहीं करतीं और न ही हमें करने देती हैं, यह सच है! मैं अब यहाँ नौकरी के लिए आई हूँ। क्या आप मुझे सच बताएँगे?'
'वह क्या है?'

‘मैं आपको सब कुछ बताती हूँ। मेरे स्कूल सर्टिफिकेट में लिखी जन्मतिथि के अनुसार, मेरी उम्र तीस साल है। कॉलेज में पढ़ते समय से ही मुझे गाने का शौक रहा है। मैं गाना सुनती हूँ, सीखती हूँ; लेकिन मेरी माँ को इससे डर लगता है। उन्हें लगता है कि गाने के इस जुनून से लोग बिगड़ जाते हैं; लेकिन जब मैंने खुद कमाना शुरू किया, तो मैंने बोरीवली के विजयपुरा मठ से सीखना शुरू किया। मैंने अपनी माँ से झूठ बोला और सभाओं में जाते समय जितना हो सके उतना गाना सुना! अगर आप सच कह रहे हैं, तो यह सोचने का कोई कारण नहीं है कि इसके लिए आप जिम्मेदार हैं। अगर आप चाचाओं द्वारा भेजे गए लाखों रुपये लेने भी आएँ, तो मैं उन्हें छूऊँगी भी नहीं। मैं बस यही सोचना चाहती हूँ कि मेरा जन्म कैसे हुआ? मैं बस यही जानना चाहती हूँ।’
वह चुप हो गई। उसकी निगाहें टैम्बो के वाद्ययंत्रों के तारों पर टिकी हुई थीं। उसने कहा, 'मेरा सवाल खत्म हो गया है। जवाब दो।'
उसने हिम्मत जुटाई। उसने गर्दन पकड़े हुए आदमी की ओर देखा और कहा, 'अतीत की किंवदंती।'
मैं बैठकर गपशप नहीं करना चाहती।
‘मैं पुराण सुनने नहीं आई हूँ। मैं बस यह सोचना चाहती हूँ कि क्या तुमने मेरी माँ की गोद में मंगलसूत्र बाँधा और फिर मुझे माला पहनाई? या तुम्हारी माँ ने तुमसे पैसे लिए और तुम दर्द कम करने की कोशिश में गलती से मेरे पास आ गए? या तुम्हारी माँ तुम्हारा नाम तब भी लेती है जब तुम्हारा उससे कोई रिश्ता नहीं होता? इनमें से कोई भी जवाब देना पुराण गढ़ना नहीं है! अगर तुम यह भी कह दो कि ‘मैंने बोरीवली नहीं देखी’, तो मेरे लिए इतना ही काफी है!’ वह उसके जवाब का इंतज़ार करने लगी। लेकिन अब उसकी नज़रें उससे हटना मुश्किल हो रहा था।
उसकी निगाहें उस पर टिकी हुई थीं। उसका माथा, नाक और आंखें उसके साथ सामंजस्य में थीं।
ऐसा लगा जैसे वह उसे कुछ बता रहा हो। फिर अचानक ऐसा लगा जैसे कुछ हुआ ही नहीं। वह कुछ मायनों में अपनी माँ से मिलती-जुलती थी। हालाँकि, उसकी माँ के चेहरे की कोई झलक नहीं दिखी; पर उसने उसे यह सब महसूस नहीं होने दिया।
वह हंस पड़ी, ‘शायद आपको सब कुछ ठीक से याद ही नहीं है! धीरे-धीरे याद कीजिए और फिर जवाब दीजिए।’ उसने अपने पर्स से एक कार्ड निकाला और उसे देते हुए

कहा, ‘इस पर मेरे ऑफिस का फोन नंबर है। इस पर मेरा घर का पता भी है!’ और पर्स बंद करके वह चली गई।

२
उसके जाने के बाद, उसकी उंगलियाँ फिर से डफली के तार बजाने लगीं। सुबह गाने का समय था। कुछ लोग यह नहीं समझते कि हमें इस समय जाकर इसमें बाधा नहीं डालनी चाहिए! 'मैं अतीत की बात नहीं करना चाहती' यह सिर्फ गुस्से में दिया गया जवाब नहीं था। यह सच है, है ना! हमें हमेशा आगे देखना चाहिए। अगर हम अतीत को याद करते रहेंगे तो क्या होगा? उसने इस समर्थन को क्या कहा? 'मैं भी अतीत की बात करने नहीं आई थी, मेरे सवालों का जवाब दो! -' वह तो मेरी आलोचना करने आई थी! यह क्या है! गुस्से में टैम्बो का हाथ रुक गया। उसे यह सवाल पूछने का अधिकार था, उसकी माँ नहीं आई थी। इस समय, लगभग उस उम्र की एक छह साल की बच्ची मुझसे सवाल पूछ रही थी! उसका गुस्सा और बढ़ गया। टैम्बो, यह स्टार, गुस्से में मुझे चिढ़ाने लगी। मेरे बारे में कौन सोचेगा? मुझ पर किसी का कोई अधिकार नहीं है। मैं एक कलाकार हूँ! मुझ पर सिर्फ इस टैम्बो का अधिकार है, किसी और का नहीं। मैं शांति के अधिकार को स्वीकार करती हूँ। मैं उत्तराधिकारी के अधिकार का सम्मान करता हूँ। हाँ! आपने गलती की, आप गलत थे, मैंने ऐसा कभी नहीं कहा।
टैम्बो ने मेरे बारे में नहीं सोचा, उसने जवाब के बारे में नहीं सोचा! इस समर्थन के साथ, इस समर्थन के साथ,
मैंने स्वयं को शांति में लीन करने का प्रयास किया। ध्यान – वर्षों की तपस्या!
जो गायक इन सभी उलझनों में फंसे बिना इस तरह की साधना से विमुख हो गया है, वह फिर भी हर सुबह श्रवण और भावना की तीनों साधनाएं बिना किसी चूक के कैसे कर सकता है? मां की तरह तिशी का कौन सा गायक राजा की तरह दुनिया भर में घूमता है और एक के बाद एक श्लोक गाता है? चाहे चालीस साल और बीत जाएं, यह मोहनलाल – नहीं! मोहनसेन! – एक महान शासक के रूप में ही अमर रहेगा!
यह सोचते हुए उन्होंने एक प्रबल षड्ज धारण किया। यद्यपि उन्होंने सचेत रूप से यह नहीं सोचा था कि किस राग में आना है, फिर भी उन्हें यह आशय हुआ कि यह सौम्य ऋषभ असावरी राग है। उन्हें इस राग की संरचना और क्रम याद आ गया और उन्होंने वहीं से ‘आह’ का उच्चारण किया। अपने मन को नियंत्रित करते हुए,

उसे इस प्रकार संयमित करते हुए कि वह कहीं भटक न जाए, उन्होंने मन्द्र शतक के प्रत्येक श्लोक का लंबे समय तक ध्यान करना शुरू किया। जब मन मन्द्र से सौम्य ऋषभ की ओर उतर रहा था, अचानक उनका मन थक गया। इस राग के मन्द्र षड्ज पर ध्यान करते हुए उन्होंने सोचा: ये गलतियाँ प्रकट हो गई हैं। यह बिल्कुल सत्य है कि मन्द्र षड्ज पूजा का स्थान है। शास्त्रों में भी इसका उल्लेख है। यह क्रोध का उद्गम स्थान है। यदि इस स्थान को स्पष्ट रूप से देखा जाए, तो संसार का कोई भी पर्वत वहाँ से स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उन्होंने इसे छोड़ दिया! और इसके विपरीत, वे यह कहने आ गए कि यह गलत स्थान है! अब कौन समझदार होगा? ये तो है लोगों का ध्यान खींचने का तरीका! ये भटक रहा है। गीत का रास्ता गलती से इधर-उधर भटक रहा है! ये संत बनने के चक्कर में पागल है, इसी जाल में फंसा है। भाड़ में जाए ये हिमालय! मेरा इससे कोई लेना-देना नहीं। इसने गीत छोड़ दिया है, इसी वजह से ये नैतिक अहंकार का शिकार हो गया है!
विचारों के प्रवाह ने भक्त की एकाग्रता भंग कर दी। उसे पिछले कुछ वर्षों से की जा रही साधना याद आ गई। वह ऋषभ के कंठस्थल तक पहुँच गया। असावरी का मंदिर सहजता से प्रकट हुआ और वह भी सहजता से विश्राम करने लगा। वहाँ से असावरी के जीवन के अन्य सभी पहलू स्पष्ट होने लगे। मन में कुछ भी नहीं था! कला को कला के रूप में देखना चाहिए। यदि कोई अपने भीतर उत्पन्न हो रही रचना को पोषित करे, तो ऐसी रचना होने में समय नहीं लगेगा! उसने इस ध्यान का भरपूर आनंद लिया, इसके हर पल को आत्मसात किया और कुछ समय तक इसका लुत्फ़ उठाया। सुगंध को अंदर लेते हुए, उसने गहरी साँस ली और इस ध्यान में विश्राम किया, और कुछ देर तक इससे खेला भी। मेरा मन कुंठा से भरा हुआ था। जैसे-जैसे मैं धीरे-धीरे ऊपर चढ़ रहा था, पर्वत के मध्य में इस चौराहे के पास पहुँचते ही मुझे अचानक क्रोध आ गया।
‘क्या आप मुझे पहचानती हैं?’ मैंने सोचा। मुझे इतनी जटिल परीक्षा क्यों देखनी पड़ी? अगर मैंने बस इतना कह दिया होता, ‘मेरा नाम बकुला है – बकुला लाल’, तो क्या होता? मेरे मन में एक अजीब सी बेचैनी सी उठ रही थी। अगर उसने मुझे बताया होता कि वह लड़की है, तो मैं ऐसा नहीं सोचता। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह मुझे देखना चाहती थी। इस उम्र की लड़कियाँ कैसा व्यवहार करती हैं, यह कोई नहीं बता सकता। उसे यह भी पता होगा कि इस उम्र की

लड़कियाँ मुझ पर कैसे फिदा हो जाती हैं। बिना अपना परिचय दिए, क्या वह मेरे चेहरे के हाव-भाव देखकर मेरी अहमियत आंकने आई थी?
गाना बंद हो गया था। लेकिन उंगलियां डफली बजा रही थीं।
मेरी परीक्षा कौन लेगा? मेरी योग्यता का आकलन कौन करेगा? ये कैसी समस्या खड़ी हो गई! ये कैसा सवाल था! ये सवाल और चौथा सुझाव एक के बाद एक मेरे दिमाग में कौंधते रहे और मेरा मन इन्हीं चक्रों में उलझ गया। अनजाने में ही मेरी उंगलियां रुक गईं और डफली भी बंद हो गई। कुछ देर तक मेरा मन इन्हीं चक्रों में घूमता रहा।
दरवाजे पर दस्तक हुई। भूपली! यही तो उसका तरीका है। वह कभी घंटी नहीं बजाती। उसे घंटी की आवाज़ अजीब लगती है। यहाँ तक कि घंटी बजाते समय भी वह तीन-चार सुरों वाला तबला बजाती है, ताकि सुर सुनाई दें। उसके बाद, अंदर आने की पुकार का इंतज़ार किए बिना, वह धीरे से दरवाजा खोलकर अंदर चली जाती है। ‘क्या अभी भी अनुष्ठान चल रहा है?’ वह आकर उसके सामने बैठ गई। उसने कुछ नहीं कहा। उसने अपना डफ उठाया और बजाना शुरू कर दिया। ‘बजाओ। मैं तो बस नहाने आई हूँ।’
वह अचानक उठ खड़ा हुआ। हालाँकि वह नहाते समय उसे गाते हुए सुन सकता था, लेकिन उसे नहीं पता था कि वह कहाँ है।
मारा नहीं गया। अंगोल की मेज पर खाना खाते समय याना ने तिलाही से पूछा, 'क्या बात है?'
नहीं। मैं हल्का नाश्ता किए बिना ही आ गई हूँ। अगर मैं भारी भोजन करूँगी तो गाना मुश्किल हो जाएगा।
इसके बाद भी उनका पढ़ाने का मन नहीं था; लेकिन अगर उन्होंने इस पर ध्यान नहीं दिया, तो उन्हें डर लगने लगा कि बाकुले का मामला फिर से उनके सामने आ जाएगा। इसी वजह से वे अब और नहीं बैठे। सिवाय इस अमेरिकी लड़की के। किसी भी कीमत पर उसकी जान गंवाना जायज़ नहीं था।
क्लास खत्म होने पर उसने सोचा, 'गुजी, आज तुम्हारा मूड हमेशा की तरह नहीं है।'
‘मन इसी तरह काम करता है, है ना! क्या हमेशा एक ही मानसिक स्थिति में बने रहने का कोई तरीका है?’
‘मुझे लगता है मैं इसमें आपकी मदद कर सकती हूँ!’ वह मुस्कुराई। वह करीब आया और उसे चूम लिया। उसे याद आया कि पिछले एक हफ्ते में उसे ऐसा मौका नहीं

मिला था। वह उत्साहित हो गया। मन की स्थिति का अंदाज़ा लगाने के लिए उसने सोचा कि शायद यही सही तरीका है, और वह उसके साथ बिस्तर पर चला गया; लेकिन बिस्तर पर लेटते ही उसे ख्याल आया, बकुले तो बिल्कुल उसी उम्र की है! शायद एक साल छोटी। भूपाली के मन में उसकी ऐसी ही मन की स्थिति का ख्याल था, इसलिए उसने पहल की; लेकिन उसे लगा कि उसके शरीर पर किसी और चीज़ का असर हो रहा है। यह जानकर कि इसमें कुछ भी असामान्य नहीं है, उसने फिर सोचा, ‘लगता है तुम किसी चीज़ से परेशान हो। शायद बेहतर होगा अगर तुम मुझे बता दो। मतलब, अगर तुम बताना चाहो तो।’
मुझे लगा कि मैं आपको बता दूं कि बकुला सुबह आई और चली गई थी; लेकिन यह एक अजीब स्थिति थी। मुझे लगा कि मैं उसके सामने शर्मिंदा हो जाऊंगी। मैं आपको बकुला के प्रति अपने मन में पनप रही वासना के बारे में नहीं बता सकती थी। शायद वह उसकी उम्र को लेकर कुछ खास नहीं सोचेगी। मैं इस लड़की से अपनी जिंदगी में कभी नहीं मिली थी, और वह कहती कि अगर इस संदर्भ में ऐसा कुछ होता तो आश्चर्य की बात नहीं होती; लेकिन एक औरत
तो यह कोई बुरी बात नहीं है! चाहे कोई भी देश हो, ऐसे हालात में हमेशा कोई न कोई नेता होता ही है।
वह अस्वस्थ महसूस करते हुए उठा। उसने 'माफ़ करना...' कहा और दूर हट गई। उसने 'कोई बात नहीं!' भी कहा और अपने कपड़े ढक लिए। उसे एक पल के लिए याद आया और उसने कहा, 'मैं जा रही हूँ, अपना ख्याल रखना' और घर से चली गई।
वह वापस बिस्तर पर चला गया। वह चट्टान के पर्दों के बीच से सामने समुद्र को देखता रहा। चाहे कितना भी समय बीत जाए, बकुला के प्रति उसका गुस्सा कम नहीं हुआ।
उस रात भी मुझे ठीक से नींद नहीं आई। एक तरफ तो मैं गुस्से से भरी थी, दूसरी तरफ सब कुछ खो देने के कारण मेरे मन में एक खालीपन उमड़ रहा था। पूरा सागर लाल और उबलता हुआ सा लग रहा था। दो दिन ऐसे ही बीत गए। तीसरे दिन जब मैं उठी तो मुझे लगा जैसे मैं उसकी आवाज़ और भी साफ़ सुन पा रही हूँ। वह यह भी कह रही थी कि उसे शास्त्रीय संगीत बहुत पसंद है। इसी वजह से वह लड़का - उसका नाम क्या है? अविनाश और वो - इतने करीब आ गए! मुझे गर्व महसूस हुआ। अगर मैंने अपने नाम से किताब छपवाने की इजाज़त दे दी होती और काम करने के लिए मान गई होती, तो वो जाने के लिए तैयार हो जाता। मैं क्यों नहीं गई? क्या मुझे अपना चेहरा दिखाने में शर्म आ रही थी? या रामकुमारी के सामने खड़े

होने से डर लग रहा था? उसने अपने घर भेजे लाखों रुपये वापस भेज दिए। अगर मैं गई होती, तो शायद बिना सोचे-समझे पैसे न भेजती, कौन जाने! ये हमारी गलती थी। इस पूरे मामले में असली अन्याय तो रामकुमारी के साथ हुआ है! मेरा दिल्ली से चंपा वापस जाने का कोई इरादा नहीं था; लेकिन मैं रामकुमारी के पास क्यों नहीं गई! क्या मुझे डर था कि चंपा, जिसके हाथ में लाना का पंजीकृत दस्तावेज़ था, शिकायत करेगी? अगर मैंने उस समय इसके बारे में सोचा होता, तो मैं चंपा से डरे बिना रामकुमारी और उसके बच्चों को अपने करीब ले आती। भले ही हम साथ न रहते, हम इस परिवार के साथ संबंध फिर से स्थापित कर सकते थे। भले ही मैं विष्णु की ओर से यहाँ रुक जाती, वह इसे स्वीकार कर लेता; लेकिन इस दिशा में कोई विचार मेरे मन में नहीं आया। उसने मनोहरी की तरह मुझे धोखा दिया था। उसने मेरे संगीत को रौंद डाला था। इस मुसीबत से बाहर निकलना एक पुनर्जन्म था। इसी कारण यह निश्चित था कि 'कोई भी स्त्री फिर कभी इस मुसीबत में नहीं फंसेगी'। इसके साथ ही
मुझे यह भी एहसास हुआ कि त्रिश्या के बिना दुनिया अधूरी है। एक अकेली महिला...
मैं यहाँ क्यों रहूँ? एक बार उससे मिलने वाला जीवन का झरना सूख जाए, तो मेरा आगे का जीवन रेगिस्तान बन जाएगा! इस तरह का व्यक्ति तो ऐसे ही रेगिस्तान बनाएगा! उस समय यही विचार मेरे मन में प्रबल था। वृंदावन की इस सुंदर स्त्री ने मेरे साथ कितना उदारतापूर्ण व्यवहार किया! कार्तिक से मिलते ही इस सुंदर स्त्री की मुझमें रुचि कम हो गई और वह मुझसे आसक्त हो गई। या शायद कार्तिक से मिलने के कारण ही उसकी मुझमें रुचि कम हुई?
उस समय मेरा दिल गुस्से से धड़क रहा था। उसके बाद का अनुभव बिल्कुल अलग था। एक गायक
जिस प्रकार अलग-अलग रागों को अलग-अलग लय में गाने से श्रोता को अलग-अलग प्रकार का आनंद मिलता है, उसी प्रकार ये तानियाँ भी होती हैं। प्रत्येक तानी को लय देने का तरीका अलग होता है। एक राग गाते समय दूसरे राग के बारे में नहीं सोचना चाहिए। जब दूसरा राग शुरू हो जाए,
राग का कोई ज़िक्र नहीं होना चाहिए। किसी भी राग का गायक पर स्थायी नियंत्रण नहीं होना चाहिए। गायक पूरी तरह स्वतंत्र होना चाहिए। यही भावना थी।

जब शिवाए वहाँ पहुँचा, तब तक उनके रिश्ते को टूटे चार साल हो चुके थे। रामकुमारी गोरे साहब के यहाँ काम करती थी और अपना खुद का व्यवसाय भी चला रही थी। वह उसी चॉल में रहती थी। पुहा तिथि के साथ संबंध बनाने का ख्याल उसके मन में दूर-दूर तक नहीं था। चाहे वह दो साल तक किसी राग का अभ्यास भी कर ले, उसे समझ नहीं आएगा कि 'यह कौन सा राग है'! इसमें कोई शक नहीं कि वह पढ़ाई में अच्छा करेगा। अगर पुहा तिथि, पुहा तिथि के पास चली जाती, तो उसे गाने की प्रेरणा कहाँ से मिलती? वह भी तब जब मनोहरी के साथ उसके मदहोश कर देने वाले प्रेम प्रसंग की यादें उसके मन में ताज़ा थीं? माँ से गायन सीखने वाला शिवाए उस उम्र में इस इच्छा के साथ आसानी से उपलब्ध होना चाहता था! आखिर ऐसी क्या बात थी जो उसे ऐसे माहौल से निकलकर रामकुमारी के पास जाने के लिए मजबूर कर रही थी?
चंपा के पास न जाने का कारण सिर्फ़ उसका बुरा बर्ताव और गायक से पहले बाज़ी मारने की आदत ही नहीं थी, बल्कि उसके प्रति उसका आकर्षण भी पूरी तरह खत्म हो चुका था। उफ़... ऐसा नहीं कहा जा सकता। मुझे उसके प्रति कभी ऐसा आकर्षण नहीं हुआ। उससे मिलने से पहले मैं किसी शहरी लड़की के इतना करीब नहीं आया था, उसे कभी छुआ भी नहीं था। मैं कभी किसी ऐसी लड़की के साथ नहीं रहा था जिसे गाना आता हो। चुनी और रामकुमारी दोनों में शास्त्रीय संगीत की कोई झलक नहीं थी। उनकी सोच उससे मेल नहीं खाती थी। चंपा में यह बात थी; लेकिन वह अपने संगीत ज्ञान और बुद्धि को व्यवसायीकरण में बर्बाद कर रही थी। इसीलिए मुझे लगा कि 'मुझे यह भी नहीं चाहिए और वह भी नहीं चाहिए'। इस बार मैं एक पूरी बातचीत की उम्मीद कर रहा था।
खिड़की से हल्की हवा आने लगी। वह झट से उठ बैठा।

३
एक हफ्ते के अंदर ही मेरा दिमाग तेज़ी से सोचने लगा। मुझे उसे बताना चाहिए, उस लड़के को बुलाओ, मैं उसे बता दूँगा। मैं पत्रिका अपने नाम से प्रकाशित करूँगा, मैं काम करूँगा, उसकी माँ असली है, मैंने पहले ही इस परिवार के साथ शादी तय कर ली है, मैं एक कलाकार हूँ, मेरा जीवन बाकियों से अलग है; लेकिन यह मेरी पत्नी है और ये मेरे बच्चे हैं – वगैरह-वगैरह। मुझे यह भी कहने का मन हुआ, मुझे इस माँ-बाप का पता दे दो, मैं उनसे संपर्क करूँगा।
लड़का कुएँ के पास गया और उसने उस महिला से इसके बारे में पूछा। उसने कहा, मैंने विश्वास के साथ लड़ाई छोड़ दी। अपने लिए सीधे सोचने का क्या फायदा? सिर्फ एक पक्ष की बात सुनकर फैसला मत करो, आजकल के बच्चों में इतना धैर्य नहीं है! वे किस तरह की दुनिया का नेतृत्व करेंगे!
वह बकुला द्वारा फोन करने के लिए दिए गए कार्ड को ढूंढने लगा। मैंने तुरंत अपना ध्यान हटा लिया। वह विकास की जिरह की बात कर रहा था! अब अगर मैं नरम पड़कर उसे फोन कर देता, तो वह कुछ और ज़रूरी बात कह देता। अब तो कोई फायदा नहीं था – सब कुछ बिखर चुका था, अगर वह मर भी जाता तो मैं क्या करता? जब तक मुझे कार्ड मिला, उसे फोन करने का ख्याल गायब हो चुका था, इसलिए मैंने कार्ड एक तरफ रख दिया। मैं किसी मुसीबत में नहीं पड़ना चाहता, दुनिया में जो कुछ भी होता है, उसकी ज़िम्मेदारी मेरी है।
तो? इससे क्या लेना-देना है कि कौन कहाँ पैदा हुआ था? उसने खुद को यकीन दिला दिया कि
मैंने इस पूरे मामले को छुपाने की कोशिश की। कुछ समय के लिए अच्छा भी लगा। लेकिन यह मानसिक स्थिति क्षणिक ही रही। मुझे हर तरफ सूखापन महसूस होने लगा। सुबह उठकर रियाज़ करते समय भी, मुझे अंदर से खालीपन महसूस होने लगा। हर तरफ सूखापन। नज़ारा इतना सूखा था जैसे दोपहर के समय रेगिस्तान के ऊपर से उड़ते समय दिखता है। खाने-पीने में मेरी रुचि कम हो गई। कोई भी खास छात्र कैंपस में रहना नहीं चाहता। भूपाल भी स्थिति को समझ गई होगी। क्योंकि वह भी इसी स्थिति में थी।
हड़ताल बिना किसी निशान के, पलक झपकाए ही खत्म हो रही थी। हालाँकि मुझे लग रहा था कि मैंने हद पार कर दी है, लेकिन यह सोचकर कि मेरा जीवन रेगिस्तान जैसा होता जा रहा है, यह और भी उबाऊ हो गया था।

इस बार बनारस में एक संगीत कार्यक्रम था। आयोजकों ने बताया, ‘आपको मुंबई से अपने वादकों को लाने की ज़रूरत नहीं है, हमारे पास बनारस में हारमोनियम वादक और तबला वादक मौजूद हैं जो आपका साथ दे सकते हैं।’ हारमोनियम वादन राम रतन और स्वात किशन महाराज को करना था। यह जोड़ी किसी महान कलाकार को भी गौरवान्वित कर देगी और अन्य कलाकारों को चौंका देगी! वे हाथ जो किसी प्रतिभाशाली कलाकार को मौका मिलते ही बिना किसी झिझक के नई लय प्रस्तुत करते हैं और बिना रुके उनमें जोश भर देते हैं! उन्हें डर लग रहा था। क्या वे ऐसे कलाकारों का साथ दे पाएंगे जबकि उनका गीत आसपास की खामोशी में गूंज रहा हो? गाते-गाते उन्हें एहसास होने लगा कि उनके डर में भी कुछ अर्थ छिपा है। बनारस के श्रोता भी इससे बहुत प्रभावित हुए! कितने ही छिपे हुए स्वाद के खजाने सिर्फ देखकर ही पहचाने जा सकते हैं! इनमें से अधिकतर श्रोता विज्ञान के क्षेत्र में पारंगत हैं, जिन्होंने गायन या वाद्य यंत्र बजाना सीखा है। हमारा आलापी विज्ञान शुद्ध है। इसमें कोई कमी नहीं निकाल सकता; लेकिन स्वाद और पोषण की बात करें तो? हमारी परेशानी सिर्फ आप ही समझ सकते हैं। गाना सुनते हुए श्रोता भी अपनी गंभीरता को बनाए रखते हुए सिर हिला रहे थे। आगे की पंक्ति में बैठे श्रोता बीच-बीच में ताली बजा रहे थे; लेकिन मैं ऐसी गायिका नहीं हूँ जो इन रियायतों का फायदा उठाकर संवाद स्थापित करती हो। मुझे अपनी स्वाभाविक क्षमता के अनुसार कलात्मक प्रदर्शन करना चाहिए था।
उन्हें अचानक एक उपाय सूझा। उन्होंने माइक्रोफोन में कहा, "किशन महाराज।" फिर, जब मैं इस विषय पर बात कर ही रहा हूँ, तो मेरे लिए बार-बार वही बात दोहराना गलत होगा। मुझे क्षमा करें। अब मैं इसी क्रोध को कुछ देर बाद एक लय में दोहराना शुरू करूँगा!
महाराजा की आँखों में चंचल हृदय की चमक झलक रही थी। उन्होंने अपना आधा पद्मासन तोड़कर वज्रासन में बैठ गए। आलाप लेकर उन्होंने समा मुद्रा का प्रदर्शन किया। उन्होंने काले वर्ग पर कड़ा रखा। उन्हें प्रोत्साहन मिला। उन्हें एक दिवाच जैसा भी महसूस हुआ। दोनों ने कलानंद को एक तरफ रखकर खेल के आनंद में लीन हो गए। सभा में छाई खामोशी गायब हो गई और जोश उमड़ पड़ा। वही क्रोध, वही उत्थान-अवरोह और वही वाद-विवाद।
तेज बारिश से पेड़ों के पत्ते मानो नए जीवन से भर गए थे। लेकिन अब, मेरे सामने बैठे श्रोताओं के चेहरे केवल सौज की भावना से ही नहीं भरे थे। सौज के

लिए केवल 'वाह' ही नहीं कहा गया था। बल्कि वह सराहना भी थी जिसके मैं योग्य था।
परिणामस्वरूप, संगीत सत्र बेहद सफल रहा। तेज़ लय और खेल के साथ, आनंद का एक ऐसा नया अनुभव हुआ जो पहले कभी नहीं हुआ था। उन्होंने इस विचार के साथ बैठक समाप्त की कि हमने बनारस पर, इस काशी क्षेत्र पर विजय प्राप्त कर ली है। उस रात मेरा दिल पूरी तरह खुश था; लेकिन जब मैं घर लौटते हुए विमान में बैठा था,
वह सूखापन फिर से गायब हो गया था। एक मीठी, मीठी सी खुशबू उसके कानों में भर गई। उसने एयर होस्टेस से रुई माँगी और कानों में डाल ली, लेकिन आवाज़ फिर शांत हो गई। खिड़की से बाहर देखते हुए उसने सोचा, "कला से मिलने वाला आनंद शाश्वत है!" उसे इस कथन का अर्थ समझ नहीं आया। किशन महाराज के संगीत की लय की सुंदरता और बनारस में हज़ारों पर्यटकों के चेहरों पर दिख रही खुशी ने उसके मन की उदासी को दूर कर दिया और आनंद का झरना फूट पड़ा। कार्यक्रम समाप्त हुआ और कार्यक्रम का उत्साह भी शांत हो गया। उसे लगा जैसे उसने कुछ नया समझा हो; लेकिन वह उसका अर्थ स्पष्ट रूप से नहीं समझ पाया। उसे रुककर इस बारे में सोचने की आदत नहीं थी।
जब वह दिल्ली जाने के लिए विमान बदलने वाले थे, तो उनके बगल वाली सीट खाली थी। विमान में सवार लोगों को जब बताया गया कि वह बीच हवा में ही सीट छोड़ सकते हैं, तो एक महिला उनके पास आई और बोली, 'नमस्ते, मैं मुंबई में आपके सभी कार्यक्रम कभी नहीं चूकती। मुझे आपका गायन बहुत पसंद है!'
उसने उसके चेहरे की ओर देखा। कंधे तक कटे घने बाल। पैंट और छाती।
एक अलमारी जैसी आकृति ने उसके कद को और भी निखार दिया। उसकी आँखों की कोमलता स्पष्ट रूप से झलक रही थी। उम्र पच्चीस वर्ष। बगल वाली सीट पर बैठी एयर होस्टेस से दो-तीन इंच लंबी। बगल वाली सीट खाली देखकर उसने अनुमति ली और वहाँ बैठ गई। उसने भी उत्साहपूर्वक उसे बैठने के लिए कहा। बोरियत दूर हो गई।
उन्होंने यह पूछकर बातचीत शुरू की, "क्या आप गाना सीख सकते हैं?"
मैं पढ़ाई करती थी; लेकिन जब से मैंने मेडिकल स्कूल में दाखिला लिया है, मुझे बिल्कुल भी समय नहीं मिलता। अब मैं दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान में एम.डी. कर रही हूँ। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मुझे आपके

बगल में बैठकर बात करने का मौका मिलेगा! मुझे जलन हो रही है! क्या आप दिल्ली से आ रही हैं?
वाह! क्या गजब का ग्रुप है! ये तो सच में मेरा फैन है! भले ही वो गाना नहीं सीखता, पर मुझे कितनी निगाहों से देखता है! जब वो मुंबई के पास आएगा, तो क्या पता मुझे कार्ड देकर कहे, 'अगर समय मिले तो घर आ जाना'? बस, दिमाग ऐसे ही खेल खेलने लगता है।
वह दिल्ली के एक बड़े संस्थान में एमडी कर रही है। वह मुंबई की ही होगी। देखने में तो वह अच्छे परिवार से लगती है। वरना वह हवाई जहाज से क्यों आती? उसका घर रेलवे स्टेशन से बस एक सेकंड की दूरी पर है।
क्या लासेल फ़्लिपर ने यात्रा करना छोड़ दिया? वह सतर्क हो गया। ये लड़कियाँ और
महिलाएं उत्साह से उनके पास आती हैं, प्यार से बातें करती हैं और स्नेह जताती हैं, फिर विमान से उतर जाती हैं। अपनी विनम्रता का प्रदर्शन करना उचित नहीं होता। लेकिन लड़की कहती रही, ‘आपके गीत को सुनकर मुझे जो आनंद मिलता है, वह किसी और चीज़ में नहीं मिलता। यह गीत ईश्वरीय संगत के बिना संभव ही नहीं है। मेरी एक सहेली भी यही सोचती है।’ ऐसे समय में, वह विनम्रता से मुस्कुराते हुए प्रशंसा स्वीकार करने के आदी थे। उन्होंने ऐसा ही किया।
लेकिन जैसे ही उसने उसे देखा, उसे याद आया कि अब उसे किसी औरत का साथ नहीं चाहिए। पिछले एक महीने में उसने भूपली को छुआ तक नहीं था। ऐसे समय में उसके साथ डेढ़ घंटा बातें करने का क्या फायदा? जम्हाई लेते-करते उसने बाहें फैला दीं और एक गहरी साँस ली। फिर बोली, 'माफ़ कीजिए! रात भर के कार्यक्रम की वजह से नींद नहीं आई!' और आँखें बंद कर लीं। दो मिनट के अंदर ही वह उठ गई। आँखें बंद होते ही उसे बकुले याद आ गई। वह भी उस लड़की जैसी ही थी। गुस्से और लालच से भरी हुई। वह भी उस लड़की जितनी ही लंबी होती। उसे अपने इस दोस्त से मिलना था - उसका नाम क्या था? अविनाश - और उसके माता-पिता को समझने की कोशिश करनी थी। लेकिन कैसे? पहले उसे उससे सुलह करनी थी। बकुले की माँ से। उन्हें अपना यह विचार बहुत क्रांतिकारी लगा। चौबीस साल बाद, वे चले गए। मैं तुमसे मिलना चाहता हूँ! तुम इतने दिनों के लिए क्यों चले गए, वो इस बारे में सोचेगी। एयर होस्टेस खाने की ट्रॉली लेकर आई, मैंने सोचा, अगर वो ऐसा सोचती तो कहती, क्या करोगे, दुनिया ऐसी ही है, मैं तुम्हारे साथ कैसे

खुश रह सकती हूँ? इसीलिए मैंने उसे छोड़ दिया! काशी के एक महान ज्योतिषी ने मेरा हाथ देखकर कहा, तुम्हारे बस में सांसारिक सुख नहीं है, तुमने सिर्फ संगीत-सेवा की है, इसीलिए! आखिरी पहेली सुलझाने का कोई फायदा नहीं, मुझे बताओ इस लड़की की शादी का क्या करना है। इसके अलावा, तुम ये भी कह सकते हो कि वो उसे घर चलाने के लिए ब्याज पर पर्याप्त पैसा देता है। जब हम आमने- सामने होंगे, तो बातचीत के दौरान उसे मनाना मुश्किल नहीं होगा। चार से पाँच लाख
एक बार व्यवस्था हो जाने पर, काम हो गया! उसने चाहे जितनी भी कोशिश की हो, उसने नंगे पैर ही शारीरिक श्रम किया और दो बच्चों की माँ बनी। कम से कम उसने इस कर्ज को स्वीकार तो किया।
यह तो स्पष्ट है! अगर पांच लाख रुपये भी निकाल लिए जाएं, तो पांच कार्यक्रम बंद हो जाएंगे!
टैक्सी से घर पहुँचते ही उसके मन में यह ख्याल आया कि वह उससे आमने-सामने मिलकर उसका अपमान क्यों करे? वही तो वह महिला थी जिसने लाखों रुपये वापस भेजे थे! अगर वह ऐसा करने से मना कर दे तो क्या होगा? अगर वह डाक से ही पैसे वापस भेज दे तो क्या होगा? भले ही वह मना कर दे, उसे इस बात का पूरा भरोसा था कि उसने कुछ गलत नहीं किया है।

४
एक हफ्ते तक सोचने के बाद, उसने फैसला किया कि कोई बात नहीं, वह जाकर इस मामले को हमेशा के लिए खत्म कर देगा। उसे पहले चेतावनी देने के बजाय, उसने अचानक जाकर उससे सामना करने का फैसला किया। नोट में लिखा था कि वह शाम साढ़े चार या पांच बजे घर आएगी। जब वह सोच ही रहा था कि चौबीस साल बाद भी बोरीवली स्टेशन से घर का रास्ता कितना मुश्किल है, तभी उसे याद आया कि अब वहां के घर और गलियां इतनी भीड़भाड़ वाली हो गई हैं कि गलियों में घर ढूंढना इतना आसान नहीं रहा। उसने बकुले द्वारा दिया गया कार्ड लिया और सीढ़ियों से नीचे उतर आया।
इससे मुझे याद आया कि मैंने बीस साल से लोकल ट्रेन से यात्रा नहीं की है। यह सोचकर कि अगर वह लोकल ट्रेन भी ले ले तो उसे वापस पैदल ही आना पड़ेगा, उसने टैक्सी ले ली।
हालांकि दरवाजे और दीवारों पर रंग किया हुआ था, फिर भी घर पहचाना जा सकता था। दरवाजा आधा खुला था। उसने अंदर झाँका। उसने सामने का कमरा देखा, लेकिन अंदर कोई नहीं था। उसने घंटी बजाई। वह रसोई से बाहर आई। जी हाँ। हालाँकि उसने उसे पिछले चौबीस वर्षों में नहीं देखा था, फिर भी उसका चेहरा वही था, चेहरे पर ज़रा भी पाउडर नहीं था, और धूप, सर्दी और बारिश से उसकी त्वचा रूखी हो गई थी। माथे पर केसरिया रंग, शरीर पर बिंदीदार साड़ी। कानों के ऊपर दोनों बाल सफेद हो गए थे। बीच में वही सूती लट, वही चोटी। बीच में एक महिला का मंगलसूत्र। दोनों हाथों में दो-दो लाल चूड़ियाँ। हालाँकि साड़ी कसौट की नहीं थी, फिर भी वह महाराष्ट्र की निम्न वर्ग की महिला जैसी लग रही थी। "मैं यहाँ हूँ!" वह हँसा।
यह देखकर वह चौंक गई। उसकी नजरें नीचे झुक गईं।
उसने पु हा से कहा, "क्या तुम मुझे पहचान नहीं पा रही हो? मैं—"
कुछ ही क्षणों में वह संभल गया। उसने उत्तर दिया, 'बच्चे घर पर नहीं हैं।
अगर आप सात बजे के बाद आएंगे, तो आपको वे मिल जाएंगे!'
‘क्या तुम मुझे पहचान नहीं रहे? मैं!’ उसने सिर हिलाया और सोफे पर बैठ गया।
"मुझे जानने की ज़रूरत नहीं है!" वह हंस पड़ी।
वह क्रोधित थी और उसने कहा, 'बकुला आ गई थी। मैंने विवाह प्रमाण पत्र में अपना नाम दर्ज कराने से इनकार कर दिया, इसलिए नए बेटे ने विवाह तोड़ दिया!

मैं गाँव में नहीं हूँ, है ना? अगर मैं एक दिन गाँव में रहता हूँ, तो अगले दस दिन यात्रा में ही बीत जाते हैं। इसलिए मैंने इनकार कर दिया। अब आप विवाह की तारीख तय कर लीजिए। मैं इस दिन आऊँगा और कार्यदान जाऊँगा। अगर हम पहले से तय कर लें, तो हम कार्यक्रम भी उसी के अनुसार तय कर सकते हैं, मैं आपको यही बताने आया हूँ।'
उसके चेहरे पर असमंजस का भाव आ गया। उसने आगे कहा, 'अगर यहाँ जगह कम है, तो शादी का रिसेप्शन मेरे फ्लैट में कर लीजिए। लेकिन शादी के लिए आपको एक बड़े ऑफिस में आना होगा। चाहे कितना भी खर्चा हो, मैं उठा लूँगा।'
उसके चेहरे का भाव और भी गंभीर हो गया।
‘क्या तिपानीसाहेब ने झूठ बोला? मेरे पास उनका फोन नंबर है। क्या उन्हें फोन करके सच्चाई पता करूं या नहीं?’ उसने सोचा।
इस बूढ़ी औरत को ऐसा महसूस हो रहा था जैसे वह चरम सुख की ओर बढ़ रही हो। असहाय होकर वह दर्द और दुख महसूस कर रही थी।
क्या यही एक व्यक्ति है जो इतना हंगामा मचा सकता है? वह बहुत असमंजस में था। वह जवाब नहीं दे सका। यह समझते हुए कि अगर उसने जवाब नहीं दिया तो यह आरोप स्वीकार करने जैसा होगा, उसने कहा, 'जो हुआ सो हुआ। यह मत सोचो कि मैं खुश हूँ! जैसे महिलाओं के बुरे दिन होते हैं, वैसे ही पुरुषों के भी आधे- अधूरे दिन होते हैं। बुरे दिनों में, उसके पत्ते मेरे रास्ते में आ जाते थे। यह सच है कि मैं चार-पाँच साल तक उसके प्रभाव में रहा। लेकिन उसके बाद, मैंने उसे निकाल दिया! मैं कभी उसके दरवाजे पर नहीं गया। उसे कोई परवाह नहीं थी! क्या तुम जानते हो? जब मैं गाँव से बाहर जाता हूँ तो होटल के टुकड़ों पर गुजारा करता हूँ और जब गाँव में होता हूँ तो कभी मेस में खाना नहीं खाता!'
जब मैंने अपने अंतिम शब्द कहे, तो मुझे एहसास हुआ कि मैंने न केवल इस जीवन की परेशानियों को साझा किया, बल्कि साथ ही साथ, मुझे अपनी भाभी के लिए एक तरह का सहारा भी मिला, जिसने उनके मन में अपनेपन की भावना पैदा की।
लेकिन दूसरी बार हंसते हुए उसने कहा, 'पैसे वाले लोग तो खाने का इंतजाम कर ही लेते हैं! पुराण सुनने के बाद मैं क्या करूं?'
यह उसके लिए एक करारा झटका जैसा था; लेकिन फिर भी वह हार नहीं मानना चाहता था।

मैंने फैसला कर लिया है। मुझे कई महिलाओं के साथ प्रेम और झगड़ों का अनुभव है, इसलिए मैं आपकी सहायता के लिए यहाँ हूँ।
इस मामले में उनका आत्मविश्वास प्रबल था। सभी छात्र एक जैसे थे, सिवाय इसके कि...
कई वयस्क महिलाओं ने भी कला के प्रति उनके आकर्षण के कारण उनसे संबंध बनाए। हर महिला की एक ही शिकायत थी, 'मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ, लेकिन तुम हमेशा मेरे साथ छेड़छाड़ करते रहते हो!' एक वयस्क महिला तो यहाँ तक कह गई, 'मैं अपने बच्चों और पति को छोड़ दूँगी! अगर तुम मेरे साथ छेड़छाड़ नहीं करोगे, तो मैं कह दूँगी कि तुम्हारा प्यार झूठा है!' ऐसी स्थितियाँ कई कठिन परिस्थितियों में उत्पन्न हुईं।
वह इस चंगुल से सुरक्षित रूप से निकलने की कला जानता था, ताकि महिला और खुद को कोई चोट न पहुंचे।
वह उठा और उसके पास गया। दोनों लाठियाँ पकड़े हुए उसने कहा, ‘रामी, मुझ पर भरोसा रखो! इस बार जो हुआ सो हुआ। अगली बार मैं तुमसे ही विवाह करूँगा! मैं अंबा भवानी के सामने शपथ लेता हूँ कि तुम मेरी पत्नी बनोगी! इसके बाद मैं तुम्हें हर महीने पाँच हज़ार रुपये दूँगा। आज से लोगों का मज़ाक उड़ाना बंद करो।’ यह कहकर उसने उसके होठों पर चुंबन किया।
उसने उसके कांपने को महसूस किया और वहीं स्थिर खड़ा रहा। कांपते हुए भी उसे लगा कि वह उससे अधिक शक्तिशाली है। उसकी आँखों में आग सी लग गई थी। उसने उन्हें पानी से भर लिया। फिर भी आग शांत नहीं हुई। हालांकि वह अंदर से रो रहा था, उसका चेहरा कठोर था। उसे लगा जैसे किसी दूसरी शक्ति ने उस पर प्रहार किया हो।
“क्या मैं अगली बार तुमसे शादी करूँगी? देखो! अंबा भवानी ने इस मंदिर में तुम्हारे द्वारा बाँधी गई गाँठ को न तोड़ने की प्रतिज्ञा के रूप में सुरक्षित रखा है! अगर मैं यहाँ सिर झुकाकर भी आऊँ, तो भी मैं तुम्हारी पत्नी नहीं बनूँगी! मैंने अंबा भवानी से ऐसा कभी नहीं कहा! स्त्री का विवाह एक बड़ा अवसर होता है।”
अगर आप चाहें तो गोरे साहब की पत्नी की माला पहनें, अन्यथा किसी महिला की माला पहनें।
मुझे यह नहीं चाहिए!

वह असमंजस में था। उसने कुछ महिलाओं को यह वादा करके मना लिया था कि वह आगे कोई अपराध नहीं करेगा। क्या यह गोरे साहब से लड़ाई नहीं है?
वह झट से हंस पड़ा, 'सच बताओ! तुम इस गोरे साहब से कितने सालों से जुड़े हो? मुझे भी थोड़ा-बहुत पता है!'
‘तुम्हें क्या पता?’ गोरे साहब के बारे में मेरी भावनाओं ने मुझे एहसास दिलाया कि मैंने गलती की थी। लेकिन हम झूठ कहाँ बोल रहे हैं? उसने आगे कहा, क्या तुम्हें कभी उसके जैसा कोई पुरुष मिलेगा? जब मैंने उसके घर काम करना शुरू किया था तब मेरी उम्र केवल 30 वर्ष थी। अगर कोई असहाय महिला तुम्हारे पास आती, तो क्या तुम उसे ऐसे ही छोड़ देतीं? वह पुरुष इतना महान है कि एक दिन भी उसके बारे में तुम्हारे मन में ख्याल नहीं आया! इसके विपरीत, वह एक असहाय महिला है।
उन्होंने काफी पैसा खर्च किया, उनके बच्चों की शिक्षा में मदद की और उन्हें नौकरी ढूंढने में भी सहायता की।
"दिया! अगर किसी औरत को अंबा भवानी जैसा आदमी मिल जाए तो वो उससे शादी करने को कहेगी! मुझे उससे सिर्फ इतना ही लेना-देना है कि वो अपने कदमों को सम्मान देती है! लेकिन तुम उसे ऐसे कैसे समझ सकती हो! बताओ, तुम्हें क्या पता!"
उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। उसकी तीखी निगाहें उसे व्याकुल कर रही थीं।
हालांकि उसने उसकी ओर देखने से परहेज किया, फिर भी उसे महसूस हुआ कि उसकी निगाहें उसे जला रही हैं। वहां खड़े रहने में असमर्थ होकर वह वहां से भाग निकला।
उसे यह बात गहराई से महसूस हुई कि उसने अपने जीवन में ऐसी हार कभी नहीं झेली थी। कभी नहीं! उसे अतीत की सारी कड़वी घटनाएँ एक-एक करके याद आ गईं। मनोहरी ने उसे ग्रीन रूम से बाहर धकेल दिया था, वह घटना इतनी अपमानजनक नहीं थी। उस घटना को सत्रह साल बीत चुके थे। सत्रह साल। वह सालों से उसके पैर चाटता रहा था। उसके बाद भी, मनोहरी ने उसे वहीं रखा जहाँ वह चाहता था। लेकिन यह! यह तो मेरी किस्मत में नहीं था।
मैंने देवी से प्रार्थना की है कि वह इस कर विक्रेता को मेरा पति बना दे!

वह आवारा आदमी हैरान रह गया। इस बदमाश गोरे साहब के साथ कुछ तो अच्छा या बुरा होना चाहिए था! वह ज़रूर एक अमीर आदमी होगा! मुझे उम्मीद है कि वह एक बड़ा उद्योगपति और एक बड़ा आदमी बनेगा! लेकिन
तो, इस दूसरी पत्नी, इस अनोखे गायक की पत्नी के लिए, मेरा दिल कुछ इस तरह है।
उसे अपने अधिकार का प्रयोग करने का क्या हक है?
लेकिन क्या सच में उन दोनों के बीच कोई शारीरिक संबंध नहीं है? अगर होता, तो वह इतनी सामान्य अवस्था में क्यों रहती! उसकी त्वचा पर कोई क्रीम नहीं, उसके बाल बिना रंगे, उसकी गर्दन और हाथों पर सोने का एक भी कण नहीं! वह अगले जन्म के बारे में बड़बड़ा रही थी, यह शायद उसके दिल की एक इच्छा ही थी। अगर उसका दिमाग इस बात पर लगा होता, तो वह अंबा भवानी से विनती करती कि चूंकि मुझे अपने प्रतिभाशाली पति से यह जन्म नहीं मिला, तो कम से कम मुझे यह जन्म ही दे दो। मैं ऐसे स्वभाव वाली लड़की से यह जन्म कैसे पा सकती हूँ?
मुझे एक और बात याद आई। वह बड़े-बड़े श्वेत व्यापारियों और उद्योगपतियों का हिमायती है। इतना ही नहीं, वह मुंबई के सभी संगीत समारोहों की रीढ़ की हड्डी भी है! वह हर गायक और संगीतकार का ख्याल रखता है। वह संगीत के क्षेत्र में उस्ताद भी है। उसके बिना यहां किसी का भी जीना या टिके रहना नामुमकिन है। मुझे क्यों जीना चाहिए?
हम इसका क्या करें? इतना धनी व्यक्ति, इतना गायन प्रेमी! उसे क्यों लेना चाहिए?
ज़रा इसे देखो! ऐसा नहीं लगता कि वह बड़े घर की मालकिन बनना चाहती है! हालाँकि इस विचार से उसका मन शांत हुआ, लेकिन उसकी हार बहुत दर्दनाक थी। अगर हज़ारा इस सभा में आती है, तो सब लोग खड़े होकर कार्रवाई करते हैं! लेकिन उसने कर दिखाया!
सात-आठ दिन बाद, उसने बाकुले के कार्यालय में फोन किया, 'आज दोपहर मुझसे मिलने आइए। हम दो-तीन बातों पर चर्चा करना चाहते हैं। इसके अलावा, मैं आपके प्रश्न का उत्तर भी देना चाहता हूँ!'
मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं उससे क्या कहूँ। उसने कहा, 'गुस्से में भी आ जाओ। कोई लड़की अपने पिता से गुस्सा नहीं होगी, है ना?' लेकिन फिर वह मान गई और वह 5:30 बजे आने के लिए तैयार हो गया।

उसके आते ही उसने उसके लिए चाय, बिस्कुट और केले रख दिए। वह झिझक रही थी। उसने वेतन, नौकरी आदि के बारे में कुछ पूछताछ की और इधर-उधर की बातें करने लगा। उसने पूछा कि उसने गाना कहाँ से सीखा, क्या सीखा है, आदि। छोटा भाई क्या करता है?
उन्होंने बड़े विश्वास के साथ पूछताछ भी की। सब कुछ सुनने के बाद उन्होंने कहा, “मैं बिना एक पैसा लिए किसी को गाना सिखाता हूँ। यही मेरे गुरु का मत है! तो मैं अपनी बेटी को कैसे न सिखाऊँ? लेकिन मुझे शुरू से सिखाना असंभव है। तब तक आप अपने गुरु से सीखते रहिए। उसके बाद मैं आगे का कदम उठाऊँगा।” उसकी आंखें खुशी से चमक उठीं।
तब तक, मैं गुजी को आपकी मनचाही फीस दे दूंगी। उनसे कहिए कि आप मेरी बेटी हैं। उनसे कहिए कि मैंने आपको बताया है। वह आपको अच्छे से पढ़ाएंगी!
उनकी आंखों की चमक अब फीकी पड़ गई थी।
‘अविनाश को बता दो, ऐ-विदला को भी बता दो, ठीक है, मैं खुद ही हस्ताक्षर कर दूंगी। मैं खुद ही काम कर लूंगी। चलो हस्ताक्षर बड़े दफ्तर में लगा देते हैं। मुझे बस एक महीने पहले तारीख बतानी है और क्या किशन व्यापार करना चाहता है?’
क्या उसे पूंजी की जरूरत है? मैं उसे तीन-चार लाख रुपये भी दे दूंगा! लेकिन निवेश किया गया पैसा बेकार चला जाएगा।
यह उसकी ज़िम्मेदारी है कि वह न जाए। आओ और मुझसे मिलो!
लेकिन अब बाकुले की आंखों में पानी भर आया है।
उन्होंने आगे कहा, "मैं एक हफ्ते पहले बोरीवली आया था आपको यह बताने के लिए। क्या आपकी मां ने आपको यह बताया था या नहीं?"
‘मैंने मना कर दिया!’ उसके चेहरे पर हैरानी के भाव दिखाई दिए।
‘मैं तुम्हारी शादी के बारे में बात करने आई थी। जाओ, मैं शादी का सारा खर्च, शादी का तोहफा, कपड़े सब कुछ दे दूंगी। बच्चों को मेरा प्रणाम कहना।’ इस पर उसने झगड़ा शुरू कर दिया और पूछा कि मैं इतने दिनों से क्यों नहीं आई। जब मैं उसे सब कुछ बताने गई, तो उसने मुझे बोलने ही नहीं दिया। मैं हंस पड़ी – अगली बार मैं गोरे साहब से शादी करूंगी, वो तो मान भी गए हैं! ये क्या बकवास है! जो औरत सिर्फ खाना बनाती है, उसकी मदद कौन करता है? मैंने आवा राही से बात नहीं की! मैंने भी इस दुनिया में कई तरह की औरतें देखी हैं; लेकिन मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि तुम्हारी मां ऐसी होगी! किसी और से

शादी करना मेरी गलती थी, लेकिन इतने सालों में मुझे उसका नतीजा नहीं भुगतना पड़ा। तुम अविनाश को फोन करो। मैं उससे बात कर लूंगी; लेकिन इसका क्या मतलब है कि मैं अगले जन्म में उसकी पत्नी बनूंगी? क्या एक गृहस्थ विवाहित महिला ऐसी बातें करती है?

५
माँ ने उन्हें बेहद मुश्किल हालातों में पाला-पोसा और इस हालत तक पहुँचाया। हालाँकि वे इसके लिए शुक्रगुज़ार थे, लेकिन किशन और बकुला के मन में अपनी माँ के लिए कोई सम्मान नहीं था। उन पर खुद के प्रति भी ज़िम्मेदारी थी, अगर वे उसे पूरा नहीं करते, तो उनके बच्चे मुंबई जैसे महानगर में जल्द ही गुम हो जाते। इसी भावना के साथ माँ ने अपने बच्चों को अनुशासन में पाला-पोसा। वह ज़ोर देती थीं कि वे लगातार पढ़ाई करें और शाम तक घर लौट आएं। अगर वे ऐसा नहीं करते, तो वह बहुत गुस्सा हो जाती थीं। बच्चे आसानी से बात मान लेते, तब भी वह उन्हें डांटती रहती थीं।
वह इस पर हाथ भी उठाती थी। जब उसका धैर्य टूट जाता, तो वह कहती, "मैंने इसके लिए तुम्हें कितनी परेशानी दी है?"
मैं परेशान हूँ! तुम कितनी मुसीबत खड़ी कर रहे हो!' वह रोने लगता। यह रोना उन दोनों को ऐसा महसूस कराता जैसे उनका पुनर्जन्म हुआ हो।
वह बचपन से ही अपने बच्चों में गोरे साहब का भय बिठाती आ रही थी ताकि वे भटक न जाएं। जब उन्हें यह तय करना होता था कि किस स्कूल में दाखिला लेना है, हाई स्कूल में कौन से विषय पढ़ने हैं और कॉलेज में कौन सा मुख्य विषय लेना है, तो माँ हमेशा सोच-समझकर निर्णय लेती थी।
मैं उसे उसके घर ले जाया करता था। वहाँ जाकर मैं उसके चरणों में हाथ रखकर उसकी पूजा करता था।
मैं ऐसा करता, लेकिन उसके बाद बिना किसी झिझक के सुनीता को प्रणाम करता। मेरी माँ ने मुझे पहले ही निर्देश दे दिए थे कि मैं वहीं खड़ा रहूँ। साहब सीधे बात करते। फिर भी, मेरे मन में डर के सिवा कोई और भावना नहीं थी। इसके अलावा, इन दिनों ऐसी घटनाएँ केवल पाँच-छह बार ही हुई थीं। मुझे नौकरी मिल गई।
उस समय, उसकी माँ उसे उसके घर ले गई थी, बस इतना ही। उसके बाद उनकी मुलाकात नहीं हुई। बी.कॉम के बाद, उसने ही उसे टाइपिंग और कंप्यूटर सीखने की सलाह

ठीक से सीख लिया तो तुम अपना खुद का दफ्तर भी खोल पाओगे। बाद में चाहो तो सीए कर सकते हो, वरना मैं तुम्हें नौकरी दिलवा दूँगा।’ उन्होंने कहा था। यह नौकरी भी
उन्होंने ही उन्हें यह दिया था। उनके मन में भी गोरे साहब के प्रति भय और असंतोष मौजूद था।
पहले ऐसा होता था। यहां तक कि काम पर भी, जब मैं गुस्से में होता था, तो मेरा बॉस गोरे साहब का नाम लेता था।
अब उन दोनों के मन में सारी बातें बदल गईं। तुम्हारे पिता के व्यवहार में इन सभी दर्दनाक बातों के पीछे छिपे समर्थन का भाव दिखने लगा। तुम्हारी माँ भी क्रोधित हो गईं। इस बार तो उन्होंने शादी के लिए लाखों रुपये भेजे और अब तुम्हारी शादी के लिए घर आए पति को ठुकराकर गोरे साहब की तारीफ कर रहे हैं और कह रहे हैं कि अगली शादी तुमसे ही करेंगे! भला भला भला कोई ईमानदार औरत ऐसी बात कैसे कह सकती है?
उस दिन जब वह घर आया तो बकुला ने अपनी माँ से पूछा, "क्या पिताजी घर आ गए हैं?"
"नहीं? मेरे पिताजी शादी और उससे जुड़ी सारी ज़िम्मेदारी खुद उठाने के लिए घर आए थे। आपने यह बात क्यों छुपाई?"
मां अवाक रह गई। उसे कोई जवाब सूझ नहीं रहा था। फिर उसने गुस्से से पूछा, 'क्या तुम उससे मिलने गए थे?'
‘पूरा देश उनके चरणों की धूल झाड़ रहा है! और आपने उनका ज़िक्र सिर्फ़ एक बार किया? अगर आपने यह बात छुपाई है, तो और क्या-क्या छुपाया है हमसे? मैं भविष्य में गोरे साहब की पत्नी बनने वाली हूँ! मेरा उनसे क्या रिश्ता है? आप भविष्य में मेरे बारे में बात करते समय मेरा ज़िक्र कैसे कर सकते हैं? शायद हमारे पिता ने हमें आपकी इस बकवास की वजह से ही छोड़ा हो!’ बोलते समय उन्होंने अपनी ज़बान पर काबू रखा।
हालांकि, दुर्घटना का परिणाम पहले ही सामने आ चुका था। उसकी माँ पूरी तरह बेहोश हो गई थी। उसका संतुलन बिगड़ गया। उसने दीवार का सहारा लिया। उसके पैरों के नीचे की ज़मीन हिलती हुई महसूस हो रही थी। उसे कुछ साल पहले आए भूकंप की याद आई; लेकिन यह भूकंप नहीं था। वह अचानक ज़मीन पर बैठ गई। अपनी गलती का एहसास होने पर बकुला अपने कमरे में गई और दरवाज़ा बंद कर लिया।

कुछ समय बाद, माँ ने खुद को संभाला। उन्हें विश्वास हो गया कि वे अपने पैरों पर खड़ी हो सकती हैं और नंगे पैर घर से बाहर निकल गईं। सन्याकल नदी की भीड़ भरी सड़कों को पार करते हुए वे अंबा भवानी मंदिर पहुँचीं। वहाँ भी लोगों की भीड़ थी। वे समाधि स्थल पर आईं। देवी को प्रणाम करने के बाद, उन्होंने देवी की मूर्ति को अपने हाथों में लिया और आँखें बंद कर लीं। उन्होंने मन ही मन प्रार्थना की, ‘माँ, यदि मैंने कोई गलती की है, तो अपने हाथ में इस छुरी से मेरा सिर उड़ा दो। और यदि मैंने कोई गलती नहीं की है, तो मुझ पर झूठे आरोप लगाने वालों की जीभ काट दो! भविष्य में अच्छे पति के लिए आपसे प्रार्थना करने में क्या पाप है?’
फिर वह हंस पड़ी, ‘अगर मैं, गोरे साहब, आगे आकर अपने पति को स्वीकार कर लेती, तो आप इसमें कुछ भी गलत नहीं कहते। अब बताइए, क्या मैंने कुछ गलत किया है!’ उसकी आंखें बंद थीं। यह सोचना भी उसके मन में नहीं आया कि यह कोई पाप है। पुजारी ने प्रसाद के रूप में उसके माथे पर धूप लगाई। जैसे ही उसने हाथ बढ़ाया, उसने अपनी हथेली पर एक ग्राम हरब के बराबर धूप लेकर घर चली गई। मंदिर से निकलते समय उसके कदम दृढ़ थे और वह अपने घर की ओर चल पड़ी।
वह सीढ़ियाँ चढ़कर घर पहुँची, दरवाजा बंद था। घंटी बजाते ही उसे किशन की आवाज सुनाई दी, "कौन है?"
‘मैं!’ आवाज सुनकर उसने दरवाजा खोला। अंदर आते ही उसने दरवाजा बंद कर दिया। वह शायद अभी-अभी बाहर आया था। उसने अभी भी जींस और जैकेट पहनी हुई थी। उसके ऊपर रखे बक्से का ढक्कन खुला हुआ था। वह उसमें सौ रुपये के नोटों के बंडल गिन रहा था। उसे एहसास हुआ कि हर बंडल में दस हजार रुपये होंगे। वह बंडल गिन रहा था। यह सोचकर कि यह काम का पैसा होगा, वह शायद इसकी तैयारी कर रहा होगा, उसने चारों ओर देखा। बकुला अपने कमरे में पलंग पर बैठी डफली बजा रही थी। माथे पर अगरबत्ती लगाते हुए उसकी माँ ने कहा, ‘मैं अंबा भवानी के पास गई थी। उन्होंने कहा कि मेरे व्यवहार में कोई पाप नहीं है। तुम्हारी जीभ काट दी जाएगी! मैंने तुम्हें इतना पाला-पोसा, पढ़ाया-लिखाया, तुम्हें अपने पैरों पर खड़ा किया, और तुम ऐसे आरोप लगा रही हो?’
उसकी आवाज़ अचानक तेज़ हो गई थी। दरवाज़ा बंद होने के बावजूद आवाज़ बाहर निकल रही थी। बाकुले ने अपनी माँ की तरफ देखा। उसके माथे पर पसीने की गंध और चेहरे के भाव उसे उग्र दिखा रहे थे। हालाँकि उसे भगवान पर ज़्यादा भरोसा नहीं था, फिर भी उसे थोड़ा डर लगा।

इस समय, कमरे के दरवाजे पर खड़ा किशन सोचने लगा, "माँ, क्या हुआ?"
उसे आत्मविश्वास से पूछताछ करते देख, उसकी माँ को भी इस मामले में भरोसा हो गया। इसलिए
सन्याकल की घटना सुनाई गई। किशन अपनी बहन से बहस करने लगा, “क्या तुम उसे भगवान समझती हो सिर्फ इसलिए कि वह उगाचा गा के प्रति दीवाना है? क्या तुम भूल गई हो कि तुम्हारी माँ ने तुम्हें पाला-पोसा और वह जन्म देते ही भाग गया? मैं भी आज सन्याकल में उससे व्यापार के लिए दो लाख रुपये लाया था। उसने मुझे यह भी बताया कि तुम्हारी माँ ऐसा-ऐसा कहती है! लेकिन मैं घर जाकर अपनी माँ से नहीं पूछा! क्या तुम सिर्फ बी.कॉम करके खुद को बहुत बुद्धिमान समझती हो?”
मां को अच्छा लगा। कम से कम उसका बेटा तो उसके साथ था! लेकिन कुछ तो गड़बड़ थी।
गे या या के शब्दों का अर्थ समझ गया। या या ने उसकी ओर मुड़कर कहा, 'क्या तुमने पैसे मांगने के लिए हाथ फैलाए थे? क्या तुम्हारे अंदर कोई आत्मसम्मान है? इसके लिए तुम्हें इतना सिखाने और पालने-पोसने की क्या ज़रूरत थी? चलो! आओ, आओ, मुझे पैसे दो!'
किशन चुप रहा। उसने कहा, “देखो माँ, इस बात पर तुम्हारा मुझसे नाराज़ होना स्वाभाविक है; लेकिन मैं वो पैसा क्यों लौटाऊँ जो मुझे मिला है? तुमने तो मेरा गुस्सा कई दिनों से और बढ़ा दिया है। मुझे पता ही नहीं था कि उसने अब तक कुछ किया ही नहीं! तुम्हें पता है उसने अपनी दूसरी पत्नी और इन बच्चों को कितना कुछ दिया है! वो लड़का ब्रैबन स्टेडियम में क्रिकेट खेलता है! तुम्हें पता ही नहीं कि उसका कितना बड़ा शौक है। उसने यहाँ बी.ई. तक पढ़ाई की है और आगे की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड जा रहा है! तुमने मुझे एक बार दो लाख रुपये दिए थे! मैं उसे क्यों लौटाऊँ? जो लोग आयताकार खाते हैं उन्हें निगलते रहना चाहिए और जो काटते हैं उन्हें काटते रहना चाहिए, इसका क्या मतलब है? जिन लड़कियों ने ताश के पत्ते रखे हैं उन्हें खूब मज़ा आना चाहिए और इस पत्नी और इन बच्चों को क्यों निर्वासित किया जाए?”
उसे कोई जवाब सूझ नहीं रहा था। उसी क्षण, 'प्रतिरक्षित स्त्री' के इशारे से उसे थोड़ा सुकून मिला। फिर उसने कहा, 'मुझे भी देवी के प्रसाद की सुगंध सूंघने दीजिए! मेरा व्यवसाय फले-फूले!' उसने प्रणाम किया। उसने सुगंध उसके माथे पर लगाई।

लेकिन जब वह रात को बिस्तर पर लेटी, तो उसे नींद नहीं आई। उसका मन विरोधाभासी विचारों से भरा हुआ था। क्या इस पैसे से पनप रहे व्यवसाय को आशीर्वाद देना चाहिए, क्या उसे मंज़ूरी देनी चाहिए! दो लाख रुपये जुटाने की ताकत उसके पास नहीं थी, इसलिए वह उस पैसे को छोड़ नहीं सकती थी। यह सवाल भी उसे परेशान करने लगा कि क्या उसके बच्चे सादा जीवन जिएं जबकि उसके बच्चे ऐशो-आराम से जी रहे हैं। चाहे वह कितना भी सोच ले, अपने पिता से पैसे लेकर अपना जीवन बेहतर बनाना सही नहीं था, वह इसी निष्कर्ष पर पहुंची। उन दोनों के लिए वर्तमान को स्वीकार करके अपने जीवन में आगे बढ़ने में क्या समस्या थी? शुरुआत में थोड़ी मुश्किल हो सकती है; लेकिन अब, क्या वे दोनों भूखे नहीं मर रहे हैं? उसे अपने दोनों बच्चों पर गुस्सा आया। हमने इतने सालों तक इसके लिए इतनी मेहनत की और ये बच्चे हमें छोड़कर जा रहे हैं! वह रोना चाहती थी; लेकिन उसने खुद को रोक लिया। इन बच्चों के सामने आंखें घुमाकर अपनी कमजोरी क्यों दिखा रही है?
लेकिन दो दिनों के भीतर ही उसे यह महसूस होने लगा कि बच्चों को उससे छीनकर वह उससे बदला ले रही है! उसे लगने लगा कि वह इस दुनिया में अकेली है। सुबह वह रोज़ से जल्दी काम पर चली गई और सुनीतिबाई के स्नान करने का मौका पाकर उसने गोरे साहब से कहा, 'मैं आपसे थोड़ी देर बात करना चाहती हूँ।' उन्होंने कहा, 'सुबह 8:00 बजे ऑफिस आ जाना।'
अगले दिन, पदाधिकारी ने सब कुछ सुना। वह उसके विचारों को सुनकर आश्चर्यचकित रह गया। वह उसकी जानकारी के बिना उसकी मदद कर रहा था। एक बार, जब उसकी पत्नी विदेश में थी, तब भी वह उसके प्रति आकर्षित हुआ था। इस बार, अंबा भवानी
हमने बताया था कि हम माता-पिता बनने वाले हैं और हम उस भावना का सम्मान करते हैं;
लेकिन यह सुनकर उसने अंबा भवानी से प्रार्थना की कि वह उसे अगले जन्म में अपनी पत्नी बना ले।
उसे अजीब सा लगा। उसे याद आया – हमने उनकी खुशियों और दुखों के बारे में जितना हो सके सुना था।
वह मदद तो करता है, लेकिन अनजाने में उसने कभी प्रेम की बात नहीं की। उसके मन में इस तरह की भावना नहीं है। इस एक घटना के बाद, उसके मन में केवल करुणा ही बची है। उसके मन में इच्छा भी है, लेकिन उतनी प्रबल नहीं। उसने अंबा

भवानी से अगले जन्म में पत्नी बनने का भी अनुरोध किया है! आचया से उसका हृदय प्रेम से भर गया था, लेकिन उसने इसे उसे दिखाया नहीं।
उन्होंने उसे सुझाव दिया, 'तुम्हारे मन में जो भी विचार हो, तुम्हें अंबा भवानी से कोई संबंध नहीं रखना चाहिए।'
"यह एक अनुरोध है; लेकिन अगर आप यह बात स्पष्ट रूप से कहेंगी तो क्या पति नाराज नहीं हो जाएगा? आप यहाँ इस बारे में व्यर्थ में बात करने क्यों आई हैं?"
वह झट से हंस पड़ी, 'लेकिन वह मेरे पास इस तरह आकर कैसे कह सकता है कि अब से मैं तुम्हें हर महीने पांच हजार रुपये दूंगा और तुम अपनी खाना बनाने की नौकरी छोड़ दोगी? क्या मुझे गुस्सा नहीं आएगा?'
इसलिए मैं वहां से चला गया।
"लेकिन आपने सोचा होगा कि उसका मुझसे और आपसे कुछ लेना-देना है, है ना?" वह चार लोगों के सामने कुछ भी कहने का यह मौका नहीं छोड़ेगा! क्या इससे मेरी प्रतिष्ठा धूमिल नहीं होगी?"
वह गंभीर हो गई। उसे इस बात का एहसास हो गया कि उसने बहुत बड़ी गलती कर दी है। उसकी आँखों में आंसू भर आए।
वे हँसे और बोले, 'जाने दो! ये तो ऐसे लोग हैं जो दिखावा करते हैं कि उन्हें इस बात की परवाह नहीं कि वे क्या कहते हैं। इसके बाद, इस बकवास को भूल जाओ।' उसने उसे घर में घट रही हर बात विस्तार से बताई। उसने सब कुछ सुना और कहा, 'हम अपनी भावनाओं को केवल अपने उन बच्चों के सामने ही व्यक्त कर सकते हैं जो बालिग हो चुके हैं।'
आप उन्हें इस तरह से नहीं बदल सकते, है ना! इस बात को ध्यान में रखें। सभी लोग।
"कोई बात दिमाग में नहीं आती। अकेले रहने की आदत डाल लो।"

६
शाम को जब वह घर लौटी तो साढ़े सात बज रहे थे। बकुला घर आ चुकी थी और उसका गाना बज रहा था। जैसे ही उसने दरवाजा खोला, उसने अपनी माँ से पूछा, 'आप इतनी देर से क्यों आई हैं?'
एक पल के लिए मेरी माँ ने सोचा, "क्या उसे पता नहीं कि मैं कहाँ गई थी?" बिना कुछ कहे,
वह बाथरूम में गया, अपने पैर धोए और रसोई में चला गया। उसे गुस्सा आ गया। मैं सबसे पहले घर आई; लेकिन उसने कुछ भी नहीं किया! वो चायदानी लेकर अकेली बैठी है! चाय के बर्तन भी नहीं धुले हैं। बर्तन धोना, सब्ज़ियाँ काटना – सब कुछ मुझे खुद करना पड़ता है। मुझे गुस्सा आ गया। मुझे पैसे कमाने हैं, मुझे तैयार होना है और उन्हें पहनना है! इसका क्या मतलब है?
वह गुस्से से बकुला के छोटे से कमरे के दरवाजे पर आई। बकुला पलंग पर बैठी डफली बजा रही थी। उसके पीछे दीवार पर कांच के फ्रेम में एक बड़ी सी तस्वीर लगी थी। एक पल के लिए वह समझ नहीं पाई कि यह किसकी है। उसने गौर से देखा तो पाया कि यह बकुला के पिता की तस्वीर थी! ऐसा लग रहा था जैसे यह तस्वीर तब ली गई हो जब वे गा रहे थे। वे आज सुबह यहाँ नहीं थे। तुम इसे क्यों नहीं लाईं? ऐसा लग रहा है जैसे इसे आज ही लाया गया हो!
जैसे ही उसने तस्वीर देखी, उसके मन में सवाल रह गया। उसने उन दोनों को गुस्से भरी नज़र से देखा और मुँह फेर लिया। रसोई में पहुँचकर उसने फिर सोचा, उन्हें खाना क्यों परोसे? फिर भी उसने बैंगन और आलू धोना शुरू कर दिया। जब वह टुकड़ों को कटोरे में डाल रही थी, तभी बकुला आई और बोली, 'तुम तस्वीर को इतनी गुस्से से क्यों देख रही थी? तुम्हारा गुस्सा बेकाबू हो गया है और गाँव का माहौल बिगड़ता जा रहा है! मुझे पता है तुम अपने पिता से नाराज़ हो; लेकिन क्या?'
वे छात्रों को सीधे पढ़ाते भी नहीं हैं, बल्कि कुछ छात्रों की तस्वीरें दिखाते हुए गाना गाते हैं।
वे पढ़ाते हैं। मैं उनकी बेटी हूँ! अगर मैं फोटो रख लूँ तो इसमें क्या गलत है? अगर आपको इतना गुस्सा है तो इस कमरे में मत आइए!
बिना कुछ कहे, माँ ने सब्ज़ियों में नमक और मसाले डाले। फिर हँसते हुए बोली, "जो लोग गाना सीख रहे हैं, उनकी तस्वीरें रख लेते हैं, नहीं तो

मूर्तियाँ लगा देते हैं! लेकिन मैं किसी ऐसे आदमी की तस्वीर अपने घर में नहीं लगने दूँगी जो गाने में मंगलसूत्र बाँध रहा हो और अपने दो बच्चों के साथ जन्मदिन मनाने जा रहा हो! ये मेरा घर है! अगर शादी के बाद इस घर की दीवारों पर सौ-सौ तस्वीरें लगानी हों, तो मैं इस बारे में सोच भी नहीं सकती!"
लड़की ने आत्मविश्वास से हंसते हुए कहा, "अगर तुम गुस्सा हो जाओ तो मैं गुस्सा नहीं होऊंगी। यह घर किसके नाम पर है? यह रसीद किसके नाम पर फटी है? क्या यह तुम्हारे नाम पर है या तुम्हारे पिता के नाम पर?"
"क्या यह उसका घर है?" वह इस सवाल से असमंजस में पड़ गई।
‘तो? आपका? क्या रसीद आपके नाम पर है?’
उसे ऐसा नहीं लगता था; लेकिन वह नियमित रूप से किराया चुका रही थी।
‘यह घर तुम्हारे पिता के नाम पर है। इसे अपने पास रखो! बिना सुरक्षा घेरा बनाए वे घर में प्रवेश नहीं कर पाएंगे। जरूरत पड़ने पर वे तुम्हें घर से बाहर निकाल सकते हैं!’
उसे अपने पैरों के नीचे ज़मीन हिलती हुई महसूस हुई। उसने रसोई की दीवार का सहारा लिया। लड़की ने कहा, 'अगर आप चाहें तो फोटो को मेरे कमरे के बजाय बाहर हॉल में रख सकते हैं। मैंने ऐसा इसलिए नहीं किया क्योंकि मैं आपको परेशान नहीं करना चाहती थी; लेकिन
अगर आप उनका सम्मान नहीं करेंगे, तो मैं चुपचाप नहीं बैठूंगा!
माँ ने कुछ नहीं कहा। वह उठा और सारा खाना बनाने लगा। उसने थालियाँ खुली रखीं और चिल्लाकर कहा, 'खाना तैयार है। अगर चाहो तो ले लो!' बकुला, जो डफली बजाए बिना बातें कर रही थी, ने एक बड़ी थाली उठाई और उसे बाहर ले गई। माँ ने न खाने का फैसला किया था; लेकिन बकुला को यह पसंद नहीं आया। माँ उसके पास आई और हँसते हुए बोली, 'वे मुझे बाहर निकाल सकते हैं, तुम्हें नहीं लगता? क्या यह तुम्हारा विचार है या उसने तुम्हें बताया?'
इस सवाल के बारे में दो-तीन बार सोचने के बाद, बकुला के चेहरे पर एक अजीब सी मुस्कान आ गई, "तुम मुझे अभी क्यों मार रहे हो?"
‘मुझे बताओ! मुझे सच बताओ! अंबा भवानी यहाँ हैं। झूठे की जीभ काट दी जाएगी!’ बकुला नाराज़ थी। उसे अंबा भवानी पर पूरा भरोसा नहीं था। फिर भी, झूठ बोलने और यह कहने की बजाय कि 'तुम्हारी जीभ टूट जाएगी', उसने चपाती का एक और निवाला खाना आसान समझा। फिर उसने धीरे से कहा, 'उन्होंने तुम्हें घर से

निकालने की बात नहीं उठाई। उन्होंने बस इतना कहा, मैंने इस घर की पगड़ी चुका दी है, घर मेरे नाम पर है - अगर मैं नहीं गई, तो मकान मालिक तुम्हें घर खाली करने के लिए कहेगा!'
वह रसोई में वापस गई। उसने चावल और चावल के पकौड़े एक थाली में रखे और उसे दूसरी थाली से ढककर बाहर आ गई। बकुला अपने कमरे में बैठी थी। वह सिर के नीचे तकिया रखकर चटाई पर लेट गई। रात के कुछ समय बाद, उसे नींद आ गई।
सुबह उन दोनों ने अपने बर्तनों में खाना भर लिया; लेकिन उन्होंने कुछ नहीं खाया। उन्होंने कभी ध्यान नहीं दिया कि उन्होंने खाया या नहीं, इसलिए उन्हें अभी भी नहीं पता कि उन्होंने खाया या नहीं! अगर वे साहब के घर दोपहर के भोजन तक भूखे रहते हैं, तो वे मर नहीं जाएँगे।
वेशा ने बर्तन धोकर फर्श पर रख दिए। 'मेरे पास उसे घर से बाहर निकालने की शक्ति है।'
क्या उसने ऐसा कहा था? वह गुस्से से आग बबूला था। उसने फैसला किया कि वह इस घर में बना खाना नहीं खाएगा। वह दोपहर में गोरे साहब के घर से जो भी खाना मिलेगा, उसी से अपना गुजारा करेगा।
ये बात बच्चों को नहीं पता होनी चाहिए। वे जानना भी नहीं चाहते थे। वे तो उसकी शोहरत और गाने देखना चाहते हैं और वह तो बस अपना पैसा चाहता है! ये बच्चे हमारे दुख और अपमान को कैसे जान सकते हैं?
एक सप्ताह इसी तरह बीत गया। सुबह जब रामकुमारी गोरे साहब के घर पहुँची तो सुनीताई वहाँ नहीं थीं। उसने सोचा कि वह गणेश मंदिर गई होंगी। यह सोचकर गोरे साहब ने सोचा, 'क्या पिछले आठ दिनों से तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है? आज तुमसे बात करने के बाद मुझे पता चला कि तुम्हें कुछ परेशानी है। क्या बात है?'
वह फूट-फूटकर रोने लगी। उसने कहा, ‘रो मत। कल दफ्तर आना। बात करते हैं।’ और वह अपने कमरे में चला गया। उसने भी बिना किसी प्रशिक्षण के रसोई में काम करना शुरू कर दिया। सुनीताई पाँच मिनट में आ गई।
अगले दिन शाम को जब वह दफ्तर आया, तो उसने उसे उस लड़की से हुई बातचीत और घर पर कुछ न खाने के अपने फैसले के बारे में बताया, और वह उसके इस रवैये से बहुत प्रभावित हुई। एक हफ्ते के अंदर ही वह दुबली हो गई। उसका चेहरा धंस गया था। उसके गाल पिचक गए थे।

वह हँसते हुए बोला, 'किराया कौन दे रहा है? तुम। मुंबई में जो किराया देता है, घर का मालिक वही होता है। तुम ही तो यह आमदनी कमाते हो। फिर भूखे क्यों रहते हो?'
लेकिन घर तो आपके नाम पर है, है ना?
‘आप इतने सालों से किसके नाम पर किराया चुका रहे हैं?’
‘मोहनलाल इसे इसी नाम से देता है। अगर वह किसी और नाम से बाजार जाता, तो मकान मालिक उसे इसी कारण से घर से निकाल देता।’
‘यह सच नहीं है। अगर मैंने देखा कि किरायेदार के जाने के बाद उसकी पत्नी और बच्चे भी अंदर आ गए तो क्या होगा!’ बोलते समय वह हिचकिचाया।
'जहां तक मुझे पता है, मैं उसकी पत्नी भी नहीं हूँ!'
वे दोनों विचार-विमर्श कर रहे थे। यह सोचकर कि अलग होना ठीक नहीं है, वह चुप रही। कुछ देर तक सन्नाटा रहा, फिर उसने कहा, ‘मैंने इसके बारे में इतना कभी नहीं सोचा; लेकिन मुझे लगता है कि अब सही समय है। जैसा मैं कहता हूँ वैसा करो। मैं एक समझदार वकील से बात करूँगा।’ उसने दावा किया, ‘तुमने मुझे तब छोड़ दिया जब मेरे दो बच्चे तुम्हारे बिना हैं, तुमने मुझे कोई आर्थिक मदद नहीं दी, मैंने बच्चों का पालन-पोषण तुम्हारे बिना किया है। तुम्हें वह आर्थिक ज़िम्मेदारी उठानी चाहिए जो तुम्हारे लायक जीवन जीने के लिए ज़रूरी है। तुम्हें पिछले खर्चों का भी भुगतान करना चाहिए, इस बच्चे के खर्चों का भी।’ उसने आगे कहा, ‘अगर वह ‘यह मेरा रिश्ता नहीं है’ वाली बात हटा देता है, तो तुम दोनों बच्चों और इस बच्चे की भी कानूनी मान्यता की मांग कर सकती हो। अगर इन बच्चों को उसका मान लिया जाता है, तो दूसरे बच्चे को भी मान लिया जाएगा। वकील मान जाएगा। एक बार तुम्हारा लोन मंज़ूर हो जाए, तो वह दूसरे लोन के लिए भी आवेदन कर सकता है। वह इन सब बातों से डर जाएगा और तुम्हारी मदद के लिए आएगा। इस समय, तुम एक अनुबंध बनाकर मामला आगे बढ़ा सकती हो कि मैं हर महीने दस हज़ार रुपये लूँगा।’ अगर आप हर महीने इस झंझट से बचना चाहते हैं, तो आप कुल मिलाकर दस से पंद्रह लाख रुपये ले सकते हैं। अगर आप पंद्रह लाख रुपये बैंक में रखते हैं, तो आपको पंद्रह हजार रुपये ब्याज के रूप में मिलेंगे। मेरी बात सुनिए! मैं आपको एक हफ्ते के अंदर विकला का उपहार दूंगा।
उसका चेहरा चमक उठा, "क्या ऐसा किया जा सकता है?"

‘चिंता मत करो। मैं तुम्हें एक ऐसा वकील दूंगा जो कुछ नहीं कर पाएगा। चाहे बात गति की ही क्यों न हो, मैं भी एक वकील हूँ! इसीलिए मैं तुम्हें इतनी निश्चितता से यह बात कह रहा हूँ। आज से ठीक से खाना खाओ। यही तुम्हारा हक है!’
‘यहूदी!’
और दूसरी बात, सुबह जल्दी घर आ जाना। अब मुझे बताओ तुम्हारी पत्नी के सामने क्या हुआ, मैं तुम्हें सब कुछ बता दूंगा। क्योंकि जब मामला शुरू होगा, आपको बार-बार एक-दूसरे से बात करनी होगी। हर बार यहाँ आना असंभव है। बच्चों को ऐसी कोई बात मत बताना!

७
इस बातचीत के बाद, तीसरे दिन वे दिल्ली चले गए। सुप्रीम कोर्ट में लंबित एक मामले के सिलसिले में उन्हें चार दिन रुकना पड़ा। शाम को वे होटल लौटे, थोड़ा आराम किया और फिर ‘गुट्टा एंड कंपनी’ के दफ्तर गए ताकि विरोधी वकील और जजों द्वारा उस दिन पूछे जा रहे सवालों के जवाब तैयार कर सकें। जब वे होटल लौटे तब तक आधी रात हो चुकी थी। फिर भी, उनके और मोहनलाल के बीच चल रहे उस मामले के विचार उनके मन के किसी कोने में गूंज रहे थे।
वो एक महान गायक हैं! वो एक किंवदंती हैं! ये कहना नामुमकिन है कि वो कब छलांग लगाएंगे, कब खुद को बचाएंगे, कब कोई चौंकाने वाली स्थिति पैदा करेंगे या कब अचानक पलट जाएंगे! उनके पास हज़ारों ऐसे हुनर, ढाँचे और बुनने की कला है जो किसी और गायक के पास नहीं है। उनकी उम्र 61 साल है! वो चाहे जिस भी परिवार से हों, भारत की नई पीढ़ी उनके बिना आगे नहीं बढ़ पाएगी, उन्होंने अपना एक अलग मुकाम बना लिया है! कोई भी नया गायक
मैं इस प्रभाव से खुद को बचा नहीं सकता! कितनी बड़ी प्रतिभा है!
लोगों को नैतिकता के बुनियादी नियमों का पालन क्यों नहीं करना चाहिए? क्या सभी कलाकार ऐसे ही होते हैं? या प्रदर्शन कलाएँ ऐसी ही होती हैं? भले ही हम यह कहें कि कलाकारों के निजी जीवन में दखल देने की कोई ज़रूरत नहीं है, फिर भी क्या उनके निजी जीवन की भी कुछ सीमाएँ नहीं होनी चाहिए?
लेकिन इन सब के बावजूद, इस गाने को लेकर मोहनलाल के प्रति आपका सम्मान ज़रा भी कम नहीं हुआ! ऐसा कैसे? गोरे साहब हैरान रह गए। एक साल पहले वो शिकायत लेकर आए थे कि उनकी दूसरी पत्नी उनके गानों की कैसेट बेच रही है। हमने उन्हें समाधान सुझाया, फिर भी वो वापस नहीं आए। एक ऐसा आदमी जिसके जीवन में इतनी गंभीर समस्याएँ हैं कि वो उन्हें संभाल नहीं पाता। क्या सभी कलाकार ऐसे ही होते हैं? किसी कारणवश, उसे सबक सिखाना चाहिए! जब वो बेबस था, तब उसने एक बेबस लड़की से शादी की, दो बच्चे होने के बाद उसे छोड़ दिया। बाद में भी, हर साल तीस-चालीस लाख रुपये कमाने के बावजूद, उसने उसे आर्थिक सहायता देने की ज़िम्मेदारी नहीं उठाई।
महिलाओं को यही तो पसंद है! वे अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए चांग के घर कैसे जाएंगी?

इसके बारे में क्या? ये तो कुछ भी नहीं! उसने कुछ तो सीखा होगा! लेकिन असली लोग चुपचाप कोने में खड़े नहीं रहते! वे बाहर जाकर समझौता करते हैं, चार पैसे देते हैं और अपनी जान बचाते हैं। इसके बदले उन्हें दो कमरों का फ्लैट और कम से कम दस लाख रुपये मिलते हैं।
उन्हें सुला देना चाहिए।
हालांकि मैंने इस मामले के संबंध में दिल्ली से गुटेल को फोन करने का इरादा किया था, लेकिन समय की कमी के कारण ऐसा नहीं कर सका। इसके अलावा, यह कोई ऐसा जरूरी मामला नहीं था जिसे इतनी जल्दी निपटाने की आवश्यकता हो। पांचवें दिन सुबह वे विमान से मुंबई पहुंचे; लेकिन उन्हें आवश्यक दस्तावेज प्राप्त करने और तुरंत रवाना होने की जल्दी थी। हालांकि रामकुमारी काम पर आई थी, लेकिन उसने संपर्क करने के लिए कोई संपर्क नंबर नहीं छोड़ा था, इसलिए उससे बात करने का कोई कारण नहीं था।
अगली दोपहर, रामकुमारी ने दफ्तर में फोन किया, "क्या आपने विकल से बात की? मैंने उसे यह बताने के लिए फोन किया था कि वह बात न करे।"
‘क्यों? क्या हुआ?’
"मैं तुमसे बाद में मिलने आऊंगी," उसने यही कहा। बस इतना ही।
"कुछ बोलिए, चाची?"
नहीं! ऐसा कुछ नहीं है। इसके विपरीत, वे यह भी कह रहे हैं कि वे मुकदमा दर्ज करेंगे और पैसे वसूल करेंगे। फिर भी, मैं सिर्फ आपसे बात करना चाहता हूँ। ‘ठीक है। सुबह छह बजे आना।’
ठीक छह बज रहे थे! उसके हाथ में घड़ी नहीं थी। लेकिन वह समय से पहले ही आ गई और पास ही कहीं खड़ी होकर किसी के समय बताने का इंतज़ार करने लगी, ताकि वह ठीक छह बजे पहुँच सके।
उसे पता था। इसमें सिर्फ दो या तीन मिनट लगेंगे। वो भी घड़ी की निगरानी करने वालों की वजह से।
तय कार्यक्रम के अनुसार, वह हमेशा की तरह आई और उसके सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई। उसके चेहरे के भाव सामान्य नहीं थे। वह थोड़ी घबराई हुई और गंभीर लग रही थी। यह जानते हुए कि जब तक वह बात शुरू नहीं करेगा, वह कुछ नहीं बोलेगा, उसने पूछा, 'तुम क्या चाहती हो? क्या तुमने इस बारे में अच्छे से सोचा है? क्या तुमने उस महिला से बात की है?'

‘चलो, अपनी पत्नी को दी हुई लट्टे वापस ले लो, हर महीने उसे जितनी रकम देते हो उतनी ही वापस मांग लो; लेकिन मैंने कुछ भी न मांगने का फैसला किया है। केस दर्ज मत करो।’
‘क्या हुआ? आपने अचानक अपना मन क्यों बदल लिया?’
मैं इतने सालों से अपनी रोजी-रोटी कमा रही हूँ। मैंने अपने बच्चों का पालन-पोषण किया है। यह सब मेरे अपने दम पर नहीं हो सकता था। यह सब तुम्हारी वजह से हुआ है। अब बच्चे आत्मनिर्भर हो गए हैं। अब वे मूर्खता नहीं करते। मना करने पर भी मेरी बात नहीं मानते। मैं कौन होती हूँ मना करने वाली! लेकिन मैं इस गरीबी में क्यों जीऊँ? मुझे इस पैसे की लालसा क्यों है? मैं तुम्हारे घर पर दोपहर का खाना खाती हूँ। इन दिनों तुम मुझसे खुलकर बातें कर रही हो, इसलिए मैंने एक दिन भी खाना नहीं रखा। उस खाने पर काम करो।
वे कहते हैं, "अब मुझे इस संख्या में दो और रोटियाँ चाहिए। दहिसरम में एक नई चॉल बन रही है। वहाँ दो खोय और एक हनीघर की जगह एक लाख रुपये में उपलब्ध है।"
हाँ। बोरीवली दूर है, लोकल ट्रेनें कम हैं। कोई बात नहीं। बैंक में पैसे जमा करके।
मैं इसे बेच दूंगी। मैं घर भी इसी नाम से छोड़ दूंगी। बाद में, चाहे वह शहर में वह जगह ले ले या बाकुला-किशन को दे दे, मुझे कोई आपत्ति नहीं है। अगर मैं बच्चों से दूर रहूँ, तो मुझे संतोष होगा।
क्या आप बैंक में जमा पैसे को घर खरीदने में खर्च करते हुए भूख से मर जाएंगे?
‘तुम इतनी जल्दी इतनी बेचैन क्यों हो? अगर मैं अकेली रहूँगी तो मेरे खर्चे कम हो जाएँगे! मेरी बचत भी होगी। अगर खर्च न उठा पाने की वजह से मेरी मृत्यु का समय आ गया, तो मैं खुद को त्याग दूँगी। चार-पाँच दिनों में मैं अपने आप मर जाऊँगी!’ उसके चेहरे पर मुस्कान थी।
‘आपको यह विचार कैसे आया?’
‘वह अंबा भवानी के सामने आंखें बंद करके खड़ा था, बस इतना ही!’
वह किसी और चीज़ के बारे में नहीं सोच रहा था। वह बस यही सोच रहा था कि उसे क्या कहना है।
उन्हें लगा कि अपने कानूनी अधिकारों को त्यागने का उनका निर्णय एक तरह से मुक्ति का मार्ग था।

उन्होंने पूछा, "क्या आपको सलाखों के पीछे से बोलने में डर लगता है?"
क्या आपको ऐसे प्रश्न पूछे जाने का डर है जो प्रतिकूल साबित हो सकते हैं? ‘मैं क्यों डर रहा हूँ? डरने की क्या बात है? इतने सारे अनुभवों के बाद डरने की क्या बात है?’ उसकी आँखों में आत्मविश्वास झलक रहा था।
उसने कुछ नहीं कहा। उसका दिल उसकी असलियत जानने के लिए बेताब था। उसने सोचा, 'लेकिन जब हम चले जाएंगे तो बच्चों का क्या होगा, इस बात की चिंता से मेरा पेट नहीं दुखने लगता?'
‘मैंने अपना दिल कठोर कर लिया है। अब वे पूरी तरह से मेरे बच्चे नहीं रहे। मैं उन्हें ‘अपने बच्चे’ कैसे कह सकता हूँ जब मुझमें उनका इस्तेमाल करने और उनका फायदा उठाने की प्रवृत्ति है?’
"इस बैंक में रखे पैसों को मत छूना। मैं दिहसार के लिए एक लट्टे लाता हूँ!" वह कुछ बोल नहीं पा रही थी। उसकी आँखों में आँसू भरे थे। शब्दों को समेटते हुए उसने कहा, 'बैंक में जो पैसा है, वह भी तुम्हारा ही है। वही पैसा तुमने मुझे दिया था! अब वही पैसा जो तुमने मुझे दिया था—' अपनी बात पूरी करने से पहले ही वह फूट-फूटकर रोने लगी।
जब उसका आवेग शांत हुआ, तो वह हँसते हुए बोला, "अब बताओ।"
‘क्या मुझे तुम्हें पूरी सच्चाई बता देनी चाहिए?’ उसने रोना रोकने की कोशिश करते हुए सोचा।
मुझे बताओ। कुछ भी मत छुपाओ।
बताइए। आप दिल्ली गए थे। आंटी अकेली थीं, इसलिए घर में ज्यादा काम नहीं था। इसलिए मैं जल्दी निकल गया। घर जाने के बजाय, मैं अंबा भवानी मंदिर चला गया। मैंने आंखें बंद कर लीं और खंभे के पास बैठ गया। मुझे यह ख्याल आया, आप पिछले पंद्रह सालों से अपनी पत्नी की देखभाल कर रहे हैं, जो अब जन्म लेने वाली है! आपने यह सुनिश्चित किया है कि बैंक में पैसे जमा हों। अब क्यों? क्या यही वह दुनिया है जिसके लिए हमें मदद के हाथ फैलाने चाहिए? इससे मेरा क्या लेना-देना है? मैंने भी यही सोचा था।
आपको ऐसा नहीं करना चाहिए। जब आप गांव में नहीं होते, तो अपनी चाची के सुख-दुख के बारे में पूछते रहते हैं। घर आकर कहते हैं, "पहले कुछ करो, फिर काम करो!" भला ऐसा कौन होता है?
यह समस्या दूर नहीं हुई। इससे पहले भी, इस माँ के साथ अच्छा व्यवहार करो।
परसों से सब कुछ ध्यान से सुनो।

वे बहुत आत्मविश्वास से व्यवहार करते हैं। अब तक, मैं उनके दिए हुए कपड़ों के अलावा कोई और कपड़े नहीं पहनता। इन कपड़ों ने बकुला को भी बढ़ते हुए सहारा दिया है। हालाँकि, जब उसे ये कपड़े मिलने शुरू हुए तो उसका मन बदल गया।
‘उन्हें जाने दो। तुम यहाँ आई हो। परसों तुम अंबा भवानी के मंदिर गई थी। वहाँ बैठे-बैठे अचानक तुम्हारे मन में एक विचार आया। अगर मैं अगले जन्म में तुम्हारी पत्नी बनूँ, तो तुम्हारा पति कौन होगा? इस जन्म में मैंने अपने पति की पूरी निष्ठा से सेवा की है।’
क्या वे ही अगली नहीं हैं, जिन्हें मेरे जैसा ही पति मिलेगा? मैं अपनी तनख्वाह लेकर आपके पास आऊंगी।
मैंने घर पर खाना बनाया, उन्होंने तुम्हारा मंगलसूत्र नदी में बहा दिया! मैं तुमसे इस भूमि का अधिकार कैसे छीन सकती हूँ? क्या इसे छीनना पाप नहीं होगा? मैं पूरी रात इसी बारे में सोचती रही।
उसने एक पल के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं। वह उसके चेहरे को देख रहा था। आँखें खोलते हुए उसने आगे कहा, 'जब मेरे मन में यह भावना थी कि मैं अगले जन्म में तुम्हारी पत्नी बनूँगी, तब मैं इसे हल्के में लेती थी। अब जब मुझे एहसास हो गया है कि ऐसा नहीं है, तो मैं तुम्हारे दिए हुए लाखों-करोड़ों रुपये कैसे स्वीकार कर सकती हूँ?'
वे एक पल के लिए चुप रहे, उसके मन में आए बदलावों को समझने की कोशिश करते हुए। उनकी निगाहें एक-दूसरे पर टिकी हुई थीं। उसने नज़रें हटा लीं और मेज के किनारे पर झुक गया।
कुछ समय बाद उन्होंने कहा, ‘मुझे इस बात में कोई दिलचस्पी नहीं है कि अगला जन्म होगा या नहीं, अगर होगा भी तो पुरुष पुरुष ही रहेगा और स्त्री स्त्री ही रहेगी। यह सोचने का कोई कारण नहीं है कि अगर कोई किसी की मदद करना चाहता है तो उसे पति या पत्नी होना चाहिए या बनना चाहिए। आप भी तो बिना किसी रिश्ते के किसी की मदद करते हैं, है ना? आपने तय कर लिया है कि आप मोहनलाल का खाना नहीं खाना चाहते, आपके इस फैसले की सभी सराहना करते हैं! मैंने अब तक आपकी मदद की है, जबकि मुझे यह उम्मीद नहीं थी कि आप अगले जन्म में पत्नी बनेंगी, है ना? उसी तरह,
मैं आपके लिए एक लट्टे भी लाऊंगा। अपना ख्याल रखना। इसके बारे में किसी को मत बताना। मैं आपका एहसान कैसे चुकाऊं?

इसे चुकाने की चिंता मत करो। मैं यह इसलिए नहीं कर रहा हूँ क्योंकि तुम्हें भुगतान करना है। मुझे अब जाना है। मुझे काम करना है।'
और वे घड़ी देखते हुए जागे।

तेरा

१
मोहनलाल चिंतित था कि न केवल अन्य मामलों में, बल्कि दूल्हों के घर में भी उसे एक खालीपन का एहसास होने लगा था। हालाँकि दूल्हों की सुंदरता में कोई संदेह नहीं था, फिर भी उनके बीच की भावनाएँ गायब हो गई थीं।
अगर यहाँ आपकी कोई जगह होती, तो आपके गीत की असली शक्ति घनी और केंद्रित होती।
यह ओठंबना की भावना है। कण रस, वीर रस, मदवत, दुःख, शोक, शरण आदि। ये भावनाएँ अनुकरण या परिवर्तनशील व्यवहार हैं, न कि अभिव्यक्ति या व्यवहार।
यह गाना सफल रहा। पहाड़ जितना ऊँचा और सागर जितना चौड़ा,
उनके पास अपनी क्षमता के अनुसार गहरी और व्यापक भावनाओं को व्यक्त करने की शक्ति थी। वे बड़े गर्व से खुद से कहते थे, 'अगर किसी गायक को जीवन में रुचि है, तो वह उसके गायन में अवश्य झलकती है!' अब, यह याद करके वे बेचैन हो रहे थे। वे डर भी रहे थे। उन्हें सुबह अभ्यास करने की भी प्रेरणा नहीं मिल रही थी। सीखने में उनकी रुचि खत्म हो गई थी।
वह सोचने लगा कि ऐसा क्यों हुआ होगा। बहुत सोचने के बाद, एक रात उसे जवाब मिल गया। उसने गुरु द्वारा आशीर्वाद के साथ दी गई डफली गिरवी रख दी थी! उसे उसे छुड़ाकर घर लाना था। उसकी पूजा करने के बाद, उसने और उसके साथियों ने अनुष्ठान शुरू किया।
तो मुझे एहसास हुआ कि गाने में मुझे फिर से कुछ अच्छा मिल सकता है। वरना, वह कार्यक्रम के लिए एक लाख रुपये मांग रहा था। मैंने सोचा कि इतने पैसे छोड़ दूं और डफली ले आऊं। मैं गलत था। साथ ही, मुझे उसके मांगे हुए पैसे देकर डफली ले आनी चाहिए थी। मैं गलत था। डफली लाने का फैसला करने के बाद, थोड़ी ही देर में मुझे गहरी नींद आ गई।
वह सुबह जल्दी उठा और नहाया। नौकरानियों के जाने से पहले उसने ब्रेड, टोस्ट और कॉफी खाई। उसने अलमारी में रखी तिजोरी खोली और उसमें से एक लाख रुपये निकाले।
कीमती नोट निकाल लें। उन्हें एक छोटे से बैग में रखें और टैक्सी का किराया चुका दें।

मैंने उसे पकड़ रखा था। मुझे याद आया कि थेराडा जुनारकर का घर पंद्रह साल पुराना है। उनकी उम्र पचासी साल होगी। वो लड़का कभी-कभार अलग-अलग कॉफी शॉप में दिख जाता है। उनकी उम्र मेरी ही होगी; लेकिन जब भी मैं उनसे मिलता हूँ, वो कुछ नहीं बोलते। मैं उनसे क्यों बात करूँ? वो यही कहते रहते हैं कि मोहनलाल हमारे गाँव में एक कार्यक्रम लेने आ रहे हैं! मुझे उन पर गुस्सा आ रहा है क्योंकि मैं उन्हें हारमोनियम के लिए नहीं ले जाता। शायद वो भी घर में ही हों। जब वो मुझे अपने दरवाजे पर इस तरह जाते देखेंगे तो और भी गुस्सा होंगे!
मैंने एक पल के लिए सोचा कि मुझे टैक्सी वापस मोड़ देनी चाहिए; लेकिन मेरे गाने की मूल ध्वनि यहीं घर पर है।
जब आप फँसे हुए हों तो इन भावनाओं के आगे झुकने का कोई फायदा नहीं। लाखों रुपये की एकमुश्त रकम का ख्याल आपके माता-पिता को लालच से भर देगा! इससे मुझे थोड़ा बेहतर महसूस हुआ।
आनंद घर में नहीं था। पिता सोफे पर सिर टिकाकर बैठे थे। उनके सिर के सारे बाल झड़ चुके थे। उन्होंने राजपुरी पंच और बिनय पहना हुआ था। एक महिला ने दरवाजा खोला। वह आनंद की पत्नी ही रही होगी। आनंद ने सोचा, 'कौन?' ‘मोहनलाल!’
यह इशारा मुखिया ने सुन लिया। लेकिन उन्होंने अनसुना करने का नाटक किया और चुपचाप बैठ गए। वे पास जाकर बोले, 'नमस्कार, पंडितजी! मैं मोहनलाल हूँ!' ‘मोहनलाल? मोहनलाल कौन है? मुंबई में कितने मोहनलाल हैं! टेलीफोन डायरेक्टरी के दो पन्ने तो इसी नाम से भरे पड़े हैं!’
हतारा मुहम्मद यही कह रहे हैं! यह उनका कहने का सामान्य तरीका है, लेकिन यह वह कर्ज लेने नहीं आया। उसने कहा, 'आपने अपना डफली मेरे पास गिरवी रखा था।' ये मोहनलाल हैं! वो तंबोरा आए हैं। वो मेरे एक कार्यक्रम का संदेश अपने साथ लाए हैं!'
‘अरे हाँ हाँ! मोहनलाल हट पर आप कैसे गुस्सा हो सकते हैं? आपको पंडित मोहनलाल की तरह बोलना चाहिए! खुची लाओ और देखो! गायन के सम्राटों ने तुम्हारी झोपड़ी को साफ कर दिया है! चाय डालो।’
इसे 'गायन सम्राट' को संबोधित करने में एक विडंबना के रूप में देखा गया। फिर भी, यह उनके मन में था।

असंतोष व्यक्त किए बिना, उन्होंने औपचारिक पूछताछ की। तब उन्हें बताया गया, 'लाखों रुपये।'
मैं इसे ले आया हूँ। आओ और मेरा डफली बजाओ।'
‘काश आप इतने बड़े होते कि किसी कार्यक्रम के लिए लाखों रुपये ले पाते! वाह! यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई! आप मेरे बेटे को अपने साथ क्यों नहीं ले जाते? इस टिप्पणी को लेकर आपको इतनी परेशानी क्यों हो रही है?’
'कोशिश करने का कोई फायदा नहीं है। और इस बच्चे को न लेने का क्या मतलब है? लेकिन क्या आप गायन और वादन के बीच सामंजस्य नहीं चाहते? ठीक है। मैं इस बच्चे को भी ले लूंगा।'
‘इस बच्चे को हाथ भी मत लगाओ! तुमने कहा था कि तुम इस बच्चे को ले जाओगे। मैं तुम्हें यहाँ तक ले आया हूँ! क्या यह सच है या नहीं?’
मोहनलाल क्रोधित हो गए। क्या उन्होंने मुझे आगे किया है? उन्होंने कहा, ‘देखो विट्ठलराव, कोई किसी को इस तरह आगे नहीं कर सकता! और इसमें जो शक्ति है, उसे कुचलना असंभव है! ये लो, एक लाख रुपये जो तुमने मांगे थे और मेरा डफ!’ और उन्होंने अपने साथ लाया हुआ थैला खोलना शुरू कर दिया।
अरे बाप रे! आप कौन सा डफ बजा रहे हैं? एक लाख रुपये के डफ के साथ तो कद्दू भी होना चाहिए! बाबा, हमारे घर में ऐसा कोई डफ नहीं है!
हटारा ने आदरपूर्वक हँसते हुए कहा।
‘एक समस्या थी, इसलिए आपने मुझे पच्चीस रुपये देने का वादा किया था। बाद में, जब मैं उनसे मिलने आया, तो आपने एक कार्यक्रम की मांग की थी। याद है? मैं लाखों रुपये लाया हूँ। क्या आप मुझे देंगे या नहीं?’
‘मैं इतना बेवकूफ नहीं हूँ कि घंटी बजाऊँ! मेरे पास तो तुम्हारा डफ भी नहीं है! क्या तुम बीस साल पुरानी बात कर रहे हो? कुछ डफ इतने समय तक रखे रहने से टूट जाते हैं। कुछ डफ लोग ले जाते हैं और कभी वापस नहीं करते। तुम्हारा डफ भी खो गया है। मैं क्या करूँ?’ वृजु नारकर ने बिना आवाज ऊँची किए धीरे से कहा।
हँसा।
यह इस हाथ का रास्ता है! मोहनलाल उठ खड़ा हुआ और दाहिनी ओर की सीढ़ियाँ चढ़ गया। हटारा चिल्लाता रहा, ‘अरे छी! मेरे घर की सीढ़ी चढ़ने का तुम्हें किसने हक दिया?’ पीछे मुड़े बिना वह ऊपर गया और देखा, टोकरी में पाँच डफ रखे थे। उसने चौथी डफ को तुरंत पहचान लिया। उसने खूंटी ढीली की और डफ उठा ली।

उसने टोकरी खोली और देखा। हाँ! यही है। भोपा के दोनों ओर राजमहल है! यह एक ऐसा महल है जिस पर मोर की तस्वीर बनी है! टोकरी ऊपर होने के बावजूद डफ पर धूल जमी हुई थी।
उन्होंने इस पर अपना सिर झुकाया। वे भावुक हो गए थे! उनकी आँखों के सामने राजसाहेब और
मंदिर में स्थित शिवलिंग गायब था। मेरे सामने मंदिर परिसर से बहती हुई एक गहरी नदी प्रकट हुई। मैंने उसे पा लिया। ऐसा लगा जैसे मैं इन विभिन्न भावनाओं के रंगों को अपने हाथों में थामे हुए हूँ।
जब उसने डफली उठाई और आनंद की पत्नी जिया के पास आया, तो जिया वहीं खड़ी थी। उसने कहा, 'इंतजार करना बंद करो, विहिनी! मैं इसे दादा को दिखाना चाहता हूँ!' तो उसने इंतजार करना बंद कर दिया।
जब वह नीचे आया, तो उसने कहा, ‘हाथा, तुम मेरा डफ खोने के बारे में झूठ बोल रहे हो! अगर तुमने अपना वादा निभाया होता, तो मुझे एक लाख रुपये दे देते। अब ये पच्चीस रुपये ले लो!’ और तीनों नोट उसके सामने फेंककर, वह अपने दाहिने हाथ में धूल से सना डफ और बाएं हाथ में एक लाख रुपये का थैला लेकर चला गया।
हाटा ने अपनी बहू से चिल्लाकर कहा, "पकड़ो! हाथ मत छोड़ो!" लेकिन उसने कुछ नहीं किया।
वह वहीं खड़ी समझती रही। रेलवे स्टेशन आए मोहनलाल दूर जाकर गायब हो गए।
थोड़ी दूरी पर उन्हें एक टैक्सी मिल गई।
तख्ते पर पहुँचने के बाद, उसने गवासनी से तंबोरा निकाला और मुलायम फड़ को हल्के से छुआ।
उसने उसे हिलाया। फिर उस मोटे, नम कपड़े से उसे दो बार अच्छी तरह पोंछा गया। उसके बाद
इस पर जमी धूल काफी कम हो गई है। डफली के खूंटे इतने कस गए हैं कि
इसे ज़रा सा भी घुमाना नामुमकिन था। अगर मैं पहियों को ज़बरदस्ती घुमाने की कोशिश करता, तो वे वहीं टूट जाते या गाड़ी का शाफ्ट चटक जाता। तार पूरी तरह से जंग खा चुके थे। मुंबई की नमकीन, नम हवा बीस साल से इस तक नहीं पहुँची थी। उन्हें इसे दादर के 'अर्बन इक्विपमेंट' को दे देना चाहिए था और खुद अपने हाथों से तार बदलवा देने चाहिए थे, खूंटियाँ ढीली करवा देनी चाहिए थीं और यहाँ तक कि घोड़े भी बदल देने चाहिए थे!

लेकिन वह इसे तुरंत लेना नहीं चाहता था। उसकी प्रबल इच्छा थी कि वह जितना हो सके उतनी ऊँची आवाज़ में कोई बड़ा गीत गाए; पर वह गा नहीं सका। उसने फिर से बड़े स्नेह से डफ को प्रणाम किया। उसने अपनी सुगंधित उंगलियाँ डफ के किनारों पर रखीं। उसने कुंकवा की चिमटी ली और उसे अपने माथे पर टिका लिया। उसने डफ को अपने सामने रखा। बड़े स्नेह से उसने अपना नियमित डफ उठाया और धुन बजाना शुरू कर दिया। डफ बजते ही उसने धुन बजाना शुरू कर दिया। उसके सामने वह डफ था जो गुरु की कृपा से पवित्र हो चुका था। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। उसके सामने रखा डफ उसका मन इतना मग्न था कि उसकी झंकार उसके कानों में सुनाई नहीं दे रही थी। उसने बजाना शुरू किया। केवल डफ ही नहीं, बल्कि मोहनलाल का एकाग्र और भावपूर्ण डफ!
अब भोर हो रही है। अंधकार छंट गया है और उगते सूरज की किरणें स्पष्ट होती जा रही हैं। अनजाने में ही मन में भैरव की उपस्थिति का अनुभव होने लगा। पिछले कुछ महीनों से जो भावहीनता मुझ पर हावी थी, वह अब दूर हो गई है! साधारण वस्त्र पहनने से भी, जैसे धरती से जलप्रपात फूट पड़ता है! लेकिन पिछले कुछ दिनों से तो यह सूखा रेगिस्तान बन गया था। अब अतीत की शक्ति लौट आई है! यह इस डफ की कृपा है! गुरु की कृपा! यह डफ बुरा नहीं हो सकता, ऐसा नहीं है। इसे अपने सामने रखकर भी जब मैं दूल्हे की पूजा करता हूँ, तो मेरी भावनाएँ प्रज्वलित हो जाती हैं! क्रोध की भावना मेरे मन को भर रही थी और मैं उसमें लीन हो गया। ऐसा लगा जैसे मेरा पुनर्जन्म हुआ हो। धन्य महसूस हुआ, धन्य।
ठीक उसी समय दरवाजे की घंटी बजी। मुझे गुस्सा आ गया। दरवाजा नहीं खुला। जो भी आया हो,
वे चले जाएंगे, उन्हें जाने दो। अगर वे परिचित हैं, तो वे धीरे से दरवाजा खोल देंगे। वह बिना आंखें खोले वहीं खड़ा रहा। घंटी फिर बजी। इस घंटी को फेंक देना चाहिए।
वह बहुत गुस्से में था। वह उठा ही नहीं। ऊपर भी यही हाल था।
किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। ज़रूर कोई ऐसा व्यक्ति रहा होगा जिसका संगीत जगत से कोई लेना-देना नहीं था! उसने आँखें खोलीं और चारों ओर देखा। पुलिस की वर्दी पहने एक आदमी दरवाज़े से अंदर आया। वह ज़रूर कोई इंस्पेक्टर रहा होगा। उसे देखते ही उसने सलाम किया। फिर उसने बाहर खड़े लोगों को बुलाया।

पचासी वर्षीय विट्ठल जुन्नारकर घर में दाखिल हुए। उनके पीछे आनंद जुन्नारकर और फिर एक सिपाही आया। मोहनलाल तुरंत स्थिति समझ गए। उन्होंने हाथ से अपने बगल में लगे तंबू की ओर इशारा किया।
इंस्पेक्टर ने सोचा, 'पंडितजी, दो घंटे पहले तो आप ही थे जो जबरदस्ती इस तंबोरा को उसके घर लाए थे। क्या यह सच है?'
जब दोनों के बीच प्यार स्वाभाविक रूप से पनप रहा था, तब हटारा को पुलिस लाते देख वह क्रोधित हो गया। हालांकि, उसने अपने गुस्से को काबू में रखा और पुलिस को सब कुछ बता दिया। और अंत में
उसने कहा, 'हाँ। तुम मेरी हो। मैं तुम्हें लाया हूँ। इस तम्बू की हालत देखो!'
यह कई सालों से ऐसे ही पड़ा था, धूल जमा हो रही थी! अब मैंने इसे साफ करके इसकी पूजा की है। मैं तुम्हारे सामने लाखों रुपये फेंक दूंगा, और तुम मुझे मेरी तरफ से रसीद दे देना।'
पुजारी उस पर बैठ गया। उसने युवक से पूछा, 'क्या यह सच है?'
‘और तुम बीस साल पहले मेरी हो गई थीं। क्या तुमने कभी दुनिया में पैसा देखा है! मैं इसे तुम्हें वापस नहीं दूंगी!’
‘अरे, छोड़ो भी! मेरी तरफ देखो, मैं तुम्हारी टांग पर लात मारूंगा!’ मोहनलाल ने अचानक दरवाजे के पीछे से एक जूता उठाया और मेरी तरफ फेंक दिया।
हटारा ने पीटर पर हंसते हुए कहा, 'देखो! देखो वो तुम्हारे सामने कैसे नाटक कर रहा है!'
भाषा पर ध्यान दीजिए! इस पर भी गौर करना चाहिए!
‘इसे शांति से देखो!’ पीटर उस युवक पर हँसा, ‘तुम एक कलाकार हो, यह गायक भी है। यह तंबोरा आग की तरह जल रहा है। यह ईश्वर की शक्ति के कारण है।
वे आपको लाखों रुपये देने को तैयार हैं। इस मामले को हमारे सामने लाना उचित नहीं है, सौहार्दपूर्ण ढंग से सुलझाने की तो बात ही छोड़ दीजिए।
‘उसे बता दो कि-’
लगभग एक घंटे तक संपादकों ने दोनों पक्षों के बीच सामंजस्य बिठाने और कोई हल निकालने की कोशिश की; लेकिन विट्ठल जुनारकर अपनी जिद छोड़ने को तैयार नहीं थे।
एक दिन मोहनलाल ने उनसे कहा, ‘ओह, थेराडा! मैं अपने सामने तंबोरा रखकर भैरव राग गा रहा था। अगर तुम पिता के सच्चे कलाकार होते, तो सामने बैठकर गाना

सुनते! वास्तव में, तुम्हें हारमोनियम बजाकर मेरा साथ देना चाहिए था। इसके विपरीत, लाखों रुपये बर्बाद हो गए।’
"नहीं, क्या आप सिर्फ बाकी देखना चाहते हैं?" और वह आगे बढ़ा और अपना हाथ हिलाने लगा।
पुलिस पहले बात कर रही थी। आठ-दस मिनट बैठने के बाद उन्होंने मोहनलाल को रोका। आनंद आगे आया और मोहनलाल पर हाथ उठाया। सिपाही ने उसे रोक दिया। पुलिस ने
उन्होंने कहा, ‘तुमने घर में भी पंडितजी के खिलाफ जबरदस्ती हाथ उठाया है। वह अभी भी
वे आपको एक लाख रुपये देने को तैयार हैं। आप भी मान रहे हैं कि उन्होंने डफली गिरवी रखी थी। आप दोनों पुलिस स्टेशन आइए। आप दोनों लिखित में शिकायत दर्ज कीजिए। आप दोनों इस पर हस्ताक्षर कीजिए। कोटा पुलिस तय करेगी कि यह आपराधिक मामला है या दीवानी मामला। अब मैं यह डफली पुलिस स्टेशन ले जाकर कोटा पुलिस स्टेशन को सौंप दूँगा।
‘तंबोरा को यहीं रहने दो। तुम्हें इस अदालत में मुकदमा दायर करना चाहिए। मुंबई में हजारों वकील हैं जो मुझे जानते हैं!’ मोहनलाल दहाड़ते हुए बोला।
‘इतना काफी नहीं है। उसे मेरे साथ किए गए यौन शोषण, मुझ पर जूते फेंकने और मुझे पीटने के लिए भी याद किया जाना चाहिए!’ युवक ने उसका हाथ पकड़ते हुए जोर देकर कहा।
इंस्पेक्टर ने उसे ध्यान से देखा। शरीर पर कोई गंभीर घाव या चोट नहीं थी।
उसने कहा, ‘देखिए, मैं आपकी दलील में गवाह नहीं बनूंगा। तांबोरा का मामला महत्वपूर्ण है, मैं सबूत ले लूंगा।’ उसने सिपाही को तांबोरा को उठाने का आदेश दिया और मोहनलाल को चौकी पर आने को कहा।

२
रेस्टोरेंट में नाश्ता करते समय उसे ऐसा लग रहा था मानो वह बेहोश होने वाला हो।
हम भी गलत थे। अगर तंबोरा तुरंत दादर जाकर दुती को दे देता, तो वो हंगामा मचाते हुए कहता, ‘मुझे कुछ नहीं पता।’ यह सच है कि हमें उम्मीद नहीं थी कि हटारा पुलिस के साथ घर आएगा। हमेशा की तरह, हम दोपहर के दो घंटे सोना नहीं चाहते थे। हम अकेले नहीं रहना चाहते थे। अकेले रहने के बजाय, क्या होता अगर हम किसी को फोन कर लेते? लेकिन किसे? आखिर कौन है जिसे आप अचानक ऐसे फोन कर सकते हैं? हर कोई अपने काम में व्यस्त है। इस समय किसी के पास समय नहीं है, सिवाय उनके जिन्होंने एक दिन पहले समय तय किया था। इस सोच ने मुझे ऊबा दिया।
कुछ देर बाद मुझे भूपली की याद आई। मैंने सोचा कि उसे यहाँ बुलाने के बजाय उसके पास जाना अच्छा रहेगा। मैंने उसे फोन किया। वह फोन पर बात कर रही थी। उसने सोचा, 'अरे! तुम्हें तो इस लट्टे में आना था। क्या यह ठीक है?'
‘बहुत बढ़िया! शानदार! लेकिन गु जी, मैं कमरे में खाली जगह नहीं देखना चाहता! अभी तुरंत आओ।’
कुछ दिन बीत चुके थे जब उसने उसके साथ सोया था। उसे यह बदलाव अच्छा लगा। सुबह से लेकर अब तक जो कुछ हुआ था, वह कुछ देर के लिए खामोशी में खो गया। उसकी बाहों में झपकी लेने के बाद, उसने दिन भर की घटनाओं का ब्योरा दिया। उसने यह भी कहा, 'वीणा की आवाज़ बहुत तेज़ है! मैंने जूनियर जुन्नारकर का हारमोनियम भी सुना है। इस संगीत में शांति नहीं है। यह ऐसा वाद्य यंत्र नहीं है जो तुम्हारे मूड के अनुकूल हो।'
यह सुनकर उसे भी अच्छा लगा। उसने कहा, 'आज यहीं रुक जाओ। महीनों हो गए जब हमने साथ में रात बिताई थी! साथ में रात बिताने से जो शांति और संतुष्टि मिलती है, वह दिन में नहीं मिलती!'
सुबह चेहरा धोने के बाद वह टैक्सी से अपने अपार्टमेंट में आया और दरवाजे के फ्रेम में एक पत्र फंसा हुआ पाया। उसने पत्र उठाया और दरवाजा खोला। जैसे ही उसने पत्र खोला, वह उड़ गया।
अखबार के पहले पन्ने पर उसकी तस्वीर थी। बड़ी हेडलाइन थी, 'दो गायकों में झड़प। तंबोरा पुलिस हिरासत में!' उसने चारों ओर देखा। जुन्नारकर के तंबोरा

लेकर इस घर में आने के बाद से विटारा ने सारी खबरें दी थीं। उसने अपना बयान भी दिया था; लेकिन अखबार ने इसे कैसे समझा?
जब वह ये सोच ही रहा था, तभी वाडेकर आ गया। वह हर दिन इस समय से पंद्रह-बीस मिनट पहले आ जाता था। उसने अपने हाथ में पकड़े अखबार को देखा और कहा, 'मैंने इसे सुबह पढ़ा था, उठो, उठो। ये खबर तो सभी अखबारों में छपी है! आखिर बात क्या है?'
‘तुम्हें पता है वो मेरा डफली अपने पास रखकर मुझे परेशान कर रहा है! कल यही खबर मलयाली में छपी थी। इस खबर में कुछ भी झूठ नहीं है; लेकिन ये खबर इन सभी अखबारों तक कैसे पहुंची? वो भी यही सोच रहा था।’
‘अखबार को यह जानकारी सिर्फ पुलिस केसों के जरिए मिली है। उन्होंने आपके नाम की वजह से ही यह खबर पहले पन्ने पर छापी है, बस इतना ही।’ वाडेकर अभी बात ही कर रहे थे कि फोन की घंटी बज उठी।
‘मैं परंजपे हूं। मैं कल रात ग्यारह बजे तक आपको फोन कर रहा था। लेकिन कोई फोन नहीं उठा रहा था।’
"गांव से कोई आया था। मैं उससे मिलने गया।"
‘क्या आज का अखबार बुरी खबर देने वाला है या नहीं? यह खबर सुबह चार बजे आई। मैं आपसे संपर्क करने की कोशिश कर रहा था ताकि समाचार के लिए आपका अलग से साक्षात्कार मिल सके। भले ही इसमें एक दिन की देरी हो जाए, हम इसे दे देंगे। अब मैं फोन पर पूछे जाने वाले प्रश्न के बारे में सोचूंगा, आप इसका उत्तर दीजिए। यह तो बस एक मजाक है!’
फिर आधे घंटे तक टेलीफोन पर पूछताछ, जानकारी, स्पष्टीकरण आदि का सिलसिला शुरू हुआ।
सब कुछ हो जाने के बाद, परंजपे ने सोचा, "आपने किस वकील को चुना है?"
‘एक वकील? मुझे वकील क्यों चुनना चाहिए?’ मोहनलाल ने सोचा।
‘मोहनजी, आप क्या कह रहे हैं? उसने आप पर घर में घुसकर ढोल चुराने का आरोप लगाया है! कारण चाहे जो भी हो, आपने भी यह बात मान ली है! और आप अपने घर में ही थे और पुलिस ने उसे ज़ब्त कर लिया है! वह आपको बदनाम करना चाहता है।’ हाथ बुरी तरह बंधे हुए हैं! स्थिति गंभीर है। फिलहाल ठीक होने की उम्मीद अच्छी है।

एक वकील हायर करो! अगर सोचो तो सीधे गोरे विक्रेताओं से संपर्क करो। वे तुम्हें एक अच्छा वकील दिलवा देंगे! किसी अजनबी के चक्कर में पड़ने से तो बेहतर है ना?
वह इस बात को भलीभांति समझ गया था। उसे इस बात का भी थोड़ा डर था कि उसने अभी तक किसी वकील को नियुक्त नहीं किया था।
मैंने सोचा। जैसे ही मैं सोच रहा था कि गोर साहब से मिलना उचित रहेगा, फोन फिर बज उठा। फोन खत्म होते ही दूसरा फोन आ गया। अखबार पढ़ने वाले मेरे जान-पहचान के लोग मुझे फोन करने लगे। सब कुछ छप चुका था, फिर भी मेरे मन में वही विचार फिर से आने लगे।
पुराने दोस्तों के भी फोन आ रहे थे। मोहनलाल उनकी बातों से चिढ़ गया। दोपहर में उसने फोन रख दिया और खाना खाने बैठ गया।
अकेले चुपचाप खाना खाते हुए, गोरेसाहेब से मिलने की मुश्किलें सामने आने लगीं। मुझे रामकुमारी याद आई, जो अगले जन्म में गोरेसाहेब से मेरी शादी की उम्मीद कर रही थी। मैंने मन ही मन सोचा, उन दोनों के बीच ज़रूर कोई रिश्ता रहा होगा। मैंने बकुला को बताया कि बोरीवली का घर मेरे नाम पर है, इसलिए उसने वह घर छोड़ दिया और दिहसर की एक चॉल में रहने चली गई। चूंकि बच्चे मेरी तरफ झुकने लगे हैं, इसलिए वह बच्चों से नाराज़ भी है। उसने गोरेसाहेब के सामने भी ऐसा ही करने की कोशिश की होगी। अगर मैं ऐसे समय में इस आदमी के पास जाऊं, तो क्या वह इस मौके का फायदा उठाकर मेरा मामला बिगाड़ नहीं देगा? परंजपे को ये सब बातें नहीं पता। गोरेसाहेब के पास जाने की बजाय किसी दूसरे वकील के पास जाना बेहतर होगा। कुछ वकील मेरे गाने सुनने आते हैं। मुझे समझ नहीं आता कि यह आदमी इतनी दूर से क्यों आया है; लेकिन उनमें से कोई भी मेरा नाम नहीं जानता।
खाना खत्म हो गया था। उसने बर्तन सिंक में रखे और फोन चालू किया। तुरंत ही फोन की घंटी बजी। यह टिप्पानिस का फोन था।
मैंने सुबह से पच्चीस बार फोन किया है। फोन बजता ही रहता है। मैंने एसी को भी फोन करके पूछा कि कहीं फोन खराब तो नहीं हो गया है।
"आपने अभी-अभी इसके लिए फोन किया था, मुझे सुबह से इसके लिए सौ फोन आ चुके हैं।"
मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि हटारा इतनी दूर तक जाएगा!

"अगर तुम सिर्फ मेरे बेटे को ले जाओ, किसी और को नहीं, तो मैं तुम्हें डफली दे दूंगा," उसने कहा। मुझे गुस्सा आ गया!
मुझे किसी विक्रेता से मिलना चाहिए था।
‘मैंने गोरे साहब से मिलने की योजना बनाई थी; लेकिन रामकुमारी को लेकर वो मुझसे नाराज़ हैं। अगर मैं इस मौके का फायदा उठाऊं तो क्या होगा?’ उसने बस इतना ही कहा। आगे बढ़ने के अपने इस विचार के बारे में रामकुमारी को बताने में उसे शर्म आ रही थी।
‘आपको याद है, आप गोरे साहब से कई साल पहले तब मिले थे जब चंपाबाई कैसेट बेचती थीं? वो रामकुमारी के घर खाना भी बनाते थे; लेकिन अब आप नहीं।’ उन्होंने विषय नहीं हटाया होगा। हाँ, सही कहा ना? इसे जारी रखो। यांच उन्हें गाना इतना पसंद है कि वे कलाकारों की सारी गलतियों को नजरअंदाज कर देते हैं।
आप भी यह जानते हैं।
चाहे यह बात कितनी भी सच क्यों न लगे, मोहनलाल को गोरी पर विश्वास नहीं था। रात को काफी देर तक सोचते-सोचते उन्हें याद आया कि विदला के सहस्रचंद्र दर्शन के अवसर पर उनके गाँव में देसाई के नाम से एक कार्यक्रम आयोजित किया गया था। उन्होंने कार्डों वाला बक्सा निकाला और तलाशा। गिरगाँव के चमनलाल हीराभाई देसाई का कार्ड ढूंढने में उन्हें आधा घंटा लग गया। उच्च न्यायालय का तदर्थ आदेश। मेरा मन शांत हुआ। मुझे अच्छी नींद भी आई। मैंने सुबह उन्हें फोन किया और उनसे मुलाकात की। उन्होंने मुझे शाम छह बजे कार्यालय में मिलने के लिए बुलाया था।
परंजपे द्वारा लिखित एक विस्तृत लेख सकल अखबार में प्रकाशित हुआ था। इसमें मोहनलाल और विट्ठल जुन्नारकर के साथ फोन पर हुई बातचीत का भी जिक्र था। महान गायक जुयापुरा को ताम्बो द्वारा बहुत सम्मान दिया जाता है।
इस टैम्बो में, इस बदलाव में, दूसरा खिलाड़ी लगातार पैसे मांगता रहा।
वह अब मुझे पच्चीस रुपये के बदले एक लाख रुपये देने पर भी लात मारता है, वह तुम्हारे बेटे को साथी बनाने का सौदा कर रहा है, आदि - यह सब विस्तार से लिखा गया था। उसने जुन्नारकर से जो प्रश्न पूछे और उनके जो सीधे-सादे उत्तर दिए, वे भी उसी ने लिखे थे।
इसे छापा गया। इसके साथ ही "या गंजले या तरन या जु या तंबो" की एक तस्वीर भी छापी गई।

मोहनलाल प्रसन्न हुआ। याना ने परंजपे को फोन किया और उसे गिरफ्तार करवा दिया। जब मैं शाम को देसाई विकलां गया, तो मैं ये दो पेड़ के पत्ते अपने साथ ले गया।
‘इस मामले का कोई मतलब नहीं है। हतारा जिरह में सामने आ जाएगा! यह कोई मामूली रकम या कीमती सामान नहीं है और न ही यह आपकी कोई लूट है। अगर आप इसे बेचने जाओगे, तो आपको तीन दाम भी नहीं मिलेंगे, यह पुरानी कहावत है! फिर भी, ऐसा लगता है कि हतारा आपको परेशान करने के लिए मामला जारी रखेगा। देखते हैं क्या होता है; लेकिन इसके बाद आप किसी से कुछ नहीं कहेंगे। अहम बात यह है कि उसने यह भी मान लिया है कि आपने इसे गिरवी रखकर लिया था और आपको पैसे दिए थे। क्या उसने इस तरह गिरवी रखने का लाइसेंस लिया था? सिर्फ इसी एक बात पर उसका मामला पूरी तरह से खत्म हो जाएगा; लेकिन वह हाई कोर्ट भी जाएगा। आपको अपना तंबोरा वापस पाने में छह-सात साल और लग जाएंगे। आपको इसके लिए तैयार रहना होगा।’
यह बात उन्हें बिल्कुल भी स्वीकार्य नहीं थी। उन्हें दृढ़ विश्वास था कि अगर उनके पास डफली नहीं होगी, तो उनके गायन में कोई भावना नहीं होगी। उन्होंने सोचा, 'क्या यह काम जल्दी नहीं हो सकता?'
“अगर आप इस तरह के मामलों में पैसा खर्च करके केस को लंबा खींचते हैं, तो देरी होना तय है। मेरे अनुभव से पता चलता है कि अगर केस खारिज हो जाता है, तो पैसा बर्बाद हो जाएगा। अगर उसके कोई करीबी रिश्तेदार वकील हैं, तो केस हार जाएंगे! अरे हाँ! आपका करीबी वकील तो गोरेसाहेब ही हैं, है ना?” मोहनलाल अचानक अपना नाम सुनकर चौंक गए। उन्होंने कुछ नहीं कहा। देसाई ने आगे कहा, 'मुझे ऐसा ही लगा था, क्योंकि अगर गायकों और संगीतकारों को कोई कठिनाई होती है, तो गोरेसाहेब हमेशा हर तरह से मदद करने के लिए तैयार रहते हैं। उन्होंने ही मुझे हमारे स्कूल के सहस्रचंद्र दर्शन के लिए एक गायन कार्यक्रम आयोजित करने का सुझाव दिया था। उन्होंने ही आपका नाम भी सुझाया था। मुझे गायन के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है। हमारे स्कूल को भी इसमें कोई खास रुचि नहीं है; लेकिन वे हर जगह यही कहते हैं कि केवल आर्थिक रूप से संपन्न लोगों को ही गायन, वाद्य यंत्र बजाने और नृत्य कला को बढ़ावा देना चाहिए। उनके पास आने वाले आपराधिक मामले वे मुझे भेज देते हैं। अगर आप उनके पास भी जाते, तो भी वे आपको मेरे पास ही भेजते। आप सीधे आए, मुझे खुशी है!'

वह बस अपना सिर हिला रहा था।
इसके बाद, तीसरे दिन सुबह नौ बजे देसाई विकला ने फोन किया। मोहनलाल
मैंने डरते हुए सोचा, 'क्यों? क्या हुआ, साहब?'
कल मेरी मुलाकात हाई कोटा परिसर में गोरेसाहेब से हुई। मैंने उनसे इस मामले के बारे में विस्तार से बात की। उन्होंने भी सब कुछ पढ़ लिया था। उन्होंने कहा, पंडित मोहनलाल एक महान गायक हैं! आपको उनसे कोई फीस नहीं लेनी चाहिए! आज जैसे ही वे कार्यालय आएंगे, मैं आपको सूचित कर दूंगा! पंचोली नाम का एक कनिष्ठ वकील आपका मामला देख रहा है। मैं उससे भी बात करूंगा। यदि इस संदर्भ में आपके कुछ विचार या राय हो, तो कृपया उस पर विचार करें।
मोहनलाल ने कृतज्ञता के दो शब्द तक नहीं कहे! उन्होंने कहा, "हेलो! क्या आप सुन रहे हैं?" उन्होंने सिर हिलाया, और नए लड़के ने बस इतना कहा, "हम्म-हम्म।"

३
अगले पंद्रह दिनों तक, यही खबर अलग-अलग तरीकों से सभी बड़े और छोटे अखबारों में छपती रही। इस संदर्भ में पाठकों के पत्र असंख्य थे। उनमें से अधिकांश ने जुन्नारकर की कड़ी आलोचना की थी। सवाल यह था, 'ऐसा घृणित कलाकार कलाकार कैसे हो सकता है?' अंग्रेजी अखबार अहमदाबाद-दिल्ली-भोपाल-लखनऊ-हैदराबाद जैसे हिंदुस्तानी संगीत की दृष्टि से महत्वपूर्ण गांवों में ये संस्करण प्रकाशित कर रहे थे, और यह खबर पूरे देश में फैल गई। छोटे अखबारों को भी इससे फायदा हुआ। पाठकों ने अपनी कल्पनाओं को इसमें शामिल करते हुए अखबारों पर पत्र लिखे। मोहनलाल इस अनुभव से प्रसन्न थे कि सभी जोखिम उनके पक्ष में थे।
एक सप्ताह बाद, एक और खुशखबरी आई। इस वर्ष मोहनलाल को तानसेन पुरस्कार के लिए चुना गया था। शास्त्रीय संगीत के प्रति हजारों लोगों को आकर्षित करने का श्रेय उन्हें ही जाता है। भारत में लाखों प्रशंसक, जो गायन की कला से अनभिज्ञ थे, इस खबर से प्रसन्न हुए। वास्तव में, उनके सच्चे चाहने वालों का मानना था कि उन्हें यह पुरस्कार दस साल पहले ही मिल जाना चाहिए था। बधाई संदेशों की बाढ़ आ गई। फोन कॉल, सम्मान के निमंत्रण और प्रशंसा की बौछार से उनके मन की उदासी कुछ हद तक कम हो गई। मुझे गाते समय नया उत्साह महसूस होने लगा। हे भगवान! कितना समय बीत गया! हर साल मेरा नाम दरकिनार कर दिया जाता था! अब भी, अगर मैं इसे स्वीकार करने से इनकार कर दूं तो क्या होगा? मैं इस पुरस्कार से कितना बड़ा हूं! इस पुरस्कार को क्यों नजरअंदाज किया जाए? लेकिन नहीं। ऐसा करना उन दीर्घकालिक हितों के विरुद्ध जाना होगा जिन्होंने इस पुरस्कार को सम्मानित किया है और उस संस्था के विरुद्ध जाना होगा जो इसे प्रदान करती है।
परंजपे को एक कॉल भी आया, 'क्या आप जल्दी में आई हैं? जुन्नारकर हटारा की वजह से ही आपको इस साल यह पुरस्कार मिला है!'
'आप इसे कैसे कहेंगे?'
'ताम्बो वाली घटना के बाद से तीन सप्ताह तक आपका नाम देश भर के सभी समाचार पत्रों में छपता रहा है! इसका चयन समिति पर निश्चित रूप से प्रभाव पड़ता है। इस क्षेत्र में,

मेरी बात सुनो, मैं अपने अनुभव से बोल रहा हूँ। ठीक वैसे ही जैसे जो लोग लगातार खबरों में रहते हैं, वे आकर्षित होते हैं...
फल चाहे कितना भी सुंदर क्यों न हो, उसे खाया नहीं जा सकता!’ परंजपे हँसते हुए बोला।
हँसा।
इस पर मोहनलाल भी हंस पड़े और बोले, "इसे कहीं भी मत छापना! वरना थेराधा की हत्या कर दी जाएगी।"
मैं पुरस्कार राशि में से उचित हिस्सा पाने का अधिकार चाहता/चाहती हूं! दोनों इतना हंसे कि उनके पेट में दर्द होने लगा।
एक और बात है। आपको राष्ट्रीय स्तर का यह सम्मान मिला है, और मुंबई के ये सभी संगठन आपका जन्मदिन मनाने के लिए एकजुट हो रहे हैं। एक बड़ा घाट बनाया जा रहा है। वे वानखेड़े स्टेडियम में कार्यक्रम आयोजित करने की योजना बना रहे हैं। वे आपसे समारोह के बाद तीन-चार घंटे रुकने की उम्मीद कर रहे हैं। गोरेसाहेब उत्सव समिति के अध्यक्ष बने रहेंगे।
ऐसा लगता है। मैं तुम्हें पहले ही बता देता हूँ, मेरी बात ध्यान से सुनो। इसके लिए तैयार रहो। इसके लिए छुट्टी मत लेना। तुम्हारे साथियों के पास जितना हो सके उतना पैसा होना चाहिए। अगर तुम ऐसा करोगे, तो तुम्हारा पद और भी ऊँचा हो जाएगा!
वह खुशी से हंसते हुए बोला, "मैं इस बारे में अपना वादा कैसे तोड़ सकता हूं?"
एकजात के सभी संगीत प्रेमियों को लगा कि शास्त्रीय संगीत की इतनी भव्य महफ़िल पहले कभी नहीं हुई थी। प्रवेश निःशुल्क था। एकजात के सभी समाचार पत्रों में इसका खूब प्रचार किया गया था। मुंबई के सभी संगीत संगठनों ने इसमें भाग लिया। समारोह शाम आठ बजे से आधी रात तक चला और गायन सुबह साढ़े नौ बजे से चार बजे तक जारी रहा। बीच में आधे घंटे का विराम था। इतने वर्षों बाद इतना प्रभावशाली गीत प्रस्तुत किया गया था। मोहनलाल को भी यही महसूस हुआ। मुलुंड संगीत संगठन के सचिव ने अपने भाषण में बताया कि लगभग डेढ़ लाख लोग एकत्रित हुए थे। इतने सारे लोग उनका गीत सुनने और उनके समारोह में शामिल होने आए थे। भला गायक को इस बात से उत्साहित न होने का क्या कारण था! मनुष्य की ऊँचाई के बराबर फूलों की माला उसके सामने क्षैतिज रूप से रखी हुई थी।

जैसे ही मैंने गुलाबों की माला देखी, मुझे धनुष की तरह सो रही उस खूबसूरत महिला का पतला, नाजुक शरीर याद आ गया।
लगातार छह घंटे गाने के बाद भी मुझे थकान महसूस नहीं हुई। मेरी आवाज़ ज़रा भी नहीं बदली। इस उत्साह के पीछे एक और कारण था। इस गीत के बारे में बात करते हुए, फोट संगीत सभा के अध्यक्ष राम टिकेकर ने कहा था, 'इतने महान गायक ने बीस साल पहले आर्थिक तंगी से निकलने के लिए अपना तंबोरा पच्चीस रुपये में गिरवी रख दिया था। अब लाखों रुपये चुकाने के बजाय, पुलिस केस दर्ज कराने वाले हारमोनियम वादक का उदय कला जगत के लिए बेहद खतरनाक है। अगर संबंधित वादक इस मामले को गंभीरता से लेता है, तो ठीक है। मैं सार्वजनिक रूप से उससे अपील करता हूं कि वह पच्चीस रुपये लेकर दो सप्ताह के भीतर पंडित मोहनलाल जी को वह तंबोरा लौटा दे! अन्यथा, हम घोषणा करते हैं कि उसे पूरे मुंबई में किसी भी कार्यक्रम में संगतकार के रूप में आमंत्रित नहीं किया जाएगा! इतना ही नहीं, यह भी सुनिश्चित करें कि पूरे देश में कोई भी उसे मित्र न कहे!' इसके बाद जो तालियों की गड़गड़ाहट हुई, वह इतनी ज़ोरदार थी कि कान बहरे हो गए। भला इसके बाद मोहनलाल को गाने की हिम्मत क्यों नहीं आती?
अगले दिन, सभी समाचार पत्रों में इस घटना से जुड़ी बड़ी-बड़ी खबरें छपीं, जो हर घर तक पहुंचीं। सरकार और जनता की बड़ी-बड़ी तस्वीरें भी छपीं!
अगले दिन, परंजपे ने फोन किया, "जून नारकर को धमकाने का विचार भी गोरे साहब का ही था, है ना? बाप-बेटे बहुत डरे हुए हैं। विकलाला ने केस दर्ज करा दिया है।"
मुझे इसे कल के लिए तैयार करने को कहा गया है।
मोहनलाल गोरे के प्रति कृतज्ञता महसूस कर रहे थे। गोरे उन पर एक के बाद एक उपकार कर रहे थे! परंजपे ने कहा, 'आपको एक बार गोरे साहब से मिलना चाहिए, वे महान हैं! मुंबई में किसी भी कलाकार को इतना बड़ा सम्मान नहीं मिला है! और यह गोरे ने ही संभव कर दिखाया है! अगर वे न होते, तो मुंबई के ये सभी संगठन एक साथ न आ पाते!'
‘मैं तुमसे मिलूंगा!’ वह हँसा; पर मिलना मुश्किल लग रहा था। वह जानता था कि रामी ने अलग घर बनाए बिना ही घर छोड़ दिया था। उसे मेरी जान की कोई परवाह नहीं थी। फिर भी, मेरी माँ उसके लिए ये सब कर रही थी! वह इसे कैसे सह सकता था? उसे डर लग रहा था, पर वह यह भी समझ रहा था कि कोई उपाय नहीं है। उससे

मिलने का ख्याल उसे रातों को सोने नहीं देता था। सुबह उठकर वह सोचता था कि अगर उससे एक बार मिल जाए, तो कम से कम चैन की नींद तो आ जाएगी।
उनका ऑफिस नंबर यहाँ था। अगर आप डायरेक्टरी में इसे खोजेंगे तो आपको उनका घर का नंबर भी मिल जाएगा। लेकिन
वह घर में ही होगी! उसने दस बजे दफ्तर में फोन किया। उनकी मुलाकात हुई। उसने कहा, 'मैं मोहनलाल बोल रहा हूँ, महोदय! मैं उनसे मिलना चाहता हूँ और उन्हें आशीर्वाद देना चाहता हूँ। मैंने उन्हें समय पूछने के लिए फोन किया था।'
‘ओह! मैं फोन करने ही वाली थी; लेकिन मैं पिछले तीन दिनों से बहुत व्यस्त हूँ। क्या आज साढ़े चार बजे का समय ठीक रहेगा?’
‘यह काम करेगा। मेरे पास समय है। मैं आऊंगा।’
वह सबसे पहले फूलों और फलों की सुंदर टोकरियाँ बनाने वाली एक दुकान पर गया। उसने एक बड़ी टोकरी में कई तरह के फल रखे और उसे लाल चांदी के कपड़े में लपेट दिया। उसने फूलों का एक बड़ा गुलदस्ता बनाया। वह दफ्तर आया और आदरपूर्वक उन दोनों को गुलदस्ता दिया। उन्होंने भी सिर झुकाकर उसे ग्रहण किया। उसने टोकरी को दीवार के सहारे रखा और गुलदस्ता मेज पर रखते हुए झुककर उनके पैर छुए। फिर उसने उन्हें उठाया और अपने सीने से लगा लिया। उसने कहना शुरू किया, "यह सब आपकी कृपा से ही संभव हुआ!"
"अगर तुम इसमें अच्छे नहीं हो, तो कोई कुछ नहीं कर सकता। बैठ जाओ—"
दोनों बैठ गए। गाने और गायन-वाद्य यंत्र वाले दृश्य के बारे में थोड़ी बातचीत करने के बाद, उसने पूछा, 'आज रात आपको गाना कैसा लगा?'
लोग ध्यान से सुन रहे थे!
लोग सुन रहे थे; लेकिन आपको कैसा लगा?
उन्होंने तुरंत कुछ नहीं कहा। यह सोचकर कि शायद इस टिप्पणी से गाँव की गरीबी के सवाल का जवाब मिल जाए, उन्होंने इस पर फिर से विचार किया। इस पर उन्होंने जवाब दिया, 'अब मैं भी बूढ़ा हो गया हूँ! इस साल मेरी उम्र एक हजार साल पूरी हो गई है!'
"इसीलिए आप ज्यादा सुनने वाले बनिए। अपने मन की बात स्पष्ट रूप से कहिए।" ‘सब कुछ बढ़िया था। तकनीकी रूप से, आपमें कोई कमी निकालना असंभव है; लेकिन गाना मशीनी था। उसमें कोई भावना नहीं थी। वही घिसा-पिटा, वही तनाव! ऐसा लग रहा था जैसे पीठ पर किए गए अभ्यासों के बल पर ही गाना गाया गया हो! उसमें

कोई नवीनता नहीं थी। कोई अप्रत्याशित मोड़ नहीं था। कोई नई भावना का अनुभव नहीं हुआ।’
वह उसके चेहरे को ऐसे देख रहा था मानो वह उसकी बात समझ रहा हो। फिर वह हँस पड़ा।
एक और बात, मुझे गायन के विज्ञान की पूरी समझ नहीं है। मैं एक औसत श्रोता हूं।'
‘आप अच्छे श्रोता हैं। आपकी राय मेरे लिए विशेष महत्व रखती है। विज्ञान में, बोध शक्ति कम होती है –’ वह हँसे।
उसने उसी धागे को पकड़ा और पूछा, 'क्या आपने कभी सोचा है कि ऐसा क्यों हो रहा है?'
शिकागो में जयजयवंती की आपकी कैसेट सुनने के क्षण से ही मुझे यह एहसास हो गया था। मुझे याद है मैंने आपसे यह बात कही भी थी। क्या हर कलाकार को कभी- कभी अपनी गायन शैली का परीक्षण करना चाहिए? क्या उसे रागों की भावनाओं को समझना चाहिए? कभी-कभी मैं सोचता हूँ, क्या हम कलाकारों के पास गायन और वादन के अलावा अपनी बुद्धि को पोषित करने के अन्य तरीके नहीं हैं, जैसे गंभीर साहित्य या कविता पढ़ना? या जब 'मैं क्यों गा रहा हूँ, मैं राग के माध्यम से क्या अर्थ व्यक्त करने की कोशिश कर रहा हूँ, मैं क्या विचार प्रस्तुत कर रहा हूँ' जैसे विचार रुक जाते हैं, तो क्या कला इतनी नीरस हो जाती है? भावनाएँ भी एक प्रकार का विचार हैं, एक प्रकार का अर्थ हैं। जब अर्थ का प्रवाह रुक जाता है, तभी संतुलन बना रहता है। संतुलन केवल अर्जित किए गए कर्मों का फल है, है ना? ऐसे प्रश्न मेरे मन में बार-बार उठते रहते हैं। मैं आपसे इस बारे में बहुत समय से बात करना चाहता था, और बहुत समय से करना भी चाहता था। आज आपका आना बहुत अच्छा लगा!
लेकिन मोहनलाल को इनमें से किसी भी सवाल का जवाब नहीं मिला। उनकी निगाहें भले ही उनके चेहरे पर टिकी थीं, लेकिन उनकी आँखों में कोई भाव नहीं था। यह समझकर उन्होंने विषय बदल दिया। उन्होंने उनसे मुलाकातों के बदलते स्वरूप, कलाकारों की नई पीढ़ी और उनकी प्रतिभा के बारे में सवाल पूछना शुरू कर दिया। उन्होंने चाय मंगाई। आधे घंटे की बातचीत के बाद उन्होंने झुककर उनसे विदा ली।
उन्हें एहसास हुआ कि दूल्हे और तुम्हारे बीच भावनाओं के बढ़ने का उनका आभास और गोरे साहब की यह टिप्पणी कि 'तुम्हारा गायन यांत्रिक हो रहा है' एक

ही बात की ओर इशारा कर रही थी। यह यांत्रिकता उन्हें शिकागोम गाते समय आ गई थी; लेकिन मैं इसे समझ नहीं पाई थी। लेकिन क्यों? उन्हें इसका कोई जवाब नहीं मिल रहा था। गोरे साहब
क्या वे सच में ऐसा कह रहे हैं? मेरे पास अपनी बुद्धि को पोषित करने का कोई और तरीका नहीं है।
क्या यही इसका कारण हो सकता है? क्या दूसरों की भावनाओं को समझने की मेरी क्षमता कम हो रही है?

४
सम्मेलन में तीन रातों तक चलने वाला यह कार्यक्रम, जहाँ तानसेन की समाधि स्थित है, 'तानसेन पुरकर' प्रस्तुति कार्यक्रम से शुरू हुआ। वहाँ यह प्रथा थी कि पुरस्कार विजेता कलाकार भी इस कार्यक्रम का हिस्सा होते थे। यदि पुरस्कार वितरण के तुरंत बाद उनका गायन होता, तो कई लोग उठ जाते, और आकर्षक कार्यक्रम को अंत में रखना कार्यक्रम नियोजन की एक रणनीति थी, इसलिए कलाकारों को भी लगता था कि अंतिम कार्यक्रम उनका सम्मान है। उस रात, सभी पाँच कलाकारों के बाद, मोहनलाल का गीत भी अंत में प्रस्तुत किया गया। उनके सुबह जल्दी आने की उम्मीद थी। उन्होंने होटल में थोड़ी देर आराम करने और फिर अपने गीत से पहले आने का फैसला किया था। यहाँ अंतिम गायक का गीत शुरू होने के बाद, होटल में एक व्यक्ति को कलाकार को जगाने, चाय पिलाने और लाने के लिए नियुक्त किया गया था।
पुरस्कार समारोह से आधा घंटा पहले, एक अधेड़ उम्र की महिला मोहनलाल के कमरे में आई। वह एक गायिका रही होगी। उसके घने रंगे हुए बाल थे, बालों में लटें थीं, शरीर पर एक भारी रेशमी साड़ी थी और हाथ में चार उंगलियों वाला दीया था।
लाउंज, मुट्ठी भर सोने की चूड़ियाँ, कमर में सोने का हार और कानों में बालियाँ।
कुद्रा। झुककर उसने अपने पैरों के पास सिंदूर के धब्बे पर धूल छिड़की। कमरा दस-बारह लोगों से भरा हुआ था। उसके बैठने की जगह नहीं थी। उसने कहा, ‘गुरुजी, मेरी आपसे एक निवेदन है। आज रात मेरा एक और कार्यक्रम है। मेरे पास गाने के लिए एक घंटा है। मैं प्रार्थना करने आई हूँ कि मेरे गाने के बाद आप विश्राम करने उठें। अगर आप मेरा गाना सुन लें, तो मैं खुद को भाग्यशाली समझूँगी। मैं कोई प्रसिद्ध या महान कलाकार नहीं हूँ।’
‘बैठ जाइए, बैठ जाइए!’ मोहनलाल खड़े हो गए और उनके लिए जगह बनाने लगे। कमरे में मौजूद लोगों में से एक ने उन्हें बैठने के लिए जगह दी; लेकिन वह नहीं बैठीं। उन्होंने कहा, ‘मेरा नाम जवाहरबाई है। मैं जोधपुर से हूँ। अगर आप कह दें कि आप सुन रहे हैं, तो बस इतना ही काफी है। मुझे और कोई काम नहीं है।’ जाते ही उसने कहा, "मैं तुम्हारी बात सुनूंगी!"

उसका गाना शुरू हुआ। वह ध्यान से देख रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे कहीं कुछ हो रहा हो; पर उसे याद नहीं आ रहा था कि कहाँ। उसमें गाने की कोई खास प्रतिभा भी नहीं थी। वह बस अपने पास जो भी पैसा था, उसे भावभीनी भेंट कर रही थी। भारी साड़ी और सोने-चांदी के दागों से लग रहा था कि वह किसी बड़े परिवार से है। शायद जोधपुर की यात्रा में उससे मुलाकात हुई हो। या उसने उसे अपने घर रात के खाने पर बुलाया हो। वह उसकी सही उम्र का अंदाज़ा नहीं लगा सकता था। उसने यह भी देखा था कि कुछ चेहरों पर उम्र का पता नहीं चलता। उसने थोड़ी देर के लिए विराम लिया। कभी-कभी उसकी नज़र इधर-उधर जाती। अपनी जगह पर बैठने के बाद, वह तारीफ की उम्मीद में इधर-उधर देखती। अक्सर वह आँखों से भी उसे इशारा करती। उसने दो बार सिर हिलाकर कहा, 'बहुत बढ़िया!'। जब वह फिर से मेज़ पर आई, तो उसने थोड़ा ज़ोर से कहा, 'बस यही!'। उसके चेहरे पर एकाग्रता का भाव आ गया। वह बैठ गया और सम्मान के भाव से गर्दन, सिर और कंधे झुका लिए।
मैं सफल।
जब उनका गाना खत्म हुआ, तो वे चबूतरे से बाहर आ गए। इस सेवा के लिए नियुक्त स्वयंसेवक पास आया। उसने मोहनलाल को गाड़ी तक पहुँचाया। हालाँकि वे होटल के बिस्तर पर सोए थे, फिर भी उन्हें नींद नहीं आ रही थी। तीन और गायक हैं। वे उन्हें 3:30 बजे जगा देंगे।
गर्मियों में मिले पुरस्कार ने उनके दिल को खुशी से भर दिया था। उन्हें इससे पहले भी कई संस्थानों द्वारा सम्मानित किया जा चुका था; लेकिन इस सम्मान में कुछ खास बात थी। एक कारण यह भी था कि यह पुरस्कार तानसेन के नाम पर दिया जा रहा था। यह पुरस्कार तानसेन की समाधि के सामने दिया गया था। पुरस्कार प्रमाण पत्र में यह भी लिखा है, 'इस युग का एक गायक जो तानसेन के समान प्रसिद्ध है'। आज भी कई राग तानसेन के नाम पर प्रसिद्ध हैं! मिय्यानी महार, मिय्यानी की तोड़ी, मिय्यानी सारंग, दरबारी, दीपक, बसंत, मेघम हार -! मैंने क्या नहीं कहा? मैंने कौन सा राग छोड़ दिया है जो अनसुना रह जाएगा? जिस तरह मैंने पुराने रागों को नया जीवन दिया है, मैंने क्या किया है? उनके दिल में उदासी छा गई। आज मैं यहां कौन सा राग गाऊं? मोहन-भैरव! मोहन-ललत! मोहन-तोड़ी? मैं ऐसा एक भी राग नहीं बना सका। मैं ऐसा कुछ बनाना भी नहीं चाहता था। अगर मोहनलाल का निधन हो गया, तो कुछ भी नहीं बचेगा! कोई भी शिष्य मेरा नाम जपने को तैयार नहीं हुआ! गुरु का सौभाग्य है कि उन्हें कोई ऐसा

शिष्य मिल जाए जो गुरु का नाम जपकर उनके गीत को आगे बढ़ाए! मैं इतना भाग्यशाली नहीं हूँ।
उसका मन उदासी से भरा हुआ था। वह बस वहीं औंधा लेटा रहा।
सुबह के 4:30 बज चुके थे, फिर भी लोग जाग रहे थे और हिल-डुल नहीं रहे थे।
उन्होंने बीच-बीच में झपकी लेकर गायन के लिए जगह तैयार कर ली थी। सचिव ने भी जोश भरा भाषण देते हुए कहा, 'कितने सारे लोग पंडितजी का गायन सुनने के लिए उत्सुक हैं।' यह किसी भारतीय सभा जैसा माहौल था। लोग एक-दूसरे के करीब बैठे थे।
इससे मेरे मन में उत्साह भी पैदा हुआ। इसने मेरा आत्मविश्वास बढ़ाया। आरक्षित कुंजियों में से एक।
एक तरफ जोधपुर की एक गायिका गाना गा रही थी। उसका पति उसके बगल में एक स्टूल पर टिका बैठा था, उसके पैर नंगे थे। उसके सिर पर राजस्थान के राजपरिवारों जैसी पगड़ी थी। उसने काला जोधपुरी कोट, सफेद शेरवानी पहनी थी और उसके बाल और घनी मूंछें काले रंग से रंगी हुई थीं। उसकी उम्र लगभग 100 साल रही होगी। उसके बाएं हाथ में एक अंगूठी और दाएं हाथ में दो अंगूठियां थीं, जिनमें से एक भारी अंगूठी थी। उसने सोने की चेन पहनी हुई थी। क्या वह शाही परिवार से था? उसके रंग-रूप और चेहरे के हाव-भाव से तो ऐसा नहीं लगता था।
कार्यक्रम के उद्घोषक ने जैसे ही कहा, ‘तानसेन पुरस्कार विजेता पंडित मोहनलाल जी अब मिमयान की तोड़ी प्रस्तुत करेंगे!’ उम्मीद के मुताबिक, पूरी सभा तालियों से गूंज उठी। इससे उत्साह और बढ़ गया। उन्होंने इस राग को अभूतपूर्व स्थानों और समयों में प्रस्तुत किया था। इस राग के रस-थान, रस-पलते, रस-चलन को मुझसे बेहतर कोई नहीं जानता होगा! उन्होंने अपने आत्मविश्वास से सबका दिल जीत लिया। सभा में सन्नाटा छा गया। इस भावना के साथ कि परलोक में समाधि पर सो रहे तानसेन ने भी इसे सुना होगा, वे और भी जोश से गाने लगे। उन्होंने इसे हजारों बार गाया।
उनकी संगीतमय यात्रा एक कुशल नाविक की तरह थी जो समुद्र में नौकायन कर रहा हो और अपने जहाज लिलिया को चलाकर समुद्र की सुंदरता का प्रदर्शन कर रहा हो।
इनमें से प्रत्येक के साथ टिप्पणियों की एक श्रृंखला थी, जो पवित्र स्थान की अनुभूति प्रदान करती और प्राप्त करती थी।

ऐसा ही था। प्रभु सागर की लहरों के उतार-चढ़ाव के साथ-साथ समय का भी एहसास दिला रहे थे। मोहनलाल, सभा में गाने वाले हर कलाकार की तरह, समझ गए थे कि सभा में मौजूद हर किसी के मन में 'अद्भुत!', 'अद्भुत!' का भाव पैदा हो गया है। 'एक गायक को और क्या चाहिए!' वे यही सोचते रहे। जब मलयालम में गाना शुरू हुआ, तो श्रोताओं के दिल की धड़कन की स्वाभाविक लय गायब होने लगी और ताल उनके द्वारा दी गई लय में ढलने लगी, वे इसे अपने मन में महसूस करते रहे। वे लय बदलते हुए जोर-जोर से गाते रहे। फिर भी, श्रोताओं को समय का पता ही नहीं चला! गाना खत्म होने के बाद भी उन्हें ढोल बजाने का मन नहीं हुआ।
जब तक उसका गाना खत्म हुआ, सूर्योदय हो चुका था। तारा इतनी तेजी से टूटा कि उसकी आवाज सुनना मुश्किल हो गया था।
वर्णनकर्ता ने कहा, “मिमी तानसेन का शरीर कब्र तक पहुँच गया होगा। मोहनलाल जी की मृत्यु की खबर सुनकर उनकी आत्मा ने अवश्य ही कहा होगा, ‘वरसम्राट मोहनलाल!’ इसके बाद गूंजी जोरदार तालियों की गड़गड़ाहट कुछ देर तक वातावरण में गूंजती रही।”
होटल लौटकर वह आराम करने के लिए रुक गए। मुझे ख्याल आया कि समुद्र में ज्वार-भाटा आता रहता है। मैं सोचता रहा कि ज्वार उतरते ही मुझमें सबकी दिलचस्पी खत्म हो गई! मैं कितना मूर्ख था! जल्द ही मुझे गहरी नींद आ गई। बीच-बीच में झपकी आती-जाती रही। लेकिन साढ़े तीन बजे तक मुझे ऐसा लगा जैसे मैं पूरी तरह सो गया हूँ। पुरस्कार विजेता कलाकार को उस दिन सम्मेलन में उपस्थित रहना था। लेकिन टिपानी और प्रभु सुबह निकल रहे थे।
उसे उठने में आधा घंटा और लग गया। दाढ़ी संवारने और नहाने की तैयारी करते हुए उसका मन उदास था। मैंने सुबह गाना गाया था, इसमें नया क्या है? वही मुद्रा, वही अलाप, वही ताना! अगर व्यवस्था काम न करे तो क्या होगा! लेकिन इतने सारे लोग तो मंत्रमुग्ध हो गए थे, है ना? वह कथावाचक को - खुद को - पुकार रहा था: तानसेन ने भी मुझे सम्राट कहा था।
अरे! कितने लोगों ने ढोल बजाए! मुझे बाद में याद आया कि अभिवादन और धन्यवाद करने वाले कथावाचकों की भाषा हमेशा बहुत अतिरंजित होती थी। यह समझ से परे था। यह सच है कि लोगों को तोड़ी पसंद आई। उनमें से कई लोग आज पहली बार मेरा गीत सुन रहे थे। कुछ ने मेरे अन्य गीत सुने होंगे, लेकिन तोड़ी उन्होंने पहली बार या कई वर्षों बाद ही सुनी होगी। उन्हें लगा होगा कि यह नया है। मेरी राय में नया क्या था? लेकिन कोई कलाकार हर समय कुछ नया कैसे गा सकता

है? सभी गायक एक ही राग को बार-बार, अपने-अपने पारिवारिक अंदाज में गाते हैं। तो फिर मेरा गीत इतना मशीनी क्यों होना चाहिए?
उसने अपने कपड़े बदले। खाने का समय हो गया था। उसने खाना खाया।
ऑर्डर दिया गया। खाना लाने वाले वेटर के पीछे-पीछे जोधपुर की गायिका आई। बिना कुछ कहे उसने कहा, 'गुजी, पच्चीस-तीस लोग बाहर आपसे मिलने का इंतज़ार कर रहे हैं। आपने दरवाज़े पर 'डू नॉट डिस्टर्ब' का बोर्ड लगा रखा था। मैं भी इंतज़ार कर रही थी। जैसे ही मौका मिला, मैं इस लड़के के साथ अंदर आ गई। मैं आपसे थोड़ी देर बात करना चाहती हूँ। बिलकुल निजी तौर पर! मैं आपको भूल ही गई थी! मेरे मेज़बान पार पार होटल से साढ़े छह बजे कॉन्फ्रेंस हॉल जा रहे हैं। इस होटल में ठहरे हुए दूसरे लोग भी निकलेंगे। मैं इंतज़ार करूँगी। आप भी थोड़ा आराम कर लीजिए। हम बात कर सकते हैं। अगर आपको लगता है कि यहाँ लोगों को परेशानी होगी, तो चलिए इस कमरे में बैठते हैं। हम भी इसी होटल में ठहरे थे।'
तुम मुझे भूल गए हो, इस कविता ने उसकी जिज्ञासा जगा दी। उसने सोचा, 'अब बताओ तुम कौन हो!'
'शाम को सात बजे आप इस सूट में आइएगा। मैं आपको बता दूं। अब लोग आपके आने का इंतजार कर रहे हैं। आप इसे जल्दी से खा लीजिए-' और वह बाहर चली गई।

५
उन्होंने अपना शाम का खाना जल्दी खत्म कर लिया। वह सात बजे आई और उन्होंने उनका अभिवादन किया।
वह उसे कमरे में ले गई। यह दो या तीन बिस्तरों वाला एक आलीशान सुइट था। वह बेडरूम में गया और दरवाजा बंद कर लिया। वह सोफे पर बैठ गया। वह बिस्तर पर बैठ गई। उसने फिर पूछा, 'अभी भी पहचाना नहीं?'
बकुला के मन में उठे उसी सवाल को याद करके वह बेचैन हो गया। उसे थोड़ा गुस्सा भी आया।
‘बिहाग गाते समय मैंने मां-बिहाग नाम धारण कर लिया था। मैंने सोचा, अगर आप आएंगे भी तो मुझे पहचान लेंगे! एक बार तो मैंने कोमल निषाद भी धारण कर ली थी। फिर भी आपको याद नहीं आया?’ उसने फिर सोचा।
इसमें इतनी मुश्किल क्या है? आप सीधे-सीधे खुलकर क्यों नहीं बोल देते? ‘नहीं। मुझे ठीक से बताओ!’ वह हँस पड़ा।
'बीस साल पहले, आप मुंबई में मेरे कमरे में आए थे। वहां एक पुराना हारमोनियम था। मैंने अपने पिता पर गुस्से में आकर एक गलती कर दी थी, और आपने उसे सुधार दिया था।'
इसके बाद भी आपने एक घंटे तक वही गुस्सा दिखाया।
मुझे याद आ गया! ऐसा लग रहा था कि कहीं कुछ गड़बड़ हो रही है, और यह बात समझ में भी आ रही थी। मुझे सब कुछ याद आ गया। उसने उसे फिर ध्यान से देखा। इस बार वह पीली और बेजान लग रही थी। उसके शरीर पर शुद्ध धातु के धब्बे थे। उसका शरीर चमकीले, चमकदार कपड़ों से ढका हुआ था। अब उसने एक भारी चांदी की साड़ी पहनी हुई थी जिस पर सोने और चांदी के धब्बे थे। पच्चीस रुपये
अगर वे मिलते भी हैं, तो गाने के लिए तैयार होने पर भी उन्हें कार्यक्रम नहीं मिलता, इन दिनों में मुलाकात! उसे वह दिन याद आया जब वह अपनी प्यास बुझाने के लिए मुंबई में अपने पति से मिलने जाया करती थी और उसने उसे याद करने की कोशिश की। अब उसे यकीन था कि वह उसे याद करता होगा; लेकिन शायद वह उसे याद करना नहीं चाहता होगा। यह महसूस करके वह हंस पड़ी, 'मैं उस घटना के बारे में अपनी पूरी जिंदगी में किसी को नहीं बता सकती! मुझे पता है कि आपके नजरिए से भी यही बात है। अब, हमारी मुलाकात की वजह से, हम उसे याद कर सकते हैं, बस इतना ही।'

मैंने उस दिन एक घंटे तक आपकी कहानी सुनी। उसके बाद आप चले गए।
तुम मेरे लिए दास थे। मैं मोहब्बत या राधा कृष्ण का दास नहीं था। मैं तुमसे गायन सीखना चाहता था; पर तुम्हें पाता कहाँ? अगर मैंने अपने भाई को बताया होता, तो वो तुम्हें ढूँढ़ लेता; पर गायन सीखना ही था, तो सवाल उठता था: गुज़ारा कैसे करूँ? गायन बेचना ही एकमात्र रास्ता था। इस शहर में मेरे पास इतना गायन कहाँ था कि मैं उसे बेच सकूँ? नहीं तो मुझे अपना शरीर बेचकर पैसे कमाने पड़ते। और अगर ऐसा नहीं भी करता, तो वहाँ तो बड़ा धंधा है! वहाँ तो औरतों और शरीरों का व्यापार भी बेधड़क चलता है! मैं उस शहर को छोड़ने की सोच रहा था, इसलिए हम उदयपुर लौट आए। उदयपुर कहीं बेहतर शहर था। शाम को दस-बीस पर्यटक आते, पत्ते खरीदते और गाने का इंतज़ाम करते। गाना खत्म होने के बाद, हर कोई एक रुपया या कभी-कभी ज़्यादा माँगता। कुछ लोग मुझसे पान माँगते। इसके बदले उन्हें पाँच रुपये मिलते। संक्षेप में, मैं रात ग्यारह से बारह बजे के बीच कमाता था। तबला और हारमोनियम का भुगतान करने के बाद भी मेरे पास पचास रुपये बच जाते थे। रात को सोने के लिए मैं कोई कार्यक्रम करता या नहीं, यह मेरे मन पर निर्भर करता था। जो भी कमाई होती, वह पूरी तरह मेरी होती थी। सच कहूँ तो, तुम्हारे साथ रात बिताने के बाद मैंने कभी रात में कोई कार्यक्रम नहीं किया।
‘क्या यह आपका मेजबान है?’
‘तुम मेरे साथ आओ-जाओ। मैंने तुम्हें गु जी कहा था, है ना?’ एक दिन वह आया। सभी ऋषियों के चले जाने के बाद भी वह रुका रहा। या उसने ऐसा कहा, उसके राजसी वस्त्र देखकर बाकी ऋषि जल्दी ही चले गए। उसने कहा, ‘हम आज रात यहीं रुकेंगे। नहीं तो, तुम हमारे मुख्य काम में लग जाओ।’ मैंने कहा, ‘मैं उस तरह का काम नहीं करता। अगर आप चाहें तो पूरी रात रुककर मेरे गीत सुनिए।’ उसने कहा, ‘ठीक है; लेकिन इन लोगों के विपरीत, हमें ठुमरी, अभिनय आदि जैसी हल्की शैलियाँ पसंद नहीं हैं। क्या तुम मुझसे कोई शास्त्रीय गीत गवाओगे?’ मैं खुश हो गया। मैंने कहा, ‘मैं कोई प्रसिद्ध गायक नहीं हूँ। मैं जितना गा सकता हूँ उतना गाऊँगा।’ रात के दस बज रहे थे। उसने सोचा, ‘क्या मेघम हारा पराजित होगा?’ उसने अपनी पूरी क्षमता दिखाई।
मुझे उसका चेहरा देखकर संतोष हुआ। मैं उसे जान पाया, वह गुस्से की भावना को समझता है, वह संवाद को समझता है। मुझे इससे आगे का विज्ञान नहीं पता। वरना, मैं कुछ और करता।

ऋषिक को ये सब कहाँ से मिलेगा? बाद में, उसने सभी प्रकार के महार सुने। मैंने भी राग मिम्या महार, देश महार, गौड़ महार, सूरत महार, शुमा हार गाए, जितना मुझे उनसे परिचित कराया गया। हाना, मुझे ये सब इतनी अच्छी तरह से गाने की कला कहाँ से आई! हाना को नींद आने लगी। उसने सोचा, 'क्या यह सच है?' मैंने कहा नहीं। 'ठीक है। कल आएगा,' उसने कहा और चला गया। वह एक पैसा भी दिए बिना चला गया! उसके साथियों ने उसका मज़ाक उड़ाते हुए कहा, 'नाटक के राजा दिख गए!'
अगले दिन वे दोपहर करीब बारह बजे आए। दोपहर के इस समय गायक का घर कहाँ होगा? हमारा नृत्य तो शाम के इस समय है! लेकिन दोपहर में मैंने दरवाजा खोला। उन्होंने घोड़ागाड़ी वापस भेज दी और वे अंदर चले गए।
उन्होंने कहा, "मैंने इस भोजन के लिए खाना पैक कर लिया है। खाना बनाने में अपना समय बर्बाद मत करो।"
मैं दोपहर के राग सुनने की इच्छा जताते हुए आया था। मुझे क्या सुनना चाहिए? उन्होंने कहा, 'वृंदावनी सारंग, भीमपाला राग। इसके बाद जो चाहो गाओ।' उनका बोलने का तरीका आदेश देने जैसा था। मैं मना नहीं कर सका। वरना वे मुझे बता देते कि ये सारे राग कहाँ से आए हैं!
मैंने कंधे उचकाते हुए कहा, "तुम इतनी अचानक आ गए! मैं अपने साथियों को कहाँ ढूँढूँ?"
‘साथियों की कोई जरूरत नहीं है। अकेले गाओ। डफली है या नहीं?’
मुझे खुशी हुई कि मुझे कोई ऐसा मिला जो ताम्बो के साथ गाना सुनने को तैयार था। इसके लिए एक मुलाकात तय हुई। ताम्बो ने अपने कपड़े झाड़े, हार पहना और गाना शुरू कर दिया। उन्होंने पुरानी साड़ी पहनी हुई थी, चेहरे पर कोई मेकअप नहीं था, वे बनावटी नहीं थे, उन पर कोई दाग नहीं था, फिर भी वे गा रहे थे। वे हर राग का अर्थ जल्दी सीख रहे थे। मैं भी पूरे उत्साह से गा रही थी। जब उन्होंने वे दो राग पूरे कर लिए, तो मैंने उन्हें सुनाए। जब उन्होंने गाना खत्म किया, तो उन्होंने अपनी जेब से एक सोने की चेन निकाली, जो उनका जोधपुरी कोट था। उन्होंने कहा, 'तुम्हें जाना होगा। काम है। इसे ले लो।' फिर उन्होंने मेरे हाथ में दस सौ रुपये के नोट रख दिए। मैंने झुककर दोनों हाथों से विनम्रतापूर्वक उन्हें स्वीकार कर लिया।
इसे स्वीकार करो। इसके बाद उन्होंने दो और नोट दिए और कहा, 'कल यहाँ आना।'

इसे अपने साथियों को दे दो।’ इतना कहकर मैंने झुककर प्रणाम किया और बिना पीठ दिखाए विनम्रतापूर्वक वापस चला गया। वे चले गए।
मैंने सोचा, ‘राजसाहेब उदयपुर के नहीं लगते! उन्होंने तो अपना परिचय देने की जहमत तक नहीं उठाई!’
‘जोधपुर। मुझे काम के सिलसिले में उदयपुर आना पड़ता है। अगर मैं वापस आया तो यहाँ भी आऊँगा!’ उसने कहा। ‘क्या मैं एक कार माँग लूँ?’
मोहनलाल को राजसाहेब की याद बहुत सजग थी।
उन्होंने आगे कहा, “वे चले गए; लेकिन उस दिन के बाद से मैं उनका इंतज़ार करने लगी। मुझे लगा कि इसके अलावा कोई और रास्ता नहीं था, अगर ऐसा कोई मददगार मुझे सहारा दे, तो मैं गायन का यह पेशा छोड़कर गंभीरता से गाना सीख सकती थी! मैंने हर दिन भगवान से प्रार्थना करना शुरू कर दिया। तीन महीने बाद, एक दोपहर, वे आए। उन्होंने घोड़े से खींची जाने वाली गाड़ी दरवाजे पर रोकी और अंदर आकर बोले, ‘मैंने तुम्हारे नाम के बारे में सोचा भी नहीं था और तुमने भी इसका ज़िक्र नहीं किया था।’”
‘जौहरबाई.’
हम्म। अब मेरी बात सुनो। इस गाँव में जागीर को लेकर हमारा विवाद समाप्त हो चुका है। इसके बाद हमारे यहाँ दोबारा आने की कोई संभावना नहीं है। अब हम राजा नहीं हैं। हम राजा के वारिस नहीं हैं और न ही राजा के प्रत्यक्ष वारिस हैं। फिर भी, हम राजपरिवार से संबंधित हैं। यदि आप जोधपुर आने को तैयार हैं, तो हम आपको पवन बनाकर रखने को तैयार हैं। क्या आप जानते हैं कि पवन होने का क्या अर्थ होता है?
"मेरी मां उदयपुर की एक दरबारी थीं। राजपरिवार ने मेरे जीवन में यह समय लाया।"
चिंता मत करो। मैं तुम्हारे नाम पर घर बनवाऊँगा। मैं तुम्हें दो दुकानें भी दूँगा जिनसे किराया निकल जाएगा। तुम्हें गहने भी मिलेंगे। इसके अलावा, मैं अपने जीवनकाल में तुम्हारे सभी खर्चे उठाऊँगा। पुजारी को भी पण्यित के प्रति यही भाव रखना चाहिए। उसे निरंतर गायन का अभ्यास करते रहना चाहिए। यदि तुम जोधपुर में किसी गुरु से गायन सीखना चाहते हो, तो ऐसा ही करो। व्यवस्था की जा सकती है। गाना सीखने के बाद, आप चाहें तो कार्यक्रम बाहर भी कर सकते हैं।

पवित्र आत्मा की सीमाओं का ध्यान रखना आवश्यक है। इस बारे में आपकी क्या राय है?
मुझे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ! मुझे ऐसे समर्थन की उम्मीद थी! लेकिन मुझे यह उम्मीद नहीं थी कि वे इतना समर्थन देंगे। मेरे मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला।
उन्होंने कहा, 'अगर तुम चाहो तो इस बारे में सोचो और मुझे बाद में बताना।' मेरे मन में जो सवाल आया, वह यह था, 'लेकिन क्या रानी साहब मुझे अस्वीकार नहीं कर देंगी? क्या राजा साहब की दुनिया में उथल-पुथल नहीं मच जाएगी?' "रानी साहब एक प्रतिष्ठित राजपूत परिवार से आती हैं। उन्हें राजपरिवार के रीति-रिवाजों और परंपराओं की अच्छी जानकारी है। आप ऐसा कुछ भी नहीं करेंगे जिससे उनके सम्मान और गरिमा को ठेस पहुंचे।"
‘यह कौन बड़ा आदमी है जो जोधपुर में गायन सिखाने आता है?’ मोहनलाल ने सोचा। ‘गाने में गीत तो है, लेकिन कलाकार कम हैं। यह एक ऐसी कला है जिसे कलाकारों से ही सीखना पड़ता है! मैं गायन सीखने के लिए सप्ताह में दो बार ट्रेन से जयपुर जाया करता था। चार साल तक। अगर इस गीत को जीवित रहना और आगे बढ़ना है, तो इस गांव में गायन के कई कार्यक्रम होने चाहिए, इस गांव में प्रामाणिकता होनी चाहिए। इसी वजह से मेरा गीत एक निश्चित समय से आगे नहीं बढ़ पाया।’
"लेकिन तुम अच्छा गाते हो!" उसने हंसते हुए पेशेवर अंदाज में सिर हिलाया। ‘मैंने आपको मुंबई में देखा था। मैं आपका चेहरा नहीं भूल सका। बाद में, मैंने अक्सर अखबारों में आपकी तस्वीरें देखीं। हाल ही में, आपके गिरवी रखे गए तंबुओं के बारे में अखबारों में बहुत कुछ छप रहा था। हमारे राजसाहेब ने मुझे वह दिखाया।’
वह कहने ही वाला था कि उसने अपना डफली पच्चीस रुपये में गिरवी रख दिया था, और वही पैसा वह तुम्हारे पास लाया था; लेकिन उसने चुप रहना ही बेहतर समझा। उसने सोचा, 'अब से मैं ही बोलूंगा। मैंने तुम्हें सब कुछ बता दिया है। तुमने कुछ नहीं कहा। मुझे बताओ। तुम्हारे कितने बच्चे हैं?'
‘बच्चे!’ यह कहते हुए वह आत्मचिंतन में डूब गए। दो मिनट इंतजार करने के बाद, उन्होंने कहा, ‘चिंता मत करो। मेरे भी कोई बच्चे नहीं हैं। जो छात्र हमें अपना नाम बता रहे हैं, वे ही हमारे बच्चे हैं! क्या आप जानते हैं कि मुझे क्या उम्मीद थी? आप इस समारोह के सूर्य हैं! आपके सभी छात्र अवश्य आए

होंगे। जब आप गा रहे होंगे, तो आपके दो प्रमुख छात्र आपके पीछे डफली लेकर बैठेंगे! वे बीच-बीच में गायक का साथ देंगे। यदि आप उन्हें यह अवसर देंगे, तो वे कोई न कोई डंडा थाम लेंगे। लोग मानेंगे कि पंडित मोहनलाल जी की शिष्य परंपरा बढ़ रही है, कि उनकी गायन शैली जारी रहेगी! मेरे पीछे बैठे दोनों छात्र यही कह रहे थे। इतने महान गायक! उन्हें इतना बड़ा पुरस्कार मिला है! लेकिन उनके साथ एक भी छात्र नहीं आया! क्या उन्होंने छात्रों को तैयार नहीं किया? फिरना आगामी कार्यक्रमों के लिए छात्रों को तैयार करने में संकोच नहीं करतीं। क्या आप बच्चों में से किसी को गाना पसंद नहीं है? क्या आप में से किसी ने सीखा नहीं है?’
उसे कोई ऐसा जवाब सूझ नहीं रहा था जिससे वह इस मुश्किल हालात से निकल सके। वह बस उसे देखता रहा। उसने आगे कहा, 'मुंबई से जोधपुर बहुत दूर है! नहीं तो मैं महीने में एक बार मुंबई आती और आपसे गाना सीखती! लेकिन आप तो बहुत व्यस्त कलाकार हैं। इसी वजह से मुझे लगा कि कुछ ठीक नहीं होगा, इसलिए मैं चुप रही। इतनी यात्रा किए बिना सीखने की मेरी उम्र कितनी थी?'
वह और भी बोल सकती थी। उसका दिल दुखने लगा। वह बोल भी नहीं पा रहा था। वह उसके बोलने को बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था। उसे लगने लगा कि वह उसे चोट पहुँचाने आई है। उसके मन में चार विचार भी आए। इस बार उसने लड़की को देखा और कहा, 'ओह! आपसे मिलकर खुशी हुई। वहाँ एक कार्यक्रम चल रहा है। मुझे जाना चाहिए। नहीं तो लोग उसे 'गिविथ' कहेंगे।'
उसने बार-बार सिर झुकाया। वह वहां से चला गया और राजा के पास आया।

६
वह सभा के आगे वाले हिस्से में रेलिंग पर बैठा था। सभी कलाकार मंच पर थे। आया-आया हाथ जोड़कर उनका अभिवादन कर रही थीं। दरभंगा से कालीकाप्रसाद तिवारी मंच पर आए। उनकी उम्र साठ के आसपास होगी। मोहनलाल भी लगभग उतने ही उम्र के होंगे। ध्रुपद धर्म के गायक। दो विद्यार्थी डफली बजाने बैठ गए। एक तीस साल का था, दूसरा पच्चीस साल का। उनके पीछे दो और लड़कियां और एक लड़की बैठी थीं। वे सभी ध्रुपद गायकों के अनुरूप गंभीरता से बैठ गईं। कथावाचक, जो अभिनय कर रहा था, ने तिवारी की गायन में सफलता के बारे में सुनाते हुए कहा, 'उनके दाहिनी ओर,
बाईं ओर बैठे चिरंजीव और उनके शिष्य कालिंदी प्रसाद तिवारी, आप गुल के शिष्य हैं। ये दोनों आप गुल के साथ गायन में सहयोग कर रहे हैं। इनके अलावा, पीछे बैठे सभी लोग भी तिवारी के शिष्य हैं।
अन्य सभी गायकों की तरह, मोहनलाल को भी ध्रुपद गायन के प्रति अपार आदर और स्नेह था। इसे तो तानसेन ने गाया था! यही तो गुण है, वामी हरदास ने कहा था। उन्हें यही सिखाया गया था। वे न केवल इस परंपरा से भलीभांति परिचित थे, बल्कि उन्हें इसकी गहरी समझ भी थी।
उन्हें दूल्हे की गंभीरता और हर दूल्हे के प्रति उनके दृढ़ संकल्प से प्रेम था। इसी गंभीरता के साथ, दूल्हे के दोस्त भी धैर्य और गंभीरता से दूल्हे की रस्में निभाने लगे। उसी क्षण, उन्होंने अपने बेटे को गाने का मौका दिया। लड़का भी तैयार था। दूल्हों की क्या पवित्रता है! जैसे कोई नाव लहरों की दिशा में आगे बढ़ती है, वैसे ही उनका दृढ़ संकल्प पिता के नाम की रक्षा करेगा!
इसके बाद तिवारी ने शिये को दूसरा मौका दिया। उसने भी उत्साह से गाना शुरू कर दिया। दूल्हा
नदी में पानी का बहाव बहुत तेज़ था। ऐसा प्रतीत होता था कि यह प्रशिक्षण शियाओं द्वारा कराया गया था।
दूसरी ओर, कोई आपस में धीमी आवाज़ में बात कर रहा था, 'देखो, ध्रुपाद की साधना कितनी कम हो गई है, जबकि उसकी आवाज़ स्त्री जैसी है!'
मोहनलाल मुड़ा। उनके पीछे जोहरबाई और उनकी मेज़बान बैठी थीं। जोहरबाई ने उन्हें धीरे से बोलने का इशारा किया। मोहनलाल ने सोचा कि लड़का स्वतंत्र

कार्यक्रम करने के लिए पूरी तरह तैयार था, और वह भी काफी तैयार थीं। जोहरबाई को तीन सवाल याद आए, 'कितने बच्चे हैं? क्या उनमें से किसी को गाना पसंद नहीं है? आपने ऐसा छात्र क्यों नहीं तैयार किया जो आपका नाम याद रख सके?'
मुझे याद है, पाँच बच्चे थे; लेकिन उनमें से किसी ने भी मेरा हाथ नहीं छुआ! मैंने उन्हें अपने हाथों में लेने की कोशिश की, लेकिन मैं आया कहाँ से था? जीवन की वास्तविकता का सामना पहली बार स्पष्ट रूप से हुआ।
मैं तुम्हें पाँचों में से पहले का नाम भी नहीं बता सकता। वो भी मुझे मेरा नाम नहीं बता पाएगा! इस विचार ने मोहनलाल को पहली बार दुखी किया। हालाँकि उसके एक बेटे की यादें चिरपुर में एक बढ़ई दंपत्ति के बेटे के रूप में पली- बढ़ी थीं, लेकिन उसे अब तक कभी इस बात का अफ़सोस या दुख नहीं हुआ था। अगर मैं अब उससे मिलूँ और उसे बताऊँ कि मैं उसका पिता हूँ, तो क्या वो सुनेगा? क्या तुममें उसे जाने देने के लिए कहने का साहस है? इस विचार के साथ, उसके भीतर एक तड़प उठी। ध्रुपद शैली में बागेश्री के गीत धीमी गति से बज रहे थे। उसके मन में उस लड़की की याद आ गई जो लड़के की उम्मीद और उसकी बेलगाम वासना के साथ उसके करीब आई थी। लड़के की उम्मीद के साथ-साथ शरीर की भूख भी थी, और दोनों मिले थे। मेरी वासना का प्रचंड प्रवाह भी शांत हो गया। अब वह फिर से गीत पर ध्यान केंद्रित कर सका।
इस बच्चे की याद इतनी दर्दनाक क्यों होनी चाहिए? जीवन की हर घटना इसी बात की याद दिलाती है।
यदि नैतिकता का बांध ही जीवन की धारा को अवरुद्ध करने लगे, तो वह अपनी स्वाभाविक गति से कैसे बह पाएगी? कला की नाव को ऐसी धारा में कैसे चलाया जा सकेगा? क्या वह हर कदम पर चट्टानों से नहीं टकराएगी? फिर नाव चलाने में किस प्रकार का आनंद रहेगा?
बाकी चार मेरे बच्चे हैं जो सामाजिक नैतिकता के दायरे में आते हैं। अगर मेरा उनसे सही रिश्ता होता और वे मेरे साथ बड़े होते, तो उनमें से एक-दो गायक बन जाते। बकुले को आज भी गाने का बहुत शौक है। अगर उसे बचपन से सिखाया जाता, तो वह अच्छी तरह तैयार हो जाती। मेरे बच्चे मेरे पास आए और मुझे अकेला छोड़ गए! ये कैसी माँ है! वह गुस्से में आ गया। मैं उसे उमा कहना चाहती थी! मैंने किशन को दो लाख रुपये दिए। अगर वह दो लाख रुपये और भी मांगता, तो मैं उसे दे देती! मैं पहल करके बकुले से शादी करूँगी, मैं दान

करूँगी! अपनी बेटी की शादी से पहले, मैं उसे उस बेटे की माँ क्यों कहूँ जो अपने अहंकार के कारण मुझे छोड़कर जा रहा है? उसे यह सोचकर अच्छा लगा। स्टेशन पर टेलीग्राम पहुंचा और तिवारी का चेहरा पीला पड़ गया। बाईं ओर मुड़कर उन्होंने कहा, 'बच्ची, यहाँ डफली लाओ, चलो देखते हैं!' डफली बजाने वाले हमेशा ऐसा ही करते हैं! आधे घंटे बाद, वे इसे आपके कंधे पर टिकाकर बजाना शुरू कर देते हैं। उन्हें लगता है कि डफली की आवाज़ उनके कानों के लिए है, गायकों के लिए नहीं! मुझे भी कभी-कभी ऐसा ही गुस्सा आता है; लेकिन मैंने कभी अपने गुरु को 'बच्ची!' या 'बेटी' नहीं कहा। यह बात मेरे मन में कभी आई ही नहीं। अगर किसी दूसरे गाँव में कोई कार्यक्रम होता है, तो इस गाँव की युवा कलाकार या उस गाँव की उत्साही महिलाएँ आगे आ जाती हैं। बहनजी ने भी ऐसी महिलाओं को कभी 'ना' नहीं कहा। मैंने पढ़ाने आए किसी भी बच्चे को कभी 'ना' नहीं कहा; लेकिन लड़कियों के मामले में मैंने जितना उत्साह दिखाया, उतना उत्साह बच्चों के मामले में नहीं दिखाया। बाद में मुझे याद आया कि लड़कियों में भी आत्म-अनुशासन की कोई प्रवृत्ति नहीं थी, हमने उन्हें ठीक से सिखाया भी नहीं! शायद इसीलिए कोई शिष्य या ऐसे शिष्य नहीं थे जो हमें अपना नाम बताते। कितनी लड़कियाँ गाँव के प्रति पूरी तरह समर्पित होंगी? विवाह, पति, बच्चे और सांसारिक जीवन में डूबी ये लड़कियाँ हमें गुरु का नाम कैसे बता सकती हैं?
इस क्षण, उसे मधु की याद तीव्र रूप से सताने लगी। उसने चंपाशी के साथ एक तस्वीर ली थी।
तो वो इसके लिए तैयार थी। छोड़ो ये बात, अगर उसने उसे मंदिर में फूलों की माला पहनाकर ये वादा भी किया होता कि वो किसी और औरत पर बुरी नज़र नहीं डालेगा, तब भी वो मुंबई में ही रहती, उससे गाना सीखती। उसे राष्ट्रीय स्तर की कलाकार के रूप में, एक गायिका के रूप में प्रसिद्धि मिलती।
मेरा नाम लेकर! लेकिन तुम क्या करोगे? मुझे रोने का मन हुआ और मैं चली गई। इसके बाद से, मुझे अपने पति को धोखा देने का जुनून सवार हो गया है...
क्या उसे पागल कहा जा सकता है? यह सवाल पहली बार उसके मन में उठा। असावरी मंदिर की दीवार पर उसने जो मानसिक यातना झेली थी, वह शायद सचमुच की थी।
मुझे यह समझना चाहिए था और उसे बहुत ध्यान से पढ़ाना जारी रखना चाहिए था। वह इस साल अच्छी तरह तैयार हो जाती। दो-तीन साल में वह एक महान गायिका बन जाती जो पूरे देश में गुरु का नाम गाती। उसके नैतिक अहंकार को तोड़ने का

मेरा विचार ही उसके शिक्षण को रोकने का कारण बना। अगर वह दिल से खुद को 'बा ची' या 'बेटी' कह पाती, तो रिश्ता कितना सहज हो जाता! सब कुछ कितना आसान हो जाता। पढ़ाना भी बहुत आसान हो जाता!
वह इन विचारों की ओर विचित्र रूप से आकर्षित महसूस कर रहा था।
तिवारी एक मूर्तिकार की तरह बैठे थे, राग को ऐसे गढ़ रहे थे मानो कोई मूर्ति बना रहे हों। मैंने सोचा, 'यह तो बिल्कुल तानसेन की शैली है। तानसेन ध्रुपद शैली में गाते थे और उन्होंने गाना शुरू कर दिया। क्या उन्होंने मुझे हंसाने के लिए ऐसा किया? मैं तो तानसेन का उत्तराधिकारी हूं।'
क्या तुम उसे मारना चाहते थे? लेकिन हमें कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखानी चाहिए। शायद वह...
आप शायद यह सुझाव दे रहे होंगे कि आम आदमी पार्टी के बजाय मोहनलाल को तानसेन पुरस्कार क्यों दिया गया। क्यों नहीं, गाना तो गंभीर है! शायद यह सब सिर्फ दिमागी खेल नहीं है? कम से कम ध्रुपादवाला तो हमेशा यही कहते हैं। उनका गाना सुनने और कौन आएगा? दूल्हे की कोई चंचलता नहीं, कोई चमक नहीं! सिर्फ वेदघोष जैसी गंभीरता! शुरू से अंत तक एक जैसी! इस बार तो यही हमारा घर है! बाकी समय में मन को लुभाने के लिए और कुछ नहीं है। जो लड़कियां इसे सीखने आती हैं, वे इसे 'बा ची-बेटी' और क्या कहेंगी?! हर किसी को इस सच्ची कला में रुचि होनी चाहिए। इन सभी रुचियों में कम से कम थोड़ी सी सुंदरता की समझ तो होनी ही चाहिए। ध्रुपादवाला सुंदरता के बारे में क्या ही समझते हैं, हा हा! मुझे इन विचारों से संतुष्टि मिली।
इस गायक का आखिरी गाना 'सु हाई' था। उस समय भोर हो रही थी। गाना आधा सुनने के बाद वह होटल आया और सो गया। उसे काफी देर तक नींद नहीं आई।
हिंदुस्तानी संगीत में हर कोई खुद को तानसेन परंपरा का हिस्सा मानता है और उसे वटला कहता है। अब आप अपना नाम बताएँगे? मैं भी एक परिवार का संस्थापक हूँ।
नहीं। उन्हें जाने दो, मैं तीन-चार नाम भी नहीं बता सकता जो पूरी कहानी बयां कर सकें। मेरी जानकारी के बिना ही यह अफवाह फैल गई है कि 'मोहनलाल लड़कों को नहीं पढ़ाते'! क्या यही वजह है कि काबिल छात्र मेरे पास नहीं आते? शायद लड़कों के माता-पिता अपने बेटों को मेरे पास इसलिए नहीं भेजते क्योंकि उन्हें डर है कि वे बिगड़ जाएंगे? लेकिन लड़कियां तो आती हैं! ऐसा नहीं होना चाहिए। इस विचार से मुझे कुछ हद तक संतोष मिला।

एक कलाकार को कैसा होना चाहिए? यदि वह संत नहीं है, तो उसे कला का आनंद नहीं मिलेगा।
क्या यह संभव है या नहीं? – जब मैं इस बारे में सोच रहा था, तभी मेरी नज़र एक चीज़ पर पड़ी।
रात में वह इधर-उधर घूमता रहा और तानसेन की समाधि के पास बैठ गया। सड़क के उस पार गायन कार्यक्रम चल रहा था; लेकिन संगीत की आवाज़ इतनी तेज़ थी कि उसके कानों को कोई तकलीफ़ नहीं हुई।
इससे मुझे याद आया कि मैं इससे पहले कभी तानसेन की समाधि के पास नहीं बैठा था।
उन्हें संगीत का इतना ज्ञान कहाँ से मिला? क्या उन्हें यह ज्ञान जन्म से ही प्राप्त था? या उन्होंने बहुत अभ्यास किया? अभ्यास क्या होता है? क्या मैंने बहुत अभ्यास नहीं किया? मैं अब भी करता हूँ, है ना? मैंने कितना भी सोचा, मुझे इसका जवाब नहीं मिला।
देर रात समारोह के अधिकारी उन्हें ढूंढते हुए आए। ‘जी हां, आप यहीं हैं! अब डागर बंधुओं का गायन शुरू होने वाला है। सभी का मानना है कि आपके हाथ पर माला पहनाकर आपका स्वागत करना उचित होगा। क्या आप आ रहे हैं?’
वह उठ खड़ा हुआ। दोनों को माला पहनाकर और उनका अभिवादन करने के बाद, वह लोदा पर सहारा लेकर सामने आरक्षित सीट पर बैठ गया। शू पा के विशेषज्ञ तानसेन शैली में जप करते हैं: "वाट:ला! आत! आत देत बापदे!" वह उनका गीत सुनने लगा।
इस गीत को सुनकर मुझे दीपक राग के संदर्भ में तानसेन के गीत की याद आ गई। तानसेन जानते थे कि यदि वे दीपक के क्रोध को पूरी तरह से दूर कर दें, तो वे अग्नि से नहीं मरेंगे।
इसी वजह से वह राग गाने में हिचकिचा रहा था; लेकिन सम्राट अकबर ने उसकी बात नहीं सुनी।
तानसेन ने अपनी पुत्री सर्वती और बहन पावती को मेघराग राग सिखाया। उन्होंने महल के सामने मैदान में दीपक राग गाना शुरू किया और दोनों बहनों ने अपने-अपने घरों में बैठकर मेघराग राग गाने का निश्चय किया। इस चमत्कार को देखने के लिए हजारों लोग जमा हो गए थे। दीपक राग शुरू होते ही वातावरण का तापमान अत्यधिक बढ़ गया और राजा और वहां मौजूद लोग पसीने से तरबतर होने

लगे। राग के दूसरे स्वर तक पहुंचते-पहुंचते तानसेन की आंखें शंख की तरह लाल हो गईं। तीसरा स्वर शुरू होने ही वाला था।
इसी बीच, शरीर में आग लग गई। चौथे दिन, आग चारों ओर फैल गई और लोग इकट्ठा हो गए, दरबारी, स्वयं राजा – सभी इधर-उधर भागने लगे। उसी समय, तानसेन दौड़ते हुए घर आए। इस दौरान, सरस्वती और पावती मेघराग की पूजा पूरी कर चुकी थीं और राग का जाप करने लगी थीं। तानसेन की हालत देखकर पावती ने बादल को और घना कर दिया। कुछ ही क्षणों में, आकाश काला हो गया। पूरा शहर अंधेरे में डूब गया। बिजली और गरजने की आवाजें गूंजने लगीं।
रानी ने राग का एक और स्वर लगाया। आकाश में बादल घने हो गए और बारिश शुरू हो गई। तानसेन का जलता हुआ शरीर शांत हो गया, पूरा जलता हुआ शहर भी शांत हो गया। इस घटना के बाद, तानसेन एक महीने तक अपने घर में रहे। उनकी जली हुई त्वचा को सामान्यतः ठीक होने में कुछ दिन लगे। इसके बाद, उन्होंने कभी भी दीपक राग का पूर्ण प्रदर्शन नहीं किया। वे केवल उसका संक्षिप्त परिचय देते थे।
उन्होंने इस कहानी के कई संस्करण सुने थे, जो पूरे देश में लोकप्रिय थे। उन्होंने इसे पहली बार हरि की पौड़ी से भिक्षा मांगते समय सुना था, हीरा मठ जाने से पहले। गीत की प्रत्येक पंक्ति कहानी के किसी न किसी पहलू को बयां करती है।
उन्होंने राजसाहेब से पूछा था, 'इस कहानी का सही अर्थ क्या है?'
उन्होंने कहा था, ‘देखो, संगीत मूल रूप से एक योग अभ्यास है। योग-’
कर्म के माध्यम से पंच तत्वों को प्रभावित करना आसान है। यदि संगीत योग में इस स्तर की निपुणता प्राप्त कर ली जाए, तो उस विशेष राग से जुड़ी आत्मा का आह्वान करना संभव है। शास्त्रों में इसका उल्लेख है।
तानसेन द्वारा दोपहर में रात्रि राग गाने और दिन के राग से रात्रि को रोशन करने जैसी कहानियाँ सुनते हुए, उन्हें विश्वास था कि ये सच्ची कहानियाँ हैं जो कवि की सच्ची भावनाओं को व्यक्त करती हैं; लेकिन अब, तानसेन की समाधि की उपस्थिति में, उन्हें दृढ़ता से महसूस हुआ कि गायन एक मंत्र की तरह योग का एक प्रभावी रूप होना चाहिए!
पाहते दगरबंधु द्वारा तोड़ी का गायन करने के साथ कार्यक्रम समाप्त होने के बाद, सभी सिंहासन हटा दिए गए। वे पु हा तानसेन की समाधि पर गए। अब,

प्रणाम करते हुए, याना ने मौन प्रार्थना की, 'कृपया इस संगीत की योगा-क्षति मेरे गायन को भी प्रदान करें!'
उसी क्षण मेरे मन में एक विचार आया। यही तानसेन के गीत की शक्ति है।
मैं गुरु वामी हिरदास की वजह से यहाँ आया था। वे महज़ एक गायक ही नहीं थे, बल्कि एक महान योग साधक भी थे! लेकिन मैं यहाँ इस सांसारिक राजा राजसाहेब की वजह से भी आया था... हालाँकि वे योग की बातें कर रहे थे, लेकिन वे स्वयं योग के साधक नहीं थे। वे शिव मंदिर में बस गा रहे थे; लेकिन इसके पीछे भी कोई आध्यात्मिक कारण नहीं था। गुरु
इसी वजह से अली खान साहब के दांत फंस गए हैं!
मैं यहाँ तक आ चुका हूँ। मैंने तानसेन की समाधि पर श्रद्धांजलि अर्पित की है। मैं वृंदावन भी गया हूँ।
वामी हिरदासा के मंदिर के दर्शन क्यों न करें?
या फिर हेरात से मथुरा जाने वाली कितनी ट्रेनें हैं? वहां से मथुरा की दूरी छह या सात मील है।
होटल गया। नहाया और काम खत्म किया। कार्यक्रम अधिकारियों को सौंप दिया गया।
उन्होंने अपने बदले हुए कार्यक्रम की घोषणा की। अंतिम समय आ गया।

७
घनी तुलसी की झाड़ियों के बीच एक खाली जगह। दाईं ओर यमुना नदी। मंदिर में।
वामी हिरदास की प्रतिमा। मंदिर में तीर्थयात्रियों का कोई शोर नहीं है। बाहर इस दुनिया में।
इस मंदिर में गुरु का नाम महत्वपूर्ण नहीं है, यह मंदिर तानसेन मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है। अन्य तीर्थ स्थलों की तरह वृंदावन में भी बहुत से तीर्थयात्री आते थे। पांडवों द्वारा बहुत हिंसा की गई थी। व्यापारियों ने कई लोगों पर हमला किया था। चारों ओर माताओं का शोरगुल था। इसी कारण मोहनलाल को इस मंदिर में बहुत शांति मिली। वे वहां एक घंटे तक बैठे रहे। फिर पास के एक होटल में अपने कमरे में जाकर सो गए। सुबह वे यमुना नदी के किनारे गए। वहां कृष्ण ने गोपियों के वस्त्र एक वृक्ष पर छिपा रखे थे, इसलिए वे संगकारा की ओर से आ रहे वृक्ष के चारों ओर से घूमे। दिन इसी प्रकार बीत गया।
तीसरे दिन भावा सुबह जल्दी उठ गया। उसने घड़ी देखी। सुबह के 3:30 बज रहे थे। हिरदास मंदिर जाना चाहता था। चेहरा धोने के बाद वह अंधेरे में बाहर निकल गया। मंदिर पहुँचते ही उसे एक आवाज़ सुनाई दी। कोई मंदिर में स्नान कर रहा था।
पूरी दुनिया बंटी हुई है, क्या हिरदास में वामी की आत्मा नहीं है? कदमों की आहट सुने बिना...
वह मंदिर के पास गए और दसवें स्थान पर बैठ गए। अंदर, कोई वास्तव में वरसाधना कर रहा था। इसकी भी एक विशेष विधि थी। दसवां स्थान वरों के आकार या सीमा के अनुसार नहीं था। साधना एक विशेष लय में लंबे ओंकार का जाप करके की जाती थी। प्रत्येक ओंकार नाभि से शुरू होकर मस्तिष्क तक लंबे समय तक चलता था। षड्ज से शुरू होकर बारह वरों का जाप किया जाता था, प्रत्येक वर के लंबे ओंकार का जाप किया जाता था। मन्द्र षड्ज तक पहुँचने के बाद, प्रत्येक वर का ओंकार में जाप किया जाता था, और बारह वरों के बाद, मध्य शतक में स्थित षड्ज तक पहुँचा जाता था। वहाँ से, मध्य शतक में स्थित बारह वरों को उसी प्रकार लिया जाता था। इसके बाद, तारा शतक में स्थित बारह पैद आते थे। इस प्रकार, मन्द्र षड्ज से तारा षड्ज और तारा षड्ज से फिर से मन्द्र षड्ज तक का चक्र पूरा करते हुए, एक महान ओंकार होता था। प्रत्येक वर एक पाक था। उस समय

रागों के उल्लंघन की कोई गुंजाइश नहीं थी, और रागों के प्रति कोई जागरूकता भी नहीं थी। गंध की तीव्रता में भी कोई अंतर नहीं था। अगर हम यह भी मान लें कि प्रत्येक राग कम से कम एक मिनट का था, तो एक चक्र में एक मिनट से अधिक समय अवश्य लगा होगा। उन्होंने ये चक्र शुरू किए और मोहनलाल को यह पता नहीं था कि कितने चक्र थे। उन्होंने भोर में अपनी वर्षाधना पूरी की। इसके बाद, पूर्ण सन्नाटा छा गया! यह पहले रागों का क्रम था। इसमें कोई विशिष्ट राग दिखाई नहीं दे रहा था। सभी रागों का अभ्यास ही इन सभी रागों का आधार था। संगीता को वह कमरा बहुत पसंद आया और उन्होंने राजसाहेब के शिव मंदिर में ध्यान करने के अभ्यास का अनुसरण किया।
मुझे याद आ गया। नहीं! यह ओमकारा अभ्यास इससे कहीं अधिक गहरा है! सूर्योदय हुआ। पूरा इलाका सूर्य की रोशनी से जगमगा उठा। उसी समय, ध्यान कर रहा व्यक्ति मंदिर से बाहर आया। वह एक भिक्षु था। उसके बाल घुंघराले क्यों थे? उसकी उम्र लगभग चालीस वर्ष रही होगी। उसकी कमर पर एक पुराना कपड़ा और कांच का टुकड़ा बंधा हुआ था। उसके माथे पर लगा मरहम सूखकर गिर गया था।
वह झट से खड़ा हो गया और उसके पैर पकड़ लिए। उसकी निगाहें उसकी नाक पर टिकी हुई थीं।
वह उसकी ओर मुड़ी। मोहनलाल को समझ नहीं आया कि क्या कहे। वह चला गया। कहाँ गया?
मुझे तो उसे देखने जाने की भी इच्छा नहीं थी।
वे दिनभर मोहनलाल के ओंकार में लीन रहे। उनका ध्यान हमारे मंदिर में किए जा रहे ध्यान से कहीं अधिक गहरा था और इतना शक्तिशाली था कि उन्हें अतीत का दर्शन हो रहा था! बिस्तर पर लेटने पर भी उन्हें नींद नहीं आ रही थी। उन्होंने रात को जल्दी भोजन किया और सो गए। वे सो गए; लेकिन आधी रात को ओंकार की ध्वनि उनके कानों में बाढ़ की तरह गूंजी और वे जाग गए। उन्होंने घड़ी देखी, साढ़े बारह बज रहे थे। वे उठे, अपनी आँखों में पानी डाला और हिरदास मंदिर की ओर चल पड़े। आकाश में हल्की चाँदनी थी। अँधेरे में, वृक्षों द्वारा नष्ट किया गया वृंदावन नष्ट हो रहा था, और इस प्रकाश में, मूल वृंदावन का सृजन हो रहा था। यमुना, कृष्ण, राधा, गोपियों का नक्षत्र, कृष्ण की बाँसुरी - ये सब उनके सामने साकार हो रहे थे। जैसे ही वे तुलसी के वृक्षों के बीच मंदिर पहुँचे, उन्होंने महसूस किया कि उनका दृश्य भी गायब हो गया है और वातावरण ओंकार की ध्वनि से भर गया है।

यदि हांजे की वर्षाणा पूरी रात चलती रही तो वह कल की तरह ही कदमों से फिर से आगे बढ़ेगा।
वह बैठ गया। यह बताने की कोई आवश्यकता नहीं थी कि उसके प्रत्येक ओंकार ने कौन सा वरदान दिया था। यद्यपि रणभर को अपना वरदान भी इन वरदानों में शामिल करने का प्रलोभन हुआ, पर उसने स्वयं को रोक लिया। क्योंकि ऐसा प्रतीत हुआ कि इससे उसकी परम अवस्था में खलल पड़ेगा और वह क्रोधित हो जाएगा। इसी कारण वह चुपचाप उनके वरदानों को सुनता रहा, उनकी भावनाओं में लीन रहा।
पिछले दिन की तरह, इस बार भी सुबह-सुबह उनके शुभ अनुष्ठान पूरे हुए। कुछ देर तक मंदिर में सन्नाटा पसरा रहा। वे ठीक उसी समय बाहर आए जब सूर्य अस्त हो रहा था।
उन्होंने कल की तरह ही प्रणाम किया। उन्होंने नासिकाग्रह की ओर देखा। मैंने मुड़कर पूछा, "क्या आप गायक हैं?"
‘जी हां। मेरा नाम मोहनलाल है!’ इस वर्ष के तानसेन पुरस्कार विजेता का नाम याद आया।
लेकिन मैंने वो शब्द कहने से परहेज किया। एक पल के लिए मुझे लगा कि मैंने सही किया है। अगर मोहनलाल चले भी जाते, तो भी वे समझ जाते। गायन जगत में ये नाम तो जाना-पहचाना नहीं है, ये कौन है? लेकिन बाद में मैंने सोचा, इस सवाल का जवाब, उनके विचार से, सिर्फ हां या ना था। वहां नाम लेने की कोई जरूरत नहीं थी। नाम का इस पर कोई असर भी नहीं दिख रहा था।
‘तुम कल सुबह आए थे। तुम देर रात भी आए थे। मैंने इस स्थान को एकांत में शुभ अनुष्ठान करने के लिए चुना है।’
"अगर आप किसी मुसीबत में हैं, तो कृपया मुझे माफ कर दीजिएगा!"
"रहने दो। लेकिन इसके पीछे मत पड़ो।"
“अगर आपकी इच्छा हो तो मैं नहीं आऊंगा। मैंने सोचा था कि आपके गायन को सुनकर मैं संगीत की आंतरिक शक्ति को समझ सकूंगा। इसीलिए मैं आया हूं। अगर आप मुझे अपना शिष्य स्वीकार कर लें तो मैं आपका आभारी रहूंगा!”
मैं संगीत का अभ्यास नहीं करता। यह तो बस योग का अभ्यास करने का एक तरीका है।
“मैं यही तो कह रहा हूँ। मैं संगीत की आंतरिक शक्ति सीखना चाहता हूँ। यदि आप मुझे वह सिखा दें, तो मेरे गायन में नई शक्ति आ जाएगी। तानसेन ने दीपक राग से अग्नि प्रज्वलित की और उस लड़की और गु भिंडानी से मेघ राग गवाकर उसे

बुझाया, क्या यह सब उस योग-समा के कारण हुआ जो गु ने मुझे सिखाया था? यदि आप कृपा करके मुझे वह क्षमता प्रदान कर दें, तो मैं धन्य हो जाऊँगा!” उसने सिर झुकाकर विनती की।
“ओह! मैंने यह भी सुना है कि संगीत प्रेमी तानसेन के संदर्भ में मंत्र-सिसरी की रचना करने वाले गायकों की कहानियों पर विश्वास करते हैं। सम्राट अकबर की महानता के बारे में कई कहानियां प्रचलित हैं। यह कहानी भी उन्हीं में से एक है। अगर हम सम्राट अकबर की कहानी को छोड़ दें, तो तानसेन द्वारा दीपक राग गाने की कहानी संभव नहीं रह जाती! सच है या नहीं?”
‘यह बिलकुल सच है! सम्राट संगीत के बहुत बड़े प्रेमी थे! उन्होंने अपने अन्य सभी मंत्रियों की तुलना में तानसेन को अधिक वेतन दिया!’
“असली कहानी क्या है, मुझे बताओ? जब वामी हिरदास ने लंकादहन सारंग राग बजाना शुरू किया, तब वृंदावन में मौजूद जंगल में आग लग गई। इस समय उन्होंने बादलों को गीत सुनाकर आग बुझा दी। वामी हिरदास सिर्फ एक गायक नहीं थे, बल्कि एक बहुत बड़े व्यक्तित्व थे।
योगी थे। योगी का पहला गुण क्या था? सम्राट अकबर ने उन्हें कई शुभकामनाएँ भेजीं।
वह इस स्थान पर स्थित अपने आश्रम को छोड़कर शाही निवास के लिए भी नहीं गए। वे नहीं गए। तानसेन उन्हें भेस बदलकर यहाँ लाए थे ताकि सम्राट को 'आप या गु' राग सुना सकें। फिर उन्होंने उन्हें बाहर बैठा दिया और स्वयं अंदर जाकर उनसे एक विशेष राग गाने का अनुरोध किया। बाहर गीत सुनने के बाद सम्राट भी वापस लौट गए। क्या यह गुण तानसेन में था? क्या उन्होंने सम्राट की शरण स्वीकार कर ली थी? क्या उन्होंने सम्राट की प्रशंसा में कोई संगीत रचा था? उन्होंने सम्राट के बच्चों से भी 'आप या गु' राग गाने का अनुरोध किया था। संगीतकारों को रचना करने दें, स्वयं उसकी जांच करें और फिर उसे उन्हें सौंप दें।
उन्होंने उसे राज दरबार में उच्च वेतन और पुरस्कारों वाला पद दिया। क्या यह सच है या नहीं?
यहां तक कि जिन रागों की उन्होंने रचना की, उनमें भी सम्राट की पसंद और प्राथमिकताओं का ध्यान रखा गया था।
या नहीं? क्या उसने अपनी पसंद की लड़की से शादी करने के लिए अपना धर्म त्यागकर दूसरा धर्म अपना लिया था? क्या इस धर्म को अपनाने से सम्राट के

दरबार में उसकी स्थिति मजबूत हुई? वह एक महान गायक था। उसकी कलात्मक प्रतिभा अद्भुत थी; लेकिन उसके पास वह शक्ति थी जो केवल एक योगी ही प्राप्त कर सकता है।
आप जैसे कलाकार ही सोचते हैं कि यह गाना आपके लिए ही बना है! यह एक शाही महल है और
राजा ने अपने सुखों का त्याग कर उसके लिए वध यज्ञ किया। फिर भी, योगी हिरदास, जिन्होंने योगाभ्यास प्राप्त कर लिया था, ने उसका अनादर नहीं किया, यहाँ तक कि उसे शाप भी नहीं दिया! यह उनके योगीत्व का एक और प्रमाण है।
वे उया के बारे में बात कर रहे थे। वह थोड़ी दूरी पर खड़ा विनम्रता से सुन रहा था। उसने अपनी आँखों से पूछा, 'क्या आप लोग किसी और बात पर विचार करना चाहते हैं?'
उसने इस बारे में कुछ नहीं सोचा। उसकी नजर फिर से नासिकग्रा पर पड़ी। वह नदी की ओर चल रहा था।
वे उस दिशा में चलने लगे। वह सीढ़ियों को देखता हुआ खड़ा रहा।
होटल लौटकर मैंने स्नान और भोजन किया। बिस्तर पर लेटकर आराम करते समय मुझे एक प्रकार की संतुष्टि का अनुभव हुआ, जिसके बाद असंतोष की भावना जागृत हुई। तानसेन भी मेरी ही तरह एक गायक थे। उनमें बहुत प्रतिभा थी। जिस प्रकार मैं धन और प्रसिद्धि जैसी सांसारिक चीजों की ओर आकर्षित होता हूँ, वैसे ही वे भी थे। इस विचार से मेरा मन थोड़ा शांत हुआ। इस प्रकार के भोग-विलास में लिप्त होकर संगीत से कोई चमत्कार नहीं किया जा सकता। मैं कभी ऐसा नहीं कर पाऊँगा, इस विचार ने भी मेरे मन को बेचैन कर दिया। इसी कारण मेरी पत्नी, बच्चे और छात्र हर बात से असंतुष्ट हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे मैं उदासी से व्याकुल हूँ।
उसे यातना मत दो!
कुछ देर बाद मुझे नींद आ गई। नींद में भी मुझे ओम की ध्वनि सुनाई दे रही थी। उसके बाद मैं जाग गया। जागने के बाद भी उसका आकर्षण मुझे सता रहा था। आज रात भी वे मंदिर आकर ओम का ध्यान करेंगे। मुझे एक ऐसा अवर्णनीय आकर्षण महसूस हो रहा था कि मुझे उसे सुनना ही चाहिए; लेकिन अगर मैं आज गया तो वे मुझे साफ-साफ जाने के लिए कहेंगे! और अगर मैंने ज़िद की तो वे मुझे श्राप भी दे सकते हैं! नहीं! मुझे डर लग रहा था। अगर मैं साधारण योग अभ्यास के लिए

एक भिक्षु की तरह प्रार्थना करूँ तो क्या होगा? वे सोचेंगे, 'क्या तुम सारे सांसारिक सुख त्याग दोगे? क्या तुममें सम्राट के दरबार में गाने का निमंत्रण ठुकराने की हिम्मत है?'
इसका उत्तर क्या है?
उन्होंने यह भी सुना था कि जब कोई योगी मन की किसी विशेष अवस्था का अनुभव करता है, तो अन्य सभी सुख मिट जाते हैं। अब, यह याद करके वे काफी देर तक उसी में लीन रहे। उन्हें भूख लगी और उन्हें इसका एहसास हुआ। भोजन करते समय उन्हें याद आया कि उन्हें पुरस्कार समारोह के लिए निदान भूपली को लाना चाहिए था। भोजन करने के बाद कमरे में आते समय उन्हें तीनों शरीरों की याद आ गई।
नहीं। योग का उद्देश्य यह नहीं है!
जब तक मैं कमरे में पहुँचकर बिस्तर पर लेटी, तब तक मैं शरीर की याद भी भूल चुकी थी। मुझे अचानक यह ख्याल आया कि तंबोरा की इस घटना के बाद सभी पत्रकार मुझे ही देख रहे थे।
यही इनाम है। भूपलिसा की तरह, जिसने भी किसी छात्र को यहाँ लाया है,
यदि किसी लड़की को लाया जाता, तो उसे भी सभी लोग समान रूप से पसंद करते। अगर शुरुआत इस तरह हुई होती तो बहुत अजीब स्थिति होती। अकेले
मुझे बहुत अच्छा लगा कि मैं आया! इस विचार से मुझे संतुष्टि मिली।
मुझे रात को नींद नहीं आई। मैं फिर से ओंकार की आवाज़ सुनने की उम्मीद कर रहा था! लेकिन हिरदास मंदिर जाना नामुमकिन था। दो घंटे की तड़प के बाद, मैं नदी के किनारे गया। मंदिर पार करके, मैं नदी की सूखी रेत पर बैठ गया। मन में डफली की धुन संजोकर, मैंने वर्षाणा का अभ्यास शुरू किया। एक साधु की तरह, मैंने मंदिर के बारह तारों को घुमाया। उसके बाद, मैंने मध्य और मध्य तार के बारह तारों को उठाया और उन्हें देखा। सब कुछ ओंकार ही था। यह आसान था। अच्छा लगा; लेकिन मेरे मन में आया, इससे मुझे क्या मिलेगा? मैं इस तार में मनचाहा तार पल भर में लगा सकता हूँ। मेरा बाण तीर की तरह चलता है! इतनी सटीकता से! राजसाहेब ने इसे शुरू से ही छह महीने तक तैयार किया था।
इतने वर्षों बाद भी, मैं वही धुन गाता और बजाता हूँ। मैंने उसी तरीके से पढ़ाई की है।
क्या ये साधु ऐसा कर सकते हैं? क्या गुरु ने मेरे लिए जो संगीत साधना कराई है, वो इसी साधु से है? लेकिन वो साधु तो ओंकार साधना नहीं, बल्कि योग साधना

कराते हैं! मुझे ओंकार की ये अद्भुत शक्ति याद आ गई। मंदिर जाने की हल्की सी उम्मीद जगी, फिर साधु की बातें याद करके गहरी निराशा हुई। मेरा मन बेबसी से भर गया।
दो दिन इसी हालत में बीत गए। एक दिन मेरे मन में आया, मैं यहाँ ऐसे ही क्यों बैठा हूँ? अगर मैं छह मील दूर मथुरा जाऊँ, तो मुझे मुंबई के लिए सीधी ट्रेन मिल जाएगी। या अगर मैं दो घंटे दूर दिल्ली जाऊँ, तो मुझे हवाई जहाज मिल जाएगा; लेकिन मुंबई जाकर क्या करूँ? वहाँ तो कई चिट्ठियाँ, टेलीग्राम और फोन आए होंगे। कार्यक्रमों के निमंत्रण भी। सबको पता है कि मेरी फीस एक लाख रुपये है। इस पर कोई विवाद नहीं है। तानसेन पुरस्कार मिलने के बाद कई आयोजकों में कार्यक्रम आयोजित करने का उत्साह होता है। यह उत्साह एक महीने बाद फीका पड़ जाता है। ऐसे अवसर का लाभ उठाने के बजाय, मैं आकर ऐसी ही किसी जगह पर बैठ गया! मैंने तुरंत अपना सूटकेस उठाकर स्टेशन जाने का फैसला किया; लेकिन बिस्तर से उठकर अपने बिखरे हुए कपड़े समेटने की भी हिम्मत नहीं हुई। बस वहीं पड़ा रहा।
मुझे पता था कि मुझे यहाँ से जाना होगा; लेकिन मुझे नहीं पता था कि कहाँ जाऊं। मेरे मन में कई गाँवों के नाम आए; लेकिन उनमें से किसी ने भी मेरा ध्यान आकर्षित नहीं किया।
एक दिन उन्हें तीव्र इच्छा हुई कि वे चिरपुर जाएं और नामदे के पास राजसाहब के जंगल में स्थित शिव मंदिर के बीचोंबीच शांति से बैठें। तभी उन्हें गुनगुनाने का मन हुआ। दो घंटे में वे उठे। उन्होंने अपना सामान और बैग पैक किया। ट्रेन के बारे में बिना पूछे ही उन्होंने ट्रेन पकड़ी और निकल पड़े।
स्टेशन गया।

८
अगली सुबह वह उज्जैन में उतरे। स्टेशन से उन्होंने एक टैक्सी ली और चिरपुर के लिए निकल पड़े। रास्ते में वे शाकपुर से गुज़रे। उन्हें भूपतराम की याद आ गई। शायद अब वे जीवित न हों। चौंतीस साल बीत चुके हैं। अगर वे जीवित भी होते, तो अब सौ साल के हो चुके होते। जो भी हो, उन्होंने टैक्सी ड्राइवर को गाँव आने को कहा। उन्होंने गली और घर दोनों को पहचान लिया। उन्होंने पूछताछ की। उनके पिता की मृत्यु पच्चीस साल पहले हो गई थी। उनके बच्चों ने घर बेच दिया था और चले गए थे। एक कलाक चला गया और दूसरा धनबाद। अब उनमें से कोई भी शाकपुर नहीं आता था। मोहनलाल का दिल टूट गया। उन्होंने टैक्सी ड्राइवर को चिरपुर आने को कहा।
सड़क पक्की हो चुकी थी। इस बार साइकिल को बिना एहसास हुए ही इन पथरीली और कीचड़ भरी सड़कों से गुजरना पड़ा। वह मन ही मन सोचने लगा, 'इस सड़क को पक्की किए हुए कितने साल हो गए?'
'यह पंद्रह या बीस साल पुराना होगा। हमारे पड़ोस की सभी सड़कों में यह सबसे पुरानी सड़क है।'
'क्यों नहीं?'
‘फोरेंसिक विशेषज्ञ कहीं दूर नहीं आते! चटगांव रिसॉर्ट अमेरिका, इंग्लैंड, दुनिया भर से पर्यटकों को आकर्षित करता है। यह सिर्फ तीन महीने का नहीं, बल्कि साल के नौ महीने का रिसॉर्ट है!’
‘इस रिसॉर्ट का संचालन कौन करता है?’
‘क्या आपको नहीं पता? राजसाहेब इसे चलाते हैं। राजा अजितसांग बहुत बुद्धिमान व्यक्ति हैं! उन्होंने यह तरीका अपनाया है और हमसे कारोबार हासिल कर रहे हैं। वरना उज्जैन में टैक्सी के बारे में कौन सोचेगा?’
यह जानने की तीव्र इच्छा उसके मन में जाग उठी कि यह कैसी जगह है। कौन जाने चौंतीस साल पहले उसके इस आश्रय स्थल का क्या हुआ होगा! वह ड्राइवर के बारे में सोचना चाहता था; लेकिन उसकी उम्र के कारण टैक्सी की गति उसके लिए बेहतर थी।
इसी वजह से उसने आधी दूरी इतने कम समय में तय कर ली थी। चाहे कितनी भी बारिश हो रही हो,

चित्रा नदी पर किसी भी तरह की समस्या से बचने के लिए एक बहुत बड़ा और मजबूत पुल बनाया गया था। यह सड़क और यह पुल अजीत संग ने आपके निजी खर्च पर नहीं बनवाया था। आपने सरकारी अदालत से अपने जान-पहचान का फायदा उठाकर थोड़े से पैसे में यह काम जरूर करवाया होगा।
उनका मन राजसाहेब के निजी जंगल, वहां स्थित मठ और वहां स्थित नामादा नदी के तल पर केंद्रित था।
जब मैं इन बातों को याद कर रहा था, तभी टैक्सी महल के सामने रुक गई। एक आकर्षक द्वारपाल, जो किसी बड़े होटल के द्वारपाल की तरह कपड़े पहने हुए था, पास आया और उसने अभिवादन किया।
‘तुम उसे यहाँ क्यों लाए?’ मोहनलाल ने उलझन में पड़कर और सूखे के नुकसान के बारे में सोचते हुए पूछा।
'आपने मुझे यह नहीं बताया कि आप कहाँ जा रहे हैं, महोदय! अब बताइए, आप कहाँ जाना चाहते हैं?'
मोहनलाल सोच में पड़ गया। अगर उसे शिव मंदिर जाना था, तो उसे पहले कहीं उतरना ही पड़ेगा। इस गाँव में उसे कोई नहीं जानता था, और उतरने का कोई दूसरा रास्ता भी नहीं था। ड्राइवर इंजन बंद किए बिना वहीं बैठा रहा। थोड़ी देर सोचने के बाद मोहनलाल ने कुली से पूछा, ‘राजसाहेब, क्या नदी के किनारे इस जंगल में भगवान शिव का कोई मंदिर है? मैं वहाँ जाना चाहता हूँ। मैं पूजा करना चाहता हूँ। पूजा स्थल कहाँ है? या क्या मैं उन्हें फोन कर सकता हूँ?’ "बाहर खड़े ये लोग मंदिर में प्रवेश नहीं कर पाएंगे। वे इस जंगल में तभी प्रवेश कर सकते हैं जब यह रिसॉर्ट में उनका मुख्य काम हो। जंगल में प्रवेश करने के बाद, वे चाहें तो मंदिर जा सकते हैं।"
"क्या इस गांव में कोई और मंदिर नहीं जाता? शिवरात्रि वगैरह पर?"
‘महोदय, वह राजसाहेब का निजी मंदिर है। वहां किसी और को जाने की अनुमति नहीं है।’
मोहनलाल असहाय महसूस कर रहे थे। वे टैक्सी से उतरे और महल की सीढ़ियाँ चढ़े, जिस पर 'ओरिएंट रॉयल रिज़ॉर्ट' का बोर्ड लगा था, और अपने कार्यालय की ओर बढ़े। उनके लिए पाँच सितारा होटल कोई नई बात नहीं थी। उन्होंने रिसेप्शनिस्ट से संपर्क किया और कहा, 'मुझे एक कमरा चाहिए।'
‘महोदय, यहाँ झोपड़ियों की व्यवस्था नहीं है। यहाँ कॉटेज की व्यवस्था है। अगर आपको अपने लिए एक छोटा सा कॉटेज चाहिए, तो आपको मिल जाएगा। जंगल में।’

‘प्रति दिन का किराया कितना है?’
‘दो सौ डॉलर कर के रूप में।’
सामने लगे बोर्ड पर कीमतें डॉलर, पाउंड और मार्क में लिखी थीं। रोज़मर्रा के गुज़ारे के लिए ही सात हज़ार रुपये लगते। इससे पहले वह कभी भी इस जेब में रखे पैसों को खर्च किए बिना कहीं नहीं रहा था; लेकिन इस साधना-दिव्य दर्शन को पाने का कोई और रास्ता नहीं था। उसने टैक्सी को वापस भेज दिया और अपना नाम नहीं बताया। उसका सामान साइकिल पर लादकर जंगल में भेज दिया गया। जंगल में थोड़ी दूरी पर झोपड़ियाँ दिखाई दे रही थीं। हर झोपड़ी बड़े-बड़े पेड़ों से घिरी हुई थी। पूरी व्यवस्था इस तरह की गई थी कि साइकिल से आने- जाने वाले किसी भी व्यक्ति को झोपड़ी में कोई भी व्यक्ति दिखाई न दे। उन्हें जो झोपड़ी दी गई थी, उसका आकार छह साल पुरानी झोपड़ी के बराबर ही था। हालाँकि, अंदर एक सोफा, एक पलंग और अन्य ऐसी व्यवस्थाएँ थीं जो किसी पाँच सितारा होटल के लायक थीं। हर झोपड़ी में एक हल्की साइकिल भी रखी हुई थी; लेकिन उसमें घंटी नहीं थी। मेज पर पूरे जंगल का एक छोटा सा नक्शा रखा था, जिसमें साइकिल से यात्रा करने योग्य छोटी सड़कों का जाल दिखाया गया था। अगर आपको खाना खाना है, तो आपको राजवाड़ में वागटक के पीछे स्थित इस रेस्तरां में जाना होगा या अगर आप फोन पर मेनू मांगते हैं, तो झोपड़ी में खाना भेजने की व्यवस्था की जाती है।
स्नान करने के बाद, वह टहलने निकल गया। उसने पैंतीस साल पहले साइकिल चलाना छोड़ दिया था। उसे यह भी लगता था कि जंगल का असली अनुभव पैदल चलकर ही प्राप्त किया जा सकता है।
हालाँकि डो ने इस जंगल को देखा, लेकिन यह इंसानी सुख-सुविधाओं से भरा हुआ था। पश्चिम के लोग शोरगुल के आदी नहीं थे, इसलिए उन्हें यहाँ की रफ़्तार का अंदाज़ा नहीं था। कभी-कभार मोर दिखाई देते थे। साइकिल सवार भी कभी-कभार ही नज़र आते थे। वे इतने लंबे थे कि उनके आगे-आगे पैदल चलना पड़ता था। उनके चारों ओर रास्ते आपस में गुंथे हुए पेड़ों की तरह थे। कभी-कभार तीर के आकार का एक बोर्ड रास्ता दिखाता था। ऐसा लगता था मानो यह कोई जंगल ही नहीं है! कभी-कभार, एक गोरे जोड़े को एक-दूसरे की बाहों में लिपटा हुआ देखा जा सकता था। कुछ लोग एक-एक करके आए थे। एक जोड़ा पेड़ के नीचे गहरे चुंबन में डूबा हुआ भी दिखाई दिया। वहाँ एक भी भारतीय नहीं था। उनमें से कुछ उसे 'हाय' और

'हैलो' कह रहे थे। उनके पास रास्ते में रुककर बातचीत करने का समय नहीं था, न ही उन्हें इसकी आदत थी। दिशा का अनुमान लगाते हुए, वह नदी की ओर चल पड़ा। जब वह मंदिर पहुँचा, तो दरवाज़ा अभी भी खुला था। दरवाज़े के बाहर अंग्रेज़ी में एक बोर्ड लगा था जिस पर लिंग पूजा का अर्थ समझाया गया था। ‘प्राचीन भारतीय स्वतंत्र यौन संबंध का जश्न मनाते थे... वे योनि और लिंग को देवता मानकर पूजते थे... उनका मानना था कि इन दोनों का मिलन आध्यात्मिक अनुभव के समान है। दिव्य लिंग को इसी मिलन के कलात्मक प्रतीक के रूप में बनाया गया था। आज भी भारतीय इसकी पूजा करते हैं...’ इत्यादि।
उसने अंदर झाँका। कुछ दंपत्ति शिवलिंग का निरीक्षण करने में मग्न थे। एक-दूसरे को गले लगाए इस जोड़े के दिलों में वासना भरी हुई थी।
जैसे ही मैं अंदर दाखिल हुआ, मुझे याद आया कि तीनों अलमारियाँ वहाँ नहीं थीं। तीसरी कांच की अलमारी में तीन तबला, एक तबला-हारमोनियम और एक जैज़ हारमोनियम, और गायन की किताबें थीं। मुझे याद आया कि राजसाहेब ने मुझे बताया था कि शिवलिंग एक गोलाकार ब्रह्मांड है जहाँ ध्वनि चक्कर लगाकर वापस लौटती है। यह आकृति जो अंतर्मुखी होकर ध्वनि में लीन हो जाती है! अब वह अनुभूति इस मंदिर में नहीं रही। यह मंदिर अब नहीं है! यह तो बस एक पत्थर की इमारत है! चाहे मैं यहाँ पूरी रात बैठ जाऊँ, मुझे संगीत का एक भी सुर सुनाई नहीं देगा!
वह वहां से उठकर गहरी बहती नामदे नदी को निहारने लगा। यहां पूरी तरह अकेले होने का एहसास उसके मन में बार-बार सता रहा था। पिछले चौंतीस वर्षों में, इतनी विशाल नामदे नदी भी उस माँ की तरह सूख गई थी जो अपने कुपोषित बच्चों का पालन-पोषण करते-करते विधवा हो गई हो। दाहिनी ओर से आती चित्रा नदी में पानी की एक बूँद भी दिखाई नहीं दे रही थी।
वह आधे घंटे तक वहीं बैठा रहा, तभी एक गोरा आदमी वहाँ आया। लगभग तीस साल का वह आदमी सफेद कमीज और काली पैंट पहने हुए था। उसने जॉगिंग के जूते पहने हुए थे। वह पास आकर बोला, 'माफ़ कीजिए। आप मेरी निजता में दखल दे रहे हैं। क्या आप गायक मोहनलाल जी हैं?'
'हां।' यह सोचकर कि इस माहौल में कोई उसे जानता है, मोहनलाल का अकेलापन थोड़ा कम हो गया।
उन्होंने आगे कहा, 'मेरा नाम बी टोन है। मैं टोन-ते साशा से हूं। मैं इस संगीत समारोह के लिए यहां आया था। आपका गाना उत्साह से भरा हुआ था।'

[illegible]
'[illegible]?'
‘ . [illegible] .’
'[illegible]?'
‘[illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]

वहाँ लगभग सौ लोग इस प्रकार एकत्रित हुए थे। इनमें से छियासी लोग
पश्चिमी भाग दिखाई दे रहा था। वहाँ लगभग बीस भारतीय सैनिक रहे होंगे। भारतीय सैनिक भी जींस और टी-शर्ट पहने हुए थे। उनके पैरों में खुरदुरे जूते थे, जैसे जंगल में चलते समय पहने जाते हैं। सामने बीस फुट ऊँची बाड़ थी, जो पतली जाली से ढकी हुई थी। इसके आगे डेढ़ एकड़ खुला मैदान था। कहीं- कहीं झाड़ियाँ थीं।
व्हिटन ने कहा, 'यह बाघों और हिरणों के शिकार करने की जगह है! असली हिरण और असली बाघ! ऐसी घटना जंगल को एक स्वाभाविक गंभीरता प्रदान करती है, है ना?' वहाँ जमा हुए लोग चुपचाप खड़े थे, बिना कोई आवाज़ किए। इतनी खामोशी कि बाघ और हिरणों को भी उनकी मौजूदगी का पता नहीं चलता। कुछ लोग पेड़ों की चोटियों पर चढ़कर उपयुक्त जगहों पर बैठे थे। कुछ लोग पेड़ों से टेक लगाकर खड़े थे। सभी के हाथों में कैमरे थे। पर्याप्त रोशनी थी, इसलिए किसी को भी टॉर्च की ज़रूरत नहीं पड़ी।
जब सब लोग खुले मैदान की ओर देख रहे थे, तभी एक जंगली हिरण वहाँ आ गया। थोड़ी देर बाद पास ही बाघ की दहाड़ सुनाई दी। हिरण, बिना डरे, भागने लगा। वह जहाँ भी भागता, जाल उसके रास्ते में आ जाता। वह हर दिशा में भागा और अंत में
उसने माधा नामक झाड़ी में शरण ली। उसी क्षण, एक विशाल बाघ शांतिपूर्वक उसकी ओर बढ़ा।
वह कदम बढ़ाते हुए वहाँ पहुँचा। हिरण को देखते ही वह उस दिशा में मुड़ गया। हिरण दौड़ने लगा। लेकिन बाघ बिना किसी खास हड़बड़ी के उसका पीछा करता रहा।
हिरण इतना तेज़ था कि
उसे कोई खास परवाह नहीं थी। हिरण भागा और उसने शांति से अपने शिकार को दाहिनी ओर घसीट लिया।
विटन ने मोहनलाल को अपने पीछे आने का इशारा किया और वह तेज़ी से चलने लगा।
बाघ अपने शिकार के साथ दूसरे बाड़े में घुस चुका था। बाघ के अंदर घुसते ही पीछे का दरवाज़ा अपने आप बंद हो गया।
व्हिटन ने कहा, 'क्या आप शिकार करने का तरीका समझते हैं? इस बाघ को भी किसी चिड़ियाघर में इसी तरह रखा जाता है। यह दो दिन तक हिरण का शिकार करता था।
वही इसका भोजन था! इसने मुझे शिकार करना भी सिखाया।'

इसे सिखाया गया है। यह जानता है कि यही इसका भोजन है; लेकिन यह एक हारा हुआ प्राणी है।
लेकिन यह नज़ारा बिल्कुल नया है! इसी जंगल में, एक मील दूर, पच्चीस एकड़ ज़मीन पर हिरण पाले जाते हैं। आप उन्हें देख सकते हैं। उनकी तेज़ दौड़, उनकी उछल-कूद, उनके कानों का फड़कना, उनकी आँखें – उन्हें देखकर सचमुच प्यार उमड़ आता है! एक पूरी तरह से विकसित, मांस से लदे हिरण को वहाँ लाया जाता है और हर दूसरे दिन शिकार का खेल आयोजित किया जाता है। बाघ भी शिकार को एक जगह ले जाता है। वह भी जानता है कि दो दिन तक पेट भरने के लिए बस इतना ही काफी है! जब बाघ को शिकार के लिए छोड़ा जाता है, तो एक बूढ़ा नौकर इस जगह पर आता है और सारी साफ-सफाई का काम संभालता है।
मोहनलाल को यह सब अजीब लगा। उसे शेर की चालों की याद दिलाने वाला सारंग का कपड़ा याद आया। तभी, एक आदमी बाघ के पंजों से निकलता हुआ दिखाई दिया। वह वहाँ का नौकर लग रहा था। उसके हाथ में एक मोटी कैंची थी। उसकी उम्र लगभग चालीस वर्ष रही होगी। उसने 'ओरिएंट रिज़ॉर्ट' के नौकरों की वर्दी पहनी हुई थी। चमकीली पीली कमीज़, आस्तीनों पर पीली धारियाँ, चौड़ी पतलून, दो बड़ी जेबें, एक बड़ा कॉलर, कमर पर एक चमकदार बेल्ट, पैरों में बूट, घनी मूंछें और करीने से संवारी दाढ़ी। उसकी दाढ़ी चिकनी लग रही थी। मोहनलाल ने उसे घूरकर देखा।
"वह बाघ और शिकार से जुड़ी हर चीज़ का ख्याल रखता है," बाज़ ने कहा। "वह हिरणों का भी ख्याल रखता है।"
मोहनलाल ने उसे देखा। उसे दृढ़ विश्वास था कि उसने उसे कहीं देखा है। वे दोनों आगे बढ़ते रहे। एक अन्य नौकर उसे पुकार रहा था, 'रुको, रुको, रुको'। उसने मूंछों की तरफ पीठ फेर ली। मोहनलाल ने पु हा या को गौर से देखा। पु हा या को दृढ़ निश्चय हुआ कि उसने यह चेहरा पहले भी देखा है, इस चेहरे को कहीं देखा है, बिना मूंछों वाला चेहरा! लेकिन कहाँ?
विटन को अलविदा कहकर वह खाने के लिए निकल गया। मोहनलाल को भी भूख लगी थी। उसे याद आया कि उसने हाल ही में इतना पैदल सफर कभी नहीं किया था। वह झोपड़ी की दिशा का अंदाज़ा लगाते हुए चलने लगा।
उसने खाना मंगवाया और कपड़े बदले। उसने अपने हाथ, पैर और टांगें धोईं और सिंक के पास लगे शीशे के सामने खड़ा हो गया। लड़का वहाँ खड़ा सोच रहा था, तुमने उसे कहाँ देखा है? उसे याद आया कि किसी ने उसे 'बड़ा' कहकर पुकारा था

और उसके हाथ-पैर काट दिए थे। क्या यह वही हो सकता है? उसके माता-पिता दोनों महल में एक ही नौकरी करते थे, इसलिए वह भी यहीं काम करता था।
यह सच है! जी हाँ। बस यही बात है।
महादेव मंदिर में दो दिन बिताने का विचार तो प्रबल था, लेकिन एक बार भी मुझे अपने बेटे का ख्याल नहीं आया, जो नाजायज संतान था या अवैध संतान था! मुझे अफसोस हुआ। मुझे पछतावा भी हुआ। तौलिए से चेहरा पोंछते हुए मुझे वह बात याद आ गई।
अगर यह आ गया होता, तो क्या हम यहाँ आने से बचते? क्या यह वही है या नहीं, यह कोई रहस्य नहीं है! शायद यह सब हमारे दिमाग का खेल है! कोई तो 'बेवकूफ' है! मैं इतना भावुक हो गया कि मैंने अपने मन में अगला 'धार' जोड़ दिया और कुछ और ही कल्पना कर ली।
है ना? और अगर वो है भी, तो मैं क्या करूँ? अब मैं उसे क्या बताऊँ कि मैं तुम्हारा संरक्षक हूँ? अगर मैं उसे ऐसे बताऊँगी, तो क्या वो चुपचाप सुन लेगा? शेर से खेलने वाला आदमी मुझे एक झटके में कुचल देगा। भला ऐसी बातें कौन सुनेगा!
टिफिन से गरमागरम खाना निकला। तब तक मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। नौकर ने कहा, 'महोदय, यह पहले से ही गरम है। अगर आपको और गरम चाहिए, तो मैं इसे माइक्रोवेव में गरम कर देता हूँ।'
"नहीं। इतना काफी है।"
नौकर ने थाली को तिपाई पर रखा और उसे हिलाना शुरू कर दिया।
खाना खाते समय मोहनलाल ने सोचा, 'क्या तुम भी इसी गांव के हो?'
'जी श्रीमान!'
'क्या नाम है?'
‘बनवारीलाल.’
‘यह कौन सा गाँव है, जहाँ बाघ और हिरण देखे जाते हैं?’
'चार मील दूर गौरी कुंज नाम की एक जगह है। वह वहीं है।'
‘इस मां-बेटी का नाम क्या है?’
‘चुनी और बी.सी.बी.सी. का निधन चार-पाँच साल पहले हो गया था। वह कई वर्षों से मधुमेह से पीड़ित थे।’

वह चुप हो गया क्योंकि वह और कुछ सोचना नहीं चाहता था। उसने सिर झुकाया और मुस्कुराते हुए खाना शुरू कर दिया। उसे दाल-कढ़ी-चावल-सा का स्वाद समझ नहीं आ रहा था।
नौकर ने पूछा, "क्यों, महोदय? क्या आप मुझे पहचानते हैं?"
मोहनलाल ने भी यह बात ठीक से नहीं सुनी। नौकर ने खाना खाने के बाद चायदानी बंद कर दी। उसने अलमारी में रखी रोटी, टी बैग्स और फ्रिज में रखा दूध दिखाया और चला गया।
सिंक में हाथ धोने और चूल्हा साफ करने के बाद, मैंने फिर से आईने में देखा और मुझे ज़ोर से महसूस हुआ, ये मेरा बड़ा बेटा है! वो जो हिरण को शेर की तरह समझता है! थू! ये तो बुरा काम है, क्या मुझे उसे नौकरी छोड़ने के लिए कहना चाहिए? मैं उसे दो लाख रुपये दूंगी, आप कह सकते हैं कि कोई और धंधा कर ले। धंधा कर ले। क्या आपने किशन को दो लाख रुपये दिए? मुझे बाद में याद आया, मैंने उसे पैसे दिए थे; लेकिन उसने उन पैसों का क्या किया, क्या धंधा कर रहा है, वगैरह। मैंने पूछताछ नहीं की। इतना समय कहाँ है? तरक्की, यात्रा, गाँव में रहकर सीखना, मेरा धर्म-
मुझे जम्हाई आई। मैं पूरी रात सफर कर चुका हूँ। मुझे ठीक से नींद नहीं आई। 100 रुपये रिश्वत लेकर टीटी ने मुझे इस तीसरी श्रेणी में, इस सेकंड लास्ट क्लास में सीट दी, जिसमें एसी नहीं है। कितना आलसी है! मुझे फिर जम्हाई आई। लेटने के बाद भी नींद नहीं आई। मैंने किशन को सिर्फ सफर के लिए पैसे नहीं दिए थे। मैंने उसे इस मुसीबत से निकालने के लिए पैसे दिए थे। क्या इस औरत को, जो गोरे साहब की पत्नी है, जिनका अब नंबर आने वाला है, उसे सबक नहीं सिखाना चाहिए! अपने दो बच्चों को छोड़कर इस नई चॉल में अकेली रहने चली गई, कैसी औरत है ये?
मैंने इस गाँव में यूँ ही कोई नाव नहीं बनवाई थी। उसका पहले से ही पति था। बच्चे के पिता का नाम भी तय हो चुका था। सब कुछ तय था, इसलिए मुझे इस मामले में दोषी महसूस करने का कोई कारण नहीं है। फिर भी, मुझे उस लड़की का चेहरा बार-बार क्यों याद आ रहा है?
कुछ देर बिस्तर पर लेटने के बाद, वह झट से उठ बैठा। उसने मालिक को फोन किया और साइकिल भेजने को कहा। उसने चाय बनाई और साइकिल आने तक तैयार हो गया। साइकिल आते ही वह उस पर बैठ गया और बोला, 'मैं गौरीगंज जाना चाहता हूँ।'
‘आप वहां किससे मिलना चाहते हैं, महोदय?’ रिवावा ने आश्चर्य व्यक्त किया।

मैं गांव देखना चाहता हूं।
‘एक छोटा सा, गांव जैसा! इसमें देखने लायक क्या है?’
‘आओ और देखो! मैं इस इलाके में एक गाँव देखना चाहता हूँ। मुझे वहीं छोड़ दो और तुम जाओ। मैं बाद में वापस आऊँगा।’
गौरीगंज पंद्रह-बीस घरों का एक छोटा सा गाँव था। साइकिल का किराया चुकाकर उसे वापस भेजने के बाद वह पैदल चलने लगा। उसने एक घर के बरामदे में बैठी एक महिला से चुनी के घर के बारे में पूछा। वह सोचने लगा, 'चुनी? चुनी कौन है?' ‘बा सी की पत्नी, गरीबों की माँ। वह महल में काम करती थी।’
‘वो चुनी है! गाँव में उसका कोई घर नहीं है। उसने इस ज़मीन पर घर बनाया है। चलो तुम्हें दिखाते हैं—’ उसने एक दिशा की ओर इशारा करते हुए कहा, ‘एक तरफ जाओ। वहाँ सिर्फ एक ही घर है। वो चुनी का है। ये फूस की छत वाला घर है। ये लंबा है।’
वह एक कच्ची पगडंडी पर चल पड़ा। शायद इस घर तक पहुँचने का कोई बेहतर रास्ता हो। वह कुछ देर तक पगडंडी पर इधर-उधर चलता रहा, फिर उसे एक घर दिखाई दिया। वह उस दिशा में चलने लगा।
जब घर कुछ दूरी पर था, तो दो बड़े कुत्ते भौंकने लगे। वे उसकी ओर दौड़े भी। निडर होकर, वह उन्हें भगाने लगा और चिल्लाने लगा, 'घर में कौन है?'
एक पैंतीस वर्षीय महिला घर से बाहर आई और कुत्ते को पकड़ लिया। जब कुत्ता शांत हो गया, तो उसने सोचा, 'तुम कौन हो? किसे देखना चाहिए?'
‘चु नी चौधुरानी–’
‘चलो भी। कुत्ते कुछ नहीं करेंगे।’ उसने उसकी तरफ देखा। वह बहुत सुंदर थी। उसे लगा जैसे उसने उसे कहीं देखा हो। मजबूत शरीर, खेतों में काम करने से सांवली हुई त्वचा।
घर की हालत भी अच्छी लग रही थी। गांव के भूतल पर एक लकड़ी की मेज और दो टेबल दिखाई दे रही थीं। मैंने उससे कहा, 'माँ, यहाँ किसी को देखो!'
एक के बाद एक कई दांत धड़ाम से गिर गए। सामने के दो निचले और एक ऊपरी दांत गायब थे, जिससे एक खुला दरवाजा जैसा खालीपन रह गया था, और उसकी आंखों के आसपास के सफेद बाल भी कम थे। उसका शरीर थका हुआ लग रहा था। पास आकर वह हंसते हुए बोली, 'मैं इन्हें पहचान नहीं पा रही, बाबा! इनकी आंखों पर पर्दा पड़ा है! लोग कहते हैं कि पूरी तरह ठीक हुए बिना ये ऑपरेशन के लिए नहीं आ सकते। तब तक ये क्या करेंगे?'

'मेरा नाम गवई मोहनलाल है। मैं महान राजा महादेव के मार्गदर्शन में उनके मंदिर में गायन सीखता था।'
उसके चेहरे पर पहचान का भाव प्रकट हुआ। फिर झिझक और डर। वह अपनी माँ के पीछे खड़ी थी। कुछ ही क्षणों में हटारी को होश आया और वह हँसते हुए बोली, 'महान राजा के ज़माने में बड़े-बड़े गायक राज दरबार में आते थे। समय बदल गया है। मैं तुम्हें पहचान नहीं पा रही। उन्हें आए हुए पैंतीस साल हो गए! बैठ जाओ! बेटी, मेहमान थक गए हैं। चलो इन्हें पानी पिलाते हैं! चाय बना दो

— '

लड़की रसोई में गई।
यह महसूस करते हुए कि उसने उन दोनों को बचाने के लिए यह रणनीति बनाई थी, उसने धीमी आवाज में पूछा, "याद है?"
वह कुछ नहीं बोली।
मैं एक बार आपसे मिलने आया था।
फिर भी वह कुछ नहीं बोली; उसकी आँखों में आँसू भरे थे। बोलते-बोलते वह सोचने लगी, ‘तुम किस गाँव में रहती हो? क्या गाना गाने से तुम्हारा पेट भरता है?’ महान राजसाहेब ने गायिका को भोजन से भरी थाली दी।
"मैं चाहती थी। अब सब कुछ होटल बन गया है। क्या हुआ? कितने बच्चे हैं?"
इस बार भी यह लड़की उतनी ही चतुर थी। उसने स्थिति को बहुत जल्दी समझ लिया। अक्सर वही हिम्मत जुटाती थी। अभी भी वह खुशहाली के बारे में सोच रही है, ताकि अंदर चाय बना रही लड़की को पता न चले! वह उसकी बेटी है!
क्या इसके बाद वह किसी और से मिला और उसे कोई दूसरी लड़की मिल गई?
क्या यह बहू उसे बेटी कह रही है?
थोड़ी देर में चाय आ गई। चाय आते ही चुनी ने मुस्कुराते हुए कहा, 'बेटी, ये तो बहुत बड़े हैं! चलो देखते हैं इनके पैर कितने मजबूत हैं, चलो इन्हें प्रणाम करते हैं!'
लड़की ने यह सुना। वह नीचे झुकी और अपना माथा उसके दोनों पैरों पर रख दिया, दोनों हाथों से उसके टखनों के पास के हिस्से को कसकर पकड़ लिया और एक मिनट तक पूरी तरह से प्रणाम किया। जब वह उठी, तो चुनी ने उससे कहा, 'इन्हें घर जाने दो। मैं इन्हें मुख्य सड़क तक ले जाऊँगा।'

चुनी दरवाजे के पास रखी छड़ी लेकर चलने लगा। उसने उस महिला की ओर देखा जिसने एक बार फिर से गहरी प्रणाम किया था और वह भी चुनी के पीछे-पीछे बाहर निकल गया।
हालांकि चू नीला को सहारे के लिए छड़ी की ज़रूरत नहीं थी, फिर भी मोतियाबिंद के कारण वह सड़क की दरारों और गड्ढों को पार करने के लिए उसका इस्तेमाल कर रही थी। वह काफी देर तक चलती रही और फिर
उसने कहा, "क्या दाईं ओर ढलान नहीं है? अगर आप उसे पार नहीं करेंगे, तो आपको एक विशाल बरगद का पेड़ दिखाई देगा।"
हम यहां बैठकर बातें कर सकते हैं। यहां कोई नहीं आता। चलो, वहां चलते हैं।' उन्हें भी कुछ ऐसा ही होने की उम्मीद थी। वह आगे बढ़े और उन्हें रास्ता दिखाने लगे।
वह छप्पन फुट ऊंचे एक प्राचीन बरगद के पेड़ के नीचे एक पत्थर पर बैठ गया। वह भी उसके पैरों के पास जमीन पर बैठ गई। उसने सोचा, 'तुम्हें अचानक मेरी याद कैसे आ गई?'
"मैं भी बारह साल का हूँ! चलो, मरने से पहले एक बार तुमसे और बच्चे से मिल लेते हैं।"
उसकी आँखों में आँसू भर आए। वह हँसी, ‘मुझे सिर्फ़ लड़का मत कहो। मेरी एक बेटी भी है। तुम्हारे जाने के बाद मुझे गुस्सा आ गया। क्या मैंने तुम्हें जाते समय चाय नहीं पिलाई थी और अभिवादन नहीं किया था? वह भी तुम्हारी ही बेटी है। उसका नाम पूनम है।’
तुम दोनों के बीच क्या चल रहा है?
‘बेटा – क्या तुम्हें गिगीरधर लाल याद है? मैं उसे कई बार दोपहर के भोजन के लिए तुम्हारे पास लाया करता था, उसे अपनी बाहों में उठाकर। तुम भी उसे उठा लेते थे। वह तीन बार रिहा हुआ, लेकिन तुम उसे यहाँ लाए!’
मुझे भी यह बात याद आ गई। अगर मैं अपने छह महीने के बच्चे को फर्श पर सुलाती, तो वह खुशी से मचलने लगता।
पहले ऐसा होता था; लेकिन अगर आप अपनी माँ को उनके सामने गले लगाते, तो वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगतीं! किसी को आकर आपको गले लगाना चाहिए, ठीक वैसे ही। इसके बाद, चुन्नी
मैंने इसे अपने दोस्त के पास छोड़ दिया और अकेले आने लगा।
वह अब क्या कर रहा है?

‘मैं राजवाड़ के इस होटल में काम करता हूँ। मेरी तनख्वाह डेढ़ हजार है। मैं बाघों की देखभाल करता हूँ। मैं हिरणों की देखरेख करता हूँ। मुझे सारी खाद यहीं से मिलती है। मैं विवाहित हूँ। मेरे दो बच्चे हैं। एक तेरह साल का है और दूसरा ग्यारह साल का। मेरी पत्नी अच्छी है। मैंने बच्चों को अपनी माँ के घर छोड़ दिया है। पूनम की दो बेटियाँ और एक बेटा है। उसने उन्हें पास के गाँव में एक घर दिया है। दुनी उसके ससुर हैं। उसके पास चार एकड़ जमीन है। उसका पति भी राजवाड़ के इसी होटल में काम करता है। उसकी तनख्वाह तेरह सौ है।’
आपके पांच पोते-पोतियां इसी गांव में रहते हैं! उनका जन्म भी इसी गांव में हुआ था।
वह समझने की कोशिश कर रहा था; लेकिन उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। इस स्थिति से निकलने के लिए उसने सोचा, 'क्या तुम्हें मैं याद हूँ?'
उसने कोई जवाब नहीं दिया। उसके चेहरे पर असंतोष झलक रहा था। उसने फिर वही सोचा, वही सवाल, 'क्या तुम्हें हम याद हैं?'
"अगर मुझे याद न होता तो क्या मैं तुम्हें ढूंढने आता?"
‘तुम पैंतीस साल बाद आए हो! पहले क्यों नहीं आए? तुम तो यहाँ से चले गए थे। मुझे कैसे पता चलेगा कि तुम किस गाँव में हो? पता भी होता तो क्या फायदा? मैंने तो अपनी पूरी जिंदगी जैन मंदिर से बाहर कदम ही नहीं रखा! लेकिन तुम्हें तो पता था कि मैं कहाँ हूँ। तुम पहले क्यों नहीं आए?’
‘मैं आना तो चाहती थी, लेकिन मुझे डर था कि लोग क्या कहेंगे, बिसी क्या सोचेगी। कितने दिनों से तुम मुझे याद कर रही हो? अब कितने दिनों से याद कर रही हो?’
‘क्या सोचते हो? जब भी मैं अपने बच्चों को देखती हूँ, मुझे उनकी याद आ जाती है। मुझे बहुत गुस्सा आता था जब तुम चली गई थीं। यह घर बना ही नहीं था। मैंने तुम्हें यहीं रहने को कहा था। फिर भी तुम चली गईं! मैंने सोचा, क्या यही उनका प्यार था? लेकिन बाद में मुझे यह भी गुस्सा आया कि गाने वालों को तो राजाओं और सम्राटों की मदद मिलनी चाहिए। इसलिए मैं इस खोज पर निकल पड़ी। खेतों में बैठकर गाने से मुझे क्या मिलेगा? लेकिन मैं हमेशा अपने बच्चों और खुद से मिलने के लिए तरसती थी। तुम आने से क्यों डर रही थीं? मेरे पति तुम्हारा बहुत सम्मान करते थे। क्या तुम यह नहीं जानतीं?’

मोहनलाल को कोई जवाब सूझा नहीं। वह चुप रहा। थोड़ी देर बाद चुनी ने कहा, 'मुझे कुछ दिखाई दे रहा है। मुझे यात्रा के अंत तक यहीं छोड़ दो और तुम जाओ। मैं अकेले घर जाऊंगी। तुम कहाँ उतरे?'
राजवाड़ा होटल में।
‘पिताजी! प्रतिदिन आठ हजार रुपये! क्या आप इतने अमीर हो गए हैं?’ मैंने कुछ बुदबुदाया। ‘आप इस झोपड़ी में कैसे रह सकते हैं!’
उसने सोचा, "मैंने ये सब यूं ही कह दिया। पैसे से पैदा हुआ अंतर एक खाई की तरह है।"
उसने सोचा भी नहीं था कि वह इसे बनाएगा। उसने आह भरी और कहा, 'मुझे समझ नहीं आ रहा था कि यहाँ से कहाँ उतरूँ। पुलिस मुझे वहाँ ले गई। अगर मुझे तुम्हारा घर पता होता, तो मैं सीधे वहीं आ जाता।'
इससे उसे संतुष्टि मिली होगी। वह हंसते हुए बोली, 'हां! यहां तक कि बच्चे भी मुझे बता सकते थे, तुम्हारे पिता तुम्हें गाना सिखाने के लिए खाना लेकर आते थे, बस इतना ही।'
वे उससे मिलने एक याद लेकर आए थे!’ दो मिनट बाद वह हंसते हुए बोली, ‘मुझे एक भूत दिखाई दे रहा है। क्या तुम्हारे और बिरगारी के बीच झगड़े का कोई सबूत नहीं है? बिरगारी को शक तो नहीं होगा, है ना? तुम भी तो चले गए। बिरगारी जब जवान हुआ, हर बार जब मैं उसे देखती थी, तो मुझे तुम्हारी याद आती थी!’
क्या ये औरतें नए बच्चों से ज़्यादा बच्चों से डरती हैं? शायद यही सच हो। हमारे बच्चे कहाँ पले-बढ़े? चुनी हंसते हुए उठी, 'क्या तुम जाना चाहती हो?' सूरज डूब चुका था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। वह आगे बढ़ा और उसे रास्ता दिखाया। उसने उसे उसके घर की दिशा में छोड़कर कहा, "मैं जा रहा हूँ।"
हाना। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि विदाई के समय कौन सी भावना व्यक्त करूं। उसने भी कहा, "मैं अब जा रही हूं।"
मैं घर की ओर चलने लगा। वह भी चिर्रीपुरा रोड पर चलने लगा। उसके पास कोई और विकल्प नहीं था। अगर आस-पास कोई टेलीफोन बूथ होता, तो वह होटल को फोन करके साइकिल मांग लेता; लेकिन अकेले पैदल चलना उसे बेहतर लगा। उसका शरीर थक चुका था। फिर भी, वह चलता रहा।
चंपा इन बच्चों को इतना पैसा दे रही है कि ये खाते-खाते मोटे हो जाएंगे। रामी के बच्चों को बचपन में कुछ नहीं दिया गया। चुनी ने इन बच्चों को एक

निवाला भी नहीं दिया! उसने उनसे कोई रिश्ता तक नहीं रखा। उसे कोई उम्मीद भी नहीं थी। उसने तो पिता का नाम तक नहीं लिया। ये सब जानते हुए भी चुनी ने दो बच्चों को जन्म दिया। मैंने भी बिना सोचे-समझे, बिना किसी उम्मीद के, बस शरीर की आग बुझा दी। फिर ये पिता-पुत्र का रिश्ता कहाँ से आएगा?
लेकिन चाहे मैं कितना भी सोच लूँ, मेरा मन बेचैन ही रहता था। ये मेरे बच्चे हैं – मैं इनका बाप हूँ – ये मुझसे रिश्तेदार हैं – ये मेरी बेटी है, उसने मुझे देखते ही देखते कितनी श्रद्धा से अभिवादन किया! इन दोनों के बच्चे! पाँच बच्चे! मेरे पोते-पोतियाँ! ये कैसे दिखेंगे? मुझे अपनी पत्नी बासी और अपने पति पूनम को देखने की उम्मीद जाग उठी। विचारों के इस अजीब प्रवाह से मैं चकित था।
अंधेरा छा चुका था। रास्ता साफ़ था; लेकिन कौन जानता था कि उसे कितना चलना पड़ेगा! उसका शरीर थका हुआ महसूस कर रहा था। रात की ट्रेन यात्रा, सुबह जंगल में सैर और अब यह पैदल चलना! वह दिन भर सोया नहीं था। वह धीरे-धीरे चल रहा था। उसी क्षण, विपरीत दिशा से एक साइकिल आई। डायनामाइट लैंप की रोशनी उसकी आँखों में पड़ी। साइकिल पर सवार व्यक्ति उत्साह से सीटी बजा रहा था। वह पचास कदम साइकिल चलाकर वापस आया और पूछा, 'महोदय, क्या आप अकेले चल रहे हैं? आप कहाँ जा रहे हैं?'
‘ रॉयल िरसॉट!’
'क्या आप साइकिल की डबल सीट पर बैठेंगे, या पीछे लगे कैरियर पर?'
इस साइकिल में जान आ गई। ठीक से बैठने के बाद, साइकिल का संतुलन बहाल हो गया।
यह सुनकर उन्होंने उसी उत्साह से सीटी बजाना शुरू कर दिया। एक भावपूर्ण सीटी! यह शास्त्रीय संगीत नहीं है। इस संगीतमय धुन में पिरोई गई लोक धुनें हृदयस्पर्शी हैं, यह
वह भी यह जानता था। लोकगीतों में इतनी गहन भावनाएँ समाहित होती हैं। साइकिल सवार चट्टानों के बीच से निकलने की कोशिश कर रहा था। उसकी सीटी दया की धुन की दो पंक्तियों को लय और गति में बजा रही थी। उसे दृढ़ निश्चय था कि उसकी सीटी पन्नालाल घोष की बांसुरी से भी अधिक भावपूर्ण थी! वह लगातार वही धुन बजा रहा था। दोहराव की परवाह किए बिना! चाहे वह कितनी ही बार वही धुन बजाए, उसमें इतना आकर्षण कैसे आ सकता था? उसे अजीब सा महसूस हो रहा था।

इस अंधेरी रात में, इस एहसास के साथ कि इस चट्टान का आकर्षण और उत्साह कभी खत्म नहीं होगा, उसका मन इसी भावना से भरा हुआ था।
चिरपुर की बत्तियाँ दिखने लगीं। साइकिल सवार ने महल के द्वार के सामने अपनी साइकिल खड़ी कर दी। मोहनलाल साइकिल से उतरा और जेब में हाथ डालकर अपने सामने रखा सौ रुपये का नोट उसे दिखा दिया।
नोट लेते हुए उसने चिल्लाकर कहा, "सर, इस होटल में टिप सौ रुपये है।" मैंने चार मील साइकिल चलाई। वो भी अंधेरे में। एक हजार रुपये!
मोहनलाल ने सोचा, ये तो सरासर लूट है! मुंबई में टैक्सी का किराया छह रुपये प्रति किलोमीटर है।
ये पैसा है। अगर ये दूर तक जाता है, तो तीन डॉलर ही लगेंगे। हमने एक गलती भी की है। पैसे के बारे में पहले से ही फैसला कर लें।
मुझे वो चाहिए था। फिर भी, हज़ार रुपये देना किसी के सामने झुकने जैसा था! मैंने उसके कपड़ों से समझ लिया कि वो भी यहाँ नौकर है। तब मोहनलाल बोला, ‘छोड़ो क्या! पूछने में कोई हर्ज नहीं है, लेकिन क्या तुम्हें बिल नहीं चाहिए? मैं तो एक मील पैदल चल चुका हूँ। तीन मील साइकिल चलाने के लिए हज़ार रुपये? अंदर आओ। रसीद काउंटर पर बात करते हैं। वे जो भी कहेंगे, मैं तुम्हें दे दूंगा।’
‘यह होटल में सेवा से संबंधित नहीं है, महोदय! मैं काम खत्म करके घर जा रहा था। अगर आप चाहें तो पाँच सौ रुपये दे दीजिए। अगर नहीं, तो मुझे सौ रुपये टिप के रूप में दे दीजिए!’
झगड़ा न हो, इसलिए उसने चार सौ रुपये और बढ़ा दिए। अरे बाप रे! अगर वो थोड़ी देर और खड़ा रहता, तो उसे पहचान लेता। मोहनलाल डर गया और पीठ फेरकर सीढ़ियाँ चढ़ने लगा।

१०
मैं बिना कुछ खाए सो गया। वह भावनात्मक अनुभूति पूरी रात मेरे मन में घूमती रही। मैं सुबह चार बजे उठा, पूरी तरह से नींद में था, और मेरे मन में बस एक ही विचार था, इस गुस्से का टिकट कहाँ से मिलेगा? मुझे गुस्सा इसलिए आया क्योंकि मुझसे तीन मील की साइकिल यात्रा के लिए एक हजार रुपये लिए गए थे, लेकिन बाद में मुझे एहसास हुआ कि यहाँ ज्यादातर दुकानें डॉलर में चलती हैं। स्थानीय पैदल यात्री भी डॉलर में ही भुगतान करते हैं।
तीस डॉलर हैं। अगर मुझे पता होता कि मैं दानदाता हूँ, तो मैं तुरंत उस पर पैर रख देता।
कौन जाने क्या हो जाए! अगर चरण पाशा आ गए तो? ओह! और यह सोचकर कि अगर आपको मेरी स्थिति का पता चल गया तो क्या होगा, उसे बेचैनी होने लगी। उसे डर भी लगने लगा।
मुझे लगा कि मुझे उनके लिए कुछ करना चाहिए। मैं उठा और अपने पास मौजूद पैसों को गिना। होटल का बिल और मुंबई तक का ट्रेन किराया काटने के बाद भी मेरे पास पाँच लाख बीस हज़ार रुपये बचे थे। अगर मैं अपने पाँचों पोते- पोतियों को पंद्रह-पंद्रह हज़ार रुपये दे दूँ तो क्या होगा? नहीं तो, मुझे अपने दादाजी के घर जाकर उन्हें सारे पैसे दे देने चाहिए और उनसे कहना चाहिए कि वे इसे अपने बच्चों और पोते-पोतियों को अपनी इच्छा अनुसार बाँट दें। मैं यह भी कह सकता हूँ कि मैं यहाँ छह साल तक गाना सीखता था और वे मुझे रोज़ खाना लाते थे और मेरी झोपड़ी तक पहुँचाते थे।
मैं यह आपको इस मामले में आपकी ईमानदारी साबित करने के लिए दे रहा हूं। यह मुश्किल नहीं होगा। ऐसा करते समय अपना नाम या पता छिपाने की कोई जरूरत नहीं है।
वह चाय लेकर बाहर गया। हालांकि अभी अंधेरा था, फिर भी उसके पैरों के नीचे का रास्ता साफ दिखाई दे रहा था। वह आशंका के साथ शिवालय की ओर चलने लगा। जब वह मंदिर पहुंचा, तो दरवाजा बंद था, पर ताला नहीं लगा था। उसने कुंडी खोली और अंदर चला गया। शिवालय की हल्की रोशनी में
ऐसा लग रहा था मानो कोई साजिश स्पष्ट रूप ले चुकी हो। मेरे मन में भी एक साजिश का विचार आया। यह मेरे मन में था।

‘ॐ’ से शुरुआत हुई। जल्द ही इसने ‘ओ’ का रूप ले लिया। आधी रात में षड्ज समाप्त होने से पहले ही, ‘सा रे म पा’ का भाव उत्पन्न हो गया और ओंकार असावरी बन गए। उसी मुद्रा को धारण करते हुए, उन्होंने सात बार उसी ‘ॐ’ का जाप किया। इसके बाद, उन्होंने एक-एक करके दोहराया।
उन्होंने काना को ओंकार में परिवर्तित करके मंड्रम की ओर उतरना शुरू किया। सबसे पहले उन्होंने
इसी मंदिर में, महीनों से दबा हुआ क्रोध, कम से कम हज़ार बार, अब एक नए रूप में प्रकट होने लगा। पछतावा, पश्चाताप, गहरा दुख, ईश्वर की उपस्थिति में कृतज्ञता की गहरी भावना।
आध्यात्मिक स्तर पर भ्रम जैसी अनुभूतियाँ होने लगीं। मांद्रा की गुफा में तब तक, इस अवधि के दौरान पहले कभी न देखे गए कई वर्गान्थी ने यह बात प्रदर्शित की। उन्होंने अनुभव किया कि इन प्रत्येक वर का अलग-अलग पैमानों पर अलग-अलग अर्थ होता है। उन्होंने यह भी महसूस किया कि हम टैम्बो के सहारे के बिना गा रहे थे।
यह समझ से परे है।
इसी समय, दोगानजान आपस में बातचीत करते हुए मंदिर में दाखिल हुआ। उसने अपनी आँखें खोलीं।
बाहर की गर्मी मंदिर तक भी पहुँच गई थी। उन्हें लगा कि यहाँ गाना संभव नहीं है, इसलिए वे बाहर चले गए; लेकिन उनके मन में ओंकार के गीत गूंजते रहे। मंदिर से बाहर निकलते ही उन्हें लगा कि उन्होंने बहुत अच्छा काम किया है। गुफा से बाहर आते ही वे मध्य अवस्था में पृथ्वी और तारा अवस्था में आकाश का विस्तार कर सकते थे। उनका मन हुआ कि वे वहीं बैठकर गाना शुरू कर दें; लेकिन बाद में उन्हें लगा कि अगर उन्होंने ऐसा किया तो गोवा के लोग भी इसे मनोरंजन का साधन मान लेंगे! वे नदी की ओर चलते रहे। उनकी आवाज अभी भी ओंकार गा रही थी। जब तक उन्हें नदी के किनारे एक उपयुक्त चट्टान मिली और वे उस पर बैठ गए, तब तक उनका ओंकार गायन मध्य अवस्था तक पहुँच चुका था। नदी में बहुत पानी था। उन्होंने अपने ऊपरी वस्त्र उतार दिए, गर्दन तक पानी में बैठ गए और मंदिर के द्वार से फिर से ओंकार गाना शुरू कर दिया। जब तक वे तारा अवस्था तक पहुँचे और फिर से मध्य अवस्था में उतरे, तब तक सूर्य उदय हो चुका था।

वह पानी से बाहर आया और खुद को सुखाया। कपड़े पहनते और वापस पहाड़ी पर चढ़ते समय उसे याद आया कि अगर वह बारह बजे तक झोपड़ी नहीं छोड़ता, तो उसे अगले दिन सात हजार रुपये चुकाने पड़ेंगे।
समय लगेगा। उसने अपनी घड़ी देखी, साढ़े दस बज रहे थे। उसने तय किया कि वह खाली हाथ ही कुटिया से निकलेगा और बारह बजे तक अपना बैग एक कोने में रख देगा और रात को साइकिल की दुकान पर जाएगा। कुटिया जाते समय उसे एहसास हुआ कि वह रास्ता भटक गया है। थोड़ा इधर-उधर भटकने के बाद आखिरकार उसे रास्ता मिल गया। वह अपने साथ नक्शा नहीं लाया था, जिसकी वजह से वह भ्रमित हो गया था। खुद को दोषी मानते हुए, वह ग्यारह बजे वहाँ पहुँचा।
चुनी नीला के पाँच लाख रुपये थैले में रखते हुए मैंने सोचा, अगर मैं पैसे देकर खुद को मुक्त कर लूँ, तो क्या मेरे दिल में बसा कर्ज का भाव मिट जाएगा? हाल ही में मैंने किशन को दो लाख रुपये दिए। बकुला के लिए भी देने को तैयार हो गई हूँ। मैंने हमेशा वर्मोहन और ष्टिमोहिनी को दिया है; लेकिन क्या ऐसा करने से मेरे पिता के साथ मेरा रिश्ता पूरा हो जाएगा? अगर मैं ये पैसे अब चुनी नीला को दे दूँ, तो वो क्या सोचेगी? क्या होगा अगर मैं इसे इस बात का संकेत मान लूँ कि मैं इतने दिनों की अनुपस्थिति की निशानी के तौर पर ये पैसे दे रही हूँ? चुनी मेरी माँ के पास पैसे के लिए नहीं आई थी। उसे मेरी माँ से संतान की उम्मीद थी। मेरी आँखों में जो उम्मीद थी और जो अकेलापन था, शायद उसी वजह से उसने मुझे चुना।
अगर वह शौचालय जाता है, तो यह उसका अपमान होगा। उनके बीच का रिश्ता खराब हो जाएगा।
उसने पैसा कमाने का विचार त्याग दिया।
जब वह होटल पहुंचा और बिल का भुगतान किया, तो उसने सोचा, "मैं होटल मालिकों से मिलूंगा।"
क्या?
‘क्या यह महाराज नहीं हैं?’ राइस शिनटन ने दूसरा ऑर्डर करते हुए पूछा। 'हाँ।'
उनसे मिलना मुश्किल है। अगर आप अपना नाम, पता और मिलने का कारण लिखकर भेजें, तो हम इसे उनके निजी सचिव को भेज देंगे। वे तय करेंगे कि मिलना संभव है या नहीं।
दिन का निर्णय लिया जाएगा।

'मेरे पास इतना समय नहीं है। मैं अब जा रहा हूँ। अगर संभव हो तो मैं आधे घंटे के लिए मिलना चाहता था। इन लोगों ने मेरी बहुत मदद की।'
‘रुको। मैं सचिव से बात करता हूँ!’ उन्होंने फोन पर पूछा। फिर उन्होंने कहा, ‘आज रात शाही भोज है। अगर आप चाहें तो इस समय महामहिम से मिल सकते हैं।’
मुझे यहाँ एक और दिन रुकना पड़ेगा! किराया देने के लिए सात हज़ार डॉलर! आज रात के खाने के लिए दो सौ डॉलर और टैक्स! आठ हज़ार डॉलर और। ये तो बस दस-बीस लोगों का एक शो है!
उसके चेहरे पर एक धीमी, बनावटी मुस्कान थी। उसका मन कर रहा था कि वह अपना नाम बताए, यह बताए कि वह एक महान गायक है, आदि; लेकिन उसने चुप रहना ही बेहतर समझा, क्योंकि उसे लगा कि ऐसा करना गायन कला का अपमान होगा। उसने अपना बैग उठाया और उज्जैन जाते समय जिस होटल में वह ठहर रहा था, वहाँ चला गया।
ट्रेन से यात्रा करते समय, मुंबई पहुँचने के बाद भी, ओंकार उनके मन में बसा रहा। उन्होंने दरवाजे और खिड़कियाँ बंद कर लीं और कान के पास डफली बजाने लगे। कई लोग कहते थे कि 'डफली के बीच से भी ओंकार की आवाज़ सुनाई देती है।' अब उन्हें ओम की ध्वनि स्पष्ट रूप से सुनाई दे रही थी। उन्होंने स्वयं ओम का जाप करना शुरू कर दिया।
धारा के रुकने से उत्पन्न पीड़ा और उसके बाद उत्पन्न आंतरिक भावनाएँ। कुछ अपरिचित भावनाएँ परिचित रूप धारण करने के लिए संघर्ष कर रही थीं। ऊर्जा धीरे-धीरे ऊपर उठ रही थी, अंततः सर्वव्यापी 'ओम' में विलीन हो गई। राग शास्त्र और तंत्र के सहयोग से उन्होंने इसे असावरी आलाप का रूप दिया। आधा घंटा
यह असावरी में ओंकार का जाप था। इसमें कोई वाद्य यंत्र शामिल नहीं था।
इस ओंकार में श्ति जोड़ने से ब्रह्मांड की रचना हो रही थी। संगत में केवल डफली थी। गीत ने आंतरिक आत्मीयता प्राप्त कर ली थी।
उन्हें खुशी थी कि हमने कुछ नया बनाया है। हम रंजना मक हैं।
मुझे ऐसा लगा कि मैं कला के माध्यम से आत्म-साक्षात्कार की सीढ़ी चढ़ रहा हूँ। मेरे सामने यह स्पष्ट होने लगा कि प्रत्येक राग को इसी प्रकार प्रस्तुत किया जाना चाहिए। यदि मुंबई के इस शोरगुल भरे वातावरण में यह संभव नहीं है, तो मुझे किसी पर्वत शिखर पर जाकर इसे प्राप्त करना चाहिए।

मुझे वृंदावन में मिले साधुओं जैसे किसी व्यक्ति से मिलना चाहिए और एक नई भावना को आत्मसात करना चाहिए। हिमालय में, गंगा के तट पर या पास के यंबकवारा पर्वत पर! जिस प्रकार दरबारी कन्नड़ संगीत सम्राट अकबर के दरबार की गंभीरता को प्राप्त कर लेता है, आप भी ऐसा कर सकते हैं। यदि मैं कुछ ऐसी धुनें रच सकता हूँ जो माया द्वारा उत्पन्न इस मूल दुःख को व्यक्त करती हैं, तो मैं माया कन्नड़ नामक राग क्यों नहीं बना सकता? क्या इसका नाम केवल माया-कनाडा होना चाहिए या मोहन-माया कन्नडा?
सावत मुंबई में गंधव महासभा में प्रतिवर्ष ओंकार साधना प्रस्तुत करते थे। वृंदावन के वामी हिरदास मंदिर में तानसेन की समाधि पर श्रद्धांजलि अर्पित करते समय साधु की उनसे मुलाकात हुई और ओंकार साधना के बारे में गहन जानकारी प्राप्त करते हुए उन्होंने उन्हें यह बात बताई।
उन्होंने सभा में यह कहते हुए राग प्रस्तुत किया कि उन्हें यह राग मिला है। यह राग पहले से ही उनकी गर्दन तक लंबा था।
उसके बाल थे। उसने माथे पर लाल केसर लगाया हुआ था। वह शरीर पर लगाने के लिए केसर का तेल लाया था। वह आँखें बंद करके दूल्हे के दर्शन में मग्न था, दर्शक भी उसी भाव में डूबे हुए थे। उस रात वहाँ प्रस्तुति देने आए छह गायकों में से, अगर वह गीत सर्वश्रेष्ठ न होता तो आश्चर्य की बात होती! जब उसका गीत समाप्त हुआ, तो किसी ने भी बांसुरी नहीं बजाई। ध्वनि अपना अर्थ खो बैठी और लुप्त हो गई। वातावरण में सन्नाटा छा गया। उसके पीछे बज रहे दो डफ भी सन्नाटे को और गहरा कर रहे थे।
कुछ दिन पहले मुंबई के सभी अखबारों में यही खबर छाई हुई थी। हर तरफ प्रशंसा की गूंज सुनाई दे रही थी। हमने परंजपे से आधे घंटे फोन पर बात की। उन्होंने रविवार के कला-पूर्वानी अखबार में एक बड़ा लेख लिखा था, जिसका शीर्षक था, 'भारतीय संगीत ने नई ऊंचाइयों को छुआ है!' लेख में आगे लिखा था, 'इस वर्ष प्रतिष्ठित तानसेन पुरस्कार प्राप्त करने वाले मोहनलाल द्वारा प्रस्तुत इस ओमकारा ने हमारे भारतीय शास्त्रीय संगीत को कला के एक नए स्तर पर पहुंचा दिया है...' लेख में कई उद्धरण दिए गए थे। लेख में आगे लिखा था, 'आज के विख्यात कलाकार, कृत्रिम स्वर संयोजन, विशाल सभाओं और गीत रचना जैसी तकनीकी कौशलों पर आधारित कला प्रस्तुत करके, इस महानता के शिकार हो रहे हैं। पंडित मोहनलाल जी जैसे साधक हमारी कला परंपरा की नींव को छूने के लिए तत्पर हैं। यह भारत में कला जगत को एक नया आयाम दे रहा है!'

इस लेख के साथ मोहनलाल की एक बड़ी नई तस्वीर भी दी गई थी, जिसमें उनके माथे पर एक बड़ा लाल समोसा रखा हुआ था।
अन्य प्राचीन ग्रंथों में भी, यद्यपि इतने धूमधाम से नहीं, फिर भी कुछ हद तक इस शैली की आलोचना की गई थी। चूंकि ओंकार राग के सभी श्लोकों में मुख्य स्वर था, इसलिए कुछ लोगों ने इस आसावरी को 'आयाम-आसावरी' नाम भी दिया। इस राग को सुनकर श्रोता आनंद में लीन हो जाते थे। इसके बाद श्रोता हर सभा में ओंकार राग के गायन की मांग करने लगे। श्रोताओं की रुचि को देखते हुए उन्होंने भी इसकी योजना बनाना शुरू कर दिया।

चौदह

१
मनोहरी का हृदय कड़वाहट से भरा हुआ था, उसे जीवन भर पुरुषों से धोखा मिला था। जब गुजी जीवित थे, तब तक तीन-चार वर्षों तक उनके हृदय में यह भावना जागृत नहीं हुई थी। इसी कारण वह खुश रहने का दिखावा करती थीं। इसके बाद, उन्होंने मिल्साहेब के साथ परिपक्व गति से नृत्य करना जारी रखा। वह समझ गई थीं कि नृत्य की यही गति होती है, और वह इसमें प्रसन्न थीं। मोहन से मित्रता होने तक उन्होंने इस गति की लय का सपना भी नहीं देखा था। वे दिन थे जब वह सचमुच खुश थीं! ओह, वर्ष! उन्होंने मुझे इस गति की लय दिखाई, अब वे मुझे एक 'हाथ' की तरह अनदेखा कर रहे हैं और मेरी जवानी के ये उनतीस वर्ष। वह इसमें बहक गया! इस समय उसे मुट्ठी बांधकर खुद को मार डालना चाहिए था! इस मामले में उसकी शारीरिक शक्ति कभी मेरी बराबरी नहीं कर सकती, वह कायर है! इसमें मर्दानगी कहां गई? उसने सोचा: शराब पीकर मैंने अपनी मर्दानगी खो दी। क्या उसने अपनी बेइज्जती छुपाने के लिए मुझ पर हथियार फेंक दिया?
इस विचार से मेरा मन थोड़ा शांत हुआ। इतना कि मुझे उसे जान से मारने का मन कर रहा था। मेरी माँ को थोड़ी जल्दी थी। अगर वह जोड़ा दिल्ली जाने के बजाय यहीं रुक जाता, तो कौन जानता है, कुछ ही दिनों में सब ठीक हो जाता!
सभी पेरिसवासी मेरे नृत्य और मेरी कल्पनाओं से मुग्ध थे। कितने ही लोग आए और चले गए बिना मेरी प्रशंसा और बधाई दिए! सुबह की शांति, रचनात्मकता का धीरे-धीरे जागृत होना, रोजमर्रा की जिंदगी में झलकने वाला उत्साह, हर चीज को कितनी कोमलता और कुशलता से दर्शाया गया, डैनियल जैसे आलोचकों ने इसकी

कितनी प्रशंसा की, और अन्य देशों के कितने ही नर्तकों ने घंटियाँ बजाकर इससे अपनी सहमति व्यक्त की!
"अगर तुम मुझे अपनी खूबसूरत आंखें दे दो, जो दुनिया को देखने का नजरिया पैदा करती हैं, तो मैं तुम्हारे लिए अपना पूरा जीवन कुर्बान करने को तैयार हूं," अनाबा साकी ने कहा!
तो क्या ऐसा हो सकता है कि उसने मुझे इस तरह अपमानित किया, यह सोचकर कि वह एक सज्जन व्यक्ति है? लेकिन उसे तो खूब प्रशंसा भी मिली। आगे बढ़ो! 'यह एक शब्द भावनाओं का ऐसा सागर उत्पन्न कर सकता है।'
"ऐसा हो सकता है, मैंने तो कभी सपने में भी नहीं सोचा था—" क्या ऐसा कहना सिर्फ एक तारीफ है?
उसे ये मौका मेरी वजह से मिला! और वही मेरा मजाक उड़ा रहा है?
उसने इस बारे में कई पहलुओं से सोचा, लेकिन जवाब देने में उसे बहुत समय लगा; वह उसकी बात सुनने के लिए खुद को तैयार नहीं कर पा रहा था। शायद उसे खुद भी नहीं पता था कि उसने क्या कह दिया।
यह शायद इस दुनिया में भी न हो; लेकिन दो हफ्तों तक, जिस तरह से मैं इस दुनिया के साथ बातचीत कर रहा था, इससे बात कर रहा था,
उसमें समझने की क्षमता तो निश्चित रूप से है! लेकिन उसने ऐसा व्यवहार किया मानो उसे कुछ समझ ही न आया हो। क्या वह बुद्धिमत्ता का परिचय देते हुए सोच रहा था, 'इस मूर्ख से बहस करने का क्या फायदा?' या फिर उसने फ्रांसीसी झंडा इसलिए लगाया ताकि मुझे अपनी बात समझा सके, ताकि मुझे क्रूरता दिखा सके? यह गाना एक नया डांस सिखाने का शानदार तरीका था और यह सफल भी रहा।
उसने हमारा इतना अपमान किया, उसने नेहा की नींव ही हिला दी, उसके गायन की सराहना कैसे की जा सकती है? सराहना ही न हो तो प्रशंसा कहाँ से आएगी? जाने दो! वह दुनिया का इकलौता अच्छा गायक नहीं है! ऐसा नहीं है कि नृत्य से गायक की आत्मा जीवित रहती है। किसी के बुरे व्यवहार से गायक के शब्दों का मूल्य नहीं, बल्कि मेरी दयालुता से तय होता है।
हाय कहने की कोई ज़रूरत नहीं है! वह इससे बहुत संतुष्ट हो गया और उस घटना से भी।
दुनिया मौत के साये में डूब गई।
दो महीने बीत गए। मुझे कटिकाराम के साथ किए गए नृत्य को दोबारा करने का मन हुआ। चौदह साल पहले, इस नृत्य रचना ने मुझे बहुत अपमान और पीड़ा दी थी, फिर

भी मुझे उसी रचना को दोबारा करने का मन क्यों हो रहा है? मुझे इस सवाल का कोई जवाब नहीं सूझा।
मैंने अपना खर्च खुद उठाया है – यह मेरी रचना है, किसी और की नहीं! यह किसी का गाना नहीं है।
मुझे किसी के समर्थन या किसी संकोची अभिनेता के सहयोग की आवश्यकता नहीं है। मैं स्वयं रचना प्रस्तुत करूँगी। मैं कार्तिक की जगह देवराज का किरदार निभाऊँगी। यही उसके लिए अगला सबक होगा। बाकी सभी किरदार किरकोल के हैं। इन लड़कियों को लासम में लिया जा सकता है। मैं राधा हूँ और देवराज कृष्ण हैं।
यह विचार मन में आते ही मैं खुश हो गया।
‘देवराज, मैं तुम्हें एक बड़ी भूमिका दूंगा। तुम्हें हर दिन कम से कम चार घंटे कड़ी मेहनत करनी होगी। इससे तुम ‘प्रवीण’ परीक्षा के लिए तैयार हो जाओगे। क्या तुम तैयार हो?’
‘जी दीदी! यह सच है!’ उसका चेहरा खुशी से चमक उठा।
'फिर से सोचो। हम इस रचना को पूरे देश में ले जाकर इसका प्रदर्शन करने वाले हैं। क्या तुम्हें इतनी छुट्टियां मिलेंगी? काम करने वालों के पीछे एक जुनून सा रहता है।'
मैं किसी और कारण से अपनी छुट्टी बर्बाद नहीं करूँगा। अगर छुट्टी अपर्याप्त होगी, तो मैं बीमारी की छुट्टी ले लूँगा, विशेष छुट्टी ले लूँगा। मेरे बॉस को भी कला में बहुत रुचि है। उनकी तरफ से भी कोई समस्या नहीं होगी।
देवराज ने बनारस में बी.ए. तक पढ़ाई की थी। उन्होंने साथ ही नृत्य का प्रशिक्षण भी शुरू कर दिया था। दो साल पहले उन्हें रेलवे में जूनियर अधिकारी की नौकरी मिली थी। दिल्ली आने के एक महीने के भीतर ही उन्होंने नृत्य जगत में नाम कमा लिया था। उनकी उम्र चौबीस वर्ष थी। हालांकि उन्हें नृत्य में रुचि थी, लेकिन किराए के कमरे में दूसरों के साथ रहने के कारण उन्हें अभ्यास करने का समय नहीं मिल पाता था। ऐसा लगता था कि इससे उनकी प्रगति में बाधा आ रही है। शिवाय थोड़े शर्मीले भी थे।
उसने शाम को उसके लिए विशेष प्रशिक्षण शुरू किया। वह रात 8:30 से 9 बजे तक अकेले ही उसे प्रशिक्षण देती रही। दो सप्ताह बाद, एक दिन उसने सोचा, 'क्या नाचने से तुम्हें ऊब होती है?'

‘□□□, □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□’
‘□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□? □□ □□□, □□□?’
□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□, '□□ □□□! □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□, □□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□□□□□'
□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□!
‘□□□□ □□□ □□, □□□! □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□!’
‘□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□?’
‘□□□□□□□□□ □□□!’
□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□, "□□□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□!"
□□□, □□ □□ □□ □□□ □□□□□ □□□, □□□□ □□□, "□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□,□□□□—"
□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□,
□□ □□ □□ □□□ □ □□ □ □ □□
□□ □□ □□ □□ □ □ □□ □□ □ □ □ □
□□ □□ □□ □□ □□
□□□– □ □□ □ □□ □ □□ □□ □ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□ □□ □ □ □□□□ □□□ !’
□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□
□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□□, '□□□□, □□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□'
□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□?
□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□! □□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□

एक और सप्ताह बीत गया। वह रात दस बजे तक कड़ी मेहनत करता रहा। उसने सोचा, 'तुम इतनी देर रात अकेले मंदिर जा रहे हो। रात के खाने में क्या करोगे? पटेलनगर में तुम्हारा एक कमरा है ना?'
जी बहन।
"अब, अपना वह कमरा खाली करो और इस कमरे में आकर रहो। रात में अकेले बाहर मत जाओ। अगर तुम यहीं रहोगे, तो सुबह उठकर एक घंटे अभ्यास कर सकते हो।"
मैं आपको उतना ही किराया दूंगा...
‘क्या तुम इस पैसे से अपनी पढ़ाई का किराया भी गिन रही हो? अगर तुमने दोबारा यह बात उठाई तो देखो!’ फिर उसने हल्के से उसके गाल पर थप्पड़ मारा। ‘मुझे भी अंदर से प्रेरणा मिली है कि मैं तुम्हें यह सबक सिखाऊं और इसे अपने साथ ले जाऊं। क्या तुम्हारे गाल में दर्द हो रहा है?’ फिर उसने उंगली से उसके गाल को छुआ और गर्म सांस छोड़ी।
"ऐसा सबक तो हर दिन काम आएगा!" यह कहते हुए उनका चेहरा चमक उठा।
उसने अगले ही दिन अपनी नौकरी बदल ली। मनोहरी ने उससे कहा, 'सुबह मैं
मैं आते समय इसे नहीं लाऊंगा। आपका दोपहर का भोजन दफ्तर या कैंटीन में था।
मैं शाम को वापस आते समय रात का खाना लाऊंगा।
वह हिचकिचाते हुए हँसा, "इसकी कोई ज़रूरत नहीं है, दीदी!"
‘तुम्हें मेरी बात माननी होगी! नहीं तो मैं तुम्हें फिर से पीटूँगा! समझे?’ वो हंसा।
"तुम क्यों हँसे? अगर तुम्हें चोट लगती है तो तुरंत दवा मिल जाएगी, इसलिए तुम हँसे थे?"
उसका चेहरा लाल हो गया।
दो दिन बाद, जब सभी छात्र चले गए, तो उसने उससे कहा, 'तुम इतने दिनों से यह सब देख रहे हो। अब तुम्हें भी अभिनय में आना चाहिए। पास आओ। मेरे दोनों हाथ अपने हाथों में लो। मेरी आँखों में देखो।'
उसने वैसा ही किया। लेकिन वह हंस पड़ी, 'देखो, तुम ठीक से आंखें नहीं मिला रहे हो! देखो!'
यही तो अभिनेता का जीवन है। जैसे दो आत्माएँ मिलती हैं, वैसे ही दो आँखें भी मिलनी चाहिए! आओ – करीब आओ। मेरे चेहरे को अपने दोनों हाथों में थाम लो – इस तरह!’ फिर उसने उसका चेहरा अपने हाथों में थाम लिया और उसकी ओर देखा; लेकिन शर्म से उसकी आँखें झुकी हुई थीं।

‘देखो, तुम कृष्ण हो – मैं राधा हूँ! यह भावना तुम्हारे मन में पूरी तरह से बसी होनी चाहिए। इसके बिना अभिनय सफल नहीं होगा! मैं सुंदर नहीं हूँ और तुम मेरे शिष्य नहीं हो! याद रखो कि कृष्ण सोलह वर्ष के हैं। राधा उनसे बड़ी हैं। इसीलिए उनके प्रेम में परिपक्वता है। वे कृष्ण से इतना गहरा प्रेम कर सकती हैं कि कृष्ण उनके माथे पर चुंबन कर सकते हैं। इसीलिए राधा- कृष्ण के प्रेम ने हमेशा कवियों और कलाकारों को प्रेरित किया है। तुम मेरे कृष्ण हो और मैं तुम्हारी राधा हूँ! इस भावना को अपने मन में बसाए रखो – तभी तुम अभिनय में सफल हो पाओगे!’
उसकी आँखों में असमंजस का भाव था। वह उस भाव में अपने भाई का सामना नहीं कर पा रहा था।
इस वजह से जैम का ध्यान नीचे की ओर चला गया। उसने फिर कहा, 'तुमने कितनी जल्दी इस भूमिका में महारत हासिल कर ली! अभिनय को लेकर तुम्हारे मन में किस तरह की उलझन है? बोलो!'
"कुछ नहीं, बहन! मैं कोशिश कर रही हूँ।"
‘मैं तुम्हें दीदी नहीं बुलाना चाहता! समझी? अगर नहीं, तो ये देखो!’ उसने उसके गाल पर एक थप्पड़ मारा और तुरंत अपने गर्म होंठ उस पर रख दिए। ‘मैंने तुमसे क्या कहा था? गुरु-शिष्य के रिश्ते को भूल जाओ और सिर्फ राधा और कृष्ण के रिश्ते को याद रखो, ठीक है? फिर तुमने क्या किया, दीदी-दीदी? चलो देखते हैं कि तुम पूरी तरह से कृष्ण हो या नहीं! यहाँ देखो! भले ही राधा बड़ी हैं, कृष्ण को पहल करनी चाहिए थी – अब मेरी तरफ देखो, मेरी नजरों में कृष्ण की तरह! अपने दोनों हाथ आगे करो – इस तरह तुम राधा को घेरना चाहती हो

– ’

उसे बहुत सी चीजें मिलने लगीं। वह बहुत गुस्से में भी आ गया। उसने दोनों काम निर्देशानुसार किए।
उसने अपनी बाहों में उसे लपेट लिया और उसे कसकर पकड़ लिया, उसके कान में फुसफुसाते हुए कहा, 'राधे-'

२
अन्य छात्रों की पढ़ाई समाप्त होने के बाद, शाम 7:30 बजे, थिएटर का मुख्य द्वार बंद करके, वे दोनों इसी कमरे में सोने चले गए। इसके बाद, 10 बजे तक भी, उनका मन नहीं हुआ कि वे उठकर अपने घर लौटें। और न ही वे उन्हें जाने देना चाहते थे। चौथे दिन, उन्होंने कहा, 'तुम यहाँ अकेले हो और मैं वहाँ अकेली हूँ! तुम मेरे साथ घर चलो। तब तक गुजी सो गए होंगे। अगर तुम जाग भी रहे हो, तो चुपचाप ऊपर चले जाओ, उन्हें पता भी नहीं चलेगा। अगर वे अभी भी जाग रहे हैं और बिस्तर पर बैठे हैं, तो मैं उन्हें अंदर ले जाऊंगी, उसके बाद तुम ऊपर चले जाना। साथ सोने से मिलने वाली शांति को क्यों खोना?'
वह डरा हुआ था।
‘मैं तुम्हें बता रहा हूँ ना? फिर तुम्हें किस बात का डर है?’ उसने उसे गोद में उठाया और अपने साथ ले गया। गुजी ने कभी सीढ़ी नहीं चढ़ी थी। अब, अठारह साल बाद! चढ़ना नामुमकिन था। अगर वह धीमी आवाज़ में बोलती, तो उसकी आवाज़ सुनाई भी नहीं देती। फिर भी, वह घर में थी। अगर ऐसा न होता, तो वह देवराज को इस तरह घर में न लाती और उसे बाहर न भेजती।
पत्नी की कोई आवश्यकता नहीं थी। अगर प्रेमी-प्रेमिका साथ रहें और साथ सोएं तो मन को कितनी शांति मिलेगी!
मुझे समझ आ गया! मैं जाग उठी और मुझे अपने चारों ओर बाहों का एहसास हुआ, कितनी गहरी नींद थी! अगर वह पीठ के बल सो रहा होता, तो मैं भी उसे अपनी बाहों में भर लेती! यह मेरे जीवन में पहली बार है जब मुझे ऐसा महसूस हो रहा है! मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं उससे इतना गहरा प्यार कर सकती हूँ! हे देवताओं के राजा! आप मेरे राजा हैं, भगवान नहीं! अब से मैं सबके सामने आपको राजा कहूँगी। मुझे किससे डरना चाहिए?
'सो गया क्या?'
'नहीं।'
'आप क्या सोचते हैं?'
‘यह मेरा सौभाग्य है कि मैं आपसे भूत के रूप में मिला! अगर मुझे प्रेम का अनुभव न होता, तो मैं कृष्ण की भूमिका कैसे निभा पाता? इसके बाद, मुझे नहीं लगता कि आपको मुझसे बार-बार अभिनय सुधारने के लिए कहना पड़ेगा।’
'मेरे महाराज, यह महज़ नृत्य का एक हिस्सा नहीं है!'

"मैं कहाँ चला गया?"
‘प्रेम अमर है, यह शाश्वत है। मुझसे वादा करो कि यह कभी कम नहीं होगा!’ जैसे ही उसने वह वादा किया, उसकी आँखों में आंसू भर आए। वह मुड़ा। उसने सोचा,
‘तुम इसे क्यों नहीं ले लेते?’
"करेगा क्या?"
क्या आपने इसके बारे में सोचा होगा?
लेकिन अगर आप मुझे यह बताएं कि आप मुझसे थोड़ी बड़ी उम्र की लड़की से शादी करने जा रहे हैं, तो क्या यह बात आपके परिवार में गुप्त रहेगी?
‘तुमसे बड़ा कौन है? तुम मुझसे बहुत बड़ी हो, दो-तीन साल! अगर मैं लगातार बिना रुके मनी ऑर्डर भेजती रहूँ, तो तुम्हारी छोटी बहन तुम्हें मेरी बहू के रूप में आसानी से स्वीकार कर लेगी।’
अगर वे स्वीकार नहीं भी करते हैं, तो वे गांव में ही रहेंगे, हम दिल्ली में ही रहेंगे। एक पोते या पोती का जन्म होगा।
वे दौड़ते हुए आएंगे।
जब बच्चे की बात उठी तो उसका दिल कांप उठा। उसे पता ही नहीं था कि तुम नौ साल के हो! वह तुमसे थोड़ी बड़ी थी; लेकिन उसने सोचा होगा कि वह किसी बच्चे की माँ हो सकती है। कुछ देर बाद वह दुविधा में पड़ गया, क्या उसे अपनी सही उम्र बताकर आज़ाद हो जाना चाहिए? उसे डर था कि अगर उसकी उम्र पता चल गई तो वह उसे छोड़कर चला जाएगा।
उन्होंने पूछा, "क्या आपको बच्चे बहुत पसंद हैं?"
‘तुम्हें यह पसंद नहीं है?’
इस सांस से उसके शरीर से लाश जैसी गंध आने लगी। वह फूट-फूटकर रोने लगी। उसने उसे अपने सीने से लगा लिया और उसके बालों में हाथ फेरते हुए पूछा, "तुम क्यों रो रही हो?"
"आपने कभी न कभी सोचा होगा कि उन्हें यह पसंद क्यों नहीं आता, है ना?" "तुम्हारे पेट पर कहीं भी चर्बी नहीं है, कोई अनावश्यक चर्बी नहीं है। इससे मुझे लगता है कि तुम कभी गर्भवती नहीं हुई हो।"
उसने सोचा, क्यों न यह कहकर छुटकारा पा लिया जाए कि उसने संतानहीनता के लिए ऑपरेशन करवाया था? लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। उसे गुस्सा आ रहा था कि उसमें सच्चाई को पचाने की शक्ति नहीं थी। यह बात आज भी ‘अतापड़ी’ में दिखाई देती

है। इस प्रसंग में राधे के शरीर का जो वर्णन आता है, वह ‘पिन पयोधर भर भरिन’ की तरह है, मानो उसे मेरे शरीर से जोड़ने की कोशिश कर रहा हो!
'नाक की नोक छू नहीं रही है, नाखून खाद की मोटी परत से ढका हुआ है।'
थम समागम ल जतया पटुचाटु
सैकड़ों अनुकूल
मृ मधुर मत भा षतया
शथालीकृताघन कुलम
कासल्याशियन एक नया सौ आकर्षण है
मैं अकेले लेटा हूँ, मैं तुम्हें चूम रहा हूँ, मैं तुम्हें चूम रहा हूँ, मैं तुम्हारे होंठों को पी रहा हूँ।
मैं राधा की पूजा कर रहा हूँ। क्या आप मनोहरी को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं? मनोहरी के जीवन के बारे में उसे कुछ मत बताना।
'राजा, राधा किसी और पुरुष की पत्नी हैं; लेकिन वे कृष्ण की अमर प्रेमिका हैं! उनका विवाह नहीं हुआ है। यदि उनका विवाह हो जाता, तो उनका प्रेम इतना तीव्र नहीं रहता।'
वह गुजी को याद कर रहा था। अठारह! वह अभी भी जीवित है! अगर मैं राज से शादी कर लूँगी, तो वह कोई कार्रवाई नहीं करेगा। वह कार्रवाई क्यों करेगा? पैंतीस साल पहले की बात है।
इसके साथ ही पति-पत्नी का रिश्ता खत्म हो गया। इसके बाद भी उनकी परवरिश अधूरी रह गई।
लगता है उनके पास पर्याप्त है। अगर आप सोचें तो घट फोटा का साधारण काम करना मुश्किल नहीं है; लेकिन क्या हमारे लिए राधा होना छोड़कर स्त्री बनना उचित होगा?
चार-पाँच दिन इसी सोच में बीत गए। कोई फैसला लेना नामुमकिन था। सपने में उस बच्चे का ख्याल उसे चौंका गया था। उसने समझाया, ‘मेरे प्यारे कृष्ण, प्रेम की अमरता के सामने यह बहुत महत्वपूर्ण बात है! कलाकार का सच्चा स्रोत प्रेम है! क्या तुम समझते हो?’ बच्चा, जो उसकी बाहों में कसकर लिपटा हुआ था, उसने राज को चूमा। उसने भी "हां" कहा।
नृत्य प्रस्तुति सफल रही। दस से बारह गांवों में कार्यक्रम आयोजित किए गए। अकेले दिल्ली में आठ कार्यक्रम हुए। दर्शक भूल चुके थे कि उन्होंने पंद्रह साल पहले कटिकाराम के साथ यही नृत्य प्रस्तुत किया था। हालांकि,

राजा स्वभाव से कम बोलने वाले हैं। वे सब कुछ अपने तक ही सीमित रखते हैं। इस समय, जिस प्रकार मैंने गुजी की संगति सहन की, वैसे ही वे मेरी संगति सहन नहीं करेंगे, है ना? क्या राधा-कृष्ण की घटना में यह अंतर याद नहीं आता? वे अनुभवहीन थे।
उन्हें त्रिशंकुत्व का पहला अनुभव प्राप्त हुआ है। उनमें अभी तुलना करने की क्षमता नहीं है, तो क्या वे इन तीनों प्राणियों के साथ आदरपूर्ण व्यवहार करते हैं? लेकिन क्या इससे कोई खास फर्क पड़ेगा?
क्या सच में? मुझे ‘इतना टेढ़ा’ कौन कहेगा? मेरी गर्दन पर एक भी निशान नहीं है। मेरा सीना फूला हुआ नहीं है। मेरा चेहरा ढीला नहीं है। यहाँ तक कि उन्होंने मेरे पेट की सपाटता की भी तारीफ की है! मेरे जैसा योग कौन करता है? मेरी आँखों में जो परिपक्वता झलकती है, वह कमजोरी नहीं है। उस रात भी, उन्होंने उसी उत्साह से ‘रति-मदिंके’ आदि की पूजा की और उनका सारा ध्यान भटक गया। जब वे सुबह उठे, तो इसकी गर्म और मनमोहक सुगंध उनकी गर्दन को छू रही थी। उन्हें ख्याल आया कि उन्हें आज से ही इस अभ्यास को निपुणता से शुरू कर देना चाहिए। इसके लिए उन्हें प्रतिदिन तीन घंटे जय वाला को भी बुलाना चाहिए। वह प्रतिदिन कम से कम दो सौ रुपये लेंगे। अगर उनके पास तबला नहीं होगा, तो ताल ठीक नहीं होगी।
इसी क्षण मेरे मन में एक चेतावनी आई, मुझे सब कुछ व्यवस्थित रूप से पढ़ाना होगा।
अगर यह ठीक हो भी गया तो कम से कम तीन साल लगेंगे। तब तक तो मेरे छह बच्चे आ ही जाएंगे! ओह, बेचारी!
अखबार नहीं भूलेगा! वे साठ वर्षीय व्यक्ति के बारे में लेख छापेंगे, फैक्स कार्यक्रम तय करेगा। उनसे नृत्य के इतने सबक लेने के बाद, राधा के साठ वर्ष के होने की घोषणा के बाद, क्या वह इतना ही भावुक होकर उनके करीब रहेंगे? उनका पूरा शरीर कांप रहा था। उनका पूरा शरीर पसीने से भीगा हुआ था।
भोर हो चुकी थी। वह नीचे आई। जब उसने देखा कि गु जी आसपास नहीं है, तो वह हल्के कदमों से नीचे उतरा और दरवाजे से बाहर चला गया। उसने कुटिया को कुछ कदम धकेला और उसे गोद में उठा लिया।
इसके बाद वह शुरू हुई। उसके जाने के बाद भी उसे पसीना आ रहा था। गुजी ने चाय पेश की।

अंतिम संस्कार वाले दिन भी उसकी हालत वैसी ही थी। जब वह नहा रही थी और नाश्ता कर रही थी,
वह बालिग हो गई।
कार स्टार्ट करते समय उसके मन में ख्याल आया, क्यों न हम इस रस्सी को इससे कसकर बांध दें? यही रस्सी की मांग थी। इससे वह खुश हो जाएगा। लेकिन अगर क्या करना है, यह सवाल उठा तो वह पीछे हट जाएगा। आखिर यह सरकारी नौकरी है! गु जी के जीवित रहते रस्सी बांधना उचित नहीं होगा। जैसे ही उसने यह फैसला लिया, मानो उसके उत्साह पर पानी फिर गया हो। अठारह साल बीत गए! वह अभी भी जटायु की तरह बैठा है! कोई जिम्मेदारी नहीं, कोई चिंता नहीं। ऐसे लोग तो जल्दी मरते भी नहीं! राज का अभिवादन करते हुए और स्कूल की वरिष्ठ छात्राओं को पढ़ाते हुए उसने सोचा कि इसका एक उपाय रामूवालिया विकल से मिलना हो सकता है। वह कोई न कोई रास्ता निकाल लेगा। वह पीछे तारीख लिखवाकर गु जी से कागज पर कहीं हस्ताक्षर करवा लेगा। वह इस रस्सी को कानूनी रूप देने का कोई न कोई तरीका जरूर निकालेगा। उन्नीस साल पहले, मोहन
उसने उसे उसकी पत्नी से बचाया था! इसी विश्वास के साथ वह हर किसी के हाथों में चली गई।
और माने ने इन गतिविधियों में सुधार के सुझाव देने शुरू किए; लेकिन रामूवालिया के संदर्भ में मोहन की याद ने उन्हें बेचैन कर दिया। वह बदमाश! वह आसानी से मर गया!
हटारी हँस पड़ी! जब मैं उनतीस साल तक अपनी माँ के साथ रही, तब मैं गाय की चमड़ी के कपड़े पहनती थी।
मुझे अपनी बेटी की याद आ रही थी! अगर मैंने उसके साथ सही व्यवहार किया होता, तो मैं उसे थोड़ा आगे बढ़ा देती। मैं उसे दस-बारह राजदूतों से मिलवा देती। मैं पद्म भूषण-पद्मविश भूषण के लिए उसका नाम आगे बढ़ा देती। मैं अपनी जान गंवा देती। मूर्ख! क्या मुझे अब भी उनतीस भूपली की याद आ रही है? मैं पाँचवें दिन देवराज से शादी भी करूँगी और उसे इन सभी पुराने पत्रों की प्रतियाँ डाक से भेज दूँगी! शुभकामनाएँ!
राज को ताल की बुनियादी बातें सिखाई जा रही थीं। वह उसे तालों का गणित सिखा रही थीं। वह उसे तालों को जोड़ना, उन्हें भाग देना, उनसे कौन-कौन सी तालें प्राप्त की जा सकती हैं, यह सब खुद नाचकर और उसे भी नचाकर सिखा रही थीं।

चाहे हम कितना भी नाचें, उसकी सांस नहीं फूलती, लेकिन वह हांफने लगता है! उसे योगासन करवाना जरूरी है।
दो घंटे की कड़ी मेहनत के बाद वह थक गया था। उसने कहा, 'तुम्हें सुबह एक घंटा और शाम को दो घंटे कड़ी मेहनत करनी होगी। बिना सोए योग का अभ्यास शुरू करो! समझे?'
दिन का नृत्य प्रस्तुत करने के बाद उन्होंने कहा, 'अब पारंपरिक गुरु वंदना कीजिए। मैं यहाँ हूँ।'
यह तुम्हारा राज़ है! इसके बाद, 'प्रिय' कहकर अपने प्रियतम के अधिकार का प्रयोग करो!
नाच-गायन की इस रात के बाद, एक साथ गर्म पानी से स्नान करने का मौका। नतीजतन, उसे एक घंटे तक जगाए रखने की उसकी कोशिशें बेकार गईं। वह रात के सन्नाटे के अलावा ज़ोर से बोल नहीं सकता था। अगर वह इस शांत वातावरण में लेटे हुए उसकी आवाज़ सुन लेती तो क्या होता? इतना नाचने के बाद भी उसे नींद नहीं आ रही थी। मैं दो घंटे और नाच सकता था। मैं दो घंटे और जाग सकता था! अब कौन छोटा रहेगा?
इस विचार ने उसके आत्मविश्वास को बचा लिया, लेकिन अगले ही पल उसे एक समस्या का सामना करना पड़ा। विवाह का अर्थ पूर्ण समर्पण था। यदि उसने विवाह किया, तो अगले दो हफ्तों में गोपनीयता और दमन का अंत हो जाएगा। पूरी दुनिया के सामने, देवताओं की शिक्षाओं के सामने, उसे पति के रूप में स्वीकार करने के बाद, उसे विनम्रता से पेश आना होगा। फिर उसे अपना अधिकार जताने में कितना समय लगेगा? वह स्वतंत्रता और स्वामी का दर्जा, जिसे उसने इतने वर्षों तक संजो कर रखा था, सब छिन जाएगा।
अगले दिन, दो घंटे की कड़ी मेहनत के बाद, उसके साथ स्नान करते समय, उसने सोचा, "क्या महिलाओं को इसी तरह पीटा जाता है?"
‘का?’
"मैंने सुना है कि इस क्षेत्र में अभी भी इन्हीं तरीकों का अभ्यास किया जाता है।"
कुछ याद आने पर उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई। उसने सोचा, 'तुम क्यों मुस्कुरा रहे हो?'

मेरी एक बड़ी चाची हैं। एक बार वो मेरी माँ से कह रही थीं कि मेरे पति मुझसे प्यार नहीं करते। मेरी माँ ने सोचा, ‘आप ऐसा क्यों कह रही हैं?’ जिस पर उन्होंने जवाब दिया, ‘उन्होंने मुझे कभी एक बार भी नहीं मारा!’
‘तो तुम भी इस औरत को मार डालोगे!’
'मैं काँहा गलत था?'
"जब तुमने मुझे अपनी चाची के बारे में बताया तो तुम्हारे चेहरे पर मुस्कान थी!"
"क्या यह हंसी जैसी ही घटना नहीं है?"
वह चुपचाप बैठी रही; लेकिन साथ ही सतर्क भी हो गई। वह जानता था कि अगर उसने शादी नहीं की तो वह किसी न किसी दिन उसे मार डालेगा! कुछ देर बाद उसने सोचा, 'इसके लिए दहेज तो चाहिए ही होगा, है ना?'
'क्यों नहीं?'
मुझे भी ऐसा ही लगा था।
"हाल ही में वह काफी बड़ी हो गई है!"
'अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो तुम्हें कितना दहेज मिलेगा?'
अगर तुम ऐसा नहीं करोगे, तो नहीं! मेरे पास मेरी राधा है!
‘कृष्ण ने राधा को मुक्त कराने के लिए आठ प्रतिज्ञाएँ भी ली थीं। मैं इसका उत्तर देने के बारे में सोच रहा हूँ।’
‘आपकी बेटी के लिए कोई मकान मालिक आया है। वह दिल्ली में एक घर खरीदना चाहता है और आपको देना चाहता है! पत्र ठीक एक दिन पहले आया था।’
उसने ताना मारते हुए कहा, 'तो क्या? तुम इस सवाल को क्यों टाल रहे हो? हाँ कहो और मुझे बताने में संकोच न करो!'
‘कुछ मत बोलो!’ हनत ने साबुन लगे उसके पीठ पर एक थप्पड़ मारा। यह चेहरे पर थप्पड़ तो नहीं था, लेकिन एक तरफ अच्छा लगा।
उस रात वह जल्दी नहीं सोया। वह उसके सुडौल और लचीले शरीर की प्रशंसा करता रहा।
उसे यह भी पता था कि अगर वह ऐसा करेगा तो उसे खुशी मिलेगी। 'वीट से हटिन' कहते हुए उसने उसे खूब चूमा।
झपकी लेने के बाद, वह फिर से सोच में डूब गई। घर तो तुम्हारे नाम पर है। शादी के बाद इस पर उसका कितना हक है? विकल को सोचना चाहिए था। शायद शादी के बाद वह सोचेगा, 'इनमें से एक मेरे नाम पर कर दो, मैं इतना कुलीन नहीं हूँ कि

इस घर में पत्नी बनकर रहूँ! अगर मैंने इस जमींदार की बेटी से शादी की होती, तो घर मेरे नाम पर होता!' तो मैं क्या करूँ? अगर मैं मना कर दूँ, तो वह हाथ भी नहीं उठाएगा! अगर उसे पता चल गया कि वह खुद को रोक नहीं सकता, और न ही बूढ़ा है, तो कौन जाने कितना गुस्सा होगा! अगर उसे मेरी उम्र का पता चल गया, तो वह और भी ज्यादा गुस्सा हो जाएगा।
संक्षेप में कहें तो, यदि आप ऐसा नहीं करते हैं, तो शांतिपूर्ण जीवन के बजाय, आपका जीवन अंतहीन समस्याओं से घिरा रहेगा।
एक महीने तक शाम को दो घंटे की कक्षाएं चलती रहीं। इसके अलावा, वह सुबह ढाई घंटे अभ्यास करते थे। मैं सुबह के अभ्यास के लिए उन गेंदों पर टेप लगा रहा था जिनके बारे में उन्होंने एक दिन पहले बताया था।
एक दिन उसने कहा, ‘मैं तुम्हें इतनी जल्दी में सिखा रही हूँ! लेकिन इसका तुम्हारे शरीर और पैरों पर बुरा असर तो पड़ ही रहा होगा। अगर नींव और ऊपर का फर्श मज़बूत नहीं हैं, तो ऊपर की इमारत गिर जाएगी। अब से मैं तुम्हें एक घंटे के लिए सिखाऊँगी। वो भी हफ्ते में तीन बार। आज जो सीखा है, उसका अभ्यास करने के बाद ही मैं तुम्हें अगला पाठ सिखाऊँगी।’
उसे उम्मीद थी कि वह बहस करेगा; लेकिन वह तैयार था। उस रात वह काफी देर तक जागा रहा, जैसा कि उसने अनुमान लगाया था। जल्द ही उसे पता चल गया कि बिस्तर पर भी वह नृत्य से संबंधित समस्याओं के बारे में सोचता रहता था, और कभी-कभी तो चर्चा भी शुरू कर देता था। एक बार उसने कहा, 'मेरे महाराज, हमें बिस्तर पर लेटे-लेटे आभूषणों के बारे में बात करनी चाहिए थी। नृत्य के बारे में बात करने और चर्चा करने का कोई मतलब नहीं है जब तक कि आप अपने पैर में घंटी न बांध लें।'
हालांकि, उन्होंने इस बारे में कुछ नहीं कहा।
एक बार उन्होंने सोचा, ऐसा जिद्दी विद्यार्थी है, उसे जल्दी पढ़ाने में क्या दिक्कत है? बाद में उन्होंने सोचा, प्रशिक्षण पूरा होने तक तो सब जिद्दी ही रहते हैं। प्रशिक्षण पूरा होते ही सब चिड़ियों की तरह उड़ जाते हैं! मुफ्त आवास, मुफ्त नाश्ता, कोई ट्यूशन फीस नहीं। उसे कम से कम आठ या दस साल पढ़ाना चाहिए। तब तक वह पैंतीस साल का हो जाएगा। उसके बाद वह कहाँ जाएगा? अगर वह अंत तक यही रवैया बनाए रखता है, तो मैं उसी नाम से एक घर और एक थिएटर भवन बनवाऊँगा। मैं उसके साथ कोई अन्याय नहीं करूँगा! फिर भी, जब वह उनकी बाहों में था, तब भी उन्हें एहसास हुआ कि उनके दिमाग में सिर्फ लय ही

चल रही है। इस पर भी उन्होंने उन्हें चेतावनी दी, 'अगर तुम यही सोचते रहोगे, तो कला में महारत हासिल नहीं कर पाओगे।' मैं आऊँगा, मैं

३
एक दिन उन्हें सरकार से एक पत्र मिला। संयुक्त राष्ट्र ने एशियाई महाद्वीप के देशों की तुलनात्मक नृत्य परंपराओं का अध्ययन करने के लिए टोक्यो में एक दीर्घकालिक कार्यशाला आयोजित करने का निर्णय लिया था। उन्हें भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए इस कार्यशाला में भेजने का निर्णय लिया गया। यहाँ से उन्हें संयुक्त राष्ट्र की ओर से तीन महीने का यात्रा भत्ता और मानदेय प्राप्त होगा। यह भी बताया गया कि अन्य विवरण पेरिस स्थित संयुक्त राष्ट्र के कला विभाग से प्राप्त किए जाएँगे।
यह अवसर न केवल भारत के उच्च वर्गों में, बल्कि विश्व के उच्च स्तरों में भी था! एहना का नाम केवल राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर की कलाकार के रूप में भी जाना जाने लगा! उसे तुरंत समझ आ गया कि उसका नाम सरकार के किसी विभाग के किसी अधिकारी ने सुझाया होगा। उसने तुरंत फोन करके अपनी सफलता की सूचना दी। वह नर्तकी के वेश में तैयार हुई, कार में फूलों का एक बड़ा गुलदस्ता लेकर उस अधिकारी से मिलने मंत्रालय गई। उसने उस कलाकार की खूब प्रशंसा की और उन्हें प्रणाम किया। फिर उसने स्नेहपूर्वक कहा, 'आप इस लड़की को नृत्य क्यों नहीं सिखाते? क्या मुझे यह अवसर नहीं मिलना चाहिए?'
उसकी भौहों और आँखों की उलझन, हाथों की आकर्षक हरकतें, चेहरे पर सदियों पुराना भाव देखकर अधिकारी ने कहा, 'इस उम्र की लड़की नाच सीख रही है? मेरी बेटी पागल हो गई है। उसके दो बच्चे भी हैं।'
बालों को रंगकर खुद को अधेड़ दिखाने की कोशिश कर रहे उस अधिकारी का जवाब सुनकर वह भी हंस पड़ी, 'जी हां? आपके दो पोते-पोतियां हैं? ऐसा बिल्कुल नहीं लगता, है ना!'
उसकी खुली हुई आंखें और चेहरे पर खिलखिलाती मुस्कान देखकर अधिकारी भी प्रसन्न हो गया।
अब मामला कुछ और ही था। वह पहले कभी इतने दिनों के लिए घर से दूर नहीं रही थी। इसलिए इस बार सारी व्यवस्था करना ज़रूरी हो गया था। ओम प्रकाश पर सारी ज़िम्मेदारी डालना एक तरीका था; लेकिन वह तो आलसी आदमी था! जब मैंने मना

किया, तो वह कोई न कोई बहाना बनाकर टालमटोल करता रहा। मैं तीन महीने के लिए दूर नहीं रहूंगी, वह एक हफ्ते की छुट्टी ले लेगा। घर के काम में भी पूरा समय नहीं लगेगा; लेकिन भले ही वह छात्र था, सबको पता था कि देवराज इसी इमारत में रहता है। वह सरकारी नौकरी करता है, इसलिए घर की देखभाल की पूरी ज़िम्मेदारी उसे सौंपना ही उचित होगा। उसे यह भी कहना चाहिए कि वह रात को जल्दी घर आकर खाना खा ले और सुबह गृहिणी के आने के बाद ही घर से निकले, इत्यादि। उसने देवराज को सब कुछ समझाया और आखिर में कहा, 'एक बात का ध्यान रखना। लड़के-लड़कियां डांस स्कूल में साथ-साथ नृत्य सीखते हैं, इसलिए उन्हें आपस में करीब रखना ज़रूरी है। अगर उनका व्यवहार बिगड़ गया, तो उनके माता-पिता तुम्हारे डांस स्कूल को दोष देंगे।'
इससे कोई परेशानी नहीं होगी, इस बारे में सतर्क रहें।'
उन्होंने उनकी बात ध्यान से सुनी और उसे स्वीकार किया।
इससे पहले भी उसे कई काम निपटाने थे। उसे अपना पासपोर्ट रिन्यू करवाना था। हर्ष के लिए उसे बहुत काम करना था। सरकारी दफ्तरों में जाना था। जापान से आने वाले पत्रों का तुरंत जवाब देना था। इस अफरा-तफरी में न सिर्फ विश्व, बल्कि देवराज भी उसे नृत्य नहीं सिखा पाए। उसके मन के एक कोने में ख्याल आया, 'तुम उसे भी नहीं छोड़ोगे, है ना?' काश, वह उसे अपने साथ ले जा पाता! एक पल के लिए उसके मन में आया, अगर वह यह सारा बोझ अपने साथ ले लेता तो क्या होता? काश, हर्ष के सारे सवाल पल भर में हल हो जाते। उसे तीन महीने की छुट्टी कैसे मिल सकती थी!
अंतिम संस्कार से एक दिन पहले, उसने उसे गले लगाया और उस पर चुंबनों की बौछार करते हुए कहा, "मेरे राजा! मेरा जीवन आपके हाथों में है, क्या यह आपके हाथों में नहीं है?"
उन्होंने हंसते हुए यह भी कहा, "हम दोनों की जिंदगी स्वर्ग में है!"
अगर आप कह रहे हैं कि मत जाओ, तो मैं आपकी यात्रा रद्द कर दूंगा! मेरी राय में आप एक मूल्यवान विदेशी यात्री हैं।
‘पु हा-पु हा को ऐसा मौका नहीं मिलेगा। अगर आप इस बार नहीं जाते हैं और उन्हें किसी और को चुनने का मौका नहीं देते हैं, तो आपको भविष्य में कभी भी यूएनओ से निमंत्रण नहीं मिलेगा।’
यह सुनकर वह प्रेम से भर उठी, "आप कितने समझदार हैं! जापान से आने के बाद मैं आपको हर दिन तीन घंटे पढ़ाऊंगी!" उसने यह बात सावधानी से कही।

उसने कहा, ‘आज तुम्हें जो कुछ भी सिखाया गया है, अब तक तुम्हें उसे आत्मसात कर लेना चाहिए।’ मगचम
"आपके बिना हम आगे नहीं बढ़ पाएंगे। समझे?"
'हाँ।'
वह उसे एयरपोर्ट छोड़ने अकेले गया था। रास्ते में टैक्सी में उसने उसका हाथ कसकर पकड़ रखा था। जब उसने सामान की ट्रॉली के साथ उसे अलविदा कहा, तो उसकी आँखों में आँसू भर आए।
एशिया के विभिन्न देशों में नृत्य देखना, नोट्स लेना, भारत के प्रमुख नृत्य रूपों का प्रदर्शन करना, संयुक्त राष्ट्र द्वारा आयोजित विभिन्न गांवों में नृत्यों की रिकॉर्डिंग करना और उन नृत्यों में आगे की शिक्षा देना जिन्हें उन्होंने कभी दो भारतीय अधिकारियों की पत्नियों को देना छोड़ दिया था - ये उनके लिए खाली समय नहीं थे।
फिर भी, देवराज की याद उसके मन में बार-बार आती रहती थी। काश, वह उसे अपने साथ ले आई होती! वह जब भी मौका मिलता, उसे फोन करती थी; लेकिन दोनों देशों के बीच समय के अंतर के कारण, वे अकेले फोन पर बात नहीं कर पाते थे। रात में, गुजी को घर पर रहना पड़ता था, बाकी छात्रों को स्कूल में, और उसे दफ्तर आना पड़ता था।
कोई स्वतंत्र फोन नहीं था। कई बार मन हताश हो जाता है। मन में वह असहनीय भावना उमड़ती है।
पत्र तेज़ी से लिखा जाने लगा। उसने इससे पहले कभी किसी को इतना भावपूर्ण प्रेम पत्र नहीं लिखा था; लेकिन उसे एहसास होने लगा कि अब उसके पत्र जयदेव के पिता भी पढ़ रहे हैं! उसने दो पन्नों का पत्र डाक में डाल दिया। फिर उसे एक तरफ रख दिया और दूसरा पत्र लिखने के लिए अपने कमरे में लौट आया।
होटल में दूसरे देशों के कलाकार भी ठहरे हुए थे। उन्हें अकेले पुरुष कलाकारों के पास जाना उचित नहीं लगा। वे तीन थे; लेकिन वे शायद ईर्ष्यालु थे, क्योंकि उन्होंने ज्यादा स्नेह नहीं दिखाया। इसी कारण उन्होंने राजा को पत्र लिखकर मन की शांति पाई।

४
टोक्यो का उनका दौरा बेहद सफल रहा। सांस्कृतिक मामलों के विभाग के सचिव ने उन्हें अगले वर्ष राष्ट्रीय महोत्सव में दस कलाकारों के साथ आने और

टोक्यो, हिरोशिमा, नागोया, ओसाका आदि में आठ कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि अन्य नृत्यों के साथ-साथ कम से कम एक रचना बौद्ध जीवन पर आधारित होनी चाहिए। थाईलैंड, मलेशिया, इंडोनेशिया और कोरिया के प्रतिनिधियों ने भी उनके नृत्य और प्रदर्शन की बहुत सराहना की और उन्हें अपने-अपने देशों में आमंत्रित करने का वादा किया। जापानी नर्तकी टिको ने दो साल तक कथक नृत्य का अध्ययन किया था। उन्होंने तीन साल के लिए सरकारी छात्रवृत्ति पर मनोहरी आने की इच्छा भी व्यक्त की। अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करने की खुशी में उन्होंने अपनी वापसी की यात्रा शुरू की। जाते समय उन्होंने राज के लिए एक सूट, शॉर्ट्स और पैंट खरीदे।
राजभवन के अधिकारी आज सुबह हवाई अड्डे पर पहुंचे। उन्होंने उनसे हाथ मिलाया और भारत में उनका स्वागत किया।
उसने अच्छा व्यवहार किया। उसने उसे प्यार से चूमा नहीं। उसने बस अपनी इच्छा पूरी की।
यह दिल्ली है, पेरिस नहीं। टैक्सी में आते समय उसने उसका हाथ कसकर पकड़ रखा था। पीछे आ रही गाड़ियों की बत्तियों की वजह से टैक्सी में उसके और करीब आना नामुमकिन था। जब उसने उसे उसके घर छोड़ा, तो उसने कहा, 'गुजी अभी तक नहीं उठी हैं। तुम्हें दो घंटे की नींद मिल जाएगी। मैं भी थोड़ी देर सो लेता हूँ' और नुरुयाशाला के लिए निकल गया। उसने आँखों से इशारा किया कि हमें साथ सोना चाहिए। उसने सिर हिलाकर मना कर दिया। उसे लगा कि शायद वह यह कहना चाह रहा है कि यह सही समय नहीं है। फिर भी, वह घबराई हुई थी।
एक बिल्ली के बच्चे की आवाज़ आई। उसने सोचा कि तीन महीनों में यह सब बदल गया है। पर्दे के पीछे
क्या वह इसके बारे में भूल गया? ऐसा तो नहीं होना चाहिए। उसे सुबह-सुबह हवाई अड्डे आना था।
शायद इस वजह से उसे अच्छी नींद नहीं आई होगी। अगर नहीं, तो शायद उसकी नींद उड़ गई होगी।
नहीं, नहीं! एक दिन के आराम के बाद, रात हो गई! इसके बाद, जापान की अपनी यात्रा में, हम हर जगह आस-पास की घाटियों में गए। अगर हम भाग्यशाली होते, तो यह सवाल ही नहीं उठता।

उसने स्नान किया। उसने ब्रेड और टोस्ट का नाश्ता किया। उसने एक गोली ली और सो गई। उसे नींद आ गई।
देवराज रात को दफ्तर से आने में थोड़ा देर हो गया। तब तक वह छात्रों से मिल चुका था और उनकी खुशी के बारे में पूछ चुका था। छात्र इसी बारे में बात कर रहे थे। ओम प्रकाश खुश था। वरिष्ठ छात्र यह सुनकर बहुत उत्साहित थे कि उन्हें समूह को जापान ले जाने का अवसर मिलेगा। उनकी खुशी और भी बढ़ गई। वे इसी उत्साह में रवाना हुए।
उसने सामने का दरवाजा बंद किया और ऊपर चली गई। देवराज ने अपने कपड़े धो लिए थे और बदल लिए थे। ‘संयुक्त सचिव ने बैठक बुलाई थी, इतनी देर हो चुकी है कि खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही!’ उसने कंधे उचकाए; बस इतना ही। वह उसके करीब नहीं आया, उसे छुआ तक नहीं, गले भी नहीं लगाया।
वह भी यहाँ आकर सोफे पर बैठ गई। उसने कहा, ‘नृत्य में कोई समस्या नहीं थी; लेकिन तुम अकेली नहीं हो। लड़के-लड़कियाँ भी अपनी क्षमता के अनुसार आ रहे थे। हालांकि, थिघंजन हमेशा आकर अभ्यास करता था। ओम प्रकाश भी ज्यादा अभ्यास नहीं कर रहा था।’
वह रुका और सोचने लगा, "क्या आप कुछ और कहना चाहते हैं?"
'बड़े लड़के-लड़कियां अक्सर नहीं आते थे। इसी वजह से शिक्षा का प्रभाव कम हो रहा था।'
'और क्या?'
‘तुम और क्या कहोगी? बस मुझे अंतरराष्ट्रीय मामलों के बारे में बताओ!’ उसने हंसते हुए उसकी नजरों से नज़रें बचाईं।
कुछ क्षणों की चुप्पी के बाद, उसने सोचा, "यह बहुवचन क्यों?"
‘गु के एकवचन रूप में बोलना उचित नहीं है!’ हनिता ने उन्हें प्रणाम किया, अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा, ‘मैं अब से प्रतिदिन तीन घंटे उन्हें पढ़ाने के लिए तैयार हूँ।’
वह गुस्से में थी। उसे यकीन था कि वह उससे कुछ छिपा रहा है। वह हंसते हुए बोली, 'मुझे साफ-साफ बताओ कि तुम क्या कहना चाहते हो!'
उसकी नजरें नीचे झुकीं; लेकिन उसने अपनी नजरें किसी और चीज पर टिका दीं। उसने उसकी ओर देखा और कहा, 'मैं अलका से शादी करने जा रहा हूँ। अलका प्रवीण परीक्षा की तैयारी के लिए तुम्हारे पास आती है। उसके माता-पिता ने अपनी सहमति दे दी है।'

जैसे कोई चौंक गया हो। अलका। इक्कीस साल की एक लड़की। उसने हाल ही में बीएससी की पढ़ाई पूरी की है। उसे नृत्य की पूरी जानकारी है, लेकिन वह बहुत स्टाइलिश नहीं है। वह बहुत दुबली-पतली है। पाँच फुट तीन इंच लंबी! अलका की आकृति उसकी आँखों के सामने से गुज़रते ही उसका सिर चकरा गया।
कुछ ही क्षणों में वह संभल गया। उसे अपनी मनस्थिति का पता उसे नहीं चलने देना था। वह सीधी होकर बैठ गई। वह भी सामने की दीवार को घूर रहा था।
‘क्या तुम मेरे शहर में न होने पर मौका ढूंढ रहे थे? मुझे धोखा देने के लिए!’
उसने कुछ कहा नहीं।
‘यह घटना मेरे घर में घटी। यह मामला इतना बढ़ कैसे गया?’ उनका लहजा मामले की जांच-पड़ताल करने जैसा था।
‘वह तुम्हारे साथ कार्यक्रमों में आती थी। वह राधे की दोस्त थी। हम एक-दूसरे को जानते थे। एक दिन वह नृत्य सिखाने आई। उस दिन हमने खूब मस्ती की। मुझे वह अच्छी लगी। एक हफ्ते के अंदर ही हम बहुत करीब आ गए। रिश्ते के बारे में मैंने ही सोचा था। वह तुमसे डरती थी। मैंने उससे कहा, डरने की कोई वजह नहीं है!’
तो? क्या तुम दोनों ने साथ में रात बिताई या नहीं?
नहीं। वो उस तरह की लड़की नहीं है! मैंने कोशिश तो की, लेकिन वो तैयार नहीं थी। उसे शादी से पहले यौन संबंध बनाने पर सख्त आपत्ति है।
‘उस दिन आपने क्या देखा?’
'इत्चम मु धा सा दया, इच्चम् मु धा मन!'
आप इतनी निश्चितता के साथ ये सब कैसे कह सकते हैं!
‘क्यों? क्या आप इस फूल की सुगंध दूर से ही नहीं सूंघ सकते? क्या इसे हाथ में लेकर सूंघना जरूरी है?’
उसे कुछ और कहने को सूझ नहीं रहा था। उसकी आँखों के सामने आँसुओं का पर्दा सा छा गया। वह अचानक खड़ी हो गई और कुछ देर वहीं खड़ी रही। उसने अपना सिर उठाया और उसकी तरफ देखा। इससे पहले कि वह कुछ समझ पाती, उसने उसके चेहरे पर ज़ोरदार थप्पड़ मार दिया। वह उसे एक के बाद एक थप्पड़ मारती रही। वह साँस रोके हुए यह सब सहता रहा।

माँ-माँ, वह दबी हुई थी। याची की गर्दन नीचे झुक गई थी। वह चिल्लाई, 'कैसी नन्ही कली! इतने लंबे समय तक आनंद लेने के बाद, क्या तुम मुझे अपने साथ ले जाओगे?'
‘मैंने तुम्हारे साथ कुछ नहीं किया है, और न ही करूंगा!’ उसने मुस्कुराते हुए उससे कहा। उसके गाल लाल हो गए थे।
‘ये तो कुछ भी नहीं! मैं देख रही हूँ कि तुम उससे कैसे फ़्लर्ट कर रहे हो! मैं उसे और उसके माता-पिता को तुम्हारे रिश्ते के बारे में बता दूँगी! तुमने भी तो मुझसे फ़्लर्ट करने को कहा था, है ना? मैं तुम्हें वो भी बता दूँगी।’
‘तुम मेरे गुलाम हो, इसलिए तुमने मुझे इतना पीटा, फिर भी मैंने हाथ नहीं उठाया। अगर मैंने हाथ उठाया, तो तुम मुझे छू भी नहीं पाओगे! क्या तुम्हें लगता है कि मैं नहीं समझती कि तुमने मुझे अपने करीब रखने के लिए अपनी शिक्षा का स्तर गिरा दिया है? अगर तुमने मेरे परिवार को नुकसान पहुंचाने वाला एक भी कदम उठाया, तो मैं उसे बर्दाश्त नहीं करूंगी! मेरे पास तुम्हारे भेजे हुए पत्र हैं। मैं इन पत्रों के जरिए पत्रकारों को बताऊंगी कि तुमने मुझे जाने से रोकने के लिए क्या-क्या किया है!’
"मुझे बताओ!" उसने कहा और अलमारी में चिट्ठियाँ ढूँढने लगी।
‘ढूंढने का कोई फायदा नहीं है। मैंने सपना देखा था कि तुम ऐसा करोगे। मैंने सारे पत्र सुरक्षित जगह पर रख दिए हैं। मैं उन्हें प्रकट नहीं करना चाहता। हमारी मुलाकात के बाद, जब तुमने कहा था कि तुम्हें हमसे कोई खतरा नहीं है, तो मैंने कहा था: मैं उन्हें तुम्हारे पास ले आऊंगा।’ उसने कमरे में बिखरे हुए कपड़े, सामान और बाथरूम से ब्रश व टूथपेस्ट एक थैले में भर दिए।
उसे उसके जाने पर गुस्सा आया। वह असमंजस में ज़मीन पर गिर पड़ी। उसने उसे बैग थमा दिया और वहाँ से चला गया।
पंद्रह

१
एक दिन फोन की घंटी बजी। यह परंजपे का फोन था। कुछ सुखद विचारों के बाद, उन्होंने एक सुझाव दिया, 'कुछ लोग कह रहे हैं कि इन रागों की ओंकारत राग में एक कैसेट बनाई जानी चाहिए। मैं भी इस संगीत के लिए कुछ करना चाहता हूँ।

मेरे एक दोस्त का बेटा है। उसका नाम शिशकांत पोकले है। उसने उसके साथ कैसेट का व्यवसाय शुरू किया है।'
हाँ, ऐसा ही है। इसे थोड़ी सी प्रोत्साहन की ज़रूरत है। बस स्टूडियो आते- जाते रहिए। बाकी सब हम देख लेंगे।
'बाकी के बारे में क्या?'
मैंने तुमसे कहा था, वह मेरे दोस्त का बेटा है। लड़का बहुत ईमानदार है। मैं उसे बिक्री मूल्य के अनुसार मानदेय दूंगा। विज्ञापन की कीमत पच्चीस हजार है।
मैं आपको भुगतान कर दूंगा। आपकी राय में, कीमत बहुत कम है। अन्यथा, यह 'मानद' नहीं है।
वे! पत्तियाँ इस लकड़ी के साथ दी गई हैं, और समझें कि वे नहीं हैं। मोहनलाल को कैसेट के कारोबार में ज़्यादा दिलचस्पी नहीं थी। चंपा द्वारा किए जा रहे अवैध धंधे में भी वे किसी नतीजे पर नहीं पहुँच पाए थे। उनका यह भी मानना था कि कैसेट कंपनियाँ धोखा देती हैं। उन्हें तुरंत समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहें। "आपके अनुसार, इस गाने के लिए सिर्फ़ पच्चीस हज़ार रुपये, जो इस क्षेत्र के गायकों के इतने सारे प्रशंसकों को आकर्षित करता है?" उनके मन में एक कड़ा विरोध का भाव आया।
वह हँसते हुए बोला, 'तुम्हें पता है, मैं किसी कैसेट में नहीं रहा हूँ। ज़रा सोचो तो सही।'
‘सोच-समझकर फैसला करो। कुछ भी गलत नहीं है!’ परंजपे भी हंस पड़ा।
इसी दिन, लगभग सुबह 11:00 बजे, झुनझुनवाला ने मोहनलाल को अपने घर पर रात के खाने के लिए आमंत्रित किया।
ऐसा ही था। टिपनीस भी सही था। झुनझुनवाला ने भी अपने चार दोस्तों को बुलाया था। टिपनीस ने मोहनलाल के फ्लैट पर आने का फैसला किया था और झुनझुनवाला वहाँ गाड़ी भेजने वाला था। चूंकि उसके पास खाली समय था, इसलिए टिपनीस ने फोन किया और एक घंटा पहले ही आ गया। बातचीत शुरू हो गई। मोहनलाल ने उसे परंजपे के प्रस्ताव के बारे में बताया।
यह सुनकर अभिनेता के चेहरे पर आई व्यंग्यात्मक मुस्कान तुरंत दब गई। मोहनलाल ने मन ही मन सोचा, 'क्यों नहीं? क्या तुम अपनी मुस्कान को दबा रहे हो?'

‘कुछ नहीं? जब मैं निकली थी तब मेरा पोता अभी-अभी घर आया था। उस छोटी बच्ची को याद करके मुझे हंसी आ गई!’
‘इस प्रस्ताव के बारे में बताते समय मुझे अपने पोते के बचपन की याद आने में कोई आपत्ति नहीं है! लेकिन आपके चेहरे से साफ पता चलता है कि आप झूठ बोल रहे हैं! सच बताइए!’
इस टिप्पणी से वह असमंजस में पड़ गए क्योंकि उनमें अभिनय का कोई हुनर नहीं था। मोहनलाल ने अपना चेहरा गंभीर बनाए रखा, लेकिन उन्होंने कहा, 'मैं किसी को अपना नाम नहीं बताऊंगा।'
तो वादा करो—’
मोहनलाल ने इसका वादा किया था।
फिर उसने कहा, 'तो इसमें कोई राज़ नहीं है! लेकिन आप जैसे बड़े लोग छोटी- छोटी बातें नहीं जानते। आपने उसका नाम मन ही मन शिशक रखा है, है ना? वह आपके किसी दोस्त का बेटा नहीं है।'
उसने उसे काम पर रखा है। वह खुद कंपनी चलाता है। विट्ठल ही वह व्यक्ति है जिसने
भगवान का नाम। यही नाम कैसेट कंपनी को दिया गया है। इसी वजह से पत्रकार कई कलाकारों से परिचित हैं। वे कलाकारों को मीठी-मीठी बातें करके राजनीतिक सूचियाँ दिलवा देते हैं। आप पच्चीस हज़ार देने को तैयार हैं, ये तो बहुत बड़ी रकम है! दूसरों को वे एक-दो हज़ार देकर हाथ हिला देते हैं! इसके बाद कितनी कैसेट बिकीं, क्या हुआ – इसका कोई हिसाब नहीं देते। अगर आप उन्हें अपनी ओंकार राग की कैसेट बनाने दें, तो वे आसानी से पंद्रह-बीस लाख रुपये कमा लेंगे। आपने अपने ओंकार राग कार्यक्रमों में कैसेट का इस्तेमाल नहीं किया होगा। याद है ढाई साल पहले चंपाबाई ने आपकी कैसेट 'मोहन मेलोडीज़' के नाम से रिलीज़ की थीं? यही मूल विचार था। कोई मुझे बताता था कि इसी के लिए रिकॉर्ड और कैसेट बिकती थीं। क्योंकि चंपाबाई विदाला और प्रतापराव नाइक ने परंज को पत्रकार के रूप में आगे बढ़ने में मदद की थी, है ना? मुझे इस बात से बहुत सहानुभूति है।
‘अरे बाप रे! अगर ऐसा है तो!’ मोहनलाल ने हैरानी से कहा। वो तो समय-समय पर कैसेट रिलीज़ करके पैसे कमाने के लिए खुद का प्रचार करते रहे हैं! लेकिन उन्होंने कोई झूठी तारीफ नहीं की है। ऐसा नहीं है कि उन्होंने इसका बहुत प्रचार किया हो।

###

‘### ########## #####’ ###### ## ## #### ####, ‘######
######## ##### ###### # #### ##### #### ## ###### ###### ########## #### #### ## ##
####’

###########

######### ## ###### ##### ## ######## ###### ##### ## ## ###### ## ###########
########, ## ######## ###### ## ######### ## ###### ####! ######## #### #### ##
'##
######-###### ## ###### ###### ## ####
#####
######; ###### ######### ## ###### ########### #### ##### #### ## #### #########
##
########
###########'

'##### ##### ##### ########' ## #### ####
##########

####-#### ########### ## #### ####-#### ###### ## ## ## ###### ##########
#####
############## ## #### #### ######## ## ##### ########### ## #### #### ######## ## ####,
####?
####, ## ###### ######## ## ############## ###### ## ##### ########### ## ####
####, ## ##### #### ##### ####
######## ## ## ######## #### ############## ## ########## ######### ##### ####, ##
#####

######### ###### #### ########## ##### ##### ##### #### ######## #### ###### ####
##
##
#####!
######## ## ##### #### #### ############ ##### #### ########## ######## ##
#####
#####

अगले दिन, परंजपे ने फिर फोन किया। उषा सिंह को समझ नहीं आ रहा था कि हमने आज समझौते पर हस्ताक्षर कर दिए हैं। यह सोचते हुए कि उन्हें खुद ही बता देना चाहिए, बजाय इसके कि कोई और बताए, परंजपे ने कहा, 'माँ, मेरे पास आपके ओमकार के गाने की दो-तीन जगहों की रिकॉर्डिंग हैं। क्या मैं आकर इनमें से कोई गाना गाऊँ या आप मेरे साथ गाएँगी?'
‘सर, उस दिन लोब म्यूजिकल हाउस के लोग मेरे चार दोस्तों को लेकर आए और मुझे कुछ कहने का मौका दिए बिना ही वे ओमकार-गयाना समझौता ले गए! माफ कीजिए, चलिए आपके दोस्त के बेटे की किसी और तरह से मदद करते हैं।’
परंजपे पूरी बातचीत के दौरान चुप रहे। मोहनलाल ने 'हेलो हेलो' कहा, मानो फोन कट गया हो।
‘तुम अपने साथ चार दोस्त लाए हो, है ना? वे कौन हैं?’
‘आप उन्हें नहीं जानते। वे कलाक से हैं। वे कार्यक्रमों में जाते हैं, है ना? वे परिचित हो गए हैं। वे दोस्त बन गए हैं।’
मैं संगीत जगत में किसी को नहीं जानता। उनका नाम बताओ!
मोहनलाल इस जिरह से नाराज हो गए, लेकिन उन्होंने इसे जाहिर नहीं होने दिया।
उन्होंने जवाब दिया, 'बंजी, चटर्जी, सेंगुटा और रॉय। जब मैं कलकत्ता जाता हूं, तो शिक्षक मुझसे मिलने आते हैं।'
‘यावहर को क्या हुआ?’
'पंद्रह लाख विज्ञापन अंतरराष्ट्रीय स्तर के प्रचार और प्रसार के लिए हैं।'
फिर से, परंजपे चुपचाप बैठ गईं। मोहनलाल ने भी कुछ नहीं कहा। कुछ देर बाद, परंजपे ने कहा, 'आपको जहां चाहें वहां गाने का पूरा अधिकार है; लेकिन मुझे बुरा लगता है कि आपने दोस्ती से ज्यादा पैसे को अहमियत दी है! अरे! दुनिया ऐसी ही तो है, है ना?'
‘दोस्ती का सवाल कहां से आया?’ मोहनलाल ने सोचा, उसे याद आया कि चंपा को कैसेट हटाने का सुझाव उसी ने दिया था।
मैंने तुम्हें एक मुश्किल परिस्थिति से बचाया है! अगर तुम नाराज़ होते, तो यह सवाल तुम्हारे दिमाग में आता ही नहीं! उन्होंने मुझे कुम्हार बना दिया, तुमने उस लड़की के साथ इतना बुरा बर्ताव किया, लेकिन मैं तुम्हारे साथ खड़ा रहा! दिल्ली में उस अभिनेत्री से लात खाने के बाद तुम मुंबई आए, तुमने

कोरेगांव में रहने का इंतज़ाम किया ताकि तुम्हारा गाँव फिर से उठ खड़ा हो सके। जुन्नारकरों के साथ इस लड़ाई में मैंने तुम्हारा साथ दिया और तुम्हें तुम्हारा डफली दिलवाया। 'न भूत, न भविष्य' का सम्मान मुंबई तक मैं ही लाया था! अब तुमने पंद्रह लाख रुपये भूलकर दोस्ती का धोखा दिया है। ‘अगर आपने मुझे बताया होता कि विट्ठल कैसेट कंपनी आपकी कंपनी है, तो मैं यहाँ से नहीं जाता। आपने ही सबसे पहले झूठ बोला था, यह कहकर कि यह मित्रा के बेटे की कंपनी है। बस यही बात है। यह एकतरफा जवाब है। यह सच है कि आपने मेरी मदद की! लेकिन मुझे भी कम से कम थोड़ा तो एहसानमंद होना चाहिए, है ना?’ परंजपे ने ऋषि को भरपेट भोजन कराया।

२
मोहनलाल को अक्सर शुरुआत से ही परंजपे द्वारा दिए गए समर्थन को याद करके दुख होता था। इतना ही नहीं, संगीत-नाट्य-नृत्य-फिल्म जैसे सभी क्षेत्रों से संबंधित परंजपे के लेखों को पत्रिका में पर्याप्त स्थान दिया जाता था। मुंबई या भारत में कहीं भी कोई भी कार्यक्रम होता, यह पत्रिका अच्छी जानकारी के साथ-साथ अच्छी तस्वीरें भी प्रकाशित करती थी। कलाओं में उनकी रुचि और बुनियादी ज्ञान के कारण, पत्रिका ने परंजपे को पिछले पच्चीस-तीस वर्षों से इस विभाग का उप-संपादक बनाए रखा था। वरिष्ठता बढ़ने के कारण वे अन्य विभागों में भी लिखते थे; लेकिन कलाओं के संदर्भ में, पत्रिका के क्षेत्र में उन्हें विशेषज्ञ के रूप में मान्यता प्राप्त थी। इसी कारण कलाकारों को आगे बढ़ाना और इस संबंध में अनुकूल वातावरण बनाना आसान था। मैं कई वर्षों से इस विभाग को देखता आ रहा हूं, और इसी के चलते मुझे संगीत समूहों और नृत्य समूहों में शामिल होने की प्रेरणा मिली।
यह एक चलन बन गया था। फिल्म उद्योग में लोग मानो एक ही अभिवादन कहने के लिए स्वतंत्र थे। करोड़ों रुपये का कारोबार करने वाले फिल्म उद्योग में एक गीत और एक ही अभिवादन होता था।
नृत्य के क्षेत्र में उनका प्रभाव बहुत अधिक था। हालांकि वे अब मुख्यमंत्री पद से सेवानिवृत्त हो चुके हैं, लेकिन उसी मुख्यमंत्री ने उन्हें कला स्वामी नियुक्त किया था।
अगले रविवार के परिशिष्ट में विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में प्रोफेसर के रूप में कार्यरत मोहनलाल एम. के साथ उनकी तीखी बहस के बारे में एक लेख प्रकाशित हुआ था।
यह लेख संगीतकार प्रोफेसर वज्रक्षोर जानी द्वारा लिखा गया था, जिन्होंने डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की थी। उन्होंने अपनी एक बड़ी तस्वीर भी शामिल की थी। इसके साथ ही उन्होंने संगीत के क्षेत्र में अपने शोध और संगीत पर लिखी गई पुस्तकों की एक सूची भी दी थी। उन्होंने लेख की शुरुआत इस प्रकार की:
हालांकि, अगले अध्याय का उद्देश्य इसे स्पष्ट करना है।
यह मोहनलाल को करारा जवाब देने के लिए किया गया था।
उन्होंने लिखा था –

आज के कुछ महान कवि और प्रसिद्ध गायक भारतीय रंगमंच से जुड़े हुए हैं।
वे ऐसा माहौल बना रहे हैं जहाँ सिर्फ उन्हीं का चलन है। मेरे परम मान्ड पंडित मोहनलाल जी, जिन्हें इस साल तानसेन पुरस्कार मिला है, खुद को तानसेन से भी ऊँचा योग ज्ञाता समझते हैं। उन्होंने तानसेन के गुरु वामी हरदास से प्रेरणा लेकर 'कारा' राग गाना शुरू कर दिया है। क्या इस तरह आम लोगों को गुमराह करना सही है? इसमें क्या फर्क है? 'कारा' की जगह वही सौम्य ऋषभ असावरी राग 'कारम' में गाया गया है। इसमें भी असावरी का जीवन समाहित है और राग शुद्ध हो गया है। लोगों के मन में 'हम एक ही राग गाएँगे' का भाव लिए हुए मोहनलाल जी से मेरी यही खुली अपील है।
आगे वाले गायकों को एक ही तरह से गाना चाहिए और फिर दर्शकों को सुनना चाहिए। संगीत की समझ न रखने वाले दर्शकों का मनोरंजन करना और
मौजूदा वैज्ञानिकों से मान्यता प्राप्त करना दो अलग-अलग बातें हैं।
यह एक गीत भी है। यह एक ऐसा गीत है जो संगीत को एक उच्च स्तर पर ले जाता है। कर्ता का आचरण शुद्ध होना चाहिए। वह पंडितों के जीवन को जानता है।
मेरे इस बेटे को कोई बेवकूफ नहीं बना सकता...'
लेख का निचला पृष्ठ खाली था। जैसे ही उन्होंने इसे देखा, वे समझ गए कि यह परंजपे की ओर से एक तमाचा है। लेखक मोहनलाल से कभी नहीं मिले थे। संगीत के क्षेत्र में असफल होने के बाद, उन्होंने पीएचडी की और एक विद्वतापूर्ण विद्वान के रूप में जाने जाते थे। ऐसा प्रतीत होता था कि उन्होंने प्रसिद्ध गायक की आलोचना करके प्रसिद्धि पाने के इरादे से ऐसा किया था। मोहनलाल ने इस बात को दिल पर नहीं लिया। फिर भी, दोपहर तक उनका मन उदास रहा। उन्हें न केवल परंजपे को खोने का दुख था, बल्कि साथ ही वे उन्हें अपना करीबी दोस्त भी मानते थे, और उनका यह व्यवहार क्रोध के समान था। नोट में यह भी लिखा था कि परंजपे को अभी भी चंपा के प्रति सहानुभूति है। उन्हें रात को चैन से नींद नहीं आई।
इस मंगलवार के अंक में तीन पाठकों के पत्र प्रकाशित हुए। एक पाठक ने लिखा- मुझे खुशी है कि आखिरकार मुझे एक ऐसा गाना मिल गया जो सुनने लायक था!
मैं पिछले पच्चीस वर्षों से पंडित मोहनलाल का गायन सुन रहा हूँ। इसमें कुछ भी नया नहीं है। वही अद्भुत रचना और वही कुमिते बार-बार दोहराए जाते हैं! उन्हें सौभाग्य प्राप्त है, जिसके चलते वे आज भारत के सातवें सबसे महंगे गायक बन गए हैं।

वे बैठे हैं! एक और, अब मोहनलाल बीस साल का हो गया है। फिर भी
उन्होंने अभी तक एक भी हथियार नहीं बनाया है। ऐसा क्यों है? वे कुछ विशेष बल बनाना चाहते हैं; लेकिन कोई भी इसके लिए आगे नहीं आया है।
नहीं। एक तीसरा मुद्दा भी है, इस संदर्भ में सभी बुजुर्गों को बिना किसी झिझक के इस पर चर्चा करनी चाहिए...' इत्यादि।
इसके बाद, प्रतिदिन प्रत्येक पत्र को एक अलग नकारात्मक अर्थ वाला पत्र भेजा गया।
यह छपने लगा। मुंबई के अन्य समाचार पत्रों में भी इसकी आलोचना करते हुए छोटे-छोटे पत्र प्रकाशित होने लगे। मराठी, हिंदी, गुजराती, कन्नड़ – सभी समाचार पत्रों ने इस मामले को एक छोटी खबर का दर्जा दिया। पाठकों के पत्र भी प्रकाशित हुए। इसमें भी समाचार पत्र में उल्लेख किया गया था कि परंजपे एक कला समीक्षक थे।
गायक का कहना है, "मैं एक लाख रुपये के वेतन के बिना गाना नहीं गाऊंगी।" सभी संगीत सभागारों को पंडित मोहनलाल पर किताबें प्रकाशित करनी चाहिए और उन्हें सबक सिखाना चाहिए।
सभी संगीत सभागार एक साथ आएं और मानदेय का भुगतान करें।
राशि का निर्धारण रुपये के रूप में किया जाना चाहिए। उसने पच्चीस पैसे मूल्य का एक डफली गिरवी रखना शुरू कर दिया था।
दवसाचा पं डत मोहनलालज ना वसर पडता कामा नये.’
इसी तरह मोहनलाल भी बहुत चिंतित थे। रविवार को लेख छपने के बाद झा या-झा के कई दोस्तों ने फोन करके अपना दुख व्यक्त किया। इसके बाद भी कई लोग मिले और बातचीत की। संगीत जगत में हर कोई जानता था कि यह एक तरह का विश्वासघात था। कुछ लोग दोनों के बीच क्या हुआ था, यह जानने के लिए पूछताछ कर रहे थे। मोहनलाल ने भी सारी बात बताई। उनमें से कुछ ने पत्र-पुस्तिका में पाठकों को पत्र लिखे; लेकिन उनमें से कोई भी प्रकाशित नहीं हुआ।
लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हुई। दूसरे अखबारों ने भी इसका फायदा उठाना शुरू कर दिया और लेखन शैली को भी घटिया बनाने लगे। इस तस्वीर में साथ-साथ बैठे तीन लोगों की फोटो का इस्तेमाल प्रमु ने इस किरदार पर और भी चुटकुले बनाने के लिए किया। मनोहरी दास के साथ-साथ इक्कीस साल पुराना मामला भी फिर से सामने आया। गोया भूपली की फोटो को बेवजह ही महत्व मिलने लगा। अवया भाषा

में अपठनीय लेखन वाले इन अखबारों को कोई नहीं पढ़ रहा था; लेकिन कोई न कोई लगातार इन अखबारों को इसी राह पर भेज रहा था।
मोहनलाल गुस्से से लाल हो रहे थे। उनका मन कर रहा था कि इन सभी पत्रकारों को बाहर निकाल दें। उनके मन में उनके खिलाफ केस दर्ज करने का ख्याल भी आया। उन्होंने कुछ लोगों से इस बारे में बात भी की; लेकिन सबने कहा, ‘चिंता मत करो! उनका वकील कुछ गंदे सवाल सोच लेगा। इसके बाद, वह इन दस्तावेजों का इस्तेमाल पूछताछ के लिए करेगा और अपने अखबारों में खबरें भरेगा। सिनेमा जगत के इन अभिनेताओं के बारे में ऐसी बातें तो रोज़ छपती हैं। इनमें से कोई भी अभिनेता अदालत नहीं जाता। तुम भी चुप रहो।’
उन्हें भी मनाए बिना यह संभव नहीं है।
हाल ही में, छात्रों को लाउंज में बुलाए जाने की संख्या कम हो गई थी। अब उसे बुलाए जाने का डर सताने लगा था। कहीं कोई गंदी तस्वीर न खींच ले? कहीं किसी ने उसके घर में गंदा कैमरा न रख दिया हो? कहीं सामने वाले लाउंज में बैठा कोई इन पत्रकारों को जानकारी न दे रहा हो? यह डर इतना गहरा था कि भूपाली को इसके बाद भी दरवाजा बंद करने में डर लग रहा था; लेकिन अगर वह दरवाजा खुला रखता, तो बाहर की गली का शोर अंदर आना नामुमकिन था। उसने फैसला किया कि अब से वह जो चाहेगा, वही करेगा।
उस स्थान पर जाना उचित होगा; लेकिन वह स्थान उपयुक्त है, तो क्यों न जाएं? एक महीना बीत जाने के बाद भी उन्हें ‘लोब म्यूजिकल हाउस’ से कोई खबर नहीं मिली। पुराने कागजों के ढेर में कहीं खो जाने के कारण वे इसके बारे में भूल ही गए थे। लेकिन एक दिन उन्होंने फोन करके पूछताछ की। जवाब मिला, ‘हमारे प्रबंध निदेशक ने इस परियोजना को मंजूरी नहीं दी थी, महोदय। अब उन्होंने अपना मन बदल लिया है। उनका कहना है कि वे भविष्य में कभी अन्य रागों के बारे में सोचेंगे।’
"लेकिन आपने अनुबंध पर हस्ताक्षर किए थे, है ना?"
जी हां; लेकिन समझौता तभी पूरा होगा जब प्रबंध निदेशक और हमारे प्रबंधक इस पर हस्ताक्षर करेंगे। मैं आपको फोन करके सूचित करने ही वाला था; लेकिन मेरी मां को अचानक दिल का दौरा पड़ गया...
ओह! हमसे भी गलती हो गई। मैं समझौते पर हस्ताक्षर किए बिना ही लौट आया। उनके हस्ताक्षर वाले समझौते की एक प्रति लाना ज़रूरी था। अगर आप उनके खिलाफ कुछ करना चाहते हैं, तो आपके हाथ में कुछ नहीं है! गुस्सा शांत हुआ

मुंबई के अखबार भी यहाँ आते हैं। यह तो सबको पता है! हमारे हुबली के अखबारों में भी ये सब बातें बड़े-बड़े अक्षरों में छपती थीं; लेकिन हम जानते हैं कि वे अखबार मनोरंजन के लिए पढ़े जाते थे। गाने के भाव या विचार पर,
"उनका कोई प्रभाव नहीं होता।"
‘हांजे? क्या यहाँ के लोग अब भी मुझे संत मानते हैं?’
‘अरे! कितना अफ़सोस! ऐसी बातें तो कोई समझता ही नहीं! यहाँ के लोग कैसे हैं? कलाकारों और कला के प्रति उनमें कितना प्रेम है! इतना कि कलाकारों को देखते ही वे उनके सामने झुक जाते हैं! वे कला को गंभीरता से लेते हैं; लेकिन वे किसी कलाकार को अपने घर में मुफ्त में काम करने के लिए आमंत्रित नहीं करते। वे बस उन्हें बिना कोई पैसा खर्च किए किसी आरामदायक होटल में छोड़ देते हैं और फिर एक-दूसरे को अलविदा कहकर चले जाते हैं।’
जब मैं इन शब्दों का सटीक अर्थ समझने की कोशिश कर रहा था, तभी चार-पांच स्थानीय कलाकार हाथों में मालाएं लिए मेरे पास आए।
एक अन्य घटना हैदराबाद में घटी।
सुबह रागों का कार्यक्रम था। कार्यक्रम के अंत में उन्होंने भैरवी राग के बजाय ओंकार राग गाया। श्रो समाधि की अवस्था में चले गए। अगले दिन उन्हें मुंबई लौटना था, लेकिन उसी दिन शाम को एक घर में पारिवारिक बैठक का निमंत्रण आया। इस कारण टिपानी और प्रभु भी वहीं रुक गए। अगले दिन शाम तक किसी से न मिलने का बहाना बनाकर, भरपूर आराम करने के लिए उन्होंने अपने 'गौलक दा फाइव-स्टार होटल' में अपने कमरे में खुद को बंद कर लिया। हैदराबादी ऋषिकेश भी परंजपे द्वारा किए गए अपमान से अवगत थे। उसी ओंकार-गायन ने श्रोताओं के मन में आदर का भाव भी उत्पन्न किया। मेरे मन में आया, इस बेचारे के हाथ-पैर तोड़कर तुम क्या करोगे! इसी उदार भावना के साथ मुझे ओंकार-गायन की शुरुआत की घटना याद आई। हिरदास मंदिर में योगी इस गायन का उपयोग ध्यान के लिए करते थे। मैंने भी योग की भावना को ध्यान में रखते हुए इसे नामदेकाठ के पास शिवालय में असावरीम में रूपांतरित किया। इसके बाद, मैंने इस ओंकार-गायन को ढोल की धुनों के साथ इसके 'अ'कार, 'उ'कार और 'म'कार का सामंजस्य बिठाकर एक शुद्ध कलात्मक रूप दिया। यदि ओंकार कलात्मकता से युक्त न होता, तो वह ऋषिकेश के लोगों के मन को इतना प्रभावित न कर पाता। यदि इस साधक की ओंकार-साधना को सभा में उसी रूप में प्रस्तुत किया जाता, तो

श्रोता ऊब जाते और दस मिनट के भीतर ही चले जाते। एक बार जब उन्होंने कला को अपना लिया, तो उनकी प्रस्तुति और प्रदर्शन शुरू हो गए। उसके बाद पैसा और व्यापार भी आने लगा। परंजपे का
यह व्यवसायीकरण की योजना थी। क्या पता, लोबल हाउस म्यूजिकल कंपनी का प्रस्ताव! वे मुझे पंद्रह लाख रुपये फीस के तौर पर देने को तैयार थे। तो वे कितना मुनाफा कमाएंगे! मैंने परंजपे को रिश्वतखोरी के बारे में बताया, और मुझे भी इसका पता नहीं चला।
उसने मुझे बदनाम करना शुरू कर दिया ताकि यवहार का अस्तित्व ही न रहे। पंद्रह लाख रुपये का यवहार डूब गया, है ना! जाने दो! लोगों को यह बहुत पसंद आ रहा है। इस पर भारत और
विदेश में कितनी बैठकें आयोजित की जा सकती हैं?
रात को मुझे गहरी नींद आ गई। सुबह के काम निपटाकर नहाने जाने के बाद फोन की घंटी बजी। मैंने मन ही मन सोचा, 'सर, श्रीमती प्रभा राव आपसे मिलने आई हैं। क्या आप उनसे बात करना चाहेंगे?'
जैसे ही उसने सहमति दी, दूसरी तरफ से एक महिला की आवाज सुनाई दी।
‘पंडितजी, मैं एक किरकोल गायिका हूँ। मैं कल आपको गाते हुए सुनने आई थी। मैं आपसे मिलना चाहती हूँ। अगर आपको मेरी अनुमति हो तो...’
उसने उसे इधर आने को कहा।
सौभा यावती प्रभा राव पैंतीस वर्ष की महिला थीं। उन्होंने भारी रेशमी साड़ी पहनी हुई थी, कानों में बालियां, नाक में नथनी और हाथों में चूड़ियां थीं। कलाई पर भारी कंगन भी था। उनका रंग भी सौम्य था। कुल मिलाकर, वे किसी बड़े घराने की महिला लग रही थीं। पांच सितारा होटल में भी उन्हें कोई झिझक नहीं थी। फिर भी, उनके चेहरे पर एक अनकहा डर और अनिश्चितता झलक रही थी। प्रणाम करने के बाद, वे उनके सामने वाली कुर्सी पर बैठ गईं। वे भी उनके सामने वाली कुर्सी पर बैठ गए।
उसने कहना शुरू किया, ‘मैं कोई ऐसी गायिका नहीं हूँ जिसकी तुलना आपसे किसी भी तरह से की जा सके। मैंने तो बस थोड़ा-बहुत ही सीखा है। आपका गायन सुनकर मेरे हृदय में श्रद्धा का भाव जागृत हुआ! कल, आपका ओंकार गीत सुनकर मेरे मन में प्रशंसा का भाव जागा। मैं इसे कैसे व्यक्त करूँ... मैं इसे कैसे कहूँ?...’

वह हिचकिचाई। अनुभवी मोहनलाल समझ गए कि वह क्या करना चाहती है। मुंबई छोड़े हुए उन्हें छह दिन हो चुके थे। इससे तीन दिन पहले ही वे भूपली विमान में सवार थे – वो भी पत्रकारों के डर से! फिर भी, उन्होंने ध्यान से सोचा, 'मुझे क्या करना चाहिए?'
उसने अपनी गर्दन नीचे कर ली।
‘देखो, हम दोनों कलाकार हैं। शर्माओ मत। खुलकर बोलो। अगर तुम खुलकर नहीं बोलोगे, तो मैं कैसे समझूंगा?’
‘राधे की भाभी – मीरा की भाभी – मुझे और कितनी स्पष्टता से समझाना पड़ेगा?’ उसने सिर उठाया और कन्या की निगाहों से नज़रें मिलाईं। वह उठा और दरवाजे पर ‘डू नॉट डिस्टर्ब’ का बोर्ड लगाकर उसे बंद कर दिया और अंदर चला गया।
वह बारह बजे चली गई। वह खाना खाने के लिए बाहर आया और हॉल में बैठ गया। उसे याद आया, उसने मन ही मन सोचा था, 'अगर ओंकार-गयन न होता, तो क्या तुम अहीर भैरव के प्रति इतनी मोहित होती?'
इस पर वह हँसी और बोली, ‘पंद्रह साल पहले मुझे तुम्हारे गायन से प्रेम हो गया था। फिर भी, दुनिया की परवाह किए बिना, केवल ओंकार गायन ने ही मुझे तुम्हारे पास आने का साहस दिया! यही मृत्यु है – यही मृत्यु है! केवल इसी ओंकार ने मुझे सब कुछ अपना बनाने की अनुभूति से भर दिया! मैं सजीव माता हूँ और तुम परम माता हो, और तुम्हारे ओंकार गायन ने ऐसा अप्रतिरोध्य आकर्षण उत्पन्न किया है कि हम दोनों को शाश्वत होना ही होगा। ऐसा तीव्र आकर्षण कि मेरी माता भी इसे नियंत्रित नहीं कर सकती! क्या तुम मुझे इसकी एक कैसेट भेज सकते हो? मैं प्रतिदिन अकेले बैठकर इसे सुनूँगी और तुम्हारा ध्यान करूँगी।’
वह कैसेट भेजने के लिए भी सहमत हो गया था। उसी क्षण मुझे याद आया, ठीक इसी जगह पर।
हमने ओंकार गीत गाया था; लेकिन आपके पास उसकी एक भी कैसेट नहीं है। मधुमिता के देहांत के बाद तो हमने रिकॉर्डिंग मशीन भी नहीं निकाली! यह देखकर मुझे बहुत दुख हुआ।
उन्हें शाम को पारिवारिक समारोह के लिए घर ले जाया गया। शास्त्रीय संगीत में

उन्होंने अनुभव किया था कि यदि कुछ इच्छुक श्रोता उपस्थित हों तो ऐसी छोटी बैठकें बहुत ही प्रेरक होती हैं; लेकिन वे यह भी जानते थे कि कुछ लोग अपनी स्वयं की प्रसिद्धि के लिए ऐसी बैठकें आयोजित करते हैं, जो निराशाजनक था। राज रेड्डी एक छोटे उद्योगपति थे। यह कार्यक्रम उनके गृह नगर बंगाल के एक बड़े हॉल में आयोजित किया गया था। लगभग तीस श्रोता उपस्थित थे। हालांकि उन्हें गायन कला का अधिक ज्ञान नहीं था, फिर भी वे गंभीर गायन सुनने के आदी थे। रमन राव और उनकी पत्नी का परिचय कराया गया। रमन राव की पत्नी प्रभा राव! बताया गया कि रमन राव हैदराबाद में ही नहीं, बल्कि मछलीपटनम, गुंटूर, विजयवाड़ा और नल्लूर जैसे आठ गांवों में कारों के पुर्जों की दुकानें चलाते हैं। यह व्यवसाय उनके माता-पिता ने शुरू किया था। उनकी पत्नी का परिचय 'उदयो मुख गायिका' के रूप में कराया गया।
वह गाने के लिए बैठ गया, और वे दोनों सड़क के किनारे एक बेंच पर बैठ गईं। उनमें से एक प्रभा राव थीं। उन्होंने वही पुरानी रेशमी साड़ी पहनी हुई थी। उनके शरीर पर वही दाग थे। उनकी साड़ी से वही तेज़ फ्रेंच इत्र की खुशबू आ रही थी। उन्हें भी अचानक याद आ गया कि वह इस गाने को रिकॉर्ड कर रही हैं। उन्होंने पहले ही कह दिया था, 'यह गाना राज रेड्डी के निजी संग्रह के अलावा किसी और के पास नहीं जाना चाहिए!'
प्रभा राव भी ऐसे हँसे जैसे उन्हें अभी-अभी इसके बारे में पता चला हो, 'यह मशीन हमारी है। इसलिए आप निश्चिंत रह सकते हैं कि यह बिल्कुल आपकी इच्छा के अनुसार ही काम करेगी!'
एक बड़े याल और दो छोटे याल की प्रस्तुति के बाद, दर्शकों ने ओंकार गाने की मांग की। इसके लिए हारमोनियम और तबला की संगति की आवश्यकता नहीं थी।
उसने एक बार फिर अपने दोनों डफ उठाए। उसने उन्हें एक दूसरे के करीब कर लिया।
उन्होंने बैठने का सुझाव दिया। उन्होंने अपनी आँखें बंद कर लीं। उन्हें एहसास हुआ कि प्रभा राव ज़रूरत से ज़्यादा करीब आ गई थीं! इस नखरे भरे इशारे ने उन्हें सुबह की मुलाकात की याद दिला दी। पाँच मिनट बीत जाने के बाद भी उनका मन दूल्हे से नहीं जुड़ पा रहा था। उन्हें बेचैनी महसूस हो रही थी। उन्हें लग रहा था जैसे वे हार गए हों। उनका दिल ज़ोर से धड़क रहा था। फिर एक महिला ने मुझसे कहा, "मैं एक कलाकार हूँ। यह एक कलाकृति है। मेरा एकमात्र काम इसके प्रति भावना उत्पन्न करना है। जिस प्रकार मैं कल गायन

सुनते समय भक्ति में लीन थी, मैं तीसों श्रोताओं के मन में वही भावना उत्पन्न करना चाहती हूँ। इन छोटी-छोटी बातों को कितना महत्व देना है, इस बारे में सावधान रहना चाहिए। श्रोताओं के मन में भक्ति की भावना उत्पन्न होनी चाहिए! मैं योगी नहीं हूँ, संत नहीं हूँ, यहाँ तक कि धार्मिक व्यक्ति भी नहीं हूँ! मैं एक गायिका-कलाकार हूँ। एक शुद्ध गायिका! और कोई नहीं!" इस विचार पर मन को एकाग्र करने का प्रयास सफल होने लगा। जल्द ही मन दूल्हे के साथ एक हो गया। धीरे-धीरे दूल्हे से निकलने वाली भक्ति श्रोताओं पर अपना जादू चलाने लगी। मोहनलाल का आत्मविश्वास पहले से कहीं अधिक मजबूत हो गया। धीरे-धीरे मन को शांति प्राप्त हुई। श्रोता एकजुट हो गए और भक्तिमय अवस्था में रहने लगे।
उन्होंने ओमकारा राग के माध्यम से अब तक खोजी गई असावरी राग की आंतरिक शक्ति को अभिव्यक्त करना शुरू किया। इससे पहले ऐसा प्रभावशाली गायन प्रदर्शन कभी नहीं हुआ था।
मुझे यही महसूस हो रहा था। हालाँकि कुछ हिस्से दोहराए गए थे, लेकिन लय में अंतर था।
उस कलाकार ने ओंकारा की विभिन्न अवधारणाओं को प्रस्तुत करते हुए असावरी राग का एक भयावह और आकर्षक टावर खड़ा किया!
एक घंटा बीत गया, किसी को कुछ पता नहीं चला। जब वह चुप हुआ, तब भी किसी को समझ नहीं आया कि क्या करें। इसके बाद राज रेड्डी उठे और उनके चरणों में गिर पड़े। अन्य श्रोता भी एक-एक करके उनके पास आए और उनके चरणों में गिरने लगे। रमन रवानी ने तो उनके दोनों पैर कसकर गले लगा लिए और कहा, ‘मैं क्या कहूँ! ऐसा लगा जैसे मैंने ईश्वर की उपस्थिति को देख लिया हो!’
उन्होंने अपनी पत्नी को भी झुकने के लिए कहा।
अगले दिन, हवाई अड्डे के लिए रवाना होने से पहले, प्रभा और रमन राव उनसे मिलने आए। रमन राव ने अपनी जेब से तीन कैसेट निकालकर उन्हें देते हुए कहा, “ये कल के गायन की कैसेट हैं। मेरा पूरी मुलाकात को रिकॉर्ड करने का कोई इरादा नहीं था! मैं आपके आखिरी ओंकार गायन को जीवन भर संभाल कर रखना चाहता हूँ। कल का गायन बहुत अच्छा था! बहुत ही जीवंत था। आपको इसकी एक प्रति रखनी चाहिए।”

३

चार शहरों में इस कार्यक्रम के बाद मोहनलाल चार लाख तीस हजार रुपये लेकर मुंबई लौट आए। अब उनके मन में अखबारों में छपने वाली आलोचनाओं को लेकर तिरस्कार का भाव आ गया था। छिपे हुए कैमरे और चौकसी भरी निगाहों का डर भी गायब हो चुका था। वरना वे क्या लिखते? एक निश्चित समय पर एक लड़की अंदर आई, दरवाजा बंद हो गया – बस इतना ही था, है ना? आखिर इस कार्यक्रम में पूरे मन से आने का क्या कारण था?
इसी संदर्भ में, पत्रकारों ने भी इन बातों को सामने रखा।
कोई दिलचस्पी नहीं थी। कार्यक्रम के लिए अलग-अलग गांवों से फोन और चिट्ठियां आ रही थीं; लेकिन मेरे मन में पहले जैसा उत्साह नहीं था। ओंकार से योग और योग से दूसरों तक पहला कदम रखने का वो एहसास गायब था। मैं सोचती रहती थी, क्या मेरी जिंदगी सिर्फ गाने गाने और गांव-गांव पैसे लाने के लिए है? मैं गिरिधर और पूनम को जानती तक नहीं। चुनी से मेरा कोई रिश्ता नहीं है। रामकुमारी और उसके बच्चों से मेरा कोई रिश्ता नहीं है। चंपा और उसके बच्चों से मेरा कोई रिश्ता नहीं है। उनसे मेरा शारीरिक संबंध है, वो भी जितना हो सकता है। वो भी मैंने खुद बनाया है। उनमें से कई बिना शादी किए ही गुजर गए। जिन्होंने शादी कर ली, वो फोन भी नहीं कर सकते। मेरा किसी से कोई स्थायी रिश्ता नहीं है।
हाल ही में उन्हें एक नया अनुभव हुआ। उन्होंने अपना यह अनुभव साझा करना शुरू किया कि महिलाओं की संगति में गाना उबाऊ हो जाता है, और इस भावना का कोई अर्थ भी नहीं रह जाता। आखिर हम उबाऊ कैसे हो सकते हैं? हाल ही में हमारा गाना भी मशीनी हो गया है। इसका समाधान क्या है?
आज सुबह ग्यारह बजे फोन की घंटी बजी। एक महिला की आवाज थी। 'क्या आप मुझे पहचानते हैं?'
ʻ नाही.’
"क्या तुम इतनी जल्दी भूल गए?"
"हो सकता है कि यह हमारी पहली बार फोन पर बातचीत हो। हो सकता है कि अगर हम मिलें, तो एक-दूसरे को पहचान लें।"
तो क्या हम चलें?
"तुम्हारा नाम क्या है?"
प्रभा, हैदराबाद।

जैसे ही उसने नाम सुना, वह उससे मिलने के लिए उत्सुक हो गया। उसने आवाज पहचान ली और कहा,
अनुरोध किया गया।
"हमारी मुलाकात को एक महीना हो गया! क्या तुमने कभी सोचा है कि मेरे साथ क्या हुआ? मैं फोन पर बात कर रही हूँ, इसलिए तुमसे बात कर रही हूँ। मेरे मन में एक विचार आया है। एक दिन मैं तुम्हारे घर आऊँगी और तुम्हें गाना सिखाऊँगी। अगर मैं तुमसे कहूँ कि मैं सुबह इस फ्लाइट से जाऊँगी और रात को इस फ्लाइट से वापस आऊँगी, तो वे तैयार रहेंगे। मैं उन्हें किसी तरह मना लूँगी। बस मुझे फोन कर देना और बता देना कि तुम गाँव में हो। दो घंटे गाने की क्लास और उसके बाद का समय - समझे? बिना फोन किए हम हर बात नहीं कर सकते! तो? क्या हम इस बारे में और बात न करें?"
उसके दिल का दुख थोड़ा कम हो गया। लगभग नब्बे वर्ष की, धनी
उसे मीटिंग को लेकर इतना उत्साहित देखकर मेरा उत्साह थोड़ा कम हो गया; लेकिन यह स्थिति ज्यादा देर तक नहीं रही। मुझे लगा कि कुछ समय बाद ये रिश्ते उबाऊ हो जाते हैं। इसमें उलझे रहने का क्या फायदा?
"हैदराबाद से आकर यहां गाना सीखना असंभव है। इसके अलावा, मैं गांव में हूं या नहीं, यह अक्सर मेरे नियंत्रण से बाहर होता है।"
'अगर आपने एक दिन पहले फोन किया होता, तो मैं आ जाती!' उस समय वह अजीब सी लग रही थी।
"नहीं। ऐसा मत करो।"
"आप पश्चिम बंद्या में हैं, है ना? मेरी मौसी यहीं रहती हैं। मैं तीन दिन के लिए उनके घर आऊँगी। वे दोनों काम करती हैं। मैं पूरे दिन आपके फ्लैट में रहूँगी! जी हाँ! मना मत कीजिएगा! मुझे फ़ोन कीजिएगा। मैं सुबह दस बजे से एक बजे तक और शाम चार बजे से आठ बजे तक घर में अकेली रहती हूँ।"
उसने ऐसा करने का फैसला किया, वह इसमें उलझना नहीं चाहता था। इस तरह, इससे मिलने वाली खुशी।
इनकार करते हुए, उसे आमष्टि से प्यार हो गया। नहीं। अब आमष्टि
इसके बजाय, आपको अपने अहंकार से थोड़ा पीछे हटना होगा। प्रभा, फ्रेंच टोस्ट की वो खुशबू, पेरिस,
पेरिस में मनोहरी के साथ हुई वो घटना – कौन जाने मनोहरी अब क्या कर रहा होगा!

एक दिन, ज़वेरी एंड कंपनी के मैनेजर सुप्रिस, जो एक व्यवसायी थे, ने फ़ोन पर उनसे मिलने का अनुरोध किया। वे रावल के परिचित थे, जिनकी उम्र लगभग साठ वर्ष थी। वे हर सभा में आते थे और पहली या दूसरी पंक्ति में बैठते थे। यदि कोई गाना विशेष रूप से लोकप्रिय होता, तो वे कार्यक्रम के अंत में आकर उनसे मिलते थे। वे काम के विषय पर चर्चा करते थे।
यह इस कंपनी का स्वर्णिम वर्ष था। इसी कारण हम आयोजन कर रहे हैं।
आगामी कार्यक्रमों में गायन कार्यक्रम भी शामिल थे। वे बिला मातोश्री मंदिर में आयोजित होने वाले कार्यक्रम में पंडित मोहनलाल को आमंत्रित करना चाहते थे। यह कार्यक्रम केवल आमंत्रित लोगों के लिए था। पास केवल चुनिंदा संगीत प्रेमियों को ही दिए जाने थे। उन्होंने कहा, 'यकीन मानिए, सामने बैठे दर्शक सबसे बेहतरीन होंगे।'
उन्होंने आगे कहा, "मैंने सुना है कि आपका मानदेय एक लाख रुपये है।"
जी हाँ। हमारी दृष्टि में यह अवसर विशेष महत्व रखता है, इसलिए हम आपको दो लाख रुपये भेंट करेंगे। इसके साथ ही, आपके प्रति हमारे आदर और प्रेम के प्रतीक के रूप में, हम आपको कार्यक्रम के प्रारंभ में यह अंगूठी देंगे। आपको यह अंगूठी अपनी उंगली में पहनकर यह गीत गाना है। इसके बाद भी, यह अंगूठी हमेशा आपकी उंगली में ही रहेगी।
"फिर आप इस अंगूठी के साथ एक तस्वीर लेंगे और बाद में उस तस्वीर का इस्तेमाल विज्ञापन के लिए करेंगे! है ना?"
“तुम तो वाकई बहुत होशियार हो! अगर तुम कारोबार में आ गए तो हमारी कंपनी ही बेच दोगे!” रावल हँसे। उन्होंने अपने साझेदारों से कहा कि वो उन्हें दुगुनी तनख्वाह देंगे और शाबाशी भी देंगे। “तुम हमेशा टिपानी और प्रभु को साझेदार रखोगे; लेकिन मैं इन दोनों से तुम्हारे मामले पर विचार करने के बाद ही संपर्क करूंगा।”
अपने साथियों के बारे में बात करते हुए, उन्हें कुछ याद आया और उन्होंने कहा, "अरे, कभी-कभार मिलते हैं! हमारे मालिकों का पनवेल में एक फार्महाउस है। जब कारोबार बंद होता है, तो वे एक दिन के लिए वहाँ जाते हैं। मैं भी वहाँ जाता हूँ।"
मैं कभी-कभी उसके साथ जाता हूँ। छह महीने पहले मेरी पत्नी बीमार पड़ गई थी। डॉक्टर ने उन्हें दो महीने तक एयर कंडीशनर बदलने की सलाह दी। हमारे मकान मालिकों ने सुझाव दिया कि हम इस फार्महाउस में जाकर रहें। तो हम वहाँ जाकर

रहने लगे। मैं अकेले ही ट्रेन या बस से काम पर आने लगी। मैं वहाँ शिक्षकों से मिलती थी। वे वहाँ एक महिला को गाना सिखाने जाते थे। जब भी मुझे समय मिलता, मैं भी जाकर उनकी शिक्षाएँ सुनती थी।
"इस महिला का नाम क्या है?" मोहनलाल ने उत्सुकता से पूछा।
'नाम? मैं नाम भूल गया। वह अकेली रहती है। उसका अपना फार्महाउस है। वह चौबीसों घंटे गाती रहती है! माधवी – किसी राग का नाम है। मधुकांस, आप भी अच्छा गाते हैं – हाँ। मधुबेन।'
मोहनलाल ने इस मामले में ज्यादा भरोसा नहीं दिखाया। जाते ही वह उठे और हंसते हुए बोले, "आप मुझे दो लाख का मानदेय दे रहे हैं, क्या आप मुझे एक प्रेस विज्ञप्ति नहीं देंगे?"
"अगर तुम ऐसा करोगे, तो मैं तुम्हें इनाम दूंगा। क्यों?"
तो उ र न देता मंद हसला.
"समझ गया! अगर आपको लगता है कि आपको दो लाख का निमंत्रण मिलेगा, तो वही आपकी मानक दर होगी, है ना?"
वह हसात को हवाई अड्डे तक ले आया।
मधुबेन को मधुमिता पर कोई शक नहीं था। क्या वह मुझे बिना बताए उसे सिखा रहा है? बदमाश! वह नियत नाम का आदमी नहीं है! मैं उसके सिवा किसी और को अपना साथी नहीं मानती। फिर भी, यही सोचते हुए उसने तुरंत उसे फोन किया। पच्चीस साल की जान-पहचान। दोस्ती तो खत्म हो गई होगी। अगर इस विषय को छोड़ दें, तो वह बाकी मामलों में ईमानदारी से काम कर रही है। उसने खुद को संयमित रखा। क्या वह पनवेल के किसी फार्महाउस में रहती है? या उसी नाम का कोई और व्यक्ति है? या इसके पीछे कोई साजिश है? क्या उसने उसे वहाँ रखा था?
उसका रवैया वही है। वह सब कुछ छुपाकर रखता है। वह बेझिझक कुछ भी बोल देता है।
यह बात सामने नहीं आती। अगर ऐसा कोई मामला है भी, तो मुझे यह सोचने का कोई हक नहीं कि 'आपने मुझे क्यों नहीं बताया?'। उन्होंने कभी भी ऐसे किसी मामले में दखल नहीं दिया। कभी-कभी विचैट मजाक में कहते हैं, 'सभी प्रशंसक मुख्य गायक-संगीतकार की ओर आकर्षित होते हैं - हारमोनियम बजाने वाले साथी की परवाह कौन करता है?'; लेकिन बस इतना ही। इसलिए हमारे लिए चुप रहना ही बेहतर है।

खाना और नाश्ता खत्म करते समय मुझे टिप्पानिस का फोन आया, "तुम्हें यह अंगूठी मिलने वाली है!"
"तुम उससे और प्रभु से मिलने जा रहे हो। क्या तुम यह नहीं समझते?"
"यदि प्रधान देवता पंचामृत का अर्पण स्वीकार करते हैं, तो वे निश्चित रूप से अपने हाथों पर भी एक मुट्ठी पंचामृत ग्रहण करेंगे!"
ये तो उनका हमेशा का बात करने का तरीका है! मोहनलाल को अच्छा लगा। वो हँसे और बोले, 'क्या चल रहा है? आओ, बातें करते हैं!'
वह घर का बना पोहा प्लास्टिक की थैली में लेकर आया। मोहनलाल ने चाय बनाई। खाने की मेज पर आमने-सामने बैठे हुए मोहनलाल ने बात शुरू की, 'पनवेल में आप किसे गाना सिखाते हैं? वह भी दिन-रात अभ्यास करती है।'
तो मुझे समझ आ गया। वो कौन है?
उन्हें अचानक एहसास हुआ कि मोहनलाल की निगाहें उनके चेहरे पर टिकी हुई हैं। उनके चेहरे का रंग थोड़ा बदल गया; लेकिन बिना किसी को पता चले, उन्होंने उस टिप्पणी पर सहजता से मुस्कुरा दिया।
"आप मेरे गुरु हैं। मधुमित शाह, जो अमेरिका में आपकी गायन साथी थीं, यहाँ गायन सीखने आई थीं। वह आपके पास आईं; लेकिन चूंकि आप लगातार ग्रामीण इलाकों में जाते रहते हैं, इसलिए उन्हें नियमित रूप से सिखाना संभव नहीं है, तो वह गायिका बन गईं। फिर वह मुझसे मिलीं। मैंने उन्हें पहले ही बता दिया था - मैं गायन में अच्छा नहीं हूँ - मेरा हारमोनियम खराब है। मैं उन्हें गाना कैसे सिखा सकता हूँ? लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। उन्होंने कहा, 'मैं अभ्यास करती हूँ - अगर कोई गलती हो जाए, तो मुझे बता देना - उसे बॉक्स पर बजाकर दिखा देना।' तब भी मैं उन्हें सिखाने के लिए तैयार नहीं होता। मेरी पत्नी भी उनके पीछे-पीछे आईं - उन्होंने कहा कि अगर वह हफ्ते में एक-दो दिन ताज़ी हवा में रहें, तो ठीक हो जाएंगी। आप जानते हैं कि उन्हें हाल ही में यह परेशानी हो रही है। डॉक्टर का कहना है कि यह यहाँ की हवा का असर है। दोनों का इलाज होना चाहिए।"
मैं सप्ताह में एक या दो दिन वहां जाता हूँ!
यह भी टिपनीस का खास तरीका था! वह अपने मन में चल रही उथल-पुथल को एक तरफ रख देते और सिर्फ वही बोलते जिसमें उन्हें सहज महसूस होता। अपने पति को वहीं छोड़कर, और फिर आपसे हुई बातचीत को भी। उन्होंने उसे सब कुछ बता दिया होगा! टिपनीस की नजर आपके चेहरे पर पड़ी। यह तय करते हुए कि वह इस बारे में भी

कुछ नहीं कहना चाहते, वह हँसे, 'हाँ, सही कहा। मैंने उनसे कहा कि मैं वह नहीं हूँ। आपका गाना कैसा चल रहा है?'
"तुमने तो इस बेहद कमजोर बुनियाद को संभाला है, तो तुम क्या सोच सकती हो? लेकिन इसमें बहुत मेहनत लगती है। बस एक दिन का काम है। वो भी राग के विस्तार के साथ ऐसा ही करती है। मैं थोड़ा सा बजाकर दिखाती हूँ। जब मुझे किसी दूसरे राग की झलक दिखती है, तो मैं उसे समझा देती हूँ, बस। मेरे लिए उतना सीखना नामुमकिन है जितना तुम सीखती हो। उसे भी यह पता होगा। मैं कई सालों से तुम्हारा साथ दे रही हूँ! इसी वजह से मैं उससे तुम्हारा गाना सीख पाई हूँ, तो लगता है उसने मुझे अपना बना लिया है।"
वह मुझे ये सब बातें ऐसे बता रहा है जैसे इससे मुझे अच्छा महसूस होगा! चाहे कुछ भी हो जाए, वह ऐसे बर्ताव करता है जैसे मेरी मन की शांति भंग नहीं होगी! मुझे थोड़ा अच्छा लगा। वह भी एक कुलीन महिला है। वह उसे ये सब क्यों बताएगी? अगर वह उसकी आँखों में देखती, तो उसे सच्चाई समझ आ जाती; लेकिन उसे भी तो उसके मन की स्थिति जाननी होगी! अगर वह विषय बदलना भी चाहती, तो भी उसे कोई दूसरा विषय सूझता नहीं।
मुझे याद आ गया। उन्होंने यह बात उठाई, 'आपको समझ आ गया होगा कि ज़वेरी कंपनी मुझे दो लाख रुपये देने वाली है। वे मुझे एक प्रेस विज्ञप्ति भी देंगे। इसके बाद मेरा मानदेय दो लाख रुपये होगा! क्या परंजपे ने वह पत्र नहीं छपवाया था, जिसमें लिखा था कि मोहनलाल का मानदेय पचास हजार होना चाहिए? मैं उन्हें दिखाऊंगा! क्या यह सच है या नहीं?'
"किसी अखबार में छपी चीज़ के लिए आप इतना पैसा क्यों देते हैं? आपके संगीत प्रेमी आपकी मनचाही कीमत देने को तैयार हैं; लेकिन अगर मानदेय की रकम बढ़ जाती है, तो संगीत समितियों के लिए इसे चुकाना मुश्किल हो जाता है। इसके बाद, केवल जैरी कंपनी ही आपका कार्यक्रम आयोजित कर पाएगी। सच्चे संगीत प्रेमी आपके गाने नहीं सुन पाएंगे। क्या यह सही नहीं है?"
"अरे, जैसे-जैसे मेरी सैलरी बढ़ती है, वैसे-वैसे तुम्हारी सैलरी भी बढ़ती है, है ना? इससे तुम्हें भी फायदा होगा!"
"हमारे यहाँ से आने वाले पैसे को कौन मना करेगा? लेकिन आपको उसे फोन करना चाहिए ताकि वह इसे प्राप्त कर सके!" मैंने कहा।
मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं यहाँ भी हार रहा हूँ, या शायद मीठे की लालसा मुझ पर हावी हो गई थी? वह कॉफी का कप उठाने के लिए खड़ा हुआ।

सोलह

१
सुवती सोचती थी कि अगर क्रोध, नाराजगी या किसी भी नकारात्मक भावना को संगीत का रूप दिया जाए, तो वह एक भावना में बदल जाएगी। गाने में कुछ भी गलत या बुरा नहीं है। अब मुझे कैसे समझ आया कि अगर मेरे मन में ऐसी भावनाएँ हों, तो गाना 'गाया' नहीं जा सकता? अब मुझे कैसे समझ आया कि यह जगह गाने के लिए होनी चाहिए! यह तपोवन की जगह है! लेकिन जब सुवती गाने के लिए बैठी, बाकी सब वैसा ही रहेगा। मैं मन ही मन इसे कोसूँगा - इसे तेल में उबाला जाएगा।
उसे कठोर कारावास में डाल देना चाहिए – कितने साल? उसने सीखने आए सात शिष्यों के साथ अन्याय किया है, उसे जितने साल जेल में रहना होगा, उतने ही अंक उसे सात अंकों में मिलेंगे!
अगर मेरे मन में ऐसे विचार बने रहेंगे तो गाने में भावना कैसे व्यक्त होगी? उस समय मैं कड़ी मेहनत कर रहा था; लेकिन इसके पीछे चांडाल पर विजय पाने की भावना थी।
नतीजा यह हुआ कि एक साल की कड़ी मेहनत के बावजूद, मैं आखिरकार इस स्थिति से बाहर निकलने में कामयाब हो गया।
मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सका। मेरी मर्जी के बिना भी मेरा गाना इसी तरह चलता जा रहा था।
एक बार राजाराम काका ने कहा, ‘मधु, मैंने तुम्हारी गायन शैली के बारे में बहुत सोचा है। अभी तो तुम्हारी गायन शैली मोहनलाल जैसी है; लेकिन एक-दो साल में तुम बदल जाओगी।’
जब तक आप इससे मुक्त होकर अपना रास्ता खुद नहीं खोज लेते, तब तक आप एक स्वतंत्र कलाकार हैं।
आप ऐसा नहीं कर पाएंगे। अब आपको इसी रास्ते पर आगे बढ़ना होगा।'
मेरे चाचा ने जो कुछ मुझे बताया, उसके पीछे एक संगीतमय विचार था। अगले दिन से, सुबह अभ्यास करते समय, मैंने उस विचार का अनुसरण करना शुरू कर दिया। छह महीने के भीतर ही मुझे अपने चाचा से प्यार हो गया और मुझे उनकी स्वतंत्र गायकी पसंद आने लगी। उसके बाद, जब भी मैं उनके गाने सुनता, तो कहता, 'वाह! अब तो आप कमाल हैं!'

आप आत्मनिर्भर बन रहे हैं।
इसका एक और परिणाम निकला। इस गीत से खुद को मुक्त करके, मैंने पूर्णता का अनुभव करना भी शुरू कर दिया। उसी समय, मेरे गीत की ध्वनि
मुझे बेहतर महसूस होने लगा! मेरा मन शांत हो गया और इससे मेरा सारा गुस्सा गायब हो गया।
मेरा दिमाग धीरे-धीरे और अधिक खुलने लगा! कितना अद्भुत अनुभव था!
इस समय जो दूसरी बात दिल को पीड़ा दे रही है, वह है पाप-प्र; लेकिन संगीता के दृष्टिकोण से, यह
पंचमार्ग अब समस्या की जगह पूरक बन गया है! यह असावरी का प्रश्न नहीं है, बल्कि मारवा और तोड़ी के विभिन्न रूपों के कारण पंचमार्ग साकार होता प्रतीत होता है, क्योंकि बैरागी भैरव के समूह के कारण दरबार में पंचमार्ग डूब गया है।
इन तीन महीनों के दौरान, आत्मचिंतन और आत्मपरीक्षण मेरे शिक्षण के पूरक हैं और
मुझे ऐसा लगा कि प्रेरणा देने वाले गुणों का विकास हो रहा था।
लेकिन हाल ही में मुझे इसमें भी एक गलती नज़र आई है। मैं हर राग को पाँच तार वाले वाद्ययंत्रों के स्तर तक ले जा रहा हूँ! रागों में बैरागी, भैरव और अहीर-भैरव शामिल हैं।
क्या दोनों में कोई अंतर नहीं है? दोनों में अंतर है।
यहां मोहभंग और अहंकारहीनता है, अकेलेपन का गहरा दुख है। अगर मैं इस क्रोध को प्रतिशोध का रंग दे दूं, तो क्या यह क्रोध एक आघात नहीं बन जाएगा? क्या यह सच नहीं है कि इस होटल के सभी भाइयों से एक जैसी गंध आती है?
अब मुझे स्पष्ट रूप से यह अहसास हो गया है कि राग पर अपनी भावनाओं को थोपना उचित नहीं है। इस अहसास ने मेरे गायन में महत्वपूर्ण बदलाव लाया है। प्रत्येक राग की स्थायी भावनाओं और उनसे जुड़ी संवादात्मक भावनाओं को जानना और स्वर-स्वरों के आधार पर राग की भावनाओं को उत्पन्न करना ही साधना का सच्चा सार है। यदि हम केवल अलंकारों और स्वरों में ही उलझे रहेंगे, तो राग का अहसास कैसे होगा?
प्रत्येक राग में व्याप्त निरंतर और संवादात्मक भावना को गैर-मौखिक और संवादात्मक छंदों के सहयोग से प्रस्तुत किया गया, जो एक काव्यात्मक अवसर था। इससे जीवन के चिंतन का भी मार्ग प्रशस्त हुआ।

२
पिछले दो दिनों से मेरा मन अस्वस्थ है। रियाज़ करते समय भी मेरा ध्यान केंद्रित नहीं हो पा रहा है।
अगली सुबह नौ बज रहे थे। मेरी रियाज़ चल रही थी। मैं महल में आई और कहा, 'एक जोड़ा आपसे मिलने आया है। अगर आप नाम पूछें, तो वे आपको मधुमिता कहकर बुलाना चाहते हैं।'
मुझसे मिलने आए हो? बिना फोन किए भला कौन यहाँ आएगा! जब मैं नीचे आई तो देखा कि मेरे ससुराल वाले सोफे पर बैठे हैं! इस अप्रत्याशित घटना से मुझे जो सदमा लगा, उसे शब्दों में बयां करना मुश्किल था।
मैंने उनके सामने सिर झुकाया और बार-बार उनके सामने सिर झुकाया। ये दोनों हैं
हालाँकि उनके चेहरे पर कोई भाव नहीं था, फिर भी वे खुश थे। लेकिन मैं सतर्क थी। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि वे क्यों आए हैं। मैं नौकरों के सामने आने वाली बात का खुलासा नहीं करना चाहती थी, इसलिए मैं उन्हें ऊपर ले गई और महल में चाय-भोजन करने को कहा। फिर मैंने सोचा, 'आप मुंबई क्यों आए? चाय पीने आ जाइए – मांजी, आप भी आइए –'
उन्होंने कहा, "मैं तुम्हारी चाय तभी लूंगा जब तुम मेरे सवाल का सही जवाब दोगे!"
मेरे पिताजी हँसे और बोले, "क्या उसने ऐसा कुछ कहा? इतनी बदतमीज़ी से बात मत करो। पहले चाय पी लो।"
चाय आने पर उन्होंने कहा, "मधुबेती, तुम यहाँ अपनी मनचाही सारी सब्जियाँ उगाती हो, है ना? तो दोपहर में मैं तुमसे किस तरह की सब्जियाँ बनाने के लिए कहूँ?" जब मैं नीचे गई और उसे खाने के बारे में बताकर वापस आई, तो उसके चेहरे के भाव भी काफी बदल चुके थे।
मेरे पिताजी ने ही इस विषय को उठाया, ‘बेटा, मुझे नहीं पता कि इस विषय को कैसे उठाऊं। तुम्हें पता ही नहीं था कि तुम मुंबई इसी काम के लिए आए थे। तुम हर रविवार मुझे फोन करते थे। तुम मेरा हालचाल जानना चाहते थे। तुम हमारे बारे में जानना चाहते थे। दो साल बीत गए। एक रविवार तुमने मुझे फोन नहीं किया। मैंने सोचा कि काम में कोई दिक्कत होगी; लेकिन तीन-चार रविवार के बाद मुझे चिंता होने लगी। मैंने तुम्हें फोन किया, लेकिन किसी ने जवाब

नहीं दिया। बाद में एक बार फोन पर तुम्हारी बात हुई। उसने बताया कि तुम दोनों गांव गए हो। एक बार मैंने सोचा कि मां के घर फोन करके पता कर लूं; लेकिन वह भी ठीक नहीं लगा।’
एक बार जब मैंने रात के नौ बजे फोन किया, तो मेरी मुलाकात विक्रम से हुई। उसने कहा, 'माफ़ कीजिए पापा! मैं काम के सिलसिले में हमेशा फोन पर रहता हूँ। मैं वहाँ पहुँचकर आपको फोन करूँगा।'
मैं हिचकिचाया, "ओह, लेकिन मधु कहाँ है?"
उसने कहा, 'वह गर्मियों में गाना सीखने के लिए सैन राफेल जाती है। अली अकबर खान के घर।'
दो घंटे का अंतराल है। आपको इस तरह देखकर अच्छा लगा। वह आपको बहुत याद करती है।'
कुछ महीने इसी तरह बीत गए। हर रविवार को वह नियमित रूप से फोन करने लगी; लेकिन धीरे-धीरे मुझे लगने लगा कि कुछ गड़बड़ है। एक बार मैंने मन ही मन सोचा, ‘बेटा, वह शाम को जाती है, है ना? तो फिर सुबह और दोपहर में क्यों नहीं फोन करती? सच बताओ, वह कहाँ है?’
मैंने बार-बार सोचा और कहा, 'पापा, आप भी पढ़े-लिखे हैं, आपको आधुनिक जीवन की समझ है। यहाँ रहकर गाँव में तरक्की करना मुमकिन नहीं है, इसलिए वह एक साल पहले भारत लौट गई। एक साल से मेरा उससे कोई संपर्क नहीं हुआ है। आप भी ऐसा करने की कोशिश मत कीजिए।'
हम जिस मुसीबत का सामना कर रहे थे, वह आसान नहीं थी। हम जानते थे कि उसे उस गाने से कितना लगाव था। इसी वजह से, इसमें कोई शक नहीं कि वह आपकी जितनी चाहे उतनी मदद करेगा। हमें लगा था कि कम से कम इसके लिए आपको उसे छोड़कर भारत आने की ज़रूरत नहीं है। हमें लगा था कि वह कुछ छुपा रहा है। अगर वह चला गया, तो हम भी आ जाएँगे। उसने कहा, 'नहीं। अभी मुझे काम की जल्दी है। मैं खुद आ जाऊँगा।'
वह तीन महीने पहले हैदराबाद आया था। वह तीन सप्ताह रुका। अगर मैं इस बारे में सोचती भी, तो मैं कहती कि चिंता की कोई बात नहीं है। उसने मुझे इस विषय पर बात करने ही नहीं दी। एक महीने पहले मैंने उससे कहा था, 'अगर तुम दोनों खुश नहीं हो, तो इस रिश्ते को खत्म कर दो वरना मर जाओगे। तुम्हें इसके लिए कोई दूसरी लड़की ढूंढनी चाहिए या फिर ढूंढ लो। इस तरह अकेले रहना ठीक नहीं है।'

इस पर उसने कहा, ‘पिताजी, क्या मनुष्य बिना आत्मा के जीवित नहीं रह सकता? आप निश्चिंत रहें, मैं बुरे रास्ते पर नहीं चलूंगा। इस विषय को फिर कभी न उठाएं।’
लेकिन फिर हमने आपसे संपर्क करने का फैसला किया। हमें लगा कि आपको घर पर फोन करना ठीक नहीं होगा। झूठ क्यों बोलें? हमें आपकी जानकारी एक निजी जासूस से मिली है। अब आप ही बताइए। हम नहीं चाहते कि आपका मानवी से कोई रिश्ता हो; लेकिन क्या बात है? वह हमारा इकलौता बेटा है!
उनकी बातें सुनकर मैं भावुक हो गया। मैंने अपनी आंखों में आए आंसुओं को छिपाने की कोशिश की।
मैं झटपट उठी और नीचे चली गई। पीछे के दरवाजे के पास केले के पेड़ के नीचे बैठकर मैं खूब रोई। फिर थोड़ी शांत हुई।
पुहा हंसते हुए ताम्बो के पास आकर बैठ गई और बोली, “पिताजी, मैंने उससे शादी करके गलती की। शादी के बाद वह मेरे घर आ गया। मुझे चौबीसों घंटे गांव में रहना पड़ रहा है। मैं अपनी पत्नी की देखभाल नहीं कर पा रही। उसका स्वभाव ज्यादा नखरे वाला नहीं है। फिर भी, मुझे इस तरह की जिंदगी जीने में कोई दिलचस्पी नहीं है। आपको उससे दोबारा शादी कर लेनी चाहिए। उससे शादी करने के बाद मुझे कोई अच्छी लड़की नहीं मिलेगी, इसलिए कृपया मुझे माफ कर दीजिए। मेरे बारे में इससे ज्यादा कुछ मत सोचिए।”
‘अगर तुम चौबीस घंटे नदी में डूबे भी रहो, तो भी वह इसे बर्दाश्त नहीं करेगा, बल्कि इसके विपरीत, वह तुम्हारी मदद करेगा। तो फिर तुम चुप्पी तोड़ने से इतना क्यों कतरा रहे हो?’
मुझे लगा कि मुझे जो कुछ हुआ है उसे बताने की पूरी आजादी होनी चाहिए; लेकिन फिर मुझे लगा कि मैं किसी और को बताने जा रही हूँ।
बेटे ने यह नहीं पूछा कि मैं उसे कैसे बताऊँ? इस पर उसने कहा, 'पिताजी, आपके प्रश्न का उत्तर देना असंभव है। मुझे क्षमा करें!'
"मैडम, कुछ ऐसा हुआ है जिसे बताने में आपको शर्म आ रही है। इसीलिए आप दोनों इसे छुपा रहे हैं!"
रात के खाने के बाद, पिताजी मुझे बगीचा दिखाने ले गए। उन्होंने कहा, ‘मुझे लगता है तुम दोनों में से किसी एक ने कुछ गलत किया है। और दूसरा उस गलती को भूलने को तैयार नहीं है। फिर भी, तुम दोनों एक-दूसरे से प्यार करते हो। मान-सम्मान की बात को एक तरफ रखकर, अब सबसे समझदारी वाली बात यही है कि तुम

[illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

३
मैंने पिछले एक साल में कुछ नहीं लिखा। मुझे क्या लिखना चाहिए? हर दिन। दुखों के प्रति इस नैतिक चेतना के बारे में मुझे क्या लिखना चाहिए? संदर्भ कुछ नए दृष्टिकोण, नए विचार, नए सूत्र सुझाता है। ये वे विषय हैं जिन पर रियाजा के दौरान विचार-विमर्श किया जाना है। यदि आवश्यक हुआ, तो मैं राजाराम काका से बात करके इसे और स्पष्ट करूँगा या पुष्टि के लिए संबंधित पुस्तकें पढ़ूँगा। मुझे इसके बारे में क्या लिखना चाहिए? मेरे मन में उस विषय पर लिखने की प्रबल इच्छा थी जिसे किसी और को नहीं बताया जा सकता था। पिछले हफ्ते मैं कलिंगदा राग के पाठ लेकर गोरेसाहेब के घर गया था। संयोगवश, मेरी उनसे घर पर मुलाकात हो गई। उन्होंने पूछा, 'तुम्हारा रियाज़ा कैसा चल रहा है?'
‘ठीक!’
'क्या तुम तीन साल से खाली नहीं रहे? मैंने तुम्हारा गाना कभी नहीं सुना!' ‘यह अभी पूरी तरह से तैयार नहीं है!’
"चलिए इसे सुनते हैं और फिर फैसला करते हैं, ठीक है?"
पहले तो मुझे लगा कि वे इसे आसानी से खारिज कर देंगे; लेकिन उन्होंने इसे गंभीरता से लिया।
इसे हटा दिया गया। हमें और अधिक संयम दिखाना चाहिए, उनकी इच्छाओं का अनादर करना चाहिए।
मैंने सिर हिलाया, मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं बेवकूफ लग रहा हूँ, "अगर आप छुट्टी पर थोड़ा आराम लें, तो मैं ज़रूर सुनूँगा। इससे आपके लिए मेरे फार्महाउस आना आसान हो जाएगा। मुझे अपने घर के माहौल से डर नहीं लगेगा।" वाह! ये तो बहुत बढ़िया होगा!’ हनत ने अपनी डायरी निकाली और उसे देखकर बोला, ‘क्या ये इस रविवार को ठीक रहेगा? मैं सुबह करीब नौ बजे वहाँ पहुँचूँगा। मैं हिलाली भी साथ लाऊँगा। नित्ती खत्म करके घर आ जाऊँगा। वहाँ पहुँचकर हम चाय-बिस्किट खाएँगे और गाना शुरू करेंगे। एक राग सुबह का और एक राग दोपहर का। फिर हम दोपहर का खाना खाएँगे। थोड़ी देर आराम करेंगे। आधा घंटा।’ इसके बाद दोपहर और शाम के लिए एक और राग है। कौन सा राग गाया जाना चाहिए? मैं तुम्हें इसके बारे में बताऊंगा। मैं तुम्हें नहीं बताऊंगा!' वह धीरे से हँसा।

अब असली परीक्षा का समय आ गया है! यदि धुन पहले से बजाई जाती है, तो छात्रों को पहले से तैयारी कर लेनी चाहिए।
सब ठीक होता, लेकिन वह अपना गुस्सा ज़ाहिर करने को तैयार नहीं था! मैं भी हंस पड़ी। उसने सोचा, 'तुम क्यों हंस रही हो?'
कुछ नहीं। अगर तुम मुझे ये सब बकवास बताओगे तो मैं बर्दाश्त नहीं कर पाऊंगा! मैं तुम्हें पहले ही बता दूंगा!
‘हम्म! बच्चे तिपहिया साइकिल चला रहे हैं क्योंकि प्रश्न पत्र पाठ्यक्रम से बाहर है, यही हुआ है! तो ठीक है!’ वह फिर हँस पड़ा।
मैंने सुनीतिता को साहब के साथ रविवार को आने का न्योता दिया और घर लौट आई। मैंने तुरंत राजाराम अंकल को फोन किया और उन्हें सब कुछ बताया, 'मालिक, आपको इस दिन आना चाहिए। आपको मुझे घर का रास्ता भी दिखाना चाहिए। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा है!'
घबराने की कोई जरूरत नहीं है। फिर मैं भी करीम को अलविदा कह दूंगा। इसके बाद राजाराम और चाचा ने गोरे साहब के घर जाकर उसे अपने साथ लाने का फैसला किया।
गोरेसाहेब को यह घर और यह परिसर बहुत पसंद आया। वे पंद्रह मिनट तक अकेले बगीचे में टहलते रहे। ऊपरी मंजिल पर पहुँचने के बाद भी वे नीचे की चौखट पर ही बैठे रहे। उन्होंने कहा, ‘पंखे बंद कर दो। दरवाजा खोल दो। डफली नीचे आ जाएगी।’ लेकिन सुनीतताई चौखट पर ही बैठी रहीं।
मैंने तोड़ी और बिलावल गाया। छह बजे से ही मेरे छोटे-छोटे सपने साकार होने लगे। राजाराम अंकल को मुझे रास्ता दिखाने की भी ज़रूरत नहीं पड़ी। समय की कमी के कारण मैं शांति से चिंतन और गायन कर रही थी। जब मेरी आँखें बंद थीं, तो मुझे चारों ओर कई खेत दिखाई दे रहे थे, त्रिजा से त्रिजा तक, त्रिजा के पार, इत्यादि। मैंने पहले कभी नहीं सोचा था कि मैं बिना किसी परेशानी के डेढ़ घंटे तक तोड़ी गा पाऊँगी! इसके बाद अंकल ने पूछा, 'क्या तुम्हें चाय चाहिए?' मैंने उन्हें मना कर दिया और बिलावल गाना शुरू कर दिया। हालाँकि मुझे चाय नहीं चाहिए थी, मैं भूल गई थी कि गोरे साहब और सुनीति बाई के बारे में सोचना मेरा कर्तव्य है। बिलावल भी चुपचाप भीड़ से दूर चला गया। गाते हुए मैं अपने सामने बैठे गोरे साहब को देख रही थी। वहाँ मुझे दस हज़ार भक्तों की निगाहें दिखाई दीं। मैं गोरे साहब के सामने गा रही थी, वे ध्यान से सुन रहे थे, उनकी आँखों में बातचीत का आनंद झलक रहा था। उनका शरीर ताल

के साथ स्वतः ही हिल रहा था, जब मैं अचानक सभा में आई तो उनके चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान आ गई। मैं अपने गायन से दस हजार श्रोताओं का ध्यान अपनी ओर खींच रही थी – इन भावनाओं ने मेरे मन को आनंद और आत्मविश्वास से भर दिया। जैसे सभा में प्रत्येक अतिथि से अलग-अलग बातचीत हो रही थी, वैसे ही मेरा गायन साहब के अतिथि से संवाद स्थापित कर रहा था। शब्दों, विचारों और अन्य भावनाओं के लिए कोई जगह नहीं थी।
गाना बंद हो गया। वह कुछ देर तक बस सिर हिलाता रहा। उसने कुछ नहीं कहा। खाना खाते समय भी उसने कुछ नहीं कहा। मैं सुनीतिता को गाने के लिए कह रही थी। आराम करने के बाद, उसने फिर से गाना शुरू किया। शुरू करते हुए उसने कहा, 'अब मैं तुम्हें यह नहीं बताऊंगी कि क्या गाना है!'
‘उम... मुझे ऐसा नहीं लगता। आप ही कहिए।’
उसने अपना सिर हिलाया। फिर हँसते हुए बोला, 'पहले वृंदावनी को सारंग बनने दो।' यहीं पर बात खत्म हो गई।
कुछ मिनट बीत गए। इसके बाद भीम्पाला ने उससे बात करना शुरू किया। वह पचास मिनट तक बोलता रहा।
जब गाना बंद हुआ तो मैंने उसकी तरफ देखा। उसने सोचा, 'क्या मेरा गला खराब नहीं है?'
‘इतना? वो तो हर दिन आठ से दस घंटे गाती है! आज का कोटा अभी बाकी है!’ राजाराम काका ने शिये की ओर से जवाब दिया।
मैं उठा और नीचे जाकर चाय, बिस्कुट और सेब का इंतजाम किया। फिर ऊपर आकर संगीत सुनने बैठ गया। गोरे साहब ने कहा, ‘मुझे आज चारों राग रिकॉर्ड कर लेने चाहिए थे। मुझे पता ही नहीं था। मैं चाय के बाद पूरे साल राग रिकॉर्ड करना चाहता था; लेकिन एक दिन में इतना गाना बहुत मुश्किल होता!’ इसके बाद हमने संगीत के बारे में थोड़ी बातचीत की।
जब वे निकले तब दिन ढल रहा था। करीम लाही भी उनके साथ गए। रात 9:30 बजे राजाराम काका ने फोन किया, ‘गोरे साहब को तुम्हारा गाना बहुत पसंद आया। वो कह रहे थे कि यह एक स्वतंत्र गीत है, इसमें किसी का प्रभाव नहीं दिखता।’ पुहा ने कहा, ‘मुझे अंदाजा ही नहीं था कि इतनी तैयारी की गई है।’
आप इसमें से बहुत सारे टेक्स्ट लाना चाहते हैं, है ना? कुछ ऐसा जिसमें दस अलग-अलग शैलियाँ मिली हुई हों।

उन्होंने ऐसा ही सोचा। उन्होंने एक और बात कही, उनका मानना है कि आपको एक कार्यक्रम करना चाहिए! मैंने कहा, ‘मैंने ऐसा कुछ नहीं कहा। ठीक है, पहले उस शिक्षक से बात कर लेते हैं, ताकि आप इस मामले पर आगे चर्चा कर सकें। किसी संगीत समारोह में मौका ढूंढते हैं या देखते हैं कि मुंबई में चार-छह संगीत समारोह होते हैं या नहीं। आज उनकी उम्र के किसी भी गायक की ऐसी स्वतंत्र गायन शैली नहीं है!’ मैं बहुत खुश थी! लेकिन मैंने कहा, ‘उन्हें एक-दो साल और एकांत में अभ्यास करना होगा।’ उन्होंने कहा, ‘ठीक है; लेकिन एक ज्ञानी व्यक्ति के लिए, अब से गायन भी रियाज़ का एक अच्छा रूप है। शिक्षक की मौन आलोचना और प्रशंसा गायक को और अधिक शक्ति देती है। गायक को सभा में गीत प्रस्तुत करना चाहिए, और उसके बाद, उसे एकांत में कुछ ध्यान भी करना चाहिए। इससे गायन और अधिक समृद्ध होता है। अब वह तैंतीस या चौंतीस साल की होंगी, है ना? हमें महफ़िली शुरू करने में और देरी नहीं करनी चाहिए।’ मैं भी उनकी बात समझ गई थी। मैं अगले सप्ताह तक गांव में नहीं रहूंगा। इसलिए मैंने उसे तुरंत फोन किया।'
मुझे अपार आनंद तो महसूस हुआ ही, साथ ही कृतज्ञता का भाव भी। फिर भी, मैंने मन ही मन सोचा, ‘चाचा जी, भगवान ने मुझे गीत गाकर पेट भरने का समय नहीं दिया है। मुझे जल्दी क्यों करनी चाहिए? मुझे कोई उत्सव नहीं मनाना है! मैं अपनी माँ की सादगी में ही गाऊँगी, मैं केवल उन्हीं के लिए रहूँगी!’
‘पैसे लेना या न लेना गौण प्रश्न है। यह उन सभी का कर्तव्य है जिन्होंने गाना सीखा है, उन लोगों के लिए जिनका वे लंबे समय से इंतजार कर रहे थे! गाँव से लौटने के बाद हम इस बारे में विस्तार से बात करेंगे।’

४
मैंने पिछले पंद्रह दिनों से कुछ नहीं लिखा है। ऐसा कार्यक्रम शुरू करना है या नहीं, बस यही एक सवाल मेरे मन में है। यह सच है कि गोरे साहब के सामने गाने के बाद गायन के प्रति मेरा उत्साह बढ़ गया है। हालांकि उन्होंने कुछ स्पष्ट रूप से नहीं कहा, लेकिन उनके चेहरे के भाव, उनकी आंखों की चमक ने मुझे यह एहसास दिलाया कि मेरे राग-विदत्रा को एक महत्वपूर्ण पोषण मिला है। लेकिन कल से मेरा मन बेचैन है। इसमें भी कुछ नया नहीं है। यह जानते हुए भी, मुझे अपनी बेचैनी कम करने का कोई उपाय नजर नहीं आ रहा है।
उस दिन, हमेशा की तरह, मैं गोरेसाहेब के घर गया। गौरी रागा की कैसेट टेप।
मैंने आने का फैसला कर लिया था। सुनीतिताई ने विशेष आत्मविश्वास से कहा।
पिछले तीन वर्षों से मैं हर पखवाड़े उनके घर जाता रहा हूँ। उनके आदेशानुसार, वे इस कमरे का दरवाजा खोल देते हैं और मुझे जितनी देर तक अंदर रहने देते हैं। वे यह भी नहीं पूछते कि मैंने कितनी कैसेट कॉपी की हैं।
हालांकि, वे भोजन के दौरान आकर पूछते हैं। इन दिनों मैं उनके घर से चाय और खाना तो ले जाता रहा हूँ, लेकिन मैंने कभी कुछ खाया नहीं है।
उनका चरित्र बुरा या दुष्ट नहीं है; बल्कि उसे पवित्र कहा जा सकता है। देखो, चेहरा और कद-काठी बिल्कुल वैसी ही है जैसी शास्त्रीय कला में वर्णित होती है। संक्षेप में कहें तो, सफेद संगमरमर में तराशी गई रेखाएं और अनुपात। धनवानों के अनुरूप भारी साड़ी। संख्या में कम, लेकिन गहरे दागों से भरी हुई। सोने का गट्ठा पहनने में कोई गरिमा नहीं थी। वह स्नातक था। उसकी वाणी में भी शहरी परिष्कार झलकता था। फिर भी
ऐसा कहा जाता था कि शरीर स्वयं अर्थहीन है। करों से संबंधित होने के बावजूद,
महान गोरे साहब के सामने तो यह बात नगण्य लगती है। सुनीताई को तो गाने में कोई दिलचस्पी ही नहीं है। वह अपने पति के साथ कभी गायन कार्यक्रमों में नहीं आतीं। संगमरमर जैसी सुंदरता, खूबसूरत आकृति, यही तो सच्चाई है! लेकिन आज के दिन वे विशेष रुचि से बोलते हैं। वे कहते हैं, 'सच है...'
सच कहूँ तो, मुझे शास्त्रीय संगीत उबाऊ लगता है। मुझे भजन, अभंग और नात सुनना पसंद है। अगर आप बिना शब्दों के सिर्फ़ 'आ-आ' जैसी आवाज़ निकालें, तो आप क्या सुनना पसंद करेंगे? असल में, उस दिन मेरा आपके पास आने का मन नहीं

था; लेकिन आपने बहुत ज़ोर दिया। आपने कहा, 'थोड़ी देर सुनो। अगर बहुत ऊब जाओ, तो बाहर आकर बगीचे में खेल लो। बस इतना ही काफ़ी है!' मैं भी यहाँ अकेले बैठकर सोच रही थी कि क्या करूँ। आपने भी बिना शब्दों के गाया; और मुझे अच्छा लगा।
इसमें भी कुछ खास है। इसमें कुछ ऐसा है, जैसे बोलने पर जो भावनाएं उत्पन्न होती हैं। इसीलिए मैंने पूरा गाना सुना।'
मुझे लगा यह बहुत बड़ी तारीफ़ है! मैंने चुराई हुई कैसेटें दोबारा डाउनलोड करना शुरू कर दिया। वे भी वहीं पड़ी मुझे ध्यान से देख रही थीं। जी हां, जी हां। यह भी नया था। मैंने उसे पहले कभी इस कमरे में आते नहीं देखा था। मुझे लगा कि उसमें गायन के प्रति रुचि विकसित हो रही है। उसने सोचा, 'यह सब सुनने के बाद, क्या तुम भी इसे अपने गायन में इस्तेमाल करोगे?' 'हाँ।'
उन्होंने जोर देकर कहा कि मैं रात के खाने के लिए रुकूँ। खाना बनाने वाली महिला
मैं बड़ा हो गया। महल में रसोइया मुझसे भी बेहतर थी। मुझे लगा कि इतनी अच्छी रसोइया मिलना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। खाना खाने के बाद, वह मुझे उस कमरे में ले गया जहाँ बूढ़ा आदमी था और दरवाज़ा बंद कर दिया। हम दोनों अलग-अलग कुर्सियों पर बैठ गए और उसने कहा, 'तुम खाने-पीने के शौकीन हो गए हो, क्या तुम इन औरतों को नहीं देखते? तुम्हारा क्या ख्याल है?'
'खाना अच्छा था। उनका व्यवहार गंभीर और घरेलू था। वे पहले भी कई बार चाय और खाना ला चुके हैं।'
'कौन जानता है?'
'नहीं।'
‘क्या पंडित मोहनलाल नाम का कोई बहुत प्रसिद्ध गायक नहीं है? ये उनकी पहली पत्नी हैं! उनकी एक तैंतीस साल की बेटी और छब्बीस साल का बेटा है। जब बेटी पाँच साल की थी, तब उन्होंने अपनी एक छात्रा से शादी कर ली और उसे छोड़ दिया। बाद में, उन्होंने उसे भी छोड़ दिया और मनोहरी दास नाम की एक नर्तकी के साथ दिल्ली चले गए –’ और इसी तरह की बातें। उन्हें यह सारी जानकारी मोहनलाल की पहली पत्नी से मिली थी, जो उनके घर में काम करती थी।
यह एक स्पर्श था। मेरे विचार में इसमें बहुत सारी नई सामग्री थी। 'यह अनैतिक है'

हाल ही में वज्र के वृ पत्र के बारे में बहुत चर्चा हुई है। लगता है आपने इसे पढ़ा नहीं है। क्या वृ पत्र आपके बगीचे में नहीं आते?
मैं पूछ नहीं रहा हूँ।
‘हमारे बॉस को भी पता है कि वह कितना आलसी है। अखबार में आने से पहले ही उन्हें यह बात पता थी। फिर भी, जब उन्हें वह पैसा मिला, तो उन्होंने पहल की और मुंबई में उनके लिए एक बड़ा जश्न आयोजित किया। मैंने भी आपत्ति जताई, आखिर वह ऐसे व्यक्ति हैं, उन्हें जश्न मनाने की क्या जरूरत है? उन्होंने कहा, अगर हम कला और उनके निजी जीवन को एक-दूसरे से जोड़ते रहेंगे, तो कला का अस्तित्व ही नहीं रहेगा। मैंने तर्क दिया, क्या उनकी कला इसी तरह से रची नहीं जाती? वह मुझे कोई ऐसा जवाब नहीं दे सके जिससे मैं संतुष्ट हो जाऊं। मैंने इसे एक तारीफ के तौर पर लिया कि जिन कलाकारों को कला से असीम प्रेम होता है, वे उनकी मदद करने के लिए बेताब रहते हैं और हम चुप रहे।’
अखबार में जो छपा था, उसके बारे में सोचने का मन तो हुआ, पर मैंने कुछ नहीं कहा। मैं यह भी समझ गई थी कि इस बारे में ज़्यादा उत्साह दिखाना ठीक नहीं होगा। मुझे थोड़ा डर था कि कहीं मेरा ज़िक्र न हो? नहीं। अगर होता, तो वे इस विषय को उठाते ही नहीं। मेरा गाना सुनने के बाद, मेरे दिल में एक तरह का विश्वास जागा कि उन्होंने ही इस विषय को उठाया है। मेरे दिल में बस एक ही बदलाव आया। अब तक उनका कोई रिश्ता नहीं था, लेकिन अब, एक ही व्यक्ति से धोखा खाने के बाद, वे करीबी बहनों जैसी लगने लगी हैं, मानो उनके बीच बहन जैसा रिश्ता बन सकता है। सफेद बालों से घिरा उनका सांवला चेहरा, उनकी पीली, रूखी त्वचा, बार-बार मेरी आँखों के सामने आने लगी। जीवन में एक मोड़ ऐसा भी आया जब मुझे यह भी लगा कि वह दूसरे लोगों से अपने रिश्ते छोड़कर मेरे करीब क्यों न आ जाए? जब मुझे यह एहसास याद आता है, तो मुझे शर्म आती है। इतनी शर्म आती है कि मैं गोरे साहब के घर जाने से कतराती हूँ।
इस घटना के तीन सप्ताह बाद, मैं उनसे दोबारा मिलने गई। उस दिन भी उन्होंने रात का खाना खाने पर ज़ोर दिया। लेकिन इस बार मैंने रामकुमारी को खाली निगाहों से देखा। उस दिन भी सुनीताई ने मुझे रामकुमारी के बारे में और बताया। मेरा मन किया कि मैं उनसे कहूँ, मुझे इस बारे में कुछ मत बताइए - यह मुझे परेशान करता है। लेकिन मैं उन्हें कैसे बता सकती थी? उन्हें रामकुमारी के लिए बहुत सहानुभूति थी और इस घटना पर बहुत गुस्सा भी था।
इस कहानी से दोहरी सफलता मिल रही थी। इस कहानी के संबंध में, गोरे साहब

मुझे ज़्यादा पता है। क्या आपको भी इसके बारे में पता है? राजाराम चाचा ने रामकुमारी को नौकरी दिलाने का वचन दिया था। मुझे यह भी पता चला कि चाचा ने मुझे नहीं बताया। क्या चाचा ने गोरे साहब को इसके बारे में बताया? मुमकिन नहीं। गोरे साहब को भी इस बात की जिज्ञासा होगी, 'वह अपने पति को छोड़कर यहाँ अकेली क्यों रह रही है?' लेकिन उनमें ऐसा करने की हिम्मत नहीं है।

५
पिछले हफ्ते बड़ी भाभी का जन्मदिन था, इसलिए मैं उनके घर गई थी। वहीं मुझे खबर मिली कि रेवती भाभी तीन दिन से गर्भवती हैं। इन दिनों वह अपने तीसरे बच्चे की उम्मीद कर रही हैं।
इसे कृतज्ञता माना जाता है। भाभी मुझे अपने कमरे में ले गईं और बोलीं, 'कुछ गड़बड़ हो गई है और हम कई दिनों से यहीं रुके हुए हैं। तुम कह रही थीं कि चलो तुम्हारे डर दूर करते हैं; लेकिन मैंने ज़िद की। मैंने कहा, भगवान ने जो खुशी दी है, उसे क्यों ठुकराना?'
वे आपस में बहस कर रहे थे। उनके चेहरों पर एक ही बात साफ दिख रही थी।
वे दोनों देवरानी-जेठानी हैं और मेरे घर के पास ही रहती हैं। हम दोनों की उम्र लगभग एक जैसी है। मैं रात को घर लौटी।
दो दिन बीत गए। रेवती भाभी के चेहरे की खुशी देखकर मेरा दिल भर आया। मेरी चौंतीस वर्षीय भाभी तीसरी बार मां बनने वाली हैं! लेकिन मैं चौंतीस साल की उम्र में भी बांझ ही रही! मैंने इस खुशी का त्याग इसी के लिए किया था। शादी के बाद मैंने लॉस एंजिल्स समूह को बताया था कि गर्भावस्था, प्रसव और उसके बाद बच्चे के पालन-पोषण में कई साल बर्बाद हो जाएंगे। मुझे बच्चा नहीं चाहिए; लेकिन अगर आप चाहते हैं, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। उन्होंने मेरी भावनाओं को महत्व दिया था।
उन्हें छोड़कर यहां आने के बाद, मां बनने का ख्याल मेरे मन में कभी नहीं आया।
श यताही न हती.
लेकिन अब, अचानक, माँ बनने की इच्छा प्रबल हो गई है। बगीचे के ये पेड़ खिल उठे हैं। यही असली बसंत है। मुझे इसमें एक नया अर्थ दिखने लगा है। अब तक मैं बसंत को प्रेम, विरह, मिलन, मधुमक्खियों और तितलियों का मौसम मानती थी जो खिलते फूलों पर शहद के लिए उड़ती हैं। मैं बसंत को इन सभी भावनाओं को खिलने वाला मौसम मानती थी; लेकिन अब, मुझे मातृत्व प्रेम आशा से भरा हुआ महसूस हो रहा है! मुझे एक पुरुष और एक स्त्री के बीच के प्रेम में एक नया अर्थ दिखने लगा है। यदि माता-पिता का प्रेम न हो, तो अन्य प्रेम का क्या अर्थ? मैं हमेशा इस भावना से वंचित रह गई हूँ। बसंत जैसे गीत को इस तरह नहीं गाना चाहिए। अगर गाना शुरू कर दो, तो भीतर का क्रोध बाहर आ जाता है और

रोने लगते हैं। मायामद् सारंग भी ऐसी ही आग भड़का देता है। मैं सोचती थी कि गायन के विज्ञान से अनभिज्ञ लोग गलती से इस राग को मधुमस सारंग कह देते हैं। अब मुझे लगता है कि यह गलत नाम ही सच्चाई बयां करता है। मधुमस शब्द ही विरह की भावना जगाता है। इसके बाद मुझे वह राग भी नहीं गाना चाहिए।
पिछले एक-दो दिनों से एक विचार मन में घूम रहा है – विचार नहीं, दिन-रात, दिन-रात, एक अजीब और अवास्तविक विचार। अगर मैं खुद को देवदासी मानूँ, तो मैं विवाह के बंधन के बिना बच्चे को जन्म दे सकूँगी। जन्म से पहले ही बेटे को शास्त्रीय गायन का अवसर दिया जाएगा। बाद में, उसे उचित प्रशिक्षण देकर, मैं एक ऐसा गायक तैयार करूँगी जो आने वाले वर्षों में पूरे भारत को चकित कर देगा!
तीन दिन देवदासी बनने के बाद मैं संतान प्राप्ति की प्रतीक्षा कर रही थी। आज सुबह मेरे मन में एक प्रश्न उठा और मेरे इस विचार की निरर्थकता स्पष्ट हो गई। अगर मैं देवदासी की तरह मरने को भी तैयार हूँ, तो इसके बदले किसका गर्भ धारण करूँ? किसी दूसरे गायक का? सभी गायक मोहनलाल जैसे नहीं होते; पर मैं किसे ढूँढूँ? प्रेम को? विक्रम के सिवा किसी और के लिए ऐसा प्रेम होना मेरे लिए संभव ही नहीं। भला मैं उस व्यक्ति के लिए कैसे प्रेम कर सकती हूँ जो इस व्यक्ति के साथ व्यभिचार के जाल में फँस गया है? अगर मैं किसी से प्रेम कर भी लूँ, तो क्या यह उसकी पत्नियों और बच्चों के साथ अन्याय नहीं होगा? भले ही वह अविवाहित हो, यह उचित नहीं है। जब मेरा विवाह करने का कोई इरादा ही नहीं है, तो मैं ऐसे व्यक्ति को कैसे पा सकती हूँ? अगर मैं इस तरह बैठकर सोचती रहूँ, तो एक तरफ तो मुझे दुख होता है और दूसरी तरफ मैं अपनी ही मूर्खता पर हँसती हूँ।
लेकिन अब मेरे मन में एक बात पक्की हो गई है। अगर मैं माँ बनना चाहती हूँ, तो विक्रम ही इस बच्चे का पिता होगा। सिर्फ उसी को यह अधिकार है!
उनकी महानता का एक और पहलू अब स्पष्ट रूप से उभर रहा है। सास
इकलौता बेटा। तेज़ी से बढ़ता कारोबार। इसी वजह से हमने उत्तराधिकारी पैदा करने की उम्मीद छोड़ दी है ताकि हमारी कहानी अधूरी न रह जाए! माँ के कहे शब्दों को, ऐसे महान और उदार कार्यों के बिना, सपने में भी देखना पाप है! लेकिन मैं उन्हें अपने हाथों से नहीं छीनूँगा।
यह सब खत्म हो गया। ऐसे समय में, मुझे अपनी मां की आवाज के लिए अपनी तड़प को उनके संगीत में डुबोना पड़ता है।

सत्रह

१
लॉरे स्मिथ बनारस में सीखी गई गायन शैली और पिछले तीन वर्षों से मुंबई में ले रही गायन की कक्षाओं के बीच के अंतर को स्पष्ट रूप से समझती थी।
जब मैं बनारस में पढ़ रहा था, तब मैं भी जवान था। चौबीस साल का। मैं इतना बड़ा हो चुका था कि नई-नई चीजें देख सकूँ। हर गीत नए भाव और नई बातें लेकर आता था। वाराणसी-काशी को छोड़कर। यह केवल हीर चंद्र ही नहीं है, यह भी एक ऐसा गाँव है जो सदियों से सभी पौराणिक कथाओं में प्रेरणा का स्रोत रहा है। गंगा के किनारे बसा हुआ। नदी में नाव की सवारी करते हुए, मैंने नदी के किनारे घाट देखे, गलियों में बिखरे मंदिर देखे, माथे पर केसरिया मालाएँ पहनीं और पूर्वजों की नज़रों से 'जय विवानथजी', 'जय अनापुनाजी', 'जय कोतवालजी', 'जय रामचंद्रजी', 'जय तुलसीदासजी' का जाप किया। हर राग में मैंने हर देवता की शक्ति का अनुभव किया। वह गुजराती भी अलग थी। आचार्य ष्टिसागर पांडे के नाम के साथ ही मेरे मन में एक विशाल कल्पना का जन्म हुआ। यादों का सागर। सागर कोई जल भंडार नहीं है जिसे हवाई जहाज में बैठकर कुछ घंटों में या जहाज में बैठकर कुछ हफ्तों में पार किया जा सके। अनंत, अनंत! असीम धन के भंडार में छिपी शक्ति का विशाल विस्तार! यह नाम सुनकर मन में ज्ञान के ऐसे अथाह सागर का स्वप्न उठने लगता है। सुबह के इस समय वे गंगा नदी पर जाते, गर्दन तक पानी में बैठते और शुभ अनुष्ठान करने के बाद घर लौटकर घर में बने कृष्ण मंदिर में पूजा करते। माथे पर कुमकुम लगाकर वे बाहर आते और तंबू को स्पर्श करते। फिर अत्यंत श्रद्धा से गायन और अध्ययन का कार्य प्रारंभ होता।
मुझे इस विषय में गहरी आस्था थी। मैं गुरु की शिक्षाओं और उपदेशों से विशेष रूप से प्रभावित था।
एक अंतराल था। इतने वर्षों में उसने मुझ पर कभी इतना ज़ोरदार मुक्का नहीं मारा था। ईर्ष्या की कोई गुंजाइश ही नहीं थी। प्रत्येक राग की शुरुआत में, एक संस्कृत पाठ होता था।
लोग कहते थे कि यह क्रोध किसी देवता या देवी में परिवर्तित हो गया था। उस विशेष क्रोध का जाप करना उस विशेष देवता का आह्वान करना और स्वयं को उसमें विलीन कर लेना था।

था। हम दोनों गाना सीख रहे हैं। चलो हम दोनों एक विदेशी की मदद से अपना रास्ता बनाते हैं।
यह बात उसके दिमाग में नहीं आई थी। हालांकि, उसे लगा कि यह एक अपमान है। इसीलिए वह यहाँ से आया था।
वह सब चला गया। उसके मन में एक बात आई। भारतीय भी शारीरिक सुख चाहते हैं जो आसानी से उपलब्ध हैं; लेकिन समाज स्वतंत्र न होने के कारण ये लोग गुलामों जैसा व्यवहार करते हैं। यह देखकर उसके मन में प्रतिशोध की भावना जागी। फिर भी, इस बात का ध्यान रखते हुए कि इससे उसकी गायन की पढ़ाई पर कोई असर न पड़े, वह गायन में मग्न हो गई।
वह किसी और चीज़ को भी देख रही थी। हालाँकि गुजी में कई ऐसी आदतें थीं जिनसे उसे गुस्सा आता था, लेकिन वह गाने सिखाने के मामले में बहुत सख्त था। जब वह गाँव में होता था, तो वह हफ्ते में तीन दिन अपनी क्लास कभी नहीं छोड़ता था। वह सुबह आठ बजे की क्लास कभी नहीं छोड़ता था। एक बार बैठ जाने के बाद, वह समय सीमा का भी ध्यान नहीं रखता था। जब तक वह किसी खास हिस्से में पूरी तरह महारत हासिल नहीं कर लेता था, तब तक वह उठता नहीं था, और मुझे भी उठने नहीं देता था। क्योंकि पूरा गाना रिकॉर्ड किया हुआ था, इसलिए उसके बाद अभ्यास करना आसान था। हालाँकि उसे क्लास के बाद नियमित रूप से सोने के लिए नहीं बुलाया जाता था, लेकिन उसे नियमित रूप से गाना सिखाया जाता था। बेस! बस इतना ही मेरे लिए काफी है!
पिछले साल कुछ अखबारों ने उनके बारे में कई बेतुकी बातें छापी थीं। उन्होंने वो सब पढ़ा भी था; लेकिन फिर कभी उस विषय पर चर्चा नहीं हुई। उन्होंने इस बारे में सोचा भी नहीं था। बस यही उन्होंने इससे सीखा था। इस तरह की सनसनीखेज पत्रकारिता सिर्फ अमेरिका में ही नहीं, भारत में भी थी। गुजी यहां भी सतर्क थे। अमेरिका में वो आप को अपने कार्यक्रमों में साथ ले जाते थे, लेकिन यहां नहीं। वो ऐसा व्यवहार नहीं करते थे मानो उन दोनों के बीच का रिश्ता बाहर कहीं भी किसी के लिए दिलचस्पी का विषय बन जाएगा। शायद इस देश में ऐसी सतर्कता जरूरी थी।
इस प्रशिक्षण की शुरुआत हुए तीन साल हो चुके थे। वह अपने सुलेख कौशल को एक और साल तक बढ़ाना चाहता था। अगर गुजी ने सुझाव दिया होता, तो यह आसान होता; लेकिन हाल ही में गायन के प्रति उसका उत्साह कम हो गया था। ऐसा लग रहा था मानो वह अपने गायन कौशल को बढ़ा सकता है या तार वाद्ययंत्रों में निपुणता

हासिल कर सकता है; लेकिन ऐसा करने से उसे क्या लाभ होगा और ऐसा न करने से क्या हानि होगी? अब, उसकी नज़र में, भारतीय संगीत एक कला बन गया था। यह एक रहस्यमय जीवन का आह्वान बन गया था। उसे ऐसा क्यों करना चाहिए? चाहे वह कितना भी सोचे, उसे कोई जवाब नहीं मिल रहा था। हिप्पियों की तरह, दो-तीन साल तक एक नई दुनिया की खोज करने के बाद, क्या वह अमेरिका लौटकर वहाँ के तेज़-तर्रार औद्योगिक जीवन में घुलमिल जाएगा? क्या समय को रोक देने वाला प्रेम उसके प्रेम का स्थायी गुण बना रहेगा या नहीं?
उसे भी शिव गु जिम में स्पष्ट बदलाव नज़र आ रहा था। पिछले कुछ समय से वह उदास दिख रहा था। उसकी आँखों में दृढ़ संकल्प फीका पड़ गया था। उसके चेहरे का उत्साह कम हो गया था। यहाँ तक कि पढ़ाते समय भी वह ऐसे गाता था मानो अपना कर्तव्य निभा रहा हो। उसके अंदर की चमक फीकी पड़ गई थी। अचानक उसका गुस्सा बढ़ गया था। इसके बाद वह ऐसे नज़रें फेर लेता था मानो कुछ गड़बड़ हो गई हो।
उसने कई बार उन्हें शांत करने की कोशिश की थी; लेकिन वे और भी ज्यादा उत्तेजित हो जाते और चिल्लाते, 'मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? मैं मूर्ख हूँ! पहले अपने गाँव जाओ!'
फिर उसी जगह पर ठंडा पानी गिरेगा।

२
अंततः, उन्होंने तीन महीने बाद अध्यापन से पूर्ण विराम लेने और अमेरिका जाने का निर्णय लिया। जैसे ही उन्होंने यह कहा, गुरु जी ने कहा, 'यदि ऐसा है, तो भैरवी सिख बनो।'
उसने बनारसम में इस राग को कुछ हद तक सीखा था। अनगिनत महफ़िलों के अलावा उसने इसे अनगिनत बार सुना था। उसके पास इसके कई श्लोक थे। जब भी उसका मन करता, वह इसकी नकल भी करती थी। एक मधुर राग जिसे कहीं भी और कभी भी गाया जा सकता था। वह कुछ दिनों से इस राग को सीखना चाहती थी। उसने इस बारे में गुजी से भी बात की थी। लेकिन उन्होंने यह कहकर बात टाल दी, 'इतना भी नहीं। भैरवी राग सीखना इतना आसान नहीं है।'
अब उन्होंने भैरवी राग सीखना शुरू किया। जब उन्होंने हारमोनियम पर स्वर-प्रवर्तन का उच्चारण करते हुए उन्हें राग की लय दिखाई, तो उन्होंने कहा, ‘इस राग को कोई और तरीके से नहीं गाता। अगर आप ऐसा करेंगे, तो इस राग की कोमल भक्ति खो जाएगी। यह राग प्रेम, विरह, भाईचारा और आध्यात्मिक मार्ग के भाव से गाया जाता है। इसके लिए भजनों का अर्थ जानना आवश्यक है। इसके लिए वेदों का ज्ञान होना चाहिए।’
वह एक महीने से सीख रहा था। वह भी एक महीने से इसे कंठस्थ कर रही थी। लेकिन उसका मन संतुष्ट नहीं था। लोग कहने लगे, 'तुम भैरवी की माँ को नहीं समझते।' वह बार-बार भव की कहानी समझाते हुए सीखता रहा।
एक बार उन्होंने कहा, ‘इस राग को छोड़ो! मुझे नहीं पता कि तुम लोगों के साथ क्या करना चाहते हो। भारतीय संगीत सीखने क्यों आए? तुम्हारा समय बर्बाद हुआ, मेरा भी समय बर्बाद हुआ। जाओ और अमेरिका देखो! काशिम आओ और सीखो, तुम्हें कोई सिरदर्द नहीं होगा!’
‘मैं क्या गलत कर रहा हूँ? क्या धुनें गलत हैं?’
“ऐसा नहीं है कि मास्क पहनने से तुम्हें गुस्सा आ रहा है! तुम्हारे अंदर वो भावना जरूर होगी! वो तुम्हारे अंदर कहां है? भैरवी की सारी भावनाएं सिर्फ इस एक सबक की वजह से तुम्हारे मन से कैसे गायब हो गईं? हे सुंदर बच्ची! चाहे तुम सात जन्म भी ले लो, तुम ऐसा नहीं कर पाओगी!”
‘मधु कौन है?’

‘यहाँ एक भारतीय छात्रा है। तुम कौन होते हो यह सोचने वाले?’ वह फिर चिल्लाया। मानो उसके साथ कोई और बुरी घटना घट गई हो!
उसे अपमानित महसूस हुआ। वह गुस्से से हंसते हुए बोली, 'अगर मैं कुछ गलत कर रही हूं, तो मुझे बताइए; लेकिन मेरी तुलना दूसरों से करने का कोई कारण नहीं है! मेरे रंग, मेरे देश और मेरी संस्कृति के बारे में बात मत कीजिए! मैं भी एक महीने में थक चुकी हूं। इस गुस्से को छोड़ दीजिए! इसके बिना भी सब ठीक रहेगा।'
‘क्या? भैरवी न भी हो तो भी ठीक रहेगा? तुम्हें क्या लगता है? जब तक तुम प्रेम और भाईचारे का रिश्ता नहीं समझोगे, तब तक भैरवी को समझना नामुमकिन है। तुम इतने अहंकारी हो गए हो कि तुमने एक लड़की को चुंबन तक दे दिया!’ हनत ने उसके गाल पर एक थप्पड़ मारा। उसने हाथ में पकड़ी हुई डफली भी नीचे रख दी और उसके गाल पर एक और थप्पड़ मारा।
गु जी एक पल के लिए अवाक रह गई, 'क्या तुम गु पर हाथ उठा रही हो? तुम मेरी सिखाई हुई कला को पूरी तरह भूल जाओगी! मैं तुम्हें श्राप देती हूँ, तुम्हें श्राप देती हूँ!' हनात ने उन दोनों के गालों पर थप्पड़ मारा, अचानक उठी और चली गई।
वह दो मिनट तक बेहोशी की हालत में वहीं बैठी रही। धीरे-धीरे उसे होश आया। मोहनलाल बिना कुछ कहे नीचे चला गया था। उसका मन किया कि उसके पीछे दौड़कर उसके चेहरे पर एक घूंसा मार दे, लेकिन उसे एहसास हुआ कि यह एक बड़ा तमाशा बन जाएगा और लोग इकट्ठा हो जाएंगे। उसने अंदर उमड़ते आंसुओं को रोकने की कोशिश की; लेकिन यह विचार कि उसे उचित शिक्षा मिलनी चाहिए, उसके मन में प्रबल बना रहा।
वह सोचने लगी। ज्यादा सोचने की जरूरत नहीं थी। उसने चाय ली और
मैंने फ्लैट का दरवाजा खींचा, उसे बंद किया और नीचे उतर गया। ट्रेन स्टेशन तक गई और वहाँ से...
वह लोकल ट्रेन से चर्चगेट पहुंचा। गर्मी, पसीना, आसपास के लोगों की गंध – मुंबई के प्रति सारा गुस्सा उसके दिल में उबल रहा था।
वह एशियन ट्री यूनियन के कार्यालय गए और बोले, "मैं श्री परंजपा से मिलना चाहता हूं।"
वह परंजपे से परिचित थीं। जब वह मुंबई आईं, तो उन्होंने उनके बारे में एक संक्षिप्त परिचयात्मक लेख लिखा और प्रकाशित किया था। उस समय मोहनलाल के

साथ उनके अच्छे संबंध थे। वह जानती थीं कि हाल ही में मोहनलाल ने ही इस चारी से धंधे हटवाए थे और ज़मीन साफ़ करवाई थी। उसी दिन वह घर की दूसरी मंज़िल पर बीस नंबर के पते पर पत्र लिखने गईं।
परंजपे उसे देखते ही खड़ा हो गया। उसने उससे हाथ मिलाया और पूछा, 'क्या कर रहे हो? तुम परेशान लग रहे हो। तुम्हारे गालों को क्या हुआ? क्या बात है?' उसके चेहरे पर सहानुभूति झलक रही थी।
परदेस में इतनी सहानुभूति देखकर वह भावुक हो गई। उसे रोने का मन हुआ, लेकिन उसने खुद को रोक लिया। उसने फिर सोचा, 'क्या हुआ, लॉरेंस? तुम इतने परेशान क्यों दिख रहे हो?'
‘मैं यही कहने आई थी। ये रिकॉर्डर है। मुझे शिकायत दर्ज करानी है।’ उसने अपना चेहरा पोंछा, उसकी आँखों में आँसू भर आए थे। उसने दराज से टेप रिकॉर्डर निकाला और स्विच दबाया। वह बोलने लगी, ‘उसने मुझे मारा! देखो, उसकी उंगलियाँ उसके गालों पर कैसे हैं! उसे किसने हक दिया कि वह सीखने आई छात्रा को मारे? अगर ये घटना अमेरिका में हुई होती, तो मैं पुलिस को बुला लेती; लेकिन जिस तेज़ी से इस देश पर हमले हो रहे हैं, उस पर मुझे भरोसा नहीं है। इस घटना के बारे में सबको पता चलना चाहिए।’
इसीलिए मैं यहां आया हूं।'
लेकिन उन्होंने उसे क्यों मारा?
‘मैं भैरवी के क्रोध के सूक्ष्म पहलू को नहीं समझ पाया, इसीलिए!’
"क्या तुमने इस बार मुझे मार डाला?"
'हाँ।'
"लेकिन घनिष्ठता इतनी कैसे बढ़ गई कि आपको हाथ उठाना पड़ा?"
‘सालगी? यही तो मेरा राज है, है ना!’
‘चाहे तुम गुलाम ही क्यों न हो, तुम्हें हाथ उठाने का अधिकार नहीं है। यह तभी संभव है जब इससे भी गहरा आत्मीय संबंध हो। सब जानते हैं कि तुम दोनों एक-दूसरे से प्यार करते हो। यह प्रेम कैसे जागा, कैसे पनपा?’
‘वह न्यूयॉर्क नौकरी करने आया था, बस। मुझसे मिलने के एक हफ्ते के अंदर ही…’ बोलते हुए वह सावधानी से हंस पड़ी, ‘श्रीमान परंजपे, आप हमारे निजी मामलों में दखल दे रहे हैं। अगर आप मुझे ये सब बताएंगे तो मुझे कितने पैसे देंगे?’
क्या किसी मशहूर अमेरिकी गायक को मोमबत्ती देना ठीक है?

अगर वे जगह भी बदल लें तो भी उन्हें पांच लाख डॉलर देने पड़ेंगे। आप कितना भुगतान करेंगे?'
‘हमारे देश में इस तरह के कट्टरपंथी को बेचना नामुमकिन है! इसकी जो कीमत चुकानी पड़ती है, वही हमें चुकानी पड़ती है।’
‘क्या? आप हमारे निजी जीवन की घटनाओं का फायदा उठाकर अपने अखबार की बिक्री बढ़ाते हैं। क्या आप इसके बारे में कुछ नहीं कर सकते?’
‘ओह, चा! क्या मैं तुम्हें बुलाने आया था? तुम आ ही गए। खबरों के पीछे की सच्चाई का पता लगाना और उसे रिपोर्ट करना ही पत्रकारिता का सार है। अगर तुम हमारे सवालों का सही जवाब नहीं दोगे, तो हम तुम्हारी रिपोर्ट कैसे छाप सकते हैं?’
‘आप इसे क्यों नहीं छापेंगे?’ लॉरे चुपचाप बैठी रही। परंजपे की निगाहें उस पर इस कदर टिकी थीं मानो वह किसी सांप के चंगुल में फंसने वाली हो। वह अचानक पकड़े गए सांप की तरह हो गई थी। कुछ पल हिचकिचाने के बाद, उसने अचानक दृढ़ता से कहा, ‘अगर आप इसे नहीं छापते हैं! तो ठीक है। मैं भी यही चाहती थी! मैं गुस्से में यहाँ आ गई और बड़बड़ाने लगी। माफ़ कीजिए!’
फ्लैट में लौटने के बावजूद, मोहनलाल के प्रति उसका गुस्सा पूरी तरह शांत नहीं हुआ था। उसे अब भी लग रहा था कि वृ पात्रा के कार्यालय जाना एक गलती थी। आखिर वह कौन व्यक्ति था जो मेरी बात सुने बिना ही दूसरी बातों के बारे में सोचते हुए वहाँ चला गया?
दोपहर के खाने के लिए कुछ बनाना छोड़कर वह पंखा चलाकर लेट गई। रात को उसे भूख लगने लगी। वह चुपचाप अपने भरे पेट के बारे में सोचने लगी। शायद गु जिन की कहानी में कुछ सच्चाई है। इस देश में लोग प्रेम और भक्ति को जिस तरह समझते हैं, शायद वह मुझ तक पहुंचे ही नहीं! यहाँ तो भगवान के भी प्रेमी होते हैं।
इसे ऐसा माना जाता है। यह आपके लिए असंभव है। ऐसा कहना धर्मद्रोह है।
मैं एक ऐसी परंपरा में पला-बढ़ा हूँ जो यही कहती है। यहाँ का नैतिक नियम यह है कि गुरु के थप्पड़ मारने पर भी सिर झुकाकर बैठे रहना चाहिए। यहाँ यह मान्यता है कि यदि आप गुरु के विरुद्ध हाथ उठाते हैं, तो आपका हाथ काट दिया जाएगा। गुरु का...
वे ईश्वर का स्थान ले लेते हैं और उसे वहीं बनाए रखते हैं। वे फूल को ही ईश्वर मानते हैं। केवल संगीत के क्षेत्र में।

अन्य धर्मों में भी यही स्थिति है। कई अन्य मामलों में भी यही सच है। इसीलिए वे नई चीज़ें गढ़ने के बजाय पहले से मौजूद चीज़ों को संरक्षित और सुरक्षित रखने की प्रवृत्ति रखते हैं। प्रत्येक राग की विशेषताओं को समझाते हुए वे उन्हीं संस्कृत ग्रंथों से उदाहरण देते हैं। सभी इस बात पर ज़ोर देते हैं कि उन्होंने परंपरा को पूरी तरह से नज़रअंदाज़ नहीं किया है। उनका संगीत, उनका नाटक, उनका वेदांत, उनका योग – उनका मानना है कि ये सभी एक ही दर्शन के विभिन्न पहलू हैं। महायान के अनुसार, इस दर्शन से निकले हुए केवल यही लोग नहीं हैं।
कौन जाने अगर उसे यह बात पूरी तरह समझ में न आए!
उन्हें बनारस के मंदिर याद आ गए। वहां रहते हुए उन्हें ऐसा लगा जैसे वे परदेसी हों।
यह एक मजाक जैसा लगा; लेकिन मुंबई के ये गुंडे ऐसे नहीं हैं। वे तो सच्चे कलाकार हैं।
उनका जीवन और शौक अमेरिका के कलाकारों से मिलते-जुलते हैं। हालांकि वे अक्सर भारतीय संगीत के संदर्भ में "दान", "आयम" और "योग" जैसे शब्दों का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन वे खुद संगीत को एक कला मानते हैं और उसी स्तर पर प्रस्तुत करते हैं। अमेरिका के इन कलाकारों की तरह, उन्हें भी एक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर जीवन जीने की चाह है। तो फिर मुझे भी वही क्रोध क्यों न महसूस हो जो उन्हें होता है?
वह रात भर सोचती रही। इसी वजह से उसे देर रात तक नींद नहीं आई। इसी कारण वह सुबह भी देर से उठी। कुछ देर आराम करने के बाद उसने घड़ी देखी। नौ बज रहे थे। वह उठी और दरवाजा खोला। वह दूध का थैला और दरवाजे के पास रखा पुराना कागज लेकर अंदर आई। अचानक वह डर गई और उसने पुराना कागज खोलकर उड़ गई!
अरे बाप रे! सब कुछ छप गया था। लेख का शीर्षक था, 'गायक मोहनलाल ने अमेरिकी महिला का यौन उत्पीड़न किया और फिर उसके साथ शारीरिक दुर्व्यवहार किया।' उसने झट से नज़रें फेर लीं।
नहीं नहीं! मैंने ऐसा नहीं कहा। मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था। हालांकि यह सच है कि मैं गुस्से में था, लेकिन मैंने ऐसा नहीं कहा। मुझसे गलती हो गई। मुझे यह टेप यहीं लाना चाहिए था। यह भरोसा करने की कोई ज़रूरत नहीं थी कि यह प्रिंट नहीं होगा। गंदा आदमी! गंदा भारतीय!

ऐसा लगा जैसे साजा के शरीर की सारी ताकत खत्म हो गई हो और वह गिर पड़ी।
खुचिता कुछ देर तक चुपचाप बैठी रही। फिर उसने धीरे-धीरे पूरा लेख पढ़ा।
उसके मन में एक बात आई, इस लेख का निशाना मैं नहीं, बल्कि मोहनलाल है।
इसमें मेरा योगदान नाममात्र का है। इस मौके का फायदा उठाकर परंजपे ने कई मनगढ़ंत कहानियां गढ़ी हैं।
उन्होंने तुरंत अपनी डायरी निकाली और नंबर डायल किया। ‘श्रीमान परंजपे, आपने वचन दिया था कि आप इसे प्रकाशित नहीं करेंगे! मैंने आप पर भरोसा किया, यह सोचकर कि आप एक सच्चे सज्जन हैं; लेकिन आपने मेरी जानकारी के बिना ही झूठ प्रकाशित कर दिया!’
'महोदया, अगर यही आपकी इच्छा थी तो आपको संपादक को पत्र लिखना चाहिए था। अगर यह खबर थी, तो क्या रिपोर्टर को इस पर आगे कार्रवाई नहीं करनी चाहिए थी? यही पत्रकार का कर्तव्य है। यह मत भूलिए कि वह आपसे कहीं अधिक जानता है!'
लेकिन मैंने आपको नहीं बताया।
नहीं। लेकिन क्या वह विषय आपकी संगीत प्रतिभा से संबंधित नहीं था?
‘नॉ से स!’ काय बोलावं ते न सुचून ती उद्गारली.
"अगर आप चाहें तो पत्र के माध्यम से स्पष्टीकरण दे सकते हैं। मैं उसे भी छाप दूंगा।"
"इसके साथ ही, क्या आप राज्यपाल का बयान भी छापकर हंगामा नहीं करेंगे?" "आप मौसम का समर्थन करने के अधिकार को छीन नहीं सकते।"
उसने इस बारे में कुछ नहीं सोचा, भले ही वह फिर से 'ना' कह रहा था। उसने फोन भी काट दिया।
पांच मिनट बाद उसने मोहनलाल को फोन किया, ‘गुजी, मैं भूपली हूँ। मुझे माफ कर दीजिए। यह सच है कि मैं गुस्से में परंजपे के पास गया था और उसे कुछ बातें बता दी थीं; लेकिन उसने उनमें से अधिकतर को तोड़-मरोड़ कर पेश किया है और अर्थ को बिगाड़ दिया है। आप उसके खिलाफ जो भी कार्रवाई करें, मैं आपके साथ हूँ। मैं यहाँ दो महीने और हूँ। इस दौरान आप जो चाहें कर सकते हैं।’
‘अरे वेश्या! तुमने जो कुछ भी गड़बड़ की है, उसके बाद अब मेरे साथ क्यों खड़ी हो रही हो? मेरे घर आकर देख लो! अगर तुमने मुझे कैंची से नहीं पीटा, तो मैं तुम्हारा नाम नहीं बताऊंगा!’ वह चिल्लाया। तभी फोन की घंटी बजी।

अठारह

१
सोहंगू सौ साल के हो गए। मनोहरी सोच रही थी, क्या इस अवसर पर कोई बड़ा आयोजन करना चाहिए? सौ साल जीना वाकई बड़ी बात है। इसके अलावा, एक समय था जब यह कला पूरे देश में मशहूर थी। बड़ा आयोजन करना मुश्किल नहीं है। एक केंद्रीय समिति बुलाई जा सकती है। ढाई घंटे का नृत्य कार्यक्रम भी आयोजित किया जा सकता है। अगर डाक टिकट लगा दिया जाए, तो खर्च घटाने के बाद भी कुछ पैसे बच जाएंगे।
लेकिन इसमें भी कुछ दिक्कतें हैं। बूढ़े गु जिन्या अब किसी घर में नहीं रहते। उनके सारे काम, जैसे नहाना, कपड़े पहनना, चेहरा धोना और कपड़े बदलना, खुद ही करने को कहा गया है। अगर उन्हें मेज के पास स्टूल पर बिठा दिया जाए तो वो चाय पी सकते हैं। अगर उन्हें हल्के से हिलाया जाए तो वो खाना खा सकते हैं। अगर वो ज़ोर से बोलें तो उनकी आवाज़ सुनाई देगी; लेकिन इस बात की कोई गारंटी नहीं कि वो सोचे-समझे सवालों के सही जवाब दे पाएंगे। यहाँ तक कि वो आधे मन से ही गाने गाते हैं। वो स्टूल पर बैठे-बैठे इधर-उधर घूमते रहते हैं। वो हर समय खर्राटे लेते रहते हैं। ऐसे व्यक्ति को मंच पर ले जाना मुश्किल है। वो मंच पर दो मिनट भी नाच नहीं सकते, पाँच मिनट भी बोल नहीं सकते। यहाँ तक कि वो कुर्सी पर बैठे-बैठे भी अभिनय या अपनी प्रतिभा नहीं दिखा सकते। ऐसे में क्या फायदा?
एक और समस्या थी। उनके साथ मंच पर अभिनय करने का मतलब था दर्शकों को उनकी उम्र का एहसास दिलाना। मुझे उन्हें बार-बार यह क्यों बताना चाहिए कि मैं उनसे चालीस साल छोटी हूँ? उन्हें कुछ समझ नहीं आता। इतनी उम्र में उन्हें बेवजह की रस्मों में क्यों पड़ना चाहिए, उसने सोचा और बैठ गई।
एक सौ एक वर्ष की आयु में, उनकी शारीरिक शक्तियाँ पूरी तरह से नष्ट हो चुकी थीं। हालाँकि वे काम कर रहे थे, उनका मन शांत नहीं था। वे अक्सर सोचते थे, इस संसार का क्या अर्थ है? यदि वे शीघ्र मर जाएँ, तो सभी लोग बच जाएँगे! उन्होंने किसी ऐसे संगठन के बारे में जानकारी प्राप्त करने का भी प्रयास किया जो उन्हें शरण दे सके; लेकिन उन्हें कोई नहीं मिला।
एक दिन वह लड़खड़ाते हुए कुछ बोलने लगा। मैं जोर से हंस पड़ी, 'वह कुछ कह रहा है। वह सुबह से यही कह रहा है; लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा।'

मनोहरी उनके पास गई और ध्यान से सुनने लगी। ध्यान से सुनने के बाद, वह समझ गई कि वह कह रहे थे, 'मुझे उनका काम किसी योग्य व्यक्ति को सौंप देना चाहिए था।' लेकिन उन्होंने इसका कोई ज़िक्र नहीं किया। वह बार-बार उनसे पूछती रही, 'किसे?' लेकिन उन्होंने कोई उचित उत्तर नहीं दिया।
नर्स कहती, ‘आज वही आवाज़ छह बार सुनाई दी।’ ‘आज आठ बार-’ एक बार तो मनोहरी के सामने ही वही आवाज़ सिर के पीछे से आई। और आवाज़ साफ़ सुनाई दी। ज़रूर कोई दूर से उससे बात कर रहा होगा! अजीब सा लगा। रात को जब वह ऊपर वाले कमरे में सो रही थी, तो उस आवाज़ को याद करके उसका मन शांत हो गया। यह विचार
कौन जाने, शायद यह उनके दिमाग में छिपा हो! लेकिन इसके बारे में सोचने मात्र से ही वे घबरा जाते हैं।
अच्छा लगा। काश, अगर उन्होंने मुझे पैंतीस साल पहले सचमुच दूसरा मौका दिया होता? इससे पहले मैंने बच्चे पैदा करने के लिए सर्जरी करवाई थी – यह सोचकर मेरा दिल बैठ गया।
वह फूट-फूटकर रोने लगी। वह कुछ देर तक सिसकती और रोती रही। कुछ देर बाद वह सो गई।
सुबह नर्स ऊपर आई और बोली, ‘पत्नी, जल्दी उठो। गुजी चली गई हैं।’ वह दौड़कर नीचे आई। वह गुजी की गंध से छुटकारा पाना चाहती थी। वह फूट-फूटकर रोने लगी। उन्होंने शास्त्रों के अनुसार उनका अंतिम संस्कार और दफ़नाया। उन्होंने कन्या के घर के पास वाली दीवार पर उनकी एक बड़ी तस्वीर लगाई। उन्होंने कन्या को अच्छी-खासी तनख्वाह और एक छोटा सा उपहार दिया और उन्हें विदाई दी।

२
मुंबई में उनके समूह के साथ उनका एक कार्यक्रम था। परंजपे के कार्यालय से एक फोन आया, 'जब आप यहां आएंगे तो मुझे आपके दो घंटे चाहिए। हमारी डॉक्यूमेंट्री के लिए मुझे आपसे एक लंबा साक्षात्कार लेना है। कार्यक्रम के बाद, मैं अगले दिन सुबह नौ से बारह बजे के बीच का समय तय कर लूंगा।'
‘ठीक है। मैं इस होटल में उतर जाऊंगा, हम वहीं मिलेंगे’— उसने कहा। उन्हें याद आया कि उन्होंने यह नाम कहीं सुना था; लेकिन उन्हें संदर्भ याद नहीं आ रहा था। उन्होंने चावला को फोन किया। चावला दिल्ली में पत्रकारों के बीच उनकी करीबी दोस्त थीं। उन्होंने चावला को बताया, 'वह मुंबई के कला जगत में एक प्रभावशाली पत्रकार हैं। वह कई वर्षों से एशियन ट्रिब्यून के कला और साहित्य अनुभाग का कार्यभार संभाल रहे हैं। वह यहां के संस्कृति मंत्री देशमुख के विशेष व्यक्ति हैं। जब भी वह दिल्ली आते हैं, तो उन्हीं के घर पर ठहरते हैं।'
उन्होंने आगे कहा, ‘हाल ही में वह मोहनलाल से बहुत नाराज हैं। परंजपे ने बायको नाम से एक कैसेट कंपनी शुरू की है। मोहनलाल ने इसके लिए कोई गाना नहीं दिया है।’
मुझे इस बात पर गुस्सा आ रहा है। मोहनलाल पर हमला करने वाला एक हालिया लेख भेजकर।
मैं इसके बाद आने वाले पाठकों के पत्र भी भेजूंगा।
सब कुछ पढ़ने के बाद मनोहरी को परंजपे के रवैये की झलक मिली। उसमें उन्होंने एक बात कही थी, 'पहले तो उन्होंने एक अमेरिकी लड़की की अच्छी सिफारिश की और उसे छात्रवृत्ति दिलाने का वादा किया, फिर उसका मनमाना इस्तेमाल किया और अब उसकी जमकर आलोचना करके उसे अपमानित किया है। मुंबई स्थित अमेरिकी वाणिज्य दूतावास को इस मामले की जांच करनी चाहिए और उनके खिलाफ कार्रवाई करनी चाहिए। ऐसे व्यक्ति को फिर कभी अमेरिका में कदम रखने की इजाजत नहीं मिलनी चाहिए -' इत्यादि। परंजपे ने कहा था कि पाठकों के पत्रों में ऐसे और भी प्रतिकूल बिंदु सामने आएंगे।
एक पल के लिए उसने सोचा, "मैंने उसे साक्षात्कार के लिए समय देकर गलती की होगी।" इस बार उसने

[illegible]
[illegible]
[illegible]

प्रतिभा और नवोदित प्रतिभा के आमने-सामने आने के बाद किस प्रकार का कलात्मक संबंध विकसित हुआ?’
उसके चेहरे पर मुस्कान थी।
‘माँ के साथ? छे! ये सब पत्रकारों द्वारा गढ़ी गई किंवदंतियाँ हैं। अगर गायन अच्छा हो तो नृत्य में एक विशेष आकर्षण आ जाता है। नृत्य के कारण गीत में भी एक विशेष लय आ जाती है।’
लेकिन तुम दोनों के बीच झगड़ा हुआ था—’
‘जी हाँ! क्या बात है! कोई झगड़ा या विवाद नहीं है। वह एक सच्चा गायक है। वह कब तक नृत्य के लिए गाएगा? क्या आपको नहीं पता कि नृत्य के लिए अच्छा गायक मिलना कितना मुश्किल है?’
'क्या आपने हाल ही में मोहनलाल का यह गाना सुना है?'
‘अगर एक ही गांव में एक ही दिन में दो कार्यक्रम होते हैं, तो मैं उन्हें सुनता हूँ। हालाँकि मेरी इच्छा होती है, लेकिन अक्सर मुझे मौका नहीं मिलता। वे प्रतिभाशाली गायक हैं। मैं उन्हें सुनना चाहता हूँ, लेकिन...’ मन ही मन परंजपे उस पर हंस रहा था। कमीने! जब वह विषय बदलने और उसे अपनी मनचाही दिशा में मोड़ने का उपाय ढूंढने की कोशिश कर रहा था, तभी उसने सोचा, 'परंजपे जी, मैं आपसे अकेले में बात करना चाहता हूं। क्या आप अपना रिकॉर्डर बंद कर देंगे?'
"ज़रूर!" उसने टेप बंद करते हुए कहा।
उसने आगे कहा, “आप मेरी उम्र को लेकर चिंतित हैं। मैं प्रतिदिन योगाभ्यास करती हूँ। आपके लिए मेरी वास्तविक उम्र का अनुमान लगाना असंभव है! आप भी दिल्ली आते हैं, है ना? मुझे पता है आप देशमुख साहब से मिलने जाते हैं। एक बार हमारे थिएटर में आइए और वहाँ की व्यवस्थाएँ देखिए। मैं दिल्ली से थोड़ी दूर एक थिएटर शुरू करना चाहती हूँ। इसके लिए मुझे विश्व नृत्य संगठन और अन्य स्रोतों से धन मिलेगा; लेकिन मुझे इसके लिए जगह चाहिए! हरियाणा में कुतुब मीनार से बारह मील दूर एक अच्छी जगह है। अगर वहाँ पच्चीस एकड़ ज़मीन मिल जाए, तो हम एक ऐसा थिएटर शुरू कर सकते हैं जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर के छात्रों को आकर्षित करेगा। अगर आप कृपया अपना और मेरा परिचय देशमुख साहब से करा दें, तो यह काम हो सकता है। मुझे यह भी पता है कि आपने मुंबई के कला जगत में बहुत रचनात्मक कार्य किया है। इसलिए मुझे आपकी मदद की उम्मीद है!” उसने उसका हाथ थाम लिया।

उनकी आँखों में खुशी झलक रही थी। साक्षात्कार में उनकी स्पष्ट हार हुई थी, और उस क्षण उन्हें आशा की एक नई किरण दिखाई दी। उन्होंने कहा, 'वाह! यह तो बहुत बढ़िया काम है! इससे देश का मनोबल बढ़ेगा।'
‘इसके लिए आपको दिल्ली आकर अपने दोस्त से मिलना होगा। हवाई जहाज़ और टैक्सी का खर्च मैं उठाऊंगा!’ उसने अपनी जेब से नोटों का एक बंडल निकालते हुए कहा। आह भरते हुए उसने कुछ और नोट निकाले।
इधर आओ, इधर आओ।

उन्नीस

१
मेरे पति से अलग हुए चार साल हो गए थे। उसके बाद कोई संपर्क नहीं रहा। मेरे ससुराल वाले एक साल पहले आए और चले गए। उसके बाद भी उन्होंने मुझसे किसी भी तरह से संपर्क करने की कोशिश नहीं की; लेकिन मैंने भी उन्हें पत्र क्यों नहीं लिखा? एक दिन, यह सवाल मेरे मन में आया।
मैंने पीछे मुड़कर सोचा, इस बार मैं क्या लिखूँगी? मैं मोहनलाल के पास गई और ये सब हो गया? जब उन्होंने मुझे फोन किया, तो मैं अपनी जान बचाने के इरादे से समुद्र तट पर चली गई, तो क्या हुआ? और अब, इसके अलावा, मैंने बहुत कुछ हासिल कर लिया है।
मैं कैसे लिखूँ? लेकिन मैंने तो वह अधिकार खो दिया है, है ना? उन्होंने वह अधिकार पुनः प्राप्त कर लिया है।
आप देने पर ही वह वापस मिलेगा।
एक हफ्ते बाद, मैंने सोचा, वे मुझे वह अधिकार नहीं देंगे। मुझे फिर से शुरुआत करनी होगी; लेकिन उन्होंने कहा, 'मधु, भले ही तुमने गा के प्रति प्रेम के कारण गलती की हो, तुमने मुझे सब कुछ ईमानदारी से बताया है। तुमने कम से कम एक बार भी यह क्यों नहीं लिखा कि तुमने अपनी गलती स्वीकार कर ली है?' उन्हें मेरा पता और फोन नंबर जाने हुए एक साल हो गया है।
अगर वे पहल करके मैच का आयोजन नहीं करते हैं तो मैं क्या करूंगा?
आजकल मुझे रात को ठीक से नींद नहीं आती। मैं फोन बजने के एहसास से जाग जाता हूँ; लेकिन जब मैं जागता हूँ, तो ऐसा लगता है जैसे पूरा घर, आसपास का बगीचा और पास की पहाड़ियाँ सन्नाटे में डूबी हुई हैं। यहाँ आधी रात है, वहाँ दोपहर है। फोन करने या न करने पर कोई पाबंदी नहीं है। अगर फोन बजता है और मैं उसे उठाता हूँ, तो फिर से सन्नाटा छा जाता है। फिर मैं जाग जाता हूँ और सोचता हूँ कि क्या मैंने कोई आवाज़ सुनी भी थी या नहीं।
एक हफ़्ता ऐसे ही बीत गया। मैं सोचने लगी, क्यों न मैं एक पत्र लिखूँ? धीरे- धीरे यह विचार और प्रबल होता गया। मैंने पत्र लिखा। मैं दिन भर लिखती रही। सैन फ्रांसिस्को से हवाई अड्डे के लिए निकलने से लेकर घर पर फ़ोन करने तक, मैंने थोड़े समय में घटी हर घटना को लिख डाला। इस लेखन के दौरान, मन की माँ

बनने का संघर्ष भी सहजता से चलता रहा। फिर मेरे दिल की एक इच्छा जागी। 'अगर मैं चाहूँ तो तीन महीने के लिए लॉस एंजिल्स आऊँगी। अगर मेरे लिए कोई कार्यक्रम हो तो मैं भारत भी आऊँगी। वह भी तब जब शिक्षक मुझे स्वीकार कर लें।'
अन्यथा, मेरी मानसिक स्थिति अब ऐसी हो गई है कि मैं अपने और अपनी पत्नी की खुशी के लिए जीवन भर गाता रहूंगा। मेरे लिए इतना ही काफी है!’ और इसी तरह उन्होंने पत्र का समापन किया।
पत्र को डाक में डालने के बाद, इंतज़ार फिर शुरू हो गया। पत्र पहुँचने में एक हफ़्ता लग जाएगा। अगर वह गाँव में नहीं है, तो पत्र पहुँचने में तीन-चार दिन और लग जाएँगे। जिस दिन वह पत्र पढ़ेगा, उसी दिन जवाब कैसे देगा? क्या वह पत्र लिखेगा या फ़ोन करेगा? अगर वह नाराज़ है, तो शायद फ़ोन करेगा। अमेरिका में रहने वाले लोग पत्र लिखने की आदत खो चुके हैं। अब तो कंप्यूटर या फ़ोन ही दो तरीके बचे हैं।
एक हफ़्ता बीत गया और वह फ़ोन कॉल का इंतज़ार करने लगी। मेरा पत्र उसे घर लौटने पर मिलता था। अगर वह एक घंटे के अंदर भी फ़ोन करती, तो यहाँ सुबह के सात बज चुके होते। दूर से फ़ोन की घंटी आने में समय लगता था या शायद उसे घंटी सुनाई ही न देती, इसलिए वह लगातार फ़ोन के पास ही बैठी रहती थी। रात को भी उसे गहरी नींद नहीं आती थी। आठ दिन बीत गए, नौ-दस-ग्यारह-बारह-सत्रह-अठारह-बीस दिन इसी तरह बीतते रहे, लेकिन पत्र नहीं आया।
बाद में मुझे यह एहसास होने लगा कि इसके बाद वो कॉल नहीं आएगी। अगर आई भी तो सिर्फ़ चिट्ठी के साथ। कॉल आने का एहसास तुरंत नहीं हुआ, बस एक स्पर्श सा महसूस हुआ। इसका दूसरा अर्थ यह है कि हंजे ने मुझे पूरी तरह से ठुकरा दिया है। इस दुनिया की सारी खुशियाँ चली गई हैं। गाने की खुशी, उत्साहित होने की खुशी, गाने की सारी खुशी एक अजीब मोड़ के साथ गायब हो गई है।
एक महीना इसी तरह बीत गया। चिट्ठी का जवाब मिलने की उम्मीद धीरे-धीरे कम होती जा रही थी। फिर भी, फोन बीच-बीच में बजता रहता था। ऐसा लगता था मानो मैं गाते समय ही फोन बज रहा हो।
अगर आप गाना और डफली सुनना बंद कर दें, तो फोन की घंटी भी बजना बंद हो जाएगी। मन में यह भ्रम बैठा होता है कि चाहे आप कितनी भी कोशिश कर लें, घंटी बजना बंद नहीं होगी।

तसल्ली दी कि तुम गाने गई हो। घर पहुँचते ही मैंने तुम्हारी रिकॉर्ड की हुई आवाज़ सुनी। मुझे लगा कि तुमने मुझे कुछ ज़रूरी बात बताने के लिए फोन किया है, और मैंने तुरंत वह बड़ा कागज़ खोला जो तुमने याद दिलाने के लिए रखा था और उसे पढ़ना शुरू कर दिया।
पूरी बात पढ़ने के बाद मैंने क्या सोचा? क्या आप इसका वर्णन कर सकते हैं? कुछ भी मायने नहीं रखता है।
आठ साल बाद, वैसे ही विचार मन में आने लगे – मैं अपने जीवन में कभी भी, कभी भी ऐसा नहीं करूँगा।
मैंने किसी को चोट नहीं पहुँचाई, मैंने किसी से झूठ नहीं बोला, तो फिर ऐसा क्यों हुआ? क्या मुझे मिलने वाली खुशी में कुछ गलत नहीं है? मैं बचपन से ही आदर्शों को मन में संजोकर पली-बढ़ी और उनका पालन किया। वायु सेना में कार्यरत मेरे माता-पिता अक्सर बदलते रहे। इनमें से प्रत्येक
बदली जैसे गांव के लिए स्कूल होना जरूरी नहीं था। कुछ गांव ऐसे ही होते थे। वे अपने परिवार का पालन-पोषण भी नहीं करना चाहते। ऐसे समय में, अन्य माता- पिता उनके बच्चों की मदद कर सकते हैं।
वे इसे पहनकर स्कूल जाते हैं। मेरे माता-पिता ने मुझे रामकृष्ण के स्कूल में भेजा था।
मैंने इसे वहाँ रखा था। वहाँ के सिद्धांत और रीति-रिवाज मुझमें समा गए थे।
किसी को भी ऋषभ, मसारी जैसी भावनाओं को कभी मौका नहीं देना चाहिए। वहाँ का वातावरण सत्यनिष्ठा, आस्था और ईमानदारी के मूल्यों को प्राथमिकता देता था। आदर्शों को देखकर मेरा मन भी विकसित हो रहा था।
मैं बचपन से ही शास्त्रीय संगीत सुनता आया हूँ।
वहाँ रहते हुए मैंने दलित लामन देव महाराज का गायन सुना। हालाँकि मुझे धुन या राग का नाम समझ नहीं आया, फिर भी इस गायन ने मुझे मेरे जीवन के आदर्श संसार में पहुँचा दिया। मुझे ऐसा लगा कि करुणा, प्रेम, दान, गंभीरता, त्याग, स्नेह जैसे नैतिक भाव, जो तब तक मेरी समझ से परे थे, अब मेरी समझ में आ गए हैं। अंत में, महाराज भैरवी सुकर ने कहा, 'संगीत ईश्वर से सीधा संवाद करने का सरल मार्ग है!' ईश्वर ही है
क्या? आदर्श। ईश्वर का मार्ग आदर्श का मार्ग है। गीत सुनते समय मुझे इसका अनुभव हुआ! इससे यह भावना और प्रबल हो गई कि आदर्श को व्यक्त करने के लिए

भगवान ने इस लड़की को सिर्फ मेरे लिए ही दिया है। मैं उसे देखने गई, लेकिन मुझे उसकी आवाज़ में ज़्यादा दिलचस्पी नहीं थी। मैं तो बस उसका गाना सुनने गई थी। धुन अच्छी थी, उसे धुन की अच्छी समझ थी, और तैयारी भी अच्छी थी! परिवार अच्छा था, यही उस जाति का आदर्श वाक्य था। मुझे वहीं अपनी पसंद बताने की पूरी छूट थी। बड़ों ने उसे देखे बिना ही, उस पर भरोसा करते हुए, अपनी सहमति दे दी। लेकिन
इस पर मेरी मां ने नाराजगी से हंसते हुए कहा, "तुम अपने माता-पिता का सम्मान कैसे कर सकते हो?"
मुझे नहीं पता कि अगर मैं इसे बचाना चाहता हूं तो मुझे क्या करना चाहिए! खैर, उस दिन मेरी चाची मुझे थोड़ा और आगे ले गईं और बोलीं, "बेटा, एक
मैं तुम्हें बार-बार यही कहता हूँ। तुम्हारी माँ को तुम्हारी बहू ज़्यादा पसंद नहीं है। उन्हें लगता है कि तुम्हें किसी अच्छे खानदान की सुंदर लड़की मिलनी चाहिए थी। ऐसी एक-दो लड़कियाँ मत रखो। ये भी अच्छी है। मैंने तुम्हें ये कहानी सुनाई थी। बच्चे तुम्हारे लिए नए हैं और कहते हैं, 'मेरी पत्नी सुंदर है'। अपनी माँ के सामने ऐसी गलती मत करना। नहीं तो तुम तुरंत अमेरिका चले जाओगे। समय आने पर तुम्हारी माँ भी सब कुछ खो देगी।
आज मुझे यह घटना गति के संदर्भ में याद आती है। वह महिला शहद जैसी कोमल है। लेकिन मुझे इस बात की तसल्ली थी कि हॉल में कोई नहीं था। यहाँ का हर पल। मेरी पत्नी चाहती है कि मैं कंप्यूटर इंजीनियर बनूँ। यहाँ तक कि दूसरे विषयों में पढ़ाई करने वाली लड़कियाँ भी शादी के बाद कंप्यूटर सीख सकती हैं, कोई कोर्स कर सकती हैं और पैसे कमाना शुरू कर सकती हैं। ये पुरुष भी अपनी पत्नियों की कमाई पर गर्व करते हैं। मुझे अपनी पत्नी की कमाई पर ध्यान देने में हीन भावना महसूस होती है। इसके विपरीत, मुझे अपनी पत्नी के गायन पर गर्व था। अब मेरी यह भावना पूरी तरह चकनाचूर हो गई है।
अब इस बारे में सोचें तो, चाहे आप कितनी भी खोजबीन कर लें, आपको एक आदर्श पत्नी नहीं मिलेगी।
पिछले कुछ दिनों से मेरे घर में कुछ गड़बड़ चल रही है। मुझे लगा कि मुझे याद करना चाहिए कि एक आदर्श पत्नी में क्या गुण होने चाहिए। हमारे वैवाहिक जीवन में एक भी ऐसी घटना नहीं हुई जिससे कोई परेशानी हुई हो। घर में सास का गुस्सा नहीं है, बहू-दामाद के बीच कोई झगड़ा नहीं है। पति मितव्ययी नहीं है

और अपनी कमाई माता-पिता को भेजता है। वह सास बन गया है, एक ऐसी सास जो झगड़े करवाती है।
एक पत्नी जो पैसे कमाती है, एक पति जो बात नहीं सुनता – ऐसे रिश्ते का क्या फायदा?
मेरे माता-पिता मुझसे एक डॉलर की भी उम्मीद नहीं करते। मेरे पति इतना कमाते हैं। लेकिन शहर में रहने वाले सिर्फ एक या दो भारतीय ही इतना कमाते हैं।
बारिश हो रही है। इतना मजबूत घर है, मैं इस घर या बाजार की छत की देखभाल कैसे करूँ?
मारिया जैसी नौकरानी जो दिन में चार घंटे सामान लाने, कपड़े धोने आदि के लिए आती है। किस भारतीय के पास इतना सब कुछ है? यहाँ तक कि कोई लाठी से काम भी नहीं करता। मेरे पास एक पति है जो तुम्हें बहुत सारे गाने सिखाता है। इस क्षेत्र में ऐसी क्या बात है जो इसे इस तरह व्यवहार करने पर मजबूर करती है? बस इतना ही।
सिरदर्द होने के बावजूद, मैं सोचता रहा, "अगर किसी के पास मेरी पत्नी जितनी योग्य पत्नी नहीं है, तो यह किसकी मूर्खता है?"
पति से विवाह के अलावा, अन्य किसी भी स्थिति में यह अमान्य है।
मैं अब भी यह नहीं कह सकती कि मैं वैसी ही हूँ; लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मैं वैसी ही हूँ। मुझमें भी बदलाव आया है। मैं अब भी इसे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती। संगीत के प्रति मेरा प्रेम स्वाभाविक रूप से आया है। मैं इसे जानबूझकर नहीं कर पाई हूँ।
इस विषय पर कोई विशेष अध्ययन नहीं किया गया है। मेरे मन में ये तीव्र भावनाएँ और कल्पनाएँ हैं।
पालन-पोषण करने वाली वही थी, जीवन में माँ की यही भूमिका थी। वह नहीं थी उसके बाद, और वहां छूटे हुए कागज को पढ़ने के बाद, मैंने उस गाने को सुना तक नहीं।
अगले दिन, मैं अपने भाइयों के कौशल से आसानी से अभ्यस्त हो गया। कन्नड़ कैसेट।
मैंने उसे चलाया; लेकिन मुझे उसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी। मुझे लगा जैसे कुछ गड़बड़ है। मैंने कैसेट निकाल कर दोबारा चलाया। वह भी उबाऊ लगा।

इन कैसेटों को सुनते हुए मेरे मन में कितने अद्भुत भाव उमड़ आए! मैंने चार और कैसेट भी बनाईं।
मैंने छह कलाकारों के गायन और वादन को सुनने का प्रयास किया। वहाँ भी मुझे वही अनुभव हुआ। इस संदर्भ में अविश्वास की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी, यह मैं और मेरी पत्नी थे जो उनके चरणों को स्पर्श कर आदरपूर्वक प्रणाम कर रहे थे, यह उनका हृदय था।
इन दोनों ने पूरे भारतीय संगीत को बचा लिया।
नहीं, मैंने अपने मन से कहा; लेकिन फिर भी बात नहीं बनी। मैं अब भी उस संगीत को सुनने की कोशिश करती हूँ जो कभी मुझे इतना परिचित लगता था। मैं उस राग और उसकी विशेषताओं से परिचित हूँ; लेकिन अब मुझे उसमें कोई रुचि नहीं है। मैंने तय किया कि संगीत ही मेरे हृदय के दर्द को बाहर निकालने का एकमात्र सहारा होना चाहिए, इसलिए मैंने एक शोकग्रस्त दरबारी का रूप धारण किया। नहीं। मुझे लगा कि इससे भी कोई फायदा नहीं हुआ। मुझे किसी भी राग में, यहाँ तक कि नाटक में भी, कोई गंभीरता महसूस नहीं हुई। यहाँ तक कि अलगाव में भी वैराग्य का भाव नहीं रहा। अगर संगीत में भावनाएँ समझ से परे हो जाएँ, अगर संगीत हृदय को न छुए, तो मेरे जीवन में क्या बचेगा? यह सोचकर मेरा हृदय काँप उठता है।
ये विचार पिछले पंद्रह दिनों से मेरे मन में आ रहे हैं। दुनिया में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसे गाने में रुचि न हो।
बहुत से लोग हैं। तो उनका जीवन कैसा है? संगीत भावनाओं को जगाता है, है ना? क्या यह संभव है कि एक ही धुन हर किसी के मन में एक जैसी भावना पैदा करे? अंततः, यह हर व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह क्या चाहता है। मुझे लगता है कि यह एक मनोवैज्ञानिक बात है। मैंने इसे पहले कभी इस तरह महसूस नहीं किया था।
कलाकार स्वभाव से ही भावुक होते हैं और भावुकता के मामले में बेहद संवेदनशील होते हैं।
वे सहज प्रवृत्ति को जगाने में माहिर नहीं हैं। इसी वजह से दो अभिनेताओं के बीच सहज प्रवृत्ति का जागृत होना मुश्किल हो जाता है। हॉलीवुड में अभिनेता-अभिनेत्री के बीच यही स्थिति होती है।
इसे देखकर आसानी से समझा जा सकता है; लेकिन मुझे इतनी सरल बात समझने में दिक्कत होती है।

"आपको इस तरह के अनुभव से गुजरना ही होगा, है ना?"
वृी मना याापाराला झुगा न वावरत असतात. गे या दोन
पहले से मुझे अपने शरीर में भूख का अहसास होता रहा है। कभी-कभी यह बहुत तीव्र हो जाती है। जब मधु माता मुंबई गई थीं, तब वे सपनों में इस भूख से व्याकुल होती थीं; लेकिन अब जो भूख मुझे महसूस हो रही है, उसका किसी चीज़ से कोई संबंध नहीं है। बस भूख है। इस अवस्था में भी मुझे न तो उनकी याद आती है और न ही उनके शरीर की। कोई और विकल्प भी नहीं सूझता। मेरी कभी शादी नहीं हुई है।
मुझे शादी का कोई अनुभव नहीं है। मुझे शादी का कोई अनुभव नहीं है। अब
भले ही इस प्रेम का बंधन टूट जाए, मेरे मन में गति का ख्याल नहीं आता। मैं यह भी जानता हूँ कि मेरे जैसे लोग, जो काम के लिए लगातार गाँव-गाँव घूमते रहते हैं, अक्सर घर के बाहर इस सुख का अनुभव करते हैं। एक ही दफ्तर के पुरुष और महिलाएँ, काम के बोझ तले दबे हुए, गाँव जाते हैं, एक ही होटल में ठहरते हैं, और खाने के बाद कहते हैं, 'मेरे कमरे में आओ, मुझसे बातें करो।' इस इशारे का मतलब सिर्फ़ वे ही जानते हैं। मैंने कभी ऐसा व्यवहार नहीं किया। यहाँ तक कि सैकड़ों बार ऐसा मौका मिलने पर भी, मैंने नैतिकता के डर से ऐसा किया। यह नहीं कहा जा सकता कि मैंने ऐसा सिर्फ़ इसलिए किया क्योंकि मेरी पत्नी घर पर थी। अब, मुझे तालाब पर गए एक साल हो गया है, है ना? लेकिन अब मेरा डर धीरे-धीरे खत्म हो रहा है।
कल रात के कप्तान को घर बुलाया गया था। एक पेशेवर परिचित।
रास्ता अब ढल रहा है। उसने मुझे दो-तीन बार सप्ताहांत में कहीं जाने का सुझाव दिया था। उसने कहा, "इस शुक्रवार शाम मेरे घर आ जाओ। तुम रविवार शाम को घर वापस आ सकती हो!" यह कहते हुए मेरी आवाज़ कांप रही थी।
"सच में? आप क्या कर रहे हैं? मुझे नहीं लगता कि आपकी पत्नी शहर में हैं?" "हां। वह भारत गई है।"
मैं आऊंगा। तुम इस घर में कैसे आना चाहते हो? मुझे बताओ।

मैंने कहा। मुझे लगा कि बाहर जाने से बेहतर घर पर ही रहना होगा। मैं सोच रही थी कि वो आएगी या नहीं! वो किस बारे में बात कर रही थी? मुझे उसे दोबारा कॉल करने का मन हुआ, लेकिन मैं हिचकिचा गई; तभी कॉल आ गया। नक्शा सामने रखकर, मैंने घर लौटने का रास्ता ध्यान से तय किया।

वह आई। मैंने उसका कोट उतारकर रख दिया। उसने हाथ में थैला लिया और ऊपर चली गई।
वह चली गई। वह भी उसके पीछे-पीछे गई। निचले द्वार पर पहुँचकर ये नून ने पूछा, 'क्या यह कमरा ठीक है?'
मैंने अपनी माँ की ओर देखा। उनके चेहरे पर नाराज़गी के भाव थे और उन्होंने कहा, 'ये क्या है, और मैं!'
"क्या आपने मुझे इस कमरे में मेहमान के तौर पर सोने के लिए आमंत्रित किया है?"
मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ। 'माफ़ कीजिए!' मैंने कहा। वह हंस पड़ी, 'यह आपकी पत्नी हैं।'
अ जबात पटली नाही. या आ या तू मला मठ मा न चुंबनायला हवं होतंस.’
इसके बजाय, मेरा बैग उठाओ और होटल के नौकर की तरह वहीं खड़े रहो! आपका स्वागत है।
अरे बाप रे! अरे बाप रे, तुम तो बिल्कुल अनुभवहीन हो!
"यह बिलकुल सच है। आपके सारे आरोप सही हैं!" मैंने मछली को पास खींचते हुए कहा।
उन्होंने शरीर को बलवान बनाया और बुद्ध को चूमा। एक वर्ष के उपवास के बाद, बुद्ध का शरीर
आज शाम ने भी मुझे खुश कर दिया। फिर मैंने सोचा, 'तो अब बताओ, हम दोनों कहाँ सोएंगे?'
ʻ इथंच!’
"आपका मुख्य शयनकक्ष कहाँ है? क्या आप मुझे नहीं दिखाएँगे?"
"इसके अलावा। मैं इसका इस्तेमाल नहीं करता।"
"मैं देखना चाहती हूँ। चलो—" उसने कहा, उसका जाने का मन नहीं था। वहाँ पहुँचते ही उसने चारों ओर देखा।
उसने चारों ओर देखा। उसने गहरी सांस ली और हंसते हुए कहा, "वाह! कितनी खूबसूरती से सजाया गया है! यह क्या है?"
वाह, मेरे पास इतना सुंदर बिस्तर है, तो हमें मेहमान कमरे में क्यों सोना चाहिए? चलो भी!
चलो पहले नहा लेते हैं—' उसने बगल वाले बाथरूम का दरवाजा खोला और अंदर देखा, 'उपयोगी! दिलचस्प!' उसने कहा।

मुझे पहले ही कुछ समझ आ गया था, और मेरे पिता का डर मुझे जकड़ चुका था। जब से मेरी पत्नी भारत गई थी, मैंने वहाँ सोना छोड़ दिया था। मैं गेट के सामने वाले कमरे में सो रहा था। अब मैं सोच रहा था कि कैसे बचूँ। हम इसी पलंग पर सोए थे, और मुझे इसी पलंग पर सोना पड़ेगा! यह सोचकर ही मुझे डर लग रहा था। मैंने कहा, "नहीं, कैथी। वह बिस्तर हम दोनों के लिए काफी है।"
"क्यों? ये तो पति-पत्नी का बिस्तर है, तो तुम्हें डर लग रहा है?" मैंने मन ही मन सोचा।
क्या आपको डर है कि आपकी पत्नी को इस बारे में पता चल जाएगा और वह पूछेगी, 'आपने चादर क्यों मोड़ दी?'

मैं एक महिला हूँ! अब हमें क्या करना होगा? समय गुजारना होगा।
ताला ने सिर हिलाते हुए कहा, "कैथी, चलो धीरे-धीरे सो जाते हैं। मैं तुम्हें थोड़ा सा गले लगा लूंगी।"
मैं इसे सुनना चाहती हूँ।’ मैंने संगीता का हाथ पकड़ा और उसे कमरे में ले गई। ‘तुमने भारतीय संगीत तो सुना ही होगा, है ना?’
मैं रवि शंकर का नाम जानता हूँ। बस इतना ही। अरे, रसन का बंदा है ना!
"तो मैं तुम्हें एक सुंदर गीत सुनाऊँगा!" मैंने दरबारी की ओर मुड़ते हुए कहा।
ताला ने सिर हिलाते हुए कहा, "इसे चुपचाप सुनो। फिर मुझे बताओ कि तुम क्या सोचते हो।"
उसने दस मिनट तक ध्यान से सुना। उसके बाद, उसने इशारे से उन्हें इसे बंद करने के लिए कहा।
"क्या आप इसे शास्त्रीय संगीत कहते हैं?" उसने पूछा। "यह तो उतार-चढ़ाव से भरी एक घाटी है।"
ऐसा लगता है जैसे मुझे किसी मॉडल की आवाज़ सुनाई दे रही है! इसमें कोई संरचना नहीं है, कोई संगत नहीं है, कोई फोकस नहीं है—'यह बस मेरे दिमाग में है।'
उन्होंने बातचीत की और दिखाया। उसके बाद, उन्होंने मालिकों को कुछ समय के लिए अपने पास रखा और जमीन भी अपने पास रखी।

मुझे इस राग में कहीं भी आकर्षण महसूस नहीं हुआ। इसके बाद, मैंने तलाई जुगलबंद के तबले के साथ सितार और सरोद की वही धुनें सुनीं। यह देखकर मेरी माँ झट से खड़ी हो गईं और बोलीं, 'अरे वाह! इसमें तो कुछ खास बात है!' और वह कमर मटकाने लगीं। तलाई ने पूछा, 'इसमें आपको कौन सी भावना महसूस हो रही है?' ʻ वेग! चलन! गूढ वातावरण!’ ती उ रली.
उसे संगीत से भी बहुत प्यार था। वह बस आपकी बातें सुनने के लिए वहां मौजूद थी।
मैं भी स्कूल जाता था। एक सच्चे संगीतकार का स्वयं में कोई अर्थ नहीं होता।
हम इसे मनचाहा अर्थ देते हैं! हम गीत पर वह अर्थ थोपते हैं जो परंपरागत रूप से हमारे मन में बैठा हुआ है।
पु हा गे ट मम ये तला नेऊन सां गतलं, ʻ कॅथी, मला मा कर. माझी
मेरा मूड ठीक नहीं है। मैं इसी कमरे में सोऊंगा।'
वह गुस्से में थी। उसकी आँखों में आग सी जल रही थी। वह हँसी, 'तुम हँसो।' मैं अभी तुमसे नाराज़ नहीं हो सकती! तुमने मेरा वीकेंड खराब कर दिया!
जब आपके कार्य और मन की स्थिति आपके अनुरूप नहीं होती, तब आप अपने मित्र को आमंत्रित करते हैं।
क्या तुम जासूसी कर रहे हो? मेरे एक और दोस्त ने मुझे इस सप्ताहांत आमंत्रित किया था; लेकिन मैंने तुम्हारी वजह से मना कर दिया।
कैथी पहले से ही गुस्से में है, इसलिए उसे समझाने की कोशिश करो कि इससे वह और भी गुस्सा हो जाएगी।
ऐसा महसूस करते हुए, मैं अपने कमरे में गया और सो गया। लेकिन उस रात मुझे नींद नहीं आई।
उन्हें जिन अपमानों का सामना करना पड़ा, उनके साथ-साथ "संगीत का अर्थ वही है जो हम उसे देते हैं" का मुद्दा भी था।
यह एक ऐसा विचार था जो मेरे मन में काफी समय से चल रहा था।
जब मैं सुबह उठा तो नौ बज रहे थे। गेट खुला हुआ था।
वह वहां नहीं थी। उसका बैग भी वहां नहीं था। मैं नीचे आया और दरवाजा खोलकर देखा। उसकी कार भी वहां नहीं थी।
यह सनीवेल मंदिर में उनके प्रदर्शन की रिकॉर्ड की गई कैसेट है।

यह समर्पण मेरे लिए बहुत सम्मान की बात थी। मेरी पत्नी ने गु के बराबर ही शानदार प्रस्तुति दी, जिससे यह आयोजन मेरे लिए गर्व का विषय बन गया। इस घटना के पीछे की सच्चाई अब और भी स्पष्ट हो गई है।
अंधेरा हो रहा है। गाना बज रहा है और दोनों खूब मजे कर रहे हैं!
क्रोध से उत्पन्न भावनाएँ अब मौजूद नहीं हैं। क्रोध नयम में विलीन हो रहा है।
दंपति की निगाहें सहानुभूति से भरी थीं। इसमें भी उनकी भावनाएं और भी स्पष्ट रूप से झलक रही थीं। अंत में, "मत जा योगी—" कहते हुए, वह फूट-फूटकर रोने लगीं। ये आंसू गीत में व्यक्त भावनाओं के कारण नहीं थे। बल्कि रात भर में बहे साठ आंसू थे!
मैंने वह पन्ना पढ़ा जो वह जाते समय पीछे छोड़ गई थी।
यह देखकर कि वह जल्द ही तुम्हें छोड़कर उस लड़की के साथ खेल खेलने लगा, इसके बाद, मुझे अपने पति को बचाने की तीव्र इच्छा हुई! अगर वह
यदि वह मुलाकात न हुई होती, तो शायद मन उन दोनों के साथ यौन संबंध बना लेता।
मैं तो इसे रख लेती! क्योंकि इसका कोई कारण ही नहीं है! जब आपको यह बात समझ आ जाए, तो आपको अपने पति का सम्मान करना चाहिए और उन्हें सच बता देना चाहिए।
मधु माता, मैं यहाँ अपनी डायरी के कुछ पन्ने उद्धृत कर सकता हूँ;
लेकिन यह बात समझ में नहीं आती। सभी महत्वपूर्ण बिंदु यहीं आ चुके हैं। आपने पत्र में अपनी मां की आशा का भी जिक्र किया है। आपकी इच्छा पर
मुझे कुछ भी निर्देश देने का अधिकार नहीं है। आप संगीत प्रस्तुति में बाधा डालेंगे।
इसलिए, यदि आप बच्चा नहीं चाहते हैं, तो मैं बिना किसी झिझक के आपकी इच्छा का सम्मान करूंगा।
मैंने किया। उस समय मैंने अपने माता-पिता की भावनाओं के बारे में सोचा तक नहीं, जो बेसब्री से अपने पोते/पोती का इंतजार कर रहे थे। मैंने अपनी पत्नी की उम्मीदों को भी नजरअंदाज कर दिया। उस समय संगीत आप दोनों के लिए मुझसे ज्यादा महत्वपूर्ण था। आपके लिए भी, उस समय।
मैं: मेरे पति, सास और ससुराल वालों की इच्छाएँ इस इच्छा के आगे नहीं थीं! और अब आप

मुझे मां बनने की बहुत तीव्र इच्छा है...!
अभी तक मैं आपके मामले में क्या करना है, इस बारे में निर्णय नहीं ले पाया हूं।
यह नहीं आ रहा है। आपकी पोस्ट ने मुझे स्थिति को समझने और निर्णय लेने में मदद की है, बहुत-बहुत धन्यवाद!
अब मेरे मन में संगीत के लिए जरा सा भी प्रेम नहीं बचा है। इसी वजह से। आपके प्यार के पहले जैसा रहने का कोई कारण नहीं है। मेरी यही सलाह है।
वे अलग-अलग पत्र भेजेंगे। आप और आपके जीवनसाथी के हस्ताक्षर नोटरी के सामने होंगे।
यदि आप सीलबंद लिफाफा भेजते हैं, तो आपको फोटो या फोल्डर बिना किसी देरी के मिल जाएगा।
आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना!
विश्वास शाह
उसके अंगों में कोई ताकत नहीं बची थी। उसके सामने बजता डफ और खिड़की के बाहर बहती हवा, सब उसकी पहुंच से बाहर थे। उसका दिमाग सुन्न हो गया था। पानी में भीगे डफ के तारों की तरह बेजान! उसकी आत्मा पीड़ा से भरी थी। बैठने की बजाय उसे अपना शरीर फेंकने का मन कर रहा था। वह ज़मीन पर लोटने लगा।
मैं थोड़ी देर सोफे पर लेटी रही। मुझे थोड़ा बेहतर महसूस हुआ। मैंने मन ही मन सोचा, मुझे बिल्कुल अंदाजा नहीं था कि वह इतना कठोर होगा! मैंने उसे सच बताया, उसने मेरे फैसले का सम्मान किया; लेकिन वह कुछ भी भूलने को तैयार नहीं था! मैंने भी गलती से उसे बहुत उदार व्यक्ति समझ लिया था। मेरा यह भ्रम कितना बड़ा था!

□□□

१
यह सब ठीक नहीं चल रहा है। वह सबको दोष दे रहा है। एक-एक करके सारे रिश्ते टूट रहे हैं। मोहनलाल को ये सब याद आ रहा था। उसे भूपली के साथ हुई पूरी घटना बार-बार याद आ रही थी। उस पर हाथ उठाना बेकार था। मुझे ये समझ क्यों नहीं आया कि इस उम्र में, सिर्फ चार साल सीखने के बाद वो संगीत को समझ नहीं पाएगी? वो भारत विश्वास के साथ आई थी। उसने जितना सीख सकती थी, सीखा। अगर इससे पहले यहाँ उसका कोई अलग कार्यक्रम होता, तो उसे अच्छा लगता, मेरे हिसाब से ये बेहतर होता।
उसने तुरंत फोन करना शुरू कर दिया। उसने तीन म्यूजिक क्लबों को फोन किया। सबने कहा, ‘देखते हैं, इसे रहने देते हैं;’ लेकिन किसी ने भी पक्का जवाब नहीं दिया। जब संतक जे कलाकदरा ने तीसरी बार वानखेड़े को फोन किया, तो उन्होंने कहा, ‘पंडित जी, अब आप इसे क्यों छिपा रही हैं? हाल ही में, उनकी सारी गपशप अखबारों में छप चुकी है। ऐसे माहौल में, अगर हम कहें, ‘हम यह कार्यक्रम कर रहे हैं और आप हमें अपना आशीर्वाद दे रही हैं,’ तो सारे अखबारवाले भड़क उठेंगे।’
छी! बेवकूफ लड़की! चाहे वो कितनी भी गुस्से में हो, उसमें सार्वजनिक मामलों पर कानून बनाने की तमीज़ नहीं है, उसमें इतनी भी शर्म नहीं है। वो भारतीय तो है नहीं! फिर उसे कैसे पता चलेगा?
हाना! मुझे जाने दो। वरना कॉन्सर्ट या मांगों पर दस-बीस हजार खर्च कर दो। इस बारे में एक कार्यक्रम क्यों न आयोजित किया जाए? अगर पत्रकारों को चिढ़ाना चाहते हैं, तो कर लीजिए। इसी बैठक में मैं कहूंगा, हां, मैंने ही उसे मारा है। क्या गु के पास इतनी शक्ति नहीं है? वह परंजपे के बारे में भी सब कुछ कह सकता है। सारा मामला उसी के पक्ष में मोड़ देना चाहिए। बैठक से पहले, उसे प्रभु और राजाराम के साथ दो सप्ताह तक अभ्यास करने दीजिए।
हॉल तय करने से पहले, उन्होंने भूपली को फोन किया। पहले तो उन्होंने सोचा, 'एक महीना बीत गया। तुमने फोन क्यों नहीं किया?'
"तुम मुझे इन जूतों से मार डालने वाले थे, है ना? फिर तुम मुझे कैसे बुलाओगे?"
'हटला को क्या हुआ? इस आदमी पर इतना पैसा क्यों खर्च हुआ? तुम मेरे छात्र हो, है ना?'

‘ये क्या है, गुजी! तुम एक बात कहती हो और मुझसे अलग तरह से व्यवहार करने की उम्मीद करती हो! मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा।’
‘गु चाहे जो भी कहे, तुम्हें आना ही होगा। अगर तुम भारतीय होते, तो समझ जाते। देखो, मुझे तुम्हारे विदाई समारोह के लिए एक कार्यक्रम आयोजित करना है। तुम उसमें दो घंटे गाओगे! मैं भी गु या ना के रूप में भाषण दूंगी। फिर तुम मुझे गु दी ना के रूप में धोती और झा भेंट करोगे। मैं तुम्हें तंबू से आशीर्वाद दूंगी। ध्यान रहे- मैं पंद्रह दिनों तक भगवान से अलग से तैयारी करूंगी।’
‘जी हाँ! गुजी, आप कितनी अच्छी हैं! आपका गुस्सा भी प्रेम की एक संक्रामक भावना है, मुझे यह बात समझ ही नहीं आई थी!’ यह कहते ही दूसरी तरफ सन्नाटा छा गया। फिर हुंड की आवाज सुनाई दी।
"अरे! रोना मत। मैं आ रहा हूँ," मोहनलाल ने कहा और तुरंत चला गया।
इस आलिंगन में भी वह कुछ देर तक रोती रही। उसकी आँखें भी आँसुओं से भरी हुई थीं।
जब उसका गुस्सा शांत हुआ, तो उसने कहा, "गुजी, क्या तुम्हें पता है कि इन पत्रकारों ने मुझे कितना नुकसान पहुंचाया है? मुझे अमेरिकन काउंसिल से हर महीने फोन आता है।"
आप जानते ही हैं। यहाँ मराठी, हिंदी और अंग्रेजी अखबारों में मेरे बारे में छपी हर बात का अनुवाद करने वाले लोग कौशलती आते हैं। मुझे वहाँ बुलाया गया था। मुझे अभी-अभी एलिनार गेदाच का फोन आया था। मैंने उन्हें अपनी बात समझाई।
क्या इस महिला को कला और संगीत की समझ है?
'बहुत ज्यादा!'
‘तो फिर आप उन्हें इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित कीजिए। आपका गीत सुनते ही उनके मन से ये सारी शंकाएं दूर हो जाएंगी। है ना?’
‘आप कितनी दयालु हैं!’ उसने कहा और उसे बार-बार चुंबनों की बौछार कर दी। कार्यक्रम उम्मीद से कहीं अधिक सफल रहा। अमेरिकी लड़की ने चार वर्षों में जो कुछ सीखा था, उसे लेकर तो उत्साह था ही, साथ ही अखबारों में छपी विरोधाभासी खबरों को लेकर भी खूब चर्चा थी! इससे कार्यक्रम बेहद जीवंत हो

उठा। हॉल खचाखच भरा हुआ था। बाहर बैठने की भी व्यवस्था करनी पड़ी। मोहनलाल ने एक बड़े हॉल का सुझाव दिया।
मुझे आना चाहिए था।
कार्यक्रम से पहले मोहनलाल ने भी भाषण दिया। परंजपे का नाम लिए बिना उन्होंने कहा, ‘बायको नाम का एक पत्रकार, जो कैसेट का कारोबार करता था, उसने मेरी 'ओंकार' कैसेट बीस हजार में बेचने की कोशिश की। जब मैंने मना कर दिया, तो उसी पत्रकार को पंद्रह लाख का अनुबंध गंवाना पड़ा। इतना ही नहीं, उसने मेरे खिलाफ कई अपमानजनक लेख भी लिखे और छापे। यही मेरा सबक है। यह सच है कि मैंने इसके खिलाफ आवाज उठाई क्योंकि मैंने इसे ठीक से नहीं सीखा था। अब इस गाने को सुनिए और बताइए, अगर मैंने सही समय पर एक कठिन भूमिका निभाकर इसे न सिखाया होता, तो क्या ऐसा गायक सिर्फ चार साल में तैयार हो पाता?’ इसके बाद गाया गया गीत "लॉरे साचन" सबको बहुत पसंद आया। उसने महज चार साल में बहुत कुछ सीख लिया।
मोहनलाल जी ने उनकी तैयारियों की बहुत सराहना की। एलिनार गिडनी ने फूलों का गुलदस्ता देकर दोनों को बधाई दी।
अगले दिन, अधिकांश समाचार पत्रों ने लॉरेंस की तस्वीर के साथ कार्यक्रम प्रकाशित किया। इनमें से कुछ समाचार पत्रों ने मोहनलाल के भाषण को विशेष प्राथमिकता दी। अगले सप्ताह, दो समाचार पत्रों ने परंजपे के बारे में खबरें प्रकाशित कीं। इनमें से एक समाचार पत्र ने तो बिना नाम लिए ही उन पर आरोप लगाते हुए कहा, 'पत्रकार इसलिए परेशान है क्योंकि उसे लड़की की अनुमति नहीं मिली!' इसमें एक वाक्य और जोड़ा गया, 'क्या वह छात्रा के लिए अपना सब कुछ देगा, यह उसका सवाल है; लेकिन पत्रकार चाहता है
क्या आवश्यक है?

२
मोहनलाल अखबार में यह खबर पढ़कर बहुत खुश हुआ। उसे गोया के प्रति लड़की के प्रेम का जिक्र पढ़कर भी बहुत खुशी हुई। वाह! वह भी इस स्तर तक गिर गया था, है ना!
लेकिन अगले दिन उनका दिल बैठ गया। इसी परंजपे ने मुंबई की नींव रखने में कई तरह से मदद की थी। उन्होंने ही देसाई परिवार को कोरेगांव में बसाया था। ये सब बातें इतने निचले स्तर पर लड़ाई के लायक नहीं थीं; लेकिन उन्हें भूपली मामले जैसी नीच हरकत पर नहीं उतरना चाहिए था। नहीं, यह सच है कि जब व्यापार का मौका आता है, तो इंसान की सारी अच्छाई धुल जाती है।
लेकिन मुझे क्या हो रहा है? मुझे कुछ महसूस नहीं होता। पूरे मुंबई में किसी ने इसके बारे में सुना तक नहीं है। अगर मैं याद करूं तो सौ से ज़्यादा संगीत प्रेमियों के नाम एक के बाद एक याद आ जाते हैं; लेकिन अगर मैं उन्हें फोन करके घंटों बातें करूं तो ऊब जाती हूं और गुस्सा आ जाता है। कोई भी करीबी नहीं है। राजाराम भी मेरे साथ संगीत कार्यक्रम में जाता है, पैसे लेता है और चला जाता है। बिना बताए वह पनवेल जाता है और मुझे गाना सिखाता है। मैंने उसे तब तक नहीं बताया जब तक मुझे ये ख्याल नहीं आया कि ये कैसी दोस्ती है?
भूपली अमेरिका चली गई। मुझे बाकी महिलाओं को फोन करने का मन नहीं करता था। मुझे हर किसी की कोई न कोई परेशानी याद आ जाती थी। अगर हमारी नियमित मुलाकातें होतीं, तो वे भी मिलने की उम्मीद करने लगतीं। अगर मैं उन्हें अपनी इच्छा अनुसार करीब और दूर रखती, तो उनके मन में ज़रूर एक तरह का डर पैदा हो जाता। जब मैं उन्हें फोन करती, तो हर कोई कहने लगता, 'आज इतने दिनों बाद, मुझे उनकी याद अच्छे से आई!' बस फर्क इतना था कि वे भूपली के बारे में अखबारों में छपी उस खबर पर चर्चा करतीं। ओह! मेरे दिल में जो अकेलापन है, उसे किसी को बताना नामुमकिन है। अगर मैं डफली लेकर गाने बैठूँ, तो भी गाने में कोई भावना नहीं होती। सतह सूख गई है। गुस्सा भी नहीं, सारे रस सूख गए हैं। मुझे लगा, हम आदत के अनुसार गाते हैं, यादों के अनुसार गाते हैं। हम भावनाओं के अनुसार नहीं गाते।
मेरे मन में ख्याल आया, क्यों न गाना छोड़ दूं? ऐसे कब तक गाती रहूं? क्यों न इतना पैसा कमा लूं कि कहीं जाकर रह सकूं? लेकिन कहां? कहीं भी जाऊं,

अकेलापन तो रहेगा ही। क्या करूं, यहां किसी क्लब की सदस्य बन जाऊं? शाम को चार बजे जाऊं। बैठूं और शतरंज खेलूं। दो मोहरे लेकर वापस आऊं। इस सोच से थोड़ा अच्छा लगा; लेकिन रोज शतरंज खेलते-खेलते थक जाती हूं। अगर कोई दोस्त न हो, तो जिंदगी का मजा ही खत्म। ओह! मैं कितनी बेकार इंसान हूं!
नासिक में एक कार्यक्रम का निमंत्रण आया। कार्यक्रम के आयोजक स्वयं दो लाख रुपये लेकर निमंत्रण स्वीकार करने आए थे। उन्होंने सोचा, 'दरअसल, मैं पहले आपको पैसे दे देता हूँ।'
"मैं शादीशुदा हूँ। आपने मुझे इतना सारा पैसा दिया! अगर मैंने आपको धोखा दिया तो क्या होगा?"
"अगर आप धोखा देने का फैसला भी करते हैं, तो आपका संगीत आपको ऐसा करने नहीं देगा।"
यह भी एक तरह से उनकी प्रशंसा ही थी, जिससे उन्हें शर्मिंदगी महसूस हुई। नासिक में कार्यक्रम समाप्त हो गया था। उनका मन यंबक वर्ला जाने का हुआ। पच्चीस साल पहले जब वे यहाँ एक कार्यक्रम के लिए आए थे, तब वे वहाँ गए थे। इस बार
यंबक पर्वत पर स्थित मंदिर और उसमें स्थापित विशाल शिवलिंग हमेशा से उनके मन में बसे हुए थे। जैसे ही उन्हें याद आया, उन्होंने वहां जाने का फैसला किया। होटल का कमरा खाली था।
वह कपड़ों से भरा एक थैला लेकर चला गया। टिपानी और प्रभु दोपहर में ट्रेन से मुंबई लौट आए।
यंबक नदी पर स्थित मंदिर में दर्शन करने के बाद, वह ब्रिगारी नदी पर स्थित गोदावरी नदी के उद्गम स्थल पर गए।
मुझे जाने की इच्छा हुई। टैक्सी चालक नीचे उतरा और चढ़ाई शुरू कर दी। अचानक मुझे अपना बचपन याद आ गया। इस बार मैं नीलपावत घंटी लेने जाया करता था। सीढ़ियाँ पत्थरों की बनी थीं। रास्ते में छोटे-छोटे मंदिर थे। सैकड़ों तीर्थयात्री ऊपर-नीचे आ-जा रहे थे। ऊपर चढ़ने के बाद उसने चारों ओर देखा। पहाड़ बहुत ऊँचा नहीं था; लेकिन यह इस क्षेत्र की सबसे ऊँची चोटी थी। यह महसूस करते हुए कि इन पर्वत चोटियों से आकाश से जुड़ने के लिए इससे बेहतर कोई जगह नहीं हो सकती, उसने चारों ओर देखा। मेरे साथ आए गाइड ने मुझे अदृश्य वैतरणा नदी पर बने इस बांध द्वारा जमा किया गया पानी दिखाया। वहीं से उसने मुझे मुंबई को पानी की आपूर्ति के बारे में बताना शुरू किया।

दूसरी ओर, यंबक के ऊपर घाटी में, क्षेत्र की छोटी-बड़ी झीलें दिखाई दे रही थीं। कुशवत तिथि, इंद्र तिथि, गौतमी तिथि, विव वनथा तिथि, विव वती तिथि, प्रयागति तिथि दिखाई दे रही थीं।
अंततः वह गोदावरी नदी के गौमुख के पास पहुँचा। उसी क्षण पुजारी ने उसे पहचान लिया। उसने सोचा, 'क्या आप पंडित मोहनलाल हैं?'
गांव के बाहर किसी मंदिर या पूजा के माध्यम से आपसे मिलकर अच्छा लगा। मैंने कल आपका गाना सुना। मैं इसी वजह से कल नासिक आया था। मैंने इसे मुंबई में भी सुना था। मुझे आपका गाना बहुत पसंद आया।
मोहनलाल और भी खुश हो गया। वह उसके साथ बैठकर बातें करने लगा। थोड़ी देर बाद उसे भूख लगी। पूजा ने उसे वह पंचखा दिया जो वह नैविया के लिए लाई थी। खाने के बाद वह सो गया। फिर वह ज़मीन पर लेट गया। गहरी नींद में सो गया। जब वह जागा, तो ऊपर फैला नीला आकाश उसकी आँखों के सामने छा गया। एक पल के लिए उसे ऐसा लगा मानो वह आकाश के किसी हिस्से पर सो गया हो। वह उठा और गाय के मुँह के पास बैठ गया। थोड़ा आगे चलकर वह वहाँ एक पत्थर पर बैठ गया। आकाश से जुड़ाव का एहसास और ज़मीन पर न रहने की भावना उसके मन में और भी प्रबल होने लगी। उसी क्षण गाइड पास आया और बोला, 'साहब, बहुत देर हो चुकी है। अगर हम हर पर्वतारोही समूह के साथ इतना समय बिताने लगेंगे, तो हमारा व्यवसाय कैसे चलेगा?'
मोहनलाल क्रोधित हो गया। उसने कहा, 'मैं दुगुनी कीमत चुकाऊंगा। तुम बस को उदास चेहरे के साथ देखोगे!'
वह कुछ देर और वहीं बैठे रहे। उन्हें हंसी आ गई। उनके मन में ख्याल आया, क्यों न यहीं रात बिता ली जाए? उन्होंने सोचा। पुजारी ने कहा, 'पंडितजी, यहां ठहरने का कोई इंतजाम नहीं है। शाम पांच बजे के बाद सब लोग नीचे चले जाते हैं। रात में यहां कोई नहीं होता।'
कुछ देर सोचने के बाद उसने कहा, "मैं यहीं चट्टान पर सोऊंगा। मैं अकेला रहूंगा। मुझे डर नहीं है।"
लेकिन अगर आप यहां बाहर सोते हैं, तो बहुत ठंड होती है। जंगल में इन जानवरों का डर रहता है। यहां तक कि लोग कहते हैं कि वहां बाघ भी हैं। किसी ने उन्हें देखा तो नहीं है; लेकिन कभी-कभी उनके पैरों के निशान मिल जाते हैं।

एक बार मैंने याम्बक गांव में कुछ काम करके सुबह वापस आने का सोचा था।
लेकिन वहां रात बिताने की इच्छा प्रबल हो गई।
महाराज, मुझे ऐसा नहीं लगता। पूरे दिन में इतने सारे तीर्थयात्री आते हैं। अगर कोई बाघ होता, तो किसी न किसी समय उनमें से किसी एक को चोट पहुँचा देता। अगर छोटे जानवर होते, तो भी ऐसा ही होता। इस मंदिर का दरवाजा बंद मत कीजिए। मैं रात को अंदर सोऊँगा और दरवाजा बंद कर दूँगा। मंदिर में जो कुछ भी है, उसकी जिम्मेदारी मेरी है। मैं यहाँ एक-दो दिन रुकना चाहता हूँ। क्या आप गाइड को जानते हैं? उससे कहिए कि मेरा बैग टैक्सी से यहाँ ले आए। आप जो भी राशि तय करेंगे, मैं दे दूँगा।
पूजा ने सोचा, 'क्या तुम इस क्रोध पर विचार करने आए हो?'
'मुझे ऐसा लगता है!'
पूजा ने मोहनलाल को वह प्रसाद भी दे दिया जो वह घर ले जाने के लिए रखी थी, “ठीक है। अपना ख्याल रखना। पूजा के लिए दूसरी तरफ वाले कुएं से थोड़ा पानी ले आना। मैं कल सुबह नौ बजे आऊंगी। मैं तुम्हारा खाना भी लाऊंगी। लेकिन आज हमें इसी से काम चलाना पड़ेगा।”
रात को चाँद डूब चुका था। वह आकाश में झरने से बहते दूध की तरह फैला हुआ था। एक पत्थर पर बैठे हुए वह आकाश को निहार रहे थे। दूर स्थित बांध और झील का पानी चाँदनी में चमक रहा था। यही नाम था गु राजसाहेब का।
मुझे नामदा स्थित शिवालय याद आया। वहाँ भी, चांदनी रातों में, वे नामदा नदी के गहरे बहते जल को निहारते हुए शांति और सहारे का सपना देखते थे। कितना सुकून भरा पल होता था! मुझे याद आया कि राजसाहेब भी चांदनी रातों में वहाँ आते थे।
मेरा वो गीत, जिसने मुझे इतनी गहरी आध्यात्मिक शांति दी थी, कहाँ चला गया? वो क्यों चला गया? मुझे कोई जवाब नहीं सूझा। मैं फिर से सो गया। एक गायक-कलाकार के नज़रिए से, रात को जागना कोई बड़ी बात नहीं है। फिर भी, मेरी आँखें फिर से भारी होने लगीं। मुझे याद आया, मैंने चाय नहीं पी है। रात में चार-पाँच कप चाय पिए बिना जागना मुश्किल है। आप चाय और चीनी लाकर रख सकते हैं; लेकिन बर्तन, कड़ाही, मिट्टी का तेल, दूध, माचिस - इसी से तो दुनिया चलती है! आध्यात्मिक गीत भी कुछ ऐसा ही है, इसी उलझन में फँस गया है।
मुझे जम्हाई आई। मैं सोच ही रहा था कि मंदिर में सोऊं या बाहर, तभी मुझे इस दिशा से एक तेज़ आवाज़ सुनाई दी। मैंने सिर घुमाकर देखा। ऐसा लगा जैसे कोई

बड़ा जानवर इधर-उधर भाग रहा हो। मेरी धड़कन तेज़ हो गई। अगर वह मेरी तरफ आता, तो मैं डर जाता। वह जानवर कैसा था? मगरमच्छ जैसा या मगरमच्छ? अरे! यह क्या है? ये जानवर यहाँ कैसे आ सकते हैं? नामदेत में देखे मगरमच्छ याद हैं? या गंगा में? शायद मगरमच्छ न हो, शायद छिपकली हो। या घोरपड़। हाँ। शायद घोरपड़ ही हो। यह तो ऐसी खुली पहाड़ियों पर पाया जाने वाला जानवर है। यहाँ बाघ भी हैं; लेकिन पुजारी कह रहे थे कि किसी ने उन्हें नहीं देखा। यह कोई सुनसान पहाड़ी नहीं है। पहाड़ियों की एक कतार है। वे कहीं दूर ज़रूर होंगे। वे कभी-कभार आते होंगे। दिन में तो शायद इंसान दिखाई न दें; लेकिन रात में क्या? शायद कोई अजनबी इस गंध से आ जाए! वह डर से चारों ओर देखने लगा। चांदनी में चारों ओर पत्थर, पेड़ और झाड़ियाँ परछाइयों जैसी लग रही थीं। क्या उनमें से कोई बाघ की आकृति का हो सकता है? अगर वह इन कदमों की आहट के साथ आया हो, या पीछे से आया हो, तो उसे पता भी नहीं चलेगा। वह मुड़ा और पीछे देखा। उसे पसीना आ रहा था। एक तरफ उसे शर्म आ रही थी। क्या मैं इतना बेवकूफ हूँ?
लेकिन बाघों से इतना डर क्यों? क्योंकि जान चली जाएगी। जान चली गई तो क्या होगा? मैंने सोचा नहीं, मुझे कोई जवाब नहीं सूझा। सवाल गहरा था। अगर हम मर गए तो किसी को कुछ नहीं होगा, कोई रोएगा नहीं, कोई दुखी नहीं होगा। कुछ संगीत प्रेमी कुछ दिनों तक कहेंगे, 'अच्छा गाना था। बेचारा चला गया!' दस-पंद्रह साल बाद, श्रोता कभी-कभार उस गाने को याद करेंगे।
बी! यही तो मेरी पूरी जिंदगी है!
जैसे ही मेरे मन में यह विचार आया, मेरे मन में निराशा का भाव उत्पन्न हो गया। अपने बारे में इन भावनाओं का क्या अर्थ है, कि मेरी मूल शक्ति मेरे गीतों में विकसित होती है, कि ओम की शक्ति मेरे तंबू से उत्पन्न होती है? इस विचार से मेरा मन रेतीली भूमि के समान खाली हो गया।
अगर मैं मर जाऊं, तो अकेले में कोई नहीं रोएगा। अखबारों में लेख छपेंगे; लेकिन रोने वाला कोई नहीं होगा। हालांकि इस विचार से मेरा दिल एक तरफ दुखता है, वहीं दूसरी तरफ मुझे एक तरह का हल्कापन भी महसूस होता है। यह मेरी एक अलग पहचान थी। हजारों लोग शोक के सागर में डूब जाएंगे, शोक संदेशों के कारण भावनाओं को व्यक्त करने वाले बहुत से लेख लिखे जाएंगे; लेकिन कोई रोने का एहसास नहीं करेगा!

मुझे याद आया कि मैं ग्रिधर को अपनी पहचान बताए बिना भाग गई थी, जिसने हिरण का शिकार छोड़कर बाघ का शिकार करना शुरू कर दिया था। मैंने अपनी बहन पूनम को भी अपनी पहचान नहीं बताई थी। बकुले के दिल में जो इज्जत और प्यार था, वो सब खत्म हो गया है। मुझे गुस्सा आ रहा है कि किशन ने मुझे पर्याप्त पैसे नहीं दिए।
वर्मोहन इस बात से नाराज़ है कि पद्मा ने उसे पैसे नहीं दिए। ष्टिमोहिनी का क्या हाल है?
लगता है, यही बात मुझे याद नहीं है। मेरे लिए कौन रोएगा?
मेरा दिल बैठ गया। मैंने सोचा, अगर रोने के लिए कोई न हो तो मरने से डरने का कोई कारण नहीं; लेकिन क्या मैं सचमुच मरना चाहती हूँ? नहीं। मैं यहाँ मरने की उम्मीद में नहीं बैठी हूँ। बल्कि, मैं यहाँ अपनी सहनशीलता की परीक्षा लेने बैठी हूँ। इस विचार से मुझे थोड़ा सुकून मिला। बहुत सावधानी से बैठना सहनशीलता नहीं है। बाघ के आने की संभावना होने पर भी चैन से सोना, यही सच्ची हिम्मत है।
वह पत्थर पर लेट गया। चारों ओर चाँदनी फैली हुई थी। उसके कान आसपास की आवाज़ों को ध्यान से सुन रहे थे। उसकी नाक भी इस बात पर नज़र रख रही थी कि क्या उसे बाघ की तेज़ गंध आ रही है।
ऐसा ही था। चाँद धीरे-धीरे अस्त हो गया। अब चारों ओर अँधेरा छा गया। मंदिर में जंजीर से बंधे सोने का ख्याल एक बार फिर मेरे मन में आया; लेकिन मैंने खुद को संभाला, अब सचमुच अँधेरा हो चुका था। यही मेरी सहनशीलता की परीक्षा का समय था। वह करवट बदलकर सोने की कोशिश करने लगा; लेकिन नींद नहीं आई। कुछ देर बाद उसके हाथ-पैर अपने आप शिथिल हो गए। फिर वह नींद आने का इंतजार करने लगा। काफी समय बीत गया।
जब वह सुबह उठा तो सूरज की किरणें उसके चेहरे पर पड़ रही थीं। वह पूरी तरह जाग चुका था। काश, वह बिना किसी डर के चैन से सो पाता! इस विचार से उसे थोड़ा सुकून मिला। उसने अपने थैले से ब्रश और दाढ़ी संवारने का सामान निकाला और खुद को साफ किया। उसने स्नान भी किया। थोड़ी देर बाद पुजारी आया। आया ने सोचा, 'क्या आपने कुछ सोचा? इसका क्या नाम रखूँ?'
"सिर्फ एक रात के लिए रुकना उचित नहीं है। जब तक सब कुछ खत्म नहीं हो जाता, मैं इसका नाम नहीं बताना चाहता। मैं आठ या दस दिन रुकने की सोच रहा हूँ।"

"तुम भी खुश रहो। मैं तुम्हारे लिए हर दिन खाना लाऊंगा। कृपया इस क्रोध के कारण में बराबर का योगदान दो। उठो। यह सब्जी और रोटी खाओ।"
दोपहर में कुछ खाना बच जाएगा। मैं रात के खाने के लिए थोड़ा सा बचा कर रखूंगा।
मैं लड्डू भी बनाऊंगा और लाऊंगा!
‘इस क्रोध की सारी महिमा तुम्हारी है! यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हें गोदावरी-उग्मा की धाराओं के माध्यम से यह बात बता दूँगा।’
पूजा बहुत खुश थी। करीब दस बजे तीर्थयात्री आने लगे। वह थोड़ी दूरी पर एक पत्थर पर बैठ गई। चूंकि वह जगह एक तरफ थी, इसलिए ज्यादा लोग नहीं आए। ये यादें समय-समय पर मेरे मन में उभरने लगीं।
बेलगाम वासना। उसने परिणामों की परवाह किए बिना एक लड़की के साथ यौन संबंध बनाए। उसने यह भी नहीं सोचा कि इसके पीछे उसका मकसद क्या हो सकता है। उसने यौन ज़रूरत के चलते उसके साथ यौन संबंध बनाए। यौन संबंध के बाद, वह और मैं... वह जानता था कि वह एक बुद्धिमान, शिक्षित, शहरी महिला है। उसने उसके साथ यौन संबंध बनाने के परिणामों के बारे में सोचा तक नहीं। उस महिला के साथ रहते हुए, जिसने उसे गायन और नृत्य में आनंद और सामंजस्य का सुख दिया, उसके मन में यह विचार भी नहीं आया कि 'यह सुख कितने दिन चलेगा?' उसने इस बारे में तब सोचा जब वह फिर से मुंबई आया। किसी भी छात्र को इस तरह के प्रेम में नहीं पड़ना चाहिए, जबकि वह उससे मिलने वाले सुख और संतुष्टि को छीन रहा हो! लेकिन इस बार भी, 'जरूरत के समय कोई साथ नहीं होगा' का विचार कहाँ से आया?
लेकिन आज रात मेरे मन में जरा भी डर नहीं था। यहाँ कोई बाघ नहीं है, और अगर होता भी तो...
यह सोचकर कि उसने इस भय पर विजय प्राप्त कर ली है, वह बिना किसी झिझक के शिवाजी मंदिर पहुंच गया।
दोपहर में, इसी वजह से इस क्षेत्र की पहचान फिर से हो पाई। आकाश में इन घूमते बादलों के बीच चंद्रमा भी धीमी गति से चलता हुआ प्रतीत हुआ। अगर बादल न होते, तो चंद्रमा की गति न होती। नहीं। चंद्रमा की भी अपनी गति होती है। पृथ्वी की भी। अगर बादल न होते, तो गति दिखाई न देती। अगर कोई वस्तु गतिमान न होती, तो स्थिर वस्तुएँ भी एक ही स्थान पर न टिकी रहतीं।

पता नहीं क्यों, मुझे मधु याद आ गई। बेचारी! शिष्य बनने के बाद उसने शादी की ज़िद की थी। सभी लड़कियाँ यही ज़िद करती हैं। शिवाय को छोड़कर, वह एक धनी व्यापारी परिवार से थी। अगर वह अपने पति को छोड़कर उसे हमेशा के लिए अकेला छोड़ देती तो क्या होता? लेकिन मुझे बिना बताए, उसने अपना फैसला खुद ले लिया था। मानो उसे असावरी के मंदिर में 'निन' का सामना करना ही था!
उसके मन में असावरी का ख्याल बना रहा। उसने मन ही मन तलवार को मंदिर के बीचोंबीच रख दिया। धीरे-धीरे वह मंदिर के भीतर समा गई। अगर उसे आवाज सुनाई भी देती, तो क्या होता?
हाहा! पास की पहाड़ी पर बैठा बाघ यह आवाज सुन लेगा और उस आदमी को ढूंढते हुए यहाँ आ जाएगा।
क्या यह आएगा? आने दो। इसी विचार के साथ उन्होंने खुलकर गाना शुरू किया। मध्य स्वर से वे मन्द्र स्वर तक उतरे। ओह! यह एक ऐसा राग है जो सचमुच अंतर्मन को प्रकट करता है! लेकिन बाद में मुझे याद आया, किसी भी राग में, जब मन्द्र स्वर षड्ज तक पहुँचता है, तो अंतर्मन स्वतः मुक्त हो जाता है। वे बागेश्री के मन्द्र स्वर तक गए। मैंने भैरवम को भी ऐसा ही करते देखा। मैंने तोड़ी को भी यही करते देखा। यद्यपि भावनाएँ भिन्न हैं, मन्द्र स्वर तक पहुँचते ही अंतर्मन स्वतः खुल जाता है। दिव्य और गांधार संवादों को ध्यान में रखते हुए, मैंने कहा, "मैं ही वह हूँ जो है
तुमने अपने पति को बिना बताए छोड़ दिया। वो भी चिट्ठी के ज़रिए! मुझे गुस्सा आया और मैंने उसे मार डाला।
मुझे नींद आ गई। चांद अभी निकला नहीं था। कल मैं इसी पत्थर पर बैठकर सोई थी। अगर मैं हर रोज इसी पर सोऊंगी तो मुझे सर्दी लग जाएगी। कल तो मैंने शॉल भी नहीं ओढ़ी थी। मंदिर जाकर मैंने माचिस से देवता के सामने दीपक जलाया। मंदिर का दरवाजा बंद करके मैं बिना शॉल ओढ़े सो गई।
मैं सुबह जल्दी उठ गया। नीचे की ओर स्थित झील पर जाते और शौचालय से लौटते समय मुझे हीरा याद आ गया। ओंकार बाबा का नाम ओंकार था। आश्रम का नाम भी ओंकार आश्रम था। 'अकारा' की जगह मैं 'ओंकारा' बोलता था।
वहाँ से आने का एक रास्ता था। हाँ। मुझे याद है। वृंदावन में, हिरदास मंदिर में एक योगी थे।
यह सुनकर राजसाहब ने शिव मंदिर के पास सिर झुकाया और इसी आश्रम में ओंकारा का मूल बीज उत्पन्न हुआ। तो इसमें मेरी क्या भूमिका है?

□□ □□□□□-□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□? □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□
○! □□:!
□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□
□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□! □□□□ □□□□□ □□□□ □□?
□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□ □□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□, □□□□□□, □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□, □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□, □□□ □□□□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□
□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□; □□□□□ □□□□□□ □□ □□□, '□□□□□□□□, □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□?'
"□□□, □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□"
‘□□□ □□ □□□□ □□□ □□□-□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□; □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□’
□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□
‘□□□□, □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□-□□□ □□□□ □□! □□□□□□□□ □□ □□□□□□! □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□, □□□□ □□□ □□□□ □□?’
‘□□□□□□□.’
‘□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□!’ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□, □□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□? □□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□; □□□□□ □ □□ □□ □□, □ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□, □□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□, □□ □□?’
'□□□!'

"एक आदमी तुम्हारा बैग ले आएगा," हनत ने शिवाजी मंदिर के पास खड़े एक छोटे लड़के को पुकारा।
जब तक बस नासिक पहुँची, उसका मन बदल चुका था। उसने सीधे रेलवे स्टेशन के लिए टैक्सी ली। उतरते ही उसने रास्ते और हीराहर जाने वाली ट्रेन के बारे में पूछताछ शुरू कर दी।

वह अंदर गया और देखा। इमारत का रंग फीका पड़ गया था। वहाँ कोई नहीं होगा। समस्या ऐसी थी। फिर भी, मोहनलाल ने हिम्मत करके दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खुला। दरवाजे पर बीस साल का एक छात्र खड़ा था। उससे मोहनलाल को यह जानकारी मिली – ‘यहाँ अब कोई गायन नहीं सिखाता। कॉलेज में पढ़ रहे दस गरीब छात्रों को यहाँ रहने की व्यवस्था की गई है। वे अपना खाना खुद बनाकर यहाँ रहते हैं। नंदीक्षोर वर्मा आश्रम के प्रमुख हैं। वे हर हफ्ते आते-जाते हैं।’
मुझे लगा मैंने नंदीक्षोर वामा का नाम सुना था। जब वे यहाँ थे, तब उनकी उम्र पैंतीस वर्ष थी। वे ओंकार आश्रम के एक गैर-हाज़िर छात्र थे। हालाँकि ओंकार बाबा आश्रम की सभी व्यवस्थाओं का ध्यान रखते थे, फिर भी स्थिति के अनुसार अन्य गैर-हाज़िर छात्रों की भी आवश्यकता पड़ती थी। वामा गांधीवादी थे। वे खादी के वस्त्र पहनते थे। वे इमारतों को रंगने जैसे कामों में मदद करने आते थे। बस इतना ही मुझे याद है।
मोहनलाल इमारत में दाखिल हुआ। इमारत पुरानी होने के बावजूद छोटी थी। उसमें पंद्रह कमरे थे। दो बड़े चौक थे। रसोई के अलावा एक अलग रसोई भी थी। दूसरी तरफ एक बड़ा खुला मैदान था। वहाँ दो मीटर ऊँचा एक बड़ा पुराना पेड़ था। उसने पेड़ की पत्तियाँ तोड़ीं और वहाँ से बाहर निकल गया।
अस्सी वर्षीय वर्मा आप इसी पुराने घर में रहते थे। उन्होंने खादी पहनी हुई थी। दीवार के सहारे एक चरखा रखा था जिस पर धागा लिपटा हुआ था। बैठने के लिए फर्श पर एक चटाई बिछी हुई थी। लेकिन पहली नज़र में, यह सब कुछ जाना-पहचाना सा लग रहा था।
‘बाबा, नमस्कार। मैं ओंकार आश्रम का पुराना छात्र हूँ। क्या आपको याद है? मेरा नाम मोहनलाल है। मैं गायक हूँ। गायन मेरा पेशा है।’
वह नीचे झुका और उसके पैर छुए। उसके चेहरे से संदेह गायब हो गया।
नहीं।
‘तुम पूरे भारत में नंबर एक गायक बन गए हो! बाबा को अंत तक याद रहता था कि तुम इतने महान गायक बन गए हो, फिर भी कभी यहाँ नहीं आए, इसीलिए तो! तुम मुझे बिना बताए चले गए थे। तुम्हें अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने में शर्म महसूस हुई होगी। कोई बात नहीं! अब तुम आ गए हो! आश्रम को शुभकामनाएं!’
इससे हमारे यहां आने का कारण स्पष्ट हो जाता है।
‘मैं मुंबई में रहता हूँ। मुझे जो चाहिए वो मिल जाता है। मैं एक सत्र के लिए दो लाख रुपये लेता हूँ। मेरा जन्म यहीं हुआ है। मैं यहीं आकर सुखमय

जीवन जीना चाहता हूँ। अगर हम इस आश्रम का सुधार करें और उच्च स्तरीय गायन सीख रहे पाँच-छह छात्रों को भोजन उपलब्ध कराएँ और उन्हें गायन सिखाएँ, तो मुझे लगता है कि गुरु का ऋण कुछ हद तक चुकाया जा सकेगा। यहाँ के सभी खर्चों का मैं ध्यान रखूँगा। हमें पूरे भारत से योग्य छात्रों को लाकर यहाँ पढ़ाना चाहिए। इस विचार के बारे में आपका क्या विचार है?’
'वास्तव में?'
"इस पर भरोसा रखो, माँ!" उसने हंसते हुए उसका हाथ पकड़ लिया।
‘जानते हो क्या हुआ? बाबा के जीवित रहते, गायन सीखने आने वालों की संख्या घटती जा रही थी। यह आश्रम ऐसा ही था, जहाँ केवल भगवान के भजन सिखाए जाते थे। उन्होंने भी अपना दृष्टिकोण नहीं बदला। उस झगड़े के बाद, यहाँ के बच्चे दो घंटे का आराम मिलने तक आपस में लड़ने लगे। उसके बाद, मुझे ट्रस्ट के दूसरे काम करने पड़े। इतनी बड़ी खाली जगह, एक इमारत जो अभी भी खड़ी है। बहुत से लोग इस विशाल संपत्ति को लूटने की फिराक में हैं। बहुत से राजनेता और लोग अभी भी इस पर अत्याचार करने की कोशिश कर रहे हैं। मैंने इसकी देखभाल की है ताकि कोई इसे न ले सके, यही मेरा कर्तव्य है। बाबा ने संगीत के लिए इस संस्था की स्थापना की थी। मैं भी नहीं चाहता कि इसका इस्तेमाल किसी और काम के लिए हो। अब, मैंने गरीब विद्यार्थियों को इस इमारत में रहने के लिए रखा है। अगर आप यहाँ आकर यह ज़िम्मेदारी संभाल लें, तो मुझे भी थोड़ी राहत मिलेगी। अगर आप मुझे कुछ कपड़े दे दें और संगीत सिखा दें, तो बाबा के आने पर मुझे ज़रूर शांति मिलेगी। क्या यह दो दिन का काम है? हम अन्य ट्रस्टियों की बैठक भी कर सकते हैं और इस मामले पर फैसला ले सकते हैं।’
वह हीराराम में तीन दिन रुके। हर शाम, वह हीरा की पौड़ी जाते और नदी में आरती करते। वह बैठकर दूसरे तैरते हुए जानवरों को भी देखते। उन्हें वे दिन याद आए जब इस जगह पर भजन गाते हुए उन्हें रोमांच होता था। उन्हें अपनी माँ की भी याद आई। वह उस झोपड़ी को देखने भी गए जहाँ वह अपनी माँ के साथ रहते थे। जैसा कि उम्मीद थी, वहाँ फ्लैटों वाली तीन मंजिला इमारत खड़ी थी। ट्रेन से लौटते समय मैं खुश था। अचानक मेरे मन में एक अप्रत्याशित विचार आया। वह हीरासर के शांत गाँव के बाहरी इलाके में चार एकड़ ज़मीन पर बने एक भवन में गुरुकुल चलाने के इरादे से वहाँ आए थे। अब इस गुरु द्वारा स्थापित आश्रम स्वतः ही उनके हाथ में आ गया था। दो-तीन लाख रुपये खर्च करने पर भवन

और आसपास का परिसर जीर्णोद्धार और रंगाई का काम हो जाएगा। पंडित मोहनलाल के गुरुकुल में मुफ्त उच्च शिक्षा।
अगर व्यवस्था की गई तो छात्र भी आएंगे। मुझे कार्यक्रम के लिए भी मदद की जरूरत है।
हर तरफ से निमंत्रण आ सकते हैं। इन दो कार्यक्रमों से आश्रम का एक साल का खर्च आसानी से निकल जाएगा। अगले छह-सात वर्षों में मैं सात-आठ गायक तैयार कर लूँगा जो मेरा नाम गाएँगे। इस विचार से मेरा मन संतुष्ट हो गया। मैं बाबा की तरह शुद्ध भक्ति का उपदेश नहीं दूँगा; लेकिन साथ ही, मुझे आलस्य का अवसर भी नहीं देना चाहिए। अब मैं पचास वर्ष का भी हो गया हूँ। क्या इसके बाद भी भक्ति का पालन करना मेरे लिए संभव है? मुझे अपने भीतर से कोई निश्चित उत्तर नहीं मिला। किसी कारणवश, मैं आश्रम में नहीं रहना चाहता। मैं थोड़ी दूरी पर रहना चाहता हूँ। अगर मैं बच्चों के सामने निरंतर रहूँगा, तो वे भी सहज महसूस करेंगे।
सूंघ नहीं सकता।

□

घंटी की आवाज़ सुनकर उसने दरवाज़ा खोला। उसे इस समय उसके चेहरे के भावों की उम्मीद थी। उसने कहा, 'मैं हरिद्वार से आ रही हूँ। मेरा सूटकेस टैक्सी में है। क्या आपके पास रात रुकने की जगह है? अगर नहीं, तो मैं पास के किसी होटल में रुक जाऊँगी और सुबह आपसे मिलने आऊँगी। मेरे पास और कोई काम नहीं है। आपसे मिले हुए बहुत समय हो गया है, इसलिए आई हूँ।'
वह कुछ पल चुप रही। फिर, खुद को संभालते हुए उसने कहा, "आपको क्यों लगता है कि जगह है? मुझे आश्चर्य है कि इसकी ज़रूरत है या नहीं।"
उसके मुंह से आती धुएं की गंध उसकी नाक को चुभ रही थी। उसे लगा जैसे उसकी बुद्धि थोड़ी मंद पड़ गई हो। उसने कहा, 'शब्द का यही अर्थ है। अब और बहस न करें, ट्रेसी। मुझे अपना जवाब बताओ।'
"मैं कुछ नहीं कहूंगी। अगर वे आना चाहते हैं, तो वे अपने सूटकेस लेकर सीधे घर जा सकते हैं!" वह गुस्से से हंस पड़ी।
जैसे ही मैं अंदर दाखिल हुआ, मेरे सामने गु जी की एक तस्वीर दिखाई दी जिसमें उन्होंने फूलों की माला पहनी हुई थी। इससे पता चलता है कि गु जी हमेशा इसी जगह पर सुंदर ढंग से बैठती थीं। मेरे सामने रखी छोटी चायदानी पर एक थाली थी जिसके तल में एक चाबी लगी हुई थी। उसके बगल में एक छोटी थाली में नमकीन रखा हुआ था।
उसने सूटकेस ज़मीन पर रखा और कुर्सी पर बैठ गया। वह भी उसके सामने बैठी थी। बिना कुछ कहे। मानो उसके पास कहने के लिए कुछ बचा ही न हो। दस मिनट इसी खामोशी में बीत गए। अंत में उसने सोचा, 'क्या मैं थोड़ा लूँ?'
'नहीं।'
वह फिर बैठ गई और चुपचाप बैठी रही। फिर उसने दोबारा कहा, ‘आओ! इससे मेरे पेट का जहर निकल जाएगा!’ इस पर उज्जाद ने कहा, ‘मुझे याद नहीं मैंने क्या कहा।’ ऐसा कहा जा सकता है।’ हालांकि उसका उच्चारण सही है, लेकिन उसकी बोलने की गति बहुत धीमी है।
होता.
‘इसमें कितने खूंटे हैं?’ उसने सोचा।
मैं अपने सामने कोई बोतल नहीं रखता। काम खत्म होने पर मैं बोतल को अलमारी में रख देता हूँ।
‘यह गुरुजी की शिक्षा थी। मैंने भी इसे देखा है!’

उसने अपना सिर हिलाया। थोड़ी देर बाद उसने कहा, 'मुझे भूख लगी है। क्या घर पर खाना है? या आस-पास कोई होटल है?'
‘इस घर में A या N नाम का कोई व्यक्ति नहीं है, ऐसा कभी नहीं होता!’
बेडरूम के बगल वाले बाथरूम में नहाकर वह नीचे आया। कपड़े बदलते-बदलते उसने मेज पर दो थालियाँ रख दी थीं। जब वह आया, तो उसने खुद से तैयार की हुई समजी, दाल और रोटी परोस रखी थी। जब उसे थोड़ी भूख लगी, तो वह वापस चला गया। मेज पर लौटकर उसने सोचा, 'तुम कहाँ गए थे? अचानक कैसे आ गए?'
उन्होंने कहा। इसके बाद उन्होंने हीरार स्थित ओंकार आश्रम में ठहरने के विचार के बारे में बात की।
जैसे ही उसने उसे दिखाया, वह हंसने लगी। उसने उसकी ओर देखा। लंबे, लहराते सफेद बाल, केसरिया कुर्ता, माथे पर बड़ा सा गंजा! वाह! मुझे लगता है कि वह जय मोहन बाबा बनेगा! उसे बातों में अभिनय का पुट जोड़ने की आदत थी। अचानक प्रकट हुए उसके अभिनय कौशल को देखकर वह हंसा; लेकिन वह तुरंत गंभीर हो गई। वह नींद में लग रहा था। वह भी हाथ धोने के लिए सिंक के पास गया। बिना कुछ कहे, उसने उसका सूटकेस उठाया और ऊपर चली गई। वह भी उसके पीछे गया। ऊपर का कमरा उसे जाना-पहचाना लगा। अपना सूटकेस पलंग के पास रखकर वह चारपाई पर बैठ गई। वह लेट गई। दो मिनट के भीतर ही वह गहरी नींद में सो गई।
वह असमंजस में था। उसने सोचा कि बारिश की वजह से वह सो गई है, तीन-चार घंटे में जाग जाएगी; लेकिन हम कहाँ सोएँ? ऊपर वाले कमरे में एक बड़ा सा पलंग था। दूसरे कमरे में भी एक पलंग था। पता नहीं वह क्या सोच रहा था! उसने मुझे इस कमरे में सुलाया और पूछा: क्या तुम नीचे वाले पलंग पर आने वाली हो? या वह मेरे साथ सोना चाहता था? उसने बाहर का दरवाजा और बत्ती बंद नहीं की थी।
वह नीचे गया और उसे बंद कर दिया। उसने उसे एक तरफ हटा दिया और सो गया। उसने उसे ढक दिया।
यह सुनकर वह नशे की हालत में बेहोश हो गई।
क्या वह हर दिन इतना दर्द सहती है? अकेले रहने वाले किसी व्यक्ति के लिए इस तरह सहना ठीक नहीं है। उसे डर लगा। उसने पर्दे से छनकर आती धूप में उसे देखा। उसे ऐसा लगा जैसे वह उसकी साँसें ले रहा हो, मानो वह खुद बेबस हो।
उसे उस पर तरस आया। तकिए की ओर मुड़कर उसने अपना हाथ उसके शरीर पर रख दिया।
इससे भी उसे कोई परेशानी नहीं हुई। थोड़ी देर में वह भी सो गया।

जब वह जागा, तो रात खत्म हो चुकी थी। उसे यह समझने में थोड़ा समय लगा कि वह कहाँ है। वह भी उसके बगल में लेटी हुई थी। उसने मुड़कर उसे देखा।
उसने कहा, 'जब तक तुम जाग नहीं गए, तब तक तुम्हें इसकी गंध नहीं आई।'
"तुम क्यों जागे?"
"यह आधा घंटा या पंद्रह मिनट रहा होगा।"
उसने उसका हाथ पकड़ा। उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। उसने उसका हाथ छुड़ा लिया।
उसने उसे ले लिया। वह हँसा और बोला, 'मुझे नहीं पता कहाँ सोऊँ। जब तुम जाग नहीं रहे थे, तब मैंने यहाँ सोने के बारे में सोचा भी नहीं था।'
वह कुछ नहीं बोली।
"मैं इसी कमरे में इसी सोफे पर सोता हूँ," उसने उठते हुए कहा।
"क्या तुम मुझे अपमानित करने के लिए उठे थे?" उसने सजा भुगतते हुए पूछा। 'रात में-'
"मुझे भी वो घटना याद है। मैं ही वो सूटकेस यहाँ लाया था, है ना?"
'हाँ।'
"क्या तुम जाग रहे हो? सो जाओ। अभी बहुत जल्दी है।"
उसने भौंहें चढ़ाकर हाथ हिलाते हुए सोचा, "क्या तुम हर दिन इतना ही खाते हो?"
‘इसके लिए सिर्फ एक खूंटी ही काफी है।’
लेकिन पहले तो तुम इतना नहीं लेते थे। तुम तो सिर्फ गुजी को ही देते थे। "उनके जाने के बाद, मैं भी उसी कोटे में आने लगा। नहीं तो, उनकी मृत्यु के बाद वे कैसे जीवित रह पाते?"
‘कल तुमने इतनी ज्यादा मात्रा में क्यों लिया?’
‘कल हैदराबाद से लौटा। मातृ दिवस मनाने के बाद वापस आया। थोड़ा और आगे जाने का मन हुआ।’
उसे यह भी पता था कि उसकी अपनी माँ से ज़्यादा संपर्क नहीं था। लड़की गुस्से में हैदराबाद चली गई थी क्योंकि उसने मानव का विवाह प्रस्ताव ठुकरा दिया था।
‘तुम अपनी माँ से कब से मिलने लगे?’
‘यह कभी काम नहीं आया। मुझे नहीं पता था कि मेरी माँ इतनी ज़िद्दी हैं। उन्होंने मुझे कभी डांटा नहीं। उस दिन मेरे भाई ने मुझे फोन किया। न केवल

गुजी चली गई थीं, बल्कि मैं अकेली भी हो गई थी। मैं दस दिनों तक व्यायाम करना चाहती थी। कल मैं घर गई और इतना अकेलापन महसूस किया जितना मैंने पहले कभी महसूस नहीं किया था। मैं इसे कैसे सहन कर सकती थी? इसलिए मैंने थोड़ा आराम ले लिया।’
वह उसे देख रहा था। उसकी निगाहें छत पर टिकी हुई थीं। कुछ कहना चाहकर उसने कहा, "अगर मैं एक घंटा पहले आया होता, तो तुम इतना सब कुछ नहीं लेतीं, है ना?"
‘मैं?’ वह रुक गई। वह कुछ कहना चाहती थी, लेकिन उसने खुद को रोक लिया। फिर वह हंस पड़ी, ‘अगर तुम दा चाड से पहले आए होते, तो मैं ट्रेसी के सामने तुम्हारी बेइज्जती करती; लेकिन तुम यह कहते हुए चले जाते, ‘मैं तुम्हें फिर कभी नहीं देखूंगी!’
वह गंभीर हो गया। उसका मन कर रहा था कि उठकर सामने वाली कुर्सी पर बैठ जाए और बात करे; लेकिन जाने का मन नहीं कर रहा था। उसकी निगाहें अब भी छत पर टिकी हुई थीं। उसके चेहरे पर हठ का कोई निशान नहीं था। उसकी आँखें चमक रही थीं।
उसे उस पर दया आई। उसने अपना दाहिना हाथ उसके शरीर पर रखा।
अफवाह साफ थी। उसने उसे अपनी ओर मोड़ा। उसने उसे अपनी बाहों में भर लिया।
‘धत् तेरे की!’ वह एक तरफ मुड़ गई। उसके चेहरे पर शिकन थी। उसकी तरफ मत देखो।
उसने उसे कसकर अपनी बाहों में भर लिया। उसने कोई विरोध नहीं किया। उसने अपना हाथ उसके सिर पर रख दिया।
उसने उसे थपथपाया। अचानक, वह ऐसे रोने लगी जैसे उसका कोई बांध टूट जाएगा। उसका सीना आंसुओं से भीग गया था।
"क्या तुम्हारी माँ को सच में तुम्हारी परवाह थी?"
'मेरी मृत्यु तक उसने मुझे दूर रखा। मेरी समझ में वह एक कठोर दया वाली महिला थी। उसकी कठोरता क्षणिक थी और उसका प्यार स्थायी लगता था।'
उसका रोना थम गया था। वह अब भी उसकी पीठ थपथपा रहा था। वह फिर से सो गई। वह भी फिर से सो गया।
जब वह जागा, तो सूरज काफी ऊपर चढ़ चुका था। वह भी उठी और डूब गई थी।
वह नहाने के बाद नीचे आया और बोला, "माँ, इधर आओ और सब कुछ धो दो।"

खबर सुनते ही वह रुक गया। गाना बंद हो गया, लेकिन उसने डफली बजाना बंद नहीं किया। वह लड़की भी कुछ देर तक आंखें बंद करके बैठी रही। फिर उसने आंखें खोलीं और उठ खड़ी हुई, और बोली, ‘डफली बजाना बंद मत करो। मैं आ गई हूं—’ और बिना कुछ कहे नीचे चली गई। वह तुरंत उठ आई, साड़ी की जगह सलवार कमीज पहने हुए। उसके दाहिने हाथ में घुंघरू की माला थी।
उसने पु हा से कहा, 'डफ मत बजाओ। बैरागी भैरवम् ये विलम्बित तीन तलत लहरा धार। वे मुझसे कहते हैं कि थोड़ा नाचो।
उसने अपने दोनों पैरों में घंटियाँ बाँध लीं। उसने दाहिना हाथ दिखाते हुए लहराया। वह नाचने लगा; लेकिन जल्द ही उसने अभिनय करना शुरू कर दिया।
ब्रह्मांड से उत्पन्न होने वाली भावनाएं अभिनय के माध्यम से व्यक्त होती हैं, और नृत्य भी कुछ इसी प्रकार का होता है।
उसने प्राथमिकता देना शुरू कर दिया। वह भी उसकी भाव-भंगिमा को उत्सुकता से देख रहा था। फिर उसने थोड़ा दिखावा किया।
कुछ देर इंतजार करने के बाद, वह उनके बगल में बैठ गई और हंसते हुए बोली, 'मैं अभिनय के माध्यम से बैरागी भैरव का चित्रण नहीं करना चाहती थी। आपको सुनते हुए मुझे भी नाचने का मन हुआ, इसलिए मैं नाचने लगी। अन्यथा, आपके क्रोध से उत्पन्न शांति मेरी आत्मा तक नहीं पहुंच पाती।'
वह बिना कुछ कहे नीचे चली गई। वह चाय, बिस्कुट, कटे हुए सेब और केले लेकर ऊपर आई। एक केला छीलकर उसे देते हुए उसने सोचा, 'इन सबमें किस तरह का कार्यक्रम चल रहा है?'
'नहीं।'
“तो फिर एक हफ्ते यहीं रुकिए। इसके बाद जब भी आप दिल्ली आएं, यहीं उतरें। होटल में मत उतरिएगा। अगर कोई पूछे तो साफ-साफ कह दीजिएगा कि आप मनोहरी होटल में उतरने वाले हैं। भला किसी को डर क्यों लगेगा?”
उन्होंने भी सहमति में सिर हिलाया।

इक्कीस

१
एक दिन वह बोरीवली मिल आया। रामकुमारी सब्ज़ियाँ चुन रही थी। उसे उसके चेहरे के भावों का अंदाज़ा था। उसे यह उम्मीद नहीं थी कि वह सब कुछ भूल जाएगी। वह मुंबई छोड़ने से पहले उससे एक बार मिलने के इरादे से ही आया था। वह बिना कुछ कहे सोफे पर बैठ गया। उसका पूरा चेहरा सफ़ेद पड़ गया था। वह सिर झुकाए एक-एक करके सब्ज़ियाँ चुन रही थी। मोहनलाल, जो सोच रहा था कि उसके बाल घने हैं और अगर वह उन्हें रंग ले, तो पंद्रह साल छोटी दिखेगी, समझ नहीं पा रहा था कि बात कहाँ से शुरू करे।
उसने बोलना शुरू किया, "क्या तुम्हें शर्म नहीं आती कि तुम मेरे नाम वाले घर में आकर रहने लगे हो? क्या तुमने इस बारे में सोचा भी था या नहीं?" हालांकि उसे याद था कि उसने पिछले समूह से भी इसी तरह की टिप्पणी की थी, लेकिन उसने बिना दिखाए हंसते हुए कहा, "तुम लोग क्या बात कर रहे हो? मुझे तो कुछ समझ ही नहीं आया।"
"क्या आपने मुझे बताया था कि यह घर आपके नाम पर है? क्या आपने पैसों का लालच देकर मेरे पाले-पोसे बच्चों को मुझसे छीन लिया? मैं यहाँ नहीं रहती। मुझे यहाँ रहना बहुत पसंद होता।"
उसे उसकी बात समझ नहीं आई। उसने आगे कहा, "वैसे तुम यहाँ हो ही क्यों?" क्या तुमने इस बारे में सोचा? मैं यहाँ इसलिए नहीं आई क्योंकि मेरे पास रहने के लिए कोई और जगह नहीं थी। जब तक मेरी माँ घर पर थी और घर के सारे काम संभाल रही थी, तब तक उनमें से किसी को भी उसकी परवाह नहीं थी। जब मैं यहाँ आई, तो मैंने खाना बनाने, घर की सफाई करने और बच्चों की देखभाल करने का फैसला किया।
उनकी देखभाल कौन करेगा, उनके कपड़े कौन धोएगा और इस्त्री कौन करेगा? भाई-बहन आपस में झगड़ने लगे। उन्हें भूखा रहना पड़ रहा था और वे संघर्ष कर रहे थे! अब वे क्या करेंगे? आखिरकार उन्हें खाना मिल गया! वे खाने के लिए गोरे साहब के घर काम करते हैं। उसके बाद वे यहाँ आकर उन दोनों की सेवा करते हैं। उन्हें बुरा लगा कि आप को इस बारे में कुछ पता नहीं था। तीन साल पहले बकुले से फोन पर हुई बातचीत के बाद से वह अब भी नाराज़ थीं। उन्होंने बेंगलुरु

में अविनाश को फोन किया और बताया, 'अब मेरे पिता ऑफिस का इंतज़ाम करके शादी करवाने को तैयार हैं।' लेकिन अविनाश यही कहते रहे, 'मेरी शादी हो चुकी है,' और रस्सी पकड़े रहे। उन्होंने मोहनलाल को दोषी ठहराते हुए कहा, 'तुम ही हो जो मेरी ज़िंदगी बर्बाद कर रहे हो।'
इस घटना के बाद उसने उसे फोन किया और कहा, 'जो हो गया सो हो गया। कोई दूसरा पति ढूंढ लो। मैं दहेज के रूप में पांच लाख रुपये देने को तैयार हूं। अगर तुम दहेज देने को तैयार हो, तो बच्चे शादी के लिए तैयार हो जाएंगे।'
‘आप ये क्या बकवास कर रहे हैं, पिताजी! अगर लड़की दहेज मांगेगी तो क्या उसे बच्चे होंगे? असल में, आपको लड़की के लिए लड़का ढूंढना चाहिए और फिर आगे का फैसला करना चाहिए; लेकिन अगर आप इसमें दखल देंगे तो कोई भी मुझसे शादी करने को तैयार नहीं होगा! मैं कुछ छुपाकर खुद से शादी नहीं करना चाहती। मैंने एक बार ये गलती करके बहुत दुख झेला है! आपने हमें जन्म दिया; लेकिन मैंने आपकी देखभाल नहीं की। आप कभी हमारे साथ नहीं रहे। हमारी मां ने हमें दूसरों के घरों में पाला। इसके अलावा, आजकल अखबारों में आपके बारे में बहुत खबरें आई हैं। अगर आप मुझे ढूंढने भी जाएंगे तो भी मेरे लिए पति मिलना नामुमकिन है। कोई भी परिवार-उन्मुख व्यक्ति सिर्फ पांच लाख की उम्मीद में मुझसे शादी नहीं करेगा। एक अच्छे परिवार को इस लड़की की उम्मीद है। मेरी राय में शादी ऐसी नहीं होती। माफ कीजिए! ये मेरा दफ्तर है। मैं ज्यादा बात नहीं कर सकता। बात करने का क्या फायदा!’ उसने कहा था।
इसके बाद उसने उसे फिर कभी फोन नहीं किया। उसे फोन करने की हिम्मत भी नहीं हुई।
हिम्मत न होने के ख्याल से ही वह अंदर से टूट रहा था; लेकिन उसने इसे ज़ाहिर नहीं किया। उसके मन में आया, मुझे अब इस बारे में सोचना चाहिए, इसके बाद बाकुले ने क्या किया? तुमने उसके लिए क्या करने की कोशिश की? बूढ़े आदमी को इसका जवाब पता था –
अगर कोई महिला आत्मनिर्भर बनने की कोशिश करे, तो उसे उपयुक्त पति कहाँ मिलेगा? सिवाय तुम्हारे।
कौन जाने बाकुले ने फोन पर हुई बातचीत के बारे में अपनी मां को बताया या नहीं।
उन्होंने सब कुछ एक तरफ रख दिया और मुख्य विषय पर आ गए, 'देखो, मैं मुंबई छोड़कर हीरा चला गया था।'

मैं जा रहा हूँ। मैं वहाँ एक गुरुकुल आश्रम स्थापित करने जा रहा हूँ। मैं अपना शेष जीवन तपस्या में व्यतीत करने जा रहा हूँ। तुम्हारे घर के पास। हम दोनों एक ही कुल के हैं। जो होना था वही हुआ। नियति में जो लिखा है उसे कोई नहीं भूल सकता। तुम मेरे साथ आओ। हम साथ रहें। मैं एक ही प्राण रखूँगा। भविष्य में सुखमय जीवन व्यतीत करो! चाहे कुछ भी हो जाए, तुम मेरी पत्नी हो! उसकी तीखी निगाहें उस पर टिकी थीं। उसने कहा, “इतने वर्षों से मैं लोगों के घर में रसोइया का काम करती आ रही हूँ, बच्चों की देखभाल करती हूँ और उन्हें पालती-पोसती हूँ। अब तुम मुझे रसोइया के हाथों से खाकर सुखी जीवन जीने की सलाह देने आए हो? क्यों? क्या धर्म के विद्वानों ने मुझे सिखाया है कि केवल पत्नी के साथ ही सोना चाहिए और दूसरी वेश्याओं को नहीं छूना चाहिए? ऐसे में क्या तुमने मुझे बच्चों से दूर रखने और उन्हें अपने साथ भेजने का फैसला कर लिया है?”
उसे इस बात का अफसोस हुआ कि उसने यह सुझाव उसे नहीं दिया। उसे यह सुझाव नहीं देना चाहिए था; लेकिन वह हार नहीं मानना चाहता था, और उसने कहा, "वह पैंतीस साल की है और वह तैंतीस साल का है! वह खुद देखने के लिए काफी बड़ी है।"
‘अगर तुमने ठीक से काम किया होता या अपनी रोजी-रोटी कमाई होती, तो तुम भी इन्हीं पैरों पर खड़े होते। तुमने बच्चे को दो लाख रुपये दिए! बच्चे ने अपनी नौकरी छोड़ दी और अपना कारोबार शुरू कर दिया। पैसा भी गायब हो गया। अब फिर से गोरे साहब के पैर पकड़कर उनसे कहना पड़ रहा है कि ‘उसे नौकरी दिलवा दो’! यही है वो मदद जो तुमने बच्चे को दी!’ फिर वह सब्ज़ियाँ, एक थाली और एक चाकू लेकर रसोई में चली गई। उसे भी कुछ और कहने को सूझा नहीं।
वह उठा। उसने चप्पल पहनी और बाहर चलने लगा। मैंने उसे बुलाने की कोशिश की, लेकिन वह नहीं आई, अब मैं क्या करूँ? उसने खुद को तसल्ली दी और चलने लगा।

२
अगले दिन, सुबह करीब दस बजे, वह कुयाल गया। वही लट्टे जिसे उसने पच्चीस साल पहले देखा था। 'मोहन संगीत महाविद्यालय' का एक बड़ा बोर्ड लगा हुआ था। उसे लगा कि वह किसी खास मकसद से आया है। वह फोन पर बात करके मामला खत्म कर सकता था। फिर भी, उसने सोचा कि आमने-सामने बात करना ज्यादा उचित होगा। उसने घंटी बजाई। उसने काफी देर तक दरवाजा नहीं खोला। चंपा दरवाजे पर खड़ी थी। उसका शरीर पहले से भी लंबा लग रहा था। रंग वही गोरा था। उसने अपने बालों की चोटी बनाई हुई थी, जिन्हें उसने डाई से काला रंगा था। उसके सिर पर सोने के फ्रेम वाला चश्मा था। उसने सोने की परत चढ़ा हुआ कुदाल, सोने का हार, हीरे जड़ी चूड़ियाँ और चांदी की साड़ी पहनी हुई थी। हालांकि वह एक पल के लिए चुप रही, लेकिन तुरंत सवाना के पास चली गई।
वह अंदर गया और देखा। दीवार के सहारे कई डफ रखे हुए थे। दो
वहाँ एक हारमोनियम का डिब्बा और दो तबले थे। बैठक कक्ष सजा हुआ था। एक मेज थी। वह गायन कक्षाओं का स्थान था। वह एक सुव्यवस्थित विस्तारित संगीत विद्यालय जैसा दिखता था। एक दीवार के सहारे सोफा रखा था। दीवार पर उनकी एक बड़ी तस्वीर लगी थी।
वह सोफे पर बैठ गया। फिर उसने कहा, 'कहीं भी बैठ जाओ। अपने घर में, अपने स्कूल में। यहां तक कि किसी एकांत जगह पर बैठने में भी कोई दिक्कत नहीं है।'
वह दंग रह गया। क्या वह जीत गई? क्या मैं हार गया? या वह नहीं जीती? वह बहुत हैरान था।
वह बैठ गया। घर में कोई और नज़र नहीं आ रहा था। वह भी आराम से बैठी थी, मानो उसके बगल में, अपने पति के बगल में बैठी हो। वह बिना एक भी अपशब्द बोले, बिना कोई जवाब सोचे बैठी थी। जब वह सोच रहा था कि बात कैसे शुरू करे, तभी उसने बोलना शुरू कर दिया।
‘मुझे कल श्रुति का फोन आया था। बहुत बढ़िया, हनाली। मेरे पास एक अच्छी खबर है, अपने पिताजी को भी बता देना।’
उसने सोचा, "वह कहाँ है?"
युजिसित। उनके पति ने भी कहा, 'मैंने पाजी से मुलाकात नहीं की है। अगर अगले बैच में अमेरिका का दौरा होता है, तो उन्हें दो महीने हमारे घर पर रुकना

चाहिए, यहां एक कार्यशाला करनी चाहिए, लेकिन इस समय वे भारत में नहीं हैं, उन्हें मेरा प्रणाम कहना।' उन्होंने आगे कहा, 'और उन्हें यह खुशखबरी भी देना कि वे दादा बनने वाले हैं।'
अब मोहनलाल को लगा कि वह बातचीत में उलझ रहा है। वह तो बोलने में पहले से ही माहिर था! अब वह और भी उलझन में पड़ गया। उसने मुड़कर उसकी ओर देखा। उसने आगे कहा, 'मैं भी उसे हर रविवार को फोन करती हूँ। उसका नाम मोहन है।' कुछ दोस्तों का कहना है कि इस देश में बच्चे का नाम किसी देवता के नाम पर रखने की प्रथा है।
ये रही आपकी और भी कैसेटें। कैरोलीन को भी आपका संगीत बहुत पसंद है। वो कहती है, "माँ, यहाँ आओ, तीन महीने रुको और मुझे संगीत सिखाओ।" (अंग्रेज़ लड़की)
हालांकि, भारतीय दुल्हन ने इसे अच्छी तरह से अपना लिया है।
फिर भी, वह बिना कुछ कहे उसके चेहरे को देखता रहा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या कहे। उसने फिर वही बात दोहराई, 'चलो साथ चलते हैं। दो महीने लड़के के साथ और दो महीने लड़की के साथ। देखते हैं कि दोनों अपनी-अपनी गतिविधियों को संभाल पाते हैं या नहीं। वहाँ का माहौल अब अच्छा है।' उन्हें रोककर उन्होंने मुंबई छोड़कर हीराहर जाने और वहाँ ओंकार आश्रम स्थापित करने का अपना विचार बताया। फिर उन्होंने कहा, “वैसे भी, पिछले पच्चीस वर्षों से हमारे बीच कोई संबंध नहीं रहे हैं। बेहतर होगा कि हम इसे कानूनी रूप से करें। बेवजह का हंगामा करने का कोई फायदा नहीं है। अगर हम दोनों को कोई आपत्ति नहीं है, तो हम इसका जल्द से जल्द समाधान निकाल लेंगे।”
‘घाट फोट!’ उसने अपने दोनों हाथ कानों पर रख लिए। ‘मुझे नहीं पता तुम नागपुर से कहाँ चले गए। बाद में मुझे पता चला कि तुम दिल्ली में एक नर्तकी के साथ रह रहे थे। मैं तो बस तुम्हें ठेकेदारों से सावधान रहने के लिए कह रहा था; लेकिन तुम गायब हो गए! इतने सालों में मैंने ऐसा कुछ नहीं किया जिससे तुम्हारा नाम खराब हो। मैंने तुम्हारे बच्चों को पढ़ाया-लिखाया है, उन्हें नाम नहीं दिया। अब किस आधार पर तुम घाट फोट मांग रहे हो?’
‘मैं उस विरोधी से निपटने नहीं गया था। जब मैंने पाँच साल की बेटी, एक गर्भवती बच्ची और देवसम मंगलसूत्र पहने पत्नी का चेहरा देखा, तो तुमने कसम

खाई थी कि यह बच्चा मेरे गर्भ में है, है ना? इसलिए मैं तुम्हें छोड़कर चला गया।’
‘क्या मैंने बेवजह हंगामा किया? एक आदमी कितनी पत्नियां रख सकता है?’ "क्या तुमने मुझसे तब भी शादी नहीं की जब तुम्हें पता था कि मेरी एक पत्नी है?"
'पंजीकरण के बाद अपने लाइसेंस को मुक्त करना आपका कर्तव्य था।'
‘जी? कितना था? इसीलिए तो मुझे हिस्सा चाहिए! लैट, मेरे पास सबूत है कि बैंक में ये जमा राशियाँ आपसे ही प्राप्त हुई थीं। मैं यह भी देख सकता हूँ कि पच्चीस वर्षों से हमारा कोई संबंध नहीं रहा है। ज़्यादा से ज़्यादा, आप कोटा थोड़ा बढ़ा सकते हैं। मैं आपको एक पैसा भी दिए बिना अपना हिस्सा ले लूँगा!’
‘आप इतनी ज़िद क्यों कर रहे हैं? चलिए, मैं हीरार स्थित आपके गुरुकुल आश्रम में आ जाता हूँ। आपको आश्रम की देखभाल के लिए किसी की ज़रूरत तो है ही, है ना?’
‘मुझे पता है तुम जलवा जाति के हो। अगर तुम ईमानदारी से इस दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर कर दोगे तो ठीक रहेगा। वरना मैं किले पर जाऊँगा। मेरा नाम कागज़ात में कई बार आ चुका है। परंजपे तुम्हारे पिता का शिष्य है, है ना? मैं ये सब बातें बाकी पुराने कागज़ात में भी लिखवा दूँगा!’ इतना कहकर वह वहाँ से चला गया।
जब मैंने दो दिन बाद फोन किया, तो उसकी आवाज बदल चुकी थी।
‘आप डाउन पेमेंट पर इतना ज़ोर क्यों दे रहे हैं, यह साफ़ ज़ाहिर है! आपने अपनी सारी जमा राशि खर्च कर दी है। दो बच्चों का पालन-पोषण, उनकी शिक्षा और रोज़मर्रा के खर्चे जैसी छोटी-मोटी चीज़ें क्या मायने रखती हैं? अगर आप डाउन पेमेंट नहीं भी देते हैं, तो मेरे लिए कुछ इंतज़ाम तो कर ही दीजिए।’ "जो कहना चाहते हो, उसे स्पष्ट रूप से बोलो।"
अगर नहीं, तो तुम भिक्षु बन जाओगे और हीराआर जाओगे। तुम्हारी दासी के पास दो लट्टे हैं, है ना? मुझे दे दो।
वह मन ही मन हँसा।
तो फिर मैं सोने की भीख क्यों मांगूं? अगर तुम लालची हो, तो मैं तुमसे तुम्हारी सारी दौलत का हिसाब लूंगा!

अंततः, यह एक मिलियन तक पहुँच गया। पैंतीस वर्षों के बाद, यह पाँच मिलियन के लिए तैयार हो गया।

३
अगले दिन, सुबह की चाय और नाश्ता करने के बाद, मैंने एक टैक्सी ली। टैक्सी पनवेल की ओर चल पड़ी। हालाँकि मैंने गाँव का नाम सुना था, लेकिन उसे देखा नहीं था। मैंने बस स्टैंड के पास तीन जगहों पर पूछताछ की और पता चला कि यह मुंबई की एक महिला का फार्महाउस है जो गीत गाती है, जो वहाँ से तीन किलोमीटर दूर है। उनमें से एक ने मुझे वहाँ का रास्ता भी बता दिया।
उसने फार्महाउस के गेट के पास टैक्सी खड़ी की और गेट से अंदर चला गया। वहाँ आम के पेड़ थे, इक्का-दुक्का नारियल के पेड़ और दो बड़े बेर के पेड़ थे। बीच में एक छोटा सा दो मंजिला मकान था। उसे लगा कि यह जगह हीरा के ओंकार आश्रम जैसी खूबसूरत है। जैसे ही वह मकान के पास पहुँचा, एक कुत्ता भौंकने लगा। कुत्ता बंधा हुआ था। भूरे बालों वाली एक गाँव की महिला अंदर से निकली और पूछताछ करने लगी।
‘मैं मधुमिताबाई से मिलना चाहता हूँ। मैं मुंबई से आया हूँ।’
‘बैठ जाओ, मैं तुम्हें बुला रहा हूँ।’ फिर उसने आँगन में एक तहबंद लोहे का स्टूल रखा और दाईं ओर चला गया। स्टूल पर बैठे बिना ही वह उसके पीछे-पीछे चल दिया। वहाँ चार गमले लगे थे। एक महिला पास के आँगन में लगे नल से प्लास्टिक के जग में पौधों को पानी दे रही थी। उसने एक साधारण सूती प्रिंटेड साड़ी पहनी हुई थी। उसने रात के लिए अपना सिर ढँक रखा था। ‘यह मधुमिता है!’ महिला ने पुकारा। जैसे ही वह मुड़ी, उसने उसे पहचान लिया। उसे पहचानते ही उसका चेहरा पीला पड़ गया। एक पल के लिए वह स्तब्ध रह गई। फिर होश में आकर वह हँसी, ‘महाल, मैं इस वड़ा के पेड़ के नीचे दो स्टूल रख देती हूँ। पानी लाना। फिर चाय और बिस्कुट लाना।’
जब तक वह स्टूल पर नहीं बैठी, तब तक उसने कुछ नहीं कहा। भला वह बोलना कैसे शुरू कर सकती थी?
मुझे समझ नहीं आया। वह सोफे पर बैठ गई और अपने सिर से चादर हटा ली। वह भी बैठ गया। उसने सोचा कि शुरुआत में पूछे, 'तुम्हारा संगीत अभ्यास कैसा चल रहा है?'
उन्होंने किसी भी बात का जवाब नहीं दिया।
‘आप यह कार्यक्रम कब से शुरू करने वाले हैं?’

सवाल का जवाब देने के बजाय, उसने पैच से पूछा, 'मुझे बताओ कि तुम सबसे पहले यहां क्यों आए थे।'
मैंने मुंबई छोड़कर हिंदुस्तान जाने और वहां एक छोटा सा गुरु कुल शुरू करने का फैसला किया। जाने से पहले, मैं यह पता लगाने आया था कि आपकी शिक्षाएं कहां हैं।
इस भाषण का प्रतिक्रिया पर कोई खास असर नहीं पड़ा। चुपचाप
उसने उसकी तरफ देखा और हंसते हुए कहा, "मैंने गाना छोड़ दिया है। इसका क्या मतलब है?"
नहीं। इसके बजाय, जमीन खोदने, बर्तन धोने या लॉन की सफाई करने जैसा कोई भी काम करें।
इसमें कुछ अर्थपूर्ण बात है।
वह काफी हैरान था। यह उसके लिए अप्रत्याशित था। 'तो फिर? लेकिन फिर कला?' ‘मैंने तुम्हें कला के बारे में बताया था, तो भी तुम्हें समझ नहीं आया!’ कहकर उन्होंने बात खत्म कर दी। महल एक कटोरा पानी और दो घड़े पानी लेकर आया और उन्हें लेटेक्स से बनी चायदानी पर रख दिया। मधुमिता ने पानी डाला और पूछा, ‘क्या आपको पानी चाहिए, पंडितजी?’
उन्हें इस बात पर गुस्सा आया कि गुजी की जगह पंडितजी को हटा दिया गया। चार साल बीत जाने के बाद भी उनके दिल में गुस्सा अभी भी बरकरार है। उन्होंने इस पर अपना गुस्सा न दिखाने का फैसला किया और पानी पी लिया।
चलो भी। सामान ने सारी गलतफहमियाँ दूर कर दीं। एक बात याद आई। वो तुम थे। उन्होंने कुछ नहीं कहा। ऐसा लग रहा था मानो वे अपने मनचाहे उत्तर के बारे में सोच रहे हों; लेकिन उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहें। अंत में उन्होंने कहा, ‘मुझे पता है कि आप मुझसे नाराज़ हैं, महोदय। गलतियाँ करना मानवीय कमज़ोरी है। आप यह भी जानते हैं कि दयालु होना एक दिव्य गुण है। मैं क्या कहूँ! मुंबई बुरे विचारों की जन्मभूमि है। मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि यहाँ रहकर मैं जीवन में कुछ भी अच्छा हासिल नहीं कर सकता। मैंने हीराहार जाने और अपने गुरु ओंकार बाबा द्वारा स्थापित आश्रम को आगे बढ़ाने का फैसला किया है, और कुछ पुराने छात्रों को भोजन और वस्त्र देकर संगीत की परंपरा को जारी रखने का भी।’
‘क्या आप अपना परिवार बढ़ाना चाहते हैं?’
‘मेरा परिवार?’

'हां। आपकी गायन शैली स्वतंत्र है। अगर आप ऐसे छात्रों से मिलते हैं जो इसे बढ़ावा देते हैं, तो वे प्रचार करेंगे कि आप इस समूह के परिवार का हिस्सा हैं। अगर आप ऐसा नहीं करते हैं, तो आपका नाम आपके साथ ही बर्बाद हो जाएगा। इसलिए आपने यह निर्णय लिया, है ना?'
यह अच्छा लगा।
‘टैम्बो की कसम, मैंने कभी इसके बारे में सोचा ही नहीं था!’
आपने शायद इस बारे में सोचा भी न हो; लेकिन बिना किसी कारण के आप इस तरह के गुरुकुल आश्रम के बारे में सोच भी नहीं सकते! अब इस पर विचार कीजिए। क्या यह विचार आपके मन में जरा सा भी नहीं है?
उसे कोई जवाब सूझ नहीं रहा था। क्या ऐसा हो सकता है? उसने मन ही मन सोचा। उसके भीतर के एक कोने ने सहमति जताई। फिर उसे बाकुले की कही बात याद आई, 'अगर अच्छा परिवार नहीं होगा, तो कोई और नहीं करेगा।' उसका दिमाग सुन्न हो गया। जाल की आवाज़ के बीच से कौवे की आवाज़ सुनाई दी, मानो आसमान से आ रही हो। क्या कौवा भूत का चेहरा नहीं होता?
कुछ देर बाद नौकरानी चाय और बिस्कुट लेकर आई। चाय पीते ही उसे थोड़ी उत्तेजना महसूस हुई। उसके मन में ख्याल आया, क्या उसने उसे यहाँ इसलिए बिठाया था क्योंकि यहाँ ठंड थी, या उसने उसे जानबूझकर बाहर बिठाया था ताकि वह अंदर न आए? एक पल के लिए उसने सोचा, क्यों न उससे सीधे पूछ ही लिया जाए? फिर उसने सोचा, यह तो उसे कुछ ऐसा सोचने पर मजबूर करने जैसा होगा जो उसके मन में है ही नहीं। वह भी चुपचाप बैठी रही और उसने चाय-बिस्किट की ज़िद नहीं की। यह सोचकर कि सिर्फ बैठने से कुछ नहीं होगा, वह हँस पड़ा।
पिछली बात भूल जाओ। अब उसे व्यर्थ करने का कोई मतलब नहीं। मेरा 'घाट फोटा' का काम पूरा हो रहा है। चंपा बिना किसी शिकायत के मरने को तैयार है। अगर तुम तैयार हो, तो मैं तुम्हारे साथ जुड़ने के इरादे से आया हूँ। मुझे नहीं पता तुमने अब तक कितना पढ़ा है। चाहे तुमने कितना भी पढ़ा हो, हारमोनियम गायन का सही अर्थ नहीं समझ पाया होगा। हीराराम, तुम मेरे पहले शिष्य बनोगे। अब मैं तुम्हें पूरे भारत में प्रसिद्ध करूँगा। एक दिन मैं देखूँगा कि तुम दोनों का मिलन हो और तुम्हारा नाम रोशन हो। बाद में तुम गुरुकुल आश्रम में बच्चों को भी पढ़ा सकोगे। धीरे-धीरे वह आश्रम, हमारी संगीत परंपरा, सब कुछ तुम्हारा हो जाएगा। अगले दिन, हमारी शादी के बाद, मैं एक पत्र लिखूँगा जिसमें यह लिखा होगा कि मेरी दोनों बेटियों, मेरे बैंक

खातों, मेरी सारी संपत्ति, मेरे संगीत और सब कुछ की एकमात्र वारिस तुम हो। मैं तंबो की कसम खाता हूँ कि इसके बाद मैं किसी और स्त्री को कभी हाथ नहीं लगाऊँगा।
यह कहकर भी वह चायदानी को देखता रहा। वह उसके चेहरे को देख रही थी। वह जानता था कि उसे जवाब देना चाहिए, कि जब तक समय अनुमति देता है, वह सहमति मान लेगा; लेकिन क्या कहना है, कैसे कहना है, यह मुद्दा नहीं था।
अचानक, पहला शब्द मेरे दिमाग में आया, और फिर बाकी सब कुछ मेरे दिमाग में आ गया।
‘क्या चंपाबाई, जिन्होंने आपको विवाह की सहमति दी थी, ने विवाह का पंजीकरण नहीं कराया था? मंदिर में विवाह करने वालों का न तो विवाह पर कोई अधिकार होता है और न ही गुजारा भत्ता पाने का। आप इस विवाह का क्या करेंगे?’ मैंने उससे हीरा जाने को कहा, लेकिन उसने इनकार कर दिया।
‘तुम्हारे न आने से दर्द खत्म नहीं हो जाता। हे ईश्वर, इसे जाने दो। मैंने गाना पूरी तरह छोड़ दिया है। इसका कोई मतलब नहीं रह गया है। फिर भी तुम्हें इसमें अर्थ दिखता है! क्या तुम खुद को इस दर्द के लायक समझते हो? यह तुम्हारी अपनी गलती है। इसी आध्यात्मिक संबंध के कारण ही तो तुममें इतनी हिम्मत है कि तुम मुझसे अपना शारीरिक और संगीतमय जीवन तुम्हारे साथ बिताने और तुम्हारे परिवार का पालन-पोषण करने के लिए कहते हो, है ना?’ बूढ़े व्यक्ति को उसके शब्दों का अर्थ समझ नहीं आया। फिर भी, उसने उससे कहा, "तुम
उसे अचानक एहसास हुआ कि वह उसे नैतिक रूप से उससे हीन बता रहा है। लेकिन वह ऐसी स्थितियों का आदी था, इसलिए उसने अपना संतुलन नहीं खोया और उसके चेहरे की ओर देखा। वह उठी, 'नमस्ते। मुझे काम है।' वह गमलों में पानी डालने चली गई। उसे लगा जैसे उसके पैर कांप रहे हों और वह कुछ देर वहीं बैठा रहा। नौकरानी चायदानी, चाय और बिस्कुट की ट्रे लेकर आई। इसके बाद, यहाँ बैठे रहने से अपमानित महसूस करते हुए, वह उठा और उस गेट की ओर चलने लगा जहाँ टैक्सी खड़ी थी।

४
इस प्रस्ताव ने उनके मन में एक खालीपन पैदा कर दिया था। चौदह साल पहले हमने लामा का जो प्रस्ताव प्रस्तुत किया था, वह इस अधार्म की कोई कल्पना नहीं थी। उस समय उन्होंने रामकुमारी को नहीं देखा था। लामा को यह भी लगा कि अगर उन्होंने उसे उस समय देख भी लिया होता, तो भी कोई खास फर्क नहीं पड़ता। वह एक भरी हुई केतली लेकर आई और उसमें से पानी निकालकर पौधों की कटी हुई टहनियों को भिगोने लगी।
उसके आने और जाने से उसके मन में आगे क्या करना है, यह सवाल और भी गहरा हो गया। उसे खाने-पीने और रहने की चिंता नहीं थी; पर करने के लिए कुछ भी नहीं था। इस बगीचे में वह कितना काम करेगा? आखिर होगा क्या? अगर वह मुंबई में नौकरी कर ले? वह तो और भी निरर्थक जीवन होगा। जब से उसे समझ आने लगी थी, उसके मन ने शास्त्रीय संगीत के अलावा सब कुछ भुला दिया था। जब उसे वह याद आता, तो उसका पूरा जीवन उसके सामने आ जाता। अगर वह इसके बारे में अलग तरह से सोचता, तो उसे कुछ भी याद नहीं आता।
एक हफ्ता बीत गया। गु राजाराम टिपानी ने फोन किया, 'कैसे हो? गाने का काम कैसा चल रहा है?'
मुझे लगा कि मुझे उन्हें और आपको बताना चाहिए। मुझे लगता है कि संगीत में कोई अर्थ नहीं है।
मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं कह दूं कि मैंने पूरी तरह से हार मान ली है और मैं आज़ाद हूं। ‘रियाज़’ कितने दिनों से चल रहा है?
मैं आपको कैसे बताऊं? अगर वे कभी यहां आएंगे, तो यहां के संगीत-मुक्त वातावरण को देखकर आश्चर्यचकित रह जाएंगे।
यह देखकर आपको आश्चर्य क्यों होगा! जैसे ही वह उसे बताने का फैसला कर रही थी, उसने कहा, 'मैंने किसी काम से फोन किया था। मैं तुम्हें बताने में थोड़ा हिचकिचा रहा हूँ; लेकिन मैं तुम्हें तुम्हारे भले के लिए बता रहा हूँ। मोहनलाल जी मुंबई छोड़कर हीरार स्थायी रूप से जा रहे हैं। मुझे उनकी ज़रूरत नहीं है।'
बहुत कुछ कहा जा चुका है; लेकिन उनका फैसला हो चुका है। वे इस शहर में अड़तीस से चालीस साल से रह रहे हैं।

[illegible]

◌ [illegible] .’

[illegible]

[illegible]

५
मोहनलाल का विदाई समारोह परेल कॉलेज के मैदान में आयोजित किया गया था।
हाँ, ऐसा ही हुआ। एक बड़ा तंबू लगाया गया। ज़मीन पर एक छत डाली गई। बैठने की व्यवस्था इस तरह की गई कि ज़्यादा से ज़्यादा लोग बैठ सकें। जो लोग ज़मीन पर नहीं बैठ सकते, उनके लिए कुर्सियों की विशेष व्यवस्था भी की गई। कार्यक्रम रात भर चलने वाला था। सड़क पर इन वाहनों को परेशान न किया जाए। तो कार्यक्रम रात नौ बजे के बाद निर्धारित किया गया था। एक शाम, एक
यह घोषणा की गई कि पंडितजी तीन बड़े गीत गाएंगे, एक रात के लिए और एक सुबह के लिए, और वे दो छोटे गीत भी गाएंगे।
सरकारी समिति के प्रमुख के रूप में गोरे साहब का नाम देखकर मधु हैरान रह गई। वह यह सोचकर स्तब्ध रह गई कि जब वह सारी चालें जानती थी तो यह दूसरी व्यक्ति कैसे तैयार हो सकती थी।
जब वह वहाँ पहुँची, तो उसने उम्मीद से कहीं अधिक लोगों को इकट्ठा पाया। चूंकि यह एक भारतीय सभा थी, इसलिए उसने कुछ देर के लिए एक कोने में बैठने का फैसला किया, राजाराम अंकल को अपने आने का एहसास दिलाया और फिर वहाँ से जाने का मौका पाकर चली गई।
मैं पहले आता था। मेरे दोस्त के साथ भी ऐसा ही है, इसलिए उससे व्यक्तिगत रूप से मिलना असंभव है, उसे पहले से ही पता है।
उससे मिलने की सोचकर वह उससे सवाल पूछने लगी। किसी ने उसे बताया कि वह कॉलेज के पास, इस बरामदे के पास है। वह उस दिशा में चल पड़ी। अचानक मोहनलाल आ गया। उसे देखकर वह खिलखिलाकर हंस पड़ी, "तुम भी आ गए?" उसकी आवाज़ में हैरानी थी।
मेरे गुरु राजाराम तिपानियों ने जोर देकर कहा कि मुझे आना चाहिए, इसलिए मैं आया।
‘कोई कुछ भी कहे, कोई फर्क नहीं पड़ता। आओ। डफली उठाओ। बीच-बीच में मेरे साथ गाओ। अगर हो सके तो बीच-बीच में कुछ करतब भी दिखाओ।’
वह कुल मिलाकर इसी मानसिक स्थिति में था।
वह असमंजस में थी। वह क्रोधित भी थी; लेकिन उसे यह भी पता था कि उसे इसे दिखाना नहीं है; साथ ही, उसे यह सुनने की तीव्र इच्छा भी हो रही थी। वह हंसते हुए बोली, 'पंडितजी, मैं आपकी शिष्या नहीं हूँ कि आपके पीछे डफली

लेकर बैठूँ। जुगलबंदी हमारी गायन शैली नहीं है। मैंने अपनी पत्नी को गाय की तरह रखा है। मुझे आपके गायन में बिल्कुल भी रुचि नहीं है।'
‘तो फिर आप क्यों आए?’
'क्या आपने यह टिप्पणी के लिए नहीं कहा था?'
"इस कार्यक्रम के दौरान आप मेरे बगल में क्यों नहीं बैठते? मैं आपके लिए गाऊँगी।"
यह आना चाहिए था।
उसकी आँखों में आग की एक चिंगारी जल रही थी।
‘मोहनलाल जी, अपनी वाणी पर नियंत्रण रखिए। मैं उन लोगों में से नहीं हूँ जो आपको परेशान करेंगी!’ उसकी आवाज ऊंची हो गई।
‘मैंने तुमसे ये सिर्फ इसलिए नहीं कहा क्योंकि तुम खूबसूरत हो! अगर तुम्हारे सामने कोई ज्ञानी व्यक्ति हो, तो तुम्हें बारीकियों को समझाने की इच्छा होगी। तुम ये भी जानती हो कि श्रोताओं में जो लोग इन श्लोकों से परिचित नहीं हैं, वे बारीकियों को नहीं समझेंगे। अब बेवजह बहस करके मेरा मूड खराब मत करो। चलो!’ फिर उसने अपनी बाईं छड़ी पकड़ी। उसे एहसास हुआ कि इसे सुलझाने की कोशिश करने से आसपास के लोगों का ध्यान आकर्षित होगा। वह अपनी छड़ी को वेदी के पास ले गया और उसे ठीक अपने सामने रख दिया। वेदी वहीं थी। फिर वह अंदर चला गया और
वह उसके लिए एक बोझ और एक तकिया लेकर आई और बोली, 'मैं उठना नहीं चाहती!' उसने छोड़ दिया।
उसके चेहरे पर पसीना आ रहा था। वह शर्म से अपना सिर नीचे करके बैठी थी, अपने प्रेमी की ओर देखने में उसे झिझक हो रही थी।
कार्यक्रम शुरू हुआ। गोरे साहब मंच पर आए। हाथ में माइक लेकर उन्होंने घोषणा की, ‘पंडित मोहनलाल जी मुंबई छोड़कर हीरा जा रहे हैं। हीरा उनकी जन्मभूमि है। यह एक पवित्र स्थान है! हिमालय से बहती गंगा यहाँ शांत है। इस स्थान के शांत वातावरण में एक लय है। इसके साथ ही विद्यार्थियों का उत्साह भी है। वे आपके समूह के संगीत आश्रम को आगे बढ़ाने जा रहे हैं। इस आश्रम के विकास के लिए मुंबई के गायक-प्रेमी तीन लाख रुपये दान कर रहे हैं!’ गोरे साहब ने विद्यार्थियों से कहा।
‘आज का कार्यक्रम मोहनलाल जी ने मुंबईवासियों के लिए नि:शुल्क प्रस्तुत किया है।’ ता की ज़ोरदार आवाज़! ‘मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आज का

गायन ‘नान भूतो ना भिवती’ होगा।’ ता की फिर से ज़ोरदार आवाज़! ‘भले ही वे आज मुंबई छोड़कर चले गए हों, वे आते रहेंगे। हीराम पवित्र हैं, मुंबई जोखिम भरी जगह है।’
यह पवित्र है। संगीत में दो बातें समान हैं। हम सब उनके गायन को सुनने आए हैं। इस गायन कार्यक्रम में शब्दों का कोई स्थान नहीं है। सबसे पहले, मैं मुंबईवासियों की ओर से तीन लाख का चेक भेंट करूंगा और उन्हें पुष्पमाला अर्पित करूंगा। इसके बाद, कुछ लोगों ने पंडितजी को पुष्पमाला अर्पित करके अपनी भावनाएं व्यक्त करने की इच्छा जताई है। ऐसे अवसर पर, उनका अनादर करना और उन्हें अपमानित करना संभव नहीं है।
प्लेटफॉर्म के एक तरफ माला पहनाने के लिए लोगों की कतार लगी हुई थी। कतार चाहे कितनी भी तेज़ी से आगे बढ़ रही हो, हर कोई माला पहनाते समय तस्वीर लेना चाहता था, जिसमें समय लग रहा था। मधु गिनती कर रही थी। पास ही में तीन सौ तीस मालाओं का ढेर लगा हुआ था।
औपचारिक समारोह के बाद मंच से मालाएँ हटा दी गईं। गायक, संगतकार और डफली वादक मंच पर आए। जब सभी अपनी-अपनी जगह पर बैठ गए, तो मोहनलाल ने माइक अपने हाथ में लिया और कहा, ‘आपने इतना प्यार बरसाया है। आपने इतने प्यार से बातें की हैं। मैं शब्दों से अपनी कृतज्ञता व्यक्त नहीं कर सकता। गोरे साहब का आदेश है कि गायकों को कभी भाषण नहीं देना चाहिए। गोरे साहब ने कहा था कि शाम, रात और सुबह के रागों का गायन होना चाहिए। ग्यारह बज चुके हैं। अब क्या करें? शाम के राग नहीं।’
सभा में से एक आवाज़ आई, “आप यह मानकर शुरुआत करें कि यही संन्यासी है।” दूसरे ने चिल्लाकर कहा, “हमारे द्वारा खोई गई संन्यासी को वापस लाओ और खड़े हो जाओ।” भीड़ गरज उठी। वह मुड़ा और पीछे देखा। उसने अनुमान लगाया कि बारह से पंद्रह हज़ार लोग इकट्ठा हुए होंगे।
‘ठीक है। सुप्रभात!’ फिर मोहनलाल ने डफली को ठीक से व्यवस्थित किया। पाँचवें दिन दोनों लड़कियाँ बड़े गर्व से बैठ गईं। शिक्षिका और अध्यापिका ने उत्साहपूर्वक अपने-अपने वाद्य यंत्र बजाना शुरू किया।
मधु मोहनलाल को देखती हुई बैठी थी। वह उसे अच्छी तरह जानती थी। मोहनलाल ने ही उसे पाला-पोसा था। 'ग रे सा रे, ग पा ग पा धा पग, रे, ग रे सा रे सा...' लेकिन गुस्से से कोई भावना उत्पन्न नहीं हुई। उसकी आँखें आधी खुली थीं। भला भाई

वह उसे कॉलेज के कैफेटेरिया में ले गया और बोला, 'पता नहीं क्यों, मोहनलाल जी आज अच्छे मूड में नहीं हैं। अगर तुम वहां से उठकर कहीं और जाओ, तो शायद उनका मूड हो जाए। उन्होंने तुम्हें वहां से उठने के लिए कहा है!'
‘चाचा जी, इन्होंने मुझे जुर्माने की रकम के साथ यहाँ बैठने के लिए मजबूर कर दिया है! मैं तो बस थोड़ी देर बैठने और फिर चले जाने के इरादे से आया था। मैं आना नहीं चाहता था। मैं तो आपके लिए आया था।’
उसे यहीं रोककर उसने कहा, ‘रहने दो। अलापा, इन्होंने यहीं गाना बंद कर दिया है। मुझे जाना होगा।’ और वह भाग गया।

६
आप चाहे जो भी कर लें, राग की नब्ज़ को पकड़ नहीं सकते। वो राग जो पचास सालों से जाना-पहचाना है और चालीस सालों से आपके हाथों में है। शास्त्र का पाठ करने पर भी, ये यकीन नहीं होता कि भाव प्रवाहित होंगे। यही हाल ही में हो रहा है। मुंबई में ये विदाई कार्यक्रम एक अविस्मरणीय गायन के साथ समाप्त हुआ है, और दो हफ़्तों से चल रहे 'संक शक्ति पानी फिर' की गूंज भी यही दर्शा रही है। चाहे जो भी कर लें, हार न मानें! ऐसा नहीं लगना चाहिए कि मोहनलाल मुंबई से भाग रहे हैं। सामने बैठे पंद्रह हज़ार श्रोता बेसब्री से इंतज़ार कर रहे हैं कि कब वो राग आपके वश में आएगा। एक बार जब राग का जादू सभा में फैल जाएगा, तो सब उसमें लीन हो जाएंगे। सभा की नब्ज़ को आपके सिवा और कौन जान सकता है! मुंबई के श्रोताओं को आपसे बेहतर कोई नहीं जानता। धीरे-धीरे शुरू करते हुए, गायक ने गाया होगा, 'मैंने अपने जीवन में इतना सुंदर गीत कभी नहीं सुना', श्रोताओं ने सोचा होगा! जी हाँ। वो अपने दिल की गहराई में उतर गए होंगे। मंदिर में उतरने पर अनेक अवसर मिलते हैं। वहीं से भूपली ने पहल की। उत्साह! यही सच है! उसका उत्साह कभी कम नहीं होता। उसमें कोई अनावश्यक झिझक नहीं, बिलकुल भी नहीं! वह चली गई। अगर वह चली जाती तो क्या करती? क्या मेरे मन में उसके साथ रुकने की कोई इच्छा थी? उसका उत्साह तो भरपूर था; पर मंदिर तक उतरने की हिम्मत उसमें नहीं थी।
तो फिर वो शक्ति किसके पास है? जी हाँ, कयानी! जितना अधिक कोई मन्द्र शतक में उतर सकता है, उतना ही वह तल तक पहुँच सकता है, उतना ही राग का व्यापक प्रकटीकरण होता है। मैंने उसे बताया है, मैंने उसे यही सिखाया है! सत्य का एक वास्तविक दर्शन होता है। मैंने उसे सिखाया और वह मेरे पास लौटकर बोली, ‘हाँ, मुझे मन्द्र शतक में सत्य का दर्शन हुआ है!’ कोमल ऋषभ असावरी। उसके पति को सब कुछ बताने के बाद, उसे जो रहस्योद्घाटन हुआ, वह कुछ इस प्रकार था! वह मेरे सामने बैठी है, मानो मुझे देखने के लिए बैठने वाली हो! उसकी आँखें भेदक हैं! हे भगवान! यह मेरी गलती थी। किसी राक्षस के सामने बैठकर गाना नहीं चाहिए। केवल राक्षस की उपस्थिति को ही सामने फैलाना चाहिए। राक्षस की उपस्थिति के बिना कोई कैसे गा सकता है?

छे:! ये मेरी गलती थी। तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई हंसने की, मैं तुम्हारी छात्रा नहीं हूँ! लेकिन मैंने तुम्हारा हाथ पकड़े बिना तुम्हें अपने सामने क्यों बिठाया? मैंने तो तुम्हारे ऊपर बोझ भी लाद दिया था।
सूक्ष्म जगत आँखों से दिखाई नहीं देता। आदत के बल पर इन्हें कैसे देखा और समझा जा सकता है? लोग बीमार पड़ रहे हैं, लेकिन उन्हें कुछ समझ नहीं आ रहा। अगर मुझे समझ नहीं आएगा, तो उन्हें कहाँ से आएगा? लेंस तो रजिस्टर ही नहीं हो रहा, मैं इसे कैसे छोड़ूँ? चलो हीराहर चलते हैं।
अगर तुम दूर हट जाओगे, तो यह नहीं आएगा। और अगर यह नहीं भी आता है, तो भी यह टूटेगा नहीं। मंदरा के ऊपर
छठे स्तर तक पहुँच भी जाओ, तो भी तल नहीं दिखेगा। अगर तल दिखेगा ही नहीं, तो फिर उसे ढूँढ़ने का क्या मतलब? मेरी निगाहें इसी पर टिकी हैं! मुझे लगता है कि मेरा कार्यक्रम नाकामयाब होने वाला है। उसे अपने सामने बिठाकर मैंने बहुत बड़ी गलती कर दी है। संगीत का कोई मतलब ही नहीं! उसने मुझसे कहा, ‘क्या अब भी आप यही सोचते हैं? यही तो आपका सवाल है!’ कितना अफ़सोस! अगर मैंने नींव न रखी होती, तो क्या वो अब साधना कर पाती? ये हारमोनियम उसे क्या सिखाएगा और वो क्या सीखेगी? एक दिन मैं भी इसे देखूँगा!
क्या करें? लोग ऊब रहे हैं। आज के कार्यक्रम में कुछ मसाला डालना होगा। लोग आपस में गपशप कर रहे हैं। ये लोग हर मीटिंग में एक जैसी खुशी की उम्मीद करते हैं। सैमन को बुलाने के अलावा कोई और उपाय नहीं है; लेकिन उसे सुनना तो चाहिए, है ना? क्या करें? सामने माइक्रोफोन है। माइक्रोफोन से बात करोगे तो वो न सिर्फ जाएगी नहीं, बल्कि जवाब भी नहीं देगी। कार्यक्रम तो बस बर्बाद हो जाएगा! चलो आँखें बंद करके गाते हैं; लेकिन आँखें बंद करने पर आवाज़ और भी तेज़ हो जाती है। यही राजाराम का सबक है। अगर उससे ये कहलवाओगे तो वो जाएगी ही नहीं।
लेकिन उसके जाने के बाद, स्थिति और भी तीव्र हो गई। और भी चुभने वाली हो गई। उसके सामने जवाब देना आसान होता है। इस गुस्से को नहीं चुनना चाहिए था। इसके साथ ही, अच्छाई भी चली गई।
मैंने तो इसका नाम भी कयानिनी रखा था। लेकिन अब मैंने क्रोध को चुना है, मैंने यह कर दिया है;
लेकिन माहौल साफ नहीं है। नहीं, फिर गुस्सा भड़क उठेगा, अगर चला भी गया तो क्या? गुस्सा शांत हुआ तो माहौल भी शांत हो जाएगा। क्यों नहीं, अगर ये

मुंबई वाले लड़ना चाहते हैं – अगर वे लड़ना चाहते हैं – हा! अगर ओमकार शुरू कर दे तो क्या होगा? ये लोग पागल हो जाएंगे और सिर हिलाने लगेंगे। उनकी आंखें बंद हो जाएंगी और वे चुप हो जाएंगे! कई सभाओं में ऐसा ही होता है! मुझे काफी देर तक गाने का मन नहीं है। मैं थोड़ी देर ओंकार गाऊँगी और फिर कोई राग उठाऊँगी! वाह! ढोल की ज़ोरदार आवाज़! आ गई। मन बन गया। मैंने फिर से डफली बजाई। मैंने लड़कियों को इस तरह बिठाया कि उन्हें डफली की आवाज़ सुनाई दे। उनके कानों में डफली की आवाज़ गूंजती रही। मन बन गया। अब चिंता की कोई बात नहीं।
ओह मैं माफी चाहता हूँ!'
उन्होंने अपनी आंखें बंद कर लीं। पहले वे तारा शतक के पाठ पर गए और फिर मंद्रा शतक के पाठ पर।
मैं उतरने ही वाला था। अंदर जगह खाली हो रही थी। अब आंखें खोलने का कोई फायदा नहीं था। वह दोपहर 3:30 बजे जाग गई थी। पूरी सभा जप कर रही थी। अबाल-व्री!
सभी पुरुष और महिलाएं! उसने अपनी आँखें चौड़ी करके सामने देखा। दूर-दूर से लोग आए हुए थे।
वे एक के बाद एक बैठी हैं। वहाँ, थोड़ी दूर पर एक लंबी, चाँदी जैसी रेशमी साड़ी, उसकी बालों की क्लिप, उसका चमकीला, हीरे जड़ा कंगन, उसकी अंगूठी। हाँ। वही है। उसका नाम क्या है? मैं भूल गई। अभी उसे याद करने में समय बर्बाद मत करो। दूल्हे पर मेरा ध्यान भटक जाएगा। हाँ। हैदराबाद। टैम्बो उसके साथ बैठी थी। वह ज़रूरत के हिसाब से चल रही थी। फ्रेंच टोस्ट की खुशबू। आज सुबह की यादें।
पांच मिनट बीतने के बाद भी मन एकाग्र नहीं हो पा रहा था। घृणा। हानि का अहसास। तड़प। मैं एक कलाकार हूँ, एक गायक हूँ। यह एक कलाकृति है। मेरा काम है उसकी भावनाओं को व्यक्त करना। जिस तरह वह उस दिन भक्ति से भरी हुई थी, पूरे समूह का भाव भी वैसा ही रहा होगा। चाहे आप किसी छोटी सी बात पर कितना भी भरोसा कर लें, वह कोई न कोई भावना जरूर पैदा कर देती है। ओंकार का गायन निजी समारोहों में बहुत सफल रहा था। तो फिर बड़े समारोहों में क्यों नहीं? इसी दृढ़ निश्चय के साथ वह गाते रहे।

बस इतना ही। जी हाँ, बस इतना ही! लगता है उसने अखबार में खबर पढ़ ली है। या फिर और कौन? मुंबई में कुछ औरतें तो होंगी ही जो रेशमी साड़ियाँ और उनके कपड़े पहनती हैं। उसे देखना नहीं चाहिए। इस गाने पर –
कैसी आवाज़? श्रो की फुसफुसाहट। टैम्बो के माइक, फ्रंट माइक। फिर भी, फुसफुसाहट सुनाई दे रही है। चालीस सालों में मैंने ऐसी फुसफुसाहट कभी नहीं सुनी। मुझे गुस्सा आ गया।
उसने गाना रोक दिया। उसने अपने दोनों हाथ डफली पर रखे और उसे बंद कर दिया। फुसफुसाहट
क्या? यह तो पूरी तरह से अव्यवस्थित स्थिति थी। इस तरह का यह मेरा पहला अनुभव था। उन्होंने माइक हाथ में लिया और कहा, 'कुछ सज्जन आज गाना सुनने के मूड में नहीं लग रहे हैं। अगर वे चुपचाप चले जाएं, तो बाकी लोग शांति से गाना सुन सकेंगे।' उन्हें ऐसा लग रहा था मानो उन्हें सभा को नियंत्रित करने का पूरा अधिकार है।
उनमें से एक खड़ा हुआ और जोर से हंसते हुए बोला, 'हमारा एक मूड है। आपका मूड इससे मेल नहीं खाता, इसे स्वीकार करो!'
‘मैं भी इसी के लिए प्रयासरत हूं। क्या तुम इतना भी नहीं समझते?’ उसने मन ही मन ऊंची आवाज में सोचा।
हालात बिगड़ते देख, गोरे मंच पर चढ़ गए और माइक लेकर बोले, 'सुनिए, कृपया धैर्य रखें और सहयोग करें। कभी-कभी कलाकार अच्छे मूड में नहीं होते, इससे सुपवती को परेशानी होती है। पंडित मोहनलाल के साथ ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। थोड़ी देर में उनका मूड ठीक हो जाएगा।'
बैठक में, उसी व्यक्ति ने चिल्लाकर पूछा, 'गोरेसाहेब, आप एक वकील हैं। अगर आप अशीला से पैसे ले रहे हैं और जाने के मूड में नहीं हैं, तो फिर गपशप क्यों कर रहे हैं?'
'कोटा प्रणाली पर बहस करना एक बात है, और कला का सृजन करना दूसरी बात!' गोर साहब ने कहा।
उसी क्षण, खादी की धोती पहने सामने बैठे एक बुजुर्ग व्यक्ति मंच पर चढ़े और टिप्पणी करने से पहले माइक अपने हाथ में ले लिया। कई लोगों ने उनका नाम यंबक पुरंदारे के रूप में पहचाना। गोर्नी ने भी उन्हें पहचान लिया। वे संगीत और साहित्य में रुचि रखते थे और नवोदय कॉलेज के प्रधानाचार्य पद से सेवानिवृत्त हुए थे। उन्होंने कहा, 'देखिए, वकील साहब, गायन और अभिनय अलग-

अलग चीजें हैं; लेकिन क्या अदालत जाने से पहले आपसे यह अपेक्षा की जाती है कि आप मामले की पूरी तैयारी करें? कम से कम, आपको मामले से एक रात पहले पार्टी करके अपनी सेहत खराब नहीं करनी चाहिए, है ना? क्या एक गायक को इतनी न्यूनतम ट्रेनिंग नहीं लेनी चाहिए? और दूसरी बात, वह किसी भी कार्यक्रम के लिए नए रागों की रचना नहीं करता। क्या हम वही राग गाते हैं जो हमें गुरु ने सिखाया है और जिसे हमने स्वयं तैयार किया है? हम यह भी मानते हैं कि इसमें रुचि अलग-अलग हो सकती है; लेकिन अगर दुनिया को इसकी शिक्षा दी जाए, तो वह कम से कम न्यूनतम स्तर पर तो गा ही सकेगी। आज के कलाकार अपनी अज्ञानता और गैर-जिम्मेदारी को दिखावे के पीछे छिपा लेते हैं।' दर्शक भी अज्ञानता और फैशन के चलते उनके व्यवहार को बर्दाश्त कर रहे हैं।
पुरंदारे ने उत्सुकता भरी निगाहों से गोर की ओर देखा। गोर चुप हो गया। कुछ श्रोताओं ने ढोल बजाए। फिर ढोलों की गड़गड़ाहट में पूरी सभा डूब गई। गोरना को समझ नहीं आ रहा था कि इस स्थिति से कैसे निकलें। पुरंदर को भी कुछ समझ नहीं आ रहा था। ढोल बजा रहे श्रो को भी कुछ समझ नहीं आ रहा था। ऐसी स्थिति में मोहनलाल
उन्होंने कहा, 'मैंने इस पैसे की मांग नहीं की थी। मैं यहां मुफ्त कार्यक्रम देने का वादा करने आया था।'
मैं यह तीन लाख का चेक लौटा रहा हूँ। इसके बाद मैं कड़ी मेहनत करके अपना आश्रम चलाऊँगा। मुझे इस तरह के अपमान के लिए दिया गया पैसा नहीं चाहिए!’ और उसने चेक को अपनी जेब में रखकर अपने सामने लहराया।
उस बूढ़े व्यक्ति ने बीच में ही टोकते हुए कहा, "यह पैसा आश्रम के लिए है। आज तो यह गांव है।"
इसका इससे कोई लेना-देना नहीं है।
‘पंडित मोहनलाल जी गुस्से में बोल रहे हैं। वे पसीना बहाकर और कार्यक्रम आयोजित करके आश्रम चलाने की कोशिश कर रहे हैं! इसका क्या मतलब है?’ पुरंदर ने सोचा।
मोहनलाल को कोई जवाब सूझा ही नहीं। गोरान को भी नहीं। उसी क्षण सभा में मौजूद लगभग पच्चीस लोग खड़े हो गए। उनके बाद और भी लोग खड़े हुए। और भी, और भी। अंत में, सभी लोग खड़े हो गए। गोरान, हाथ में माइक लिए, बार-बार विनती करते रहे, ‘कृपया सब लोग बैठ जाइए, हम बीच का रास्ता निकाल लेंगे। मोहनलाल दस मिनट बाद गाना शुरू करेंगे!’ सभा में मौजूद कुछ लोग बैठ भी गए; लेकिन जो

लोग खड़े थे, वे बिना बैठे चलते रहे। गोरान ने मोहनलाल के हाथ से माइक छीन लिया और उनसे कहा, ‘नहीं! मैं नहीं गाऊंगा! ऐसे अपमान के बाद कोई कलाकार नहीं गाएगा।’ और पुरंदर को गुस्से से देखते हुए वे मंच से चले गए।

७
राजाराम काका यहाँ भाषण देने आए थे। उन्होंने देखा कि अब यहाँ रुकने की कोई ज़रूरत नहीं है; लेकिन इसके बाद कहाँ जाएँ, यह सवाल था। वे बालकनी में खड़ी हो गईं। लाउडस्पीकरों की आवाज़ भले ही दूर थी, लेकिन मंच पर हो रही बहस और प्रशंसकों की भीड़ की आवाज़ यहाँ भी सुनाई दे रही थी। आज संगीत इसे और भी जीवंत बना रहा है।
माँ पर दोष मढ़कर उसने उसे अपनी सीट से उठने पर मजबूर कर दिया। भले ही यह बात उसके मन में आई हो।
उन्हें इस बात पर गुस्सा नहीं आया। उनकी जान खतरे में थी। मैं इसमें क्यों उलझूँ और अपने सुखमय जीवन को दुख में क्यों बर्बाद करूँ? मेरा मन उदास हो गया।
सच में, शुकायन राग कितना सुंदर है! वे पहले इस राग को बड़ी बारीकी और जोश के साथ गाते थे! पिछले कुछ दिनों से मैं भी अपनी खुशी के लिए इस राग को गा रही हूँ! राजाराम काका ने भी इसे सही ढंग से गाने में मेरी मदद की है; लेकिन राग का मार्ग तो मैंने स्वयं ही तय किया है।
वह मन ही मन गुनगुनाने लगी। भूपली का उत्साह, दोनों के शांत होने के बाद मिलने वाली शांति, इस मिश्रण से कितनी अद्भुत धुन रची जा रही थी! भूपली की ज्योति शांति के शांत, स्थिर प्रवाह पर तैर रही थी। हाँ। यह वर्णन अधिक उपयुक्त लगता है। वह यूँ ही कॉलेज के गलियारे में आ गई। बत्तियाँ जल रही

थीं। लेकिन माइक्रोफोन की आवाज़ वहाँ तक नहीं पहुँच रही थी। मंदिर की सीढ़ियों पर बैठी वह मन ही मन शांति की धुन गुनगुना रही थी।
बारिश शुरू हो गई। पता नहीं कितना समय हो गया होगा! उसने घड़ी नहीं देखी। अचानक
गलियारे में शोर सुनाई दिया। 'ता' की आवाज़ आई। ऐसा लगा जैसे कोई राग समाप्त हो गया हो। लोगों के बात करने की आवाज़ें सुनाई दीं। लोगों का एक समूह इस दिशा में आ रहा था। वे आपस में ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे कोई बहस चल रही हो। मुझे भी जाने का मन कर रहा था। शायद अगर कोई मध्यस्थ होता, तो वह भी यहाँ आ जाता। वह मुड़ी। जब मैंने देखा, तो कार्यक्रम समाप्त हो चुका था। लोग आपस में बहस कर रहे थे। 'पुरंदर को ऐसा नहीं कहना चाहिए था।' 'हाँ। शायद इससे मोहनलाल जी का मूड ठीक हो जाता।' 'लेकिन पुरंदर ने तो अच्छा किया। क्या तुमने नहीं देखा? सरकार द्वारा दिया गया पैसा कैसे बर्बाद हो गया? क्या तुम स्रोतों के लिए कुछ सम्मान नहीं चाहती?'
एक बार उसने सोचा कि किसी से इस घटना के बारे में सोचने के लिए कहे, लेकिन उसे ऐसा करने की इच्छा नहीं हुई। वह अपने मन की बात कहने के लिए तैयार नहीं थी, जो पूरी तरह से भावनाओं से भरी हुई थी।
दो कदम चलने के बाद नदी की गति धीमी हो गई। उसने घड़ी देखी। रात के साढ़े बारह बज रहे थे। इस समय पनवेल जाना नामुमकिन था। उसे अपने भाई के घर जाकर सबको जगाना भी ठीक नहीं लगा। तभी उसे राजाराम चाचा के घर जाने का ख्याल आया। उसे सोनू को जगाना पड़ेगा। चाचा उस समय तो नहीं आएंगे; लेकिन वह इस कमरे में दरवाजा बंद करके बैठ सकता है और ये गीत गा सकता है। शुकयन, ये गीत दिल को छू लेता है! शुकयन की धुनें सुनते हुए शांति से उन्हें देखा जा सकता है। इधर-उधर माहिम। पैदल भी जा सकते हैं। अगर कोई आ भी जाए तो डरने की कोई बात नहीं।
वह सब गायब हो गया। मेरे मन में ख्याल आया, अगर कोई आया तो मैं भी दो छोड़ जाऊंगी! इस विचार ने मुझे हिम्मत दी। क्रोध के प्रभाव में आकर मेरी सावधानी और डर तुरंत गायब हो गए।
आंटी ने दरवाजा खोला। उन्होंने अपनी आंखें मलते हुए हंसते हुए कहा, "गाना तो पूरी रात चलने वाला था, है ना? मुझे लगता है तुम अभी-अभी जागे हो।"
मुझे एक गाय चाहिए। क्या तुम अपने चाचा का कमरा खोलोगे?

उसने कमरा खोला और कहा, "लेकिन खिड़की को पूरी तरह से बंद मत करना।"
पड़ोस वाले फ्लैट में रहने वाले शिकायत करेंगे। क्या आपको कुछ खाने को चाहिए? क्या मैं आपको पोहा-बीबी कट दे दूं? केले भी हैं। अगर आप चाहें तो फ्रीजर में दूध भी है।’ वह अभी भी नींद के नशे में थी। ‘मुझे कुछ नहीं चाहिए’ कहते हुए वह कमरे में दाखिल हुई और झोपड़ी का दरवाजा कसकर बंद कर लिया। कमरे का दरवाजा बंद किए बिना ही उसने डफली को ठीक किया।
उसी क्षण, दरवाज़े की घंटी बजी। उसने सोचा कि उसके चाचा आ गए हैं। लेकिन वे बाहर नहीं आए और उससे नहीं मिले। उसने अपनी चाची को फिर से दरवाज़ा खोलते हुए सुना। कमरे का दरवाज़ा भी खुल गया।
कुछ क्षण पहले उसने कहा, "चाचा जी, मुझे बहुत सारी गायें चाहिए। आप
अगर आपको नींद आ रही है तो सो जाइए।
‘कौन सा गुस्सा?’
‘शु क याण.’
‘मैं भी बजाना चाहता हूँ। आप गाइए। खुलकर गाइए। जैसा मन करे गाइए। मैं तो नौसिखिया हूँ, बिना गलतियों को सुधारने की चिंता किए गा रहा हूँ। मैं बस आपका साथ दे रहा हूँ। मैं आगे नहीं जाऊँगा। आप मुख्य कलाकार हैं, मैं सहायक!’ हनत ने कमरे का दरवाजा बंद किया और हारमोनियम को अपने सामने खींच लिया।
शांत झील के जल पर तैरते भूपली के दीपक! वह इस सपने में लीन हो गई और उसने मन बना लिया। यद्यपि उसकी शांत और निर्मल चाल, बाहरी संरचना, गति और उसका बाहरी स्वरूप दिखाई नहीं दे रहा था, फिर भी समय बीतता हुआ प्रतीत हो रहा था। ऐसा लग रहा था मानो आँखों से ओझल छोटे-छोटे भंवर उनके बीच से झाँक रहे हों। इस उत्सव में आने का सपना साकार होते ही उसका उत्साह दुगना हो गया। यहाँ तक कि सबसे गंभीर और स्थिर दुल्हनों की भी अपनी एक लय होती है। यह महसूस करते हुए कि इसे प्रकट किए बिना खोजना भी पंच भावों का एक हिस्सा है, उसका मन करुणा से भर गया। वह और भी अंतर्मुखी हो गई। इस भाव की कितनी शक्तियाँ उसे प्राप्त हो रही हैं! यद्यपि प्रबल माध्यम से अवरोह में आना अनुमत है, फिर भी यदि कोई पंचम पर्वत पर उतरते समय इस प्रबल माध्यम को ढक ले, तो भूपली की सुगंध को धारण करके भी ब्रह्मांड की शांति प्राप्त की जा सकती है! यह जानकर वह रोमांचित हो गई। आह! इस मंदिर में पहुँचने पर मूल स्थान के ध्यान में मुक्ति का आनंद मिलता है! राग के नियमों का उल्लंघन

किए बिना अनेक माध्यम खोजे जा सकते हैं। यदि माध्यम और अन्य रूपों का अत्यधिक उपयोग किया जाए, तो भूपली की दिव्य ऊर्जा से थोड़ी कम दिव्य ऊर्जा उत्पन्न होती है, जो असीम आनंद का स्रोत है!
राजारामकाका का पाठ चंचल था। वह प्रवेश कर रही है या घंटों में या
वे उस धारा और तालाब में, उस प्रवाह में बह रहे हैं जिसे हमने बनाया है। इसकी कोमलता को हारमोनियम के माध्यम से नहीं, बल्कि उनके चेहरों पर दिखाया जा सकता है।
तीसरे राग का दिल फैल रहा है। आज मेरा गीत एक अलग ही दिशा में जा रहा है। एक ऐसा गीत जो साथी के मार्ग से भटक रहा है। शास्त्र चल रहा हो या न चल रहा हो, सीने की थाप गायब है और नया राग अलग से फ्रेम में लौट रहा है, चाचाजी उत्साहित हो रहे हैं। मुझे खुद नहीं पता, मेरी कल्पना ऐसे बेकाबू रास्ते पर कैसे चल पड़ेगी! शास्त्र में महारत हासिल करने के बाद, उसका उल्लंघन करना और यह विश्वास करना कि यह उल्लंघन शास्त्र के अनुसार है! चाचाजी अभी भी उत्साहित हैं। अप्रत्याशित रूप से, ऊपर बताई गई बातों को समझे बिना, वे इसमें भटक रहे हैं। सीमाओं को पार करने की खुशी उनके चेहरे पर छलक रही है! मधु का चेहरा भी खुशी से चमक उठा जब उसे याद आया कि उसके पति और बच्चों ने पहले कभी हद पार नहीं की थी। यह जानकर कि इस तरह की गलती से उसे असीम आनंद मिलता है, वह खुद को समृद्ध महसूस करने लगी; लेकिन क्या इस आनंद के लिए उसे जीवन के बंधन तोड़ने पड़ते? यह सवाल उसके मन में बना रहा। इस सवाल के बाद, उसके मन में क्रोध के अंत का विचार आया, यह कहते हुए कि उसने तो कोई सपने भी नहीं देखे थे। यह समझते हुए कि अगर वह और क्रोधित होती रही, तो यह केवल एक अभ्यास होगा, उसने अपना क्रोध समाप्त किया और अपनी उपलब्धियों पर संतोष किया।
उसकी उंगलियाँ अब भी डफली बजा रही थीं। वह वहीं बैठी रही, उसकी नज़रें ज़मीन पर टिकी थीं, वह इस धीमी, शांत धुन में खोई हुई थी। वह अपने चाचा से यह भी नहीं पूछना चाहती थी कि गाना कैसा रहा। उसके अंदर कुछ अजीब सा एहसास था, किसी और चीज़ की चाहत। वह इतनी सावधान थी कि अगर ये सूक्ष्म भावनाएँ एक साथ नहीं आईं, तो उसके हाथों से फिसल जाएँगी। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। मैंने अपने चाचा को कहते सुना, ‘मैं एक महीने में तुम्हारा पहला गायन कार्यक्रम बड़े पैमाने पर आयोजित करूँगा। मोहनलाल जी की गायकी आज पूरी तरह लुप्त हो चुकी है। तुम्हारी गायकी में उनकी कमी को पूरा करने की शक्ति

□□! □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□! □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□!’

□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□

□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□

‘□□□□□□□□, □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□! □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□! □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□!’ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□

“□□□□□ □□, □□□□! □□□□□ □□ □□□□ □ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□; □□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□, □□□□ □□□□ □□□□□; □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□?”

□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□

***** □□□□□□ *****

sjeet